[इब्तिक्ये यदिवास्

('नहम?)

क्याही सरशब्जहै-यह जैन बगीचा देखें। हर सजर नुरका-दिखलाताहै जलवादेखों, भ जैनश्वेतांबरों बुल्बुलकी तरहसे तुमभी, जांफिदा करके जरा-इसका तमाशा देखों, २ एकसो आठ तीर्थोंकी-जोलिखीहै तपसील, शौखसे उसको पढो-याके सुनो यादेखों, ३ किसकदर इसके मुसंन्निफको बनाया कामील, आत्मारामजी महाराजकी किरपा देखों, ४

काविलेहम्द-वे- तीर्थकर निरंजन-व-निराकारहै जिनकाझान कुल्लदुनियामें आश्वकारहै, अव-में-इसाकितावके मजग्रुनपर आताहुं, सायकीन-व-नाजरीनको खुशखबरी सुनाताहुं, मुहतौका इरादा आज कामयाबहुवा, शुक्रहै आज यहाकिताब छपकर नाजरीनोंकी नजरोंके सामने आगइ, इसाकिताबमें सूत्रआवश्यक-उत्तराध्ययन-कल्पसूत्र-विविधतीर्थकल्प-मबंधकोश-प्रभाविकचरित-परिशिष्टपर्व-मबंधिंचतामणि वगेरा जैनिकताबोंसे मजग्रुन अकजकरके छिखाग-सिरं, और कड़ तवारिखोंसे पुरानीबातें इंतिखाबकरके दर्जिक इहै, रेखवे गाइडोंसे टेशनोंका-हाल-और किराया बतलायागयाहै, मगर किराया कभीकभी कमीबेसीमी होजासकाताहै, नाजरीन बरवलत तलाशकरलेवेंकि-किरायारेलका यहांसें वहांतक क्यालगेगा, ?

अगर कोइश्रावक जैनतीर्थकी जियारत जानाचाहै इसकितावकों

१-दरस्त, २-ग्रंथकरती,

पासरखें-ताकि-वख्तन फवख्तनआगाही होतीरहेगी, औरइसवातकी मालुमीयतहोसकेगीकि-फलां जैनतीर्थइसजगहपरहे, और इसकारास्ता-युं-हे, पुरानेजैनतीर्थाका हाल सुनोतो जिसजिसतीर्थमं मंदिरस्रुर्तिपर कोइदेवता निगाहवान बनारहताहे, वह बहुत अर्सेतक बनीरहती हे, और जिसमंदिरस्रुर्त्तिपर देवता निगाहवान नहीरहता वह थोडेअर्से-तक रहकर बरवाद होजाती है, जैनमजहवमं १-शत्रुंजय, २-अष्टापद, ३-समेतिशखर, ४-गिरनार, और-५-आबु-य-पांच बडेजैनतीर्थ मानेगये है, जिसमें तीर्थशत्रुंजय निहायतपुराना और मुत्तवरिकहे, तीर्थकर रिषभदेवमहाराज यहांकइदफे तशरीफ लायेथे, जमानेतीर्थकर रिषभदेवके राजाभरतचक्रवर्तांने पहाड अष्टापदपर बडेआलिशानजैनमंदिर तामीरकरवायेथे, जब तीर्थकर रिषभदेव महाराजने वहांपर मुक्तिपाइ, वहजैनतीर्थ कहलाया, करीब अढाइ हजारवर्स पेस्तर तीर्थकर महावीरके बडेचेले गौतमगणधर इसतीर्थकी जियारतको गयेथे सूत्रआवक्रयक अवल अध्ययनकी टीकामें इसका बयान दर्जहे,

जमाने सगरचक्रवतींके तीर्थअष्टापदकी इर्दगिर्द खाइ बनादिइ-गइ और सम्रंदरका पानी उसमें शरीककरियागया जिससे आजकल वहां कोइ-जा-नहीसकता, गौतमगणधर जो गयेथे अपनी तपोल्रिध्य से गयेथे, तीर्थअष्टापद-भारत मध्यखंडकी उत्तर और वैतादय पर्व-तकी दखनमें है असा जानना, पहाड हिमालयकों किसीस्ररत अष्टा-पदनहीकहसकते, पहाड समेताशिखरपर तीर्थकर अजितनाथ महारा-जने सुक्तिपाइ वह जैनतीर्थ कहलाया इसीतरह चौइसतीर्थकरोके कल्याणिक जहांजहां हुवे-वे-सब जैनतीर्थ कहलातेगये, तीर्थउसका नामहै जहांजाकर जीव संसारसम्रदसे तीरे मगरशर्त यहहैकि-दिल-की सफाइ होनाचाहिये-तीर्थ तीनतरहसे मानेगयेहै, १-तीर्थकरोकी कल्याणिक भूमि, २-म्रुनिमहाराजोकी निर्वाण भूमि और ३-अति-श्रय युक्तक्षेत्र,

कइ जैनतीर्थ जमानेहालमें कमजोरहोगयहै, उनकी मरम्मतहोना दरकारहै, कइपुराने जैनतीर्थोंके नाम निशानभी नजर नहीआते, ब्रानियोका फरमानाँहैकि-किसीचीजकी हालत हमेंशां एकसरखी नहीरहती तीर्थेकर रिषभदेवसे लगाकर महावीरस्वामी तकका इति-हास देखोतो कल्पसूत्र और त्रिषष्टिशलाका पुरुष चरितमें मिलेगा, सूत्रआवश्यक-निर्धुक्तिमे लिखाहैकि-पुरिमताल नगर जोकि-अयौ-ध्याका ञाखानगरथा, एक-वग्गुरनामके श्रावकने वहांपर तीर्थकर मिल्लनाथजीका मंदिर तामीर करवायाया, जमाने अखीर तीर्थंकर महावीरस्वामीके राजा श्रेणिक राजगृहीके तख्तपर अगलदारी कर-ताथा, वह पेस्तर जैननहीथा, मगरपीछे तीर्थकर महावीरकी धर्मता-लीपसे जैनमजहबपर पावंदहुवाथा, श्रेणिकका बेटा जिसकानाम कौणिक-वा-अजातशत्रुथा, वह-जैनथा, और उसने अपनीराजधा-नी चंपानगरीमें कायम किइथी, कोणिकका बेटा उदायीहवा, यहभी जैनमजहबपर साबीतकदंम था, और इसने अपनी राजधानी **शहर** पटनेमें कायम किइथी, उदायीके तख्तपर नंदनामका राजाहुवा उ-सकी राजधानीभी पटनाहीरही, बादउसके आटराजे नंदनामकेही पटनाके तत्कतपर होतेरहे, भ्रुपावली यंथमें लिखाहैकि-नवनंदोने-पटनेकेतरूतपर (१५५) वर्सतक राज्यकिया, नवमें नंदको चंद्रगु-प्तने शिकस्त दिइ, ओर पटनेके तत्त्तपर अपना अमल दरामदिकया वह मौर्यवंशके खानदानका था, वंगालहातेके प्रांत उडीसामे करीव शहर कटकके उदयगिरिपर कईपुरानी गुफाहै, इनसबमें हाथीगुफा-नामकी एकवडीगुकाहै जिसमे सतरां पंक्तियोका एकवडा शिला-लेख चैत्रवंशके कलिंगराजा खारवेलका मोजूदहै, इस ग्रुफामें दुस-

राकोइ एसानिशान नहीपाया जाताकि-कोनसे मजहववालोकी यह गुफाहै. मगर दोतीनसबुत एसेमिछते है जिससे माऌमहोताहैकि-यहगुफा जैनोकीथी, उपरलिखेडुवे शिलालेखकी शुरुआतमें नमोअ-रिहंताणं एसापाठिलखाहै, और बारहमी पंक्तिमें नंदराजनितस अ-गजिनस-एसा पाठभी मौजूदहै, इससे माळूम होताहै नंदराजाने लायाहुवा अग-या-अरनाथजिनका कुछहालहै, मगरअपसोसहैकि आगेका लेख दुटगया है, चौदहमी पंक्तिमें लिखाहैकि-क्रमारी पवते अरहतोपनिवासे-निषिद्यां-एसालिखाहै, इसमें अरहदउपनिवासका वयानहै, इनसबुतोंसें पायाजाताहैकि-यह गुफा पेस्तर जैनोकीथी, मोर्यराज्यके संवत् (१६५) में यहळेख लिखागयाहै, इससे मालूम होताहैिक-लारवेलराजा इस्वीसनके (१५७) वर्स पेस्तर मौजूद था, अरहंतपसादानंकर्छिगानंसमनानं-एसापाउहै, इससे माऌमहोता है, यहगुफा कल्लिंगमें रहनेवाले जैनश्रमणोके लिये बनाइ गइथी,-चंद्रग्रप्तकावेटा विंदुसारहुवा,यहभी जैनथा, विंदुसारका वेटा अशोक हुना, यहनौधथा, राजाभियदर्शौ अशोकके-शिळाळेख-जो हिंदमें बीध धर्मफेबारेमें कइजगह देखतेहो, इसी अशोकके समजिये, अशोकका बेटा कुणालहुवा, और कुणालका बेटा राजासंप्रतिहुवा, तीर्थकर महावीरस्वामीकेवाद (२९०) वर्स पीछे राजासंप्रति मौजूद्या, और उसकी राजधानी शहर उज्जेनमें कायमथी, और यह जैनमजहबपर पावंदथा, जैनाचार्य आर्यस्रहस्ती महाराजकी धर्मतालीमसें इसकीं इसकद्र दिलजमाइ होगइथीकि-दुनियामें आलादर्जेकी चीजधर्म है, इसने वहुतसे जैन मंदिर और जैनपूर्तिये तामीरकरवाइ, तीर्थशत्रुंजय गिरनारपर अवभी उसकेवनायेद्ववे-जैनमंदिर-मौजूदहै, तीर्थेकरमहा-वीरके निर्वाणवाद (४७०) वर्स पीछे, उज्जेनके तख्तपर विक्रमा-दित्यद्ववा, जिसका संवत् अवतक जारीहै, संवत् (१०८) में ग्रुल्क

काक्मिरके सोदागिर जावडकाहकोठने तीर्थक्षत्रुंजयपर बडेआिकशान जैन मंदिर तामीर करवाये, जावडकाहकोठ बडे खुक्कनसीब और इकबालमंद हुवे,—

महाराज कनिष्क इस्वीसनके पहले सेकहेमें हुवा, यहबात इतिहासिक किताबोंसें साबीतहै, महाराज हुविष्क-महाराज वासुष्क ये—दोनों-महाराज कनिष्कके बादहुवे, कइजैनिशालालेख इनकेजमानेके हिंदमें मिळते हैं, मगर-ये-खुद जैन नहीथे,-सर एलेकझेंडर किनेगहेमके आरकीओलोजिकल सर्वेरिपोर्ट में कई जैनलेख छपेहुवेहें एपिग्राफिया इंडिका अखबारमें प्रोफेसर ज्योर्जबुलरके छपवाये हुवे कई जैनलेख मौजुदहै,-इंडियन आंटीकवेरी अखबारमेंभी-कई जैनलेख छपेहुवेहें,-तीर्थपावापुरी जो-पूरवमें एकमश्रहुर जैनतीर्थहें, वहांपर बीचतालावके तीर्थकर महावीरस्वामीका मंदिर पुरानाहें,-गांवमें जो बीच धर्मशालाके तीर्थकर महावीरस्वामीका मंदिरहें, तीर्थ कर महावीरस्वामीकी मूर्त्ति संवत् (४४४) की प्रतिष्टित उसमें जायेनिशीनहें, संवत् (८०२) के अर्सेमें जैनाचार्य बप्पभटस्र्रिकी धर्मनशिलमें गोपाचलके आमपाल राजाने गोपाचल दुर्गमें एकबडाजैन मंदिर बनवायाथा, यहबात चतुर्विशति प्रवंधमें लिखी है,-

किताव पाचीनिशलालेखमाला-जो-निर्णयसागर-पेस-वंबइमें छपीहे कितनेक जैनलेख उस्मेभी दर्ज है गवरमेंट सेंटलपेस वंबइमें जो-आर्कीओलोजिकल सर्वेरिपोर्ट सन (१९०४) से लेकर (१९०९) तकके छपेहै, उनमेभी कितनेक जैनलेखोंका मतलब छपोहै, जिनकों तवारिखपढनेका शौखहै देखनेसें बखूबी माल्महोगा,

भावनगर पाचीन शौधसंग्रह भाग पहला-जोकि-भावनगर दरवारी पेसमें छपाहै, उसके पृष्ट (९३) पर नाडलाइके जैनमंदि-रका लेख संवत् (९६४) के अर्सेका छपाहै, विमलशाहशेठ-जो-

कि-राजा-भीमदेवके दिवानथे, संवत् (१०८८) के अर्सेमें उनोने आबुपहाडपर वडे खूबसुरत जैनमंदिर बनवाये, संवत् (११८३) के अर्सेमें महाराज सिद्धराजजयसिंहने शहरपाटन-मुल्कगुजरातमें तीर्थकर रिषभदेवमहाराजका मंदिर निहायत उमदा बनवाया, और उसमें वडी आलिशान मूर्तिं तीर्थेकर रिषभदेवजीकी तरूतनशीन किइ, जैनाचार्य-श्रीदेवसूरि महाराजकी हयातीमें नाहडमंत्रीने को-रंटक वगेरा नगरमें वहुतसें जैनमंदिर तामीर करवाये, गुर्जरदेशभू-पावली ग्रंथके (४१) के श्लोकमें बयानहै कि-संवत् (११९९) में राजाकुमारपाल हुवा, जो जैनमजहबपर निहायत साबीतकदमथा, उसकी सलतनतका तस्त अणहिल्लपुरपट्टन मुल्कगुजरातमेथा, गुरुहे-मचंद्राचार्यकी धर्मतालीमसं उसके दिलकी तसल्ली होगइथी कि-म्र-काबिले धर्मके दुनियामें कोइचीज नहीं, इसीसवब जैनग्रंथोमें पर-माईत कुमारपालभूपाल कहकर इसको लिखाँहै, इसने शहर अण-हिल्लपुरपटनमें त्रिभुवनविहार नामका मंदिर वडीलागतका तामीर करवायाथा. हेमचंद्राचार्य संवत् (१२२९) में देहांतहुवे, और उनकी उमर (८४) वर्सकीथी, राजाकुमारपाल गुरु हैमचंद्राचार्यके फरमानपर इसकदर पावंदथाकि-जो-कुछ-वे-कहतेथे मंजूर कर-ताथा, चुनाचे ! एकदफा राजाकुमारपालने तीर्थतारंगापर बहुत उंचा जैनमंदिर बनवाना शुरु किया, कितनाक बनभी गयाथा, इत्तिफाकन ! गुरु हैमचंद्राचार्यभी-वहां-तश्वरीफछाये, और मंदि-रकों देखकर कहनेलगेकि-बहुतऊंचे मंदिरकी उमर कमहोती है, म्रुनासिव है अब इसकों ज्यादहउंचा नही बनाना, राजाकुमारपा-स्रने उसीवरूत जितना बनायाथा उतनाही कायमरखा, और उस-पर शिखर बनादिया, देखो गुरुके फरमानपर राजाकुमारपाल कि-सकदर पावंदथा ?

संवत् (१२९८) के असेंमें राजावीरधवलके दिवान वस्तुपाल तेजपालने तीर्थआवुपर वहे खूबसुरत जैनमंदिर तामीरकरवाये, जो अवतक मौजूदहै, ये दोनों भाइ—आसराजके बेटे और इनकी वाल्दाका नाम कुमारदेवीया, वस्तुपाल तेजपालने अटरांवर्स तक दिनानिगिर किइ, और तेरहदफे तीर्थयात्राके लिये संघ निकाले, इस किताबके पृष्ट (१२५) पर तवारिख आवुके वयानमें—जो—शकुनिका विहारका लेखछपगयाहै पढनेवाले महाशय इसकों आरासण तीर्थका लेख समजे, वयोंकि—शकुनिका विहारका आकार आवुप-हाडपर तेजपालके वनायहुवे मंदिरकी परकम्मामेंभी है, और आरा-सणतीर्थके नेमनाथजीके मंदिरके गुढमंडपमेंभी है, राजाओके तामीर करवायहुवे मंदिरोंमें दिवारोंपर पेस्तर गजथर—या—अश्वथर जहर लगाये जातेथे. देखो ! आरासण तीर्थमें तीर्थकर नेमिनाथजीके मं-दिरमें गजथर लगाहुवाहै,—

अयोध्या-राजगृही-चंपा-हिस्तनागपुर वगेरा नगरीये-जोजैनशास्त्रोमें लिखी है, जमाने हालमेंभी वही है, दुसरी नही, अलबत्ते ! पेस्तर वडीधी, अबलोटी रहगइ, औरभी कइनगर औसे हैजो-पेस्तर बडेथे, अब लोटेरहगये, जो-लोगकहते है-ये उपरिलखी
नगरीयां दुसरीजगह होनाचाहिये, तो किसजगहपर है उसका सबुत
पंत्र करे, भाषांतर राजतरांगिणी-जो-संवत् (१९५४)में बंबइ गुजराती भिटिंग भेसमें छपाहै, पृष्ट (१८) पर फुटनोटकी जगह बतलाया है कि-पेस्तर जमाने अशोकके मुल्क काश्मिरकी राजधानी
श्रीनगरमें छलाल मनुष्य आबादथे, गंगासिंधुनदीकी लंबाइचौडाइ
पेस्तर ज्यादहथी अब कमरहगइ, इसीतरह कइ बढेबडे शहर लोटे
होगये है, लंकानगरी जमाने रावनके बडी रवन्नकपरथी, आजकल-वो-रवन्नक नही रही, इसीतरह उपर लिखीहुइ बातभी समजना

चाहिये, कोइ महाबाय इससे ज्यादह खुलासा देवे-तो-उसकों मंजूर करना चाहिये, क्योंकि-दुनियामें-एकसेएक ज्यादह अकलमंद मौ-जूदहै, इस किताबके पढ़नेसे गोया! मुल्कोंकी सफर घरवेठे हासिल होसकेगी, मुंजे इसके लिये वहुत अर्सेतक सफर करनापड़ा, और बहुतसी किताबोंका मजमून अकजकरके इसमे लिखनेका इत्तिफाक हुवा है,—

श्रीयुत-श्रावक-हवसीलालजी-पानाचंदजी साकीन वालापुर सुल्क वराडने इसंकितावको छपवाकर जाहिरिक इहे, और कुलुखर्चा उनीनेंदियाँहे, उनकी तस्वीरभी इसिकतावमें दिइगइहे, आलीहिंम्मत श्रावकहो-तो-ऐसेहो, जो-धर्मके काममें इसकदर खयाल रखतेहैं, नक्षण्णा हिंदुस्थानकाभी इसिकतावकी अखीरमें दर्जकरिदयाहै, ताकि तमामशहर-व-शहर बखुबी मालूम होसकेंगे वाद चंद्उमदा लिक तिमामशहर-व-शहर बखुबी मालूम होसकेंगे वाद चंद्उमदा लिक जिसकानाम गुलदस्तेजराफत देखोंगे, पहकर दिल खुशहोंगा, राग रागिनीके भेद और कुल स्तवनभी अनेअले कियोंके बनाये हुवे इसमें दर्जिक येहैं अलहासिल ! ज्यादह लिखनेकी चंदाजरुरत नहीं. जब किताब नाजरीनोकी पाकनजरोंसे गुजरेगी. उमीदहें जरुर प्संदिदीदा होगी, जोजो महाशय इस किताबके अवलसे ग्राहक हुवेहें उनके मुबारिक नामभी अखीरमें दर्ज करिदयेहै,

मुल्कोंकी सफरकरनेसे आदमीकों चतराइ हासिल होती है, तीर्थमृमिमं जानेसे दिलीतकलीफ रफाहोकर धर्मपर एतकात बढ-ताहै, जिसजगहपर तीर्थकरोन और मुनिमहाराजोने ध्यान कियाहै वहांपर जानेसे धर्मपर दिल रजुहोताहै, न-माल्म-जींदगी किसरीज दमादेजायगी, और इस चोलेका गीरना किसजगह होगा, इसपर खयालकरतेहै-तो-दिलपर जहरधर्मका असरहोताहै, कोइशस्त्र नया मंदिर तामीर करवाताहै. कोइ-मुन्ति-यनवाताहै, मं-जैनतीर्थोंकी

तपसीलवार हकीकत लिखकर आमजैनोके सामने रखताहुं, नाकिहरेकश्रावककों तीर्थयात्राकेलिये ख्वाहेस पैदाहो, तीर्थोमें तरहतरहके
मंदिर-मुर्त्तियं-चरनपादुका-उंचेउंचे शिखर—कारिगीरि-गुफानदी-और-पुराने शिलालेख देखकर दिल्लपर जहरअसर-होगा,
इरादा शुभहोगा, और शुभइरादेसे पुन्यानुवंधिपुन्य हासिलहोगा,
पही सबबहै, इसिकताबके बनानेका, किताब-जैनतिर्थगाइडका लिलाण मैने अंदाज आठवर्स पेस्तरसें तयारिकयाथा, मगर मुस्कोंकी
सफरमें कितनाक जातारहा, जिसकी वजहसें दुवारा तीर्थोमें जाकर,
तलाश करनापडी, इसिलेये इसिकताबके छपनेमें इतनीदेरी हुरहै,
आमलोग इसिकताबकों पढकर फायदा हासिलकरे,—

ब−कल्म-विद्यासागर-न्यायरत्नं-

मुनि—शांतिविजय—



(सवैया,-)

धातनमंकलघोतबडा-रत्नोंविच भाषतहै वरहीरा, कुंजरमांही कहे हरिकोंइभ-केशरीसिंहमहाबलबीरा, फुलनमें अरविंदबडा-नगकंबलसें नही दिसतत्त्रीरा, त्यूं सबसंघविषे श्रुतचारित-धारग्रुनीश्वर श्रोभतधीरा,

(अनुष्टुप्-वृत्तम् ,)

स्वस्तुतिं परनिंदां वा-कत्तीलोकः पदेपदे,	
परस्तुतिं स्वनिंदां वा-कत्तीं कोपि न दृश्यते,	8
उत्तमस्य क्षणं क्रोधो-द्वियामं मध्यमस्य तु,	
अधमस्य त्वहोरात्रं-चिरक्रोधोधमायमः,	ર
उत्तमपत्तं साहू-मिझमपत्तं च सावया भणिया,	
अविरय सम्मदिही-जहन्नपत्तं ग्रुणेयव्वं,	3
मिथ्यादृष्टिसदस्रेषु-वरमेको ह्यणुत्रती,	
अणुत्रति सहस्रेषु-वरमेको महात्रती,	8
महात्रतिसद्दसेषु-वरमेको हि तात्विकः,	
तत्तात्विकसमं पात्रं -नभूतं न भविष्यति,	Ģ
साधूनां दर्शनं पुण्यं-तीर्थभूता हि साधवः,	
तीर्थ फलति कालेन–सद्यः साधुसमागमः	६
अन्नं पानं च वह्नं च–आछयः श्चयनाश्चनं,	
श्रृषा-वंदनं-तुष्टिःपुण्यं नवविधं स्मृतं,	૭
पंचैतानि पवित्राणि–सर्वेषां धर्मचारिणां,	
अहिंसा सत्यमस्तेयं-त्यागो मैथुनवर्जनं,	C



७ [फेहरिस्त-जैनतीर्थ गाइड,]

	विषय,	CT KT
	1944,	र्षष्ट,
१	इवादत जिनस्तुति सवैया,	. ' ' ' १ '
	थुरुआत किताब.	3
३	हिदायत-उल-आम,	રૂ
४	कातुन रैलवे,	18
	तालीम धर्मशास्त्र,	?9
६	वयान शकुनशास्त्र,	२२
9	दरवयान अष्टांग निमित्त,	२६
6	तवारिख शहर बंबइ,	२७
९	बयान शहर सुरत,	इद
१०	तवारिख अश्वावबोध और शक्कनिका विहार,	३७
88	बयान शहर बडोदा,	४६
१२	दरबयान शहर खंभात,	४७
१३	बीच बयान शहर अहमदाबाद,	48
	बयान विरमगांव-वढवाण-और-लीमडी,	47
	तबारिख तीर्थशत्रुजय,	42
१६	बयान शिहोर-भावनगर और गोघा,	90
	तवारिख तीर्थगिरनार,	60
	बयान पौरबंदर और द्वारिका,	८९
१९	षयान राजकोट और जामनगर,	९३
२०	बीचबयान भद्रेश्वर और घतकछोल,	९४
	तवारिख तीर्थ शंखेश्वर,	९७
	तवारिख तीर्थ भोयणी,	29

२३	तवारिख तीर्थ तारंगा	१००
२४	तवारिख तीर्थ आरासण,	१०६
२५	तवारिख तीर्थ आचु,	११७
२६	तवारिख तीर्थ वंभणवाड,	१३३
२७	तवारिख पंचतीर्थी (वरकाणा-नाडोळ-नाडळ	गइ−घाणे-
	राय–और–रानकपुर,)	१३५
२८	दरवयान पाछी और जोधपुर,	१४७
२९	तवारिख ओश्चियानगरी,	१४९
30	बयान शहर अजमेर और चितोडगढ,	१५५
	बयान शहर उदयपुर,	१५९
३२	तवारिख तीर्थ केश्वरिया,	१६१
₹₹	तवारिख तीर्थ फलौदी (मेरटा,)	१६६
રૂપ્ટ	बयान शहर नागोर और विकानेर,	१७१
34	दरबयान शहर जयपुर और अलवर,	१७३
३६	बयान शहर देहली,	१७६
	तवारिख तीर्थ इस्तिनापुर,	?60
Şζ	बयान शहर अंबाछा, छिधहाना और जालंधर	, १८६
₹9	द्रवयान शहर अमृतसर,	१८७
80	तवारिख तीर्थ कांगडा, (किंगढ,)	१८९
४१	बयान शहर लाहोर और गुजरानवाल, (मुल	तान) १९०
૪ર	तवारिख तीर्थ वीतभयपत्तम.	१ ,९२ .
	बयान शहर जंबू और ग्रुल्फ काविमर,	१९४
	तवारिख तीर्थ कंपिलपुर,	१९६
	तवारिख तीर्थ मथुरा,	१९९
	बयान शहर आगस,	२०३

फेहरिस्त-जैनतीर्थगाइड,	(१६)
४७ तवारिख तीर्थ शौरीपुर,	२०५
४८ दरवयान कानपुर, (लखनउ,)	200
४९ तवारिख तीर्थ कौशांबी,	ः ^च २९८
५० द्रबयान शहर इलाहावाद और फैजाबाद,	२१२
५१ तवारिख तीर्थ रत्नपुरी,	२१५
'२ तवारिख तीर्थ अयोध्या,	२१८
५३ तवारिख तीर्थ सावथ्यी,	२० २२२
५४ बयान मुल्क नयपाल, और पहाड हिमालय,	२२४
५५ तवारिख तीर्थ बनारस,	२२.६
५६ तवारिख तीर्थ सिंहपुरी,	२२९
५७ तवारिख तीर्थ चंद्रावती,	२३१
५८ तवारिख तीर्थ भद्दीलपुर,	`२३३
५९ तवारिख तीर्थ राजगृही,	२३५
६० तवारिख तीर्थ कुंडलपुर और सुवेविहार,	२४५
६१ तवारिख पावापुरी और गुणज्ञिलवन उद्यान,	२४७
६२ तवारिख तीर्थ पटना,	२५५
६३ तवारिख तीर्थ मिथिला,	२६२
६४ तवारिख तीर्थ काकंदी,	२६६
६५ तवारिख तीर्थ क्षत्रीयकुंड गांव,	२६७
६६ तवारिख तीर्थ चंपापुरी,	२६९
६७ तवारिख तीर्थ समेतिशिखर	२७२
६८ तवारिख र्तार्थ बर्द्धमान,	२९४
६९ तवारिख शहर-कलकत्ता,	२ ९५
ु७० तवारिख मुल्क आसाम और ढाका,	२९९

७१ तनारिख शहर मुशिंदाचाद,

३०१

७२ परिसह तीर्थेकर महावीरस्वामीके,	३०२
७३ वयान शहर विलासपुर,	३०६
७४ चयान शहर रायपुर,	३०८
७५ दरवयान शहर नागपुर,	३०९
७६ वयान शहर उमरावती,	३१०
७७ वयान आकोला और बालापुर,	399
৩८ तवारिख तीर्थ अंतरिक्षजी, मुकाम सीरपुर, मुल्क वराड	,३१२
🛰 बयान भ्रसावल-बुर्हानपुर और-खंडवा,	३१४
८० तवारिख तीर्थ मांडवगढ,	३१६
८१ बयान शहर इंदोर,	३१७
८२ तवारिख तीर्थ उज्जेन,	३१७
८३ तवारिख तीर्थ मकसीजी,	३२०
८४ वयान शहर रतलाम,	३२१
८५ बयान शहर मंदसोर,	३२२
८६ बयान जलगांव-पांचोरा-और-मनमाड,	३२३
८७ बयान शहर औरंगाबाद और जालना,	३२४
८८ दरवयान शहर हैदरावाद, (दखन.)	३२६
८९ तवारिख तीर्थ कुल्पाकजी,	३२७
९० बयान शहर वेजवाडा,	330
९१ दरवयान शहर मद्रास,	३३१
९२ ब्रीचवयान शहर त्रिचिनापछी और मदुरा,	333
९३ बवारिख तुतीकोरीन,	३३५
९४ ववारिख लंका,	३३५
९५ बयान इरोड,	339
९६ दरवयान कोचीन,	380

फेहरिस्त-जैनतीर्थगाइड,	(१७)
९७ बीचबयान कलिकोट,	388
९८ वयान शहर वेंगलोर,	३४२
९९ दरवयान शहर बळारी और किष्कंघा,	383
१०० बीचबयान गदक और हुबली धारवाड,	384
१०१ बयान बेळगांव,	३४६
१०२ वयान गोकाक,	३४६
१०३ दरवयान सितारा,	३४७
१०४ तवारिख शहर पुना,	३४७
१०५ वयान शहर अहमदनगर,	३४९
१०६ वयान∶शहर एवला,	३५०
१०७ तवारिख तीर्थ नाशिक,	३५१
१०८ तवारिख तीर्थ थाना,	३५२
१०९ बयान विरान और नामांतर होगयेडुवे तीर्थीका,	३५३
११० जैनचेत्यस्तव,	३५७
१११ नसिइत-उल्ल-आम,	३६०
[गुलद्स्ते-जराफत.]	
? एक कंजुसशेठ और शेठानीका छतिका,	१७६
२ एक मालिक और नोकरका किस्सा,	३७२
३ एक कमअकल लडकेका लतिफा,	३७३
४ एक शुस्त आदमीका जिक्र,	३७५
५ एक कंजूसका किस्सा,	३७५
६ एक साहुकार और घोबीकी तकरीर,	३७६
७ वेटेके लिये वापकी हिदायत,	३७७
८ एक पंडित और वेसमज विद्यार्थी,	306
९ वालिद् और लडकेकी गुफतगृ,	३७९

१% हिकायत एक गुरुजी और श्रावककी,	३७९
१९ नवजवान और बुढेकी गप्प,	360
१२ एक हकीम और मरीजकी तकरीर,	३८१
१३ एक कर्जुंसका जवाब,	३८१
१% एक हकीम और मरीजका बयान,	ं इटर
१५ औरत मर्दका मलाइकेलिये झगडा,	३८२
१५ एक नोकरकी फिजहूल बडाइ,	१८३
१७ एक दिवानेका किस्सा,	६८६
१७ एक मुसाफिरका लितफा,	३८३
१५ फुलकी वडाइ,	३८४
२० एक बुढेकी चालाकी,	३८५
२१ दोस्तोंकी वातचित,	३८५
२२ एक घोडेसचारका मजाक,	३८५
२३ दुनियाकी हिस्सीका किस्सा,	३८५
२४ एक कंजुसका लितफा,	७८६
२५ एक शेर और सुअरका मुकाबिला,	७८६
२६ दोस्तोंकी वातचित,	366
२७ जरबुळ अमसाल,	३८९
२८ अफीमचीका किस्सा,	\$ 9 0
२९ एक अकलमंद मुसाफिर और भालुका लिका,	३९१
३० एक बाबुसाहवकी मुलाकात,	३९२
३१ चौरीका नतीजा,	३९२
२२ एक चौरकी रहमद्गिली,	303
३३ हिदायत गुरुजीकी चेलेकों,	३९३
३४ एक वापबेटेपर दुनियाकी जवान,	३९४

TO CONTRACT TO THE AREA CARREST CONTRACTOR C	~~~~~~~
३५ एक मालिक और नोकरका किस्सा,	194
३६ तकदीरका तकाजा,	FRE
३७ गुरुजीसे चेलेका सवाल,	300
^{३८} रास्तेकी तलाशीपर किसानकी हाजिर जवाबी,	396
३९ एक नजुमी पंडितकी चालाकी,	396
४० एक मञ्करेकी गुस्ताखी,	300
४१ बापकेशाथ वेटेकी वेंअदबी,	800
४२ एक वजीरकी उमदा तकरीर,	800
४३ एक हकीम और मरीजका मजाक.	४०१
४४ मुताविक धर्मशास्त्रके चारचिजोकी तस्राज्ञ,	४०२
४५ दो मुसाफिरकों एक किसानका माकुल जवाब.	४०२
४६ मोसिम कौनसा अछा,	४०३
४७ जैनधर्मकी चंदबातें,	803
४८ दोस्तकेसाथ दोस्तकी चालाकी ,	४०४
४९ रावाल बादशाह अखबरका दरवारी ग्रुसाहिबोंसे,	808
५० एक अकलमंद मुन्शी,	∀ 0€
५१ एक अनपढ राजेका जिक्र,	800
५२ एक जजसाहब और मुजरीम,	800
५३ एक हाजिर जवाब लडका,	308
५४ संस्क्रत इल्मकी तरकी,	208
५५ एक कंजुसका मजाक,	४१०
५६ एक जाहिल नोकरका लितिका,	86.
५७ चार दामादोंका किस्सा,	888
५८ एक मालिक और ग्रस्ताख नोकर,	853
५९ दरियावकी सफर,	
	888

६० बादशाहका सवाल और अकलमंदका जवाब,	४१४
६१ एक उस्ताद और वेअदब लडका,	४१५
६२ एक वेवफा लड्का,	४१५
६३ सांप और चुहेकी नकल,	४१६
६४ एक शेटके घर चोरोंका आना,	४१६
६५ गुरुजीकी नसिहतपर चेलोकी"गुस्ताखी,	४१७
६६ भाइ और बहेनका किस्सा,	४१८
६७ एक उस्तादकेसाथ शागिर्दकी ग्रस्ताखी,	886
६८ एक हकीमसाबका नाडी देखने जाना,	४१९
६९ चारपंडितोंका लतिफा,	४२०
७० उंटके कानपर मछरकी अवाज,	४२२
७१ जिनगुणस्तवन और उपदेशिक पद,	४२३
७२ जैन तीर्थगाइडके ग्राहकोका लिए,	४३३
🖙 [फेहरिस्त-सवाने उमरी,]	
नेन्यास्य मान्यवेद्यान्योशके-रहः-	<u> अल्कास</u>
जनाब-फेजमाब-मग्जनेइल्म-मोअले-उल-	
जैनश्वेतांबर धर्मोपदेष्टा-विद्यासागर-न्यायरत्न-म	नहाराज
जैनश्वेतांबर धर्मोपदेष्टा-विद्यासागर-न्यायरत्न-म शांतिविजयजीकी सवाने उमरी, (जीवन चरित	महाराज न,−)
जैनश्वेतांबर धर्मोपदेष्टा-विद्यासागर-न्यायरत्न-म शांतिविजयजीकी सवाने उमरी, (जीवन चरित '१ शुक्ष्यात सवाने उमरी,	नहाराज न,-) १
जैनश्वेतांबर धर्मोपदेष्टा-विद्यासागर-न्यायरत्न-म शांतिविजयजीकी सवाने उमरी, (जीवन चरित	महाराज न,−)
जैनश्वेतांबर धर्मोपदेष्टा-विद्यासागर-न्यायरत्न-म शांतिविजयजीकी सवाने उमरी, (जीवन चरित '१ शुक्ष्यात सवाने उमरी,	नहाराज न,-) १
जैनश्वेतांवर धर्मोपदेष्टा-विद्यासागर-न्यायरत्न-प शांतिविजयजीकी सवाने उमरी, (जीवन चरित ११ शुरुआत सवाने उमरी, २ कायदे जैनसुनियोके,	नहाराज न,-) १ ६
जैनश्वेतांबर धर्मोपदेष्टा-विद्यासागर-न्यायरत्न-स् शांतिविजयजीकी सवाने उमरी, (जीवन चरित ११ शुरुआत सवाने उमरी, २ कायदे जैनग्रुनियोके, ३ चक्र दीक्षालग्नका,	नहाराज न,-) १ ६ ८
जैनश्वेतांबर धर्मोपदेष्टा-विद्यासागर-न्यायरतन-प शांतिविजयजीकी सवाने उमरी, (जीवन चरित ११ शुरुआत सवाने उमरी, २ कायदे जैनम्रनियोके, ३ चक्र दीक्षालग्नका, ४ वयान दीक्षालग्नका, ५ इस्तरेखा और दिगरइशारे जिस्मके,	नहाराज न,-) १ ६ ८ ९
जैनश्वेतांबर धर्मोपदेष्टा-विद्यासागर-न्यायरतन-प शांतिविजयजीकी सवाने उमरी, (जीवन चरित ११ शुरुआत सवाने उमरी, २ कायदे जैनमुनियोके, ३ चक्र दीक्षालग्नका, ४ वयान दीक्षालग्नका, ५ इस्तरेखा और दिगरइशारे जिस्मके, ६ चौमासा शहर होशियारपुर, मुल्क पंजाब,	नहाराज न,-) १ ६ ८ ९
जैनश्वेतांबर धर्मोपदेष्टा-विद्यासागर-न्यायरतन-प शांतिविजयजीकी सवाने उमरी, (जीवन चरित ११ शुरुआत सवाने उमरी, २ कायदे जैनम्रनियोके, ३ चक्र दीक्षालग्नका, ४ वयान दीक्षालग्नका, ५ इस्तरेखा और दिगरइशारे जिस्मके,	नहाराज न,-) १ ६ ८ ९० १३

९	. संस्कृत वाक्य, जिसकों हिब्जकरनेसे बख्बी संस्	हत बो-
	लसकोगे,	१७
१०	चौमासा शहर होशियारपुर मुल्क पंजाब,	२२
33	चौमासा शहर विकानेर ग्रुट्क मारवाड,	२२
	चौमासा शहर अहमदाबाद, मुल्क गुजरात,.	२४
	चौमासा शहर सुरत, सुल्क गुजरात,	२५
	चौमासा शहर पालिताना, जिले काठियावाड, मुल्क	सौराष्ट्र,२७
	चौमासा शहर रांधनपुर, ग्रुल्क गुजरात,	२९
	चौमासा शहर अहमदाबाद, मुल्क गुजरात,	३०
	जैन मंतव्यपकाश–	38
	चौमासा शहर जयपुर, राजपुताना,	36
	चौमासा शहर देहली,	३६
	चौमासा शहर लशकर गवालियर,	39
	व्याख्यान धर्मशास्त्रके तेरहकानुन,	४०
	व्याख्यान मृत्तिंपूजाका,	४२
२३	चौमासा शहरे लशकर गवालियर,	86
२४	व्याख्यान सबुती कर्मपर,	86
२५	चौमासा शहर लशकर गवालियर,	4२
२६	व्याख्यान जग्तकर्त्ताके बारेमें,	५३
२७	चौमासा शहर लशकर गवालियर,	५४
	पृथवी फिरती है-या-चांदसूर्य,	. ५५
	चीमासा शहर भोपाल,	५५
	चौमासा शहर इंदोर, मुल्क मालवा,	५६
	चौमासा शहर रतलाम. ग्रुटक मालवा,	५६
32	कवि मोहनलालजी साकीन कुशलगढके बनायेहुवे	
-	क्तिपर दोहे और कवित.	લહ

وما والرواء والمعال	Charles Control of the Control of th	
३३	चौमासा शहर मंदसोर मुल्क मालवा,	५९
३४	चौमासा शहर लखनउ-अवधमदेश,	६०
	थुरुआत रैलविहार,	६१
	चौमासा शहर मुर्शिदाबाद मुल्क बंगाल,	६२
	चौमासा शहर कलकत्ता, मुल्क वंगाल,	६४
	चौमासा शहर मंदसोर, मुल्क मालवा,	६८
	चौमासा शहर आकोला, मुल्क वराड,	६९
४०	चौमासा शहर जवलपुर, मध्यमदेश,	195
	कवि सुरजमलजीके वनायेहुवे गुरुभक्तिपर दोहे औरशेयर	,७३
४२	चौमासा शहर धुलिया, खानदेश,	ં ૭૬
	चौमासा शहर पुना मुल्क महाराष्ट्र,	७६
	चौमासा शहर आकोला, वराड,	96
	कवि सुरजमलजीके बनायेहुवे गुरुभक्तिपर कवित्त दो	_
• (और पद,	े८१
os.	चौमासा शहर हैदराबाद. दखन,	८१
	•	•
	महाराजका हमेशांका वर्ताव,	८४
85	ग्रुरुभक्तिपर लावनी,	८६
४९	लावनी अष्टपदी,	८७
५०	महाराजकी वनाइहुइ पांच गुहली,	९ ३
	सोभागचंद्रजीमुणोतका बनायाहुवा गुरुभक्तिपर पद,	९४
	तीर्थकर महावीरस्वामीके जन्मवर सिद्धार्थ राजाकेवर खु	-
• •	भीकी निशानी.	, ५४
	4114)4 141411114	~ 0



This book is published by Hawsiláljee,-Pánáchandjee. Bálápur,-Dist Akolá, (Berrár)

व्यान-उमरी,]

The Life and Times of Mooni Shantivijejee,—

जनाव फेजमाव-मग्जनेइल्म-जैनश्वेतांवर धर्मोपदेष्टा-विद्यासागर-न्यायरत्न-महाराज-शांतिविजयजीकी सवाने उमरी-(यानी,) जीवन-चरित.)

महाराजका जन्म संवत् (१९१७) में शहरभावनगर--जिले काटियावाड मुन्क गुजरातमें हुवा, उनकेवालिदका नाम मानक-चंदजी--और वाल्टाकानाम रिलयातकवरथा, दोनों जैनमजहवपर साबीतकदम और पके एतकातवालेथे. जब उनकेघर वेटा पैदाहुवा वडीखशी हासिलहुइ, और नाम उनका हठीसिंहरखा, जब उनकी उमर करीब आठसालकी हुइ इनकेवालिदने इनकों इल्म हासिल करनेकेलिये मदर्सकों भेजे, और इनकी छोटीउमरमें अकल इतनी तेजयीकि-किसीशख्शसे एक मरतवा कोइ बात सुनलेतेथे फौरन याद होजातीथी. और लोग इनकीअकलकी तारीफकरतेथे. दश वर्षकी उमरमें इनकेवालिदका इंतकालहोगया और इनकेचचासाहब शेठ मुलचंदजी इनकी परवरीश करनेलगे. हमेशां अपने भतीजेकों जैनमजहबकी बहुतसी हिकायते और किस्से कहानी कहाकरतेथे, पस! इनकों बहुतसीहिकायते बडेबडे आलिम फाजिलमुनिओंकी मुहजवानी याद होगइ, और-य-इसकदर छोटी उमरमेंभी देव-पूजन करतेथे,

नव इनकी उमर बारांसालकी हुइ वाल्दाका इंतकाल हुवा. सीर्फ! चचासाइब-और-चचीसाहिबा इनकीपरवरीशकेलिये मौजूदये. और उनोने इनकों दिलोजानसें परपरीशिक आ चौदहवर्षकी उमरमेंइनोने सातगुजराती किताबेंपटकर इल्मअंग्रेजीपटना शुरु किया. और दोसालमेंअंग्रेजीकी तीनिकताबेंपटली. शहरभावनगरमें जो जैनमजहबीमदर्सा जारीथा वहांभी जाकरमजहबी इल्मपटतेथे. अछीअछी नजीरे अपनेमजहबकी जो-आलिमफाजिलोंकी बनाइ हुइथी-जवानी-याद करतेथे, जवकभी दोस्तोकेशाथ-हवाखोरीकों या-खेलकरनेकोंजातेथे यहीकहाकरतेथेकि-दुनिआमें धर्म एक-आलादर्जेकीचीजहै. और दुनयवीकारोबार उसकेपीछे है, एक सुखी एक दुखी-एक अमीर-और-एक गरीब-यहसब पूरवजनमके किये हुवे पुन्यपापका फल है. दोस्तलोग इसवातकों सुनकरहसतेथे और कहतेथेकि-अगर-एसेहीधर्मपावंद बनतेहो-तो-हवाखोरीकों-क्यों आये? साधु होजानाबहेतरहै.-उनके जवाबमें--यही-फरमातेथेकब-वहर्दिन आवे, और-में-साधु वनु.

अठार हर्वर्षकी उमरमें पंचमतिक्रमण-पूजन-जिवावचार नव-तत्व-दंडक-कर्भग्रंथ-क्षेत्रसमाग्र-और-स्वरोदयज्ञान वगेरा जवानी हासिल करिल्येथे, -अकसर जब शहरभावनगरमें कड़ जैनम्रुनिम-हाराज अध्याकरतेथे तव ये-उनकी खिदमतमें मशगुलरहतेथे, और शहरकेआदमी इनकेलिये अकसर कहाकरतेथेकि-क्या! आपभी साधु होजाओगे. ?-एक वख्तका जिकहै जब महाराजश्री दृद्धिचं-दजीसाहब-जो-ब्रंड आलिमफाजिल जैनम्रुनिथे शहर भावनगरमें तशरीफ लाये और उनोने जबव्याख्यान धर्मशास्त्रका वाजिक्या-येभी-उनके व्याख्यान मुननेकोंगये, और उनोनेजब यहव्याख्यान दियाकि-जो-शख्श-रातकेवख्त खानेपीनेसे परहेजकरेगे वहदुर्ग- तिकी सफर-न-करेगें, इनोने यहवात सुनकर उसीतारिखसें हमे-शांकेलिये अपना खानापीना रातकेवरूतका कतइ छोडदिया.

संवत् (१९३२) में जब महाराजश्री आत्मारामजी-आनंद-विजयजी-जो-बढे आलिमकाजिल-और-जैनमजहबके बढेपावंद थे-भावनगरमें-तशरीफलाये औरचारमहिने उनोनेअय्याम वारीश कयामकिया उसवरुत–येभी–वास्तेमजहबी बहेससुननेके जायाक-रतेथे, चारमहिनेतक हरहमेश व्याख्यानसुनतेरहे, और इनका एतकात धर्मपरवढा. और यहभीदिलमें मुसम्मीमइरादा करलिया-कि–दुनयवी–कारोवारछोडकर दीक्षालेना वहेत्तरहे, बादवारीशके जब ग्रहाराजश्री आत्मारामजी-आनंदविजयजीसाहब-करीबएक हजारश्रावकछोगोकेशाथ तीर्थगिरनारकी जियारतकों-पांवपैदछ जानेपरआमादाहुवे इनके चचासाहब मूलचंदजीने अपनेरिस्तेदारो-केशाथ इनकोंभी तीर्थगिरनारकी जियारतकेलिये भेजदिये, भाव-नगरसेरवानाहोकर शत्रुंजय-तलाजा-महुवा-दीव-वेरावलपटन-मांगरोल-धोरांजीहोतेहुवे तीर्थीगरनारकों पहुचे. औरवहांकी जि-यारतिकइ, बादचंदरीजके जबतीर्थ गिरनारसें रवानाहोकर शहर जामनगरकों गयेऔर वहांकीभी जियारतिकइ, वहांसे महाराजश्री आत्मारामजी—आनंदविजयजीसाहब-मुल्कपंजाबकों जानेकेलिये तयारहुवे, और भावनगरके श्रावकलोग अपनेवतनकों लोटनेलगे. े उसवख्त इनोने दोकोश्चपर एकधुवावनामकेगांवमं जाकरदीक्षा इंग्लियारिकइ, दुसरेरोज रिस्तेदारोनेतलाशिकइ और इनकोंअप-नीसोवतमें नहीदेखे–तो–माऌमहुवाकि–इनोनेदीक्षा इख्तियारकर छिइँहे, रिस्तेदार**लोग इनकेपास आयेऔर इनकासाधुपनेका** वेष \ अलगकरदिया, झोलीपात्रेखोसकर इनको वापिसजामनगरमेंलाये. और अपनेशाय भावनगरकोलेचले, औरजब-ये-भावनगरमें आये

इनकेचचासाहब सूछचंदजी दसकोशतक सामनेगये, और इसअंदे-शेसे अपनेभतीजेको कुछभी सख्तवातनही किइकि-इनकादिल नाराज-न-होजाय. मगरजव भावनगरमें आयेइनकी बहुतहांसी हुइ, ख्वाह-दोस्त-या-रिस्तेदारलोग-औरउनकी औरतेंभीइनसे तानाजनी करनेलगीकि-वाह ! वाह ! ! आपतो साधुहोगयेथे, अव क्यों वापिस दुनियादारीकेकामोमें आये, ? महाराज बेशक! उस वस्तवद्वतशर्मीदेहुवे. मगर अमरलाचारी चचासाहव और दिगर रिस्तेदारोंके दो-सालतक-दुनियादारीकी हालतमेंरहे, और अपने म्रुसम्पीमइरादेकों नहीछोडा, इसअर्सेमें महाराजश्री आत्मारामजी-आनंद्विजयजीसाहव–और-महाराजश्री छक्ष्मीविजयजीके खत इनकेपास आयाजायाकरतेथे और-येभी-उनकों वरावर जवाबदे-तेरहतेथे, जाहिरातमें तो ये-दुनियादारीकेकामोमें मशगुलथे-मगर अंदरुनी इरादाइनका उसीतर्फलगाहुवाथा. और अकसरलोगऐसा कहाकरतेथेकि-ये-फिरसाधुहोजायगें, और इनकोंरातदिन यही च्यालरहताथाकि–में–इनदुनियादारीके कार्मोसे छुटकरकव अपने असर्लीइरादेकों पुराकरु, हमेशां देवपूजन--सामायिकप्रतिक्रमण-चौद्दृनियम-और-परमेष्टिमहामंत्रका जाप कियाकरतेथे. इनकों पापके कामोंसे अजहदपरहेजथा.

इनके चचासाहवने इनकीसादीकेलिये बहुतकोशिशकिइ-मगर य-उनकों-साफजवाबदेतेथेकि-में-सादी नहीकरनाचाहता. क्यों-कि-मेरारहना इसदुनियामें चंदरौजकाहे. इनके चचासाहवके कोइ लडका नहीथा इसलिये उनका स्नेह अपनेभतीजेपर ज्यादाहोना एकस्वाभाविकवातथी. हमारेचिरितनाकको-स्वरोदयज्ञानसे वर्ताव करना लडकपनसेही स्वभावया. चंदस्वरमेंपानी-दुध-वगेरापीतेथे. और सूर्यस्वरमें खानाखातेथे. और अकसरअपने दोस्त और रि-

स्तेदारोंकेशाथ दुनियादारीकेकामोंमें मशगुलरहतेथे, मगर दिल इनका अपनेअसलीइरादेपरथा, जबकभी दोस्तलोगोकेशाथ मज-हवीवातपर वहेसहोतीथी-ये-फौरन! उनकों जवाबदेतेथे धर्मसच्चा है. और सुखदुखमिलना अपनेअपने कियेहुवे कर्मोंका फलहै, अ-सलमें इनकीदलीले आलादर्जेकी तेजथी. कभीकभी ऐसामौकाभी आनपडताथाकि-रातकेवरूत-इनकेटोस्त किसीमकानमें अलायधा जमाहोतेथे-और-जब रात्रीभोजनकरने-न-करनेकेवारेमें वहेसहो-तीथी–तव–ये–जवावदेतेथेकि–जैनशास्त्रोमें रातकाखाना मनाहै, दोस्तलोग कहतेथे जिसचीजमें दिनमें जीवनही है-तो-रातको क-हांसेआगये ? जवावमें फरमातेथे-िकतीशख्शने समझो रातकेवख्त एकलोटेमें पानीभरकरपिया, उसलोटेमें सेंकडोचीटीयां बसबबठंड-कके फिररहीथी, पानीकेशाथ पीनेवालेशख्शकेपेटमें-वे-सेंकडोची-टीयां चलीगइ. वतलाना चाहिये रातकेवख्त खानपानकरनेसे अपनाऔर दुसरेजीवोंका विगाडहै-या-नही, ?-सबुतहुवा रातके वस्त खानपानकरना-खौफ-व-खतरसेभराहै. इसीलिये जैनशा-स्नोमें रात्रीभोजन करना मनाफरमाया, जैसेमकानमें हमेशांचोरीका होनासंभव-नहीहोता. मगर-तोभी-हरेकश्रख्श अपनामकान बंद करके सोताहे इसीतरह–धर्मकों चाहनेवालाशस्त्र रातकोंखानापीना वंदरखे इसीमेउसकाभलाहै, ऐसीऐसीदलीले हमेशांहोतीरहतीथी, कभीकभी जब दौलतकेबारेमें बहेस होतीथीतबभी-यही जवाबदे-तेथेकि-दौलतभी मुकाविले धर्मकेकोइ चीजनही,---

इसतरह इनोने दुनियादारीके काममें तीनवर्षगुजारे औरजब इनके चचासाहब-शहर-भावनगरसें-तीर्थ शत्रुंजयकी जियारतको गये इनोनेकिसीसे जाहिर-न-करके संवत् (१९३५) फाल्गुनसुदी पंचमीकेरोज मुल्कपंजाबतर्फ जानेकेलिये घरसें रवानाहुवे, क्योंकि महाराजश्री आत्मारामजी-आनंदविजयजीसाहव-और महाराजश्री

लक्ष्मीविजयजीसाहब-उसवरूत मुल्कपंजावकी सफरमेथे. जिनके पास इनोने पेस्तर दीक्षाइच्तियार किइथी, शहरभावनगरसें रवाना होकर शामकों गोघाबंदरपहुचे, जोकि-सातकोशके फासलेपर वा-केथा. दुसरेरौज वहांसे जहाजमें सवार होकर मुरतगये. सुरतसे ब-जरीये रैलके-वंबइ-और-वंबइसे भ्रसावल-खंडवा-हरदा-जब-लपुर-इलाहाबाद-गाजियाबाद-मेरट-अंबाला-लिधहाना-होतेहवे म्रुल्क पंजावमें जालंधर टेशन पहुचे. और वहांसे (१८) कोशके फासलेपर जो होशियारपुरशहरथा–जहां महाराजश्री आत्मारामजी आनंदविजयजी-साहब टहरेहुवेथे उनसेजाकर फाल्गुनसुदीतेरसकी शामकों मिले. और एकमहिना उनकी खिद्मतमें रहे, जब-मलेर-कोटके श्रावकोने गुरुजीकों अरिजा भेजाकि-आप-हमारे शहरमें तशरीफ लावे और इनकों चेलावनावे, गुरुजीकेशाय-ये-मलेरकोट गये और वहांकेलोगोने वडी शानसौकतसे इनका जलसा किया, *संवत् (१९३६) वैशाखसुदी (१०) गुरुवारकेरीज−दिनके दस बजे-मिथुनलग्नमें गुरुजीने इनकों दीक्षा दिइ, और इनका नाम-शांतिविजयजी-रखा, यह दीक्षा इनकी दोवारा समझीये,-

👺 [जैनमुनियोंके कायदे निचे बतलायेजाते है,]

किसी रुहकों कतल निह करना—(यानी) चीटीसेलेकर हा-थीतक किसीकों मारनानही. जुठकभी वोलनानही, किसीकिसमकी चौरी निहकरना. इक्कबाजी निहकरना, किसीतरहका लालच निह करना. रातको निहखाना, शराब और गोस्तसे परहेजकरना. और किसीतरहका नसाभी नहीकरना, गांजा—भंग—अफीम—माजुम बगे-

^{*}चैतसुदी एकमसे संवत्की शुरुआतमाननेसे संवत् (१९३६)मे महाराजने दीक्षा लिइ ऐसा जानना,

राभी खानापीना नहि. मुल्कोमें फिरकर धर्मकी वाजकरना. और , एकजगह मुकीमहोकर नहीरहना. अगर कोइ अपनेकों इजापहुचावे तो गुस्सेकी एवजमें रहमकरना. शिवाय परमेश्वरके दुसरेकी पर-वाह नहीरखना. किसीको गाली नही देना, तोहमत नहीलगाना. किसीको धोखा नहीदेना. इगली नही खाना--और-किसीकेशाथ लडना-झघडना नही, मगर धर्मके अवर्णवाद बोलनेवालोकेशाथ बहेसकरते वस्त सस्त-वात कहनापडे तो उसकी मना नही है. हमेशां भिक्षामांगकर अपनी सीकमपरवरीश करना और वस्तपर जोकुल मिलजाय उसपर शत्रकरना, सोनेचांदीके जेवर-वा-जवा-हिरात वगेरा नहीपहनना, और हमेशां सिर खुला रखना,-

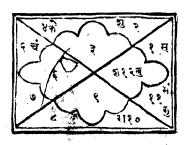
👺 (जैनमुनियोंके कायदे खतमहुचे,-)

दुनियाछोडकर दीक्षाइंक्तियारकरना सहजवातनहीं है, जवानीमं एशआरामकोछोडना और धर्मपरपावंदहोना बडेवहादूरशक्शोका कामहै—उमदापुशाक और उमदाखाना छोडकर साधुपने
का वेशपहनना और घरघर भिक्षामांगना—अगरधर्म प्यारा—न—हो
तो ऐसाकोनकरसकताहै, १ महाराजकी तकदीरहम आलादर्जेकी
समझते है जिनोनेजवानीमें घरछोडकर जंगलकीराहिल्ड. ऐसेइकबालमंद और बहादूरशक्शकी सवानेउमरीलिखना यहभी एकअछीतकदीरके ताल्लुकहै, आपलोगोने अकसर कइजीवनचरित देखे
होगे—मगर—जिसमे यथार्थवात दर्जिकइगइहो—वही—चिरत लाइक
तारीफके होताहै, -इसदुनियामें जोकुछफायदाधर्मका—गुरुलोग—पहुचासकते है रिस्तेदारऔर कुटुंक्केलोगनही पहुचासकते, इसीसबबसे हमने इससवानेउमरीको लिखनेकेलिये कलमउठाइहै. महाराककी सवानेउमरी ऐसीहैकि—अगर इसकोंबांचकर कोइ उसपर
अमलकरेतो निहायतफायदा उठासकेगा, जबकोइखुशनशीब और

इक्षवालमंदशस्स दुनियामंहोते है-तो अंदाजिकयाजाताहै कि-इनके-ऐसेहोनेका सबव पूर्वजन्मका संस्कारहे, और-है-भी-टीकिक-विना पूर्वजन्मके संस्कारके ऐसाहोना दुसवारहे, इसदुनियामें एकसेएक-आलादर्जेके शस्स होगये और आगेकोंभी होयगें. इसमेंकोइशक नहीं, जन्मलेनाभी उनहींकालफलहै-जिनकेशरीरसे-कुल-जाति-गांव-नगर-औरमुल्ककों धर्मकाफायदा पहुचाहो, इनहींखुशनसीव और-इक्षवालमंद-महापुरुषोंकी गिनतीमें हमारेचिरतनायक-महा-राज-शांतिविजयजीभी है-दुनिया मोहरुपी जंजीरसे जडीहुइहै. जहांआराम वहांतकलीफलगी है, युवानी बुढापेसेघीरीहै, मुखदुख-काचक हरचीजपरचलरहाहै, दुनियामें उमदाचीजहै-तो-धर्म है, जिनकों धर्मप्यारा होताहै-वेही-दुनियाको छोडकरदीक्षा इस्ति-यारकरते है,-

संवत् (१९३६)-ज्ञाके-(१८०१)-वसंतरुत् वैज्ञाखसुदी-१० गुरुवारघटी-४२-५७-मघानक्षत्रघटी-१७-४७-धुवयोगघटी ५०-३६-तैतलकर्ण-एव पंचांगशुद्धि:-दिनमानघटी-३३-४-दि-नार्द्ध-१६-३२-रात्रीम,न-२६-५६-उभयघटी-६०-पूर्ण, सूर्यो-दयसें इष्ट्रघटी-१०-४० (लग्नघटी) २-२३-९-२० सूर्यघटी ०-१८-२७-५२-महाराजकी दीक्षाका वस्तहै,—

॥ दीक्षा लग्नका चक्र ॥



महाराजके दीक्षालयमें लयकामालिक बुधकेंद्रमें पडाहै इसलिये ज्ञानदर्शन चारित्रका फायदा हासिल होतारहेगा, और धर्मके का-ममें फतेहमंद रहेगे, आफताबका सितारा ग्यारहमें खानेमें पडाहै इसलिये किसी चीजकी कमी-न-रहेगी, अकल तेज रहेगी. और बडीवडी सभाओमें इज्जित पायगे. चमकताहुवा मंगलका सितारा नवमेंखानेमें वेठाहै इसलिये यह वडा फायदेमंद होगा, चंद्रमानवमे खानेकों अपनी माकुल नजरसें देखताहै, दृहस्पति उसी नवमेंखा-नेमें वेठाहै, और शुक्र-उस-नवमेंखानेकों एक नजरसे देखताहै, इसल्चिये इनका धर्मभ्रवन बहुत सुधराहुवाहै, धर्मपर बहुत पुरूता एतकात बनारहेगा, कइ ग्रंथ धर्मकेबारेमें बनायगें. और इनकी लि-खीहुइ बातकों बहुतलोग पसंद करेंगे. बुध और शनिके सितारे केंद्रमें होनेसे और मंगळ-इहस्पति त्रिकोणमेहोनेकी वजहसे हमेशां अपने साधुपनेमें खुश रहेगें, बारहमेंखानेमें शुक्रका सितारा अपने घरका मालिकहोकर बेठाहै इसलिये धर्मके कामोमे और मजहबी बहेसमें हमेशां फतेह पातेरहेगे. और इनकेआगे एकानिशान बतौर धजापताकाके चलेगा, जिसशस्त्राके लग्नका मालिक भाग्यके मा-लिकको-और-भाग्यका मालिक लग्नकेमालिकको पुरीतौरसे देख-ताहो-उसको दीक्षा जरुर हासिलहो, महाराजके दीक्षालग्रमें वही योग पडाहै इसलिये दीक्षा हासिलहुइ. और हमेशां इनका दिल धर्मपरपावंद रहेगा. मगर मंगलका सितारा नवमेंखानेमें पडनेसें इ-नकों अपने गुरुभाइयोसे नाइत्तिफाकी बनीरहेगी. जिस शख्शके लप्रमे नवमेंखानेका मालिक दसमेंखानेमेंपडाहो-और-दसमेखानेका मालिक नवमेंखानेमे पडाहो-उसकों हमेशां राजयोग वनारहे. म-हाराजके दीक्षालयमें देखलो ! वैसाही योग पडाहै, जिसकीवदौलत महाराज अपने साधपनेमें बतौर राजर्षिके बनेरहेगें, और-बडेबडे- खिताब पायगें, तीसरे अवनमें चंद्रमा मित्रक्षेत्री होकर पडाहें और धर्मअवनकों पुरीतौरसे देखताहें इसिलिये दिनपरिदन इनके पराक्रमकी तेजीरहेगी. और धर्मकों तरकी देयगे, दुसरे अवनमें केतुपडा है इसिलिये हमेशां सफर करते रहेगे. एकजगह कयाम-न-करेगे. छठे अवनका मालिक मंगल-नवमे अवनमें बेठाहें इसिलिये बीमारी और दुश्मनोसे मेहफुज रहेगे-यानी-बचेरहेगे. भिथुनलग्रमें दीक्षा लेनेवाला अख्य आलादर्जेका साधुमहात्मा होताहे, महाराजका दीक्षालग्र मिथुनसिरसोदयी होनेसे जोकाम अपनेदिलमें करनासोचेगे उसकों पुराकरकेछोडेगे. ख्वाह मुश्किलहो-या-आसानहो, राहुका सितारा आठवे खानेमेपडाहे इसिलिये एक मरतवा महाराज वडे इ-कबालमंद होगे.-आठमेखानेका मालिक शनि-केंद्रमे बेठाहे, बुध सितारा आफतावका दोस्तहे, और आफताव-बुधका अजहददोस्त है इसिलिये महाराजकी उमर लंबीहोगी,

(दीक्षा लग्नका बयान खतम हुवा.)

अब हस्तरेखा-और-दिगरइशारे जिस्मके बतलायेजाते है.]

जिस शख्शकी अवाज पंचमस्वरमें हो-वह-हरजगह इज्जित पातारहे. महाराजकी अवाज पंचमस्वरमें है, जोशख्श हिंमतबहादूर हो-अकसर-वडानसीबेवाला होताहै, और वह शिवाय परमेश्वरके किसीकी परवाह नहीं करता, महाराजकी हिंमत आलादर्जिकी है. जिसशख्शके हाथ इसकदर लंबेहोकि-जब-वह-खडाहो-तो-गोडे-तक ब-ख्बी पहुचजाय, वह आलादर्जिका इकबालमंद और आ-लिमफाजिल होताहै. महाराजके हाथभी गोडेतक पहुचते है. जिस श्रीख्शका निलाड उंचा-और-बडाहो-वह नसीबेवर होताहै, महा- राजका निलाड उंचा और बडाहै, जिसशस्त्राके पुरेवत्तीस दांतहो— वह—खुशनसीवहोताहै, महाराजकेभी पुरे बत्तीसदांतहै. हरेक शस्त्राके हाथमें जो तीनरेखा होती है उनमें एकउमरकी—दुसरी दौलतकी—और तीसरीइज्जितकी होतीहै. अगर—ये—तीनोरेखा लंबी और पुरीहो—वह—उमरमें—दौलतमें —और—इज्जितमें पुरा कामयाब हौताहै. महाराजकी—ये—तीनोरेखा—व—मुजब मजकुर तेहरीरके है, जिसशस्त्राके हाथमें धजाका निशानहो—वह—हमेशां इज्जितपातारहे, यही निशान महाराजके हाथमेंभी है,

जिसशस्त्रकेहाथमें धनुष्यका निशानहो-उसकी-मुलाकातके **छिये बहुत्छोग ख्वाहेसमंद वनेरहे, मगरम्र**ह्णकातहोना दुसवारहो, महाराजके दाहनेहाथमें धनुष्यका निशानसाफ मौजूदहै, जिसके हाथमें पद्मकानिञ्चानहो–वह–अकल्रमंद–और–ञतावधानकरनेवा-ला होताहै, महाराजके हाथमें पदमका निशानमौजूदहै, जिसके हाथमें त्रिशुलका निशानहो-उसकेआगे धर्मकीधजापताका चले, महाराजकेहाथमे यहभी निशानसाफहै, जिसकेदाहनेहाथकी तीस-रीअंगुर्लापर चक्रहो-तो-वह-धर्मात्माश्चर होताहै. महाराजके दाहनेहाथकी तीसरीअंगुलीपर हुवहुचक्रहै, जिसशख्शके दोनोहा-थोंकी अंगुली-और अंगुठोंमें दाहनेमें दाहनीतर्फ झकते-और-बा-येमेंबायीतर्फ झकतेहुवे शंखहो-वह-शख्श धर्मात्मा औरदुनियामें मञ्चहूरहोताहै, महाराजकी अंगुलीयोमें ज्ञिवाय एकअंगुलीके जो उपरवतलादिइ गईहैऐसेही शंखकेनिशानहै. जिसकेहाथकी-उर्द्धरे-खा-कलाइसेलेकर छोटीअंगुलीतक चलीगइहो-वह-हिंम्मतवहाद्**र** और मज्ञहूरज्ञस्त्रहोताहे, महाराजके हाथमेंवहीरेखा मौजूदहै. जि-सकेदाहनेहाथके अंगुठेमें जनकानिज्ञानहो-मशहूर-और-अकलमंद

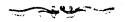
शस्त्राहोताहै, महाराजके दोनोंहाथोंके अंगुठोमें जबका निशान

जिसशख्शकी ऊंचाइअपनी अंगुलीयोके नापसें (१०८) अं-गुळीहो वहशख्श खुश्चनसीवहोताहै, महाराजकेशरीरकी ऊंचाइ (१०२) अंगुलकी है, (यानी) पेस्तर एकरसीसे अपनेशरीरकों खडेहोकर नापे-और फिरवहीशस्त्र अपनेहाथकी अंगुलीयोके बी-चकेमुकामसे-नापे-अगर (१०८) अंगुलकी ऊंचाइ हो-तो-जा-नना दौलतमंद और खुश्चनसीब शस्श्वहोगा. अगर (९६) अंगु-लतक ऊंचाइहो-तोभी-उमदाहै. और अगर (८२) अंगुलतक ऊंचाइहोतो–माम्रुलीदर्जेका आदमीजानना. और इससे कमहो− तो–कमनसीव–जानना, जिसशख्शके दाइने–या–बायेपांवके तल्ल-वोंमें नवअंगुळळंवी उर्द्धरेखा होवे-वह-राजा-या-महात्माहोताहै, महाराजके दोनोंपहरोंके तलवोमें नवनवअंगुलकी उर्द्धरेखा मौजूद है, जिसकेपांवके अंगुठेकेनीचे तलवेमें चक्रनिशानहो–वहश्रख्श ह-मेशां मुल्कोंकी सफरकरनेवालाहो–येमी-निशानमहाराजके दोंनों-पेरकेतलवोमें मौजूदहै, जिसश्चकाकी नाभि गहरी (यानी) उंडी हो वहश्च्य हमेशां खानपानसे सुखीरहे, अगर गहरी-न-हो-और उसकाकुछहिस्सा बहारनिकलाहुवाहो-वह-खानपानसे मोह-ताजरहेगा, ख्वाह मर्दहो-या-औरतहो, महाराजकी नामि बहुत गहरी है. जिस्रशस्त्रके मस्तकपर तिलहो-बह-हमेशां इज्जतपातार-हे, महाराजकेमस्तकपर तिलकानिशान मौजूदहै, जिसशख्शके दा-हनेहाथपर तिलहोवे-वह-शल्शअपनेहाथकी कमाइ दौलतभोगे, और हमेशां फतेहमंदरहे, महाराजकेदाहने हाथपर उमदातिलहै, जिसशस्त्रके दाहनेहाथके पंजेपर लहसन-या-तिलहो, तो-वह-शुख्यवडासख़ीहोताहै, महाराजके दाहनेहाथकेपंजेपर लाल्रंगका लहसन मौजूदहै. जिसक्यके दोनोंपेरोमें किसीपेरपर तिल्ल-या-लहसनहोत्रे वहहमेशां मुल्कोंकीसफर करतारहे. महाराजके बायेपां-वके उपरकेकनारेपर लालरंगका लहसन मौजूदहै —

(हस्तरेखा और दिगरइशारे जिस्मके खतम हुवे,-)

दिक्षा इख्तियार करनेकेवाद महाराजने सिद्धांतचंद्रिका व्या-करण पढना शुरुकिया, और जेटमहिनेमें अपने गुरुजीकेशाथ मले-रकोटसे रवानाहोकर छिघहाना-जालंधर होतेहुवे-होशियारपुर-गये, और संवत् (१९३६) की वारीश मुकाममजकुरपर गुजारी. मोसमवारीश्रमें जैनम्रुनिकों सफर करना मनाहै. इनदिनोमें शहर भावनगरसे महाराजके चचासाहबकेकइखतआये, उनमेंलिखाथाकि तुम-वगेरकहेसुने यहांसे चलेगये-और साधु होगये-हमको बडारंज हुवाहै, वे-दिन-बहुतखुशीके जातेथे-जबकि-तुमको हम अपने घ-रमें देखतेथे, होनहारकेआगे किसीकाकुछवस नहीचलता, हमारी बुद्धिपर पर्दापडगयाकि-हम-तुमकों अकेले घर छोडकर चलेगये. जबहम घरआये तो–माऌम हुवा–हमारे घरके बहुम्रुल्यरत्न–हमारे नेत्रोके सितारे-और-हमारे दिल वहलानेके खिलौने-तुम-घरछो-डकर चल्लेगये, तुमकों ऐसाकरना हर्गिज! मुनासिवनहीथा. तुमारे चलेजानेकारंज हमारेदिलपर इसकदर जमगयाहैकि-जिसकावयान हमकुछ लिख नहीसकते, हमकों दुनिया सुनसान दिखाइदेती है, हमारादिल अजहद तकलीफपाताहै, हमको उमेदथीकि-थोडेरीजमें तुम घरकाकाम संभाललोगे. लेकिन ! हमारी उमेद खाखमेंमिलगइ, अदिमीके इरादे कभी पुरे नहीहोते. जिसचीजकों-न-चाहो वह पास आतीजाती है और जिस चीजकी चाहना करो वह दूर दूर चलीजाती है, असलमें इसवस्त तरहतरहकी फिकर हमारेदिलपर

फैलगइहै, आरामकेपीछे तकलीफ और संपदाकेपिछे विपदा आपसे आप आकर सवार होजाती है. हमारे दिलकीबात दिलमे रहगइ, तुम दिनरात हमारी आंखोकेसामने फिरतेहो. हम अपने दिलकों बहुतेरा समझते है मगर किसीग्ररत चैन नहीं मिलता, अगर सो-चाजायतो धर्मकरना हमेशांकेलिये अछाहै, दुनिया छोडकर दिक्षा इिंक्तयारकरनेका वरूत हमाराथा, तुमारा नहीथा, हम इसवातपर खयाल करते हैकि-तुमसे दीक्षाकाभार कैसे उठसकेगा, हमकों अपनी जींदगीमें इतनाफिक्र कभी-नहीहुवाथा. जैसे तुमारे चले-जानेसे हुवाहे, रातकोनींद नहीआती, खानपान अछा नहीलगता और धंदेरोजगारमें दिल नहीं जमता. हम क्या ! अपने रिस्तेदार लोग सवकहते हैकि-तुमकों ऐसाकरना विल्कुल ग्रुनासिब नहीथा. महाराजने उनखतोकों पढकर एकखत इस मजमूनका लिखाकि-वेशक ! आपको रंजहुवाहोगा, में-आपको वगेर जाहिरकिये इस-लिये चलाआयाकि-सायत ! आप मुजे आने-नहीदेते, मेराइरादा धर्मपरथा. इसलिये अवआप खुशहोकर लिखेकि-तेरी-दीक्षा फ-तेहमंदहो, उनोने महाराजकेखतको पढकर अपनेदिलकों थांमलिया और-समझिलयाकि-उनका दुनयवीकारोबारसे इतनाही संबंधया, जोकुछ ज्ञानिदृष्टभाव होताहै, हर्गिज! गलत नहीहोता, ऐसासोच कर जवाब लिखाकि-हम-अब-और्-क्या ! कहे !! जोकुछहुवा अछा है, इमसे इस दुनियामें आकर कुछ धर्म नही बना, तुमारी दीक्षा फतेहमंदहो-और-तुमारी अछीगति हो,-महाराजकों इल्म पढनेकी ख्वाहेस हरवरूत वनीरहतीथी, ग्रस्मीकी खिदमत करनेमें म्रताबिक अपनीताकातके कमी-नही-करतेथे, और-काम-क्रोध-लोभ-मत्सर अभिमान और दंभ इनसे हमेशां परहेज रखतेथे.



[संवत् १९३७ का-चौमासा शहर अमृतसर,]

बादवारीशके होशियारप्रसे रवानाहोकर–जालंधर–निकोदर जिरा-पटी-अमृतसर-नारोवाल-सनखतरा-गुजरानवाल-राम-नगर-और-लाहोरकीसफर करतेहुवे वापिस अमृतसर आये, और संवत् (१९३७) की वारीश वहांपरग्रजारी, सिद्धांतचंद्रिका व्या-करण जोगइसालमें पढना शुरुकियाथा-जिसमेकरीव तीनहजार श्लोककेर्ज़ है ग्रहजवानीयादकरके खतमकरित्या, औरिफर अम-रकोशपढना शुरुकिया, सूत्रदशवैकालिक-और-उत्तराध्ययन-बाचे, कभीकभी लोगोकों तालीमधर्मकी देतेथेऔर आपसमे तकदीर त-द्वीरकेवारेमे बहेसभी होतीथी, महाराज फरमातेथे तकदीर और तद्वीर दोंनों अपनीअपनीजगहपर वेशक ! ठीकहै, मगर तद्वीरसे तकदीर वडीचीजहै. तद्वीरकभी खालीभी जातीहै, तकदीर खा-ली नहीजाती, अगर तकदीर उल्टीहोतो-तद्वीर चाहेजितनीकरो कु*छ*--कारआमद्नही होसकती, ख्याल करो ? अगर तकदीरके फे-रनेका कोइउपावहोता-तो-रामचंद्रजी-और-पांचपांडव वनवासकों क्योंजाते ? आराम और तकलीफका होना वेशक! अपनी तक-दीरके ताल्छकहै, जबतकदीर उल्टीआती है-तो-धुद्धिभी वैसीही होजाती है, जंगलमें पडेहुवेकों अगर तकदीर अछीहो-तो-उसका कोइकुछनहीकरसकता. और अगर तकदीरबुरीहो-तो-महेलमेबेठे हुवेकोभी-तकलीफआनपडती है, एकशस्त्र फायदेकेलिये तदबीर करताहै–मगर–उसकों फायदा नहीमिलता, एकशख्श हलखेडता है और राज्यपानेकी कोइकोशिशनहीकरता, मगरउसकीतकदीर अछीहो-तो-उसकों-किसीनकिसीसुरत राज्य मिलजाताहै, एक द्फे दो-ग्रख्श-एक वादशाहके पास नौकरीके लिये गये, उसमें एक कहताथा तकदीर वडी है, और एककहताथा तदवीर बडी है,

वादशाहने कहा तुमारेदोनोंका इम्तिहानलेकर नौकरीकी जगहदुंगा, आजरातकों तुम-दोनो एककोटरीमें बंदरहो, गरजिक-बादशाहने दोंनोकों रातकेवरूत एककोटरीमें बंदरखे. जब आधीरात होगइ तद- 🕟 वीरकों बडीकहनेवाला वोला देख ! में ! ! तद्वीरकरताहु और कोठ-रीके तमामआलोंमें हाथफेरताहुं अगर कोइचीज मिलगइतो अलाहे. तकदीरवडीकहनेवालाबोला, खुशीकेशाथ अपनीतद्वीर चला,मुजेइ-ससेकोइनाराजीनही, वादशाहने-दो-छडु-जिसमें एकमेंसोनामहोरर-लीहुइथी-एकखाळीथा-अवलसे-एकआलेमें रखवादियेथे, तदबीर वालेने अंधेरेमें इधरउधर हाथफेरा–तो–उसको–एक आलेमेसे–दो लड्डु मिले, उनकोंलेकर तकदीरवालेके पासआया और कहनेलगा देख ! मेने कोशिशकिइ तो मुजे दो-लड्ड-मिले है, ले ! एक तुजे देताहुं. एक-में-खाताहुं, ऐसाकहकर एक उसकों दिया एक आप खाया, तकदीरवालेके−लडुमें−सोनामहोर निकली, तदवीरवालेके लड्डुमें–कुछ नहीनिकला, अखीरमें तदवीर वडीमाननेवाला बोला, तद्वीर कैसी वडीचीजहै ? अगर तकदीरके भरुसे वेठेरहतेतो–लड्ड कहांसे मिलते ?-जवाबमें तकदीरवाला बोला. मैने-कौनसीतद्बीर किइथी ? जो-मुजे-सोनामहोर-और-लड्ड-मिला ? इस वातकों मुनकरतद्वीरवाला चुपहोगया-और-अपनेदिलमें कहनेलगा वेशक तकदीर वडीचीजहै.-इसतरह एकएक बातपर वहेस हुवाकरतीथी,

[संवत् १९३८ का-चौमासा दाहर ऌिधहाना,]

वादवारीशके अमृतसरसे रवानाहोकर-पटी-जिरा-और फि-रोजपुरकी सफरकरतेहुवे फरीदकोट गये. और वहांसे फिरदुवारा जिरा-आनकर निकोदर-जालंधरकी सफर करतेहुवे शहर छिध-हाना आये-और-संवत (१९३८) की वारीश वहांपर गुजारी, अमरकोश जोगये चौमासेमें पढना शुरुकियाथा, जिसकी (१५००) के करीव श्लोकसंख्याहै मुहजबानी याद करित्या, कुमारसंभव— मेयदूत—और—काव्यदीपिका यहां मुहजबानी यादिक इ, और सं-स्कृतमें उमदा तौरसे बोलनेलगे,—कितनेक संस्कृत वाक्य यहांभी बतलाते है,

कुत्रवासः ? किमभिधानं श्रीमतां, ?

कान्यक्षराणि अलंकृतानि स्वनाम्ना ? यूयं परीक्षायां उत्ती-र्णाः किं ?

काशंका अत्र ? सएवायं किं न पश्यथ, ?
किमधीतं शब्दशास्त्रे तर्कशास्त्रे वा ?
येन शब्दशास्त्रं नाधीतं सभांतरे किं वक्ता सः ?
परिज्ञातं मया युष्मद्रहस्यं-अवगतं वा श्रीमतां स्वांतं,
अन्नतवादिनां सत्यमि मृषायते,

युष्मान् प्रति-मया प्रत्यनीकं वचउक्तंचेत् मुहुःक्षंतव्यं क्षमासा-गरा यूयं

उद्योगं कुर्वन्निप फलं-न-लभ्यते अतः कर्मणां एव प्राधान्यं, पुन्यवलात् नानाविधं सुखं लभंते जनाः, अहो महतां महत्वं-ये-विपत्तिकालेपि धर्म-न-त्यजंति, न-विनापरापवादेन-रमते दुर्जनः, खलानां प्रतिक्रिया दूरात् पलायनं, पण्यवीथिकायां गंतुकामा वयं, कार्यचेत् वक्तव्यं, धर्मकर्मणि अनुत्साह एव प्रमादः, शक्तो सत्यां-या-उपेक्षा-सैव दुखमूला, प्राणांतिपि प्रेक्षावता धर्ममालिन्यं-न-कार्यं,

येषां चेतिस मोहपाचुर्यता भावमालिन्यं तत्र, स्वबुद्धि कल्पना निर्मितं तत्वं-न-संमतं, जिनविवकारिणे शिल्पकाराय-येन-अल्पमूल्यं दत्तं तेन पर-मार्थनीत्या भगवति अपीतिरुत्पादिता,

देवमंदिरे सायुधै-र्न-गंतव्यं,

धर्मविरहितानां पदेपदे दुखसंपद:-स्वमांतरेपि नास्तिकल्याणं, श्रुभाश्रम कर्म कर्ता भोक्ताच आत्मैव,

कर्मक्षयेण आत्मनः स्वस्वरुपावस्थितिर्मोक्षः,

देवाः कतिरुपाणि विकुर्वति, ?

कतिविधा वेदना नारकाणां, ?

कति द्वीपसमुद्राः किंसंस्थानाः ?

जंबुद्वीपः किंसंस्थानः-तत्र कतिनद्यः-?

संसारसमापना जीवाः कतिविधाः ?

अवसर्पिण्यां षष्टारकः किदृग् दुखकृत्? तत्रनराः किदृशाः ?

तेषां किमायुः किंदेहमानं, ?

जीवा: कथं गुरुत्वं लघुत्वं लभंते,

जीवः कस्मिन् समये अनाहारकः-आहरको वा,

कतिदेवलोकाः कतिनरकावासाः ?

दुर्जनवागुरासु पतितः कः सुखं प्रपन्नः,

सविस्मयं सभयंच निवेदितं तेन,

सचमत्कारं समंतात् अवलोक्य शनैः शनैरपससार

आकाशे कर्णे दत्वा देववाणी श्रुता.

न्पुराणां रवेण अनुमीयते योषिदागमनं,

तत्मतिरुपकं रुपं नाद्यापि दरगोचरीभूतं,

जन्मजरामरण संकुलं संसारवासं संसरन् जीवो भवाट् भवां-सरं जेपैति, अयमात्मा-अमाप्ताईद्धर्मः कष्ट परंपरां लेमे, स्वकर्मदोषेण समीहितं-न-लभतेजीवः-दृथैवदोषंददात्यन्येभ्यः आदित्याचा यहाः शुभाशुभस्य चोतकाः-नतु स्वयं कस्यापि अनीष्टं कुर्वति.

विबुधजनसंकीर्णायां इदृग्विधायां सभायां किंचिद्वक्तुकामो हं-श्रूयतां तावत्,

इह जगति लघुरपि जनः-महतांसंसर्गेण-महिमानं कलयति. अज्ञातपारंपर्ये वाक्यं जने उपहासाय जायते.

प्रमदासु अतिष्रसंगो-न-कार्यः

जलेन अखिलदेहस्य यत्स्नानं-तद्बाह्यस्नानं-परमार्थदशायां सेत्र स्नातकः-यः-पुन कर्मपंकन-न-लिप्यते,

यो मुक्तिं गत्वा पुनःसंसारमभ्युपैति स कथं मुक्तः,

धर्मद्वेषिणा मूढेनसह-यो-वादः सः शुष्कवादः अयं सर्वथा स्राज्यः

प्रमुप्तस्प पुरःशास्त्रार्थकथनं हास्याय-न-बोधाय.

न-अज्ञानात्-पर:शत्रुः

संस्निपतः पुमान् यदि स्वयं पंके निमज्जति कस्यदोषोत्र,

जीवो अनादिकर्मभाक्-यदनेन-पूर्वजन्मिन-प्रकृतिस्थिति र-सप्रदेशे:-आश्रवहत्त्या कर्म बद्धं-तद्बंधोदयदीरणासत्ताभिः प-रिश्चनिक्तः,

दीर्घायुरारोग्पंच पुन्येनैव संभवति, गुप्तवृत्त्या कृतमपि पापं ज्ञानिनां मत्यक्षं, शब्दरूपरसगंध स्पर्शादि विषयैजीवो दुर्गतौ नीयते, को-न-वांछति स्वकीयमभ्युदयं, संज्वलन-प्रत्याख्यान-अप्रत्याख्यान-अनंतानुवंधिभिः क्रो-धाहंकार छदमलोभैजींवः संसारवंधनं प्रामोति.

जैनमते रागद्वेषादि दोषे विनिर्मुक्तो जिनेंद्रो देवः,
भो ! नेत्रे ! ! अधुना जिनेंन्द्रदर्शने प्रमादो-न-विधेयः,
स्वर्गिभि निधानानि सुरांगनाश्च पुन्येनैव कर्मणा लब्धाः,
विहजल भूमयो विधिनोपसेविता एव सौख्यावहाः,
भानौ-अभ्युदयेपि-उल्कानां-अप्रमोदो विभाव्यतां अत्र कस्प दोषः

सुरुपां त्रियवादिनां भार्योलब्ध्वा द्रक्षमूलमपि गृहंमन्पंतेकामिनः यत्र इभाअपि दृष्टिपथं नायांति मश्तकानां तु का कथा, ? गर्दभा वाजिधुरं-न-वहंति,

श्रुणत भो ! पौरा !! अयं शृंगारसुदरीघातकः—वधस्थंभं नीयतेतत् यदीदशं कर्म-अन्योपि करिष्पति—एतादशं—एव—दंडंलप्स्यते,
पण्यवीथिकायां जिगमिषा—अस्ति—िकं, ?
पर्वतिथो व्रतं ग्रन्हंति धार्मिकाः,
इह जगित ज्ञानं परं भूषणं,
व्याख्यानं तदेव रम्यं यत्र श्रोतारो—न मुह्यंति,
एतज्ज—अस्माभिरपि स्वीक्रियते,
कपाटं पिघेहि—अंतर्द्वारे शत्रंकेन निहितं, ? उपानहः कुत्रसंति,
पेतकं द्रव्यं मया—न—लब्धं,
वयं—तु—अकिंचनाः स्म,
मम—अखिलं कार्यं संदृतमधुना,
येन जातेन वंशः समुन्नतिं—न—प्राप्तः तेन स्नुना किं, ?
श्रीमद् हेमचंद्रसरेः गौढिं वाक्यरचनां दृष्ट्वा विस्मयस्मेरानना
विबुधजनसमृहाः

तेषां महांतं उपकारभारं मेनिरे जनाः स्वकुशलोदंतमयं पत्रं लघु मेक्षणीयं, पत्रवाचनविरतौ उद्गतरोमांचकंचुकोहं किं लिखामि युष्माकं कला कौशल्यं,

युष्मामु दत्तसेवांजलिरहं किंचित् विज्ञपयामि, जीवानां सुखं दुखं-वा-मातुं कोपि-न-प्रभुः श्रमणोपासकैः पंचदशकमीदाननिष्टतिः कार्या,

नहिस्वस्य वलविकलतामाकलय्य वलीयसः प्रभोः श्वरणाश्र-यणं दोषपोषाय,

अहं तु निद्यां कामये-न-योषितं, अंतर्षटे सित स्त्रीणां धर्मकर्मणि महानंतरायः ततः-ते-विबुधाः स्वकीयं स्वकीयं मंदिरं जग्मुः संजातभयः सः मत्पुरा वद्धांजलि विज्ञपयित, अमूकं सुतं सुलक्षणं जानामि, अमूकां सुतां लक्ष्मीं जाने.

इछानुरुपो विभवः कस्यापि-न-संजातः-अतोमूर्छी त्यक्त्वा धर्मकर्मणि यत्नोविधेयः,

खुब्धोजनः सर्वत्र पराभवं प्रामोति,

ग्रुणप्रकर्षादेव-जनाः पूज्यंते,

असत्यवादिनां यशो-न-जायते.

दुर्जन संसर्गात् पदेपदे मानहानिः

तीर्थानां अवलोकनं - आश्रयीणां निरीक्षणं - देशाटने न एवजायते.

अटन्-सन्-साधवः पूज्यंते,

वाग्पारुष्यं महद् दुरवाय जायते जनानां,

यत्र-अनिशं-क्रेशोत्पत्तिस्ततस्थानं दूरतः परिवर्जयेत्,

सूर्योदयेपि निद्रामबलंबते चेत् महद्दारिद्रयं, देहे आरोग्यं चेत्-महदैश्वर्यं, यः कांतास्र-कनकेषु-न-लुब्धस्तस्य-अखिलसिद्धयः, सत्वावलंबिनां नास्ति कातरत्वं,

[संवत् १९३९ का-चौमासा-दाहर होशियारपुर.]

बादवारीशके लुधिहानसे रवानाहोकर जीरा-मलेरकोट-जिप्रामा-फिल्लोर-फगवाडा-और-जालंधरकी सफर करतेहुवे शहर
होशिआरपुर गये, और संवत् (१९३९)की वारीश वहां गुजारी,
इसचौमासेमें न्यायमुक्तावली ग्रंथ पढा, और उसमेंसे अनुमानखंड
मुहजवानी यादिकया, इनदिनोंमें महाराज नयेनये काव्य संस्कृतमें
बनानेलगे, चीठीपत्री लिखतेथे तो-नये श्लोक बनाबनाकर लिखतेथे, जितने वडे पुरुषोके जीवनचरित लिखेजाते हैं उनसे ऐसीऐसी
वातें सीखनेमें आती है-जो हरेकश्रक्शके जीवनभरमें कामआती है
और उनका जीवनचरित दुसरोकों इल्मकी तरकी देताहै, पेस्तरके
चालचलन-और रीतरवाजकों सिखलाताहै. स्मर्णशक्ति और धैर्यकों देताहै. और तरहतरहकेफायदेकों पहुचाताहै, जिनकाजीवन
नहीलिखागया उनकों कोइ जानताभी नही होगाकि-क्या थेऔर-क्या होगये. इसलिखनेका मतलब यह हैकि-इन्सान अपने
थोडे जीवनकों ऐसेकाममें लगावे जिससे अपनेकों और दुसरोकों
फायदा पहुचे,

[संवत् १९४० का–चौमासा दाहर विकानेर,]

वादवारीशके होशियारपुरसेरवानाहोकर-जालंधर-छिधहाना अंबाला-सरहिंद-बनौली-वगेराकी सफरकरते देहलीआये, और

कुछरीज टहरकर गाजियाबाद-मेरट होते तीर्थ हस्तिनापुरकी जि-यारतकों गये. यह तीर्थ बडापुराना है वहांकी जियारत किइऔर फिर वहांसे देहली होतेहुवे मुल्क मारवाडकी सफरकों चले,-इन दिनोमें देहलीसें रवानाहोकर कुतुबमेहरोली फिरोजपुर–अलवर होतेहुवे शहर जयपुर आये, और एकमहिना वहांपर कयामिकया, जयपुरसें रवानाहोकर तीर्थफलोदी पार्श्वनाथकी जियारतको गये और वहांकी जियारतिकइ. वहांसे रवानाहोकर मेरटा-नागोरहोते शहर विकानेर जाते हुवे रास्तेमें-नोखेगांवमें-जब रातकों सोतेथे आधी रातकेवरुत एक सांपने आनकर महाराजके दाहने हाथके पंजेपर डंखमारा, उसवरूत दो-मुनिमहाराज-औरभी शाथथे जो दीक्षामें और उमरमेवडेथे, जबजहरने ज्यादहजोरदिया महाराजकी आंख खुळी. और कहा मेरे दाहनेहाथमें बहुतदर्द होताहै,-न-मा-ऌ्म क्याहुवा ? जिसश्रावकके मकानमें महाराज ठहरेथे-वह-और दोतीन शख्श और मिलकर लालटेनलेकर इधरउधर देखनेलगे-तो-माऌ्मह्वा एक वडा छंवा सांप-एकबीलमें घुसरहाथा, इससे साफ जाहिरहुवाकि-महाराजकों-सांपने काटाहै. और दाहनेहाथके पंजेकों देखातो खून माऌमहुवा. महाराजको यकीनहोगया मेरेदा-हनेहाथके पंजेपर सर्पने डंकमाराहै. खुद सर्पका मंत्रजानतेथे पढना शुरु किया, और कुछदेरकेबाद सांपका जहरउतरा, पिछलीरात कुछ नींद आइ और आरामभी माऌमहुवा, शुभहहोते आगेकों रवानाहुवे और देसणुक-भीनासर होतेहुवे तीसरेरौज विकानेर पहुचे, संवत् (१९४०) की वारीश वहांपर गुजारी, और नयप्रदी-प्रयं जवानीयादकरना शुरुकिया, जिसमें द्रव्य-गुण-पर्याय-नैयम -संग्रह-व्यवहार-शब्द-समभिरुढ-और-एवंभूतनयवगेरावयान है चौमासेकी अखीरतक मुहजवानी यादकरलिया, भगवतीसूत्रभी यहां

वाचा, और यहांके पुस्तकालयोसे कइपुरानीपुस्तके देखी. जब वारीश खतमहुइ तो मुल्कगुजरातकों जानेकेलिये खाना हुवे.

[संवत् १९४१ का-चौमासा-काहरअहमदाबाद,]

विकानेरसे रवानाहोकर नागोर-जोधपुर-और-पाली होतेहुवे पंचतीर्थीकी जियारतकों गये.१-वरकाणा, २-नाडोल, ३-नाड-लाइ, ४-घाणेराय, और-५-रानकपुर इनपांचगांवोकी जो-पंच-तीर्थी कहलातीहै, जियारत किइ, और रानकपुरसे आगे पहाडकी घाटीकों पारकरके शहर उदयपुरकों तश्वरीफ लेगये, और वहांपर एकमहिना कयामिकया, चैतमहिनेमें वहांसेरवानाहोकर तीर्थकेश-रीयाजीकी जियारतकों गये. जो वहांसे (१८) कोशके फासलेपर वाकेहै, जियारतकरके वापिस उदयपुर आये, और उदयपुरसें र-वाना होकर शिरोही अनादराकी-सफर करते तीर्थआबुजीकों गये. आबुके जैनमंदिर ऐसेखूबसुरत शंगमर्भरपर उमदा और बेंमीशाल-कारिगिरिसे तामीरिकयेहैकि-जिसकी-तारीफ-तवारिखोमें मशहूर है, वहांकी जियारतिकइ, और चंदरीज वहांपर ठहरे, बादइसके आबुसे रवानाहोकर पालनपुर-सिद्धपुर-ऊंझा-मेहसानाकी सफर करते शहरअहमदावादमें तश्चरीफ लाये, और संवत् (१९४१) की वारीश-वहांपर गुजारी, महाराजने योगवहनकरके इसचौमासेमे बडीदीक्षा इच्लियारकिइ. वैयाकरणभूषण–और–कुवऌयानंदअछं-कार मुहजबानीयादिकये,-कादंबरी-विक्रमोर्वशी-और-शकुंतलाना टक-बांचा, अछीतरह संस्कृत जवानमें बोलनेलगे, और हरेकवि-षयपर शास्त्रार्थकरनेकी ताकात हासिलहुइ.

[संवत् १९४२ का-चौमासा-शहरसुरत,]

बाद वारीशके शहरअहमदाबादसे रवानाहोकर-धंधुका-बो-टाद--उमराला--वावडी--होते तीर्थ--शतुंजयकी जियारतकों गये, एक महिना वहां कयामिकया. और वहांसे शिहोर-वरतेज बगेराकी सफर करते शहरभावनगरमें पहुचे, जब अपने चचाके घर भिक्षाकों गये तब महाराजकी चाचीनेकहाकि-जिसरौजसे-तु-मनेदीक्षा इच्तियाराकिइ उसके छमहिनेकेबाद तुमारेचाचेका इंतका-<mark>हहोगया, कोइदिन एसा</mark>–नही−गुजरताथाकि–उनोने तुमकों याद− न-कियहा. तुमको ऐसामुनासिव नहीथाकि-तुम-बिना कहेचले गये, और साधु होगये, घरमे कोइ आदमी नहीरहा, जब तुमारी यादआती है बिल्कुल रंजीदा हो जातीह, महाराजने उनकों धीरज दिइ और कहाकि--- तुम---खुद समझदारहो, शब्न करो और तीर्थकरदेवोंकी इबादतकरो जिससे सब अछा होगा, एसा कह कर भिक्षालेके अपनेमकानकों आये, और एक महिनेतक शहर भावनगरमें ठहरे, एकरौज महाराजकी चाचीने कहा अगर तुम व्याख्यान धर्मशास्त्रका बाचना सिखेहो--तो--हमकों सुनाओ, दुसरेरीज महाराजने व्याख्यानसभामे वैठकर सबलोगोकों व्या-ख्यान धर्मशास्त्रकासुनाया, लोग खुशहुवे और तारीफकरनेलगेकि दीक्षा लेना ऐसेही शख्शोका कामहै-जो-धर्मशास्रके माहितगार होकर आमलोगोकों धर्मका फायदा पहुचावे,

एक महिनेकेबादभावनगरसे रवानाहोकर गोघाबंदरकों गये, और घनोघमंडनपारसनाथकी जियारतिकइ, गोघाबंदरसें वरतेज गांव होतेहुवे बल्लभीनगरी जिसकों जमानेहालमें-बल्लागांव बोलते है आये, महाराजकी माता इसी बल्लभीनगरीकीथी, और उनके खा-नदानमें सिर्फ! एकहीभाइ लक्ष्मीचंदजी रहगयेथे, जो महाराजके

मामा−होतेथे. जवउनोने सुनाकि−हमारा−भानजा−जो साधुहोगया है आजरीज यहां आनेवाला है, चारकोशतक सामनेगये और वाद म्रुलाकातके उनोने महाराजसेकहा–तुम–अपने वालिदकेघर एकही बेटेथे और साधु होगये यह तुमकों लाजिम नहीया, महाराजने कहा-आप-बख्वी जानते हैिक-दुनियामें-बडेबडे राजेमहाराजे हो-गये जिनोने अपना राजपाट छोडकर दीक्षा इल्तियारिकइ-तो-मात्म होताहै धर्मकुछ बडीचीजहै, महाराजने वहांभी आमलोगोको च्याख्यान धर्मशास्त्रका सुनाया. और सबलोग खुश्चहुवे. फिर म-हाराजके मामानेकहा-जोकुछ हुवा अछाहुवा, चलो ! अब घरसे भिक्षा लेआओ, महाराज उनकैंघर भिक्षाकों गर्येः वहां उनकी मामीनेभी वहीकलामकहे जो इनके मामाने कहेथे, और यहभीकहा कि-मैने-तुमकों लडकपनमें पालाया, और अब साधुकेवेषमें देख-तीद्ध-तो-बडारंज माद्भम होताहै, घरमे बेठकर क्या! धर्म नहि होताथा. ? महाराजने कहा वेशक! होसकताथा मगर जैसा सा-धुपनेमें होसकताहै दुनियादारीकी हालतमें नही होसकता, औरभी महाराजने धर्मकी बातें सुनाइ, और भिक्षालेकर अपने मकानकों वापिस आये, करीव (१५) रौज वहां मुकीमरहे, फिर वछभीसे रवानाहोकर बोटाद-लीमडी-वढवान-और-धोलेराकी सफर क-रतेह्वे खंभातशहरकोंगये, वहांपरतीर्थस्थंभन पार्श्वनाथकीजियारत किइ. खंभातसें रवानाहोकर भडौचकों गये, वहांकी जियारत किइ, अश्वाववोध-और-शक्कुनिका विहारतीर्थकी तवारिख अपनी नोट-बुकमे यहां लिखी, भडौचसे खानाहोकर सुरतबंदरकों गये, और संवत् (१९४२) की वारीश वहां गुजारी. आचारांग-अनुयोग-द्वार-और ज्ञातासूत्र यहां बांचे. तत्वार्थसूत्रके दस अध्याय मूलपाट और-प्रमाणनयतत्वलोकालंकार इसचीमासेमें हिब्ज याद किया,-

(यानी) कंठाग्रिकये. ये-दोनां कितावे जैनसूत्रोकी-और-जैन-न्यायकी एक कुंजी है, जोश्चरुश इसको समझकर हिन्ज यादकरेगा जैनतत्व-और-स्याद्वादन्यायमें होशियार होजायगा.

[संवत् १९४३ का-चौमासा-दाहरपालिताना,]

बादवारीशके सुरतसे रवानाहोकर भडीचकेरास्तेसे शहरवडो-दा आये, इनदिनोमें स्थानांगसूत्र बाचा. वडोदेसें रवानाहोकर शहरअहमदाबाद—बढवान -लींमडी--बोटाद -और--वल्लभीनगरीकी दोवारासफर करतेहुवे वारीशके मौकेपर-शत्रुंजयतीर्थकी तराइमें-शहरपालितानेकों गये, जिसकावयान पेस्तर लिखभीचुकेहै, संवत् (१९४३) की-वारीश-वहांपर गुजारी, इसअर्सेमें महाराज-ब-आर्जी-खांसी-सुब्तीलारहे, करीवतीन महिनेके कोइइल्म नहीं पढागया,—

धर्माख्याने इमशाने च-रोगिणां या मतिर्भवेत्, यदि सा निश्चला बुद्धि:-को-न-मुच्येत बंधनात्. १

धर्मकीवाते सुनतेवरूत-मसानमं-और-न्वीमारीकी हालतमं आदमीकी बुद्धि जैसीधर्मपरपावंद रहती है अगर वैसी हमेशांवनी रहेतो-कौनऐसा शरूशहै-जो-संसारके वंधनमे-न-छुटसके, ? बीमारीकी हालतमें महाराज हमेशां पंचपरमेष्टिका जापकरतेथे, अपध्य खानपानसें परहेजरखतेथे, और किताववगेरा बाचतेरहतेथे. महाराजकी बीमारी सरूत-नहीथी, सरूतबीमारी वह होती है जिसमे अनाजखाना बंदहोजाय-रातकों-नींद-न-आवे, चहेरेकी रवन्नक बिल्कुल बदलजाय, आदमीकों पहिचान सकेनही, शर्म बिल्कुल छुटजाय, अस्थि-मांस-और-खून-बिल्कुल सुकजाय, रातकेवरूत

आस्मानमें-उत्तरिव्ञातर्फ-जो-ध्रुवका-तारा उदयहोताहै-वह-सख्त बीमारीवालेको अपनीनजरसं-न-दिखाइदे, कानमें अंगुली लगाकर देखनेसे जो अंदर घोरशब्द होताहै-सुनाइ-न-दे, अपनी आंखोंसे अपनेनाककी शिखा-न-दिखाइदे, अपनीजवान ग्रंहसे बहारनिकाले-तोभी अपनीआंखोसे-न-दिखाइदे, ये—सवसरुत वीमारीके निञ्चानहै, वीमारञ्चककों हरवरूत साफहवा<mark>में रखना</mark> चाहिये, विङ्योना-और-कपडेभी साफरखना अछाहै, बीमारश-रूशकों अकेला छोडना-या-बहुतआदमी जमाहोकर उसकेपास वैठेरहना अञ्चानही, अगर वीमारी बढतीजाय-या-सख्तहोजाय-तोभी-बीमारशस्त्रके सामने ऐसा-नहीकहनाकि-त्रम-इसबीमा-रीमें मरजाओगे. बल्कि! ऐसाकहनाकि-तम-जल्दी अछेहोजा-ओगे, बीमारशरूशके-सामने हमेशां धर्मशास्त्रकी वार्ते कहतेरहना अञाहै, उसके सामनेवेटकर रौना-नही, वीमारकों बहुतदिनतक एकही मकानमें रखनाअञानही, दिनमेंसोंना-रातकोंजागना, न-साकरना, मैथुनसेवना, ज्यादा वोलना, ज्यादागर्मीमें-या-ठंडमें वैठेरहना, या-पैशाव-पाखाना-रोकना वीमारकेलिये विल्कुलअ-छानही, महाराजकी बीमारी सख्त नहीथी. उमर लंबीथी, इस छिये आरामहुवा, इसअर्सेमं-महाराजकी बहेन मौजा-अमरेलीसे आइ, और कहनेलगी, आपकी तकदीरमें दीक्षालिखीयी, खेर ! मुजकों दर्शनहुवे यहीगनीमतहे, चंदरीज वहांठहरी, और महारा-केम्रुखसें धर्मकीहिकायते सुनतीरही, चौमासेकी अखीरमें महाराज कर्मग्रंथकीटीका बांचतेरहे, कातिकसुदी पौर्णमाकेरौज पहाडशत्रुंज-यपर जाकर तीर्थकी जियारतिकइ, और पुराने मंदिरमृर्त्ति किला-लेखोंकी नकल अपनी नोटबुकमें दर्जिकिइ,

できておける (学術)の

[संवत् १९४४ का-चौमासा दाहर राधनपुर,]

बादवारिशके महाराज पालितानेसें रवानाहोकर–महुआ–त-ळाजा-गोघाकी सफरकरते दोवारा भावनगरकों गये, और करीब देढमहिनेके वहां कयामिकया, व्याख्यान धर्मशास्त्रका हमेशांदेतेथे, और हरवल्त धर्मकेबारेमं बहेसहोतीथी, भावनगरसें रवानाहोकर बल्लभी-लींमडी-बढवान-और-धांगधराकी सफर करतेहुवे पाटन शहरकों गये. वहांपर राजाकुमारपालके वरूतका एकमशहूर कुतु-बखाना-(यानी) जैनपुस्तकालय देखा, और एकमहिना वहां कयामिकया, पाटनसें रवानाहोकर रियासत राधनपुरकों गये, और संवत् (१९४४) की वारीश वहांपर गुजारी, आर्यदेशदर्पण किताब–महाराजने यहांबनाइ, जोकि–उसीसालमें छपकर जाहिर होचुकी है. इसमें मुताबिक जैनशास्त्रके फरमानसें आर्य-अनार्य दे-श्रोंका खुलासा दियाहै, पंचाकसूत्र और टीका महाराजने यहांबां-ची, स्याद्वादमंजरी जोकि-जैनमजहबका एकतर्क ग्रंथहे यहां पढा. और उसका मूलपाठ हिब्ज यादिकया, इनिदनोमें महाराज बौध मजहबके पुस्तकोंका मुलाहजा करतेरहे, उसमेंसे कुछबातें बीधम-जहबकी यहांपर बतलाते है.

कड़लोग कहते है जैन-और-बौधमजहब एकहै, और कड़कहते है-एक-दुसरेकी शाखाहै, मगर जैन-बौध-किसी सुरत एकनही,
न-एकदुसरेकी शाखाहै, जैनमजहब तीर्थकर रिषभदेवके वख्तसे
जारी है, बौधमजहब पीछेसे जारी हुवाहै, -राजाशुद्धोदनके पुत्र-गौतमबुद्धका जन्म-नयपालकी तराइमें सुंसमार पर्वतकेपास कपिल
बस्तुग्राममें हुवा, जैनमजहबके और बौधमजहबके उस्तलमें बहुत
फर्क है, जैनमजहबमें तमामबस्तु-उत्पात-व्यय-और-धौव्ययुक्त

मानीगइहै, बौधमजहबमें तमामबस्तु क्षणिकमानी है, गौतमबुधके-चेलोमें-मोदगलायन-शौरीपुत्र-और-आनंद-ये-बडेचेलेथे, विन-यपीठिकासूत्र-महावग्गसूत्र-कुलवग्गसूत्र-परिवारपाठसूत्र-दिग्नि-कायसूत्र-परिनिवाणसूत्र-मध्यमनिकायसूत्र-विमानवध्धुसूत्र-पेयव-ध्युसूत्र-थिरगाथा-निदीशपीठिका-पाटीसंविदा-कथावध्यु-वगेरा बौधमजबके पुस्तकोंके नामहै,—

जैनके अलीरके तीर्थकर महावीरस्वामी जब हयातथे गौतम बुधभी उसवरूत मौजूदथे, गौतमनामसे चारक्क दुनियामें मशहूर हुवे, तीर्थकर महावीरस्वामीके बढे चेले गौतमगणधर जैनथे, गौतमबुध—बौधमजहबके—नामी-श्राट्यथे, गौतमिरिषि—वैदिकमजहबके रिषिथे, नैयायिक मजहबके गौतमिरिषि अलग हुवे, बौधमजहबके शास्त्रोसें माद्यम होताहै कि—गौतमबुधके वरूतमें—यागी—वैरागी—यति मौनी—निर्प्रथ वगेरा बहुतसे मतके साधु मौजूदथे,—बौद्यमजहबके साधुभी—चौमासेमें सफर नहीकरते, अंतरवसन—मध्यवसन—उत्तरिय—किटवंध—भिक्षापात्र—जल्लानेकापात्र—ये—बौधमजहबके साधुओके उपकरण कहेजाते है,—राजा कनिष्ककेवरूतसें बौधमजहबके दो—शाखा हुइ.—इसवरूत हिंदमें बौधमजहबकेलोग थोडे है, मगर मुल्क चीन—जापान बर्मा—और—टिब्बट तर्फ बहुत है,—

[संवत् १९४५ का-चौमासा-शहर-अहमदाबाद.]

बादवारीशके राधनपुरसे रवानाहोकर तीर्थ शंखेश्वरकी जि-यारतकों गये, जोकरीब (१८) कोसके फासलेपरवाकेहै, उसकी जियारतिकइ. और उसकीतवारिख अपनी नोटबुकमें दर्जकरिलइ, तीर्थ शंखेश्वरसे रवानाहोकर कस्वे मांडलको आये और वहांपर महाराजने अपने गुरुजीसे सूरिमंत्र-और-वर्द्धमान विद्या पढी, छेदग्रंथ-महानिश्रीथभी इसीअर्सेमें बाचा, मांढलसे रवाना होकर शहर अहमदाबादकों आये, और संवत् (१९४५) की वारीश वहांपर गुजारी, व्याख्यान धर्मशास्त्रका हमेशां करतेथे और सभा अछी भरतीथी, हैमकोश-यहां महाराजने हिब्ज यादाकिया, और यहांके पुस्तकालयोंसे-कइ पुस्तक देखे. वसुदेवहिंडिग्रंथ यहांबाचा, कइमरतवे वहीबडी सभा भरकर एक एक बातपर घंटोतक वाज करतेरहे, एक रौज जैनमंतव्यपर वाज किया उसकामतलब इस तरह है.

👺 [जैनमंतव्य-प्रकादा,]

१-रागद्वेष-कामक्रोध वगेरा दुक्मनोसे जिनोने फतेहपाइ है उनकों जैनशास्त्रोंमें जिनकहते हैं, और उनका वयान कियाहुवा-जो मतहै-उसकों जैनमत कहते हैं, जिसकों हमेशांसे लोग मानतेआये, मानते हैं, और मानेगे, इसलिये इसकों सनातनधर्मभी कहागयाहै,

२-जैनोके कायदे ऐसे हैं जिसका विरोधी बनना नहीहोसकता, अगर कोइ झुठी दलील करके विरोधी बनजाय तो उसकी मर-जीकी बातहै. मगर सची दलीलसे विरोध नही आ सकता,

३-रागद्वेष कामक्रोध वगेरा (१८) दोषोसेरहित जिनेंद्रदेवको जैनमें इश्वरपरमात्मा मानेगये है, अईन्—वीतराग-सर्वज्ञ-ये-सब इनहीके नाम है,

४-साधु-साध्वी-श्रावक-श्राविका-इन चारोंकों जैनमें संघ कहते है,— ५-जैनमजहबमें-जगत्-अनादि है, सबजीव अपनेअपने कि-येहुवे कमीं कों खुद भोगते है, इश्वर उसका फलदेवे, ऐसा जैनलोग नहीमानते. रागद्वेष वगेरा दोषोसें रहित इश्वर-फलदेनेके-झगडेमें क्यों पडे ? जो शख्श जैसा कर्म करेगा वैसा फल खुद पायगा, जैसे शराव पीनेवाला नशेके जोरसे खुद गाफिल होजाताहै, वैसे हरेक जीव अपनेकियेहुवे पापकर्मसें गाफिल होताहै,

६-जिसकेपास हथियारहै, जिसकेपास औरतहै. जिसकेपास जपमालाहै, और-जो-दुश्मनकों मारनेकी तयारीमें खढेहै, उनकों जैनमें देवनही मानेगये,—

७-पंचमहाव्रतकों इष्टितयार करनेवाले-भिक्षा गांगकर सी-कमपरवरीश करनेवाले-और-सत्यधर्मके उपदेष्टा-जैनमें-धुनि--मानेजातेहै,

८-जिनेंद्रदेवोके फरमायेहुवे-जैनागमको-जैनमजहबर्मे-सत्शा-स्नमाने है, जिसमें पूर्वापर विरोध-अौर-इन्साफसे खिळाफ बात नहीहोती,

९-पक्षपातरहित-और-दुर्गतिसे अछीगतिकों पहुचानेवाला-जैनमे-धर्म-मानागयाहै,

१०-जैनशास्त्रमें स्वर्ग मनुष्य तिर्यंच और-नरक-ये-चारगित मानीगइहै, स्वर्गगिति वहहै-जो-आस्मानमें चांदसूर्य वगेराके वि-मान देखतेहो, उसमें देवतेलोग रहते है, और-वे-खुद उसकों च-स्राते है. जोलोग कहते है, विद्वानोंकों देव मानना अविद्वानोकों-असुर,-पापियोंकों राक्षस, और अनाचारियोंकों पिशाच मानना चाहिये. जैन-इसवातसं—िखलाफहै. विद्वान्-अविद्वान्-पापी-और-अनाचारी अलगहै, और-देव-असुर-राक्षस-और-पिशाच अलगहै,-

- ११-मनुष्यगितमें-जितने-मनुष्यहै सब आगये, जोलोग क-हते है दुनियामें मुखी है-वह-देव-और दुखी है-वह-नारकी है, जै-नलोग इसबातसे खिलाफहै, जैनलोग-स्वर्ग-नरक-अलगचीज मानते है. मनुष्यगित अलग मानते है.
- १२-तिर्यचगातिमं जितने-पश्च-पक्षी-हाथीघोडे-मोर-तोते-चिडिया वगेराहै सब आगये,
- १३-नरकगित पृथवीक नीचे है, जो अजहद पाप करता है जसगितकों पाताहै, जहांकि-शिवाय तकलीफ-और-रंजके दुसरी चीज-नामनीशानकोंभी नहि है,
- १४-मृत्तिपूजा-और-तीर्थ-जैनलोग मानते है,-और तीर्थी-की जियारतकों जानापुन्य समझते है,
- १५-अईन्-सिद्ध-आचार्य-उपाध्याय-साधु--श्रद्धा-ज्ञान-चारित्र-और-तप-ये-नवपद जैन मजहवमें-आलादर्जेके पाक स-मक्षेगये है,
- १६-तकदीर-और-तदबीरमें तकदीर बडी-और-तदबीर छोटी समझी गइहै.-तकदीर बुरीहो-तो-तदबीर चाहे जितनीक-रहो पायदा-न-होगा.
- १७-जैनलोग-तमाम बस्तुकों-स्वस्वरुपसे अस्ति, और पर-स्वरुपसे नास्ति मानते है, और इसीकों-स्याद्वाद न्याय कहते है,

(अनुष्दुप्-वृत्तं,)

सर्वमस्ति स्वरुपेण-पररुपेण नास्तिच, अन्यया सर्वभावानां-एकत्वं संप्रसज्यते, १

१८-त्रत्यक्ष-और-परोक्ष-ये-दो-त्रमाण जैनमें मानेगये है,

१९-जैतमें चेतता लक्षणयुक्तकों जीव मानाहै, और चेतनार-हितकों अजीव-युमकर्मके पुरग कर्को पुन्य-और अयुभकर्मके पुर-लक्षों पाप मानाहै, भलेगुरे परिणामोसे जीव युभायुभकर्म बांधता है. और उदय आनेसें भोकाहै,

[शार्वृलविक्रीडितं.]

२०-तत्वानि व्रत्यर्भसंयमगतिज्ञानानि सद्भावना, प्रत्याख्यानपरिसहेंद्रियमद्ध्यानानि रत्नत्रयं, लेड्यावद्यककाययोगसमितियाणाः प्रमादस्तपः संज्ञाकमकषायगुष्ट्यतिद्यायाज्ञेयासुधिभिः सदा॥१॥

[स्राधराष्ट्रसम्,]

त्रैकाल्यंद्रच्यषर्कं नवपदसहितं जीवषर्कायलेश्याः पंचान्यंचास्तिकाया वतसिनितिगतिज्ञानचारित्रभंदाः इत्येतनमोक्षमलं त्रिभुवनमहितैः प्रोक्तमहिद्गिरिशैः प्रस्थेतिश्रद्धाति स्पृशातिचमतिमान् यस्यवैशुद्धदृष्टिः ॥२॥

नवतत्व-पंचमहात्रत-द्विविधधर्म-सतराहभेदी संयम-चारगित पंचज्ञान-वारांभावना-दस मत्याख्यान-वाइस परिसह-पांचइंद्रिय आठ मद-चार ध्यान-तीनरत्न-छलेश्या-षर्आवश्यक-छकाय-तीनयोग-पांचसमिति-दसमाण-पांचममाद-वारांभेदीतप-चारसंज्ञा आठकर्म-चारकषाय-तीनग्रप्ति-चौतीसअतिश्चय-तीनकाल-छद्रव्य और नवपद-इनकों अछीतरह समझना और इनके भेदोकों पहि-चानना यह शास्त्रोका सार है.

२१-जैनमें गर्भाधान-जन्म-उपनयन-वियारंभ-विवाह-बन तारोप-और-अंत्यकर्म वगेरा (१६) संस्कार माने है,

२२-पुनर्छप्र करना जैतमें मताहै, जिसमें नुक्रशान ज्यादह और फायदा कमहै, उसकामको करना क्या जरुरत,?

२३-जैनलोग-पृथवीकों स्थिर-और--चांदसूर्यकों फिरते मानते हैं,

२४-जीवका-एक गतिसें दुसरी गति-और-इसतरह जन्म-जन्मांतरकों जाना आना-जैन-मानते है, जब सब कर्मोंसे रहित होगा, उसकी मुक्ति होगी और फिर वहांसें कभी-न-लोटेगा.

(जैनमंतव्य-प्रकाश-खतम हुवा,)

एकरीन कलंकीराजाके वारेमेंभीवाज-किया, उसरीज वडी
सभाभरीथी, जो नोलोग कहतेइकि-कलंकीराजा-संवत् (१९१४)
में होगया, मगर यहवात गलतई, जेतागम महानिशीथसूत्रके पंचमे
अध्ययनमें साफवयान होके-कलंकीराजा श्रीप्रभूषणगारकी हयातीम होगा युगत्रवातयंत्रमें लिखाई श्रीप्रभूषणगार आठमें उद्यके
पहिले युगपधान होगे, पांचमेश्रारेक एकीसहजार वर्षमें तेइसदफें
जैनधमका उद्य और तेइसदके अहतहोगा, जमाने हालमें तीसरा
उदय आयगा कलंकीराजा-उसव्यतहोगा, जमाने हालमें तीसरा
उदय चलताहे, श्रीप्रभूषणगार युगपधान अवतकहुवे नही, फिर
कैमें कहाजासकताहेकि-कलंकीराजा होगया, ? युगपधान यंत्रकी
गिनतीस यहभी माञ्जमहोताहे कि-आठमाउदय पांचमेश्रारेके दस-

हजारवर्ष बतीतहोनेके बाद आयगा, दीपमालाकल्प-और पांचमे-आरेकी-सङ्गाय-महानिशीयसूत्रसे वडीनही, इनवातोंसें सबुतहुवािक -कलंकीराजा-अवतक नहीं हुवाहै, उसरीज औरभी बहुतकुछबहेस हुइथी, मगर यहां उसवातकों थोडेमें लिखदिइहैिक-लिखाण ज्यादा बढेनहीं और लोगोकों फायदा पहुचे,

(संवत् १९४६ का-चौमासा-शहर जयपुर,)

बादवारीशके शहर अहमदाबादसें रवानाहोकर पेथापुर-मा-णसा-विजापुर-वडनगर-विशनगर-और-मौजे खेराछ होतेहुवे तीर्थ तारंगाकी जियारतकोंगये, उसकी जियारताकेइ, और-अप-नी नोटबुकमें तमाम वजुहात उसतीर्थकी दर्जिकिइ. तीर्थ तारंगासे रवानाहोकर पालनपुरहोते तीर्थआबुकों गये. वहांकी जियारतिकइ, और पुराने शिलालेखोंकी-नकल-अपनी नोटबुकमें दर्जिकिइ, आ-बुसे रवानाहोकर-पाली-नयाशहर-अजमेर-किसनगढकी सफर करते जयपुर गये, और संवत् (१९४६)की-वारीश-वहांपर गुजारी, व्याख्यान धर्मशास्त्रका हमेशां करतेथे, इनदिनोमं वाग्भट्टालंकार और-अलंकारचूडामणि हिब्ज यादिकये, ये-दोंनो अलंकारग्रंथ है, अर्हन्नीतियंथ इसचौमासेमें पढा. पिछले दिनोमें त्रैलोक्यपकाज्ञ प्रंथ-जिसमें-नजुमका बयानदर्ज है-हिब्ज याद किया. चंद्रपक्किन-सूर्यंप्रज्ञप्ति-ज्योतिषकरंडक-आरंभिसद्धि-जन्मांभोधि-और-नारचंद्र वगेरा जैननजुमग्रंथ बाचे,-समरसार-और-नरपतिजयचर्या-अन्य मतके नजुमग्रंथ-इसालिये-मुलाइजा कियेकि-इनमें नजुम किसतरह बयान किया है,

रिग्वेद-यजुर्नेद-सामवेद-अथर्ववेद-मनुस्मृति-याज्ञवल्कस्मृति भारत-भागवत-और-गीता-वगेरा वैदिकमजहवके शास्त-शुरुसे अखीरतक इसगरजसे वांचिकि-इनमें-धर्मके बारेमें किसतरहबयान कियाहै, अकलमंदोंका कोलहैकि-हरमजहबकी किताबोंका मुलाहजा करे, और उनकों पहिचाने. इन दिनोंमें महाराजने संगीतकलाका इल्मभी हासिल किया, सातस्वर-तीनपाम-एकीसमूर्छना-और-उनंचासतान−इनको जाननेवाला शख्श संगीतकलाका इल्म उमदा तौरसे पासकता है. भैरव-–मालकोश-–दीपक–हिंडोल-मल्हार– और-श्री-ये-छ-रागके नामहै, पेस्तरके जमानेमें घांणीके सामने वेठकर भैरवराग गानेसे विना बेंलके घांणी चलजातीथी, पथरकी शिलाके सामने वेटकर मालकोश राग गानेसे पथर-पानी होजा-ताथा, दीयेके सामने वेठकर-दीपक राग गानेसे-विना दियासलाइ दीपक जलजाताथा. हिंडोलेके सामनेवेठकर हिंडोल राग गानेसे-वइ–झुलने लगताथा. और श्री रागके गानेसे गवैयेको दौलतकी तंगी नहि रहतीथी, आजकल रागमे वैसी ताहसीर नहीरही, न-वैसे गानेवालेरहे, जैसा जमानाहै वैसीचीजे मौजूद है. वीणा−िस-तार-दिल्रुखा--सुरशिंगार-सरोद--सरंगी-ताउस-हारमोनियम-वेंछा−अलगोजा−वंशरी--और-जलतरंग वगेरा-वाजे-गानेवालेके कंठको मदद पहुचासकते है, जब तीर्थंकरदेव-मालकोशरागमें ता-छीमधर्मकी देतेथे इंद्रदेवते दिव्यवाजोसे स्वर पुरतेथे, आजकलभी अगर कोइ म्रानि–रागरागिनीमें तालीम धर्मकी देवे–तो कोइ हर्ज निहहै, रागरागनी निहायत उमदाचीजहै, अगर तालस्वरसें पर-मात्माकीइवादत किइजाय तो-अथुभ कर्मकी निर्जरा और औरप्र-न्यानुवंधि-पुन्यमाप्तिका हेतु है.-जिसकों संगीतकलाका इल्म-नही है. वे-कहते है रागरागनी कुछ चीज नही. मगर उनके कहनेसे संगीतकला कमजोर नहीहोसकती, जैनागम-स्थानांग-और-अतु-योगद्वारसूत्रमें स्वरोका वयान उमटा तौरसें दर्ज है, जिनकों शकही ब-खूबीदेखे, गानेवालेके स्वरकी नकलकरना सरंगीकाही कामहै, दुसरे वाजे-गत-तोडे-और-आलाप वेशक ! देसकते है, मगर गलेकी नकल करना सरंगीकोही याद है. महाराज सरगम-तराना धुपद-भैरवी-कालिंगडा-जोगिया-आसाउरी-वेलावल-सारंग-जीला झींझोटी-कमाच-पीलु-धनासीरी-कल्याण-सोरठ-विहाग-और-जेजेवंतीवगेरारागरागनी अलीतरह गानेलगे, और धर्मशा- स्नके व्याख्यानमेंभी रागरागनीसें तालीम धर्मकी देतेरहे.

(संवत् १९४७ का-चौमासा-शहर देहली,)

बादवारीशके जयपुरसे रवानाहोकर सांगानेर गये, चंदरौज वहांठहरकर वापिस जयपुरआये, और मुकाम मजकुरपर कयामिक-या, इसअर्सेमें महाराजके गुरुसाहवभी-जोकि-जोधपुरमें-वारीश-के अय्याममें मुकीमथे, मुनिमंडलके शाथ बडेशान-व-साँकतर्से जयपुरमें तशरीफलाये, और महाराजभी गुरुजीकी पेशवाइमें गये, जयपुरमें करीव (२०) रौजतक शाथटहरे, इसअर्सेमें गुरुजीका-और-महाराजका आपसमें कुछतकरार होगया, और महाराज ना-राजहोकर गुरुजीसें जुदेहोगये, चैतवैशाखके दिनोमें अलवर होते-हुवे शहरदेहलीकों तशरीफलेगये, और संवत (१९४७) की वारीश वहांपर गुजारी, व्याख्यान धर्मश्राक्षका हमेशांकरतेथे, और म्रुननेवाले लोग कसरतसे जमाहोतेथे, आचार्यसिद्धसेन दिवाक-रकी बनाइहुइ द्वात्रिंशका-आचार्य हरिभद्रस्रिका बनायाहुवा छो-कतत्विनिर्णय और षड्दर्शन सम्रुचय मूलपाठ हिब्ज यादिकया, एक रोज महाराज देहलीकी चारोंतर्फ पुरानेमकान-षंढहेर-और-ना-मीग्रामी इमारतें देखनेकों गये, और कहपुराने मकानात देखकर स्वयालआयाकि-क्याक्या !! इमारते दौलतमंदोने बनाइथी और

अब किसहालमें पडीहै, जिनजिन होजोमें गुलाव-और-वेदगुरक-भराजाताथा-उनमें अब काइजमरही है. जहां मखमल-और कम-ख्वाबके फर्शपर मोतियांकी झालरके शिमयानेखडे कियेजातेथे-बहां-अबकोइ झाइभी नहीदेता, जिनकी अर्दलीमें सेंकडों सवार दोडतेथे-और-जो तमामिहंदुस्थानमें नहीसमातेथे-थोडीसीजमीनमें सोयेपडेहै, होनहारकेतामने किसीका जोरनहीचलता, उदय अस्त सबकों लगाहै, हुकमहोदा-अमल्दारी और खजाना छोडकर इस दुनियाफानीसरायसे एकरौज जरुरविदाहोनाहै, पुरानीचीजोंकों देखकर आदमीकों एकतरहका असर होताहै, और यहभी खयाल-पैदाहोताहैकि-सारवस्तु धर्महै. जींदगीका कोइभरुसा नहीं. जहां-तकवने धर्मकरनाचाहिये.-

(संवत् १९४८ का-चौमासा-शहर लशकरगवालियर,)

वादवारीशके देहलीसे रवानाहोकर कुतुव-मेहरोली-गुडगांव होतेहुवे कस्वे फरुखनगर गये. और करीव (४) महिने वहांठ-हरे, यहांपर महाराजने अपनेलिये (टाइम-टेबल) कायमिकया, (यानी) शुभहसेलेकर शामतक-और-शामसेलेकर शुभहतक कि-सिक्सवरूत क्याक्या कामकरना-उसका वरूत-मुकररिकया, शु-भहके (६) बजेसे (७) बजेतक प्रतिलेखना-और-स्थंडिलभूमि जाना, (७) बजेसें (८) बजेतक योगाभ्यास चिंतवन करना (८) बजेतक व्याख्यानसभामें बेठकर धर्मीपदेश देना, (९॥) बजेसे (१०) बजेतक विश्राम, (१०) बजेसें (१२) तक आ-हारपानी लेना, (१२) बजेसे (४) बजेतक-आयेगये गृहस्थो-केशाथ धर्मचर्चाके बारेमें वहेसकरना-ग्रंथवनाना-लिखना-पढना-पा-ज्ञानचर्चा-करना, (४) बजेसे (५) बजेतक प्रतिलेखना करना, और स्थंडिल्लमूमि जाना, (५) बजेसे (६) बजेतक आ-हारपानी लेना, सूर्यअस्त होनेकेबाद (८) बजेतक प्रतिक्रमण बगेरा करना, (८) बजेसे (१०) बजेतक ज्ञानचर्चा-और यो-गाभ्यास चिंतवन, (१०) बजेसे शुभहके (५) बजेतक शयन करना, (५) बजेसें (६) बजेतक सूरिमंत्रका जाप-और-प्रति-क्रमण करना, इसतरह हमेशांकेलिये अपना टाइमटेबल कायमिकया,-

फरुकनगरसे रवानाहोकर-होडल-पल्वल-मथराहंदावन-होते हुवे-शहरआगरा गये, और (८) रीज वहांपर कयाम किया, वहांसे रवानाहोकर घोलपुरहोते लशकर-गवालियर पहुचे, और-संवत् (१९४८) की वारीश वहांपर गुजारी, दिमयान सराफाबजार जैन मंदिरके पास पंचायती उपाश्रयमें कयामिकया, व्याख्यानसभामें सूत्र आवश्यकहित्त-और-वासुपूज्यचरित बाचतेथे, व्याकरण चंद्रमभा-इसचौमासेमें आधा-हिब्ज-यादिकया. और स्याद्वादरत्नाकरावतारिका पुरी बांची, एकरोजकेलिये छावनी-सुरार-जोकि-तीनकोशकोपासलेपरवाकेहै गये, और वहांपर मूर्तिपूजापर व्याख्यानदिया. जहांजहांपर महाराजजातेहै-और व्याख्यानदेतेहै वहां धर्मशास्त्रके (१३) कानुन एकसाइनबोर्डपर लिखकर-या छपवाकर मकानकी दिवारपर इसलिये लगा दियेजातेहैिक-सुननेवाले उनकों-वाचकर अमलकरे, उसकीनकल यहांपरभी देतेहै, इसमें व्याख्यानसुननेका सवमतलबदर्जहै, व-खूबी देखलो, !

ष्टि व्याख्यान धर्मशास्त्रके (१३) कानुन,)

?-अवलकानुन व्याख्यानसुनते वस्त कोइ शौरगुल-न-करे, चुपचापहो करसुने, व्याख्यानका टाइम साढेआठसे साढेनवतक सवेरकाहै,

- २-दुसराकानुन व्याख्यानसभामे कोइ सामायिक-न-करे,
- २-तीसराकानुन व्याख्यानसुनते वस्त कोइ माला-न-फेरे,
- ४-चोथाकानुन व्याख्यानसभामें शौरगुलकरे एसे छोटेलडके-को-न-लावे,
- ५-पांचवाकातुन चलतेव्याख्यानमें कोइ उठे नहीं. खतमहोते जब उठे,
- ६-छठाकानुन-व्याख्यानसुननेवालेको कोइ बुलानेआवे तो सुंहसें जवाब-न-देवे, इशारेसें समझावे,
- ७-सातमाकानुन शोगसंतापवालोकों परभावना खेनेमे कोइ इर्ज नही.
 - ८-आठवाकानुन धर्मशास्त्रसुनने आनेमें शोगरखनानही,
- ९-नवमाकानुन व्याख्यानसभामें जहां जगहदेखे वहां बेठजाय, चाहे गरीबहो-या-अमीर, पेस्तरआवे वह आगेबेठे, पीछेआनकर आगे आनेका इरादा-न-करे,
- १०-दसमाकानुन चलते व्याख्यानमे फक्त सीरश्चकाकर वं-दनकरे, व्याख्यान खतम होनेपर-या-पेस्तर तीनक्षमाश्रमण देनेमें कोइहर्ज नही.
- ११-ग्याहरमाकानुन चलते व्याख्यानमें कोइ-प्रत्याख्यान→ न-मांगे,
- १२-बारहमा कानुन शोगसतापवाले अगर परभावना बांट-नाचाहे-तो-ब-जरीये दुसरेके चीजमंगवाकर बांटदेवे,
 - १३-तेरहमाकानुन व्याख्यानमं जिसकिसीकों-जो-कुछपुछ-

नाहो खुशीसे पुछे, मगर शर्तयह है व्याख्यानमें जोबातचलीहो-जसीमजमूनको पुछे, विनासंबंधकी बात-न-पुछे, और अगर तु-मारी भूलपर गुरु-सख्तसुस्त बातकहे-तो-उसकाबुरा-न-माने, बल्कि! हकसमझे,

(सूचना,) तीर्थकरदेव समवसरणमे बेठकर मालकोशरा-गर्मे तालीमधर्मकी देतेथे, जमानेहालमेंभी कोइ-म्रुनि-रागरागनीमें व्याख्यानदेवे-तो-कोइहर्ज नहीं है.—

(व्याख्यान धर्मशास्रके (१३) कानुन खतमहुवे,)

🗺 [छावनी मुरारमें मूर्त्तिपूजापर दियाहुवा व्याख्यान,-]

दुनियामें मूर्त्तिपूजा कदीमसे चलीआइ, मूर्त्तिपूजाके निषेधक पुरुष कइहुवे मगर मूर्त्तिपूजा हमेशांकेलिये कायमही रही, गरजिक निवामूर्त्तिके किसीकाकाम नहीचला, मूर्त्ति-प्रतिमा-चैत्य-विंव मितकृति-अक्स-औरतस्वीर-ये-सवमूर्त्तिहीके नाम है, अगरकोइ कहे, मूर्त्ति-जीवहै-या-अजीव?-(जवाब) शास्त्र जीवहे-या-अजीव, श्रां अगर अजीवहै-तो-वतलाइये!-अजीव पदार्थकों क्यों मानागया, श्रां अगर कहाजाय-शास्त्रके देखनेसें-ज्ञानपेदा होताहै-तो मूर्त्ति देखनेसेंभी उसदेवके स्वरुपका ज्ञान पेदाहोताहै-ऐसा-मान-नेमें क्याहर्ज है, ?

भगवतीसूत्रके मूलपाठमें ब्राहमीलिपिकों नमस्कार कियाहै, सोचो ! ब्राहमीलिपि ज्ञानकी स्थापनाहै-या-नही ? अगरहै-तो-स्थापना निक्षेपा मानना मंज्रह्वा, आवश्यसूत्रकी निर्युक्तिमें भ-रत चक्रवर्त्तिने अष्टापदपर्वतपर जैनमंदिर बनवाये ऐसाखुलापाठहै, [निर्युक्ति आवश्यकसूत्र-अध्ययन पहिला,] थुभसयभाउगाणं-चउवीसं जिणघरे कासि सञ्वजिणं पडिमा-वन्नपमाणेहिं नियएहिं, १

इसपाठसे साफजाहिरहैकि-भरतचक्रवर्त्तिने चौइस जैनमंदिर बनवाकर उसमें चौइसमूर्त्ति तीर्थकरोकी रखी, जैसाकि-उनका रूपरंगथा, अगरकोइ तेहरीरकरेकि-हम निर्युक्ति नहीमानते-तो-उनकों माल्रमकरना चाहिये भगवतीसूत्रमें क्यालिखाहै, उसमे लिखाहै-निर्युक्तिकों मानना चाहिये, अगर इसबातपर किसीकों शकहो-तो-भगवतीसूत्रकों खोलकरदेखलेवे. भगवतीसूत्रकों दुंढि-ये मजहबवालेभी मानते है, उसमें मूर्त्तिकामानना साफजाहिरहै,

^{[क्रि}(भगवतीसूत्रका पाठ−शतक (२५) मा-उद्देशातीसरा,)

सुतथ्थो खलु पढमो-बीयो निज्जुत्तिमिसओ भणियो, तइयो निरवसेसो-एस विहिहोइ अणुयोगो,—

देखलो ! इसपाठमें साफलिखाहै कि—निर्युक्ति—मानना, फिर कौन कहसकताहै कि—हम—निर्युक्ति नहीमानते, सबुतहुवाकि—बत्ती-ससूत्रके मूलपाठमें—निर्युक्ति मानना लिखाहै, जोलोग इनकारकर-तेहै गलतीपरखडे है, उवाइसूत्रके—मूलपाठमे तीर्थकर महावीस्वामीके रुवर अंबडश्रावकने अरिहंतकी प्रतिमाकों वंदना—नमस्कारकरना कुबुल किया, सबुत उसका इसपाठसे साफजाहिर है, देखलो ! उवाइसूत्रका पाठ.—

अंबडस्सणं परिवायस्स नोकप्पइ अन्नउध्थिएवा-अ-न्नउध्थियदेवयाइं वा-अन्नउध्थियपरिग्गहियाइं अरिहंत-चेइयाइं वा-वंदितएवा-नमंसित्तएवा-नन्नध्थ-अरिहंतेबा अरिहंतचेइयाणिवा, माइने इसपाठके-ये-हैिक-मुजे गेरमजहवीकों-उनके देवोको और गेरमजहववाले लोगोने अरिइंतकी मूर्त्तिकों लेकर अपने देव-रूप करिलइहो-उसकों वंदना-नमस्कार करना मुनासिवनही, मगर जिस अरिइंतकी मूर्त्तिकों गेरमजहवके लोगोने लेकर अपने देवरूप-न-वनालिइहो-और-मुताबिक फरमान जैनशास्त्रके हो- उसकों-वंदनानमस्कार करना मुजे मंजूरहै. देखिये! यह सबुत किसकदर सच्चा और-पावंदहैकि-जिसपर कोइकिसी तरहकी हुज्जत-या-तकरीर नहीकरसकता. इंढियेलोग चैत्यशब्दका मा-इना-साधु-करते है, मगर चैत्यशब्दका-माइना साधु नही है. ब-रिक ! हैमकोशमें चैत्यशब्दका माइना जिनमंदिर और जैनमितमा लिखाहै-

ं चैत्यं जिनोकस्तद्बिंबं, इतिहैमः,-

आनंद श्रावकके पाठसेभी साफ जाहिरहैकि-वह--तीर्थकर महावीरके सामने गया, और उसनेभी वही नियम इष्टितयारिकया जो उपर छिखागयाहै, अगर इसका कोइ सबुत तलब करनाचाहे तो-इसआगे छिखे पाठकों देखकर माल्लम करले, उपाशक दशांग-सूत्रका पाठ बतलाते हैं, देखलेवे,

नो-खलु-मे-भंते! कप्पइ अज्जपभिद्वंचणं-अन्न उथियवा-अन्न उथिथयदेवयाणिवा-अन्नउथिथयए-परिग्ग-हियाद्वा-अरिहंतचेइयाद्वा-वंदितएवा-नमंसितएवा,-

माइने इसपाठके और दिगरपाठ जो उपर अंबडजीश्रावकका लिखचुके-दोनोंके-एक होते है, देखिये ! अंबड-और-आनंदश्रा-वककी पावंदी धर्ममें कैसीथीकि-जिनोने इतनी सख्ती इन्हितयार

किइ. महानिशीथसूत्रके पाठसे यहभी साबीतहैिक—जो शख्श जैन मंदिर बनवायगा और मुताबिकशास्त्र फरमानके दानपुन्य करेगा उसकों बारहमें स्वर्गकीगति हासिलहोगी, और वह पाठभी यहां बतलादिया जाताहै, अकलमंद गौर करलेवे कुल्लहाल मुफस्सिल मालूम होगा,

(महानिद्यीथसूत्रका मूलपाठ,)

काउंपि जिणायणेहिं-मंडिया सन्वमेयणिवदं, दाणाह चउक्कयेण-सदोगछेज्जचुयं जाव,॥१॥

देखलो ! इसपाठमं जैनमंदिर वनवानेवालेकों बारहमें स्वर्गकी गित होना साफ वयानहै. अगर कोइ कहेकि-हम-महानिशीथस्-त्रकों नही मानते-तो-जवाबमें मालमकरे नंदीस्त्रमें महानिशीथस्-त्रका माननालिखाहै-या-नही ? अगर कहोगे लिखाहै-तो-महानिशीथस्त्रकोभी मानो और मंदिरमूर्तिभी कुबुलकरों, असुरकुमार देवता जब उपरकेस्वर्गकों जाताहै-वगेर-अरिहंत-अरिहंतकीमूर्ति-साधुमहाराजके सरनेके नहीजासकता, वहबात इसआगे बतलायेहुवे पाठसे साबीवहै. व-गौर देखे,

(भगवतीसूत्रका पाठ,

नब्नध्थ-अरिहंतेवा-अरिहंतचेइयाणिवा- भाविअप्प-णो अणगारस्सवा-णिस्साए-उदं-उप्पयंति जावसोहम्मो कप्पो,

इस पाठका मतलब उपर आचुकाहै, अगर अरिहंतकी मूर्तिं जैनमजहबमें मानना मंजुर-न-होतीतो एसा पाठ क्यों होता ? दश्चवैकालिकसूत्रके मूलपाठमें लिखाहैकि-अगर कोइ तस्बीर और- तकी किसीमकानमें उतारीहुइ मौजूदहो-तो-वहांपें जैनमुनिकों वहरना नहि चाहिये, उसका पाठ वतलायाजाता है देखिये!

(अध्ययन ८ मा-सूत्रद्शवैकालिक,)

चित्तभित्तं-न-णिझाए-नारेवासुअलंकियं, भखरं पिव दठुणं-दिठी पडिसमाहरे,

इसका मतलब यहहैिक-जिसदिवारपर औरतका चित्रहो-उसकों मुनि-न-देखे. जैसेसूर्यकों देखकर अपनीनिगाह पीछीखें-चित्रजातीहै औरतके चित्रकों देखकर अपनीनजरकों खेंचलेवे. किसवास्तेकि-उसतस्वीरकों देखकर असलीऔरतकी यादीआजाती है, सवालपैदाहोनेकीजगहहैकि-जिसहालतमें एक नाचीजऔरतकों देखकर खासऔरत याद आजावे, तो कया! तीर्थकरोकी मृद्धि देखकर खासतीर्थकरोंकी यादी-न-जायगी, ? इसमें कोइबकनही कि-तस्वीरदेखकर जोकि-खासशस्त्रहो-वह-जरुरयाद आजाता है, अगर कहाजाय मृत्तिंपूजा करनेसें जीवोंकी हिंसाहोती है-तो-क्या स्थानक बनानेमें हिंसा नहीहोती, मुनिमहाराज एकशहरसे दुसरेशहर जाते रास्तेमे किसीनदीमें होकर पारहोते है-तो-क्या पानीकेजीव नहीमरते हैं ? भिक्षाकेलिये जानेमेंभी हवाकेजीव अपने शरीरसे मरतेहैं, जबकभी किसीकों दीक्षादिइ जाती है तो जलसा कियाजाता है उसवरूत सेंकडो आद्मीयोंकी भीडभाडसें रास्तेमें सूक्ष्मजीवोंका नाशहोताहै इसकों क्या जीवहिंसा नहीसमझते ? सिर्फ मृत्तिपूजाहीकों जीवहिंसा समजतेहो, ? अनुयोगद्वारसूत्रमें चार निक्षेपे बयानफरमाये उसमें स्थापना निक्षेपा मूर्त्तिको सबुती देताहै,—

अगर कोइ सवाल करेकि-मूर्त्तिपूजा-अछी है-तो-साधुमहा-राज पूजा क्यों नहीकरते ? (जवाब.) साधुमहाराज जिनप्रतिमाके दर्शनकों जाते है, तीर्थयात्राकों जाते है और भावपूजा करते है, जैनशास्त्रोमें साधु–साधवी–श्रावक–श्राविका–पुस्तक–प्रतिमा–और मंदिर-ये-सातक्षेत्र वयान फरमाये. अगर मंदिर-मूर्त्तिमानना जै-नमें मनाहोता तो सातक्षेत्र क्यौं फरमाते ? मूर्त्तिपूजामें पूजकका इरादा पाक होनेसे भावहिंसा नही. ओर विनाभावहिंसाके पाप नही. वल्कि ! अशुभकर्मीकी निर्जरा और पुन्यानुबंधि पुन्यपाप्ति-का हेतुहै. अगर कोइ सवालकरेकि-मूर्त्तिपूजा करनेवाले पथ्थरकों पूजते हैं (जवाव.) पथ्थर नहीं पूजते, बल्कि ! वितरागदेवका आकार देखकर उसमें वीतरागभावकी यादीलाकर पूजते है, और इबादतकरते हैकि-हे! वीतराग-अरिहंत-सर्वज्ञ-परमात्मा-निरंजन निराकार इस हमारीइवादतसे हमारे कर्म-दूरहोकर हमकों मुक्ति मिले, अगर पथ्थर पूजतेहोतेतो ऐसा कहतेकि-हे! पथ्थर!! तुं वडा अछाहै, फलानी खानमेसें निकलाहुवाहै. और तुं ! दश रुपयेगजके मोंलकाहै, मगर नहीं, पूजकपुरुषतो मूर्त्तिकेजरीये वि-तरागहीकी पूजा करताहै. अगर कोइ सवालकरोकि-मूर्त्तिकी जो इबादत किइजाती है-क्या-वह सुनती है, ? (जवाब.) जिस दे-वकी मूर्त्तिहै-वह-वेशक! अपने ज्ञानमें जानते हैिक-फलांशख्श इवादत कररहाहै. अगर कोइ कहे, हम-मानसीमूर्त्तिकों मानते है, पथ्थरकी मूर्त्तिकों नही मानते, (जवाव.) फिर मानसीक ज्ञान-कोंही मानलो, कागज स्याहीकेवनेहुवे पुस्तककों क्यों मानतेहो, ? अगर कोइ सवालकरे मूर्त्ति पथ्थरकी है-उसकों पांव लगादेवे तो क्याहर्ज है ? (जवाव.) पुस्तक कागज स्याहीके है-उसकों पांव लगानेमें क्या हर्ज है, ? अगर कहोगे हर्ज है, तो इसीतरह मूर्त्तिके

बारेमेंभी समझलो हर्ज है. इस व्याख्यानसे यह दिखलानाथाकी दुनियामें मूर्त्तिका पूजना कदीमसें चलाआता है,—और उसकेविना किसीका काम नही चलता, कोइ पहाडको—कोइ मकानको—कोइ शास्त्रको—चित्रकों—और—कोइ मूर्त्तिकों मानता पूजताहै असल पुछो यहसब मूर्त्तिपूजाहीके भेद है.—

(व्याख्यान मूर्त्तिपूजाका खतमहुवा,)

छावनी-मुरारसे-उसीरोज वापिसलशकर आये, संगीतक-लाका इत्य इस चौमासेमेंभी हासिल करतेरहे, व्याख्यान धर्मशा-स्नका हमेशां वाचतेथे, और सभा अछी भरतीथी,

🖙 [संवत् १९४९ का-चौमासा-शहर लशकरगवालियर,]

वादवारीश खतम होनेके छशकरसें रवाना होकर गवाछियरकों तशरीफ छेगये, जोकरीव (२) कोशके फासछेपर वाके है,
और किछाभी देखा उसमें पुराने शिछाछेखथे—उनकी—नकछ
किइ, और वहांसे छावनी मुरारकों गये, और वहां चंदरीजठहरे,
व्याख्यान धर्मशास्त्रका हमेशां देतेथे, और धर्मचर्चाके वारेमें हमेशां बहेसहोतीथी, छावनी मुरारसे फिर छशकर आये, और जब
बहांसे दुसरे मुकामकों जानेका इरादा किया, वहांके श्रावकोने
वास्तेठहरने अध्याम वारीशके बहुत आर्जुमिन्नत किइ, जिससे
महाराज वहांठहरे, और संवत् (१९४९) की—वारीश—वहांपर
गुजारी, व्याख्यानमें समवायांगसूत्र—और—विविधतीर्धकल्प बाचे,
चंद्रममा व्याकरण जो गइसाछमें हिब्ज यादकरना शुक्कियाधा
इसचौमासेमें पुरा किया. और—सम्मतितर्क—जो—आछादर्जेका जैनतर्क ग्रंथहै पढनाशुक्किया, उपाशकदशांग—अंतकृतसूत्र—अनुक्तरो—

पपातिका-प्रश्न व्याकरणसूत्र-और-विपाकसूत्र इनदिन्धेमें वाचे. कइदफे वडीवडी सभाये हुइ. और धर्मचर्चाके बारेमें बहेस होतीरही,—

🖾 [कर्मपर-व्याख्यान,]

एकरौज-महाराजन-कर्मपर-व्याख्यानदिया. तकदीरकहो-कर्मकहो-या-नसीवकहो-वातएकही है, जैनशास्त्रोमें कम्मे आठत-रहके बयानफरमाये, १-ज्ञानावरणीय, २-दर्शनावरणीय, ३-वेदनी, ४-मोहकर्म,--५-नामकर्म, ६-गोत्रकर्म, ७-आयुकर्म, ८-और अंतरायकर्ष, खयालकरो ! एकशस्त्र वादशाहरै और हिराजवाहिरातलगे तख्तपर बेठताहै एक-मुस्क-ब-मुस्क फिरता है और रोटीयोसें मौताजहै, बतलाओ ! इसकी क्यावजह ? एक शरुश अकलमंदहै और एक-वेवकुफहै-तो-सोचो! यह अकल-मंद क्योंहुवा ? और दुसरा बेवकुफक्यों ? एकमदर्सेमें दो-लडके-एक उस्तादसें (२०) वर्षतक इल्मपढतेरहे, उसमेसें एक-पास-हुवा, दुसरा फेंलहुवा, बतलाओ ! इसकी क्यावजह ? एकशल्श अपनेधर्मपर ऐसा मुस्तकीम हैिक--किसीके बहकानेमें नहीआता. दुसरा ऐसा वेवकुकहैकि-उसकों बारांवर्षतक धर्मशास्त्र सुनाओ. मगर उसका एतकात धर्मपर नहीजमता, खयालकरो! इसकी क्या ! वजह ? एकशख्श ताबेउमर तंदुरस्तरहा, और एक ऐसा बीमाररहाकि-तमामज्ञमर उसकी वीमारीमें गुजरी, कहिये! उस-की क्या! वजह ? एकश्रष्यको अपनी औछाद और दौछतसें इत-नी मोहब्बतहै कि - शिवाय इनके धर्मकों फिजहुल समझताहै, और एकशस्त्र धर्मकों उमदा औलाद और दौलतकों कुछनहीसमजता, सोचो ! इसकीक्यावजह, ? एकशख्य ऐसा हसीन और खूबसुरत हैकि-जिसकीसानी दुसरामिलना दुसवारहै. और एक ऐसाबदसु-

रत-बद्शिकल हैिक-कोइउसके शाथ वातकरनाभी नहीचाहता. कहो ! इसकी क्यावजह ? एकशाख्या ऐसोपैदाहुवाकि-उसकों न-वाबी और राजिमला, दुसरा ऐसीजगह पैदाहुवाकि-उसकों न-वाबी और राजिमला, दुसरा ऐसीजगह पैदाहुवाकि-उरीजगह शाइदेता फिरताहे, खयालकरो ! इसकी क्यावजह, ? एकमहोलेमें दो-लडके एकहीिदन पैदाहुवे, एक जन्मतेही मरगया, और दुसरा साठवर्षतक जीतारहा. सोचो ! इसका क्यासवव, ? दो-शख्य-तिजारत करनेलगे, उसमें एकशख्शकों इसकदर फायदा हासिल हुवाकि-लखपित-करोडपितवना, और दुसरेकों इसकदर टोटा पडािक-छखपित-करोडपितवना, और दुसरेकों इसकदर टोटा पडािक-एकिपिडा खोकर दुसरेसे कर्जालेनापडा, वतलाओ ! इसकी क्यावजह, ? अगरकहाजाय इश्वरने ऐसािकयातो-सोचो ! इश्वरको ऐसािकरनेकी क्याजहरत ? क्योकि-इश्वर रागद्देपसे निहा-यत पाकहे, असलेमे यहसव-अपनीअपनी-तकदीरके ताल्लकहे, पूर्वजन्ममें जैसा जिसजीवने कियाथा-वैसा उसके आगेआया.

जोशस्त्र इक्कबाजी करताहै, जीवोकों कतलकरता है, रहम विस्कुल नहि. दगाबाज पुरा, घमंड बहुत, शोगसंताप बहुत. और जिसकों देवगुरु धर्मपर एतकात नहीं, ऐसा शब्दा अलीगित नहीं पाता, जोशस्त्र तप करताहै, व्रत नियम पालताहै, दान देता है, देवगुरु धर्मपर एतकात रखताहै, शास्त्रके फरमानकों मंजुर करताहै और दिलका साफहै वह स्वर्गगितिकों पाताहै, जोशस्त्र बातकहकर मुकरजाय, मतलबहुवाकि--दुश्मन-वनजाय, धर्ममंभी नर्ददगाकी खेले, वह दुर्गतिकों पाताहै. जोशस्त्र रहमदिलहों, इन्साफकीबात बोलनेवालाहों, और देवगुरु धर्मपर पुरा एतकात रखताहो-वह-अलीगितकों पाताहै. जोशस्त्र जीवोकी कतलबाजी-न-करे, हरवस्त जीवोंकों बचातारहे-वह-अगले जन्ममें लंबी उमर पाता है, जिसने पूर्वभवमें दानपुन्य नहींकिया, वह-इस भवमें एशआरामसे

वंचित रहताहै, जिंसने पूर्वजन्ममें दानपुन्य बहुतकिया है-बह-इस जन्ममें आरामतलब है, जिसने पूर्वजन्ममें देवगुरु धर्मकी खिदमत किइहै वह इसजन्ममें दौलतमंद होताहै, जिसने पूर्वजन्ममें देवगुरु धर्मकी वें अद्वी किइहै-रुपये पैसे होते हुवेभी धर्ममे खर्च नहीं किया है-वह-इसजन्ममें दरिदी होता है, जिसने पूर्वजन्ममें इस्म पढाथा दुसरोकों तालीम देकर धर्मात्मा बनायेथे-वह-इसजन्ममें विद्वान् और धर्मज्ञ होताहै, जिसग्ररूशने पूर्वजन्ममें तोते-मुर्घे-कबुतर-चि-हिया-तीतरवगेराकों-पींजरेमें-केटाकियेथे, वह-इसजन्ममें दुसरोंका ताबेदारहोकर तकलीफपाताहै, और केदभी पाताहै. जिसने पूर्व भवमें किसी जीवकों तकलीफ नहीदिइ, बल्कि ! तकलीफर्से छो-डाये है-बह इसजन्ममें किसीका ताबेदार नहीबनता, बल्कि ! खुद मालिक होताहै, जोशख्श अपने गुरुसे-या-उस्तादसे नर्द दगाकी खेळताहै उसका इल्मकारआमद नहीहोता, जोशस्य दानपुन्यकरके पीछे रंजीदा होताहै वह-अगले जन्ममें-नफा-नहीपाता, जोशख्श दुसरोंके लडका∼लडकीका–वियोग करादेताहैै–वह–अगळे जन्ममें औछाद नहीपाता. जोशरूश अपनी जातिका घमंड करताहै वह अगले जन्ममें नीचकुल पाताहै. जोशख्श दुसरोके हाथ पांव तोड-डालताहै-अगले जन्ममें-वह-लुला-लंगडा होताहै, जिस शख्शने पूर्वजन्ममें जीवोपर रहेम किइहै, वह इस जन्ममें खूबसुरत-कमाछ-हुस्त-और-चहेरेपर मुवारकवादी पाताहै.

जोशस्त्र छोगोकों कहताहै धर्मकरनेसे कुछ फायदा नही. परलोक किसने देखा ? ऐसा उपदेश देनेवाला शस्त्र अगलेजन्ममें धर्म-नही-पाता, जोशस्त्र दुसरोंकों गला घोटकर मारताहै-वह-अगले जन्ममें बुरीमोतसे मरताहै, जोशस्त्र दुसरेसे अपना मतलब लेताहै मगर उसकों खानेकेलिये रोटीभी नहिदेता-वह-अगले ज-

न्ममें रोटीयोसे मोहताजहोकर मांगताफिरेगा, जोशख्श तीर्थभूमिमें दंगाफिसाद करताहै, देवद्रव्यको बरवाद करताहै, और मंदिरम्तियोंके सामने अनाचार सेवनकरताहै—उसकी अगलेजन्ममें अछी
गित नहीहोती, जोशख्श धर्मशास्त्र पढानही और दुसरोके सामने कहताहै—में—बहुतशास्त्र पढाहुं—वह—अगलेजन्ममें विद्याहीन होताहै, जोशख्श आप बदकाम करताहै और दुसरेके माथे तोहमत चढाता है—वह—अगलेजन्ममें अलीगित नहीपाता, जोशख्श तीर्थकर—गणधर—आचार्य—उपाध्याय—और साधुमहाराजके अवर्णवाद बोलताहै महामोहकर्म बांधताहै जिसने पूर्वभवमें गुप्तदानदियाहै वह अगले जन्ममें दुसरेके घर गोद आताहै और दोलत पाताहै.

अगर धर्मशास्त्रकी राहपरचलो तो हरेकजीवपर रहेमकरो, आइंदे सुमारा भलाहोगा. धर्मशास्त्र फरमाते है-जो-शब्श-जैसा कर्म करेगा-वैसाफल पायगा, यह एकसिधीसडकहै.—

(कर्मपर व्याख्यान-खतमहुवा,-)

[संवत् १९५० का–चौमासा शहर लशकर गवालियर,]

बादवारीशके लशकरसें रवानाहोकर महाराज छावनी-ग्रुरा-रको-गये, और शीतरुतमें वहां कयामिकया, व्याख्यानमें रायप-सेणी-जीवाभिगम-और-पाडवचरित बाचा, छावनी ग्रुरारसें र-बानाहोकर गवालियर गये, और फिरजब जहांसीतर्फ जानेका इरादािकया, लशकरके श्रावकलोग वहांआये और अर्जकरने लगे-कि-आप-जहांजायगे फायदाधर्मका पहुचायगे, बराये महेरबानी हमारेही शहरमें इससाल और कयामिकािजये, और हमकों धर्म सुनाइये,-महाराजने जनकी अर्ज कुबुलिक्ड, गवालियरसे लशकर आये, और संवत् (१९५०) की वारीश वहांपर गुजारी; व्या-ख्यान हमेशांकरतेथे और सुननेवालेलोग कसरतसें जमाहोतेथे, संगीतकला इल्म इनिद्नोमेंभी हासिल करतेरहे, धर्मचर्चाकेलिये कइशख्श आतेजातेथे. और माकुल जवाबपाकर खुशहोतेथे.—लश-करके श्रावकीने महाराजकी वहुतकद्र-व-इज्जतिकह, धर्मकेबारेमें नोजोवात महाराज फरमातेथे फीरन! उसपर अमलकरतेथे,—इस चौमासेमें सम्मतितर्कग्रंथ तीनहिस्सा वांचा एकहिस्सा वाकीरहा, एकरीज व्याख्यान जगत्कर्ताके वारेमेदिया,—

[ब्याख्यान-जगत्कत्तीके बारेमे,]

अगर लीलाकरके दुनियाको इश्वरने-बनाइ मानेतो-सोचो ! लीलाकाहोना रागवानकों होताहै, और इश्वर रागद्वेषसें निहायत पाकहै, अगरकहाजाय रहमदिलहोकर दुनिया बनाइहै-तो-एकको आराम और तकलीफ क्यों, ? अगरकहाजाय आराम तकलीफ अपनी अपनी तकदीरके ताल्लुकहै-तो-फिर कहनाचाहिये तकदीरही सबसेतेजरही. अगर इश्वरने अपनीशक्तिसें दुनिया बनाइहै ऐसा माने-तो-सोचो ! जीवोंकों पेस्तर निर्मलबनायेथे-या मलीन ? अगर निर्मलबनायेथे-तो-फिर धर्मशास्त्र किसको निर्मलकरनेकेलिये बनापेगये ? अगर मलीनबनायेथे-तो क्यासबबहै उनकों पापरुप मलीनता दिइगइ, ? असलमें दुनिया अनादिहै. एकजन्मसे दुसरेजन्ममें जाना उसकानाम मृत्युहै, जोकुछ सुखदुख यहां मिलाहै पूर्वकृतकर्मके उदयानुसारहै, और आगेकों जोकुछ मिलेगा यहांके कियेहुवे कर्मानुसार मिलेगा. अगर ऐसा-न-मानेतो एक सुखी-और-एकदुखी क्यों ?

जीव-जब-दुसरे जन्ममे जाताहै उसकेशाथ पुन्यपाप-और-तैजस-कार्मण सूक्ष्म शरीरशाथ जाताहै, विनावीज हक्ष नही और विना द्वक्ष बीज नहीं, अगर कहाजाय जड-चेतनरूप-मसाला पे-स्तरसेथा, तो-सवाल पैदा होता है कि-वह--मसाला किसने बनायाथा ? वगेरा बहुतसी दलीलें दिइगइथी, यहां थोडेमें लिखा है,---

(संवत् १९५१ का चौमासा दाहर लदाकर गवालियर.)

बादवारीशके लशकरसे रवानाहोकर गवालियरकों गये, गबालियरसे छावनी—मुरार गये, और वहांपर मोशम शदींका खतम
किया. व्याख्यान हमेशां वांचतेथे. फाल्गुनमहिनेमें वहांसें विहार
करनेकी तयारीिक इलशकरके श्रावकलोग वहां आये, और एक
चौमासा औरभी लशकरमें उहरनेकी अर्जिक इ, महाराजने देखािक
बास्तेधर्मके—ये—लोग इतनी अर्जिकरते है—तो—मुनासिबहें अबका चौमासा फिर लशकरमें करे, छावनी—मुरारसे—फिर लशकर आये.
और संवत् (१९५१) की—वारीश वहांपर गुजारी, व्याख्यानमें
मज्ञापनासूत्र और आचारदिनकर ग्रंथ बाचा, सम्मतितर्कका चोथा
हिसा इस चौमासेमें पुरा किया,

अंगं स्वप्नःस्वरश्चेव-भौमं व्यंजन लक्षणे, उत्पातमंतरिक्षंच-निमित्तं स्मृतमष्ट्रधा ॥ १ ॥

अष्टांगनिमित्तका इल्म इनिदनोमें हासिलिकया, नंदीसूत्र-द-शाश्चतस्कंध-व्यवहारसूत्र-और-निशीथसूत्र-इनिदनोमें बांचे, सं-गीतकलाका इल्मभी इसअर्सेमें हासिल करतेरहे, क्योंकि-यह-शहरभी इसहुनरकेलिये मशहूरहै,-कइदफे बडी बडी सभा हुइ. एकरीज पृथवी फिरती है-या-चांदसूर्य, ? इसपर व्याख्यानिदया,

(पृथवी फिरती है-या-चांदसूर्य,-)

अगर पृथवी फिरतीहै-एसामाने-तो-एकगांव दुसरे गांवसे जिस दिशामें है उसदिशासें वदलजाना चाहिये. वारीशके दिनोमें समझो दो-घंटेतक एकजगह वारीश होतीरही, और इधर जमीन दो घंटेमें फिरतीहुड आगेकों चलीगड़ फिर तालाव-पानीसे कैसे भरसकेगें, ? एक द्रख्तके माळेसें निकलकर एक पक्षी समझो आस्मानमें उडा, और वह आधधंटेतक आस्मानमें उडतारहा, इधर षृथवीकेशाथ लगाहुवा द्रव्त-आगे चलागया, सोचो ! फिर वह पक्षी अपने मालेको कैसे पासकेगा, ? अगर कहाजायकि-चांद-सूर्य स्थिरहे और पृथवी फिरती है-तो अमावास्याके रौज-चांद-सूर्य एक राशिपर और पौर्णिमाके रौज-एक दुसरेके सामने क्यौं आजाते है ? एक राशिपर जो अनेक ग्रहोंका मिलना–और-जुदा होजाना नजरके सामने दिखाइ देरहाहै वह क्योंकर सबुत होगा? अगर प्रथवी फिरती है–तो- यहभी सवाल पैटा होगाकि–वह–गा-डीके पैयेकीतरह उर्द्ध-अधः फिरती है ? या कुंभकारके चक्रकीतरह तिर्यग् फिरती है ? अगर उर्द्ध-अधः फिरती है-तो-उर्द्धस्थित पदार्थ अध: आनेसे गिरनेकी संभावना है. अगर कुंभकारके च-क्रकी तरह तिर्यग फिरती है-तो-कहीए! किसके आधाररहकर फिरती है-, ? बहुतसी वातें वयान किइगइथी, यहां थोडेमें-मत-लब कहादिया है.

[संवत् १९५२ का चौमासा शहर भोषाल,]

बादवारीशके लशकरसे रवानाहोकर दितया-जहांसी-लिल-तपुर-वासोदाहोते भिलसागये, और (१५) रौज वहांपर कयाम किया, व्याख्यान धर्मशास्त्रका हमेशांदेतथे, एकरीज भिलसाके प-होसमें बौधस्तूपोंकों देखनेगये, भिलसा बौधस्तूपोके लिये मशहूर जगहरै. भिलसा टेशनसे (५) मील सांची टेशनकेपास कर बौ-धस्तूप बनेहुवेहै, भिलसासे रवानाहोकर शहरभोपाल आये, और संवत् (१९५२) की वारीश यहांपर गुजारी, सूत्रअनुयोगद्वार और नेमिनाथचरित व्याख्यानमें बाचा, जंबद्वीपप्रक्षप्ति और द्वीपसा-गरप्रक्षप्ति इनदिनोमें बाचतेरहे, महाराजके उपदेशसे एक-जैनन्थे-तांबर पाठशाला यहां खोलीगइ, जिसमें जैनन्थेतांबर श्रावकोंके लडके मजहबीइलम हासिलकियाकरे,-

[संवत् १९५३ का चौमासा दाहर इंदोर,-]

बादवारीशके भोपालसे रवानाहोकर छावनी सिहोर-नरसिं-हगढ-सारंगपुर-साजापुर होतेहुवे तीर्थ मकसीकी जियारतकों गये, जो उज्जेनकेपास मुल्कमालवेमें वाके है, वहांकी जियारतिक ह और जोजो वजुहात पुरानी तवारिखकेदेखे अपनी नोटबुकमें दर्ज किये, तीर्थमकसीसें रवानाहोकर कस्वा देवासहोते शहरइंदोरकों आये. और संवत् (१९५३) की वारीश वहांपर गुजारी, गली-मोरसलीमें नये मंदिरकेपास-मकानमे ठहरे. व्याख्यानमें सूत्रआव-श्यकद्यत्ति-और-वासुपूज्यचरित बांचना शुरुकिया, सुननेवाले क-सरतसें जमाहोतेथे. पाकृतव्याकरण-यहांपर-हिब्ज यादिकया, सूत्र अंगचुलिका-और-वंगचृलिका यहां वाचे, और मानवधर्मसंहिता ग्रंथ वनाना शुरुकिया,

(संवत् १९५४ का चौमासा दाहर रतलाम,)

वादवारीशके इंदोरसे रवानाहोकर दोवारा तीर्थमकसीकी जियारतकों गये, और वहां करीब (८) रौजठहरे, उसअर्सेमें मुल्कमालवेके बहुतसे जैनश्वेतांवरयात्री-वास्ते जियारतकों वहांपर आयेथे. शहर उज्जेनके जैनश्वेतांवर श्रावकोने महाराजसें बहुतअ-

जीमारूज किइकी-आपहमारे शहरमें तशरीफलावे, महाराजने उनकीअर्ज कुबुलिकेइ और तीर्थमकसीसें रवानाहोकर मुल्कमालवेके
नामीग्रामी शहर उज्जेनकों गये, उज्जेन पुरानाशहरहे, और यहांपर अवंतीपार्श्वनाथका तीर्थ है जियारतिक इ, मोश्रमशम्मी वहांपरगुजारी, व्याख्यान धर्मशास्त्रका हमेशां देतेथे. सभा अछीभरतीथी, उज्जेनके श्रावकोने महाराजकी बहुतकदर और खिद्मत
किइ, उज्जेनसे रवानाहोकर कस्वे वडनगरकों गये, और वहां करीव (१) महिनेके क्यामिकया, श्रीयुत-मोहनलालजी लक्ष्मीचंद्जी-कुशलगढवाले-यहांपर मिले, और धर्मचर्चाके बारेमें बहुतसे
सवालपुले, महाराजने उनका माजुल जवाबिद्या, और उनोने
दोहे-किवित्त वनाकर महाराजकी इसतरह तारीफिक इ,—

(दोहा.-)

नामशांति गुनशांतहै-शांतिग्रुनि अनगार,
अशुभकर्मकृतविद्यको-शांतिकरन दातार, १,
चिंतामनिसम शांतिग्रुनि-रंगे अधिक वैराग,
पंचममे परगट भये-भविजनकेरे भाग्य. २,

(कवित्त.)

महावीरशासनके उन्नतिकरनहार-धर्मके धुरंधर ऐसे मुनिराजहै, कुमितमद हस्तिनके कुंभस्थलफोरवेंको-पंचाननराजसमिजनकेशिरताजहै ज्ञानजलदाता उलसाताभविवारिजके-अचलहढरंगमयजिनका समाजहै मोहनमनमाने-तीनलोकमें-नलाने-ऐसेसुगुरुसयानेविजयशांतिमहाराजहै,

वडनगरसे रवानाहोकर महाराज-शहर-रतलामकों तशरीफ लेगये, और संवत् (१९५४)की वारीश वहांपर गुजारी, जैनश्वेतां-बर श्रावकोकी आवादी यहांपर ज्यादहरै, व्याख्यान सभा अछी भरतीथी, और सुननेवाले लोग कसरतसे जमाहोतेथे, धर्मचर्चीके लिये कइमहाञ्चय आतेजातेथे और माकुलजवाब सुनकर खुन्नहोते थे, इनदिनोमें महाराजने—इस्तिहार—छपवाकर शहरमें इसिल्ये बांट दियेकि—आमलोग—धर्मचर्चीका फायदा हासिल करे,

पर्यूषणपर्वकी अखीरकेरौज जैनोमें-जो-चैत्यपरिपाटिका ज-ष्ठसा निकलताहै चारस्तुति-त्रिस्तुति-माननेवालोका आपसमें वा-दानुवाद हुवा और उसवातका फैसला रतलामराज्यसे यहहुवाकि चारस्तुति माननेवाळोका जलसा पेस्तर निकले, उस वस्त बडा जलसा हुवाथा, रतलामके जैनश्वेतांबर--चारस्तुति माननेवाले श्रावकोने-महाराजकी बहुत कदर किइ, और एक-खिताब-रेशमी कपडेपर सुनहरी हर्फोंसे लिखकर बतौर जैनपताकाके भेट दिया, उसमें लिखाथा-विद्यासागर-न्यायरत्न-महाराज-जाति-विजयजित्प्रसादात्–जैनश्वेतांवर धर्मोजयति,–इसकेशाथ एक-मा नपत्रभी-इसमजमूनका दियाकि-जैनश्वेतांबरधर्मोपदेष्टा-विद्यासागर न्यायरत्न-महाराजश्री शांतिविजयजीकी खिटमतमें-हम-रतलाम-का-जैनश्वेतांबरसंघ-यह-मानपत्र और जैनपताका भेट करते है, बराये महरवानी मंजुरकरेगे, सभी जैनश्वेतांवरधर्मावलंबीकों माल्म होकि-महाराज-शांतिविजयजी--जैनसूत्रसिद्धांतके पठित--और-षड्दर्शनके जानकारहै, जिनोने पंजाव-मारवाड-मेवाड-गुजरात राजपुताना−मालवा−वगेरा म्रुल्कोकी सफरकरके जैनधर्मकों तरकी दिइ, आम जैनश्वेतांबरसंघ इनकेनामसे वाकिफहै, इनके लेख कई गुजराती-शास्त्री-जैनमासिकपत्रोमें छपेहुवे मौजूदहै, ये-म्रानिमहाः राज इमारे शहरमें तशरीफ लाये, और संवत् (१९५४) का चौमासा यहांकिया, हमारे रतलामशहरमें करीव (७००) घर जैन न्वेतांचरोके है, हमलोगोकी अछी तकदीरथीकि-महाराजका पधा-

रना यहां हुवा. और जैनधर्मकी निद्दायत तरकी हुइ, जिन जिन श्रावकोंका खयाल धर्मकेवारेमें डावाडोल होगयाथा महाराजने शास सञ्जदेकर धर्मपर पावंदिकये, अबहम आपकी खिदमतमें यह मानपत्र—और—जैनपताका भेट करते है, और परमात्मासे इवादत करते हैिकि—आपकी—विजय—हमेशां वनीरहे, इसमानपत्रमें (८२) आगेवान श्रावकोकेशाथ—समस्त—जैनश्वेतांवर संघकी सही मौजूद है, यहां कहांतकलिखे, जिनको देखनाहो—सन (१८९९) मार्च एपिलके—जैनदिवाकर—मासिकपत्र--अहमदाबाद—पुस्तक—१४-अंक ५-६-में देखे, यहांभी उसीसे उतारा लियागया है.--महाराजने ज्योतिष्करंडक—और-आरंभिसिद्भंथ इस चौमासेमें पढे, समवा-यांग और जीवाभिगमसूत्र वाचे, संगीतकलाका इल्म यहांभी हा-सिल करते रहे.

(संवत् १९५५ का चौमासा शहर मंद्सोर,)

बादवारीशके रतलामसें रवानाहोकर मुकाम जावरा गये, और वहांपर पनरांह रौजतक कथामिकया, व्याख्यान धर्मशास्त्रका हमेशां देतेथे, जावरेसे रवानाहोकर खाचरोदहोते कस्वे बडनगरकों गये, मोश्रमशर्मा वहांपरगुजारी, बडनगरसे रवानाहोकर शहर मं-दसोर आये एकमहिना वहांपर कथामिकया, मंदसोरसे परतापगढ गये, और वहांभी करीब एकमहिना ठहरे, व्याख्यान धर्मशास्त्रका हमेशां देतेथे. और आयेगये गृहस्थोकेशाथ धर्मके बारेमे बहेस होनिशी, परतापगढसे वापिस मंदसोर आये, और संवत् (१९५६) की-वारीश वहांपरगुजारी. व्याख्यानमें विविधतीर्थकरूप-और-समरादित्यचरित बाचा. मानवधर्मसंहितािकताब छपकर तयारहुइ और जिन जिन महाश्रयोने मंगवाइथी-उनकों भेजीगइ, इनदिनोमें महाराजका इरादाहुबािक-जैनतीर्थगाइक किताव-बनाकर जाहिर

किइजाय-ताकि-आम जैनश्वेतांवरसंघको फायदा पहुचे. मगरयह बात सब जैन तीर्थोकों वगेर देखे भाले नहीं होसकती, इसलिये इरादाकियाकि – मुल्कपूरवके जैनतीर्थोंकी जियारतकों चले, महा-राज सवमजहवोंकी पुस्तके हमेशां शाथरखते है ताकि-जिसजिस मजहबवालोंकों जवाबदेनाहो फोरन दियाजाय, दुसरेशहरोके श्रा-वक जब–महाराजसे–धर्मकेबारेमें सवालपुछते है–तो–उनकाजवाव ब–जरीये अखबारके ब–खूबीदेते है. इसिटिये बहुतसी जैनपुस्तके-भी बाथरखना पडती है, महाराजकी व्याख्यानसभामें कोइ अ-गर शौरगुलकरेतो उसकों अपनीसभासे रुकसत करवादेते है इस बातसे कइश्रावक एतराज करते है मगर जो अकलमंदहै–वे–इस बातकी तारीफ करते हैंकि--साधहो-तो-ऐसेहो-जो गरीब और अमीरकों एकसा समझे, व्याख्यानसभामें जब भावनाअधिकारका वर्ननचळताहै–भैरवी–कालिंगडा वगेरा रागरागनीसे व्याख्यान बांचतेहै. और कभीकभी हारमोनियम बजानेवाले शख्श सभामें बेठकर स्वरपुरते है, यहांपर कइदफे महाराजने इसतरह व्याख्या-न दियाथा,-

[संवत् १९५६ का-चौमासा शहर लखनउ,]

बादवारीशके शहरमंदोरसे रवाना होकर तीर्थमकसीजीकों तीसरी मरतवागये, और जियारतिकह, तीर्थमकसीसे रवानाहोकर सारंगपुर-वियावरा-गुणा-सीपरी-जहांसी-काल्पी-कानपुर-उ-भावकी सफर करतेहुवे शहर लखनउ गये, और संवत् (१९५६) की-धारीश वहांपर गुजारी, व्याख्यान धर्मशासका हमेशां बांच-तेथे और सभा अछीभरतीथी, गुल्क पूरवका खानपान-बोलचाल और-पुशाक अछा और श्रावकलोग विनयवान देखेगये, निर्या-वलीसूत्र और दस प्रकीर्णकशास्त्र यहांपर बांचे,

लखन उसे महाराजने तीर्थसमेतिशखरकी जियारतकेलिये त-यारीकिइ, रास्तेमें श्रावकोकी आवादी कमहोनेसे पैदलजानेका इरादा मोकुफ रखा, और द्रव्यक्षेत्रकालभाव देखकर रैलमे सवा-री करना दुरुस्त समझा, इरादे धर्मके जव जैनमुनि-मुल्क-ब-मु-क्ककी सफरकरे और रास्तेमें नटी-या-दरयाव आजायतो ना**वमें** वेटकर पारहोवे ऐसा हुकमहै, अगर कोइम्रुनि–्शौखसे–या–आ-रामकेलिये रैलसवारीकरे तो वेशक! पापहै, और उसकी मुमा-नियतभी है, क्योंकी-उसका इरादा धर्मपर नहीरहा, आजकल श्रावकलोग व-सबव रैलके अपना वतनलोडकर हजारां कोसोपर जाबसेहै, जहांकि-धर्मका नामनिञ्चानभी नहीपाता और वहांकोइ जैनम्रुनि उनकों धर्मका रास्ता वतलानेवाले नहीमिलते<mark>, ऊसहाल-</mark> तमें कोइ जैनम्रुनि इरादेथर्मके रैलमें सवारहोकर वहांजावे और तालीमधर्मकी देवे-तो-धर्मका फायदाहै, जमाने हालमें कितनेक जैनम्रुनि जव समेतिशिखर वगेरा वडेतिर्थकी जियारतकों जाते है– या-जहां श्रावकोकी आवादी कमहो-वैसीजगह-विहारकरतेहै, तो उनकेशाथ श्रावक-श्राविका-बेलगाडी--नोकरचाकर शाथचलते है, मुनिलोग खुद्जानते हैकि–यहकार्य–हमारे निमित्तसे होताहै, श्रगर कहाजायिक-इसमें-इरादे धर्मके भावहिंसा नही और विना भावहिंसाके पापनही-तो-इसीतरह यहवात रैलसवारीमेभी क्यों-न-समझीजाय ? जोजो जैनमुनि श्रावकोंकी-या-नोकरचाकरोंकी विनागदद अकेले पैदल विहारकरते है-वे-वेशक! अछे है, मुल्क गुजरातमें जहांकि-गांवगांवमें जैनश्वेतांवर श्रावकोकी आवादी है, वहां पैदल विहारकरना ज्यादह मुश्किलनहीं, मगर तमाम हिंदू-स्थानमें जहांकि-श्रावकोकी आबादी नहीं है वहां जैनम्रानिकों वगेर दुसरोंकी मददके-या-रैलके जानाआना मुक्किलहै, ऐसासमझकर महाराजने रैळमें सफरकरना मुनासिव समझा.

(संवत् १९५७ का चौमासा शहर मुर्शिदाबाद,-)

ळखनडसे रैळमें सवारहोंकर महाराज तीर्थअयोध्याकों गये, यह श्रहर तीर्थेकर-रिषभदेवमहाराजकी-जन्मभूमिहै, उसकी जि-यारत किइ, और वहांकी जोजो मशहुरवातेथी अपनी नोटबुकमें दर्जिकिइ, अयोध्यासे रत्नपुरी जो सातकोशके फासलेपरवाके हैं, और तीर्थेकर धर्मनाथकी जन्मभूमि है वहांजाकर उसकी जियारत किइ, और वहांकी तवारिख अपनीनोटबुकमें दर्जिकिइ, रत्नपुरीसे रवानाहोकर वापिस अयोध्या आये. और अयोध्यासें बनारसकों गये, तीर्थकर सुपार्श्वनाथ-और-पार्श्वनाथकी जन्मभूमि बनारस पुराना जैनतीर्थ है, उसकी जियारतिकइ, वहांके पुराने शिळाळेख और तवारिखकीवाते अपनी नोटबुकमें दर्जिकिइ. बनारससे तीन कोश्वके फासळेपर मौजा-सिंहपुरी-तीर्थकर श्रेयांसनाथकी जन्म-भूमि-और-सिंहपुरीसे सातकोश्चके फासळेपर चंद्रावती-जो-तीर्थ-कर चंदाप्रभुकी जन्मभूमि है, वहांजाकर जियारत किइ, और जो जो अजुबा वाकातदेखे अपनी नोटबुकमें दर्जिकिये. बनारससे र-वानाहोकर मोगळसराय जंकश्चन होतेहुवे-गयाळाइनसे नवादाटे-बन गये. और वहांसे पंचतीयींकी जियारतकेळिये रवानाहुवे, यह पंचतीर्थी खुक्कीरास्तेका मुकामहै, और करीव वीशकोशके घेरेमें है, नवादेसे रवानाहोकर अवल राजग्रहीकों गये, वहांपर वैभार-गिरि बगेरा पांचपहाडोके मंदिरोंकी जियारत किइ, और बहांके श्विलालेखोकी नकल अपनी नोटबुकमें दर्जिकइ. राजगृहीसे सुबे-विद्यार-सुवेविहारसे-कुंडळपुर-और--कुंडळपुरसें पावापुरी-जो-तीर्थेकर महावीरस्वामीकी निर्वाणभूमि है, कमलसरोवरमें जहां निष्ठायत उमदा मंदिर और-तीर्थंकर महावीरस्वामीकी चरणपादु-का तस्तनकीनहैं. जियारतिकइ, तवारिख पावापुरी और क्रिका-

केलोंकी नकल अपनी नोटबुकमें दर्जिकिइ. पावापुरीकी जियारत करके गुणिशलवन उद्यान गये, और वहांसें—वापिसनवादाटे क्षनकों आये, और नवादेसे रैलमे सवारहो कर लखीसराय—पधुपुर होते हुवे गिरिडीटेशनको गये, और गिरिडी टेशनसे खुक्की रास्ते ती-र्थसमेतिशिखर जाने केलिये रवानाहुवे, जोकरीव नवको शके फास-लेपरवाके है. चारको शजाने पर वराकड गांव—जहां पर—रिजुवालुका नदी के काल—नामके द्रव्तके नी चे—तीर्थकर महावीरस्वामीकों केवल झान पैदा हुवाथा जियारत किइ, और वहांसे रवानाहों कर रिजुवालुका नदी कों पारकरते हुवे समेतिशिखर पहाड की तराइमें मधुबन्गये, जैन खेतां वर धर्मशाला में कयामिकिया, वहां पर (१०) मंदिर वहे वहे आलिशान वने हुवे है जियारतिक इ और तमाम किल लाले खोकी नकल अपनी नोटबुक में दर्जिक इ.

दुसरेरौज समेतिशिखर पहाडपर गये, तमाम टोंकोंकी और मंदिक्की जियारतिकेइ, और वहांकेशिलालेखोकी नकल अपनी नोटबुकमें दर्जीकेइ, शामकों पहाड समेतिशिखरसे वापिस आये. चंदरौज मधुवनमें ठहरे और वापिस उसीरास्ते गिरिडी टेशनकों आये और रैलमें सवारहोकर मधुपुर-लखीसराय-होतेहुवे शहर भागल्ख्युर गये, दुसरेरौज खुश्कीरास्ते चंपापुरीकों रवानाहुवे जो दोकोशके फासलेपरवाके हैं, तीर्थकर वासुपूज्यस्वामीके--पांचक-ल्याणिक यहांहुवे, उसकी जियारत किइ, वहांके शिलालेखोकी नकल अपनी नोटबुकमें दर्जिकिइ, चंपापुरीसे वापिस भागलपुरकों आये, भागलपुरसे रैलमें सवारहोकर नलहटी जंकशनहोते शहर सुर्शिदाबादगये, और संवत् (१९५७) की वारीश वहांपर सु-जारी, व्याख्यानमें सूत्रआवश्यकटित-और--नेमिनाथचरितवाचा एकरीज विधिवाद-चरितानुवाद--और--यथास्थितवादपर व्या-

ख्यानादिया, विधिवाद उसकों कहते है-जो--तिर्थिकरगणधरोका हुकमहो, चिरतानुवाद उसकों कहते है जिसमें कथा--कहानी-च-रितवगेरा बयान कियागयाहो, यथास्थितवाद उसका नामहै जैसे द्वीप-समुद्र-नरक-स्वर्ग-गांव-नगर-कोट-किला वगेरा जो चीज जैसी है उसका बयानाकियाहो, विधिवाद काबिलमंखर करनेके है, चिरतानुवादमे-जोजो-वातें मुताबिक विधिवादके है-मंजुर करना चाहिये, और जोजोबातें खिलाफहै छोडदेना चाहिये, यथास्थित-वाद-काबिल जाननेके है, जोशख्श जैनशास्त्रोके मतलबकों पहिचा-ननाचाहे इनको--व-गौर समझे,-

पर्यूषणपर्वकी अखीरमें चैत्यपरिपाटीका जलसा अछा हुवा, और धर्मकी-तरकी लाइकतारीफके हुइ, निशिथमूत्र--और-ट्रह-त्कल्पसूत्र-इनदिनोमें-बाचे, कइ महाशयोके शाथ-मजहबकेबारेमें-बहेस होतीरही,--

[संवत १९५८का चौमासा शहर कलकत्ता,]

पोष महिनेमें मुर्शिदाबादसे रवाना होकर दोवारा समेतिश-खरजीकी जियारतकों गये, मुर्शिदाबादके कितनेक श्रावक-श्राविका श्राथ-आयेथे, मधुबनमे पोषवदी (१०) मीके रौज रथयात्राका जलसा कियागया, दुसरेरौज पहाडपरजाकर जियारतिकइ, चंद-रौज ठहरे और फिर गिरिडी देशनकों वापिसआये, मुर्शिदाबादके श्रावक-श्राविका-अपने बतनकों गये और महाराज-लखीसराय जंकशन आये. और वहां खुक्कीरास्ते करीब (६) कोसके फास-लेपर-जो-काकंदी नगरी है जियारतकों गये, तीर्थकरमुविधिना-थकी जन्मभूमि यही काकंदी नगरी है, उसकी जियारतिकइ और वहांकि तबारिख अपनी नोटबुकमें दर्जिकइ. काकंदीसे रवानाहो-

कर क्षत्रीयकुंडगांव गये, जो-वहांसे-नव कोशके फासलेपर तीर्थ-करमहावीरस्वामीकी जन्मभृमि है, यहांपर एक-जैनश्वेतांवर मंदिर गांवमे दो-तलहटीमें और एक पहाडपर बनाहुवाहै, वहांजाकर जि-यारतिकड् और तवारिख वहांकी अपनी नोटबुकमें दर्जिकिड्, पहा-दसे वापिस आतेवरुत-शामके चारवजे तलहटीके मंदिरपास(५०) कदमके फासलेपर एकवडा-शेर-जाताहुवा दिखलाइदिया,-मंदि-रके पूजारी-धारीलालने शेरकों देखकर मंदिरका दरवजा बंदकर **छिया, जिस−डोलींमॅ–महाराज सवारथे, डोळीवाळोने डोळी ज**-मीनपर रखदिइ, महाराजने पुछा ढोळी क्यौं रखदिइ ?–वे--खौफ की वजहसें जवाव-न-देसके, महाराजने जब-इधरउधर देखा तो करीब (५०) कदमके फासलेपर एक-शेर-नजर-आया, मगर ब दौलत-देवगुरुधर्म-और-प्रभावतीर्थभूमिके-बो-सामने-नहिआया, और कुदताहुवा डावीतर्फकी एक-टेकरी-लाघता चलागया, पू-गारी धारीलाल-जोकि--डरगयाथा-मंदिरका दरवजा खोला, और कहनेलगा थुक्रहें, आज! हमारी जान वची, यहां–तो अक-सर एसाही माजरा हुवाकरताहै, महाराजने वहांकी जियारतिकद, और शामके पांचवजे क्षत्रीयकुंड गांवकों वापिसआये, तीसरेरीज क्षत्रीयकुंड गांवसे रवानाहोकर छखीसराय टेशनकों आये, और रैरुमें सवारहोकर शहरपटना पहुचे, वाडेकीगळीमें जैनश्वेतांबर मं-दिरकेपास-मकानमें कयामकिया और तीर्थकी जियारतकिइ, शह-रसे दो-मीलकेकासलेपर-कमलद्रहपर जाकर-स्थूलभद्र महाराजके चरणोकी छत्री-और मुदर्शनशेठकी शुलीका-सिंहासन-होगयाथा बह-जगह देखी, शिलालेखोकी नकल-और तवारिख पटना-अ-पनी नोटबुकमें दर्जिकिइ. पटनेसे रवानाहोकर बखतीयारपुर होते सुनेविहारकों पहुचे, मोशमसर्मा चहांपर-गुजारी, चैतमहिनेमें तीर्थ

पानापुरीकी जियारतकों गये, और करीब देढमिहनेके वहांपर क-यामिकया. पानापुरीसे रवानाहोकर भागलपुर होतेहुवे चंपापुरी गये और दुसरीमरतबे जियारतिक इ.—चंपापुरीसे भागलपुरआकर शहर कलकत्तेकों गये. और संवत् (१९५८) की—वारीश वहांपर गुजारी, व्याख्यान धर्मशास्त्रका हमेशां देतेथे, और सभा अछी भरतीथी, पर्यूषणपर्वकी अखीरमें चैत्यपरिपाटीका जलसा उमदा हुवा, अखबार भारतिमत्र और हिंदीबंगवासी—जो—कलकत्तेके ना मीग्रामी अखबारहे उसमें महाराजकी इसतरह तारीफ छपीथी, (अखबार भारतिमत्र कलकत्ता, तारिख २८ सितंबर— शानिवार सन १९०१ इस्वी—संवत् १९५८ भाद्रपद्

श्वेतांवर जैनोके गुरु विद्यासागर न्यायरत्न महाराज शांति-विजयजी चारमहिनेसे कलकत्तेमें है, गतमंगलवारसे पर्यूषणपर्व आरंभहुवा, व्जाख्यानके समय (६००) जहोरी जमाहोतेथे, जहो-रीलोगोने वडीधूमसे जलसाकिया, भाद्रपदसुदी (४) मंगलवारको सब जैनश्वेतांवर श्रावकोने मिलकर उक्तमहाराजकों वडे जुलुससे दर्शन करानेकों लेगये, ऐसा जलसा कभी नहीहुवाथा, जैसा इस सालहुवा, आप बडे पंडितहे, आपके आनेसे यहां जैनोमें वडा धर्मोत्साह फैलाहे, आपकी बनाइ मानवधर्मसंहिता किताव जैनोके पदनेके काविल है,-

⁽अखबार हिंदीबंगवासी-कलकत्ता, तारिख १८ नवंबर सन १९०१ इस्वी-संवत् १९५८ कार्तिक सुदी ७ सोमवार,)

^{&#}x27;' कलकत्तेमे गुरु ''—

यहांपर अनेक जहोरी जैनीहै, विद्यासागर-न्यायरत्नमहाराज

शांतिविजयजी इन जैनी जहोरीयोंके गुरुहै, आप चारमिहनेसे क-रुकत्तेमें है, यहां गुरुजीका निवास वडतछाष्ट्रीट (५८) नंवरवाले मकानमें हुवाहै, आपके आनेसे श्वेतांवरलोगोमे उनके धर्मका वडा उत्साह हुवा है.-

इसतरह कइ अखबारोमें महाराजकी तारीक छपीहुइ है, बडे बढे शहरोमें जहांजहां महाराज तशरीक छेजाते हैं उनका बयान अखबारोमें छपताहै,-

एकरोज महाराजने इसवातपर व्याख्यानदियाकि-जिसजिस बातका तीर्थकर-गणधरोने धर्मशास्त्रमें हुकम फरमाया है, सबब आनपडनेसे मनाभी फरमाइ है, और जिसवातकी मनाफरमाइ है उसका हुकमभी फरमायाहै एसा जानो, मगर वो-सवब-इरादे धर्मके होनाचाहिये. जैसेकि-चौमासेकेदिनोमें जैनम्रुनिकों एकजगह रहना फरमाया, मगर सबब वीमारीका आनपडे तो-चौमासेमेंभी विहार करजाना हुकम है, जैनमुनिकों वनास्पति खाना-या-स्पर्श ंकरना मनाहै, मगर जब किसी-कुवेमें −या-खड्डेमें गिरपडे तो-उस हालतमें किसी द्रष्टतकीशाखा-या-लता-वेलडीकों पकडकर बहार आजाना हुकमहै, अगर किसीमुनिकों-सांप काटजाय तो उसके जहरकों रदकरनेकेलिये नींवके पत्ते चवाजानाभी हुकमहै, जैनम्र-निकों क्रोधकरना-या-किसीकों सख्त जवान कहना हुकम नही, मगर जबकोइ धर्मकों हानि पहुचाताहो-या-कुतर्क करके धर्मका खंडन करताहो-उसहालतमें-उसकों सख्तजवान कहनाभी हुकमहै, क्योंकि-इरादा धर्मकाहै, जैनम्रनिकों भिक्षामांगकर सीकमपरवरीश करना शास्त्रहुकमहै, मगर जब खुद बीमारपडजाय तो कोइ गृहस्थ आहारपानी मकांनपर लादेवे-तोभी-लेलेना हुकमहै, क्योंकि-उस

वल्त अमरलाचारी है, हां! अगर विनासवब ऐसाकरेतो बेशक!
मनाहै, इक्कबाजी-चोरी-और-कुव्यसनकेलिये बिल्कुल मना है.
किसीको समझो शरावपीनेकी कसमहै, और दुसरेन उसकों पकडकर जोराजोरी शराब पीलादिइ, उसका इरादा नहीथा-तोउसकों कसम तोडनेका पाप नही, इसतरह और चीजोकेलियेभी
समझना. वगेरा बहुतसा वयान कियागयाथा, यहां थोडेमें लिखा
है, कइ महाशय मजहबीबहेसको आतेथे और मजहबकेबारेमें बहेस
करतेथे, व्यवहारसूत्र-पंचकल्पसूत्र-और दशाश्रुतस्कंपशास्त्र महाराजने यहांपर बाचे-

(संवत् १९५९ का-चौमासा शहर मंदसोर,)

बाद्वारीशके-मगसीर-और-पोपतक कलकत्तेहीमं कयामिकया, और मायसुदीमे रवानाहोकर वर्द्धमान-आसनसोल-मधुपुर-और गिरिडी होतेहुवे तीर्थ समेतिशखरकों तीस रीमरतवागये, जियारत किइ, और पहाडपर दसमीटोंककी संवत् (१९५८) मायसुदी (१०) मीके रोज प्रतिष्टा किइ जोकि-वसवव-विजली गिरजानेके तीवारा मरम्मत किइगइथी, चंदरीज मधुवनमं-कयामिकया, और वहांसे रवानाहोकर वापिस गिरिडी टेशन आये, गिरिडीसे रैलमें सवारहोकर आसनसोल-चक्रधरपुर-रायपुर-विलासपुरहोते शहर नागपुर-आये, जो मध्यप्रदेशका सदरस्रकाम और गुलजारशहरहै, पेठ-आदितवारमे-कयाम-किया, ज्याख्यान धर्मशासका हमेशां देतिये, और सुननेवालेलोग कसरतसें जमा होतेथे, चैत वैशाख जेठतक वहां कयामिकया, अषाढवदीमें शहर-मंदसोरके श्रावकोका तार आयाकि-आप यहां वरायेमहेरवानी कदमरंजा फरमावे, और वारीशका सुकाम करे, महाराजने उनकी अर्ज कुबुलिकइ और नागपुरसें रवानाहोकर सुसावल-खंडवा-और इंदोर टेशनपर होते

शहर रतलामगये, रतलामके श्रावक—देशनपर—हाजिरथे, उनोने दो—रीजकोल्लये—उहरनेकी अर्जिकइ, महाराज वहांपर (२) रीज उहरे, और व्याख्यान धर्मशास्त्रका वाजिकया, तीसरेरीज रतला- मसे रवानाहोकर शहरमंदसीर आये, और संवत् (१९५९) की वारीश वहांपर गुजारी. पेस्तरभी महाराज यहां वारीश गुजारचुके है, व्याख्यान धर्मशास्त्रका हमेशां देतेथे, किताव—रिसाला—मजहब हंढिये—यहांपर बनाइ. जोकि—जैनश्वेतांवर श्रावकान—मंदसोरनेवा- स्ते फायदे खासआमके छपवाकर जाहिरिक इहे. दुसरीकिताव—गुलदस्ता—जैन—और—इशाइभी यहांपर महाराजने तयारिक इ, संगीत कलाका इल्म इनदिनोमेंभी हासिल करतेरहे. सूर्यमङ्गाप्ति—और—पिंहिन गुक्तिशास्त्र—यहांपर महाराजने वाचे और वारीश खतम करके तीर्थ-वहीपार्श्वनाथकी जियारतकों गये, जो—करीव (६) कोसके फासलेपरवाके हे. यात्रीयोंका वहां—मेला—हुवाथा, और जलसा कियागयाथा, महाराज वहांपर दोरीज उहरे, और वीर्थकीजियारत करके वापिस—मंदसोर—आये,—

[संवत् १९६० का-चौमामा-शहर आकोला,]

बादवारीशके मंदसोरसे रवानाहोकर निमच होतेहुवे चितो-हगढकी जियारतकों गये, पहाडपर जाकर पुराने मंदिरोंकी जि-यारतिकड़, और वहांकी तवारिख अपनी नोटबुकमें दर्जिकड़, चितोडगढसे कंपिलपुरकी जियारतकेलिये रवानाहुवे, रास्तेमें अ-जमेर-जयपुर-बांदीकुड़-भरतपुर-अचनेरा-मधरा-और-हाथरस देशनपर होतेहुवे कायमगंजदेशन उतरे, और वहांसे खुश्कीरास्ते कंपीलपुर-जो-तीनकोसके फासलेपर वाकेहै गये, तीर्थकर विम-क्रनाथजीकी जन्मभूमी यही शहरहै, जियारतिकड़, और वहांके

अजुबात अपनी नोटबुकमें दर्जिकिये, वहांसे वापिस कायमगंज आये, और तीर्थ शौरीपुरकी जियारतकेलिये जानेकों रैलपर स-वारहुवे, और सिकोहाबाद टेशनपर उतरे, वहांसे शौरीपुरर्तार्थ खुक्कीरास्ते करीव सातकोसके फासलेपर जमनाकनारे मौजूदहै, जोिक-जमानेहालमे बटेश्वरकेनामसे मशहूरहै, वहांजाकर तीर्थ शौ-रीपुरकी जियारतिक और उसकी तवारिख अपनीनोटबुकमें दर्ज किइ, शौरीपुरसे वापिस सिकोहाबाद आये और सिकोहाबादसे रैंळमे सवारहोकर इलाहाबादगये, यहांका पुरानाकिला देखा, जो गंगा-जमनाके-संगमपर बनाहुवाहै, इलाहाबादसे रैलमे सवारहो-कर कौशांबी नगरीकी जियारतकों गये, भरवारी टेशन उतरकर कौशांबी तीर्थकेलिये रवानाहुवे रास्तेमें एक-हिरन-हिंसक लोगोसे छुडवाया, और उनको धर्मोपदेशदिया, भरवारी टेशनसें कौशांबी-सातकोशके फासलेपरवाके है, और आजकल इसकों कौ॰ संबपाली बोलते है, तीर्थकर पदमप्रभुकी जन्मभूमि यहीशहरहै, आर जकल-यहां-न-कोइजैनश्वेतांवरमंदिरहै-न-श्रावकहै, सीर्फ ! उस जगहकी कदमबोसीकरके वापिस भरवारीटेशन आये, और रैलमे सवारहोकर कानपुर-लखनउके टेशनहोते अयोध्याकों गये, और वहांकी दोवारा जियारंत किइ. अयोध्यासें सरयूनदीका पुल पार-करके टेशन लकडा मंडीपर गये, और रैलमें सवार होकर बल-रामपुर टेशन उतरे, बलरामपुरसे सातकोसके फासलेपर सावथ्यी नगरी जिसकों आजकल किला-सहेटमेट-बोलतेहै गये, यहांपर आजकल कोइ जैनश्वेतांवर श्रावक नहीं, सीर्फ ! एक मंदिर बना-हुवा खाली पडाहै, वहांकी जियारत किइ, और तवारिख साव-ध्<mark>यीकी</mark> अपनी नोटबुकमें दर्जिकिइ, सावध्यीके रास्तेमें कइ–नय-षाळीछोग−मिल्ले, और उनसे धर्मकी वातेहुइ, सावध्थीसे वलराम

पुर होते अयोध्यागये, अयोध्यासें रवाना होकर बनारस मुगल-सराय-होते गया टेशनपर उतरे, और वहांसे खुंक्की रास्ते (१८) कोसके फासलेपर तीर्थ भदीलपुरकी जियारतको गये, वहांपर-पहाडकी दामनमे-एक-बहुतछोटा-हटवरीया-नामकागांवहै. पेस्तर यहां भदीलपुर शहर आवाद्या, तीर्थंकर शीतल नाथकी जन्मभूमि यही भदीलपुरहै, आज विल्कुल विरान होगया, यहापर एकपहाड और-उसपर एक-जैनश्वेतांवर मंदिर वनाहुवा-वगेरमूर्त्तिके खाली पड़ाहै, वहांकी जियारत किइ, भदीळपुरसे उसी रास्ते वापिस गया टेशनकों आये, एकरोज गयाटेशनसें (६) मील दखनकों बोध गयागांव देखनेकों गये. जहांपर वोध देवका मंदिरहै उसकों देखा, यहांपर नयपाल-वर्मा-शिलोन-जापान-और-चीनके बौध यात्री बास्ते जियारतकों आते जातेहै-बौध मजहबके एक-साधु-यहांपर मिले, और उनसे जैन-और वौध मजहबके बारेमें वातेंहुइ वोधगयासें वापिस गया टेशन आये रैलमें सवार होकर पटना होते मुकामा जंकशन उतरे, गंगा नदी पार होकर सेमरया घाट टेशनसे रैलमें सवार होकर शहर दरभंगा होते-सीतामढी टेशन गये, पेस्तर यह नगरी मिथिलाकेनामसे मशहूरथी. तीर्थकर मिलनाथ-और-निमनाथकी जन्मभूमी यही नगरी है, क्षेत्रस्पर्शना किइ, और यहांकी तवारिख अपनी नोटवुकमें दर्जिकिइ, सीतामढी टेशनसें वापिस उसीरास्ते म्रुकामा−जंकशन आये, और रैलमे सवारहे।कर–आसनसोल्र−च-क्रधरपुर-विलासपुर-रायपुर-और-नागपुरटेशन होते आकोला देशनपर उतरे, और वहांसे तीर्थ अंतरिक्षजीकी जियारतकों गये. जोकि-(२०) कोशके फासलेपर वाके है, जियारत किइ, और बहांकी तवारिख अपनी नोटबुकमें दर्जिकिइ, अंतरिक्षजीसे रवाना-

होकर बालापुर नये. और गर्मायोंके दिनोमें वहांपर कयामिकया, आषाहसुदी पंचमीकरीज बालापुरसें रवानाहोकर आकोला आये, और संवत (१९६०) की वारीश वहांपर गुजारी. व्याख्यान धर्मशास्त्रका हमेशां करतेथे, निकताब जैनसंस्कारिवधि यहां वनाइ. औरवास्ते छपनेकों भेजी, अंगविद्या और पवचनसारोद्धार यहां बाचे, संगीतकलाका इल्म यहांभी हासिल करतेरहे, इनदिनोमंजैन एशोशिएशन औफ - इंडिया - ओफिस बंबइसे महाराजके नामपर एक - खत - आया, उसमे लिखाथािक - मुल्क - अमरिकासे एक विद्वान् लिखतहें - "Jainsm" आर्टिकल करीब दोहजार शब्दोमें और - "Life of Tirthanker Mahavir" धार्टिकल करीब एक हजार शब्दोमें लिखमेजे - तो - हम - अपनी बनाइहुइ किताबमें उसकों जैनमजहबके बयानमें दर्ज करेगे, इसलिये आप दोंनो आर्टिकल आठ रीजमें लिखमेजे तो वडी महरवानी होगी, महाराजने दोनो - आर्टिकल आठ रीजमें लिखमेजे तो वडी महरवानी होगी, महाराजने दोनो - आर्टिकल आठ रीजमें लिखमेजे तो वडी महरवानी होगी, महाराजने दोनो - आर्टिकल आठ रीजमें लिखमेजे तो वडी महरवानी होगी, महाराजने दोनो - आर्टिकल आठ रीजमें लिखमेजे तो वडी महरवानी होगी, महाराजने दोनो - आर्टिकल आठ रीजमें लिखमेजे तो वडी महरवानी होगी, महाराजने दोनो - आर्टिकल आठ रीजमें लिखमेजे तो वडी महरवानी होगी, महाराजने दोनो - आर्टिकल आठ रीजमें लिखमेजे तो वडी महरवानी होगी, महाराजने दोनो - आर्टिकल आठ रीजमें लिखमेजे तो वडी महरवानी होगी, महाराजने दोनो - आर्टिकल आठ रीजमें लिखमेजे तो वडी महरवानी होगी, महाराजने दोनो - आर्टिकल आठ रीजमें लिखमेजे तो निम्मल करने - एशोशिएशन

[संवत् १९६१ का-चौमासा-दाहर-जबलपुर,]

बादवरीशके आकोलेसे रवाना होकर बुरानपुर गये, और करीब दो-महिनेके-वहांपर कयाम किया, वहांसे खंडवाला लाइन होकर तीर्थ मांडव गढकी जियारतके लिये महुकी-छावनी गये, और वहांसे खुरकी रास्ते (१८) कोसके फासलेपर मुकाम-मांडवगढ जाकर जियारतिक और तवारिख वहांकी अपनी नोटबुकमें दर्जकीइ मांडवगढसें वापिस आकर महुकी छावनीसे रैलमें सवार होकर रतलाम-गोधरा-लाइनके रास्ते अहमदाबाद टेसन होतेहुवे आबु-रोड टेसन उतरे, आबु पहाडपर जाकर वहांकी जियारत किइ,

और फिर आबुरोडसे रैलमें सवार होकर रोहिडा टेशनपर उतरे, वहांसे खुक्की रास्ते तीर्थ वंभणवाड जाकर जियारत किइ, और वापिस रोहिडाटेशन आकर नाणा टेशन उतरे, वहांकी जियारत किइ, नाणाटेशनसे सवार होकर रानीटेशन गये, और रानकपुर बगेरा पंचतीर्थीकी जियारत किइ, और वहांकी तवारिख अपनी नोटबुक्तमें दर्जिकइ, फिर रानीटेशन वापिस आये और रैलमें सवार होकर-अजमेर-लाइनसे चितोडगढ टेशन होते उदयपुर गये, और तीर्थकेशरीयाजीकी जियारतके लिये रवाना हुवे, जो (१८) कोसके फासलेपर वाकेहै, वहांकी जियारत किइ, और शिलालेखोंकी नकल अपनी नोटबुकमें दर्जिकिइ, तीर्थ केशरीयाजी से रवाना होकर चेतसुदी छठके रोज वापिस उदयपुर आये और बहार बगीचेमें कयाम किया, उदयपुरके श्रावकोंकों माळ्महुवाकि-महाराज यहां तशरीफ लायेह, सबलोग बहां आये. मूर्त्ति पूजापर व्याखान दिया, और करीब आठरीज बगीचेमें ठेहरे, खाना होतेवरूत कवि सुरजमलजीने-ग़ुरूभक्तिपर कइदोहे-और-शेयर बनाकर सुनाये,—

(दोहा.)

चैतसुदी छठके दिवस-आये सुनिवर आप, दर्शन दे कृतार्थ किये-गये जन्मके पाप, ? वैशाखवद एकम सुदिन-करके आप विचार, विहार करनेकी सुनिजी-लिनी चितमे धार, २ श्रावकोंकी विनती-करजो आप कुबुल, हिरदेमेसे आप सुनिवर-जाजो मत अबसुल, ३ सुनिमहाराज शांतिविजयजी-आपगुनोंकी खान, चोमामो किजो अठे-दर्शन दिजो आन. ४ सुरजमल्लकी विनयभक्ति-सुनिवर वारंवार, हाथजोडकर मानजो-करजो आप उपकार,

(दोयर.-)

विहार करनेकी मुनिजी-आपकी सुनके खबर.
बहोत दिल मसमसाता-और होताहै फिकर, १
कब सुनेगे ज्ञानचर्चा-आपके मुखसें जिकर,
श्रावकोंकी विनितिहै-चरनमें मस्तकको धर. २
प्रयाण किजो उद्यपुरमें-द्याकी करके नजर,
बो दिन उद्य कब आयगा-दर्शन दियोगे आनकर,३

उद्यपुरसे चितोडगढ-अजमेर-फुलेरा होते मेरटारोड टेशन उत्तरे, तीर्थ-फलोदी-पार्थनाथकी जियारत किइ, और बहांकी तबारिख अपनी नोटबुकमें दर्जिकिइ, मेरटारोडसे रैलमें सवार होकर फुलेरा आये, और रेवाडी लाइनमें देहलीटेशन होते मेरटटेशन गये, बहांसे खुश्की रास्ते (१८) कोशके फासलेपर जो-तीर्थ-हस्तिनापुरहै-जियारतको गये, तीर्थकर शांतिनाथ-कुंगुनाथ-और-अरनाथ महाराजकी जन्मभूमि यही शहरहै, जियारत किइ-और-वहांकी तबारिख अपनी नोटबुकमें दर्ज किइ, हस्तिनापुरसे वापिस मेरट आये और गाजियाबाद होते सिकंदराबाद गये. आठरौज वहांपर क्याम किया, व्याख्यान धर्मशास्त्रका हमेशां देतेथे, सिकंदरबादसे रेलमें सवार होकर-अलीगढ-आगरा-गवालीयर लशकर-जहांसी भोपाल-खंडवा होते-बुरानपुर आये, यहांपर करीब एकमहिनेके क्याम किया. किताबजैनसंस्कारविधि छपकर यहां आगइ, और जिन जिन महाश्योने मंगवाइथी भेजीगइ, इसमें जन्मसंस्कारसे छकर सोलह संस्कारोंका वयान दर्जहै, इनदिनोमें जवलपुरके

श्रावकोका खन आयाकि—आप—बराये महरवानी हमारे शहरमें तशरीफ लावे, और हमलोगोंकों तालीम धर्मकी देवे. महाराजने उनकी अर्ज मंजर किइ और बुरानपुरसे रवाना होकर जेटदुसरे वदी तीजके रीज व—सवारीरैल जवलपुर पहुचे, आर संवत् (१९६१) की वारीश वहांपर गुजारी, व्याख्यान धर्मशास्त्रका हमेशां करतेथे, कइ मजहवके लोग—वास्ते मजहवी बहेसकों आते जातेथे, और धर्मचर्चाका फायदा हासिल करतेथे.—उपितिभव प्रपंच—और—मेघमहोदधि—ग्रंथ—यहांपर वाचे.

(संवत् १९६२ का-चौमासा-बाहर धुलिया,)

वाद्वारीशके जवलपुरसं रवानाहोकर-कटनी-विलासपुर-चक्रधरपुर-और-आसनसोल होते वर्द्धमान देशनकों गये, कल्प-सूत्रमें-जो-अस्थिक ग्रामका जिक्रदर्ज है-जहांकि-तीर्थकर महावी-रस्वामीने-अवल चौमासा कियाथा-वो यही वर्द्धमान-(अस्थिक-ग्राम) हें, आजकल यहां कोइ जैनश्वेतांवर मंदिर नही, सिर्फ ! जियारतका मुकामहै, वहांकी क्षेत्रस्पर्शनाकरके आसनसोल आये, और बंगाल-नागपुर रैलमें--भुसावल जंकशनहोते पाचोरा टेशन उतरे, मोशमशर्मा वहां गुजारी. व्याख्यान धर्मशास्त्रका हमेशां क-रतेथे. पाचोरेसे रवानाहोकर बाळापुर गये. और करीब तीन महिनके वहां ठहरे, व्याख्यानमें आवश्यकसूत्रहत्ति-और-समरा-दित्यचरित बाचा, आषाढमहिनमे वालापुरसें रवानाहोकर शहर-धुलिया आये और संवत् (१९६२) की वारीश वहांपर गुजारी, व्याख्यान हमेशां करतेथं, किताव अजायव-हालात-जैन-और-आर्यसमाज, यहां बनाइ. अनेकांतजयपताका-योगशास्त-अध्या-त्मविंदु-योगविंदु-और-योगदृष्टिसमुच्चयप्रंथ यहां वाचे, वादवारी-शके मोशमशर्माभी वहां ग्रजारी, इनदिनोमें इरादा कियाकि-एक

मरतवा-शिखरजीकी-जियारत फिर करे, मामुळीकारोबार तो ऐसेही होतेरहेगे, जोकुछ काम धर्मका करलिया वही वहेत्तरहोगा,

[संवत् १९६३ का−चौमासा−হाहर पुना,]

संवत् (१९६३) की-चैतसुदी एकमकेरौज शहर धुलियेसें रवानाहोकर जब पाचोराटेशन पहुचे-तो-वहांके श्रावकोने दो-रोजकोलिये-ठहरालिये, पाचोरेसे भुसावलहोते जब बुरानपुर पहुचे टेशनपर श्रावकलोग आयेहुवेथे शहरमें लेगये, और पनराह रौज-केलिये वहां कयामकरवाया, वहांसे रवानाहोकर खंडवा-इटारसी होते जबलपुर-गये-तो वहांके श्रावकोने दोरौजकेलिये टहराये, जबलपुरसे खानाहोकर इलाहाबाद गये. और इलाहाबादसे पर-तापगढलाइनमें फैजाबाद होते तीर्थ रत्नपुरीकी जियारतकों गये, वहांकी जियारतकरके वापिस फैजावाद आये, और फैजाबादसें रैलमें सवारहोकर बनारस पहुचे, टेशनपर श्रावकलोग आयेहुवेथे शहरमें लेगये, वहांपर करीब (२०) रौजके क्यामिकया, वैशाख सुदी तीजकेरीज-यशोविजयजी-जैनश्वेतांबर-पाठशालाके विद्या-र्थियोंका इम्तिहानलिया, एकरौज-तीर्थ-सिंहपुरी-और चंद्रावतीकी जियारत किइ, एक रौज सारनाथके पास-जो-वौधस्तृप है देखने गये, असलमें यह बौधलोगोका देहगोप (यानी) पूजाकी जगहहै, बनारससें रवानाहोकर शहर-पटना गये, वहांकी जियारत किइ, वहांसे सुवेविहार-और-सुवेविहारसे-पावापुरी-कुंडलपुर-राजगृही और-गुणशिलवन उद्यान-वगेरा पंचतीर्थीकी जियारतकिइ, वहांसे नवादाटेशन जाकर रैलमे सवार हुवे और मधुपुर होते गिरिडी टेशन उतरे, गिरिडीसे शिखरजीकी जियारतकों गये, और चोथी मरतवा जियारतिकइ, शिखरजीसें रवानाहोकर गिरिडी आये,

और रैलमें सवारहोकर-मधुपुर-पटना-मोगलसराय जंकशन होते मिर्जापुर गये, वहांके जैनमंदिरोंकी जियारत किइ, दुसरेरौज मिर्जापुरसे रवानाहोकर-इलाहाबाद-कटनी-विलासपुर-नागपुरके देशनोपर होते पारसटेशन उतरे, और वालापुर-जो-तीनकोसके फासलेपर खुश्कीरास्तेवाके हे गये, करीब पनरां रौज वहां ठहरे, आषादमुदीमें बालापुरसे रवानाहोकर-भुसावल-पाचोरा-मनमाड और-कल्यानकेरास्ते शहर-पुना-गये, और संवत् (१९६३) की वारीश वहांपर गुजारी, व्याख्यान धर्मशास्त्रका हमेशां करतेथे, और मुननेवाले कसरतसें जमाहोतेथे, आसोजके महिनेमें जब-प्लेगबी-मारी जोरशोरसे चलने लगी,-और लोग इधरउधर बहारगांव चलेगये, महाराजने मुताबिक जैनशास्त्रके देखाकि-अगर किसी किसमकी-आफत-आजावे-तो-चौमासेमेंभी-मुनि-उसजगहकों छोडदेवे, कल्पसूत्रकी मिशालहै कि-

(अनुष्टुप्-वृत्तम्)

छ अशिवे भोजनाप्राप्तौ-राजरोग पराभवे, चातुर्मासिक मध्येपि-विहर्नु कल्पतेन्यतः

बीमारीका सबवहो-भिक्षा-न-मिलतीहो-या-राज्यकी तर्फसे
कुछ पराभवहो-तो-वारीक्षके दिनोमंभी-मूनि-एक जगहसे दुसरी
जगह चलेजाय, महाराज शहर पुनासे रवाना होकर-लुनीगांवगये, जो पांचकोसके फासलेपर वाकहै, करीव एक महिनेके वहां
कयाम किया, और जब बीमारी छेग-कमहुइ-शहर पुनामें वापिस आये. सुरिमंत्रकल्प-वर्द्धमान विद्याकल्प-भक्तामरकल्प-औरशक्रस्तवकल्प वगेरा शास्त्र इनदिनोमें वाचे, और मोश्रमशर्मी शहर

पुनेमं गुजारी, माघवदीमं महाराजकी चाची-शहर भावनगरसेवास्ते दर्शनोको शहर पुना आये, कुछिदन महाराजके मुलसे शास्त्र
सुना, और-तारीफ करने लगेकि न्हमारे-खानदानमं-असापुत्र
पैदाहुवा जिसने परमेश्वरके नामपर अपनी जिंदगी जायाकि इ, पुत्रहो-तो-असाहो, आजतक जैसे-तुम-अपने धर्मपर पावंदरहे आईदेभी रहना, एक मरतवा अपने वतनकोंभी चलना. और सब
कुढुंबके लोगोकों तालीम धर्मकी देना, तुम थोडे असेसे-जो-रैलमें
बेठतेहो-इससे तुमको-कोइ-नहीमानेगे असा खयाल मतकरना,
तुमकों-तो-सबमानेगे, महाराजने कहा ! नही !! असा खयाल
नहींहै, बिल्क ! मुजे मुल्क गुजरातके कइ श्रावकोंने अर्ज गुजारीक
किइहैकि-आप-इधरके मुक्कमें पधारे, मगर मुल्क गुजरातमें-मुनि
महाराज अकसर ज्यादह सकर करतेहै, और इधरके मुल्कमें-कमआते जातेहैं इसलिये इधरके मुल्कमें सफर करना ज्यादह फायदे मंदहै,
और जब ज्ञानिदृष्ट भावहोगा उधरभी आना वन सकेगा, अठारां रीज
महाराजकी चाची-शहर पुनेमें रहे और फिर अपने बतनकों गये,

[संवत् १९६४ का चौमासा शहर आकोला.]

माघसुदी (?०) मीके रौज महाराज पुनेसे रवाना होकरकल्यान-मनमाड-होतेहुवे शहर धुलियाकों गये, और करीब देढमहिना वहांपर कयाम किया, किताब त्रिस्तुति परामर्श छपकर यहांपर
आगई और जिन जिन महाशयोने मगवाइथी, भेजीगई, इस अर्सेमें
शहर-मुलतान-मुक्त पंजाबके जैनश्वेतांबर श्रावकोंने बजरीये-खतके
अर्जिकाकि आपहमारे शहरमें कदमरंजा फरमावे और हमकों तालीम
धर्मकी देवे, महाराजने उनकी अर्जकुचल किई, और संवत्(१९६४)के
चैतसुदी एकमके रीज धुलियासें रवानाहोकर ब-मुकाम-पाचोरा गये.
और वहांपर करीब एकमहिना कयामिकया, पाचोरेसे वैशालसुदी

तीनकेरोज एवानाहोकर-देहलीके रास्ते-अंवाला-लुधिहाना-जालंधर-अमृतसर-लाहोर-हातेहुवे-गुजरानवाल-टेशनगये टेशन-से करीव आधमीलके फासलेपर-जो-महाराजके गुरुजीकी चरनपादुका-आर-छत्री वनीहुइहै-वहांपर जाकर चरनपादुकाके सामने मुरिमंत्र-और-वर्द्धमानविद्या पढी, और सामकों टेशनपर वापिसआये, गुजरानवालके श्रावकलोगोने सुनाकि-महाराज-शां-तिविजयजीसाहव यहांपरतशरीफ लाये है, उनकी मुलाकातकों जानाचाहिये, कितनेक श्रावकलोग शामकेलवजे टेशनपर वास्ते मुलाकातकों आये, और कहनेलगे आप शहरमें चलिये, महाराजने कहा-में-इसवरुत-सफरमेंहुं-और-बहर मुळतान जानेकेळिये इधर आयाहुं. इसलिये फिरकभी देखाजायगा, शहरगुजरानवाल टे-शनसं रैलमं सवारहोकर-लाहोर-राविंड-और-खानावलजंकशन होते दुसरेरीज शहर-मुळतान-पहुचे, टेशनपर श्रावकळोग वास्ते पेशवाइकों आयेथे शहरमें लेगये, असलमें मुलतानके श्रावकोने महाराजकों इसलिये बुलायेथेकि-श्वेतांवर-दिगंवर श्रावकोंकी आपसमं धर्मचर्चाकेवारेमें हमेशां वहसहुवा करतीथी. महाराजने वहांजाकर जाहिरिकयाकि-जिसांकसी श्रावकके। धर्मचर्चाके बा-रेमें-जो-कुळ पुळनाहो-ळववाकर पुळे, जवावभी उसका छपवा-कर दियाजायगा, ताकि-कोइकिसमकी रदवद्छ-न -होसके, महा-राजने करीव दोमहिनेके शहरमुळतानमें कयामाकेया, किसी श्रा-वकने कोइ सवाल धर्मके वारेमें अपवाकर नहीं पुले, व्याख्यान धर्मशास्त्रका हमेशां करतेथे, इनदिनोमें पनरानजीरे लिखकर महा-राजने मुळतानके जैनश्वेतांवर मंदिरकी दिवारपर आइनेमें जडवा-कर लगवादिङ, और श्वेतांवर श्रावकोसें यह वात कडीकि-अगर कोड़ तुम लोगोसे जैनव्वतांवर मजहबके वारेमे कुछ पुछ-तो इसको

देखकर जवाबदियाकरो, ग्रुलतानके जैनश्वेतांबर श्रावकोने महारा-जसे-वास्ते चौमासेके-बहुत आजीजीकिइ, मगर महाराजने मुल्क द्खनके श्रावकोंकी अर्ज-पेस्तर-कुबुल करलिइथी-इसलिये-आ-षाढवदी तेरसकेरीज शहर मुलतानसे खानाहोकर-लाहोर-आये, और खयाल्रकियाकि–इतनी दुर आयेहै–तो–पेशावरभी होतेचले जैनतीर्थ गाइडकेलिये–जो–कोइ पुराने लेख मिलेगें अपनी नोट-बुकमें दर्जभी करतेचलेगे, गरजिक-महाराज-लाहोरसे पेशावरगये, और वहांसे छोटकर छाछाम्रसा जंकशन होते तीर्थ-भेंराकी-जि-यारतकों गये, वहांकी तवारिख अपनी नोटबुकमें छिखछिइ, बीतभयपतननगर इसी भेंराका नामहै, वहांसे लाहोरआये, और लाहोरसे-देहली-आगरा-भ्रुसावल-मनमाड--कल्यान होते पुना टेशन उतरे, और वहांसे खुक्कीरास्ते–जुन्नेर−जानेकेलिये रवानाहुवे रास्तेमें वारीश खुब होनेकी वजहसें नदी-नाले-चढगयेथे मुकाम मजकुरकों-न-जासके, वापिस लोटकर खिडकी टेशनसे रैलमें स-वारहवे, ओंर कल्पान-भ्रुसावलहोते-आकोला गये, और संवत् (१९६४) की वारीश वहांपर गुजारी. व्याख्यान धर्मशास्त्रका हमेशां करतेथे, पर्यूषणपर्व-उमदा तौरसे खतमहुवे, इनदिनोंमें ल-लितविस्तरा-द्वात्रिंशका सिद्धसेनदिवाकर-अष्टक हरिभद्रसूरि-अं-गुरुसितरी-कालसप्तति--और-युगप्रधानयंत्र वगेरा ग्रंथ बांचे, आसोजमहिनेकी थ्रह्ञातमें जब प्लेगबीमारी जोरशौरसे चलनेलगी और श्रावकलोग वहारगांव चलेगये, महाराज-कस्वे बालापुरकों तशरीफ लेगये, और आधीवारीश वहांपर खतमिकइ, इनदिनोमें-कवि-सुरजमलजी-शहर-उदयपुर मुल्कमेवाडसें महाराजके दर्शनो-कों बालापुर आये, और गुरुभक्तिपर-कवित्त-दोहे वगेरा बनाकर सभामें सनाये.

👺 (कवित्त,-]

विद्याकेसागर और न्यायके रत्नआप, म्रुनिश्रीशांतिविजय तपधारीहै, मायासेविरक्त प्रभुनामके सयुक्त, दिनकरसो प्रकाशसदातिमिरनाशकारीहै जिनमतको दिपावे मूत्रसारकोवतावे,दयाकेनिधान मुनिज्ञानकेभंडारीहै, श्रैसेहैमुनिराजभविजनकेसारेकाज, जिनकेआचारीजिनकोंवंदनाहमारीहै

👺 (दोहा,)

भारतवर्षके वीचमें,-धन्यहै ये अनगार, सुरजमळुभी वंदना,-करता वारंवार,

🖾 [गुरुभक्ति पर पद,-]

(रागिनी-भैरवी,)

मुनिजी ! जिनमतमें परवीन,

न्यायरत्न अरू विद्यासागर,-उपमा जगने दीन, मुनिजी, १ पंचमहात्रत धारक प्रभुके,-चरन सरनमें लीन, मुनिजी, २ शांतिविजयजी साधु संवेगी,-मोहरिपु कियालीन, मुनिजी ३ परमिकया उपकार महामुनि,-तीनतत्वमें लीन, मुनिजी, ४ वारवारहै वंदना मेरी,-जानतहो गुन तीन, मुनिजी, ५

इनदिनोंमें द्वादशारनयचक्र-धर्मविंदु--ज्ञानविंदु-और--पार्थ-नाथचरित ग्रंथ महाराजने वांचे, और वारीश खतम किइ.-[संवत् १९६५ का-चौमासा-शहर दखन-हैदराबाद.]

बादवारीशके पोषवदी दुजकेरीज बालापुरसे ओशियानगरीकी जियारतकों जानेका इरादाकिया और पारसटेशनसे रैलमेंसवार होकर-भुसावल-खंडवा-अजमेर-फुलेरा-और-मेरटारोड होतेहुवे जोधपुरटेशनपर उतरे, मुकाम जोधपुरसे (१८) कोसके फासले-

पर-जो-ओशियानगरीवाकेहै गये, जियारतिकह, और वहांके शिलालेखोकी नकल अपनी नोटबुकमें दर्जिकइ, जमाने पेस्तरमें यह-उपकेशनगरीके नामसे मशहूरथी, ओशियानगरीसे खानाहो-कर वापिस जोधपुर आये, और रैलमें सवारहोकर-पाली-मार-वाडजंकशन होते आबुरोडटेशन उतरे, वहांसे खुश्कीरास्ते तीर्थ-कुंभारीयाजीकी−जियारतकों गये, जो (१२) कोशके फासलेपर वाके है, पेस्तर इसकानाम आरासणनगरथा, वहांके आलीशानमं-दिरोंकी जियारतिकड़, और शिलालेखोकी नकल अपनी नोटबु-कमें दर्जिकिइ, तीर्थ-कुंभारियासें-रवानाहोकर आबुरोडटेशन आये, और रैल्रमेंसवार होकर-अजमेर-खंडवा-अुसावल होते माघसुदी दुजकेरौज बालापुरगये, श्रावकोंने अर्जिक्शक-आप-हमकों मुत्र अनुयोगद्वार-सुनावे वडीमहरवानी होगी, महाराजने अनुयोगद्वार सूत्र-व्याख्यानमें सुनाया, इनदिनोमें Description of Parasnath Hills,-" वयान-पारसनाथ-पहाड किताव "-बनाइ, जो छपकर जाहिरहोचुकी है, और हिंदके बडेवडे बहरोमे श्रावकोके पास पहुचचुकी है, दर-वयान-संवत (१९६५)-की-सालका ब−जरीये नजुमके इसीमें जाहिर कियाथा, नजुम सचाहै मगर क्षर्तयहहैकि−उसकों जाननेवाला चतरहोनाचाहिये, नजुमशास्त्रकों अछीतौरसे देखागयातो इम्तिहानके मेंदानमें सचापाया, तीर्थंकर गणधरोकी-यह-कमाल महेरवानी समझोकि-नजुमकों-वे-शास्त्रोमें बयानफरमा गये, खयालकरोकि-नजुम-अगरसचा-न-होतातो नजुमीलोग-जमीनपर बेठकर आस्मानके सितारोका हाल वयान कैसेकरसकते ? आफताब-और-चांदकों-कव-और-किसरीज ग्रह-णलगेगा कैसेवतलासकते, ? तीर्थकर-गणधर-और-पूवाचार्य आ-लादर्जेके नजुमीहुवे, चंद्रमज्ञप्ति-सूर्यमज्ञप्ति-भद्रवाहुसंहिता-ज्योति-

ष्करंडक-आरंभसिद्धि-जन्मांभोधि-यंत्रराज-त्रेलोक्यप्रकाश-मानसागरीपद्धित-मेघमाला-गणिविज्ञापयन्ना-मेघमहोद्धि-भुवनपदीप-और-नारचंद्र—ये-जैनमजहवके नजुमपंथहै, जैमनिसूत्रपारासरसूत्र-अगस्तिसूत्र-वाराहसंहिता-लंपाक-नीलकंठ-टोडरानंद-वहद्जातक-पारिजातरत्नाकर-सूर्यसिद्धांत—कमलाकर-और
आर्यभद्दसिद्धांत-वगेरा दुसरेमजहवके नजुमग्रंथहै, जैनमजहवमें
द्वादशारचक्रमय-कालचक्र-मानाजाताहै, और वैदिक्रमजहवमें सत्य-द्वापर-त्रेता-और-कलियुग यहचारयुग मानेजाते है, चांदसूर्य
ग्रह-किसीका भलावुरा नहीकरते, जोकुल करनेवाले है-अपने
अपने-पूर्वसंचित कर्महै, चांदसूर्य वगेराग्रह-उसके सूचक और
योतकहे, ऐसाजानना.

ज्येष्टवर्दामं वाळापुरसे रवाना होकर महाराज-धुसावळ-मन-माड-औरंगावाद होते शहर जाळना गये, और तीनहफते वहांपर कयाम किया, जाळनेसे रवाना होकर पर्वणी-निझामाबाद-होत हैदराबाद गये और संवत् (१९६५) की-वारीश वहांपर गुजारी व्याख्यान धर्मशास्त्रका हमेशां देतेथे और सभा अछी भरतीथी, जळसा-पर्धुपण पर्वका-उमदा तौरसे हुवा,-आसोज सुदी तीजके रौज सुसानदीकी तुगयानी वडी जोरसे हुइ,-(यानी)-मुसान-दीमें पानीका तोफान हुवा,-मगर बदौळत देवगुरू धर्मके चार कवान तर्फ किसी किसमकी आफत नही गुजरी, जहांकि महा-राज-ठहरेहुवेथे,-इनदिनोंमें हिंदके बहुतसे शहरोसे महाराजके नाम कइ-तार-और चीठीयां इस मजमूनकी-आइकि-आपकी वेरीयतका हाळ इरशाळ फरमावे, महाराजने उनका जवाब लिखा कि-में-वदौळत देवगुरूधर्मके खुशहुं, बादवारीशके-हैदराबादसे पोष वदी नवमीके रौज महाराज-तीर्थ-कुल्पाकजीकी जियारतकों गये, जो-करीव (५०) मीलके फासलेपर आलेर टेशनसें जायाजाताहै और दो-कोश-खुइकी रास्ते जानेसे मिलताहै, पोषवदी दशमीके रौज वहां यात्रीयोंका मेला भराथा और रथयात्राका जलसा हुवाथा, तीर्थ-कुल्पाकका मंदिर बहुत पुराना होगयाथा महाराजके उपदेश्वासे उसकी मरम्मत होना शुरुहुइ, पांचरोंज वहांपर ठहरे, और वापिस हैदराबाद आये,-

🤍 (१)–महाराजको लेखलिखनेका–और–पंथ वनानेका अजहद शौखहै, वरवरूत महाराजकी कलम चलती रहती है, और लिखने पढनेमें मुशुल रहतेहै. जैन-सप्ताहिक-पाक्षिक-मासिक वगेरा अखबारोमे महाराज धर्मके वारेमें छेखदेते रहतेहै, दिगर मजहब वाले जब जैन मजहबपर दलील करतेहै-तो-उसका फौरन! जवाब देतेहैं, महाराजके तमाम लेख-जोकि-जैन अखबारोमें-छपचुकेहै-अगर-उनको इकटेकरके छपायेजाय-तो-एकवडा ग्रंथ बनजाय, (२) महाराज आपने हमरा सब मजहबोकी पुस्तके हमेशां रख तेहैं–ताकि–जिसमजहबवालोंकों जवाब देनाहो–सबुतकेशाथ दि-दियाजावे, (३) महाराजकी व्याख्यान सभामें शौर गुल करना– या-बातचित करना सख्त मुमानियतहै. और यहबात ठीकभीहै कि-शौर गुल्रहोनेसे-सुननेवालोको शास्त्र सुननेमें खलल पडताहै व्याख्यान सभामें-सादर-नादर-कोइ किसी किसमका शौर गुळ_े करे-तो-उसकों रुकसत करवा देतहै, इससे कइ श्रावक नाराज रहतेहै, और कहतेहै विद्वान अछेहै मगर मिजाजके वडे सख्तहै, मगर अकलमंद लोग तारीफ करतेहैं कि-साधुहो-तो-असहो, जो ग्रीव∻-और--अमीरकों एकसा समझे, (४) जैसे∴समवसरणमें तीर्थंकर महाराज मालकोश-और-भीमपलासी-रागरागनीमें-तालीम धर्मकी देतेथे-और-इंद्रदेवते-वाज़ोंसें स्वरपुरतेथे, ब-मुजब-अपनी

ताकातके महाराज व्याख्यान सभामें-जब-भावना-अधिकारका वर्नन चलताहै-भैरवी कालिंगडा वगेरा रागरागनीसे व्याख्यान बांचते है और कभीकभी हारमोनियम वजानेवाले शख्श व्याख्थान सभामें बेटकर स्वर पुरतेहै, (५) महाराज जहां जहां तक्षरीफ लेजातेहै, वहांपर श्रावकलोग मय वेंडवाजा-वगेरा-जुलु-सके पेशवाइ करके शहरमें लेजातेहै, कहीं मौका-अैसाभी-होजा-ताहै कि-बाजे बगेराका इंतजाम नहीहो-बहां-श्रावक लोग जुलुस-के शाथ पेशवाइ नहीं करसकते, महाराजकों इनवातोंसें-न-रंजहै न-खुर्शाहै, महाराज-न-किसीकों फरमातेहै कि-तुम-मेरेलिये रैसाकरी, जिसकी जैसी मरजीहो-वैसा-करतेहैं, (६) महारा-जके छेखमें जैसाज्ञानका असरहै, वैसा व्याख्यानमेंभी भारीअसर है, सुननेवाले तारीफ करतेहै कि-ज्ञानकी-खूबझडी बरसातेहैं, देव-द्रव्यके-तीर्थोंके-और-ज्ञानपुस्तकोंके वारेमे लेख लिखकर आव-कोंकों होशियार करना इन्हीका साहसहै, साफसाफ बातकहनेमें किसीकी परवाह नहीं करते, महाराजका एतकात धर्मपर पुरुता-है, (७) महाराज मुल्कोंकी सफरकरना ज्यादह पसंद करतेहैं, गुजरात–मारवाड–पंजाव–राजपुताना--वंगाल–मालवा–खानदेश– -बराड-और-मुल्क दखनमें सफर करचुके है, मुनिजनोंकी फर्ज है कि-मुल्कोंकी सफर करके धर्मको तरकी देना,-

🖙 ब-कल्म-भगुभाइ-फतेचंद-कारभारी, एडीटर-जैन,-बोंबे,---

विद्यासागर न्यायरत्न श्री शांतिविजयजी-बडेअणगार, संयमिलनो आपने छोडयो कुटुंबसव धनघरवार, भावनगर गुजरातके मांही-शहरवडा भारी उत्तम, धन्यहै धरणी वहांकी जहां मुनिजी लियो है जनम, थन्य पिता मानकचंद्रजीको-वो चलते जिनमतको धरम, थे सतवादी जिनके पुत्र कहलाये अनुपम, धन्यवाद रलियातकवरकों-माता बुद्धिकी थी अगम, संस्कारसे आप आजन्मे उदयभये निजपूरवकरम, महाजन विशाओशवालथे-जूठवचन नही एक लगार, संयमलीनो आपने छोडयों-कुटुंवसवधनघरबार, विद्या, १ श्रीरी आत्माराममहाराज-जिनोनेलिये आपकों है पहिचान. दीक्षालिनी साल उन्नीस और छत्तीसममान, वैशाखशुक्क दसमी गुरुवारे–हुवेसंयमी चतुरस्रुजान, मलेरकोट पांचालग्रुल्कमें जानते है सब निखिलजहान, धर्मशास्त्रकों पढे मुनिश्वर-व्याकरणकोशकों भारीज्ञान, सर्वशास्त्रकों आपने पृथक् पृथक् लिने सबजान, पंजाब पूरव मारवाड-गुजरात मालवाकों दियोतार, संयमलीनो आपने छोडयो कुटुंब सबधनघरबार, विद्या, २ दखनमेंगये आप मुनिजी-जिनमत खुबदिपायाहै, देशदेशमें आपका सुजश बहोतसा छायाहै, मानवधर्मसंहिता एकपुस्तक-वहोतखूव फरमायाहै,

पश्चपांचको खंडनकरके मजहब रिसाला बनायाहै,
तीनथुइका परामर्श एक-तीनथुइपें रचायाहै,
विधि जैनसंस्कार बनाकर तनपरयश उपजायाहै,
गृहस्थापनमें नाम हठीसिंह-जन्मलग्नमें विदित्तिवचार,
संयमलीनो आपने छोडयो कुटुंव सवधन घरवार, विद्या, ३,
उन्नीसवर्षकी उमरआपकी-जवसें यह संयम धार्यो,
धन्यम्रानिजी आपने कामक्रोध रिपुकों मार्यो,
सकल कामना तजी जग्तकी-छोभपाप पावकजार्यो,
धन्यहो स्वामीआपने निजआतम कारजसार्यो,
विद्यासागर न्यायरत्नमुनि-धर्मधुरंधर पदधार्यो,
देशदेश और नगरगांवमें सुजश आपने विस्तार्यो,
सुरजमळ्ळकी हाथजोडकर-मुनिजीवंदना वारंवार,
सयमलीनो आपने छोडयो कुटुंव सबधन घरवार, विद्या, ४
(इति गुरुभिक्तपर लावनी.)

- CRARATO

[लावनी-अष्टपदी.-]

[जगतमें नवपद्जयकारी-सेवतां पापटले भारी,]

(इसचालपर-)

मुनिश्री शांतिविजयजी आप-कर्मके मेटिंद्ये संताप,
मुखसंसारसें मुखमोडयो-कुटुंबसें सब नातो तोडयो,
ध्यान निज जिनप्रभुसें जोडयो-लोभ और मोहकाम छोडयो,
(दोहा.) पंचमहात्रतथारके-करतेहो उपकार,

छकायाके जीववचाते-म्रुनिजी वारंवार, भुलकर नहीकरते संताप-कर्मके मेटदिये सब पाप, म्रुनिश्री, १ कामना छोडी सारीको-तरसना मारी भारीको,धन्य ऐसे आचारीको-नमनहै दृढव्रतधारीको,
(दोहा.) पुदगल परिचय छोडियो-भन्यजीवनके काज,
विचरतहो सबजग्रमें स्वामी-धर्मध्यानके जहाज,
अनुकंपा रही दिलमें न्याप-कर्मके मेटदिये संताप, मुनिश्री, २
दोषसब कर्मनको टार्यो-गरब तनमनसे सब गार्यो,
धर्म जिनबरकों विसतार्यो-अन्यमत चितमें नही धार्यो,
(दोहा.) मिध्यामतकों खंडन किनो-जिनमतमंडन कीन,
श्रीजिनमभुके चरनसरनमें-रहतेहै लयलीन,
दुष्टजन गये आपसें कांप-कर्मके मेटदिये संताप, मुनिश्री, ३
इंद्रियां पांचोकों मारी-आपने तजे कनक नारी,
धर्मके श्रंथ रचे भारी-वचन सब माने संसारी,
(दोहा.) कहांतलक बर्ननकरं-मुनिजी परमद्याल,

सुरजमल्लकी हाथजोडकर-वंदना ल्यो प्रतिपाल, प्रभुका नित उठकरते जाप-कर्मके मेटदिये संताप. मुनिश्री, ४

(इति-अष्टपदी लावनी समाप्त.)



(गहूली पहली)

(जगतगुरु जिनवर जयकारी,) इस चालपर,-

श्रोतारे सुनो गुरुगुणना रागी-जानोरे तुम भाग्यदञ्चा जागी,	
श्रोतारे सुनो गुणना रागी,	
जंबुमांहि भरतभद्धं सुनिये-देशगुर्जर राजनगर गणिये,	
शोभारे तेह शहरतणी सुनिये-श्रोतारे,	\$
भ्रोभे जिनमंदिर जयकारी-के-श्वत उपर अठ निरधारी,	
नमेरे जहां नितनित नरनारी-श्रोतारे,	२
करमदल्ल कापवा बलवंता–साधु जिनशासनमें रमता,	
एतोरे पांची इंद्रियने दमता-श्रोतारे,	3
आव्या गुरु देशविदेश फिरी-भूमी राजनगरनी पवित्रकरी,	
श्रोतारे मन शंसय दूर हरी-श्रोतारे,	8
संवत ओगणीस चालीस विषे-गुरु गिरुवा एकविस तिष्ये,	
रही राजनगरमें कर्म पीसे-श्रोतारे,	, ધ
मुच्जा तरुणीथी मन तांणी-विरातिरमणी करी पटराणी,	
ू जेह उभय ळोकमां गुणखाणी –श्रोतारे,	६
विवेकने मंत्रीपद ताजा-संवेगकुवर किया युवराजा,	
संवर रहे हाजर दरवाजा-श्रोतारे,	છ
आर्जवपटहस्ती महाभारी-विनयरूप घोडा सिणघारी,	
मुनि आतमराज करे भारी-श्रोतारे,	C
रथ संयमशिलतणा भरिया-सुभट ज्ञमदमथी अलंकरीया,	
म्नुनि समतारसना दरिया-श्रोतारे,	٩
के समकितमहेल मनोहारी-संतोषसिंहासन गुणकारी,	

(२) ग्रुक्भिक्तपर-गहूली-पद-और-छंद.

बेठारे जहां म्रिनिमुद्रा धारी-श्रोतारे, १० चामर जहां धर्मभुकल करता-किरतिजशलत्र जहां फिरता, कर्यारे जेणे मोहारिषु हरता-श्रोतारे, ११ अलिकद्रव्यराज कर्युं अलगुं-भलुंरे भावराजमां मन वलगुं, दुरितवन शिध जेथी सलगुं, १२ आतमरूप लक्ष्मी रुडी लेवा-सदा करे शांतिविजय सेवा, मीळेरे जेथी मुक्तितणा मेवा,

(गहूली दूसरी,)

(भवी तुमे सुणजोरे-भगवतीसूत्रनी वाणी,) इस चालपर भवीतम सुणजोरे-गुरुम्रखमधुरी वांणी. दिलमां धरजोरे-समतारसगुणखाणी, पंजाबदेशमां जन्मलिया गुरु-वालपणे व्रत लीधा, ब्याकरणालंकार भणीने-दुर्मत दुरे किथा, भवीत्रम. १ नामसमानगुणे शोभंता-सुमातिगुप्तिना धारी, आतमनिजपद ध्यांनमां लिना-भिना जिनगुणक्यारी, भवीतुम. २ आगम अनुसारी किरियामां-अप्रमत गुरुराया, तृष्णातरुणीथी मन तांणी-संयम तान लगाया, भवीतुम. ३ गांमनगरपुर देसविदेसे-विचरंता व्रतधारी, बहुजनने प्रतिबोध दइने-दुरमति दुर निवारी, भवीतुम. ४ शंसयशत्र दर निवारी-भयथी निर्भय कीधा. खटमततत्व स्वरुप बतावी-लोचन अमने दीधा, भवीत्रम. ५ क्रमतबादलां दुर निवारी-कीधो हम सुपसाय, जलहल्रदिवडा जिनवाणीना-प्रकटाया गुरुराय. भवीतुम. ६ ए उपकार तुमारो कहो गुरु-विसायी किम जाय.

स्मर्णकरी उपकारीतणां सहु-गुणगातां दुख जाय, भवीतुम. ७ ज्ञानवधे ज्ञानीगुणगातां-ज्ञानी गुणथी भरिया, शांतिविजयकहे गुरुगुणदरिया-केम तराये तरिया, भवीतुम. ८

(गहली तीसरी.)

(इसमें महाराजश्री आत्मारामजीका-जीवनचारित-दर्ज है,-) (साभलजोरे म्रानि-संयमरागी, उपशमश्रेणी चढीयारे,) ए देशी.

आजनगरमें सुगुरु पथार्या-जिनआगमना दरियारे, श्नानतरंगे लहेरो लेता-ध्यानपवनथी भरियारे, आजनगरमें, १ आजकालमां जे जिनआगम-दृष्टिपथमां आवेरे, गइनगइन तेइना जे अर्थो-प्रकटकरीने बतावेरे, आजनगरमें, २ शक्तिनही पण भक्तितणे वश्च-गुणगावा उलसावुंरे, कर्णामृत ग्रुरु चरित सुणावी-आनंद अधिक बढावुंरे, आज० ३ दक्षिणदिशिं जंबूद्वीपमांही-यही भरतमझाररे, इत्तरदिन्नि पंजाबदेस जहां-लहेरा गांब मनोहाररे. आज॰ ४ क्षत्रीयवंश गणेशचंदघर-जन्मलिया सुलधामरे, रुपटेवी कक्षी सक्तिमां-सक्ताफल उपमानरे, आज० ५ रुघुवयमां पण लक्षणयी बहु-दीपंता गुरुरायारे, संगतथी मिळी इंडकजनने-इंडकपंथ धरायारे, आज० ६ संवत ओगणीसे दसमांही-उज्वल कार्त्तिक मासेरे, पंचमीने दिवसे लिये दीक्षा-जीवणराम गुरुपासेरे, आज० ७ **ज्ञानभण्या वली देस फिर्या बहु**—जुनां शास विलोकीरे,

शंसयपिडया गुरुने पुछे-प्रतिमा केम उवेखीरे, आज० ८ उत्तर न मिला जब गुरुजीने-ज्ञानकला घट जागीरे, सुमतासखी घट आन वसी जब-इंढपंथ दिया त्यागीरे, आ० ९ धर्मित्ररोमणि देसमनोहर-गूर्ज्ञरभूमि रसालीरे, आ० १० परमक्यों उपकार तुमे बहु-श्रीगुरु आतमरायारे, जयवंता वर्तो आभरते-दिनदिन तेज सवायारे, आ० ११ दुषमकालसमे गुरुजी तुमे-बचनदीवडा दीधारे, शांतिविजय कहे जेथी हमारा-विषमकाम पण सिधारे आ० १२

(गहूली चतुर्थी.)

(इसमेंभी उक्तमहाराजका जीवनचरित-शेष है.)

आजनगरमें सुगुरु पधार्या-रत्नत्रयीना धारीरे, ब्रान अपूरवदान दइने-जडता द्र निवारीरे, आ० १ संवत ओगणीसे बत्तीसे-राजनगर मोझाररे, संयमिलया सुविहितगुरुपासे-सोलह शिष्य परिवाररे, आ० २ चरणकरण गुणधार अनुपम-श्रीगुरु आतमरामरे, जिनशासन शिंगार महाम्रुनि-तत्वरमणनां धामरे, आ० ३ नयगम भंग प्रमाण करीने-जीवादिकतुं स्वरुपरे, ध्रुव उत्पात नाश्यी गुरुने-जाण्युं निखिल अनुपरे, आ० ४ जाण्या द्रव्यगुणपर्याय-धर्माधर्म आकाशरे, पुदगलकाल अने वली चेतन−नित्यानित्य प्रकाशरे, সা০ ५ परम कर्यो उपकार तुमे गुरु-दुर्मत दुर नसायारे, जयजयकार थयो जिनशासन-आनंद अधिक सवायारे,

गुरुभक्तिपर-गहूळी-पद-और-छंद. (५)

जो न होत आ वखत तुमारा-वचन दीवडा रुडारे, तो दुषम अंधारी राते-लेत अमे मत कुडारे, आ० ७ विद्यानी वधती करवामां-जेहना विविध विचाररे, ये गुरुना उपकार कहो किम-भूले आ संसाररे, आ० ८ देस बहु विचरो गुरुराया-क्रोडकरो थुभ कामरे, अंतरघटमां शांतिविजय-पण राखेळे दढहामरे, आ० ९

[गहुली-पांचवी,]

(भवीतुमे अष्टमीतिाथ सेवोरे-इसचालपर.)

रहोगुरु राजनगर चोमासुरे-गुणनिधि गुण तुमारा गास्युं-रहोगुरु, तमे रागथी नही रंगायारे-नहीं द्वेषरिप्रथी बंधायारे, महामोहथी नाही रंगाया-रहोगुरु. 8 धनमाल अने राजधानीर-महासंकट आकर जानीरे, तुमे छोडी दुनिया दिवानी-रहोगुरु. पांच इंद्री सुभटथी सुरारे-आलसविकथाथी दुरारे, वार चौर किया चकचुरा-रहोगुरु. 3 क्षानदोरीथी मनकपि बांध्युंरे-तीर तत्व रमणतामां साध्युंरे, षेथी समाकित अद्भूत लाध्युं−रहोगुरु. S गुरु विद्यावेलडीये विटायारे-जेनी कल्पतरुसम कायारे, एतो समता जलथी सिंचाया-रहोगुरु Ę तुमे शास्त्रसुधारस पिधोरे-महामोहरिषु वश किथोरे, तुमे अनुभव प्पालो पिधो-रहोगुरु. ξ तुमे ज्ञानरतनमंडाररे-करवा हमपर उपकाररे,

(६) गुरुभक्तिपर-गहुळी-पद-और-छंद.

याजो नोधाराना आधार-रहोगुरु. ७ तम आणा सदा शिर धरस्युंरे-तपनियमविशेषे करस्युंरे, कहे शांतिविजय अनुसरस्युं-रहोगुरु. ८

- CERTERIO

(गुरुभक्तिपर-पद-झीझोंटीकी दुमरी,)

विद्यासागर-न्यायरत्नश्री-शांतिविजय महाराज मुनि है, वि, मिथ्यामतज्वर दूर करनकों-बानी अमृतरसमधुर ध्विन है, वि, १ भविजनके हितकारक तारक-तुम कीर्त्ति विख्यात मुनिहै, वि, २ दशपुरनगरमध्य चौमासो-भाग्य भलो और शुभकरनीहै, वि, ३ नरनारी मिल चरनकमलयुग-सेवो ये गुरु ज्ञानगुनीहै, वि, ४ सोभाचंदवंदित प्रमुदितचित-मेरे तो अब आप धनीहै, वि, ५

(तीर्थकर महावीरस्वामीके जन्महोनेपर,-)(सिद्धार्थराजाकेघर खुत्रीकी निन्नानी,)

[हरिगीत छंद.]

श्रीवर्दमान जिनेंद्रजन्में-हर्षवाढों अतिमही,
सिद्धार्थराजाके अवनमें-न्यात सब भेली भइ,
परिवारके सब पुरुषनारी-मुदितमन तहां आइयां,
सिद्धार्थराजा स्वतः उनकों-थाल भरभर लाइयां,
सब न्यात मिल्ल भोजन करे-आनंदभर धन ते घडी,
बहु कुळवधुमिल धवलमंगल-गीतगान करे खडी,
शुभ नालियरकी गिरी केंला-दाख नारंगी भली,

ξ,

3441644-4861-46-414-86. (S)	गुरुभक्तिपर-गहर	ही-पद-और-छंद.	(9)
-------------------------------	-----------------	---------------	-----	---

www.commonorman	
अंगूर जामन जामफल-दाडम अऌ्चा आमली,	२,
ळोकाट आम अनार आडु-सेंव सरदा फाळसा,	
केमर कसेरु नासपाती-बीइ कमरस कल्ररसा,	
नीं बु खजूर अंजीर खिन्नी-सुरस पौंदा आमला,	
चकतर सरीफा वौंर आदिक–हरितमेंवा मन रला,	₹,
बादाम पिस्ते दा ख खारक–वेळ चारोळी मळी,	
अखरोट खुरमा खोपरा–चिलगोजिया मूंगीफली,	
इत्यादि बहुविध खुक्कमेवा-अवसुनो भोजन सही,	
अतिमिष्ट मोतीचूर लाइ-मगद मोदक मूंगही,	8,
मोदकमनोहर सिंहकेशरी–सरस नुक्ती पाकके,	
तिलके सकरके केल मोदक-आम्ररस अरु दाखके,	
वर्फी जलेवी सूत्रफेणी–शकरपारा इमरती,	
पेडा गिंदोडा लालजामन–कलाकंद भला अति	۹,
सजला मुहाल खजूर मठडी−बाऌसाही रेवडी,	
कौजात मोहनभोग सीरा-ल्हापसी मीठी वडी,	
पूरी कचौरी दालवाटी–वेंडवी खस्ता छची,	
मांडे परोंठे दालचावल−स्वीरपूवा मनरुची,	€,
चीले पकोडे गुलगुले-माखन मलीदा चूरमा,	
मीठी कढी अरु चर्चरी-इत्यादि भोजन सब जमा,	
पापड चणेकीदाल भुंजी-सेंव खटरस पापरी,	
षहुविध चवीणा दहीं ताजी-नमक जीरासें भरी,	৩,
परवाल चौले सुहजने–सांगरवगेराकी फली,	
मटरा करेला बाकली-कचरी कचारेकी कली,	
सीरा करोंदा आल कोंला-खेलरा ककडी तुरी,	
मिरची हरी मेंथी खरी-भिंडी वगेरा बहुहरी,	۷,

नींबुके रसयुत बहुपदारथ-बडे नानादालके, चौंले चनेकी मृंगकी-पीठीके नानाचालके, कर्पुर अगर इलायची-इत्यादि मिश्रितजल सरस, मिश्रीमें मिश्रितकेवडा-अरु दुग्ध उपजे मनहरस, तंबोल पानइलायची-बादाममिश्रित छालिया, केश्वर जवत्री जायफल-कर्पूर लवंग कथा लिया, धर वर्क सोनेमें लपेटे-हाथ सबकेमें दिया. चंपा चमेली जुही मेंहदी-केवडा नीका लिया, र्गेंदा गुळाव सिंगार मरवा−मदनसर शुभ मोगरा, नानाप्रकार सुगंध ले-सन्मान बहुजनका करा, सेले दुपट्टे रेशमी-पघडी कलाबतूनकी, जरके बनाये वस्न बहु-और-कोर साची उनकी, ११. सब नारियोंकों जरी साडी-कांचली अरु औहना, बहुमूल्य वस्त्रदिये-किया सत्कार आदर बहुचना, सिद्धार्थेन्य महावीरस्वामीके-पिता जग यश स्त्रिया, श्वांतिविजय कहे विवुध पुरजन-सबनकों राजी किया,



७ः [−जिनाय नमः−]

[जैन–तीर्थ–गाइड,]

(उर्दूमें,)

(जैन-जियारत-गाह.)

🖙 [इबादत.]

(जिनगुण-स्तुति-सवैया-अष्टकौनपदाकार दुमलछंद.)

करुनाकर दिनदयालप्रभु-तुमरे पदपंकजका सरना, सरनागतराखनहारविभु-गुनिसंधु अपारकहा बरना, बरनागरइंद्रकरेमहिमा-मुनिध्यायभवांबुधिको तरना, तरना भवसागर चाहतहुं-हमरायहकाज तुमे करना,

ि बीचवयान—तारीफ—मुनिमहाराजोंकी,] जिनके धरध्यान सुजानभये—सुखदेखत लोचनकों मनकों, जिनके सुनवेन सुचैनबधे—परमानिकये प्रभुता जिनकों, जिनके पग लाग सुभागभये—बलीरुपसुपुष्ट करे तनकों, तिनसाधु-यति-मुनिकोंप्रणमुं—गुनगायलहु धिखणाधनकों, चाहत जीवसभी जगजीवन—देहसमान कळुनहीप्यारो, संयमवंत मुनीश्वरकों उपसर्गपडे तन नासन हारो, त्युं चित्रवें हम आतमराम—अखंड अवाधत ज्ञान हमारो, देह अचेतन सो हमतो नही—सत्यचिदानंदरुप हमारो.

(रहम करना जीवोंपर,)

करना जिनशासन मूलकही—सबिह गुन आयिमले दुरके, मिल संघ बनी शिवराहचले—मगमांहि घने पुरहे सुरके, जिनकेतक राहरमें पुरमें—शिवजे पहुचे—न—चले मुरके, सुरते पुर फेरलहे शिवकों—इसभातसु बैन सुने गुरुके,

(दोहा.)

धर्म करत संसार सुख-धर्म करत निर्वान, धर्म पंथ साधन बिना-नर तिरियंच समान,

🕦 (शुरुआत-किताव.)

तीर्थें में फिरनेसें आदमिक इरादे पाक होते है. और अग्रुभ क-में की निर्जराहोती है, आदमिका चौला पाकर जो शख्श तीर्थों की जियारतकों नहीं जाते हैं — वे — धर्म के बड़े हिस्से सें अवतक खारिज है ऐसा कहना को इहर्जनही. बहुतरी जसें हमाराइरादाथा कि — जैन श्वेतां बर तीर्थों की को इकिताब ऐसीतयारक रे जिसके जरीये आमजैन श्वेतां बर फिरके कों फायदापहुंचे. दुनिया में जहारी लोग जवाहिरातकों बेचते है और सोनहार — गेहने — जेवरको — को इ शाल दुशाले कों और को इ खासेमलमलकों कोइवादामपीस्ते औरकोइ इतरफुलेलकोंबेचरहेहै. हम सीर्फ वत्तीसहर्फोंके मसालोंसे अपनाकामचलातेहे, शिवायव-तीसहर्फोंके हमारेपास दूसराकुछनही. गोया! वत्तीसहर्फ हमारा एकमेगजीनहै, अगर तुम मुल्कोंकी सफर और जैनश्वेतांवरतीर्थोंकी जियारतकरनाचाहतेहो नो एकदफे इसकितावकों पहलो, और वन पटेतो शाथरखलो.

१९व्हि [हिदायत-उल-आम.]

सफरकरना दोतरहसेंहोसकताहै, एकतिजारतकेलिये दूसरा ती-र्थोकीजियारतकेलिये, जोशस्त्रा दुनियाकेधंदोसे छुटकर तीर्थोकीस-फरकों जाताहै उसकी हजारहजारतारीफकरो, औरतुमभी तीर्थोकी सफरजानेकीकोशिशकरो, जिससें तुमारी जींदगीपाकहो. जब सफ-रकोंजाओ इतनीवार्ते वहांकी जरुर नोट करिलया करो, उसम्रुल्कमें कौनसाशहर मशहूरहै. ? अमलदारी किसकीहै ? इस्म कैसाहै ? मशहरचीनें कौनकौनसीहै ? आवहवा वहांकीकैसी और आदमीयों-का दिल धर्मपर कितनारजुहै ? कोइपुरानाशिलालेख दिखपडे ज-हरउसकीनकल करलो, नदी-तलाव-बागवगीचे-पुरानेदेवालय-धर्मशाला-कोटकिला-बाजार और रोजगारकीतरकीकैसीहै, ? पते-वार उसका वयानलिखलो,-ये-सववातें तुमकों सफरकरनेसें वखुं-बी मालूमहोसकेगी, कइमुल्कोंकी ताहसीरगर्महै, और कइयोंकी शर्द, कइमुल्कोंमें मेवेके गंजलगेहै, कइयोमें नामिनशानभी नहीं. गां-वकेलोग शहरका रहना-और-शहरकेलोग गांवकारहना-नापसंद करेगें-पहाडीलोग पहाडमें और जंगली जंगलमें खुशहै, कौनसा-शहरवडाहै और कौनसाछोटाहै ? वहांके वाशिंदे कैसेहै, ? इनवा-तोंकों असलीतोरसें जभीं जानसकोगे जबतुम खुदसफरकों निकलोगे,

(दोहा.)

सेतसेत सबएकसे-जहां कपूर कपास.
ऐसे देश कुदेशमें-कबहु-न-किज बास, १,
कोकिल बायस एकसम-पंडित मूरल एक,
इंद्रायन दाडिम विषय-जहां-न-नेक विवेक. २,
बासेय ऐसे देश नहि-कनक शृष्ट जो होय,
रहिये तो दुख पाइये-प्राण दिजिये खोय, ३,

कइमुल्क ऐसेहै जहां वेंशुमार पहाड और नदीयां है औरकड़ ऐसेहै जहां पानीकेविद्न लोगहमेशांतगहे, कइमुल्कोंकेलोग अपनी औरतोंको पर्दानसीनरखते है, औरकइ सरेवाजार शायलेकर फिरतेहै, जोशख्श जिसमुल्कमंरहता हो उसको उसीमुल्कका रवाज अछामाल्यदेगा, चाहे कोइ कैसाही उमदाखाना और पुशाकसामने लावे. मगर जोशख्श जिसमुल्ककाहै उसकों अपनेही मुल्कका खान्यान और पुशाकउमदा माल्यदेगा. – कइमुल्कोंमें मुनाजवाहिरात-की खाने मीजूदहै कइयोमें – ये – चीजे – ख्वावमेंभी नहीदिखपडती. इसीसेकहाजाताहै विनासफर मुल्कोंकीिकये कुछभी मालूम नहीहों शकता. किसी होशियार शेयरवनानेवालोंने लिखाहै — "सफर कंजी दौलतका है, –"

दुनियामें पैदाहोकर जितनावनपडे धर्मकरो, औरइसकों अप-नाअसली दोस्त समझो ख्वाबमेंभी इसकों मतभूलो, आदमीका चौला बारबार नहीमिलता, जब तुमारे मकानपर खुशीके नकारे बजेगें सबलोग हाजिररहेगें, औरजब रंज-और दिलगिरी नियामत होगी, कोइपासतक-न-आयगा, इसीसे कहाजाताहै दुनिया मत- खबकी गरजीहै, धनदौलत एकरीज छोडजानाहै जितनाथर्मकरोगे तुमारेशाथचलेगा, धर्मात्मा-रहमदिल-और खुशमिजाज आदमी हजारोमें एकमिलेगा. थोडीमुसाफरीकेलियेभी कितनाबंदोबस्तकर-तेहो. वडीमुसाफरीका छुउबंदोबस्त नहीकिया इसकी क्यावजहहै ? बदौलतधर्मकी यहांचैनपाया. औरआइंदेभी इसीकी बदौलतपाओगे. दौलत बहुतमिली-औरमिलेगी लाखहांरू अथे आयेगये लेकिन! खजानेमें कुछ-न-रहा, इसकासौच मतकरो, जितनेरूपये तुमारेधर्ममें खर्चिक्येगये उसीकों उमदासमझो, अपनेधरकाभेद औरदिलकाइरादा किसीकेसामने बयानमतकरो, आजकल दुनियामें ज्र-और-फरेब ज्यादह चलपडा है,

हिंदुस्थानमें इसवस्त अमलदारी अंग्रेजसरकारकी-और इसमें
गुलजार रजवाडेकइहै. कइवहृतवडे औरकइ छोटेछोटेभी है, हैद्राबाद दखन-बडोदा-लशकर गवालियर-इंदोर-महीशूर-काक्षिरकोलापुर-जोधपुर-विकानर-जयपुर-उदयपुर-भोपाल-जामनगर-भरतपुर-भावनगर-पिट्याला-झींद-नाभा-कपूरथला-बहाबलपुर-फरीदकोट-शीरमीर-मलेरकोट-अलवर-रामपुर-जुनागढ
बगेरा बगेरा, तुम कौनकौन मुल्ककी सफरकरना चाहतेहो ? रैल
सवारीसे जाओगे-या-जहाजकेजरीये ? व-जरीये रैलके जाना है
तो-रास्तेमें कहांकहां रैलबदलेगी इसकीतलाश करलो, अगरअंग्रेजी
इल्पजानतेहो-तो-टाइमटेबल किताब साथ रखलो, कौन कौनसी
जगह जैनन्वेतांवरतीर्थ है-और-इसजमानेमें उनके क्याक्या नाम
मशहूरहै ? खानपानकी चीजें वहां मिलतीहै-या-नही. ? इनबातोंकी माहितीमिलालो, रास्तेका हाल माल्म-न-होनेपरकइतीर्थोंकी
जियारत रहजातीहै और घर आकर निहायतरंज उठानापढताहैकि
क्राक्षों फलांफलां तीर्थोंकी जियारत-न हुइ, अगरइसकिताबकों

शाथरखकर हरवष्टतदेखतेरहोगे तो हमउभेदकरते है कोइमुकामात तीर्थीकाबाकी-न-रहेगा.

जहांतकवने सफरमें ज्यादहअसवाव शाथ मतरखो. ज्यादहअसवाव शाथरखनेसें रैलमें चढती उत्तरतीव ख्त निहायततकली फ
होगी. इसलिये जरुरीची जेंही शाथमें रखो. रास्तेमें ऐसे गांवभी मिलेंगे जहां खानपानकी चीज विलक्कल न न मीलसकेगी, अगरमिलेगी
तोभी तबीयतसे मुखालिक! इसलिये रसोइ बनानेके हलके हलके
बर्तनभी शाथरखलो, भारी वर्तनोका बोझा कहां कहां उठाये फिरोगे?
थाली न लोटा न गिलास न कटोरी न तबाह न कुर्छी न चमचा न चिमटा न कटोरदान और चीकेलिये सकडे मुंहका डिब्बा शाथलो! तािक न रास्तेमें
न घी न गिरनेकी दिकत न नहीं, हरजगह उमदा न घी न हीि मिलसकता,
अगरपानखानेकी आदतहैं न तो न पानदानभी शाथलेलो! मुल्कपूरवके
लोग पान जियादह खायाकरतेहैं, गुजरातमे इसकारवाज कमहै,
मगरजिनकों जिसबातकी आदतहैं न कव न लेडिसकतेहैं, एकलालटेन
न गोल न करशाथरखलो न जो चेलगाडी की सफरमें - और - मकानमें रातकों जलानेकेलिये कामदेवे.

कागज-कल्म-द्वात-कार्ड-लिफाफे-चीठीपत्रीकेलिये हरव-स्त्राथरखो. -न-माल्म किसमौकेपरकाम-आवे, चक्क-कतरनी-और-एकताला इसलिये शाथरखोकि-जब-कहींठहरनापडे-तो-ब-हारजानेके वस्त्त मकानमें असवाव धरकर लगादियाजाय, पानी खींचनेकों डोरी खूब लंबी-और-मजबूत हलकेबजनकी पासरखो, बाजेबाजेकुवोंमें पानी बहुतनीचेरहताहै, पानीछाननेकेलिये छलना-भी शाथरखनाजस्रीहै, जोजोलोग जलछानकर नहीपीते उनकों तरहतरहकी बीमारी पैदाहोतीहै. जलभे बारीक जीवोकी हिंसाकाभी इससे बचावहोगा, रसोहमेभी जल छानकर लगानाचाहिये.

सफरमें आटा-ढाल-चावल-निमक-मीरच-चीनीवगेराभरनेके **लिये कुछ थेलियांभी ज्ञाथरखलो ! वाजेव**रूत कामदेगी, रास्तेमें मसालाक्टना साफकरना मुश्किलहोगा, इसलिये कुट-लानकर त-यारकरके पासरखळो. मोकेपर वडाकामदेगा. मुसाफरीमे कचापका खानाभी खानापडताहै, इसलिये कुछचूरन-और-दस्तावर दवाइये साथलेलो, सर्दहवामें स्नानकरनेसे सर्दी होनेकाभी खौफरहताहै,. इसलिये कुछ-चाय-जायफल-जवत्री-लौंग-सोंठ-पीपल-वदाम-टालचीनी-वर्गराचीजें पासरखो. जिससेसर्दी रफाहोकर तबीयत दुरुस्तहोसकेगी.सुइडोराभी वाजेवख्तकपडेंसीडनेकों साथलेलो. क-मसेकम चारपांचजोडेकपडोंके जरुरपासरखनाचाहिये, क्योंकि-शि-वायवडेशहरोंके कपडाधुळवानेका मैंकानहीमिळसकेगा, मैळेकपडे-वालोंकी इज्जतनहीहोती. तुमने सुनाभी होगाकि-"एकनूर आ-दमी हजारनूर कपडा "-शतरंज-गालिचे-या-दरीवगेराचीजें म्रुताविकहेसीयतकेजरुर शाथलेनाचाहिये. जवकहींठहरनेकामौका− हो-तो-उसकों जमीनपरवीछाकर उसकेउपर असवावरखाजाय और चलो जब उसमें विस्तरबांधिलयाजाय, ताकि-विस्तरमैला-न-हो. विस्तरबांधनेकीरसीभी भूळनानहीचाहिये, इसकेविद्न सबकामरुक जायगा.-दोतीनजोडे मृतीमौजेकिभी जरुरशाथरखलो, याते पहाड चढते उतरते पहेनिलियेजाय. जिससे पांवजलेनहीं, और कंकरपथ्थ-र्भा पांवकों चुभेनही, नंगेपांवचलनेसें तलवोंमें लालेपडजातेहै, और मन्जमें गर्मीपहुचतीहै, दूसरेरौज मारेतकळीफकेकहोगे हमसें यात्रा -न-होगी, इसलिये अवलसे होशियार रहना चाहिये.

हरमर्द्कों -दो-या-तीन घोती और दो-दुपटेपाक रखनाचा-हियें. जो देवदर्शन -या-पूजनकेबख्त कामदे, औरतकेलियेभी दो--लेहंगे साफरखनाजहरी है, पूजनकेबख्त पहननेकों कामदेगें, और-

तके लिये जब रितुधर्म-अयाम आवे-तो-तीनरीज अलगरहे, द-र्शनपूजन-न-करे, चौथेरीज पाकहोकर दूरसेंदर्शनकरे. अगर ठह-रनेकेलिये फुरसतहो-तो-सातवेरोज पूजनभी होसकेगी पूजनके **छिये छोटीछोटी रकावियां-और-जापकरनेको मा**छाभी<mark>काथरखो</mark>, केशर–कपूर-धृप–चावल-–वर्क-–चांदीसौनेके और वढीयाइतरभी देवपूजनकेलिये शाथलेलो. अगरतुम कितावपढना जानतेहोतो--स्तोत्रपाठ-या-स्तवनावली वगेरा-या-जैनश्वेतांवर तीर्थगाइड--शाथमें-लेलो. तीर्थोंमें-जाकर गप्पकरनेकानाम जियारतनही है. तीर्थों में ऐसे स्तोत्र औरस्तवनपढना चाहिये जिससें दिलपर देवगुरु धर्मकेलिये पावंदीवढे, खैलतमाशेकी किताव-या-शतरंज-गंजीफा वगेराशाथरखना कोइजरुरतनहीं, तमाम उमर खेळतमासोमंगुजरी, तीर्थमंजाकर देवदर्शनमं-और-पूजनमं-मशगुलरहो. खैलकोंबंदकरो, और तीर्थभूमिमेवेटकर ध्यानकरो.-अगर-ज्ञानचौसर खैलनाजान-तेहोतो-बेशक! खैलो, क्यौंकि-उसमें कोइवात पापकर्मकेबढानेकी नही, बल्कि ! धर्मपावंदीकीबातहै, -- जितनेदिन तीर्थयात्रामें छगे--सामायिक-प्रतिक्रमणहमेशां करतेरहो. अगर उक्तकार्य-न-वनशके. तो-नमस्कारमंत्रकी एकदो-माला-जरुरफेरो,-गप्पकरनाठीकनही. कइवर्सीमें जियारतकों चले-औरिफर-उसमेंभी वहीहालरखोगे तु-मारीजियारत फिजहुलहोगी, देखिये ! पेस्तरके श्रावक पैदलचल कर-जियारतकरतेथे, रास्तेमें ब्रह्मचर्यपालतेथे, दिनमें एकहीद्फे खानाखातेथे. सचित्तचीजें नहीखातेथे,-औरजमीनपरसोतेथे, आज षसबब रैलसवारीके इतनाभी बनजायतो गनीमत है,

कुछदोअनी -चोअनी-और-पैसेवगेराभीशाथ रखलो, जो तीर्थयात्रामें-अंधे-लुले-लंगडे-और-रोटीयोके मोहताजोकों खैरात केलिये कामदेगा, तीर्थकरदेवभी वार्षिकदान अनुकंपासेदेतेहैं, अनु कंपादान तीर्थंकरदेवोन किसीशास्त्रमें मनानहीफरमाया, जोलेगफ-रमाते है अनुकंपादानदेना ठीकनही उनकीभूलहै. दुस्तीको देखकर जिसकेदिलमें रहमनहीआइ उसकोधर्मीकौनकहसकताहै.? यात्रामें हरवस्त एक कडा-या-अंगुठीहाथमें-जरुरपहनलो. गेरपुल्कमें कभी अकेळेरहजानेके वरूत-या-चौरीहोजानेपर इसकों वेचनेसें कामच-लेगा, बरना ! ऐसीहालतमें वडीतकलीफ उठानापडेगी, किसकि-संकेशस मांगनेजाओंगे. आजकल रुपये पैसे उद्धारदेना वहुतसेंलोग परहेजकरते है,-जियारत जानातोजहांतक वनपडे इद्वंबकों और रिस्तेटारोंकोंभी शाथलेनाचाहिये. अगर उतनीताकात-न-होतो अपनीऔरत-और-आपदोनोजाना मुनासिव है. अगर उतनीभी ताकात-न-होतो-अकेलेही चलेजानाठीकहै, मगर ऐसानहीकरना कि-आजसेंकल-और-कलसेंपरसो इसतरह सुस्तीमें दिनगुजरतें जाय, कइलोग इसखयालमेंभी रहतेहैंकि-हम-पेस्तर दोलतमंद थे और अब गरीवहोगये,-अगर विनानोकरचाकरके अकेले चलेजाय तो-हमारीइज्जत-न-रहेगी, तो-यहएक आलादर्जेकी भूलहै, इज्जत केलिये धर्मको खोनावहेत्तर्नही. अकेलेही चलेजाना, मगरइज्जत-कावहानालेकर तीर्थयात्राको छोडनाठीकनही. जो-कामधर्मकाकर लिया वहीअपनाहै, अगरतुम खुद्कंजुस वनकर दौलतखर्चकरना नहीचाहते-उसकातो कोइइलाजही नहीं है,—

मारवाद-और मुल्कपूरवके जैनश्वेतांवरश्रावक-जोकि-अपनी औरतोंकों पर्दानसीनरखतेहैं, यात्रामें नौकरचाकर दासदासीका ख-चांउठाना ताकातनही-और-उनकों पर्देहीपर्देमें उमरवतीतकरादेना कोइ अकलमंदीकीवातनहीं, तीर्थोंमें देवमंदिरोंमें ओर व्याख्यानस-भामे पर्दारखना गोया! देवगुरुधर्मकी वेंअद्बीकरनाहै, देखों! ती-धंकरोके समवसरणमें वडेवडेळत्रपतिराजाओंकीरानीयेभीखडीरहती- थी, तुमिकसिंगनतीमें हो ? देवमंदिरमें – रागरागनीके शाथ पूजनहो रही है – और - औरतोके लिये मंदिरमें कपडे कापदी लगाहुवाहे, कि हिये ! यह कि सधर्मशास्त्रका पाठहे, ? व्याख्यानसभामें गुरुमहाराज धर्मशा-स्रमुनारहे है और – औरतोके लिये वहां भी आधेमकानमें कपडे कापदी लगाहुवाहे, वतलाइये ! यह कि सधर्मशास्त्रका हुक महे, ? हरश ख्शकों लाजिमहे तीर्थयात्रामें - देवमंदिरमें और व्याख्यानसभामें पर्दा-न-रखे, मई औरत यात्राके लिये चले जाय, कि सीकी राह – न – देखे, व ख्तआ-खीरा नजदीक चलाआताहे, तीन हिस्सा उमर्जीतगइ, न – माल्म डे हरा कि सवख्त कुच हो जायगा, सुस्तीरफाकरों और तीर्थयात्रामें चलने की तयारीकरों, असलमें जोलोग वखील है पैसाखर्चना आ-लाद जे की तकली फसमझते है उनकों को इसमझान ही सकता. दिल के दले रहे – वे – अपना खर्ची देकर दुसरों कों भी शायले जाते है, यहां जिसपर एह सानकरों अगले जनमें वह – तुमपर – एह सानकरेगा, –

अगर तुम दौलतमंद्दो-तो-रैलमे सेकंडक्लास-या-इंटरक्ला-सकी टिकीटलो, मगर सुमोकों इतना खर्चकरना मुक्किलहोगा. बक्के! कहेगे नाहक! खर्चक्योंकरना,? रास्तेमें किसीअनजानश-ख्वाके हाथका पान-या-खानामतखाओ, कङ्लोग अमीरोंके लि-बासमें बनेरहतेहैं, और नसीलीज खिलाकर गाफिलकरदेते हैं, और फिरमजेमें उनके मालअसवावकों लेकर रफुचकरवनतेहैं, जिमने अ-बतक मुसाफरी किइनहीं, दुकानके गादीतकीयोंपरवेठकर पानवीडी खातेरहेहों, सफरमेंबहुतहों शियारीरखनाचाहिये. अगरसफरमें तु-मारेपास ज्यादहअसवाबहै—तो—उसका बंडलवनाकर तुलवालों, और टेशनपर पारसलबाबुकी सुपुर्दकरदों, अपना टीकीट उनकों दिखा कर तीसरेदर्जेका पनरासेर—ड्योढेदर्जेका वीससेर और सेकंडक्ला-सका चालीससेर बादकरके बाकीकाकिरायादेहों, और रसीद उनसे लेलो, जहांनाकर उतरनाहो-वहां-वहरसीट दिखलाकर अपनाअसवाव, अगर ब्रीकमें दियाहो तो नार्ड-या-टेशनमास्तरसे मिलकर
छोडालो - अगरशाथरखाहोतो कुलीकेपास उठवाकर मुसाफिरखानेमें लेनाओ, मगर कुलीका नंबर देखिलयाकरो, याते चौरीजानेका
खौफ-न-रहे, - अगर किसीशहरसें-या-रास्तेमें कुछअसवाबखरीटो
- और-अगर-वहवहुतहें-तो-एकसंदुकमे वंदकरके वजरीये रैलमालमें - या - पारसलमें - जिसमें किराया कमलगे, घरकोंभेज
दो. अगर थोडा भेजनाहो-तो-डाकखानेमें थोडामेहमूल लगताजानो
डाककेनरीये पारसलवनाकर भेजदो. ताकि-रास्तेमें उठायेउठायेन-फिरनापडे, - न-खोयेजाने-या-इटने फुटनेका खौफरहे, अगर
किसीमुकामपर घरसे खबर मंगानाहो-तो-लिखभेजो, फलानेशहरके
डाकखानेमें यहचीटी जमारहे, जबफलानेनामका शख्श फलानाशहरकारहनेवाला आवेतो उसे मिले. उसडाकखानेसें अपनानामवतलाकर अपनी चीठी मांगलो.

अगर तुमको गानेवजानेका शौखह - और - सितार - सारंगी-या हारमोनियम वजाना जानतेहो - तो - उसकों भी शायलेजाओ. तीर्थों में जिनेंद्रोंकी तारीफ केपदगाना, और अपने आत्माकों अनित्य - अशर णभावनासे भावितकरना - जिससे आहंदे अपनाभलाहो. अगर पहा- हपरचहकर दूरदूरके मकानों की शैरकरना चाहतेहो - तो - एकदूरबीन भी साथलेते जाओ, अगर फोटोउतारना जानतेहोतो - फोटोका केमरा भीशायलेलो. औरतीर्थों के फोटोउतारले आओ. तीर्थ भूमिमें कोश दो - कोश - या - जंगलमें को इमंदिरहो - उसके दर्शनभी जरुरकर लिया करो, थोडी दूरके दर्शन लोडकर जवघर आओंगे इसवातपर रंजहोगा कि - हमने थोडी सी जगह के लिये तीर्थ के दर्शन हो किये. और घर चले आये. तावे उमरघरही वैठेरहनाहै, तीर्थ में जाकर जल्दी करना ठीक

नहीं. जियारतमें धर्मकामकेलिये चलेहो किसीशहरमें जाकर इक्क-बार्जामें मतपडना, कितनेकऐसर्भाहिकि-तीर्थयात्रामें जाकर ऐंशकरते हैं, और इवादतकों बरवादकरतेहैं, तीर्थमें जाकरभी इक्कशैतानीकों— —न—छोडातोक्याछोडा ?—कितनेक ऐसेभी है—जो—तोर्थोमें—औरदेव मंदिरोंमें दर्शनकरतेहुवेभी औरतकेशाथ मोहब्बतकी वातेकरतेरहते हैं, धर्मशास्त्रफरमाताहै इनवातोंसें तीर्थोमेंपरहेजकरों, तीर्थयात्रामेंधर्मकों खललपहुचानेवाला कामकरनागोया! अपनीतकदीरकों हारजानाह,

पहाडपर जियारतकेलिये पैदलजाना हत्दूल–मकदूर–बहुतवेह-त्तरहै, अगरचलनेकी ताकात-न-हो-तो-डोलीमेंबेठकर जानाभी-कोइहर्जनही. मगरडोलिकेलिये इंतजाम पेस्तरसेंकरलेनाचाहिये, याते चळनेकेवरुत देरी-न-हो, केशर-चंदन-धूप-फळ-फुळ-बादाम--सोपारी-चावल-मेवा--मिठाइ--इतर--वर्क-सानेचांदीक-औरकुछ रुपयेपेसे सवसामान पूजाकातयाररखो, यात्राकेरौज वहुतशुभहजल्दी सेउठो, और उमदाकपडेपहेनकर दर्शनोंकोंजाओ. मेलेकपडेपहेनकर जाना देवकी वेअद्वी करनाहै, नौकर-चाकरकों-और अपनेदोस्त-कोंभी अगरबनपडेतो पूजनशीसामग्री अपनेपैसोसें खरीदकरकेदो, पहाडपरजातेवस्त रुपया–महोर–नोट वगेराजोकुछ जोखमकीचीज हो-अपनीकमरकों वांधकर शाथलेतेजाओ. ताकि-दिलकोंतसल्लीरहे. औरदेवदर्शनमें फिक्रपेदा-न-हो.-कितनेकएसेभीश्रष्शहै-जोकदीमसें बखील-बहेमी-और ख्वाबमेंभी रुपये पैसे याद्करतेरहतेहै, फिरइबा-दतमें कैसेमशगूलरहेगें पासरहनेसें वेंफिक्री-औरतीर्थयात्रा वखूबीअदा होगी. इसीलिये हिदायतदिइगइहैकि-होशियाररहो, अगरिकसीकेव-दनमेंकमताकातहोनेके सबब—मलमूत्रकीहाजत बनीरहतीहो--तो-दो चावलभर अफीमखाकर पहाडकोंचलो, रास्तेमेंमजेसें चलसकोगे. मगर ऐसामतकरनाकि-ज्यादहअफीमखाकर नशेमेंगाफिलवनजाओ. हां ! जो खुदअफीमची है उसकेलिये ज्यादहखानाभी कोइहर्जनही,-

जव जियारतकी जगहपहुचनाओं सिरझकाकर सिजदा करो. और इवादतकरोकि-युक्रहे आजकारोज जोग्रुने कमनसीवकों इसती-र्थकी जियारत नियामतहुइ, तीर्थीकीमीटी सीरकोळगनेसें तुमारेबुरे कर्मीकी रजअलगहोगी. तीर्थोंमें फिरनेसें तुमारा चौरासीलाखनीव योनिमें फिरना कमहोगा, औरमोक्षकारास्ता हासि बढोगा, पूजत-गीत-गान-नाचयुजरा जोतुमसेवने तीर्थोंमें धर्मकेकामकरो. तीर्थया-त्रामें पदीमतरखो, दिलकों बुरेइरादोसें बचाओ.-यहीअसलीपदीहैं, -मगरजोलोग दौलतकी गर्मीसें सरगर्महोरहेहे-वे-इसवातकों कत्रमा-नसकतेहैं, ? तीर्थयात्रामें जो-दुखीदरिद्री-वेठेरहतेहैं उनकोंभी कुछ-न-कुछ-देतेरहो, ऐसामतकरोकि-वे-तुमकों-अमीरसमझकरकुछस-वालकरे, और तुमचुपहोकर मुंहमोडते चलेजाओ, तीर्थमेंजाकर कमसें कम दोतीनयात्रा जरुरकरो, ऐसामतकरोकि-एकही-यात्राकरके दु-सरेरीज घरकींचलदिया. कइऐसेभीशम्बाहै-जो-मंदिरमेंगये-औरदो -चावलके दानें फेंककर चलेआये.-न इवादतिकइ-न-ध्यानिकया, और-न-पूजनिकया. सीर्फ ! देवकेसामनेगये औरचलेआये. मंदि-रोमेंजाकर श्रुकनानहीचाहिये, इससेट्वेकी वेंअद्वीहोतीहै, किसीमं-दिरकी दिवारपरअपनानामभी मतलिखो, खुशनसीवोंने उमदामंदिर वनवाये और तुमने अपनानामिलखकर उसमंदिरकीदिवारकों कालि करिंद्र, क्याम्ब्बढंगहै, ? तीर्थीमें पहाडोपर-या-चरणपादुकाकी जगह -सबजमीन-पाकसमझो. ऐसाशक मतलाओकि-क्या ! इसीजगह जहांकि-मंदिरवनाहै-तीर्थकरोंकानिर्वाणहुवाहोगा, गरजकि-तमामप-हाड और तीर्थभृषि पूज्यभृषि समझो, लाखोंकराडोंवर्सहोगये हमेशां वहीटोंक उसीजगहवनीरहीहै-ऐसाहट-भतकरो, शत्रुंजय-गिरनार-आबु-समेतशिखरवगेरातीर्थोंके नकशे-जो-छपेदुवेद्दोतेहै शाथरखो, ताकि-पहाडपरचढकर मालृमहोजायकि-यह-मंदिर इसतीर्थकरमहा-राजकाहै-यह अपृक महाराजका-है,-

७ड [कानुन−रैलवे,]

रैलसवारीमे तीसरेटर्जेका-किराया-पौनपैसेसे एकपैसा फीमीलत कहै, इंटरक्लासका किराया एकपैसेसे देहपैसा-फी-मील-सेकंडक्ला-सकाकिराया टो-पैसेसे तीनपेसे मील-और-फर्स्टक्लासका किराया –एकआनेसे देढआने मीलतकहै,–फर्स्ट-और-सेकंडक्लासके सोतेहुवे मसाफिरकों रैलकाकोइअप्सर-या-नोकर जगा-नहीसकता. तीन वर्ससें वारांवर्सतककेवच्चोंका किराया मआफहै, तीनवर्ससें वारांवर्स-तकके बच्चोंका किराया आघालियाजाताहै, बारांवर्सतकका लडका औरतकेशाथ जनानागाडीमें वेठसकताहै, इससेंज्यादहउपरका नहींबेंट सकता. रैलटेशनके भीतर प्लेटफोर्मपर गाडीआनेजानेकेवल्त कोइ जानाचाहे दोपैसेकी टिकीटप्लेटफार्मलेकर भीतरजासकताहे, रैलवेग्र-साफिरोंकों इसवातपर जरुरखयालरखना चाहियेकि-जब-टीकिट खरीदेतो-उसकोंपढळियाकरे. या-दूसरेसें पढालेवे, क्योंकि-टीकीटके जोदामदियेहोतेहैं-टीकीटपरलिखेरहतेहैं-उसकोंदेखलेनाचाहिये कि-गळतीसे दुसरेटेशनकाटीकीट-तो-नहीआगया.-चळतीहुइ रैळकाद-रवाजाखौलनेवाला मुसाफिर कानुनीमुजरीमहोताहै, और खुदकोंभी गिरजानेका खतराहै, जिसमुसाफिरने टीकीटखरीद छियाहो–और– रैंऌमेंबेठनेकीजगह−न−मिलनेकीवजहसेंउसमें−जा-न-सकेतो–वह-तीन घंटेकेभीतर टेशनमास्तरसे अपनाकिराया पीछालेमकताहै-या-उसके बाद जानेवालीगाडीमें जासकताहै. जिसदर्जेका टीकीटखरीदिकयाही उसदर्जेमें जगइ-न-हो-और-वहम्रसाफिर कमदर्जेमें भेजाजावे-तो -बाकीकेदाम रैलवालोंसे वापीस मीलसकताहै, अगरकमदर्जेका टी-कीटखरीदकर बडेदर्जेमेंजानाचाहे तो-बाकीके दाम देकर बडेदर्जेका नयादीकीट लेकरजासकताहै.

अगरकोइ मुसाफिर टीकीटखरीदकर सफरकरनेसें पेस्तर-बीमार होजाय-या-कोइ एसाअमरलाचारीहोकि--जिससेवहम्रसाफरी--न-करसंकेतो तुर्त-देशनमास्तरको इतिलादेवे, और देशनमास्तरकी तस-छीकरदेनेपर टेशनमास्तर उसका किराया वापीसदेसकताहै. जिसटे-शनकाटीकीटखरीदकर मुसाफिररेलमेंसवारहो-और-अगरउसीगाडीमें आगेजानाचाहे-तो-जासकर्ताह, छेकिन! मुकामीटेशनपहुचनेके पे-स्तररास्तेकेटेशनपर गार्डकोंकहदेना चाहिये, जिससे गार्डउसकोआगे काटीकीटखरीददेगा, जिसद्र्जेमंकोइग्रुसाफिर चलाजारहाहै-अगररा-स्तेमं वडेदजेंमेंजानाचाहे-तो-उससे उतरकरगार्डसेंइत्तिलादेवे, और वाकीकी सफरका वडेट्जेंके हिसाबसे दामदेवे-वडेट्जेंमेंजासकताहै, हरमुसाफिर (१००) मीलगयेबाद एकरौजरास्तेमें जहां-जी-चाहेठ-हरसकताहै, मसलन ! जिसने (२००) मीलतकका टीकीटलियाहो--वह-रास्तेमेंबाद (१००) मीलजानेके-एकरौज किसीटेशनपर ठहर सकताहै, और उसीटीकीटसें मुकामी-टेशनतक-जाशकताहे, ऐसान-हीकि-सोमीलगयेनही-और वीचमें एकदिनरहसके. इंटरकलासका मुसाफिर रें**टमें जगहकी गुंजाशहोनेपर थोडेसेफास**लेकेलिये डाकगा-डीमेंभी जासकताहै.

तीसरे दर्जिका ग्रुसाफिर अपनेशाथ अपनाविस्तर-या-असवाब कुछ (१५) सेर बजनतक लेजासकताहे. इंटरकलासका ग्रुसाफिर (२०) सेर-असबाव और विस्तर लेजासकताहे, (यानी) वीससेर असबाव-और-अलावा इसके विस्तर अलग लेजासकताहे, विस्तर उसका असवावकेवजनमें-नही-गिनाजाता, अनपहग्रुसाफिरको अपना टीकीट खुदलानाचाहिये, क्योंकि-वाजेटेशनपर कइटगलोगिफिरतेरहें-वे-कहेंगं! लाओ!! हमतुमकों टीकीटलादेवे, इसइरादेसे उससेदाम-वसुलकरके थोडेफासलेका टीकीटलाकरदेतेहे, और बाकी

केदामआपलेकर चलदेतेहैं, फिरअनपढमुसाफिरकों टीकीटचाककराते वस्त मुक्किलहोताहै, अगररैलका पुराकमरा—या—गाडीलेनाहो—और उसीलाइनकेटेशनकों जानाहोलोलो—चोइसघंटेकेपेस्तर, औरदूसरीलाइनकेटेशनकों जानाहोतो अडतालीसयंटेकेपेस्तर टेशनमास्तरकों अर्िक्तेसेटीकीट मिलजाताहै, उसगाडीपर लेवलकागजपर लिखकर तस्तालगायाजाताहै, फिररास्तेमें उसकमरे—या—गाडीमें कोइगेरमुसा फिरनहीआशकेगा. ऐसाकरनेपर तीसरेदर्जेकेकमरेका (८) मुसाफिर और-इंटरकलासका (६) मुसाफिरोंका किराया—फी—कमरादेनाहोगा, तीसरेदर्जेकी पुरीगाडीकेलिये पांचकमरेवालीका (४०) छकमरेवाली का (४८) मुसाफिरोंका किरायादेनापडेगा. इंटरकलासकीगाडीका (२७) मुसाफिरोंका किरायादेनापडेगा. इंटरकलासकीगाडीका (२७) मुसाफिरोंका किरायादेनापडेगा, लेकिन! जितनेमुसाफिरोका किरायादियागयाहोगा उतनेतकही मुसाफिर उसगाडीमें जासकेगें. ज्यादहवेटाओगे—तो—उसकाकिराया अलगदेनाहोगा, इष्टइंडियारैलवे यानी—कलकत्ता लाइन इंटरकलासके कमरेकेलिये (८) मुसाफिरोंका किरायालेतीहैं—(६) का—नहीं.

अगरकोइ मुसाफिर पुरीगाडी छेकर उसकों रास्तेमें ठहरानाचाहें -तो-ठहरासकताहे. ऐसीहाछतमें जब पुरीगाडी छेकेकी अजिंदिइ जायतो उसमे छिखनाचाहिये यहगाडीरास्तेमें फछानेफछाने टेशनपर इतनेइतने दिनया-घंटेतक ठहरीरहे, सो-वहगाडी-उनटेशनोपर काट कर ठहराइजायगी, और उसकी फीस जितने घंटे गाडी ठहराइजा-यगी आठआने घंटे देनापडेगा, गाडीरवानेहोनेके (१०) मीनीट पेस्तर टीकीटमीछना बंदहोजाताहे. इसिछये दसमीनीटके पेस्तरजाकर टीकीट छेनाचाहिये, कइजगह हरवष्टतभी टीकीट मिछसकताहे, कइ जगह शहरोमेंभी टीकीटओफिस होतीहे, और वहांसें टीकीटमिछस-कताहे. जिसटेशनका टीकीट छियाहो-और मुसाफिर सोजाय-या-

गलतीसंग्रकामीटेशनसं अगलेटेशनचलाजाय—तोजितनेटेशन आगेगया उसका महमूलदेनाहोगा. और शिवाय इसके दोआनेसें एकरुपयेतक जरीमानाभी देनापडेगा. जिसदर्जेका टीकीट लियाजाय—अगर उससे वडेदर्जेमें वेटकर सफरकरे तो वाकीका महसूलदेनापडेगा. अगर वगेर गार्डकों इत्तिलादेनेके धोखेवाजीसें. ऐसाकरे तो शिवाय महसूलकें औरभी जरीमाना देना होगा. उसकी हद (६) रुपयेतकहै,

अगर कोइ मुसाफिर अपनेटीकीटका नंबर-तारिख-या-टेश-नकानाम मलकर ऐसाकरदेवे जो-पढा-न-जासके, उसकेलिये जैसाटेशनमास्तरचाहे करसकताहै, जहांसे टीकीटोंका इम्तिहानहों कररैलचलतीहै वहांतकका किरायालेकर छोडसकताहै, अगरउस-कों यह माल्महोजायिक-इसने रैलकोंधोखादेनेकेलिये ऐसाकिया है-तो-उसकाचालानहोकर उसपर (१००) रुपयेतक जरीमाना हो सकताहै, कोइमुसाफिर औरतोंकी गाडीमें चढजावेतो वहकानुनी मुजरीमहै, उसकों सजादिइजायगी, अगर किसीटेशनपर खराव खानामिलताहो-या-पानी-न-मीलताहो-तो-मुसाफिर उस टेशन मास्तरकी रिपोर्ट-डिस्ट्रीकट-ट्रेफिक-सुपरिटेंडेंटको करसकताहै, रैलमें पार्सल लेनेदेनेका वख्त शिवाय इतवारके हमेशां सातवजे शुभहसे पांचवजे शामतक रहताहै.—

🖙 [तालीम धर्मशास्त्र.]

धर्मशास्त्रका फरमानाहै हरसाल एकनयेतीर्थकी जियारतकरे.
नयेतीर्थकों जाना-न-बनसके-तो-जिसकी जियारत अवलिक्हें
दोवारा करे, लेकिन! ऐसाकोइवर्ष-न-गुजरनेदेवेकि-जिसमेंएक
तीर्थकीजियारत-न-किइजाय, जोशख्श तीर्थभूमिहीमेंरहताहो, उसकों चाहिये दूसरेतीर्थकी जियारतकरे,--तीर्थनामउसकाहै जहां

जाकर जीव संसारसमुंदरसें तीरे, मगर जिसशस्त्रका इरादापाक नहींहै उसकों तीर्थमी—न—तारसकेगा, दौलत आजहे और कल— नहोगी जोकुछधर्मकार्य करनाहो जल्दी करलो. दुनियाकेझगडोंका कभी—पार—नहीआता. जोकुछ धर्मकामकरलोगे वहीनुमाराहै, कइ शख्श मरतेवख्त कहतेजातेहैं हमकों—फलाने दोकामकरना बाकी रहगये, लेकिन! यहकोइ नहींकहताकि—हमकों फलानेतीर्थकी जियारतकरना बाकीरहगइ, तिजारतके लिये तुमऐसीजगहधूमें जहां-कि—जानवचाना मुश्किलथा, लेकिन! तीर्थयात्राकेलिये एकदफेभी नहींधूमें, कइलोग कहतेहैं तीथोंकी जियारत हमारेतकदीरमेंनही. कैसेजाय, मगर यहनहींसीचतेकि—हमने—धरसें एककदमभी नहीं उठाया और कहदिया हमारेतकदीरमेंनहीं, क्या! ख्वढंगहै, दौ-लतिमलानेकेलिये हरजगहजानेकी ततवीरकरना और तीर्थयात्राके लिये तकदीरका वहानालेना, वडेहोशियार हो. निश्चयनयकोंदि-लमेंरखकर व्यवहारनयसें वर्तावकरना तमामशास्त्रोकासारहै.—

आजसें करीव (२५००) अहाइहजारवर्ष पेस्तर जविक-तीर्थ-करोंका जमानाथा विद्याधरलोग अपनीविद्याकी शक्तिसें आस्मा-नमें विमानचलातेथे, और उसकेजरीये लोग सफरकरतेथे, आज-कल रैलकासाधन मौजुदहै, फिरसुस्तीकरना और तकदीरकावहा-नालेना-कोइअकलमंदीकी वातनहीं, करीव सो-सवासोंवर्ष पेस्तर जबरैलनहींथी-लोग-खुक्कीरास्ते सफरकरतेथे, औरवहुतसाखर्च करनेपरभी उतनीजगह-नहींजासकतेथे-जितनी आज थोडेखर्चसे जासकतेहो. जिनकोंधर्म प्याराहै-कभी-सुस्तीनहींकरते, तीर्थया-त्राकोंजानेसे पेस्तर इसवातकों अवलसौचलोकि-तुमारेपास उतना खर्च है-या-नहीं, ? गेरसुलकमें किसकिसकेपास मांगतेफिरोगे. ? जिसराजे-महाराजेकी अमल्दारीमें तीर्थकीजगहहो-उनकों-इसवा-

तपर खुशहोनाचाहियेकि-तीर्थकेसववसे हमारीअमल्टारीकी तरकी और रियासतकी आवादीहै, शहरकी रवन्नक-और-रौजगारकी तेजी,-सौंचो ! इससें ज्यादह और क्यावातचाहतेहो, ?--हरखुश-नसीव राजेमहाराजोकों चाहिये तीर्थयात्रीयोंका लिहाज रखे,--उनकोंहरवातसें मददकरे, और इसवातपर उनकी तारीफकरेकि--दुनियाका धंदाछोडकर-ये-तीर्थोंकी जियारतकों आयेहै. परमे-श्वरकी भक्तिमें उनकादिल रज्ज-न-होतातो-तीर्थोंमें कैसेआते,? तीर्थके मेनेजरोंकों-और-पूजारीयोंकोंभी मुनासियहै उनकीखातिर करे, ब-दौलतयात्रीयोंहीके तीर्थोंका खजाना-तर-होताहै, जिस तीर्थमें यात्रीयोंकी आमदरफत कमहै-उसतीर्थमें रवन्नक नहीरहती. कइतीर्थीमें पूजारीलोग ऐसेभी देखेगयेहैकि-यात्रीयोंकी नाकमेंदम लादेतेहै, अगर रुपया पैसा-न-देवे-तो-निंदाबोलनेलगते है. ती-र्थीके मेनेजरोंको लाजिमहै ऐसे पुजारीयोंकों तीर्थोंमेसे स्कसतकरे, और अगर गुस्तास्वीकरेतो-उसको कानपकडकर उसीवस्त्रमंदिरसे वहारकरदेवे, वे-लोगवडेवेंसमझहै-जो--यात्रीयोंकेशाथ गुस्ताखी करतेहै-और-उनका लिहाज नहीरखते, यात्रीलोग थकेहुवे-और मंजीलकरकेआये है, उनकों हरवातसें आर(मदो, जिसचीजकी उ-नकों दरकारहो--उनकेसामने हाजिरकरो, यात्राकरके छौटतेवस्त अगर यात्रीकेषास रुपयेपैसेकी ग्रंजाशहो-तो-जिसपूजारी-या-नो-करने तमारी खिटमतिकडहै उसकों कुछडनामदेना,-चुनाचे-वे-लोग मंदिरके खजानेसे तनख्वाह वेंशक ! पाते है−उनका−कोइहकनही कि-तुमकों रोंककरकुळळेवे, ळेकिन ! तुमारी रहमदिळीहैकि-अ-गर गुंजाशहो-तो-उनकों बतौर धर्मकीराहपर कुछदेना. अगर तु-मारे पास रुपयेपैसेकी कुछगुंजाश नही है-तो-कोइजरुरतनही, नो-करलोग-या-पूजारी ऐसाताना-तुमकोंनहीदेसकतेकि-तुमनेहमकों कुछनहीदिया, दानपुन्यकरना अपनेदिलकी खुशीकेताल्छकहै,-और

यहवातभी कावीलगौरकेहैं कि नोकरपूजारीयोंका तुमारेपरकुछहक नहीं कि नोरजूर्म करसके, अगर कोइ जोरजुर्म करेतो फौरन उ-सकों राज्यके जरीये शिक्षा दिलवाना.—

तीर्थोकी देखरेख करनेवालोंकों-लाजिमहै जिसमजहबका जो तीर्थ-या-मंदिरहो-उसमें उसीमजहबकी मूर्त्ति रखनाचाहिये, जो तीर्थ-या-मंदिर जिसमजहबकाहै, खर्च-आमदनी-नौकर-चाकर और-खजाना उसीमजहववालोंकेपास रहनाचाहिये, अगरकोइकहे हम उसमेंदर्शनोंकों आते है इससेहमाराभी उसमेंहकहै-तो-इससे उनका हकउसतीर्थ--या-मंदिरमें नहीहोशकता, जिसमजहबका-जो—तीर्थ—या—मंदिरहै उसके वहीखातेमें उसीमजहबवालोंके आयेहुवे रुपयेपैसे जमाहोना चाहीये. अगरकोइ दूसरेमजहववाले-आनकर उसमें रुपयेपैसेदेवे—तो-वें—रुपयेपैसे उसतीर्थ-या--मं-दीरकी आमदनीके खातेमेंजमाकरना, मगर उनकेनामसें जमानही करना, मजहबीमामले ऐसेहैंकि-कभी-मुकदमेंचलनेपर-वे-लोग--ऐसाकहेगेंकि-देखो ! तुमारे वहीखातेमें हमारेमजहववालोंके-ना-मसं–रुपयेपैसेजमाहै–या–नही, ? जो–तीर्थ–या–मंदिर जिसमज-हबवालोंकाहै, उसके कारखानेपर उसीमजहबवाला शख्श अधि-कारीरखनाचाहिये, गेरमजहबवाला रखागयाहोगा-तो-वह-कुछ-─न─कुछअपनेमजहबका पक्षजरुरकरेगा और अखीरमें तुमकों कुछ नुकशान पहुचानेकी कोशिश करेगा, जो-तीर्थ-या-मंदिर जिस-मजहबवालोंकाहै-उसतीर्थ-और-उसमंदिरमें-उसीमजहबको मान-नेवाला शख्श-पूजारी-रखनाचाहिये,-अगर-गेरमजहबको मान-नेवालारखोगे कुछ-न-कुछ-वह-अपनेमजहबका पक्षकरेगा.-भेतां-बरमजहबके तीर्थ और मंदिरमें श्वेतांबरमजहब माननेवाला पूजारी रहनाचाहिये, दिगंबरमजहबके तीर्थ और मंदिरमें दिगंबरमजहब माननेवाला पूजारी रहना चाहिये,--

अगर कोइ तीर्थका-मेनेजर-या-मुखीया-उसतीर्थ-या-मंदि-रका हिसाव-न-बतलावे-तो-राज्यकेजरीये उपावलेनाजरुरीहै. इतनेपरभी-वह-गुस्ताखीकरे तो उसको संघसें खारिजकरनाचा-हिये. और-उसतीर्थ-या-मंदिरकी क्वंचीयां उससें छीनलेनाचा-हिये. कइयात्री असेभी-है-जो-आरतीका-या-पूजनका-घी-वोलकर रुपयेपैसेदेतेनहीं, और चृपमारकर चलेजाते हैं, कड़कहते है हम–उस–अमानतकी कोइचीजवनाकर मंदि्रमेंधरेगें, या–धर्म-शालावनवादेयमें, मगर शास्त्रफरमाताहै उसद्रव्यसे चीजवनवाने-का-या-धर्मशाला तयारकरवानेका तुमकों क्याहकहै,? बहतो जबसेतुम-आरती-या-पूजनवगेराकेलिये बोले तबसेही देवद्रव्य होचुका,−कारखानेके सुपुर्दकरो, संघ−उसका−रक्षकहै, तुम−चीज-या-धर्मशालावनवानेवाले कोन, ? संघकी जोरायहोगी-वह-का-महोगा, कइकहतेहैं हमने हमारीदुकानके वहीखातेमें देवकेनामसें जमाकरिलये हैं आठआनासेंकडे व्याजदेयमें, मगर उसकोंजमाकर-लेनेकाभी तुमकों कोइइंख्तियार नहीं. संघ उसकों जैसामुनासिव-समझेगा वैसाकरेगा, श्रावकोकेघर देवद्रव्यरखनेका हुकमनही. हरजगह आनंदजी-कल्यानजीकेनामसे दुकानशुरुकरके मुनीम-ग्रमास्तेरखना और कामचलाना, याते कोइएकश्रावक अपनीहकु-मत उसपर चलासकेनही. देवद्रव्य घरमें रखनेसेकोइफायदा नही, जिनजिनोने देवद्रव्यघरमें रखा देखलो ! उनकों अखीरमें नुकज्ञान हुवा, इसलिये सीधेहोकर उसदेवद्रव्यकों देदेना इसीमें तुमारीतारी-फहै. म्रनिमहाराजोकी फर्ज है देवद्रव्यकी हिफाजतकरवानेमे सु-स्ती-न-करे, अगरकोइ इसद्लीलकों पेंशकरेकि-मुनीमहाराजतो त्यागी है-उनकों देवद्रव्यकेकाममें बोलनेका क्या अधिकार है,? जवाबमें माळ्महो, मुनिमहाराज पापकेकामके त्यागीहै, धर्मकामक- 🖟 रनेक-त्यागीनही है, औरउनकों देवद्रव्यकेलिये बोलनेका अधिकार

इसलिये हैिक-चतुर्विधसंघमें अवलदर्जा-उनकाहै,-श्रावक दुनिया-दारहै-और-एकदूसरेकी उसकों परवाहभी रहती है, इसलिये जोर देकर कैसाबोल सकेगा? और मुनिमहाराजोकों किसीकीपरवाह नहीं, इसलिये जोरकेसाथ बोलसकतेहैं, जो-श्रावक-अैसाकहता हैिक-आप मुनिहै आपको इसमें बोलनेकी कोइजस्रतनहीं, वह खुदकानुनधर्मके मुखालिफ और तीर्थकर-गणधरोंका गुनहगारहे,

🕶 [बयान-शकुनशास्त्र,]

सफरकेवरूत अछेशकुन होनपर अछीसफरहोगी. यहभी श-कुनशास्त्रका फरमानहै, शकुन-दो-तरहके, एक दृष्टशकुन, दूसरा शब्दशकुन, दृष्टशकुन-वहहे-जो-सफरकी शुरुआतमें नजरआवे, शब्दशकुन-वहहै-जो-अवाजके जरीये सुनाइदे, सफरकेवरूत रा-स्तेमें अगर जैनमुनी-उसगांवका राजा-हाथी-घोडा-मोर-बेंल-राजहंस-मर्दऔरतका-जोडलाघरआताहुवा-या-पदमनीऔरत मि-लेतो जानना सफरअछीहोंगी, जिनप्रतिमालैकर कोइआताहो-और-सफरकेवरूत सामने मिलजायतो जानना सफरनिहायतअछी होगी, फल–फुल–गेहने अ₁भूषन−धजा–पताका–छत्र≔चवर–सो-नाचांदी-रथ-पालखी-वाजा वीणा-सारंगी-तवले-सितार-मृदंग कुमारीकन्या-पक्कीरसोइकाथाळ –विनाधुंएकीआग-गातीहुइसोहागन औरतें−भेंरी∽शंख−आरिसा-भराहुवाघडालेकरमर्द-या−औरत-मल यागिरिचंदन-दुध-दही-घी-मीटी-गौरोचन-सहेत-सूरमा-कमल-पद्मनीऔरत-झारी-हथियार-पंखा-सिंहासन-जवाहिरात-अंकुक्ष तांबा –चावल-सरसों-लडकेकोंगोट्मेंलेकरआतीहुइऔरत-पानवीडी-हरीबनास्पति–मीठाई--घोये हुवेकपडेलेकरआताहुवाघोबी–इतरफु-लेल-या-उमदावर्ण-गंध-रस-स्पर्शवाली-कोइचीजहो-सफरकेव-

ख्तसामनेमिलजाय तो-जानना सफरअछीहोगी, दिलकीम्रुराद हासिलहोगी-और-किसीतरहकी तकलीफ दरपेंश-न-होगी, कोइ किसीकाभलावुरा नहीकरता, जितने उपरिलखे शकुनहै थुभाथुभके सूचक और द्योतकहे, होना-न-होना अपनीतकदीरके ताल्लुक! सीर्फ! अच्छेशकुनहोनेसे अछा-और-बुरेहोनेसे बुराहोनेका अंदाज कियाजाताहे, अछेशकुनहोनेपर दिलकों ताजगीमिलतीहै, आजकल कइलोग ऐसाकहेदेतहीकि-यह-एकतरहका वहेमहै-आरहम इसवा-तकों वाहियात समजतेहै, मगर यहउनकी आलादर्जेकी गलतीहै, अविद्यानंदोके-न-माननेसे शकुन-ओर-निमित्त ज्ञान जुठे नहीं होसकते,

गर्भवती—रजस्वला—और-विधवाऔरत सफरकेवस्त मीले—
तो-ठीकनही. अगर माता विधवाहो और सामनेमिलजायतो कोइहर्ज नहीं, माता वेटेकेलिये हमेशां सैरस्वाहहै, उंठ-गधे-या—
भेंसेपर चढाहुवाआदमी सामने मिलजाय तो वेशक ! बुराहै, शकुन उसकानाम है—जो घरसें रवानाहोतेवस्त—थोडीदूरपर मिले,—
तमामरास्ता देखतेरहना कोइजरुरत नहीं. कोइरोताहुवाआदमी—
या-नपुंसक सफरकेवस्त सामनेमिलजाय निहायतवुराहे, गांवमें
घूसतेवस्त खुद हसनागाना मनाहे, पेशवाइमें आयेहुवे हसे—या—
गायनकरे कोइमनानहीं, लेकिन ! खुद गानाहसना मनाहे, सफरकेवस्त अपनेपीछे कोइमर्द—या—औरत खालीघडालेकर जलभरनेकों जातेहो निहायतअमदाहे, जैसेवह जलभरकर घरआयगा सफरकरनेवालाभी दौलतलेकर घरआयगा, सांप-किरकांटिया—
पृत्ती—और—गोह सफरजानेवालेकों आडे उतरे—तो—बुराहे. सफरजानेवालेकी वायीतर्फ भमरा आनकर गुंजारकरे—या—फुलोंकारसलेता दिखाइदे अलाहे. सफरकेवस्त मुगेंकी अवाजसुनाइदेना—

या-उसका खुद नजरआजाना उमदाहै, सफरकरनेवाला जब कदमउठावे और अवलकदमकों ठोकरलगे-अटकजाय-कपडा फस-जाय-धजा उसकीगिरजाय-या-उसका चपरासी गिरपडेतो बुरा है, सफर अछी-न-होगी, छला-लंगडा-काणा-या-अंधाशरूस सामने मिलजायतोभी बुराहै, लकडीका भारालेकर कठिहारा साम-नेमिलजाय-दंगाकरतीहुइ विली दिखाइदे--या-चदबुवालीचीज सामनेमिले-किसीसुरत अला नहीं,

कौलसे-राख-हडी-विष्टा-तेल-गुड-चमडा-चर्वी--खाली-या-फुटाहुवावर्तन-नमक-मुकाघास--छाछ-कपास--अनाजकेछी-लके-केश-काले रंगकीचीज-लोहा-द्द्यतकीछाल-द्वा--अर्गला-लोहेकीसांकल-खरल-अकालदृष्टि-और-अशुभवर्णगंधरसस्पर्शवा-लीचीज सफरकेवरूत सामने मिलना अछानही. कोइमर्द-या-औरत हाथमेंफललेकर सामनेआतेहो-तो-जानना सफरअछीहोगी, सारसका जोडला चाहेकिसीतर्फ दिखाइदे-या-दोनों एकशाथअ-वाजकरे सफरमें जरुरफायदा होगा, एकीलासारस दिखाइदेना अछानही, सफरकेवरूत छातालियेहुवे तंत्रोलखाताहुवा कोइश्ररूस सामनेमिले तो अछाहै, जानना सफरअछीहोगी, रोतेहुवेलोग मु-र्दालेजाते सामने मिलनाबुराहै, सारंगीतबलेशाथ गातेहुवेमुर्देकेशाथ जारहे है औरसफरकेवरूत सामनेमिलजाय अछाहै. सफरकेवरूत पीछाडी-या-दाहनी तर्फकीहवाचलतीहो अछाहै, घरआतेवख्तभी ऐसाही समझना, सामनेकी−या−वायीतर्फकीहवा सफरकेवख्तठी-कनही. सफरकेवरूत नोलिया सामनेमिलजाय-या-दिखाइदे-या-उसकी अवाजसुनाइदे-तो-अछाहै. तीतर-या-सुर्गा-दाहनेहाथ-कों-या-सामनेमिलना उमदाहै, गधा बायेहाथकों भोंके तो अछाहै.

चंद्रस्वरचलते दखन-पश्चिमदिशातर्फ जाना अछा, पूरवउत्तरकों सूर्यस्वरमेजानाठीक, लडाइदंगेकेलिये-या-अदालतमें जानातो सूर्यस्वरमें ठीकहै, बाकिक कामकों चंद्रस्वरमें जानाअछा,
चंद्रस्वर अमृतनाडी है, योगशास्त-विवेकमार्तडरहस्य-और-कपूरचंद्रजीकृतस्वरोदयज्ञान-किताव देखो, उसमेंसबहाल रौशनहै, जवचंद्रस्वर चलताहो वायीतर्फ जोजोशकुन होगें पूर्णफल देगे, और
सूर्यस्वरमें दाहनीतर्फ जितनेशकुनहोगें अछाफलकरेगें, रिक्तस्वरमें
अछेशकुन कमजोरहोजाते है और पूर्णस्वरमें कमजोरशकुनभी ताकतवरहोतेहै, घरसेचले और तुर्तहीअछेशकुनहुवे तो समझलो, तुर्तही फायदाहोगा, कोशदोशगयेबाद अछशकुनहुवेतो देरसें फायदा
होगा, शकुनशास्त्रका फरमानहै घर-या-गांवकेनजदीकके शकुन
असलीशकुन है, सफरकेवरूत अगर बुरेशकुनहुवे-तोभी-ठहरजाना
ठीकहै. तीसरीदफे बुरेशकुनहुवे-तो-सफरकों जाना अछानही,
लौटजाना चाहिये. सज्जन-शकुन-और-निमित्तज्ञानी-मनाफरमावे उसवरूत सफरकरना फायदेमंद-न-होगा.—

शब्दशकुन उसकों कहतेहैं जोसफरके वस्त बजरीयेशब्दके
मुनाइदे, जैसे कोइशस्त्र सफरकोचला और उसवस्त दुसरा बोलरहाहै फतेह होगी, समजलो ! शब्दशकुनअलेहुवे, अगरऐसासुनाकि—तुमारी तकदीर फुटीहुइहै, इबजाओगे—खतापाओगें—तो—
जाननाचाहियेशब्दशकुनअलेनही हुवे,—वारसें—तिथी—बलवान—तिथीसें—नक्षत्रबलवान्--नक्षत्रसेकर्ण—कर्णसेंलग्न-लग्नसेंनिमित्त-औरनिमितसें खरोदयज्ञान बलवानहै, जिसम्रुलककों—या—गांवकोजाना
तुमारा दिल—नहीचाहता वहांजाना फायदेमंदनही, क्योंकि—दिलभीएकतरहकी पुस्तासबुतीहै,—सफरजानेवालेकों लाजिमहै देवगुरुकोंनमस्कारकरके सफरकरे,—जिनमांदिरमेंजाकर जिनमतिमाकेद-

र्शनकरे-रुपया-महोर-जैसीताकातहो-भेटरखे. औरफिर उपाश्रयमें जाकर गुरुमहाराजके मुखसे मंगलीकस्तोत्र सुने,-और उनके सा-मनेभी भेटरखे. गुरुलोगद्रव्यके त्यागीहोतेहैं उसचढेहुवेद्रव्यकों अ-पनेकाममें-न-लेव. ज्ञानदृद्धिके काममेंलगवादेवे.

ा दरवयान-अष्टांगनिमित्त,]

सफरकेवरूत मर्दका दाहनाअंग-ओर-औरतका वायाअंगफु-रकना अछाहै, सफरजानेके पेस्तर ख्वावमें तीर्थकरोंकीमूर्त्ति-नि-र्प्रथम्रुनि-और-तीर्थभूमि दिखाइदे-तो-समझलो ! तीर्थयात्राजरुर होगी. सफरके-वरूत-पडज--रिषभ-गंधार-मध्यम--और-पंचम स्वरकी अवाज-मुनाइदे-तो-अछाहै, मगर स्वरकीअवाज पहिचा-नना-अकलकेताल्छकहै. हरशख्शकों अपनीस्वाभाविकअवाज किस स्वरमें निकलती है इसकीपहिचान सीखनाचाहिये. सफरकेवस्त तोतेकी अवाज वायी तर्फसुनाइदेना फायदेमंदहै, घरकों आते दाहनी तर्फ सुनाइदे--तो--अछा, सफरकेवख्त तोताउडकर सामनेआवे निहायतउमदाहै, मगर रोतीअवाजकेशाथ सामने आनगिरनाअछा नही, सफरकेवख्त जिसकाबोडा हनहनाटकरे-या-दाहनेपांवसे जमीनकोउकेरे अछाहै, सवारकी फतेहहोगी. सकरकेवस्त मौरकी अवाजधुनाइदे-या-नाचताहुवा दिखाइदे-निहायतउमदाहै, सफरके ्वरूत चकोरकी अवाजसुनाइदेना−या−खुट−चकोर नजरआजाना ्अछाहै,भारद्वाजपरींद्−जिसकों लोग रुपारेलबोलतेहै उसकी अवा-जभीचकोरकीतरहअछीहोतीहै, जिसमुल्कमें भूकंपहो-वहां-समझलो! एकतरहका उत्पातहोगा. जिसशहरकेट्रवजेपर-या-देवमंदीरपर विजलीगिरे वहांटंटेझगडेफैलेगें. जहांदेवमूर्ति हसतीहुइदिखाइदे-वहां–आदमीयेंकोंकुङखौफहोगा. जहांदिवापरवनीहुइ चित्रामकी पुतली-हसतीहुइदिखाइदे-भूकुटीचहाकरग्रस्साकरे-या-रोतीहुइदि

खाइदे-वहां उजाड होगा, और लोगोंकों घरछोडकरभागनापडेगा.
जहांदेवमंदिर-या-राजाके चवरसें विनाअग्नि-आगके अंगारे झ-रनेलगे वहां दंगेफिसाद होकर कइतरहकी तकलीफें दरपेंशहोगी जिसमुल्कमें सिताराभूम्रकेत दिखाइदे-निहायतबुराहै, उसमुल्कके-रहनेवालोंकों-हरसुरतसें तकलीफहोगी,

अछेलक्षणवाले—ख्वसुरत—मर्श्जीरत—जरुरदौलतमंद होतेहै, दुनियामें रुप-एकतरहका—वशीकरनहे, जिसनेपूर्वभवमें धर्मिकया है-जीवोंपर—रहमिकइहे और देवगुरुधर्मकी स्विद्मतिकइहे—वह—रुपवानहोताहै, जोशन्का हिंमतवहाद्रहो—जरुरख्शनसीवहोगा, अनुयोगद्वारस्त्रहिमें फरमानहै—"सर्वस्त्रहेमत्वेष्ठतिष्टितं"—जहांसत्वहै वहांसवकुळहे.

एक्ट तवारिख शहर बंबइ,

भारतमें इसवर्व जैनमजहवके (१०८) तीर्थ मशहरहे, इनसबकी तवारित्व इसिकतावमेंदर्ज है, इसकी शुरुआतमें इरादाथाकिअयोध्यासें लिखनाशुरुकरे, अयोध्या-जमानेतीर्थकरे रिषभदेवके
आवादहुइ और इसीसवबसे पुरानी है, फिरऐसाभी इरादाहुवाकिउज्जेनकों-अवलग्ये, क्योंकि--उजेनिहंदके मध्यमें है, मगरवंबइ
कलकत्ता इसवर्व तरकीकेअवलमीरचेपर खडे है, इसलिये वंबइसेही सफरकीशुरुआतरखीगइ, वंबइसेंचलकर गुरुकगुजरात-सोरापू-कल-मारवाद-सिंध-पंजाव-काञ्मिर-अवध--बंगाल-आसाम
उडीसा-सेंट्रलइंडिया-राजपुताना-मालवा-वराड--खानदेश-दखन
मद्रास-लंका-मलवार-महीश्रर-कर्णाटक-और-गुरुककोंकनकी सफरकरके वंबइआजायगें. अलावा इसकेऔरभी जोजोतीर्थ जैसेकि
अफगानीस्थान-टिबेट-नयपाल-भोटान-और-वर्मा वगेरामेंथे उ-

नकेहालातभी इसमेदियेजायमें, किसकिसजगह कीनकीनसेतीर्थकर हुवे ? उनके पंचकल्याणिक कहां हुवे ? और कोनकीनसेग्रीनिकहांपर मुक्तिपाय, अतिशयक्षेत्र कीनकीनसेथे ? और किसिकसराजेमहा-राजोंकेवल्त उनकी तरकी हुइ ? वगरावातें इसकिताबमें दर्जिकइ गईहे, इसकिताबके बनानेमें इतनीमेहनत हुईहेकि—तावेउमरकी मेह-नतएकतर्फ—और इसकी मेहनत एकतर्फ, जहांतकबना तमामजगह- सूमकर जोजोहाल अपनीआंखों सेंदेखा इसकिताबमेलिखाहे, कुल तीर्थोंकी तलाशीमें बहुतकुल मेहनत हुईहे, पुरानेतीर्थोंकी तवारिख जैनशास्त्रोंसे—इतिहासिकिकताबोंसे और शिलालेखोंसे लिइगईहे,— इसकों पढकरआमलोग फायदा हासिलकरे,

हिंदकी अकलीममें दखन समुद्रकेकनारे बंबई एक-नायाव-और-बेंमिशालशहरहै, जिन्नत-ख्वसुरात हरएकचीजकेवसमे-और-उमदगी मकानातमें बंबई-बहेत्तर-ब-ज्यादहहै, मुंबादेवीकेनामसें शहरकानाम-बंबई कहलाया, अंग्रेजी ज्वानमें इसकों Bombay वोंबे-बोलतेहैं, करीब (१२५) वर्षपस्तर बंबई बहुतछोटाशहरथा, दिनपरदिन इसकी तरकी होतीगई, सन (१८१८) मेंबंबई बहुत बडामारुफ क्षेत्र मशहूरशहर कहलाया, औरदिरयावके शहरोंमें बडीइज्जतपाई, बंबईहातेकी चोडाईकम-मगरलंबाई उत्तरदखन-कों करीब (१०००) मीलसेभी ज्यादहहै, इसहातेमें पहाडबहुत-सम्रंदरकनारे ज्यादेतर नारियल-सुपारी-और-ताडकेहरूतखड़े है, खासफसल अनाजऔररुइकी-ज्यादह, कलकारखाने इतने है-जो दूसरेहातेमें हर्गिज !-न-होगें, बंबईहातेमें मुल्किसिंधकों छोडकर म-हराठे-गुजराती और पारसीअपनेनामकों अबल और वालिदके नामकों पीछेबोलते है, औरवर्षक्रीशुरूआत कातिकसुदीएकमसें मानते है, उत्तरहिंद्केलोग-चैतसुदी एकमसे वर्षकीशुरुआत-श्रीर वास्त्रिः दकानाम-अवल लिखते है.

वंबइकों छोडकर इसहातेमे (२३) जिलें आवादहै, इनमें प्रनाके पेसवा-और-वडोटेके गायकवाड ज्यादह मशहरहै. रैलसडक बंब-इसें -जी-आइ-पी-और-बी-बी-ऐंड--सी-आई--निकली, जी--आइ--पी-मध्यहिंदमेंहोकर इष्टइंडियाकेकाथ मिली, और नागपुरसे आगे बंगालनागपुरकोंभी जाकरमिली है! बंबइमें रैलवे टेशन (१३) है, सबसेवडाटेशन बौरीबंद्र-इसकादृसरानाम विक∹ टोरियाटर्गीनसभीवोळतेहे.हिंद्मॅदूसराकोइऐसाटेशननहीं-जैसाबोरी-वंदरका टेशनहै, सन (१८१८) में करीब (२७००००) लाख रुपयोके खर्चेसे बनायागया. छतमें सुनहरी और मीनाकारीकाय-मारबलपथ्थरके खंभे खुवसुरत वेलबुटोंसेसजेहुन-और**-एकगुंबज**्र पर वडाकींमतीघंटाघराके-जिसकीअवाज दूरदूरतकजाती है, देखकर ताज्जुव और हेरतकरोगे, खासबोरीबंदरटेशनकी जमीन (१५००) फुटलंबी, बहुतसे पासेंजर इसीटेशनपरखबरते हैं, जोकोइम्रुसाफिर शहरवंबइमें कदमरखे वोरीबंदरदेशन उतरे. शिवायइसके जहां जि-सकोंसुभीताहो वहांभी उतरसकताहै, इकावगी-हरवख्तमीजृदरहते है नहांकहो पहुचादेगा, समुंदरकनारे अपोलीवंदर्शक-जहांपरवि-लायतजानेवाली धीमरेंखडीरहती है, समुंद्रकेकनारे पश्यरोंकीता-मीराकेइहुइ बहुतबडीदिवार मयसीदियोंके बनीहुइदेखकरताज्जुबक-रोगे, जिसकों समुंदरकापानी हरवख्तटकराताहै, वाजेलोग श्रीमसोमें वेटकरसम्रंदरकी सैरकोंभी जायाकरते है वडीरवज्नककी जगहहै. गोदीमें जहांकी–सम्रुंदरका–जल-रुकाहुवाहै कइष्टीमरे हरवस्त य-हांपर खडीरहाकरती है. ष्टीमरकेआतेवस्त पुलखोलदियाजाताहै, औरफिर ष्टीमरकेचलेजानपर बंदकरदेते है, बगी-घोडे-आदमीयोंका

रास्ताभी वनाहुवाहै. वहुतसीष्टीमरे औरजहाज इसवंदरगाहसे ल-गते औरखुलते है, एकष्टीमर वंबइसेलंकाकों-एकद्वारिकाहोकर क-रांचीकों-और-सबसेवडी ष्टीमरऐडनहोकर विलायनकोंजाती है. तरहतरहका मालअसवाब-यहां-चढायाऔर उताराजाताहै, वडी बडीआलिशानष्टीमरे औरसमुंदरका अथाहजल देखकर दिलनिहा-यतखुशहोगा,—

वंबइसेंग्वुक्कीसडक–कल्याणी–नाज्ञक-–धुल्रिया–मउ-–इंटोर– फतेहाबाद-और-गवालियरकों होतीहुइ आगरेकोंगइहै. दूसरी पै-दलसडक-वीचहिंदुस्थानके होतीहुइ खासकलकत्तेकोंभी गइहै, वं-वइमें ट्रामवेकंपनी वडीतरकीपरहै, सन (१८९१) की मर्दूमशुमारीमें खास ! वंबइकी आवादी (८२१७६४) मनुष्योंकीथी. जिसमेंकरीव (२५२२५) जैनलोगहे, वंबइकेमकान ऐसेउमदा औरखुवसुरतहैकि-जिसपर लाखहांरुपये सर्फहुवे, वडीवडीआलिशानइमारतें इसकदर उपदा औरक्षलाक्षलवनी हैकि-देखकर आदमीकी अकलचकराजाती है, रंगरौज्ञन बडेवडेआइने–तरहतरहके मेहरावदारखंभे औरसाइन वोर्ड हरमकानपर लगेहुवेहै. वंबइके बडेबडेमहोले कोट-और-बहार-कोट-जिसमें पायधोनी-भींडीवाजार-कंबडीबाजार-नलवाजार-कापडबाजार-भातबाजार-जहोरीबाजार-तांबाकाटा- मारकीट-ची-डाबाजार-कालवादेवीरोड-मंबादेवीरोड-महालक्ष्मी-चरनीरोड जु-मामज्ञजीद् -ागरगांव-वालकेश्वर-मांडवीबंदर वोरीबंदर-भाइख्छा-परेल-कुलावा-और-प्रांटगेडवगेराहे. बडेबडेवाजारोंमें दुतर्फासंगीन और-रंगरौशनिकयेदुवेमकान देखकर माळूमहोताहै किसीराजमहेळों-की सरकररहे हैं. बगी-विकटोरिया-जिसकेपैयोपरस्वरलगाहुवा ह-रजगह किरायोमलतो है, रुपया-आठआने किरायादेकर तीनआदमी उसमेबखूर्वा-वेठसकते हैं, औरजहां सैरकरने जानाहोजासकते हैं,

भींडीबाजारकीसडक जोकि-कुलाबेकों-गईहै-सबसेचौडी है, कुला-बेमेंस्इकाबाजार ज्यादह-हरवष्तत्व्यापारीलोग आतेजातेहें, वडीबडी आलिशानइमारतें-पासमेंसमुंद्रका गहेराजल-और-तरहतरहकेजहा-जदेखकर दिलखुशहोगा. वंबइशहर-इसवष्त हिंदका एकगुलजार बाग कहदो-कोइहर्जकी वातनही. तवारिखोमें पढाहोगा-वंगाल-औरवंबइहाता-हिंदमें दो-गुलजारवागहें नजरकेसामने देखलो.

हरवाजारमें मेवामीटाइ-पृरीकचोरी-औरगर्मद्घ तयारमिलता है, बगी-घोडे-ट्रांम-औरमोटार-हरजगह फिरतीदेखोगे. ट्रांममेंबेठ-कर जिसजगह दिलचाहो चलेजाओ. परेलसेंकुलावा-औरकुलावेसे **ग्रांटरोडतक जानेसे वंब**इकेबहुतसे हिस्सोंकी सैरहोसकती हैं, तरह-तरहके रेशमी औरऊनीकपडे-सोनाचांदीजवाहिरात-वगेरामाल-अ-सवाव-लाखहांरुपयोंका यहांपरमिलसकताहै, मगर खजाना-तर-वा-ताजाचाहिये, विनातर्खजानेके कुछचीज नहीमिलसकती, इंग्लांड चीन-जापान-फ्रांन्स-जर्मनी-रुस-इटाली-स्पेन-अमेरिका-नोर्वे-स्वीडन-स्वीटझर्छोड-अर्य-काबुल-आफ्रिक(-एडन-जंजीवार-मे(-रसस-जिसमुल्ककीचीजचाहो यहांभिलसकती है, तरहतरहकी पुशा-कपहनेहवे मुल्कमुल्केमर्ट्-औरत-छोटेबडेइसकट्र शौखसेचलरहे है जैसेकोइ अमीरउमरावदेखलो. उमदासेउमदाकपडा—-और-गेहना यहां मिलसकताहै, वंबइकेलोग निहायतखुबसुरत-जिसनेपृरवजन्ममें जिवोंपररहेमिकड्हे, कतस्रवाजी-नहीकिइ-वह-कमास्रहुस्न-ओर-खुबसुरतरुप पाताहे, हरवरूतओरहरबाजारमें असीभीड-और-हजुम देखोगेकि-आद्मीयोंका चलनाफिरनादुसवारहोगा. अंवेजलोग ज्या-दहकरकेकोटमें औरकुलावेमें औरनेटीवकोट—बहारकोट–सबजगह आवादहैं, वंबइकी सफाइडमदा-सडकेलंबीचौडी-मगरगलिये निहा- यततंगहै, भाइख्छा—चीचपोखळी-परेळ-और -कुळाबेमें कपडेकेका-रखाने और मीळेंबहुतसीवनीहुइहे,

वंबह्कीदिवाली मुल्कोंमेंनामी दूरदूरसेलोग इसजलसेकोंदेखनेके लियेशातेहै, चैतमेंबसंतकामेलाभी एकनामीग्रामी है, चौपाटीमें दरी-यावकनारे हवाखोरीकेलिये बेठनेको कुर्शीऔरबांकडे बनेहुवेहैं, चा-हेजहां बेठजाओ कोइम्रमानियतनहीं, जाडेकेदिनोमें—न—सर्दी हैं-न— गमीं, वारिशकेदिनोमें करीब (७०) इंचपानी यहांपरगिरताहें, करीब मारकीटके धर्मशाला माधवदासजीकी मुसाफिरोकेलिये आरामकी जगहहैं, विकटोरिया—गार्डनशहरकेउत्तरमें औरपरेलके पूरवकेकनारे वडालंबाचोडा काबिलदेखनेकीजगहहै, औरअजायबघरभी इसमें बनाहुवाहै,

बंबइकीपींजरापोल-बडी-और-इसमें जींदेहुवेजानवर जोकिकरीब-उल-मोतहबहुत उमदातीरसेंजनकी हिफाजत किइजाती है, लाखोरुपयेइनकी खिदमतमेंखर्चिकियेजाते है, नोकरचाकर सबइंतजाम
अछा-और लाइकतारीफकेंहे, वंबइमें बडेघंटाघर (६) अवलबौरीवंदरपर—दूसरा दाउदसासनस्कुलकेपास-तीसराविकटोरियागार्डनमें
—चोथामारकीटकेदरवजेपर—पांचवापिन्ससडोकपर--और--छटाराजाबाइटावरपर-इनकी अवाजदूरदूरतक पहुचती है, वंबइमें काबिल
देखनेकी चीजेंकइहे मगर बौरिबंदर-विकटोरियागार्डन-कुलाबा-राजाबाइटावर-और—गोदी-ये—नामीजगहहै, हरजगहपानीकानलऔर-रोशनीग्यासकीजारी है, युरोपियनजनरल अस्पताल-टेलीग्राफ
औफिसबडेकीमती मकानहै, हाइकोर्टका मकान (६६०) फुटलंबा
और पांचमंजीलाबनाहुवा-मेहराबदारखंभे-दोनोंतर्फ (१२०) फुट
ऊंचेटावर और उनपर इन्साफ औररहेमकी मूर्नेंबनीहुइ-देखकरिद-

लकों ताज्जुव होगा. वंबइमे महराठी-गुजराती-और उर्दूजबान ज्यादहवोलीजातीहै. अठाइस-छपन-और असीरुपयेभरका सेर यहांपरचळताहै, सल्मे-सीतारेकाकाम बंबइमें-उमदा-युनीवरसीटी-सीनेटहाउस--सरकारीमहेकमे-वडेवडेआसुदेलोगोके मकानपरलगा हुवा-टेळीकोन जिससे-घरवेटेतमामहालमाॡमकरलो, एल्फीष्टोन सर्किल-कष्टमहाउस-टाउनहोल-टंकशाल-और-वंवइवेंक-वडेकींम-ती और काविलदेखनेके मकानहै. पश्चिमकीतर्फ कुलावे चर्च-और-विश्वविद्यालयवगेरा वडीइमारतेहै, कइजगह गुलजारचमन–रंगरी-शनकियेद्ववेमकान−पानीकेकूव्वारे नजरआतेहै गवर्नमेंटहाउस <mark>ब</mark>डी छागतकामकानहै−सेकडोंजगहकछकारखाने−और स्कुले वनी<u>ह</u>इ− जिनपर-वेंथुमार दोलतसर्फहुइहै, कहांतकवयानकरे,-ववंइकी मु-न्सीपालीटीमें असीलाखरुपयोंकी सालीयाना आमदनी और उत-नाही खर्च है, छाइटहाउस-यानी-रौशनीयर वंवइमे तीन-जोिक-बंबइसे (१०) मीलपर दखनपश्चिमकों वनेहुवे-अपोलोवंदरसे नाव-मेंबेटकरवहांपरजायाजाताहै. औरअठारांमील दूरसें दिखपडतेहै. जहाजवाले इनकेजरीये जहाजकों लेजाते और रीकतेहैं,

वंबहमे जैनश्वतांवरमंदिर कहहै, सबसेवडा तीर्थकर गोडीपार्श्वनाथजीका इसमें तीर्थकर गोडीपार्श्वनाथजीकी निहायतखूबसुरत
मूर्ति तख्तनशीनहै. वाजारकेवीच इसकद्रउपदा और तीमंजीला
खूबसुरत वनाहुवाकि-जिसकीतारीफ वंमीशालहै, सुनहरी और
मीनाकारीकाम-तीर्थेंकिनकशे.-तस्वीरे-झाडफनुस-और-फर्स-शंगे
मर्मरकादेखकर दिलखुशहोगा, मंदिरकेदरवजेपर पीतलकेकठहरे दृरसे नजरआते है, उमदारंगरीशन-और-कारीगरीदेखकर ताज्जुबक
रोगे. शामकेवख्त हारमोनियम-सारंगी-तबले-और-सीतारवगेरा
साजसे गबैयेलोग संगीत-और-नाचसुजराकरते है, दूसरामंदिरउ-

सीकेकरीवमें तीर्थकर महावीरस्वामीका इसमें तीर्थकरमहावीरस्वामी-कीमूर्त्ति जायेनशीनहै, कइतीर्थोंकेनकशे और काम शंगेमर्मरपथरका लाइकतारीफके वनाहुवाहै, तीसरामंदिर रिपभदेवमहाराजका, इसमें तीर्थकर रिषभदेव-भगवानकी मृत्ति-तरुतनशीनहै, मारवाडीश्राव-कोंकी आमदरफत इसमेंज्यादह-और-ये-तीनोमंदिर एकलाइनमें बनेहुवे है, चौथामंदिर तीर्थकर शांतिनाथजीका भींडीवाजारके कौनेपर--शंगमर्परपथरका निहायतउमदाकाम और तरहतरहके चित्र इसमेंकायम औरवरपाहै. पांचवा—मंदिर भींडीवाजारमें तीर्थंकर नेमनाथजीका—छठा—चिंतामनपार्थनाथजीका--सातमा शांतिनाथजीकाकोटमें, दोमंदिर मांडवीवंदरपर इनमें कछीश्रावकों-काआनाजानाज्यादहहै, तीनवालकेश्वरमें, एकभाइखलेमें और को-लावेमें, इसतरह वडीलागतकेवनेहुवे मंदिरमौजूदहै, हरजैनश्वेतांवर यात्रीकोंलाजिमहै वंबर्भेकद्मरखेंतो इनमंदिरोंके दर्शनजरुरकरे, वंब-इके जैनश्वेतांवरमंदिरोंकी कहांतकतारीफकरे ! एकसेएकवढकरहै, लालबागमें नयाउपाश्रय और एकमंदिर वतीरचैत्यालयके तामीर हुवाहै,---

जैनबुकसेलर-श्रावक-भीमसी-माणककी औफीस-मांडवीवंटर शाकगलीकेनाकेपर बनीहुइ जिसमेंतरहतरहके जैनपुस्तक बीकीसें मिलते है, सबसेवडावुकसेलर हिंदमेंयहीनामीहै, इनकेमकानपरउनके नामकासाइनबोर्ड लगाहुबा-जिनकों जैनपुस्तकोंकी दरकारहो-जा कर-लेआवे, जैनश्वेतांबरलाइब्रेरी--बोर्डिंगहाउस-और--स्कुलबाव पंनालालजी-पूरनचंदजी-जहोरीका-कींमतीमकानहै, तमामहिंदके जैनश्वेतांबरश्रावक बंवइमेंआबादहै, पैदाशअछीहोनेसें सबलोगसुखी और-धर्मकेपायबंद, मगर मकानकीनिहायततंगी-छोटीछोटी कोट-रीयोंमें लोगअपना गुजरकरतेहै, किरायाज्यादे औरजगहकीकोता- इहै, व-सववपैदाशके लोगयहांरहनापसंदकरतेहै, जहां पैदाशज्या-दहहो-एशआरामकीचीजेभी वहांज्यादहहोती है,—

कइतरहके डेळी-सप्ताहिक-और-मंथळीअखवारयहांसे जारी
होते हैं, हरमुल्ककेमुसाफिर यहांआतेऔरजाते हैं. कोइरीजएसा-न
होगा जिसरीज दसपनरांह हजारमुसाफिर वंवइमें-न-आयेगयेहो,-दूसरेशहरमें कमदेखोगं,-राज्यअंग्रेजसरकारका-और-इन्साफीकातुन
जारीहें,-कोइकिसीकों तकळीफनहीदेसकता, अपनेअपनेमकानमें सव
ळोगचैनकररहे हैं. जोशख्शवंवइसे रवानाहोकर हिंदमेंजैनतीर्थीकी
जियारतकरनाचाहे इसरास्तेचळकरकरे. बंवइसे वी-बी-सी-आइ
रैळके--जरीय-कुळावा-चर्चगेट-मरीनळाइन-चरनीरोड-पांटरोडमहाळक्ष्मी-परेळ-एळफीस्टनरोड-दादर-माहुंगारोड-माहिम-बांदरा-शांताकुज-अंदेरी-गोरेगांव-माळाड-वोरविळी-भायंदर-वसइरोड-नळसोपारा-वीरार-सोपाळा-पाळघर-बोइसर-वानगांव
देहणुरोड-घोळवड-वेवजी-संजान-भीळाद-दमणरोड-उदवाडा
पारडी-वळसाड-इंगरी-विछीमोरा-अमळसार-वेडळा-नवसारी
मरोळी-और-सचीन होतेहुवे सुरतजाय, रैळिकराया दो--हपयेतीन आने,--

🖅 बयान—सुरत,

कुलावाटेशनसें (१६७) मील उत्तर-ओर-भरुअछसे (३७) मीलद्खनकों तापीकेवायेकनारे समुंद्रसें (१०) मीलपूरविजलेका सद्रमुकाम सुरतशहर एकगुलजारवस्ती है, सन (१८९१) की म-र्दुमशुमारीकेवरूत फौजीछावनीकों मिलाकर सुरतकी आवादी (१०९२२९) मनुष्योंकीथी, टेशनकेपास एकसरकारीसराय बनी हुइ जिसमें मुसाफिरलोग व-ख्वीकयामकरे. मकानवडेआलिशान और रंगरीकन कियेह्ने तापीकनारे सन (१५४०) इस्वीकाबना

हुवा एकपुष्लाकिल्लाकि-जिसकीदिवार आठफूटचौडी और चारो तर्फ उमदागुंबज वनेहुवे है, विक्टोरियावाग एकदेखनेकीजगहहै, दिल्लीजानेकी सडककेनजदीक (८०) फूटउंचा घंटाघरसन (१८७१) का तामीरिकयाहुवा-जिसकी-अवाजदूरदूरतकजाती है इसपरचढ-करदेखोतो तमामसुरतशहर दिखपडताहै, हाइस्कुल-खेरातीअस्प-ताल-और-रुइकेकइकल-कारखानेवडेकींमतीवनेहुवे है, सडकोंपर रातकोंलालटेनोंमें झलाझलरौशनी, चंदनकीलकडीपर सुरतका न-कासीकाम मुल्कोमेंमशहूर-और (३६) रुपयेभरका सैर यहांपर जारी है. तापीनदीकापुल (१७) खंभोपर बनाहुवा निहायतपुरुता, सतपुडेपहाडसे निकसकर नापीनदी नजदीकसुरतके (१४) मील पश्चिमकों जाकर-स्वंभातकी खाडीमें सीरी, सुरतजिलेके जंगलों में तेंदुवे–भाऌ–सुअर–और–भेंडिये वगेरा वहुतसेंजानवर रहाकरतेहैं सन (१३४७) इस्वीमें महम्मदतुगलककी फौजने सुरतकों फतेहकिया, सन (१३७३) इस्वीमें फिरोजशाह तुगलकने सुरतमें एककिल्ला ता-मीरकरवाया, उसवरूत तिजारतकी वडीतरकीथी. सन (१५७३) इस्वीमें वादशाह अखबरने सुरतकों फतेहिकिया, जहांगीर और बाहजहांकी अमल्दारीकेवरूत सुरत अछीरवन्नकपररहा, पोर्तुगाल-वाले सुरतमें तिजारत करतेथे तवारिखोसे जाहिरहै, होलांडवालो-कीकोठी सन (१६१६) इस्वीमें यहांपरवनी. सन (१६६८) में फांसवालोकीभी कोठीवनी. सन (१८००) इस्वीके करीव सुरत और-कस्वा-रांदेर अंग्रेजसरकारके इच्तियारमें आया. सन [१८३७] इस्वीमें सुरतमें वडीभारीआगलगी, जिसमें कइमकानात जलगये, कहते हैं [१०] मीलतक आग उसवस्त फैलगइथी, तापीनदीकी बाढभी उसीसालमें मुरतपर फिरगइ, जिससेवहुतनुकज्ञान लोगों-काहुवा, और कइसोट्गागिर उसवरूत सुरतकों छोडकर वंवइकों चलेगये.--

जैनश्वतांवर श्रावककरीव [४००] और-जैनश्वेतांवरमंदिर-ब-डाचौटा-नाणावट-गोपीपुरा-छापरियासेरी--हरिपुरा-नयापुरा वगेरामें वडीवडीलागतके बनेहुवे है, और उनमें-बडीवडीआलिशा-नमुर्तें तरुतनशीनहै. कइजगह मिनाकारीकाम-और-उपदाचित्र-कारी देखकरदिल तर-व-अजाहोगा, मकान-साधुलोगोकेठहरने के बडेचोटेमें—और—गोपीपुरा वगेरामेंबनेहुवे है. धर्मशाला--शेट--भेमचंद रायचंदकी जैनश्वेतांवर यात्रीयोंकेलिये आरामकी जगहहै, यात्रीलोगवहांकयामकरे, कोइमनानही, टेशनसे एक मिलके फासलेपर शहरकी आवादीशुरूहै, वाजार गुलजार और जिसचीजकी दरकारहो यहां मिलसकती है, सोना-चांदी-जवाहि-रात-मेवामीठाइ-और-उमदा रेशमीकपडे जैसेचाहिये यहांपरमिल-सकेगे. सुरतकीवर्फी मुरुकोंमेंमशहूरहै, सल्मेसितारेका काम यहां इसकट्र उमट्रावनताहै जिसकीतारीफ वेंमीशलहै. तापीके सामने कनारे कस्वा-रांदेर-एक गुलजारवस्तीहै, मर्दुमथुमारी (१०९२६) मनुष्योंकी-दो-जैनश्वेतांवरमंदिर-और-कइ-जैनश्वेतांवरश्रावक य-हांपर आवादहै, हमने संवत् (१९४२) मे-सुरतशहर देखा--और -वहांचीमासाभी कियाहै. सुरतसें-अमरोली-सायन-कीम-कोसंबा -पानोली-और-अंकलेश्वर-होतेहवे भरुच-जाना, रैल किराया आठ आने.

[तवारिख-अश्वावबोधतीर्थ औरराक्कनिकाविहार]

भरुअछका दुसरानाम अश्वाववीध तीर्थहै, संस्कृतजवानमें घोडेको अश्व-बोलतेहै. तीर्थकर मुनिसुत्रतस्वामीने यहां एक-घो-डेको तालिमधर्मकी दिइथी-और-उसको-ज्ञानहुवाथा—इसलिये इसका नाम अश्वाववीधतीर्थकहलाया. जमानेहालमें मनुष्योंकोंभी ज्ञानहोनादसवारहोगया-जानवरोंकों कैसे हो, १ पेस्तर जानवरों- कोंभी-ज्ञानहोजाताथा-और-पूरवभवकी वात उनके ज्ञानमें दिख-पडतीथी जिसघोडेकों तीर्थेकर मुनिसुत्रतस्वामीने तालीमधर्मकीदि-इथी-उसको-जातिस्मर्णज्ञानहुवा और वहअपनापुरवभवको देख-नेलगा, ज्ञानीयोंकी सोवतसें जानवरोकोंभी इतनीलियाकत होजा-तीहै, जमानेहालमें वैसेज्ञानी मौजूदनहीरहे-मगर-जैसेहै उनकीभी सोवतकरनाचाहियें. जिसरीजसे घोडेकों ज्ञानहुवा-उमरभर उसने किसीजीवकों नहीसताया, जब उमरउसकी खतमहूइ-मरकर-स्व-गैमें देवगतिको पाया, और जबवहां अपनेअवधिज्ञानसे देखनेलगा तो-उसकों माल्महूवाकि-मुजे-जोस्वर्गमीलाहै वदौलततिर्थिकर मु-निसुत्रतस्वामीकी मीलाहै फौरन! स्वर्गसें भरुअछमें आया, और जहांउसनेज्ञान पायाथा-तिर्थिकर मुनिसुत्रतस्वामीका मंदिरतामीर करवाया समवसरणकी शिकलवनाइ, और उसकेसामनेएक-मूर्त्ति –घोडेकी तामीरकरवाइ तीर्थिकरमुनिसुत्रतस्वामी-तालीम धर्मकी देरहेहै-ऐसीशिकलभी वनायी, गरजिक-उसदेवने शहरभरुअछमें अश्वाववोधतीर्थकीनीवडाली उसरीजसे अश्वाववोधतीर्थ-कहलाया

मरुअछका तीसरानाम-श्रकुनिकाविहारभी-जैनिकतावामेंमशहूर है, सिंहछद्वीपमें पेस्तर एक-श्रीपुरनामका शहर आवाद था,
उसवष्त वहांके राजाकों सातलडके-ओर-एकलडकी जिसकानाम
सुदर्शना-था, निहायतखूबसुरत थी, वडीहोनेपर उसने इल्मपढा,
और जब-लाइक उमरहुइ-तो-उसके वालिदकों इसवातका फिक्रहुवा कि-किसकेशाथ इसकीसादीकरना चाहिये, एकरौजकीवातहै
सुद्र्शनालडकी-अपने वालिदकेपासबैठीथी शहरभरुअछका एकथनेश्वरनामका शाहुकार वहां उसके द्रवारमें आया, राजाकों सुजरा किया-और-वाद उसके अपनीसफरकेवारेमें कुछवातंकरने
छुगा,-वातेहोतीथीकि-अचानक उसकों छींकआइ, और मुंहमे

नमो अरिहंताणं-पद बोला, सुदर्शनाकों उसपदके सुनतेही मूर्ली आइ. और जमीनपर गिरपडी, लोगोन समझा विनया कोइजादु-गिर है, कुलअसरिकया माल्मदेता है, यहांतकि नक्डलोग-उसकों मारनेपर आमादा हुवे. उधर सुदर्शनाकों वादम्लीके जातिस्मर्ण-ज्ञान पेदाहुवा, जातिस्मर्णज्ञान उसकों कहतेहै-जिसकेजरीये अपना पूरवभव दिखाइ दे, सुदर्शना जब सचेतहुइ और देखतीहै-तो-उस विनयेपर सबलोग नाराजहोरहेहै, कहनेलगी क्यों इसकोंतंगकरते हो? लोगोने कहा तुमपरइसने जादुिकयाथा. सुदर्शना कहनेलगी सब-झुटेहो, यहबहानेकहैिक-जिसकीनिगाह धर्मपरइतनीवहीहुइहै, इसनेजो-नमोअरिहंताणंपद्यहा, सुनतेही सुजेमूर्ल आइऔरज्ञान हुवा. इसवातकों सुनकरसवलोग उसकीतारीफकरनेलगे-औरकहने लगेकिवडानेक शख्शहै.-

राजानेमुद्र्शनासे पुछाक्योंक्या! माजराहै, ? और किससव-वसें तुं! हेरानपरेशानहै, ? उसनेकहा नमोअरिहंताणंपदमुननेसें मुजेज्ञानहुवा-औरअव-में—अपनाष्ट्रवभवदेखतीहुं. नर्मदाकनारे मुजेज्ञानहुवा-औरअव-में—एक-शकुनिका—(यानी) आस्मा-नमें उडनेवाली चील्रियी. औरवहांके एकपेंडपर—रहतीथी, वारी-शकीमोसिमकेवष्टत सातरोजतकवारीशहुइ. औरएकदमभरभी—न-थंभी, मुजेइननीभूखलगीकि-उसवस्त-मेराजिनादुसवार था, आ-ठवेरीजेपंडसेउडकर—में—भरुअछशहरमेंगइ, और एकशिकारीके म-कानपरदेखतीहुं—तो—मांसकाहेरलगाहुवादेखा, मैनेउसमेंसें मांसका एकदुकडाऊठाया. औरउडकरकोरंडवनमेंअपने कयामीमकानपर आइ, शिकारीतीरकमानलेकर मेरेपीलेआया, औरनिशानालगाकर तीरमाराकी—में—जमीनपरगिरी, औरचिल्लानेलगी, एक-जैनाचार्य जीकि—उसरास्तेहोकरिकसितर्फकों जातेथेमेरेरीनेकी अवाजगुनकर पासआये. औग्रुजेपरमेष्टीमहामंत्रसुनाया. मैंने उसमंत्रकों अछासमझा औरिदलमें यकीनलाइकि—दुनियामें—उमदावस्तु धर्महै, तकलीफके मारे—मैं—वहां—मरगइ, औरआपकेघरआनकर लडकीपैटाहुइ, जिन्कारीमांसकाडुकडालेकर अपनेमकानकों गया. राजाइसवातकों सुनकर ताज्जुवकरने लगाकि—दुनियामें ज्ञानकीवरावर को इची जनहीं, मेरीलडकी निहायतखुशनसीवहैिक—जिसकों पूरवभवकाज्ञान हुवा, सुदर्शनाकहने लगी अपनेवालिट्सें अवसुजे भरुअछशहरजाने दो, उस्सजमीनकों देखनेकी वडी उमेदहे, औरवहां जाकर उसतीर्थकी जियारतकरंगी, राजाने अपनेदिवानकों हुकमदियाकि—वडी हिफाजतसें इसकों भरुअछले जाओ, धनेश्वरसाहुकारको भी कहा इसकों अपनेसाथ लेतेजाना, समुंदरकेरास्तेकिलेये कइ जहाजशायदिये. नोकरचाकर चपरासी फीज तरहतरह के हथियार—वाजा—नोवतस्त्राना औरस्वानमानकी चीजेशायदिङ.—

सुदर्शना वडीतयारींसे भरुअछआई, शाथमें उसके वडीफीज सुनकर भरुअछके राजाने समझाकोई गनीमआताहे, अपनीफीज त-यारखो, ऐसा—नहोकि—राज्य—छीनलेवे, दुनियामें सबकों अपना फिक्रपडाहे, उसकाआना यात्राकेलियेथा, मगरराजासमझगया गनीमआताहे, सुदर्शनाकेजहाज ससुंदरकनारे उतरे, और उसकादिवान नजरानालेकर जबराजाकेपास जानेलगा लोगोनेसमझिलया कोई गनीमनही, किसीराजेका दिवानहे, जवबह—भरुअछमें आया और नजराना सामनेरखा—तो—राजानिहायत खुशहोकर कहनेलगा कहांसेऔर किससबबकेलिये आनाहुवा,? दिवाननेकहा ! मैं !!—सिंहलद्वीपकेराजाका नौकरहं—और उनकी लडकीकेशाथआपके शहरकी सफरकोंआयाहुं, सुदर्शनायहांएक जैनमंदिरतामीरकरवाना चाहती है, अगरआपका हुकमहोसबकाम डीकहोगा, आपकेशहरका एक

शाहुकार जोकि-हमारेसिंहलद्दीपकों गयाथावहभी हमारेशाथहै, अगरआपका हुकमहो-तो-तमामकौज-लवाजमा-औरसुदर्शनाशहरमें
आवे, राजानेकहा जल्दीआओ!-मैं-बहुतखुशहुं, मंदिरकेलिये जितनीजमीनचाहिये लेले! मैंचाहताहुं-बहेजुलुससें सुदर्शनाकी पेंशवाइकिइजाय, औरशहरमें कयामकरायाजाय, दिवाननेजाकर सब
हाल सुदर्शनाकोंकहा, तयारीकिइ, औरभरूअछकेराजानेवडेजलसेके
शाथ शहरमेंलाकर राजमहेलकेपास कयामकरवाया, सुदर्शनानेअशाववोध तीर्थकी जियारतिकइ. औरतीर्थकर मुनिसुव्रतस्वामीकी
मूर्त्तिकी पूजाकरके उपवासव्रतिकया औरकहनेलगी शुकहैआजका
राज-जो-मुनेकमनसीवकों इसतीर्थकीजियारत नियामतहुइ. जोजो
शख्य तीर्थीकीजियारतकों जातेहैलाजिमहै-उनकों वहांजाकर कुछ
वतियमकरना,

युदर्शनाने भरुअछमं जमीनमोळळेकर जैनमंदिरवनवाना शुरु किया औरवहुतरीजतकवहांरही, धर्मचुस्तआहमी तीर्थकी-जमीनकों अपनेघरसंभी बढकरसमझतेहैं, जिसजैनाचार्यने उससुदर्शनाके जीवकों शकुनिकाकेभवमें परमेष्टिमहामंत्र सुनायाथा-भरुअछमेंपधारे आमळोग और सुदर्शनाउनके दर्शनोंकोंगई, और पुछाकि-महाराज! मैनेपूरवभवमें क्यापपाकियाथाकि-जिससे-में-शकुनिकाहु-इ? और किससववसे शिकारीने मैरीजानळिई. आचार्य ज्ञानीथे उनोनेकहा तुं! शकुनिकाकेभवसें पेस्तरकेभवमेंएक-शंखनामके राजाकिछङकीर्था, जोकि-वैताहयपर्वतकी उत्तरछाइनमें सुरम्यानगरिकी अमल्दारीकरताथा, उसभवमेंतेरानाम विजयाकुमारीथा, एक रीजजबतुं! अपनेरिस्तेदारोंकेशाथ दखनछाइनकों जातीथीरास्तेमें एक नदीकेकनारे अपनादिल बहलानेकेलियेइधरजधर घुमनेकोंगई, वहांपर एकवडालंबा सांपनदीकनारे फिरतादेखा. तेनेजसको एक

पथ्यरमारा और पीछेफिरफिरकर निहायततकलीफिदिइ, उसतक लीफिसें उसकामरना होगया, औरतुं! वहांसेअपनेरिस्तेदारोंकेशाथ आगेकों रवानाहुइ, आगेजाकर दूसरेपडावमेंतेने एक जैनमंदिरदेखा, और उसमेंजाकर जिनेंद्रकीम् तिंके दर्शनिकये और वहीभिक्तिकेशाथ देवकीइवादतिकइ, जवरसोइजिमनेकी तयारीमेंथी—एक—साधवीव-हांतेनेदेखी, उनकेपासजाकर धर्मकीवातेसुनी और खानपानकीची-जदेकरनिहायत खिद्मतिकइ, वहांसेचलकर बहुतसुद्ततक तुं! सु-साफरीकरतीरही, वैताड्यपर्वतकी द्खनलाइनकोंजाकर वादिकतने कअसेंके फिरअपनेघरकोंलोटी, फिरवहांसें मरकर इसीभरुअछके कोरंटवनमें शकुनीपरींदहुइ. जिससर्पकों तेनेपथरसेंमाराथा—वह शिकारीहुवा, तेनेउसकेघरसें मांसकाडुकडाउटाया, और उसनेतेरेकों तीरसेंमारडाली. मैने—जोतुजकों परमेष्टिमहामंत्र सुनायाथा वदौलतउसकी—तुं! सिंहलद्दीपमें राजकुमारीहुइ, जो तेनेपूरवभवमें जिनमंदिरकेदर्शन और साधवीकी खिद्मतिकइथी बदौलतउसकी—तेने—यहां जैनधर्मपाया,—

सुदर्शना अपनापूरव भवयुनकर निहायतलुशहुइ, और कहने लगी आपकी—में—बहुतआसानमंदहुं, और तारीफकरतीहुं आपके ज्ञानकीकि—ज्ञानीहो—तो—ऐसेहो, सुदर्शना उसरीजसें निहायतथर्म पावंदहुइ. और—जो—मंदिरवनवाना शुरुकियाथा पुराकिया. नर्मदा नदीकनारे कोरंटवन—शकुनीका—और-वोडद्रक्षका-आकार, शिकारी उसकेतीरसे किसकदर अपनामरनाहुवा—जैनाचार्यने किसतरह प-रमेष्टीमहामंत्र सुनायाथा—वगेरा जोजोहाल अपनेपरगुजराथा-तमाम आकार शंगमर्मरपथरमे उकेरवाकरवनवाया. और अपनेपूरवभवके नामसे उसमंदिरकानाम शकुनिका विहाररखा, धर्मशाला—और-दानशाला वगेराबहांवनवाइ, और तीर्थकेखर्चेकेलिये बहुतदीलत्दे कर अपनेवतनकों छोटी. शकुनिकाविहारतीर्थ उसरौजसेंजारीहुवा, मुद्रश्नीकेवालिदने एकराजकुमारकेशाथ उसकीसादीकिइ, तावेउ-मरउसनेसुखचेनपाया, धर्मकीतरक्षीकिइ, और उमरपुरीहोनेपर मर-करस्वर्गकोगइ,—

आजकल कहलोग पूरवजन्मकों नहीमानते, और इसवातपर हंसी उडाते हैकि-पूरवजन्म किसनेदेखा. ? मगरखयालकरो ! पूरव जन्म-न-होतातो-जन्मतेही एकसुखी-और-एकदुखी-क्यों, ? एक अख्य अपनाकामखरावकरताहै मगरअपनेकों उसपर मोहब्बतपैदा होती है, औरएकशख्स अपनेको-चाहताहै, मगरउसपरअपनेकों मोहब्बतनहीहोती. वतलाओ ! इसकीक्यावजहहै, ? इसकीवजह यहहैकि-वह-तुमारेपूरवभवका दुइमनहै.

(सूत्र-आवर्यके अवलअध्ययनका फरमानाहैकि-)

यंद्रष्ट्वावर्धतेकोपः स्नेह्श्चपरिहीयते, सविज्ञेयोमनुष्येण-एषमेपूर्ववैरिकः, १, यंद्रष्ट्वा वर्धतेस्नेहः-कोपश्चपरिहीयते, सविज्ञेयोमनृष्येण-एषमेपूर्वबांधवः, २

सबुतहुवा पूर्वजन्मजरुरहे, जिसकोंदेखकर अपनेको क्रोधपैदा होताहै जाननाचाहिये यहअपनापूरवभवका कोइदुक्मनहे, और जि-सकोंदेखकर मोहब्बतपैदाहोतीहै-जाननाचाहिये यहअपनेपूरवभवका कोइ खैरख्वाहहै, अश्वाववोध-और-शकुनिका विहारतीर्थ म्रानिमु-व्रतस्वामीके शासनकालसें जारी हुवेथे. जिसकों आज करीब (११८७४३३) वर्षगुजरे, जिसकोंशकहो कल्पसूत्रखोलकर देखे, तीर्थकरमुनिसुवतस्वामीके पीछे तीर्थकरनमीनाथहुवे, निमनाथजीके बाह-तीर्थकरनेमिनाथ-और नेमिनाथकेवाद-तीर्थकरपार्श्वनाथहुवे, पार्श्वनाथजीकेपीछे-तीर्थकरमहावीरस्वामी और वादउनके निर्वाण होनेके (४७०) पीछेविक्रमसंवत् जारीहुवा, वडेवडेखुशनसीवइस तीर्थकीतरकी और मरम्मतकरतेचलेआये. मंत्रविद्याके-चक्रवर्ती-जैनाचार्य-श्रीमत्-खपुटाचार्यमहाराज-जवभरुअछमें पधारेथेमंत्रव-लसें वडेवडेचमत्कार उनोनेयहांदिखलायेथे, आवश्यकमूत्रके अवल अध्ययनमें उनकावयानदर्ज है,-जमाने-राजा-कुमारपालके-जैना-चार्य-हेमचंद्राचार्यभी भरुअछमेंपधारेथे. उसवस्तएक-मिथ्यादृष्टि-सैधवादेवी-जोकि-यात्रीकों तकलीफदेतीथी, हेमचंद्रसृरिजीने मंत्र वलसे उसकों हटादिइ. वडेवडे आश्वर्यों की भूमि-भरुअलितीर्थ-निहा-यतपुरानीजगहहै, कहांतकवयानकरे! जिसकेवडेभाग्यहो-इसतीर्थ-की जियारतकरे, कइद्फेतुम भरुअछकेरास्ते वंबइगयेआये, मगर ताज्जुवकीवातहे भरुअछतीर्थकी जियारत-नहि-किइ, मुनासिवहै अगर मौकावनेतो जरुरइसतीर्थकी जियारतहासिलकरना. हमने इसतीर्थकी जियारतिकइहै. अश्वाववोध-और-शकुनिका विहारके पुरानेमंदिर अवनहीरहे, मगरतींथैकर मुनिसुत्रतस्वामीका अतिशय युक्त-मंदिर अवभी मौजूदहै.

जमानेहालमें-वंबइकुलावाटेशनसं (२०४) मील-उत्तर, और वडोदाटेशनसे (४४) मील-ट्यन-नर्भदाकनारे जिलेकासदर मुकाममरुअल्याहर अवभीरवन्नकलिये है. सन (१८९१) इस्वीकी मर्दुम-थुमारीकेवरूत-भरुअल्कीमर्दुमथुमारी (४०१६८) मनुष्यों-कीथी, भरुअल्कीचारोतर्फ पेस्तरपुरुताकोट वनाहुवाथा उसका कुल्लिस्सा दखनकीतर्फअवभीमौज्दहै, करीव (१) मीललंबीऔर (३०) फुटअंचीपथरकीदिवार अवभीमजब्दवनीहुइहै,-नर्मदाके पास-पहाडीपरएकपुरानाकिलाकि-जिसमें-अस्पताल-गिर्जाघर-स्कुल-स्थुनसीपलऔरिस-लाइबेरी-निलेकिकीकचहरीयां-जैलखा-

ना-और-होलांडवालोंकी पुरानीकोठीवनीहुइहै, नर्मदाकीचौडाइ भरुअलकेपासकरीव (१) मील-और उसपरकींमितिपुलतामीर है, कइजगहकेपुल अपनीन जरसेदेखेगये मगरयहपुलभी-हिंदमें एक नामीग्रामी है, अमरकंटकके पाससेनिकसकरनर्मदा मध्यहिंदमेंहोती हुइ (७५०) मील-बहकर-भरुअलसे (३०) मीलपश्चिमकों जा-करसमुंदरकोंमिली,

सन (६०) इस्वीसे (२१०) इस्वीतक भरुअछमें जैनरा-जोंकाराज्यथा, चीनाधुसाफिर हवांक्तसांग-जोकि-सन (६२९) इस्वीसें (६४५) तकाहिंदमेंरहाथा अपनेसफरनामेमें वयानकियाहै मैने-भरुअछशहरकों देखा, उसवरूत बौधोकीभीवहां आवादीथी, और कड्वीधमंदिरथे, सन (७४६) इस्वीसें-सन (१२९७) इस्वीतक भरुअछ-अणिहळुपुरपटनके राजपुतराजोके तावेमें रहा. वाद मुसल्मानोंकी अमल्दारीकेवस्त उनकीअमलदारीभी यहांहुइ, जमानेहाल सरकारअंग्रेजवहादूरकी अमल्दारी यहांपरजारीहै, बडे वडेमकान-और-वाजार-निहायतलंबा-तरहतरहकी दुकाने और जिसचीजकी दरकारहो-यहांपर-मिलसकती है, जैनोकी आवादी करीव (५००) मनुष्योंकी-और-महोले-श्रीमालीमें-तीर्थंकरम्रुनि सुवतस्वामीका निहायतउमदा और शिखरबंदमंदिरतामीरहै, और तीर्थकरम्रुनि सुत्रतस्वामीकी-अतिशययुक्तमृत्तिं-उसमें तष्त्रनशीन है. एकमंदिरपुरेमे और कइश्रावकवहांआवादहै, जैनश्वेतांवरयात्री-योंकेलिये एकधर्मज्ञाला-श्रीमालीमहोलेमें वनीहुइहै, जोकोइजैनया-त्री-इसतीर्थकी जियारतकरनाचाहे शौखसेकरे, कोइतकलीफ-न-होगी,-जिलेभरुअलमें इसवस्तजवान गुजरातीबोलीजातीहै,-कौ-शांवीकारहनेवाला धवलबोठ-पांचसोजहाज लेकरभरुअलसेसम्रंदरके रास्ते ग्रुःकद्यन्त्री मुसाफरीकोंगयाथा, वडेवडेआश्रर्यीकी भूमि-भ-

रुअछ-शहरहै, कहांतकवयानकरे !!-जिनकेवडेभाग्यहो-इसतीर्थकी जियारतकरे. भरुअचसें-रवानाहोकर चमारगांव-पालेज-लकोदरा -मियागांव-काशीपुरा-इटोला-वरनामा-मकरपुरा- विश्वामित्री-होते शहरवडोदेकों जाना, रेलकिराया नवआने.

🖙 वयान-शहर-बडोदा.

वंबइसे (२४८) और-सुरतसे (८१) मीलउत्तरकोंवडोटा शहरएकउमदाजगहहै, सन (१८९१) इस्वीकी मर्दुमथुमारीकेवरुत फौजीछावनीकों मिलाकर वडोदेकी मर्दुमगुमारी (११६४२०) मनुष्योंकीथी वडोदेराज्यमें (५११) स्कुल, वडोदेकेतस्तपर जमानेहालमे महाराज-सियाजीराववहादृर-तरूतनशीनहै विद्या और इल्पकीतरकी-और-सवरिया-याचैनकररही है, वंबइ हातेमें चौथे नंबर शहर बडोदा-बडेबडे शरीफोंके-की,मतीमकान वाजारवडागुलजार—जिसचीजकी दरकारहो—यहां मिलसकती है, इक्का—बगी—हरवरुतकिरायेपर तयारहे वेठकरजहां–जी– -चाहेसैरकरआओ, रैलटेशनसे थोडीदूरपर (४००) फुटलंबी और (१२५) फुटचौडी-बडीकोलेजजिसमें-बी-ए-तकइल्मपढा-याजाताहै वडीलागतकामकानहै, वडेवागमेंचीडियाखानाजिसमें-तरहतरहकेजानवररखेहुवे है. नजरवाग-एकगुलजारचमन जिसमें तरहतरहकीवनास्पति औरपेंडखडे है, एकमहेलमेंफर्समारबलपथर-का-और-अजनवी-चीजेंरखीहुइ--देखकरदिलखुशहोगा, टेशनके पासदोधर्मशाला—वास्तेम्रसाफिरोंके वनीहुइहैजिसमेंबडीधर्मशाला दिवानसाइवकी तामीरकरवाइहुइ निहायतपुरुताहै, अजवा–झीलसें तल्दपानीकाशहरमें लायागयाहै, वडावेमें जीनोकीभावादीकरीव

(२०००) की-और-कइबडेआछिज्ञान जैनश्वेतांवरमंदिर वनेहुवे है, दर्शनकरकेदिलखुज्ञहोगा. घडियालीपोलमं-श्रावकोंकीआवादी ज्यादह,-और--जैनश्वेतांवरमुनिजनोंकेलिये मकानभीइसीमहोलेमें है, वडोदेसेंअगरडभोइकस्वेको जानाहोतोल्रांचलाइनमें वहांजाना, करीव (१४) मीलकेफासलेपर दखनकीतर्फडभोइकस्वा आवादहै, सन (१८९१) कीमर्द्रमथुमारीकेवख्त—डभोइकीमर्द्रमथुमारी (१४५३९) मनुष्योंकी-जिसमेंकरीव (५००) जैनलोगहै. जैनन्थेतांवरमंदिरऔर-जैनजपाश्रय-वगेरावनेहुवे है, डभोइकेमंदिरोंके दर्शनकरकेवापीस वडोदेआना, औरवडोदेसेरवाना होकरवाज्ञवा—वासद-नावली-आनंदजक्रान-आगास-पेटलाद-नार-तारापुर-और-सयापाहोतेखंभातजाना, रैलकिरायानवआना नवपाइ,

👺 [बयान-शहर-खंभात.]

वंवइहातेमं समुंद्रकनारे खंभातशहरपुरानीवस्ती है, सन (१२००) केकरीवखंभातशहर अणहिल्लपुरपटनके महाराजोकेता-वेमेंथा. सन (१२९७) इस्वीमेंमुसलमानो नजव अणहिल्लपुरपाटनकों फतेहिकियाखंभात उसवख्ततरकीपरथा, सन (१६१३) के अर्सेमें जवहिंदमेंअंग्रेजोंकी तरकीहोनेलगी-उसवख्त-पोर्चुगाल-और-होलां-डवालोंकीकोठी खंभातमेंवनीहुइथी, वादजवसुरतकी तरकीहुइ-खंभातकीविजारत कमहोनेलगी, सन (१८९१) की-मर्दुमथुमार रिकेवख्त खंभातकीमर्दुमथुमारी-(३१३९०) मनुष्योंकीथी, जैन थेतांवरश्रावकोकी आवादिऔर कड्वडेबडेजेनमंदिर यहांपरमीजृद है. जिसमेंस्थंभन-पार्थनाथजीका-मंदिरनामी है, मुनिजनोकोटह-रनेकेलिये मकान-और-जैनपुस्तकालय यहांबहुतवडाहे जोकि राजाकुमारपालका कायमिकयाहुवा-ताडपत्रपरिलेखेहुवे जैनग्रंथइसमें

मौजूदहै खुशनसीवोंने किसकद्रइल्मकी तरकीिकइथी! आजउसकी हिफाजतहोनादुसवारहोगया,लकडीऔरपथरकाकामयहांकामुल्कोमें मशहूरहै. अमल्दारीयहांपर नवाबसाहबकी-शाहिमकान वडीलागतके वनेहुवे वाजारवडीरवन्नकका-और-उसमें जिसचीजकीट्रकारहो मिलसकती है, हमने शहरखंभातकों देखाहै, यात्रीयोंकों ठहरनेकेलिये धर्मशालावनीहुइँहै. कोइतकलीफ-नहोगी, खंभातसेंजहाजमें सवार होकर सम्रुंदरकेरास्ते--कार्वा-गंधारतीर्थकोंजाय, जोकरीव--सात कोज्ञकेफासलेपरहै, कार्वा-औरगंधार-दोनों अलगअलग कस्वे है मगरवसवव तीर्थकेएकहीनामसेमञहूरहै, दोनोमेंबडेवडे कीमतीमं-दिर बनेहुवे-एकमेंतीर्थंकर रिषभदेव-और एकमेंतीर्थंकर धर्मनाथ-जीकीमूर्त्ति-तरुतनशीनहै, गंधारमें अमीझरा-पार्श्वनाथजीकी मूर्त्ति निहायतेखुबसुरत-दर्शनकरके दिलखुशहोगा, धर्मशाला दोनोजगह वनीहुइ-यात्री-इनमेंकयामकरे-और-तीर्थकी जियारतहासिलकरे, कावी-गंधारमें कोइजैनश्वेतांबरश्रावकनही. खंभातकेजैनश्वेतांबरश्रा-वक इसतीर्थकी निगरानीरखतेहै, कार्वी-गंधारसेंफिरउसीसमुंदरके रास्तेखंभातआवे और खंभातसें रैलमेंसवारहोकर-सयामा-तारापुर नार-पेटलाट-आगास-आनंद-वोरीआवी-नाडियाद् -महम्मदावाद् -और-बारेजाहोतेहुवे शहर अहमद्वादको जाय, रैलकिराया दश आने नव पाइ.

🖙 वियान-शहर-अहमदाबाद,

वंबइहातेमें मुल्कगुजरातका शिरोताज सावरमतीके वायेकनारे अहमदाबाद एकगुलजारशहरहै, -वंबइके कुलावेटेशनसे (३१०) मील उत्तर-अहमदाबाद-जंकशन-वडीलागतका बनाहुवा-झला-झल दौलत-रंगरीशनिकयेहुवेमकान-और-खूबसुरत-कमालहुस्न- मई-औरत-हरजगह नजरआते है, पेस्तर अहमदाबादमें (३६०)
महोले आवादथे, औरवडीरवन्नकथी. अबभी किसीकदर कमनही.
इक्षा-वर्गी-हरजगह तयारमिलते है, किरायादेकर जहां-जी-चाहेसैर
करआओ.-सन (१४११) इस्वीमें सुलतान अहमदने-शहर-पनाह
बनाया-अहमदाबादकी तरकीकिइ. सन (१४८६) में-महम्भुदशाह
वेगडाने शहरपनाहकों दुरस्तकरवाया, सन (१५११) में अहमदाबादकी आवादी और तिजारतवढी, सन (१५७३) में वादशाहअखबरने-अहमदाबादकों फतेहिकिया, सन (१७३८) में महाराजदामाजी-गायकवाडने अहमदाबादके तस्तपर अपनीअमलदारीकिइ,
जमानेहालमें राज्यअंग्रेज सरकारकाजारी है. मुल्क गुजरातमें-सुरत
भरुअछ-खेडा-पंचमहाल-और-अहमदाबाद-ये पांचअंग्रेजी-जिले
है.-महीकांठा-रेवाकांठा-येभी-एजंन्सी है,

सावरमतीनदीकापट (६००) गजकाचौडा हरवस्त गहरापानी इसमेंभरारहताहै, अरवलीपहाडसें निकलकर दखन-पश्चिमकों (२००) मीलतक वहतीहुइ खंभातकेपास सम्प्रंदरकीखाडीकों जामीली. शहरसे (३॥) मीलबूर्वीत्तर फौजीलावनी वडीगुलजारजगहहै, अहम्मद्रावादकी मर्दुमपुमारी फौजीलावनीकों मिलाकर (१४८४१२) मनुष्योंकी, देशनकेसामने वास्तेम्रसाफिरोंके धर्मशालावनीहुइहै, यात्रीइसमें कथामकरे, शहरकीसडकें लंबीचौडी-और-रातकों उनपर लालदेनोंकी रोशनीहुवा करती है, मानकचौक-जहोरीवाडा-मांड-वीपोल-पतासापोल-दाणापीठ-वगरावडेवडे महोलेहे. जैनश्वेतांवर मंदिरअंदाज (१२५) वडीलागतके और पुख्तावनहुवेहै, वतौर चै-त्यालयके लोटेलोटेकइमंदिरहै, शहरकी उत्तरक्त सडकसें (६००) गजद्र हठीभाइका तामीरकरवायाहुवा तिर्थकर धर्मनाथंजीकावडा आलिशान-मंदिर-काबीलेदीदहै, सन (१८४८) मेंयह (१००००००)

लाखरूपयेकी लागतका तामीरकरायागया, (१३०) फुटलंबा-और (१००) फुट चौडा-चारोंतर्फ छोटेछोटे (५२) मंदिर और उन्नमंत्र्र्तियें जायेनशीनहै, तीर्थकरधर्मनाथजीकी मूर्त्ति—निहायत खूबसुरत-और इसके ललाट और खंधोपरमयजवाहिरात-सोनेकेपते लगेहुवेहै, शहरमेंजैनसानियोंको टहरनेकेलिये कइमकान-कइजैन पुस्तकालय-और पाटशाला यहांपरवनीहुइहै, चांदिका-रथ-पालखी और-देवमूर्त्तियोंकेगहने-उमदासेंडमदा यहांवनायेजाते है, सल्मे-सीतारेकेचंदोए-रुमाल-जैनसानियोंकेलिये-काष्टकेपात्र-तर्पणी और रजीहरणवगेरा जोजोचीजें जैनोंकों—वास्तेधर्मोपकरणके दरकारहोती है यहांवनाइजाती है, कइलेखकलोग यहांजेनपुस्तकलिखतेहैं ज्ञा-पखानेभीयहां कइहै और उनमें उमदािकताव छपतिहै.

अहमदाबादका कमख्वाव-एक-मशहूरचीजहै, अहमदाबादी कागज निहायतपुरुता-और-ष्ठुटकोमेंनामी है, -अहमदाबादकीदस्त-कारी-जिसनेदेखी हजारहजारतारीफिकिइ, बडेबडेडमदा कारीगर यहांमीजूदहै, जैनबोर्डिंग-श्राविकाशाला-और-जैनअस्पताल-यहां बनेहुवेहै, -व्याकरण-काव्य-कोस-न्याय-और अलंकारके पढेहुवे आस्रादर्जिके विद्वान-और-निमित्त ज्ञानी पंडित-यहांके प्रुटकोंमें नामी है.

अहमदाबादसे रवानाहोकरसावरमती—आमलीरोड-सानंद-छारोडी-जाखवाडाहोतेहुवे-टेशनिवरमगांव-जाना, रैलिकरायादस आने, अहमदाबादसे (४०) मीलपश्चिमकों विरमगांवएकवडाकस्वा है, मर्दुमशुमारीवीरमगांवकी (२३२०९) मनुष्योंकीऔर करीब (२०००) जैनश्वेतांवरलोग यहांपरआवादहै, जैनश्वेतांवरमंदिरऔर सुनिलोगोकोठहरनेकेलिये मकानवनेहुवेहै, टेशनकेपास सरकारी धर्मशालामीजूदहै, इसमें मुसाफिरलोग व-ख्वी कयामकरे, को इमना नही, वीरमगांवकी चारों तर्फ पुरुताकोट-कपडेवनाने की मील-अस्प-ताल-स्कुल-और-कचहरीवगेरा वडीलागतके मकानहै, बाजारमें जिसचीजकी दरकारहो मिलसकेगी, वीरगांवसें सांवलीरोड-लीला-पुररोड-लखतरहोते हुवे बढवान जंकशनजाना, रैलकिराया आठआने,

वीरमगांवसे (३९) मीलदखनऔर अहमदावादसें (७९) मीलपश्चिमकों वढवानएकनामीश्चहरहै, छावनीऔर वीचशहरकेकरीब (४) मीलकाफासलाहोगा. जिलेकाठियावाडमें बढवानएकपुराना शहरहै, औरयहांसेकइ रैलवेलाइनगइहै, बढवानकी मर्दुमथुमारी (२४६०४) मनुष्योंकी-जिसमेंकरीव (२०००) दोहजार जैनप्वे-तांबरश्रावक आवादहै, जैनश्वेतांवरमंदिर-औरयात्रीयोंकों टहरनेके लिये धर्मशालायहांबनीहुइहै. वढवानकीचारोंतर्फ पथरकीदिवार-दखनकीतर्फराज्यमहेल-और-स्इकीतिजारत यहांपरज्यादहहोती है, बाजारगुळजार औरजिसचीजकीदरकारहो यहांमिळसकेगी, सरका-रीऔफिस–जैल्लाना–अस्पताल—घडीकावुर्ज-–धर्मशाला–और– स्कुलबडीलागतके मकानहै, वढवानराज्यमें (२०) स्कुले-और-उसमेंकरीव (१३००) लडकेइल्मपाते है, बढवानसें एकखुक्कीसडक राजकोटकोंगइहै; वढवानकेमहाराज-झालाराजपुतकहलाते है. और धर्मपरसावीतकदमहै, बढवानकेंपमें एकजैनश्वेतांवरमंदिर औरधर्मशा-लावनीहुइहै, वढवानसंआगे लींमडीकोंजाना, रैल्फ्रिकरायाचारआने,

धोलाजंकशनसें (५५) मीलउत्तर झालावाडमांतमें एकछोटी नदीकेउत्तरकनारे लींमडीकस्वा आवादहै, लींमडीकी मर्दुमशुमारी (१३४९७) मनुष्योंकी-जिसमेंकरीय (२०००) दोहजारजैनश्वे- तांवरश्रावकलोग आबादहै, जैनश्वेतांवरमंदिर औरवहुतवडीआलि-श्रानधर्मश्राला एक-जैनश्वेतांवरश्राविका-श्रीमती-पुरीवाइकीतामीर किइहुइ यहांपरमौज्दहै. यात्रीलोग इसमेंकयामकरे आरामकीजगह है,-लींमडीराज्य काठियावाडके दुसरेदरजेकेराज्योंमेसें एकदेशीरा-ज्यहे, महाराजलींमडी झालाराजपुतकहलातेहैं उमदाराज्यमहेल-अस्पताल-और-कच-हरीयहांपर वडीलागतकेमकानहै, लींमडी राज्यकी जमीनसपाट-और एकलोटीनदी इसमेंबहतीहै, रुइ और अनाजकी पेदायशज्यादह और लोग मिलनसारहै.

लींमडीसे रेलमेंसवारहोकर-चुडा-रानपुर-कुंडली-बोटाद-उ-जलवाव-धोलाजंकशन-और-सनोसरा होतेहुवे-सोनगढटेशनजाना रैलिकराया एकरुपया,-टेशनसोनगढपर जैनिश्वतांवर यात्रीयोकों ठहरनेकेलिये धर्मशालावनीहुइ-ठहरनाहो-एकरात-यहांठहरे-या-तीर्थशत्रुंजयको जानेकेलियेआगेकों रवानाहोवे,-तीर्थशत्रुंजय-यहांसें करीव (७) कोशकेफासलेपरहै, और इका-बगी-बेलगाडी वगेरा सवारी तयार मिलती है,

🎾 [तवारिख-तीर्थ शत्रुंजय,]

(करीबदाहेरपालीताना-जिले-काठियावाड-मुल्कसौराष्ट,)

मुल्क-सौराष्ट्र-पेस्तरवडेघेरेमें आवादथा. झालावाड-गोहल-वाड-सौराष्ट्रपदेश-और हालारइसीके भीतरहै,-सोनगढटेशनसे(७) कोश्चदूरपलिताना एकगुलजारशहरहै, तीर्थकरमहावीरस्वामीके नि-वीणहुवेबाद (४६७)-और-विक्रमसंवतके (३) वर्ष पेस्तरजैनध-मैंके वडेआलिम पादलिप्ताचार्य-यहांपधारेथे. जबसें शहरपालिताना

आवादहुवा, पेस्तरयहांआदि पुरशहरआबादशा, ब-सबबतीर्थ भूमि-केयहां हरवरुतरवत्रक वनीरहती है, कोइदिनऐसा-नहोगा-जो-यहां यात्री-न-आयेहो. सन (१८९१) की मर्दुमग्रुमारीकेवस्त पालिता-नेकी मर्दमशुमारी (१०४४२) मनुष्योंकीथी. जैनश्वेतांवरश्रावकोके घरकरीव (५००) पैदाश-रुइ-और अनाजकी ज्यादहहोती है, दि-वानी-फोजदारी महकमे यहांपर वनेहुवे है, पालितानेकेनीचे एकनदी हमेशांबहती है, शहरमें जैनश्वेतांबरमंदिर (३) सबसेबडा तीर्थकरिष-भदेवभगवानका-दूसरा गोडीपार्श्वनाथजीका, नयेपुरेमे पासमोतीक-डीयाकी धर्मशालाकेऔर बहारशहरके तलहटीके रास्तेपर तीसरा वाबुमाधवळाळजीजहोरी कळकत्तेवाळोंका, तीनोमंदिर शिखरबंद बडीलागतकेवनेहुवे है, दर्शनकरके दिलखुशहोगा, कारखाना आनं-द्जी कल्यानजी-जोकि-तीर्थ-शत्रुंजयका एकखजानाहै, मुनीम-गु-मास्ते-नोकर-चाकर-पंटा-घडियाल-चौकीपहरा-और--चपरासी वगेरा सवठाठ ज्ञाहानावनाहुवा, नोवतखाना यहांपरदिनमें चारदफे वजताहै. और हमेशां अमनचैनवनाहै, पालितानेका वडाबाजार राजमहेलसेंलेकर मांडवी–और आगेश्चत्रंजयदरवजेके वहारतकचला गया, खानपानकीचीजें−मेवा−मिटाइ−पुरी−कचौरी-आटा−दाऌ-घी द्ध-जितनाचाहेलेलो ! सोना-चांदी-कपडा-फल-फुल-सबचीजें यहांपरमिलती है. जोकोइयात्री यहांआताहै आरामिँ-और-चैनपाता है. धर्मशाला यहांपर कइवनी है,—

- १, सबसे वडीधर्मशाला शेट मोतीशाहकी.
- २, दूसरी हेमाभाइशेटकी.
- ३, तीसरी हडीभाइशेटकी.
- ४, चौथी मोतीकडियाकी, जोकिं-हेमाभाइशेटका कारकुनथा,
- ५, पांचवी राधनपुरवाले मशालियाकी.
- ६, छठी सुरतवाले डाह्याभाइ-भूपणशाहकी.

- ७, सातवी भंडारीजीकी,
- ८, आठवी अहमदावादवाले, सुरजमलजीकी,
- ९, नवमी अहमदावादवाले ललुभाइकी.
- १०, दसमी पटवा जोरावरमलजीकी,
- ११, ग्यारहमी जोधपुरवाले राजारामजी गडियाकी.
- १२, वारहमी शेठ नरसिंह नाथाकी.
- १३, तेरहमी शेठ नरसिंह केशवजीकी.
- १४, चौदहमी मोती सुखीयाकी.
- १५, पनराहमी गोधरावाले रतनचंद वीरचंदकी,
- १६, सोलहमी जामनगरवालोंकी,
- १७, सतराहमी वाबुधनपतसिंहजीकी.
- १८, अटारहमी सुरतवाले कस्तुरचंद्जी परतापचंदजीकी.
- १९, उन्नीसमी बाबु पन्नालालजी पुनमचंदजीकी,
- २०, बीसमी कोटावाले मोतीचंदजी करमचंदजी, सकनाये पाटन-मुल्क गुजरात,
- २१, एकीसमी भरुअछवाले रतनचंदजीकी,
- २२, वाइसमी कलकत्तावाले वाबु माधवलालजी जहोरीकी,
- २३, तेइसमी कछी देवजी पुनसीकी,
- २४, चोइसमी सुरतवाले नगीनदासजी कपुरचंदजीकी,
- २५, पचीसमी भावनगरवाले अमरचंद जशराजजी वहोराकी.
- २६, छवीसमी उज्जमवाइ अहमदावादवालोंकी.
- २७, सताइसमी वडोदेवाले प्रेमचंद मोदीकी.
- २८, अठाइसमी, गोघावालोंकी.

औरभीकइ धर्मशाला यहां बनरही है, यात्रीइन धर्मशालामें जहां दिल्ज्वाहे क्यामकरे, कोइमना नहीकरसकता,

🅦 [तालीम-धर्मशास्त्र,—]

तुम इसवरूत तीर्थमेआयहो धर्मपरसाबीतकद्मरहो, गेरजग-हकााकियाहुवापाप तीर्थमें छुटसकताहे, मगरतीर्थमें कियाहुवा निका-चितपापहर्गिज! नहीछुटसकता. तीर्थमंआनकरइइक-और-मोहब्ब-तसें परहेजकरो, तावेडमर दुनियादारीके झगडोमें फसेरहे-अब-मुस्तीरफाकरो. औरधर्मपर कोक्षिशकरो, जिससेतुमारा वेंडापार हो, तीर्थमें आनकर बुरेकामोंकी गुकतगु मतकरो जिससेतुमारीरुह दोजककी सफरकरे, शास्त्रोंकाफरमाना दुरुस्त औरसहीसमझो, इस परशक मतलाओं, खयालकरों! दुनियाकेकामोंसें तुमिकसकदर हेरानपरेशानहुवे,---इसवख्ततीर्थमें आयेहो–ऐसामतकरोकि–वेरंगरह जाओ. देवगुरु धर्मकाहमेशां एहसानमानो, बदौलतजिसकी तुमने मनुष्यका चौलापाया उसकोंमतभ्रलो, हमउसकों खुशनसीव समझ-ते है-जो-धर्मकों तरकीदे. यहख्वयादरखोकि-धर्महीदुनियामें उम-दाचीजहै, तकदीरउसीकी खुवसुरतहै-जो-धर्मकीवढवारीकरे, ज-वानी चर्छागइ, मगरक्याकसुरहै उसका ? जवानी किसीकी कदीमहो-करनहीरही. धर्महीतुमारा कदीमीदोस्तहै. तीर्थमें आनकर रहमकरो, जिससेआइंदे तुमाराभळाहो, तीर्थमेंआनकर पर्देकोंस्कसतदो, तक-रारऔर हुज्जतमतकरो, एकतोकडुआकरेला और दूसरानींबका असर, फिरतोक्याकहना ! हजारवातकीएकवात, तीर्थमेंआनकर नेंकीकरो, और इसवातपर शुकरगुजारोकि-तीर्थकीजियारततुमकों नियामतहुइ. पूजाकरनेकाढंग तुमकोयाद-न-हो-तो-ब-जरीयेकि-तावकेअपना कामचलाओं, यादरखों! जवानीजमाखर्चसें कुछकाम न-चलेगा, तवीयत नादुरस्तका वहानालेकर धर्मकोंमतछोडो.

जिसकोंतुम अपनासमझतेहो-वही-वेंगानाहै. गाफिलमबबनो, याद्रहे! किस्मतकी कमनसीवीपर किसीकामिजाज नहीचलता,

वेटावेटीकेविवाहमें हजारोरुपये वरबादकिये, धर्मपरएककोडीभीनही दिइगइ, क्या ! इसीपरघमंडकरतेहोकि-हमनेबहुतकुछधर्म करदिया. तीर्थमें आपसकाझगडा करनावेंकारहै. आफतकीभरीवात घरपरच-लायाकरो, यहांतीर्थकीजगहहै इसमें आनकर इवाद्तकरो, खैरात दो ! गरीव और रोटीयोंके मोहताजोपर रहमकरो, तुमारेपासवहुत कुछरुपयेपेसे हानिरहै-फिर! क्यों! सुमवनतेहां? क्या! दौछत तुमारेशाथचलेगी ? देखलो ! किसकदर खुशनसीवोंने तीर्थोंमेंआ-नकरदौलत सर्फिकिइ है ? तुमकोंपांचरुपयेदेते दर्दहोताहै, वडीशर्म-कीवातहै. अछेखानदानहोकर द्छेरनहीवनते, तीर्थीमेंआनकर कुछ दिनकयामकरो, औरजलदीमतकरो, तमाममंदिरोंकी और तीथोंकी जियारतकरो, अगरतुमको यहांपर कोइवेंग्रुनासिव वातकहे उसपर ग्रस्सामतकरो, तुमर्तार्थमेंआयेहो, डूवतेकोंतिनखाभी सहाराह्मेताहै नेंकवक्षोकों चुपरहनाहीबेहत्तरहै, इवादतकीजगह तकरारकरना कोइ जरुरतनही, जिसनेधर्मकीजगह वेंइमानीकिइ उसनेआळादुर्जेकी ग-लतीकिइ, अपनेदहींको कोइखटानहीकहता, मगरतारीफहै उनकी जोअपनीभूळकों कुबुळकरे. तकदीरकेआगे ततवीरनहीचळती,मगर धर्मउसवख्तभी फायदेमंद होताहै, तीर्थोमेंजाकर अगरदंगाफिसाट कियातो जियारतका बद्मजाकरदिया, आखरकारधर्महीका वेंडापार है, अगरतमने तीर्थमंजाकर लडाइलडीतो कुछनहीकिया, बल्कि ! जि-यारतको पायमालकिइ, रुकेउससेरुकिये--और--बुकेउससेब्रुकिये, इसवातकों यादकरो ! जोअपनेसेंनेंकीकरे, उससे अकडमिजाज मत रहो. हमेशां खुशमिजाज होकर धर्मकरो, चाहेकोइकेसाही शैरआ-दमीहो-मगरजहांखर्चका कामआनपडे सियारवनजाताहै, औरकह-ताहै हमपरक्यासितमगुजरा, मगरयहखूबसमझोकि-दौलततकदीर-कीदासी है, एकवागकेदोफल कहांइमली औरकहांआम! एकआ-स्मानकेदो-सितारे-कहां सूर्य-और चांद !! अगरतुमारी तकदीर

तैजहै-तो-दौलतिफर आनकर मिलेगी, धर्ममेंबखीलहोना कोइजरु-रतनही, जबदौलत झलाझलहै-तो-खर्चकेलिये क्यौंचपरहजातेही, इतवाररलो धर्मपर, हकीकतमें सबधर्महीकाफलहै. अंधेरकारीकी तरहसबकों एकभाव--न-समझो. दरयाफतकरलो दौलत और धर्म इसमें कौनवडाहै? धर्मकों भ्रुलगये जभीतो यह तकलीफ हासिलहुइ खेर ! कोइग्रुझाखानही. आदमीकुछखोकरही सीखता है, सुमकीनहै कुछधर्मकीराहपरदेना, दौलतचंदरौजकी है और धर्म हमेशांकाशाथी है, अगरशुभहका सिताराआफतावके आगेचलेतो वह आफतावनहीहोसकता, रिस्तेदारोकी तकरारकानिवेडाकिया मगरअपनानिवेडा कवकरोगे ? तीनहिस्साउमर बतीतहोगइ मगर परलोककारास्ता साफनहीकिया, जोकुछधर्मकामकरनाहो, पीछेंप-तरखो, न-माऌमिकसवरूत क्याहोजाय? दौलतखाना-मकान औरलडके तुमारेसामने तयारहुवे, बुजुर्गीका कहनाहै धर्मकरो ! नसीहतकेवरूत इसदेतेहो यहएकगुनाहहै, दावतमेंसवलोग आतेथे मगरवीमारीकेव प्लत कोइपासतकनही आया, कोइआदाव अर्ज कहने-षालेभी नहीं आये, अवतीर्थमें आयेही पनाहलो ! देवग्ररूथर्मकी और इवादतकरो तीर्थकर देवोंकीजिससें तुमारादुखसें निस्ताराहो, बाग षगीच--इतरफुलेल--उमदापुत्राक और खर्चआमदनीका हिसाब मिलाते जिंदगीतयहुइ, जिसनेतुमारेशाथ नर्ददमाकीखेलीथी-वेभी--चल्रेगये, वफादारबेंबफाढुवे, नोकरचाकर जवाबदेगये, अखबार-पढनेका शौखथा-वहभी दौलतकीतंगीसे कमहुवा, कोइभीम्रराद हासिलनहीहुइ, अबतो यकीन लाओ! धर्मपर, बडेबडेखुशनसीब-धर्महीसे पारहुवे, खजानाखुक्कहुवा. जवानीपायमालहुइ, सलामतहै

अवभीतुमाराधर्म-जोिक-तुमकोंजहुर देरहाहै.-इसीलिये कहाजाताहै तीर्थमें आयहो, वरूतगाफिलरहनेकानही, धर्मकरो,—

🖙 [द्रबयान-पहाड-शत्रुंजय,]

आमतीर्थेका शिरोताज शत्रुंजयपहाड निहायतपुरानातीर्थ है, इसतीर्थकी बुजुर्गी सबसेज्यादह-जिसने इसतीर्थकी जियारतिकइ गोया ! दोजकसे अमन-वा-अमानहुवा, जैनमेंयहतीर्थ बहुतमशहूर और मारुफहै, जगहनिहायतपाक! विलेक पहाडक्याहै!! मानींदे बहिस्तका एकगुळजारवागहै. जमीनदिळकश खुशनुमाकाविलेदीदहै, तीर्थकर रिषभदेवमहाराज इसतीर्थपर पूरवननानुदकेआये, और यहांपर ध्यानसमाधिकिइ, इसीलिये ननानुयात्राकरनेका रवाजयहां परजारीहुवा, भरतचक्रवर्ती जोकि-तमामभारतवर्षका वादशाहहुवा अयोध्यासे पैदलचलकर इसतीर्थकी जियारतकों आयाथा. ज्ञाथमें बडेबडेराजेरहीस और लवाजमाथा. जवाहिरात-औरमोतीयोंके थालोसें उनोनेइसतीर्थका नसारिकयाथा, (यानी) वधायाथा, और जियारतहासिलकिइथी. वडेबडेटौलतमंद्र और खुश्चनसीबया-त्री यहांपरआचुके है, जैनोमेंकाविल इसकेदुसरातीर्थनही. सिद्धा-चल-विमलाचल-सिद्धक्षेत्र--तीर्थाधिराज--औरकंचनगिरी--ये-सवइसीतीर्थकेनामहै, पेस्तरयहांपर पारसप्थ्यर होताथाकि-जिसके लगानेसे सबधातसुना होजातीथी. ऐसीऐसी जडीबटीयां यहांपर पैदाहोतीथीकि-जिसकोघीसकरअगर बदनपरलगाइजायतो आहमी अदृश्यहोजाताथा. हरतालजैसे पीलेरंगके पथ्थरयांइसिकस्मके हो-तेथेजोद्धकेशाथ द्यीसकर वदनपरलगायेजाय तमामबीमारीयांरका होजातीथी. ऐसीऐसीताकतवर वनास्पतियहांपर मौजुद्यीकि-

निसकेखानेसे आदमीवेशुमार ताकतवालाहोसकताथा, शैर-भाल तेंदुए-त्रगेराजानवर यहांहरवख्तरहाकरतेथे, अवुभी चीतावगेरा यहांनजरआतेहै, जवाहिरात औरमुनेकी-खानयहाँपर मीजूद्यी, मौर−तोते−कोयऌ−मेंना−चीडियावगेरा तरहतरहके परींट्यहां इ-ख्तोंपरकलोले करतेरहतेहै, तरहतरहकीवनास्पति यहांपरखडी है, पानीकेहीज-वा-फुवारेयहांपर हमेशांतयार-व-पाकवनेरहते है, क-हांतकवयानकरे मानींदेसेव-वहिस्तहे.

वडेवडेमहर्षियोंने यहांपर ध्यानसमाधिकिइ, पेस्तरकेजगानेमं पहाड वडालंवा चौडाथा-आजिदनपरिदन कमहोगया. मगरवारह कोशकेयैरमें अवभीहै, शत्रुंजयनदी पहाडकी दामनमेंहमेशां वहती है. निम-विनिमिविद्याधर इसतीर्थपर मुक्तिपाये. तीर्थकरअजित-नाथमहाराज इसतीर्थपर वारीशके चारमहिनेटहरे और धर्मकों रौशनकिया, दंडवीर्यराजा जोकि–भरतचक्रवर्तीकी आठमीगदीपर तख्तनशीनथा, इसतीर्थपर वडेवडेआलिशानमंदिर मुर्चैवनवाइ, और पुरानेमंदिरोंकी मरम्मतकरवाइ, सगरचक्रवर्तीने वडेसंगीन मंदिरऔर खुबसुरतमूर्त्तैयहांपरतख्तनशीनकिइ. जमानेतीर्थंकरचंदा-प्रक्षेत्रचंद्रयशाराजाने यहांवडीलागतकेमंदिर तामीरकरवाये. और धर्मकी निहायततरक्कीकिइ. तीर्थकरशांतिनाथमहाराजने इसपहाड-परचारमहिनेगुजारे, औरधर्मकोंरवन्नकदिइ, छत्रपतिचकायुधराजाने यहांबडेआलिशानमंदिर औरमुर्त्तेजसीमबनवाइ,-औरपुरानेमंदिरों-कोंमरम्मतिकया, रामचंद्रजीऔरल छमनजी जोकि-अयोध्याकेतस्त परवडेमशहूर औरमारुफहुवेइसपहाडपर उनोनेवडीलागतके मंदिर वनवाये, औरजिनेंद्रोंकीमुर्त्तेंतामीरिकड़. पुरानेमंदिरोंकी मरम्मत औरवेंथुमार दौळतसर्फकिइ. चंदराजा–जोकि–आभाषुरीकाळत्रपति राजाथा इसीपहाडपर सूरजकुंडकेजलसेंस्नानकरके तंदुरस्तहुवा. यु-

धिष्टिर-अर्जून-भीमसेन-सहदेव-और-नकुळ-ये-पांचपांडवजोकि दुनियामेंबडेबहाद्रहुवे इसपहाडपरबडेबडे-खूबसुरतमंदिर औरमुर्ते तामीरकरवाइ. पशुम्नकुमार औरशंवकुमारइसीतीर्थपर आनकरप्र-क्तिकोंपाये, थावचाकुमारऔरशैलकराजिंगे-यहां ध्यानसमाधि किइऔरमोक्षकोंगये. जाली-मयाली-उवयालीऔर देवकीजीकेछल डकेइसीपहाडपर अनशनकरकेम्रुक्तिमें कायम-व-दायमहुवे, रामचं-द्रजीकों-पांडवोंकों -औरकृष्नजीकों वैदिकमजहबबाले-उनकेमजहब-केप्रवर्तक-व-नायबबतलाते है औरजैनिकताबोंकीरुसे-ये-महाशय जैनीथे, छत्रपतिसंपतिने इसपहाडपर वडेकिमतीमंदिरऔर मूर्ते तामीरकरवाइ. विक्रमसंवत (१०८) में मुल्ककाश्मिरके व्यापारी जावडश्चाहनेइसपहाडपर वडेआलिशानमंदिर औरमूर्त्तेवनवाइ और पुरानेमंदिरोंकीमरम्मताकेइ. छत्रपतिराजाकुमारपालके-दिवानवा-इडमंत्रीने (२५७०००००) दोकरोडसतावनलाखरुपये खर्चकरके इसपहाडपर वेंसिकमितीमंदिरतामीरकरवाये औरखुवसुरतमृर्तेतिख्त-नशीनिकइ. संवत् (१३७१) मेंसमराशाहओशवाल जिसकासि-ताराबुलंदथा वडेवडेपुरुतामंदिर औरमूर्त्तेइसपहाडपर बनवाइ. संवत (१५७८) में कर्माशाहशेठ जिसकामुवारकनाम आजतकमशहुरहै इसपहाडपरआनकर बुलंदशिखरवंदमांदिर औरतीर्थकररिषभदेवभ-गवानकी आलिशानमूर्त्तिवनवाइ. औरएककरोडसेंज्यादहरुपयेखर्च किये, क्या ! उमदाकारिगरी-शिखर-और-गुंवजोंकाकाम-आलि शानचौक औरघेराव-देखकर मानींदोगिर्दा-आस्माननजरआताहै, तमामहिंदमेंजितनीजैनमूर्त्ति है मगरइसकीसानीएकभीनहि. कर्माशाह शेठकीकहांतकतारीफकरोकि–जिनोने अपनेलियेद्रवजा बाहिस्तका सौलदिया, खुशनसीवहोतोऐसेहो. इसतीर्थपरवडेवडेसोलह उद्धार ्हुवे, अख़ीरकाउदारइसीकर्माशाहगेढने करवाया,

ऐसेपाकतीर्थकी हरवख्तइज्ञितकरनाचाहिये. जिसनेइसकीवेंअदबीिक इगोया ! उसनेअपनीतरक्कीकोखाखमें मिलाइ. पांचवेआरेकी अखीरमें तमामजैनतीर्थवरबादहोगें मगरउसव्यान इसतीर्थका
रिषभकुटिशिखर देवोक रकेपूजनीक रहेगा, बडेबडेगुनहार औरपापी
इसतीर्थकी जियारतसेंपाक हुवेहें, जिसकेवडे भाग्यहो इसतीर्थकीिजयारतकरें, मंदिरमूर्तिवनवावे, औरचवर छत्रवगेराची यहांपरभेट
करें, जैनाचार्य भद्रवाहुस्वामी – व ज्रस्वामी – और – पादिल्पाचार्यने
इसतीर्थकी तवारिखिलखी. मगरजमानेहालमें – वे – सबनेस्तना बुदहुइ
आचार्यधनेश्वरसूरिजीने जोतवारिखिलखीथी अवमी जुदहैं, जिसका
नामश्रवुंजयमहात्म मशहूरहैं, –

शहरपालितानेसे द्खनकीतर्फ शत्रुंजयपहाडएककोशकेफासले-परशुरुहोताहै, छोटेबडेतीनहजारजैनश्वेतांवरमंदिर इसपरबनेहुवेजि-सनेइसतीर्थकी जियारतिक इमकसद दोंनों जहानकाषाया. शहरपा-लितानेसे शत्रुंजयपहाडकीतराइतक सडकपकीवनीहुइ-दोंनोंतर्फब**ड**े बडेगुलजारपेंड औरदरूतलगेहुवेहैं, सवारीइका-वगी-जोचाहोमिल सकेगी. पैदलजानेवालेपैदलजाय कोइतकलीफ-न-होगी. यात्री-योंकाहरवख्तमेंलायहांबनारहताहै. जिसमेंकातिकऔरचैतकीपुनमकों ज्यादहहोताहै. शहरपालितानेसे पहाडशत्रुंजयकोंजाते-अवल पु-रानीतलहटी-चौइसतीर्थंकरोके चरण-और-पकीवनीहुइ छत्री मिलेगी, इसकेदर्शनकरके आगेकोंचलनाचाहिये. थोडीदुरपर शेठ भूषणदास सुरतवालोकी वनाइहुइ निहायतखुशगवार पानीकी वावडीऔर चरणपादुकाकी एकछत्रीआती है, इसकोंरानावावडीभी बोलते है, आगेइसके पहाडकीदामनमें खासतलहटी-उमदाधर्मशा-ला–दोछत्रीयें–बगीचा–मीठेपानीकीवावडी-–चारउपदा उपदार्बेठ-के-जिसपरकरीव पांचपांचसोआदमी-ब-खूबी-बेठसकते है, बडी रवनक जगहहै.--

जिसकों खानपानकरनाहो इसजगहकरे, जंगलजानाहो यहां जावे, आगेपहाडकेउपरव-सववपाकी औरताजगीके जंगलजाना-न-होगा, क्योंकि-तमामपहाड जायेअद्वकाहे, यहांतकि पावमें जुताभीकोइ जैनीनहीपहनता. यात्रीलोग शुभहकों पहाडपरजातेहें और-जियारतकरकेशामकों पीलेलोटआते है, पहाडपर चढनेकेलि-यम्याना-व-डोलीवगेरातयारिमलती है. अगरकोइ पेटलजानाचा-है-तो-इिल्तयारउसके है. शत्रंजयपहाड समुंदरकेपानीसें (१९८०) फूटजंचा, पहाडपरचढनेकेलिये पथरोंकी वेंडोलसीढीयें वनीहुइ है, कोइखुश्चनसीव यहांपरऊमदा सीढीयेवनानाचाहे वनसकती है, मगर खर्चकाकाम ज्यादहहै, पहाडकीशरुआतमें रास्तेकीदोंनों तर्फदोहा-थी इंटचुनेकेवनेहुवे निहायतखूत्रमुरत गोया! सचेहाथी यहांपर आनखडे देखलो,

इसपहाडकी इज्जतजैनोमें यहांतकमशहूरहैिक-अगरकोइयात्री पहाडपरजाय-व-मुजबअपनी हेसीयतकेमोती-और—जवाहिरात नसारकरे, जवाहिरातकीताकात-न-हो-सुन्नेकेवनेहुवे फूलोंसें न-सारकरे, जिसकीताकात उससेभीकमहो-तो-चांदीकेफुलोंसें--और अगर उसकीभी वसत-न-होतो-चावल-या-गुलाव-चमेलीके फु-लोंसें-नसारकरे (यानी) वधावे-औरिफरअगाडी कटमरखे,-

जहांसेंरास्ताशुरुहोताहै दोनोंतर्फदोवडेवडेदालान-अठाइसलो-टीवडील्रित्रीये जिसमेंसंगमर्भरपथरकाकाम औरइनमेंतीर्थकरोंकेचरन तख्तनसीनहै, यात्रीयहांताजीमकरे, औराफिरआगेंकोंकदम उठावे. थोडीद्रपरचढनेसें रायवहादुर धनपतिसंहजी-साकीनमुर्शिदाबाद-कातामीरकरायाहुवा खूबसुरतमंदिरमिलेगा. इसकेसामनेपश्चिमकी तर्फश्चतदेवीकीएकगुफावनीहुइ, आगेइसकेपीनकोश्चवढनेसें एकइला ्कुंड (चक्री) पानीकाहौजमिलेगा. यहहौजसंवत् (१८३१) सु-स्तवालेशेठ इलाभाइनेतामीरकरवाया. इसके आगेपावकोश बढेतो छत्रपतिमहाराज कुमारपालकावनायाहुवा कुमारपालकुंड-और-आ गेइसके हिंगलाजकाहडा, दिलखुशनुमा-औरहवादारमकानहै, जि-सकेट्सनेसेरुहकों ताजगीमिलतीहै. म्याने-या-डोलीमें जानेवाले यात्रीकोंभी यहांपरपचासकटमउतरनाहोगा. क्यौंकि-चढाव-कठिन है, जगहनिहायत उमदा-और-यहांपरकलिकुंडपार्श्वनाथजीके चरन जायेनशीनहै, आगेइसकेछालाकुंड-मीठेजलकाभराहुवा-और-यहां परचारतीर्थकरोंके चरनोकी छत्रीवनी हुइहै, यहांसेंदो-रास्तेफटे है, दाहनीतर्फकारास्ता श्रीपूज्यजीकीटोंकका-जिसमें तपगछकेश्रीपूज्यों केचरन-और-गीतमगणधर-पदमावतीदेवी वगेराकीमूर्ति तख्तन-शीनहै, वांयीतर्फकारास्ता मंदिरोंकीतर्फकों जाताहै, थोडीदूरपरअ-तिमुक्तकमुनीकीछत्री–द्राविड–वारिखिलकीछत्री–हीरावाइका कुंड और-इसकेआगे पांचपांडवे।की छत्रीकेटर्शनहै, आगे भूषणकुंड-भूष-णशाहशेटसाकीनसुरतका तामीरिकयाहुवा मीटेपानीसेलब्दतरऔर आगेइसकेशैलगराजर्षि शुकदेवजी-थावचामुनिकीछत्रीये वनीहुइहै, आगेइसके दोरास्तेफटेगें. एकरिषभदेवभगवान्की टोंकका-दूसरा चौम्रुखाजीका–रिषभदेवभगवानकी टोंककेरास्तेपर्–जालि–मयालि -उमयालिकीगुफा जिसमेंतीनोकी मूर्त्तिजायेनशीनहै.-

आगेखासिकलेका जहांसेमंदिरोंकी शुरुआतहोती है रामपोल दरवजामिलेगा. इसमेंहोकरिवमलवशीटोंककों जानाचाहिये. जोिक -दखनकीतर्फ है, तीर्थकरिषभदेवभगवान जहांखिरनीहरूतकेनिचे पूरवननानुद्रकेषधारेथे. इसटोंकमेंबडाआलिशानहरूत खडाहै. फा-लगुनसुद्दी (८) मीकेरोजतीर्थकरिषभदेवभगवान यहांअवलआयेथे इसलिये फालगुनसुदीअष्टमीकी यात्रावडीपाकऔरउमदा समझीगइ,

रामपोलदरवजेकेआगे दो-छोटेछोटेवगीचे-निहायतखूबसुरत तरवा -ताजेमिलेगे. इनकेफुलहमेश्वांदेवकों पूजनमेंचढायेजाते हैं, मोतीशाह शेठकीटोंककारास्ताभी इधरकीतर्फसें हैं लेकीन! अवलविमलवशीटों-कर्कोजाकरवापिस आतेवख्तइसटोंककेदर्शनकरनाचाहिये. जवयात्री रामपोलदरवजेतकपहुचे म्याने-डोलीवाले यहांहीठहरजायगें. और यात्रीकोंआगे पैदलजानाहोगा. इसकेआगेरिषभदेवभगवानकी टॉ-ककाद्सरादरवजामिलेगा, इसमेंहोतेहुवे जवआगेचलोगे तीसराद-रवजा वाघनपोलकामिलेगा, जमानेपेस्तरकेएकनहारनीयहांआनकर रहीथी, औरव-दौलततीर्थकेधर्मकीपायबंदहोकर उमदागतिकोंगइ-थी, इससबबइसद्रवजेकानाम वाघनपोलमशहुरहुवा. वाघनकीएक मूर्त्तिकरिब दरवजेकेवनीहुइहै, आगेवाघनपोलदरवजेके तीर्थंकरज्ञां-तिनाथजीका निहायतउमदामंदिर शेठहीराचंदरायकरनसाकीनदम-नकातामीरकरवायाहुवा संवत् (१८६०) काप्रतिष्टितकावीलेदीद मिलेगा, करीवइसमंदिरकेएकमंदिर देवीचकेश्वरीका जोकि−संवत् (१६७८) शेठ-करमाशाहनेतीर्थशत्रुंजयके उद्धारमेंतामीरकरवाया था निहायतउपदाबनाहै. मृर्त्तिचकेश्वरीदेवीकीलाइकदीद औरदि-दारकी है, देवीक्याहै ! गोया !! आइनेमददगारशाथीहै, आगेइसके एकमंदिर तीर्थेकरनेमनाथजीका इसमेंतीर्थेकरनेमनाथजीकीचवरी-समवसरणकाअकस-और-चौम्रुखाजीकीमृत्ति तरूतनशीनहै. आगे इसकेएकमंदिर जगतशेठकातामीरकरवायाहुवा बहुतखुशनुमाऔर लाइकतारीफकेदेखोगे, जबहाथीपोलके दरवजेपरपहुचोगेदो--बडे बडेहाथीदिवारपरवनेहुवे नजरमें आयगें, गोया ! येअसलीहाथीयहां आनकरखडे है, पेस्तरकेजमानेमें द्रवजेमंदिरकेहाथी बनानेकीरसम जारीथी. आजयहरसम कमहोतीजाती है.

छत्रपतिराजाकुमारपालका तामीरकरायाहुवा बडाआलिशान मंदिरइसीहाथीपोलके सामनेखडाहै. सुरजकुंडकारास्ताभी इसहा-

थीपोछ द्रवजेकी दाइनीतर्फथुरुहै जोकि-पाक-और-सफेदपानीसें मानींदे वर्फ जमाहै. हाथीपोल दरवजेके आगे वहुतवडी सीढियां चढकर खास तीर्थकर रिषभदेव भगवान्के मंदिरकों जानाचाहिये. मंदिरक्याहे ? गोया ! शत्रुंजयपहाडका एक जनाहिरातहे, संवत् (१५८७) में शेठ करमाशाहनेइसकों तामीरकरवायाअवललिखचु-केहें, करमाज्ञाहशेठ-जैसे-खुज्ञनसीव-और-मुवारिकसितारे दुस-रेकौनहोगें ? जिनोनेऐसे अजायव कामिकये. जोइनसानकी अकल से बाहरहै, कलमकी ताकातनहीकि-लिखकर वतलादे, जवानकी हेसीयतनहीकि−तकरीरकरसके. स्याहीइतनी मौजृदनहीकि−इसका वयान छिखे. दुनियामें एकसेएकनकासी और शिल्पकारी जाहिर है मगर उस्तादोने यहांआनकर उस्तादी खतमिकइ वडेबडेकारि-गरलोक इसमंदिरका नकसा उतारकरलेजाते है. मंदिरकेवहार वडा आलिशान चौक-शंगेमर्मरकाफर्स-और सेंकडो मंदिरोंकाघेराव दि-लकों मोहेलेताहै, मंदिरोकेशिलर-सोनेकेकलश-धजापताका और झळाझळरोशनी देखकरआदमीकी नजरचकराजातीहै, शत्रुंजयतीर्थ-का यह एकमूलमंदिरहै,-औरइसमें तीर्थंकरिषभदेवभगवानकी बडी आलिशानमूर्त्ति काबीलेटीद और दिदारके वनीहुइ गोया! खास तीर्थकररिषभदेवमहाराज यहां आनकर तख्तनशीनहै. इसम्तिकी तारीफ कहांतकछिखे जिसकीसानी दुनियामेंदुसरी-न-होगी. उ-चाइमें छहाथ वडी-आंखे स्फटिकरत्नकी और ललाटमें हीरास्त्रगा हुवाहै, दर्शनकरके दिल निहायतखश्चहोगा, मंदिरकेभीतरी रंगमंड-पमें शंगमर्परपथरके वनेहुवे हाथीपर राजाभरतचक्रवर्ती औरमरुदे-वीमाताकी खूबसुरतमृत्तिं जायेनशीनहै, यहरचना उसवरूतकी है 🤊 जबिक-तीर्थकररिषभदेवमहाराजकों केवलज्ञान पैदाहुवाथा, भरत-चक्री औरमरुदेवीमाता वास्ते तीर्थंकरिपभदेवजीके दर्शनोंकों आयेथे,

आरमी यह बुबबुरतमू तिये इसमें नायेनशीनहैं. ओंकार और हूँकार खास दर जिके दोनोंतर्फ दिवारोमें मयजिनमू तियोंके बने हुवेदेख छो!

मूलमंदिरकेसामने मंदिरपुंडरीकगणधरका वेंसकीमतीवनाहुवा है, तीर्थकररिषभदेवभगवान्के दर्शनकरकेयात्री इसमंदिरकेदर्शनकों जाते है. इसके दर्शन करके आम मंदिरोंकी परकम्मा−और−नसार करना चाहिये. (यानी) रुपये पैसे असिफेयोंसें ताकातहोतो मो-तीयोसे तिर्थको वधाना चाहिये, तीर्थकर रिषभदेवमहाराजके पी-छाडी-जहां खिरनीकाटख्त खडाहै नीचेउसके तीर्थकरारेषभदेवम-हाराजकेचरन जायेनशीन, अंगुठेअंगुलियोंकेडपर सोनेके पत्तेजडे हुवेइसके दर्शनकरनाचाहिये, इसीजगह तीर्थंकररिषभदेवमहाराज रायनदृक्षकेनीचे पधारेथेऔर ध्यानसमाधिकिथी, एकमंदिरनंदी-**श्वर**दीपका इसमेंनंदीश्वरदीपका आवेहुवआकारवनाहुवादेखलो !--एकमंदिरसदस्त्रक्रटका-एकमेरुक्षिखरपहाडकी रचनाका-और-एकमं-दिरअष्टापद तीर्थकीरचनाका इसकट्रउमदा औरसाफबनाहै जैसे वहोचीजेंळाकर यहारखीहै, एकमंदिरसमेतशिखरतीर्थकी रचनाका निहायतउमदा-जिसकीतारीफ--वेंमीशालहै, कहांतकवयानकरे ! जोदेखताहै वहीजानसकताहै, हरसालकातिकशुक्त पुनमकेरीज इसी विमलवशीटोंकमें रथयात्रा निकलतीई, सोनेचांदीकेरथ–पालखी– और-तरहतरहकेवाजे वगेराजुळळसे मूळमंदिरकीचारोंतर्फ परक-म्मादिजातीहै. सोनेकेकलशे-धजापताका-बाजोंकी अवाजे-और यात्रीयोंकाठाठ-उसवख्तयहां जमाहोताहै, बडेबडेवजंत्री-सारंगी-तवले-हारमोनियम-बेंला-और-जलतरंगवगेरा साजसे गवैयेलोग यहांपर गायनकरते है, जिसशख्शने कातिकसुद पुनमकेरीन श्रृतंजय तीर्थकीयात्राकिइगोया! उसनेखास! वहिस्तदेखित्या, और ती-र्थकरोके समवसरणमें खुदजावेटा, एकतर्फयात्रीयोंके स्नानकरनेकी

जगह—केसरचंदनधीसनेवालेपूजारी-और--एकतर्फगुप्तभंडार बना हुवाहै. फूळवेचनेवालेपालीलोग तरहतरहकेफुललेकर यहां बैठेरहते है यात्रीकोंफुलकीदरकारहो पैसेदेकरशौखसेलेलेवे. दिवानवस्तु-पाल-तेजपालकेवनाये कीमतीमंदिरइसीटोंकमें तामीरहै, विमलवशी टोंककेदर्शनकरके वापिसलौटतेवच्त वाधनपोलकोंआना, शेठनर-सिंह-केशवजीसाकीन मुल्ककलका वनायाहुवा वेंशकींमतीमंदिर जोहालहीमें नयातामीरहुवाहै देखकरदिलखुशहोगा,—

🖙 [दूसरीटोंक मोतीज्ञाहरोठकी.]

मोतीशाहशेठने यहटोंककिसकद्र मेहनतसेवनवाइहैकि-जिस-कीतारीफवेंमीशालहै. पेस्तरयहांपर एककंतासरनामका बडाभारी खडा--यानी-पहाडकी एकखोंहथी. शेठमोतीशाहने इसकों (९५३०००) रूपयेखर्चकरकेभरवाया. और उसपरयहटोंक ता-तीरकरवाइ. बडाभारीआलिशान मंदिरदेखकर दिलतर-वा-ताजा होताहै, संवत (१८९३) मेंइसकीपतिष्टाकिइगइ, खर्चाइसटोंकका अबतकमोतीशाइशेठकी पुस्तानपुस्तसे चलताहै, शाहअमरचंदखेम-चंद साकीनदमन-जोकि-इसीमोतीशाहशाहशेठके-दिवानथेएकवडा भारीमंदिर इसीटोंकमेंडनोने तामीरकरवाया.—औरएकस्वस्तिक जिसमें नवरत्नलगेढुवे हैवनवाया. औरभीकइखुशनसीव ओरदीलत-मंदछोगोने यहांमंदिरवनवाये हैं, इसटोंककीखुबसुरती कहांतकवया-नकरे ! खास ! मोतीशाइशेटके मंदिरकीचारोंतर्फ इसकदरउमरा तौरसे परकम्मावनीहुइहैकि-जिसकोंदेखकर-आंखे-तरहोजाती है, मोतीबाह शेठकेवनायेहुवे मंदिरकेसामनेउनकी और-उनकी आंर-तकीमृत्तिं संगमर्भरपथरकीवनीहुइखडी है और आजीजीकररहे हैिक इमने-कुछभीखर्चनहीकिया. जायेगोरहिक-मोतीशाहशेठने इसटोंकके बनानेमेंबेथुमारदौलतसर्फिकिइ-मगरिकरभी यहीकहरहे हैिके-हमने-

कुछभीखर्चनहीकिया. दौलतमंदहोतोऐसेहो! औरधर्मकेपायबंदहोतो-ऐसेहो ! हरलासोआमकोंलाजिमहै मोतीशाहशेठकी<mark>मिशालकोंयादम</mark>ें-रखे. औरअपनेसें बनपडेउतना खर्चकरे, दुनियाचंदरौजकेल्प्रिये एकप्रसाफिरखाना है, जोकुछ धर्म करोगे वही शाथी होगा,--

👺 [तीसरी टोंक-बालाभाईशेठकी,]

संवत् (१८९३) मे-यहटोंक-शेटवालाभाइने तामीरकरवाइ, और वहुतसीदौछतखर्चिकिइ. इसकानामवाछावशीमशहुरहै, इसमें तीर्थंकररिषभदेवभगवान्का वहुतबडाआल्रिशानमंदिर और-निहा-यतसुबसुरतपूर्ति तरुतनशीनहै, रंगमंडपइसकाकाबिलेदीद-आस-पासकइछोटेवडेमंदिरवनेहुवे-और-खर्चाइसका शत्रुंजयतीर्थकेखजा-नेसंचलताहै.-

[चोथी टोंक-प्रेमचंदमोदीकी,]

वालावशीटोंककेआगे औरचाथीटोंककेवीच कुछउंचाइपरएक बढाआलिशानमंदिर अद्भुदजीका-जो-संवत् (१६८६) में ता-मीरिकयाहुवा निहायतपुरुता और वडीलागतकाहै, मूर्त्तिइसमेंतीर्थ कररिषभदेवभगवानकी सातहाथउंचीवडी आलिशानतख्तनशीनहै, असलमेंयहमूर्ति पहाडसेंजुदीनही पहाडहीमें उकेरीहुइ-और-इसपर बहुतकींमतिचीजोंकालेपहुवाहै, चोथीटोंक प्रेमचंदमोदीकी बनाइहुइ औरउंचीजमीनपरतामीरहै, तीर्थकरिषभदेवभगवान्का बडाआस्त्रि-शानमंदिर औरउसमें निहायतखुबसुरत मूर्त्तितस्तनशीनहै, सामने इसकेमंदिरपुंडरीकस्वामीका--मंदिर सहस्रकणापार्श्वनाथजीका∹मं-दिर चौग्रुखाजीका तिमजिला–योरानी–जेटानीकेबनायेहुवे–दो– आले-कइछोटेबडेमंदिर ओंरमर्त्तियेंनामीरहै.-

🔛 पांचवी टोंक हेमाभाइशेठकी, 🕽

शेठ हेमाभाइवखतचंद्र रहीशअहमदावाद् साहुकारेकलानहुवे, ज्नोनेसंवत् (१८८२) में वेंथुमारदौछत**लगाकर यहटोंक तामीर** करवाइ, इसमेंतीर्थकरअजितनाथजीकामंदिर और निहात खुबसुरत मृत्तिसंवतु (१६८६) कीवनीहुइतख्तनशीनहै, दाहनीतर्फमंदिर चौमुखाजीका-सामनेपुंडरीकस्वामीका-वगेराकइछोटेबडे मंदिरलाइ-कतारीफकेवनेहुवे है, झीं छुकाकुंड-पाकसफेदमीस्ले वर्फके बनाहुवा-और एकवगीचा-गुलाव-चमेली-वा-मोघरावगेरा इरिकस्मकेफूल इसमेंमीजुट्हे और-वरवस्तपूजनके यहीदेवकोंचढायेजाते है,-

🥯 छठी टोंक नंदीश्वरद्वीपकी,]

यहटोंक उजमवाइनेवनवाइ--जोिक-निहायतधर्मपावंद और-क्षेठ–हेमाभाइकी हकीकीवहेनथी. संवत् (१८८३) में **उसखुक्षन**-सीवनेयहटोंक तामीरकरवाइ. इसमें छोटेछोटे (५२) मंदिर-और-नंदीश्वरद्वीपका अकस-निहायत उमदावनाहुवाहै, इसमेंकुछ मूर्तें (२२८) तष्त्तनज्ञीनहै, मंदिरकुं थुनाथस्त्रामीका-और-एक मंदिर परसनबाइका तामीरकरवायाहुवा काविलेदीदहै,

🗫 [सातवीटोंक-साकरचंद प्रेमचंदकी,]

साकरचंदपेमचंद् साकीन अहमदाबादने संवत् (१८९३) में यहटोंक बडीळागतसे तामीरकरवाइ, तीर्थकरचिंतामणिपार्श्वनाथकी धातुमय (यानी) सोना-चांदी-तांबावगेराधातुओंको मिलाकर एकआलिकान-व-वेंनजीरमृत्तिवनवाइ औरतख्तनशीनिकइ. मंदि-रषद्मपभुका-और-मंदिरपार्श्वनाथस्वामीका--निहायतज्यदा और कारिगरीकानप्रुनाहै, औरभीकइ छोटेबडेमंदिर इसटोंकमें तामीरहै.

जिसकों-देखकरताज्जुवहोगा. देवीचक्रेश्वरीकीमूर्त्ति इसमेंकाविलेदी-दऔर सुनीदकेवनीहुइहै,

🕼 [आठवीटोंक-छीपावक्रीकी,-]

साकरचंद भेमचंदकीटोंकसें पूर्वतर्फछीपावशी टीकसंवत् (१७९१) में—तामीरिक इगइ, इसमें तीर्थिकर रिषभदेवस्वामीका शिखरवंदमंदिर और उनहीमहाराजकी मूर्त्तित्वतनशीनहे. एक ह-एक — मुझयन — साफ — खिरनीकायहांखडाहे और नीचेइसकेतीर्थिकर रिषभदेवभगवानके चरनजायेनशीनहे, तीर्थिकरअजितनाथ — और — शांतिनाथ जीकेदोमंदिर पासपासमें बने हुवे निहायत खूब मुरत और पुराने हे, — एक मंदिर ने मनाथ जीका — संवत् (१७९४) का बना हुवा इसटों कमें हे. आगेइसके चौमुखा जीकीटों ककों जाते करीव खीड की के मंदिर एक पांचपांड वों का — जिसमें युधिष्टीर — अर्जून — भीम — सहदेव — नकुल — पांचोकी मूर्त्ति का योत्सर्ग ध्यान में खडी है, इस मंदिर के पिछाडी मंदिर एक — सहस्रकृटका — बहुतसाफ और कीं मती बना हुवा संवत् (१८६०) का — तामीरहे, जो कि — केट — खूब चंदमया चंद सुरतवा लोंका बनाया हुवा इसमें — चौदहर ज्वात्मक लोक का — अकस — समवसरण का नमुना — सिद्धचक्र जीका नक का — और — चौड स छोटी छोटी मूर्ते जाये नशीनहे, दर्शनकरके टिल खुश हो गा. —

🕼 [नवमीटोंक चौमुखाजीकी,]

यहटोंक अहमदाबादवाले सदासोमजीने वडीमेहनतसें तामीर करवाइ, और वेंग्रमारदौलत सर्फिकिइ. यहटोंक संवत् (१६७५) में तयारहुइ. औरइसमें तीर्थकरिषभदेवभगवान्की चार वडीबडीमूर्ते चारोंतर्फ तख्तनशीन किइहुइ जोपांचपांचहाथकी वडी काविलेदीद औरदिदारकेहै, कइमूर्तिऔर चरनपादुका इसमेंतामीरहै, सामनेइसके एकमंदिर गणधरपुंडरीकस्वामीका उसीसालका तामीरिकयाहुवा— और-आसपासइसके कइमंदिरछोटेबडेकायमहै. मंदिर शांतिनाथजी-का-मंदिरसीमंधरस्वामीका-खिरनीकाद्द्वत--मंदिरमिलनाथजीका-मंदिर अजितनाथजीका-मंदिरसंभवनाथजीका-मंदिरचंद्रमञ्जीका-और एकमंदिर छत्रपतिसंप्रति राजाका-तामीरकरवायाहुवा-मंदिर तीर्थकरअभिनंदनस्वामीका-जिसकोंबनेआज (२१२६) वर्षहुवे बडा पुरानाहै. अवलजोलिखचुकेहैिक-राजासंप्रतिने शत्रुंजयपरमं-दिर बनवायासो-यही-मंदिरहै, तीर्थोमेंयह कदीमीरवाजहैकि-एक मंदिरपुरानाहोकरगिरगया किसीखुशनसीवने फिरतामीर करवाया, इसीकानामजीर्णोद्वारकहते है, औरइसीतरह तीर्थकायम-वा-दायम बनारहताहै, यहटोंक-सबटोंकसेंजंची औरवालाहै. सवबिक-पहा-ढकेंजंचेसीरपरबनीहुइहै. पहाडशत्रुंजयकी जंचाइयहांपर खतमहुइ, करीब (२५) कोशकीदूरसें जोशत्रुंजयतीर्थका मंदिरनजरआताहै-बह-यहीमंदिरहै,—

तीनकोशकेघेरेमें नवटांक-और-छोटवडेतीनहजार मंदिरइसप-हाडपर कायम-और-वरपाहै, इनमंदिरोंको औरटोंकोंकी चारोंतर्फ एकदिवारमानींद किलेकेवनीहुइ-नवटोंकोंके बडेबडेअटारांहफाटक-कइदरवजे-खीडकीयें-और-जानेआनेकेरास्ते-साफ और पाकवने हुवेहै. किसीयात्रीकों कोइतकलीफनही, हरटोंककेरास्तेरातकोंबंदकर दियेजातेहै, शत्रुंजयपहाड जैनमंदिरोका-एकनायावशहरहै, इतनेइ-कठेमंदिरएकजगहकहीनही देखोंगे, मंदिरोंकेशिखर-धजाओंकाफर-राना-घंटोंकी झनझनाट दिलकों चिकतकरदेती है, वडीबडीमृत्तिंके मस्तकपरहीरे-कंधे-हाथ-और घुंटनोंपर स्रुवेकेपतेलगेहुवे निहायत स्वसुरती दिखलारहे है.-एकपहाडपर इतनेजेनश्वेतांवरमंदिरोंका ज-मात्रहफतेअकलीममें कहींनहीपाओगे. वैदिकऔर बौधलोगोकेइतने कसरतकेमंदिर किसीतीर्थपरनही, महाराज छत्रपति-संमिति-और-महाराजकुमारपाल-ये-दोनो जैनश्वेतांबर श्रावकथे, जिनके बनाये हुवे जैनमंदिर यहांपर मौजूदहै, दिवानबस्तुपाल तेजपालमी जैन-श्वेतांबरश्रावकथे, जिनोने इसतीर्थपर जैनमंदिर बनवाये है, दौलत और हकुमतपाकर धर्मकरना ऐसे धर्मपावंदोका कामहै,

[अनुष्टुप-वृत्तम्.]

श्रीयुगादिजिनादेशात्-पुंडरीकोगणाधिपः, सपादस्रक्षप्रमितं-नानाश्चर्यकरंवितं, श्रीशत्रुंजयमहात्म्यं-सर्वतत्वसमन्वितं, चकारपूर्वे विश्वैक-हिताय महितं सुरैः,

शतुंजयतीर्थकी तारीफ जैनशास्त्रोमं ज्यादहलिखी है तीर्थकर रिषभदेवमहाराजके अव्वल गणधरपुंडरीकस्वामीने इसकी तारीफ सवालाख श्लोकसे वयानिकइथी, तीर्थकर महावीरस्वामीके पांचमे गणधरसुधर्मास्वामीने चौइसहजारश्लोकसे तारीफ वयानिकइ, वाद उनके श्रीमान-धनेश्वरसूरिजीने-शत्रुंजयमहात्मनामका ग्रंथ बनाकर तारिफिकइ, जो अवभीमीजूदहै, पेस्तर पहाडबहुत वडाथा, जमाने हालमें कमरहगया, पेस्तरयहां वडीवडी गुफाये और तरहतरहकी वनास्पति-अशोक-केवडा-मोरसली-मयूरशिखा-केतकी,चंपा,और चमेली वगेरा बहुतायतसंथी,

> [अनुष्टुप-वृत्तम्.] नास्त्यतऽपरमं तीर्थ-धर्मो नातः परोवरः शत्रुंजये जिनध्यानं-यज्जगत्सीख्यकारणं,

शत्रुंजयसमान दुसरातीर्थ नही, इसतीर्थमें आनकर ध्यान कर-नेस पुन्यानुवंधि पुन्यऔर अश्वभकर्मकी निर्जराहोती है, मुल्क सौ-राष्ट्रका शिरोताज यही शत्रुंजयपर्वतहै,—

चौम्रुखाजीकीटोंककेहातेमें राजासंप्रतिका तामीरकरवायाहुवा मंदिरइसपहाडपर सवसेपुरानाथुमाराकियाजाताहै,-तीर्थकरमहाबीर स्वामीकी हयातीमेंराजगृहीके तरुतपरराजाश्रेणिक अमलदारीकर-ताथा-औरवहजेनमजहवपर पावंदथा. श्रेणिककावेटा कौणिकहुवा, उसकादुसरानामअजातशत्रुथा, औरयहभीजैनमजहवपर एतकातर-खताथा. वालिट्केगुजरजानेपर उसनेराजगृहीकोंछोडकर अपनी अमलद्मरीचंपामें कायमिकइ, कौणिककावेटाउदायीहुवा. यहभीजै-नमजहवपर पावंद्था, औरउसनेचंपाकों छोडकरअपनीअमलदारी पटनेमेंकायमिकइ. उदायीकेतरूतपर नंदनामकाराजाहुवा, नंदके तस्तपरआठपीढीतक नंदनामकेहीराजेहातेरहे, ये-जैनीनहीथे, इन-कीअमलदारीभी पटनाहीरही, नवमेंनंदकोशिकस्तदेकर ऊसकीग-दीपरचंद्रग्रप्तराजाहुवा. यहजैनमजहबपर एतकातरखताथा. और उसकीअमलदारीभी पटनाहीरही.-चंद्रग्रप्तकावेटा-विंदुसारहुवा. यहभीजैनमजहवपरपावंदथा. औरउसनेपटनाको छोडकरअपनीअ-मलदारी शहरउज्जेनमेंकायमिकइ. विंदुसारकावेटा अशोकश्रीहुवा. इसनेबीधमजहबकों इंग्व्तियारिकयाथा. राजा-प्रियदन्ती-अशोकके जोशिलालेख हिंदमेंकहींकहींमिलतेहैइसी अशोकके है, अशोकश्रीका वेटाकुणालहुवा. यहजैनथा. औरकुणालकावेटा-संप्रतिहुवा. इसकी अमलदारीभी शहरउज्जेनथी. औरजैनमजहवपरपावंद्था. इसने अपनेतमामम्बत्कमें हजारोंजगह जैनमंदिरवनवाये---औरजैनमृर्त्तियें तख्तनशीनिकइ. कइजगहअबतकउनके बनायेमंदिरमौजूदहै, तीर्थ शत्रुंजयऔरगिरनारपर इसीकेबनायेहुवे मंदिरजोकि-पुराने-शुमार कियेजातेहैमौजूदहै, जमानेहालमें-जो-(३६०००) जैनश्वेतांबर मंदिर हिंदमेंकायमहै उनमेंकइमंदिरइसीसंपतिराजाके तामीरिकयेहु- वेहै. राजासंप्रतिकेगुरु-आर्य-मुहस्ती-जैनाचार्यबडेआलीम--फा-जिलथे-और-वे-दशपूर्वज्ञानका इल्मरखतेथे. उनोनेराजासंप्रतिकों खातिरजमा करवादिइथीकि-दौलत-और-जींदगी--दुनियामेकोइ बडीचीजनहीहे. उमदाचीजएकधर्महीहे, औरवहीवडीचीजहे. हजा-रोंराजेरहीशहोगयेदेखलो ! कोइकायमनहीरहे, जोकुलकायमरहने-वालीचीजहे-वो-धर्म है. राजासंप्रतिनेउनकेफरमानपर पुराअमल कियाथा, औरहरवरूत धर्मपरसावीतकदम्या.--

श्रतंजयपहाडकेमंदिरोकी कारीगिरी अजीवकिस्मकी देखोगे, हरजगह सफाइ-खूबसुरात-तरहतरहकी कतावजाकेवनेहुवे मंदिर-चौक-गुंबज-और होजदेखकरआंखेतरहोतीहै, वडेवडेमंदिरोकेशि-खरपरचढकरदेखोतो चारोतर्फमानींदे स्वर्गविमानके नजरआताहै. विमलवशीटोकमें जोतीर्थंकरारिषभदेवभगवानका मंदिरकमीशाहशे-ठनेसंवत् (१५७८) में तामीरकरवायाहै-वे-चितोडके दिवानथे, औरउनकीइज्जित औरधर्मश्रद्धालाइकतारीफकेथी. जव-वे-शहर पालितानेमें आयेथे उनकी मुबारिकवादी केलिये वहुत जलसा हुवाथा, उनकेशाथमेंहाथी-घोडे-म्याने--पालखी-रथ--सिपाही--नोकर-चाकर-और-चर्च-चंग--वगेरातरहतरहकेवाजेथे, वडेवडेदाना-औरबहादूरशख्श उनकेशाथआयेथे. जव-वे-तीर्थकररिषभदेवभग-वानके नयेवनायेहुवे मंदिरकीप्रतिष्टाकों शत्रुंजयपहाडपरगयेथे, ज-वाहिरात-और--सचेमोतियोके- थालोंसेंतीर्थका नसारिकयाया, औरअछेमुहुर्त्तमे मतिष्टाकिइथी, धर्मपावंदशख्श होतोऐसहो, उसव-ख्तउनकी इज्जतइतनीथीकि-आजकलकेतमाम श्रावकोमें होनादुस-वारहे,—

चौम्रुसाजीकेमंदिरमें जोशिलालेखलगाहुवाहै उसमेंलिखाहैसु-लतान-नुरुदीनजहांगीरके जमानेमेंसवाइविजयराजा—सुलतान-खुशरुऔरखुरमाके वरूतमेंसंवत् (१६७५) वैशाखसुदी (१३)के रौजदेवराज-और-उनकेखानदानमं-सोमजीऔरउसकी औरतरा-जलदेवीने यहचौमुखाजीकामंदिर तामीरकरवाया, शहरपालितानेमें जैनश्वेतांवरकारखाना वडीलागतकावनाहुवा–मुनीम–गुमास्ते–नो-कर-चाकर-पूजारी-चौकी-पहरा-हरवस्तमौजृद-वा-कायम रहता है, उनकाखर्च-खराजात-सवकारखानेशत्रुंजयसे दियाजाताहै, और यहसबआमद्नी औरखर्चजैनश्वेतांवरोंके तावेमेंहै, जैनमेंअैसातीर्थ किसीअक्लिममें-न-देखोगे. गिरनार-समेतशिखर-आबु-और-केशरियाजीवगेरा कइजैनतीर्थ है मगरशत्रुंजयतीर्थ-प्रायःशाश्वताहै इसलियेसवतीर्थीमें इसतीर्थकोंवडामानागया. अगरकोइयात्री-शर्चु-जयतीर्थकी एकरौजमे-दो-दफे-यात्राकरनाचाहे विमलवशी-और मोतीशाहशेठकीटोंककेपास-जोनीचेउतरनेका-रास्तावनाहै उतरकर आदिपुरगांवकों जाय, सीढीयांवेंडोलपथरोंकी वनीहुइहै, वहांपरती-र्थंकरनेमनाथमहाराजकी छत्रीऔरचरनपादुका तख्तनज्ञीनहै. उनके द्र्यनकरे, औरफिरवहांसे वापीसचढकरउसीरास्ते विमलक्षीटोंककों आवे, विमलवशीटोंकके दर्शनकरकेफिर वापीसपालितानेकी तलह-द्येकोंलोटजाय दो-यात्रा-होजायगी,--

अगरकोइयात्री शत्रुंजयपहाडके सबमंदिरोंकीचारोंतर्फ छको-शकी परकम्मादेनाचाहे दरवजेरामपोलके दाहनीतर्फसें शुरूआतकरे, अवल देवकीजीकेखटनंदनकी छत्रीकेदर्शनकरे, आगेइसके चंदनत-लाइ-सिद्धशिला-और- तीर्थकरअजितनाथ-शांतिनाथजीके चर-णोकी दोछत्रीयंआयगी. उनकेदर्शनकरे, सिद्धशिलाकीच्छानपर पेस्तरकइम्रुनि अनशनकरके मुक्तिकोंगयहै, इसीसबबसें कइयात्री यहांवेटकर ध्यानसमाधिकरतेहै, औरइससवबसे इसकानामसिद्ध-शिलाकहागया, आगेइसकेभाडवाकापहाडजहांकि-तीर्थकरअजीत-नाथ-और-शांतिनाथजीने चौमासाकियाथा,दर्शनकरके अगाडीब-दना. औरआगेइसकेकुछनीचे उत्तरकरिसद्धवडकोंआना,-यहांपर एकवटद्यक्षखडाहै, नीचेइसके कइम्रानियोंनेध्यानसमाधि करकेम्रिक्ति पाइथी. इसीलियेइसकानाम सिद्धवडमसहूरहुवा, यहांपरदो-छत्रीये वनीहुइमौजूदहै.वस! सिद्धवडसेंशहरपालिताने पहुचनेकासिधारा-स्ताबनाहुवाहै चलेजाओ! छकोशकी परकम्माखतमहुइ.—

अगरकोइ शत्रुंजयपहाडकी चारोंतर्फवारांकोशकी परकम्मादेना-चाहे—तो—यहपरकम्माभी वनीहुइहै, चाहेकोइवेंलगाडीमें सवारहोकर जाय—या— पैदलजाय, यात्रीकोंइक्तियारहै, शहरपालितानेसे रवा-नाहोकरअवल शत्रुंजयनदीकोंजाय. वहांपरएकछोटासामंदिर और उसमेंतीर्थकरिषभदेव भगवानकेचरण जायेनशीनहै, उनकेदर्शनक-रकेआगेवढे. चारकोशआगेएक—मंडारियागांवआयगा. औरमंडा-रियागांवसेंआगेएक— कदंवगिरिपहाड—जिसपरकदंवगणधर आले जमानेमें मुक्तहुवेथे, उनकेचरनयहांपरवनेहुवेहै. औरनिहायतउमदा एकछत्री—उनकेनिशानपर तामीरहै,—उनकेदर्शनकरके आगेवढेतो चौकगांवआयगा. वहांपरआरामकरें. औरदुसरेरोजहस्त गिरिपहा-डकी जियारतकोंजाय. इसपहाडपरहस्तीनामके एकगणधरमोक्षहुवेथे उनकेचरनऔर छत्रीयहांपरवनीहुइहै, दर्शनकरकेनीचेआवे. और घेटीगांव—जो—दर्शमयानरास्तेके आताहे होतेहुवेशहरपालितानेकों वापिसलोटआवे. वारांकोशकी परकम्माखतमहुइ.

शत्रुंजयपहाडपर विमलवशीटोंकमें जो-एकमंदिरपीछेंसेंबना-हुवा दिगंबरमजहबवालोंकाहै-पुराने औरमूलमंदिरोंके बादबनाहै, शहरपालितानेमं एकमंदिरजो दिगंवरलोगोकाहै थोडेवर्षेसेवनाहै धर्मशालाभी-थोडेअर्सेसं बनीहुइहे जितनी पुरानीधर्मशाला-और पुरानेजैनमंदिर तीर्थशतुंजय-या-शहरपालितानेमें है सबजेनश्वतां- बरोकीतर्फसे है. हमनेइसतीर्थकी कइदफोजियारतिक और मुनिहा- लतमेंचौमासाभी यहांटहरेहै जीसनेइसतीर्थकी जियारत नहीिकइ उसनेजैनमंदिरोंकी झलाझलरौशनी नहीदेखीयहकहना कोइगलत नही,—

🕊 [तवारिख तीर्थ-शत्रुंजय खतमहुई.]

यात्रीशत्रुंजयतीर्थकी जियारतकरकेवापिस सौनगढदेशनकों आवे, और सौनगढदेशनसें पांचमीलपूरवकों-जो-शिहोरकस्वाहे ब-जरीये-रेलकेजाय, देशनसें (१) मील-दखनकीवाज्ञिशिहोरकस्वा-आवादहे, शिहोरकीमर्त्रुमशुमारी (१०००५) मनुष्योंकी-और-उसमेकरीब (५००) जैनश्वेतांबरश्रावक आवादहे, एकशिखरबंद-जैनश्वेतांबर मंदिर-और-यात्रीयोकोंटहरनेकेलिये एकधर्मशाला यहांपरवनीहुइ है, यात्रीइसमेंकयामकरे कोइतकलीफ-न-होगी. शिहोरकीतमाखू और-वर्तन-तांवापीतलके-मुल्कोमेंमशहूरहे, असलमेंशिहोरकस्वा-पहाडकेयेरेआबादहे, औरपेस्तर यहांइतनाझाडी-झखड-थािक-कोशंतकरास्तापाना—दुसवारथा, मगरजमानेहालमें वहसब—साफ करादियागया. ब्रह्म-कुंड-और-गौतमकुंड यहांकाविलदेखनेकहे, बाजारमें जिसचीजकीदरकारहो-मिलसकेगी.-पुरानेशिहोरमें पहाडोंकेउपरकइ मकानातवनेहुवे है, शिहोरसें रैलमेंसवारहोकर वरतेज देशनहोतेहुवेयात्री शहरभावनगरजाय, सोनगढदेशनसें भावनगर तकरैलिकराया चारआने,—

शिहोरटेशनसे (१४) और-सौनगढटेशनसे (१९) मीलद्र भावनगरशहरएक-रैलकादेशनहै, सन (१७२३) इस्वीमें भाव-

सिंहजीने इसकों आबादिकया. जिलेकाठियावाडके पूरवकनारेयही उमदाशहरहै, भावनगरके तरुतपरजनाव-राजासाहवबहादूर-तरुत-सिंहजी-वडेधमीत्मा-राजाहुवे. कइशख्ञोंकोंरहमदिलीसें दौलत देकरउनोने आरामतळवकिये. जमानेहाळमें उनहीकेपुत्र–महाराज– भावसिंहजी-भावनगरकेतख्तपर अमलदारीकरतेहै, औरधर्मकेका-ममें आमलोगोंकों मदददेते है, भावनगरकीमर्दुम–शुमारी (५७६५३) मनुष्योंकी-रुइ-अनाज-नमककीतिजारत यहांज्यादह, इसरान्यमें (११७) स्कुलेऔर उनमें (६३००) लडके इल्मपाने है, खास ! भावन-गरमेंजो-हाइसस्कुलहै उसकीगिनती अलगसमझो,-राजमहेल निहा-यतउमदा-कपडेबनानेकी मील-अस्पताल-छापखाने-स्कुल-और-दि-वानी-फोजदारी-कचहरीयां-वडेवडेआलिशानमकानहै, सम्रंदरकनारे वडेवडेजहाज–और-धीमरें आती और छुटती है,-और सुरत-वंबइ तक तिजारतहोती है, भावनगरकी चारोतर्फ पेस्तर पुराना कोट और-चारदरवजे मौजूद्ये, मगरजमानेहालमें आवादी वढनेके स-बब-नयीनयीइमारते तामीरहोतीजाती है, और-खूबसुराति बढती है, बाजार गुलजार-और-सोना-चांदी-जवाहिरात-मेवा-मिठाइ जो चीजचाहिये यहांपर मिलसकती है, घंटाघरिक-जिसकी अवाज द्रदूरतक फैलती है वीचशहरके वडीलागतका वनाहुवा वडेवडेकीं-मती-जैनश्वेतांवरमंदिर-जिनमं-दादावाडीका नयामंदिर जोहाल-हीमें तामीरहुवाहै काविलेदीदहै, मुनिजनोकों टहरनेकेलिये कइम-कानबनेहुवे है, दुनियादारहालतमें-मेरा-रहना इसी भावनगरमेंथा. महोलेखत्रीकुवेकेपास-जहां-चंदरौज-मार्कीट वनीथी वहांघरथा, और लडकपनमें वहांही परवरीशहुवा, ज्ञातिओशवाल-और-जैन मजहव अपना कुलधर्मथा. व्याकरण-काव्य-कोश-न्याय-और-

अलंकारके पहेंद्रवे आलादर्जिके पंडितयहांपर आवादहै. बौरतालाव अथाहजलका भराहुवा एकअखूट खजानाहै जोदुकालके वस्तभी यहांपानीकीतंगी—नहीहोनेदेता, भावनगरमें जैनश्वेतांवरमंदिर (४) औरघरदेहरासर(३) है, जैनपुस्तकालय वडेमंदिरमें निहायतपुरानाहै जैनश्वेतांवरश्रावककरीव (४०००)—औरयात्रीयोंकों ठहरनेकेलिये दादावाडी एकअमदाजगहहै, देशनपरअतरकर यात्रीसिधे दादावाडी चलेजाय, इका—वगी—वगेरासवारी तयारिमलतीहै. जैनवोर्डिंगभी इसीजगहतामीरहै--और-कइलडके--इसमे--हमेशांइल्पपाते है, जैन पाठशाला--और--कन्याशाला शहरमेंमौजूदहै. अंग्रेजीपढनेलिये हाइस्कुलभी राज्यकीतर्फसंवनीहुइ-वडीलागतका मकानहै. यात्री-भावनगरकेमंदिरोकी जियारतकरके-गोघा—वंदर-जोकरीव (६) कोसकेफासलेपर आवादहैजाय, औरघनोघमंडन-पार्श्वनाथतीर्थ-कीजियारतकरे,

समुंदरकेकनारे गोघावंदर-एकछोटासाकस्वाहै. शहरभावनरसें यहांतकसडकपकी वनीहुइऔर-सवारीकेछियेइका-वगीतयारिमळ-तीहै, जैनश्वेतांवरश्रावकोकी आवादीकरीव-(५००) की-और-घनीघमंडन-पार्श्वनाथका-वडाआछिशानमंदिर यहांतामीरहै, जिसकों नवखंडापार्श्वनाथभीवोछतेहै, मूर्ति-शामरंग-करीवदो हाथवडी-इसमेंतख्तनशीनहै, दर्शनकरकेदिछखुशहोगा, दो-मंदिरऔरभी शिखरवंदयहांपरतामीरहै. जैनश्वेतांवरधर्मशाला यहांपरवनीहुइयात्री इसमेंकयामकरे, जिसचीजकीदरकारहो यहांमिलसकतीहै, समुंदरक-नारेवडेबडेजहाजआतेजातेहै, औरसुरत-भक्षच-वंवइतक-तिजारत होतिहै, गोघावंदरसे जहाजमेसवारहोकर चारकोशआगेजानेपरस-मुंदरमें-अक-पीरम-नामकापुरानाटापुहै,-थोडेवरस पेस्तर-जमीन खोदनेपरयहांसे पुरानीजैनश्वेतांवर (१०) मूर्त्तियें-निकसीधी

जोकि-अव-गोघेके नवखंडापार्श्वथजीके मंदिरमेंजायेनशीनहै, हमने इसतीर्थकीजियारत दोदफेकिइहुइ औरतमामजगह वखुवीदेखीभालीहै

गोघावंदरसेंफिरवापिस-भावनगर-आना, और रैलमेंसवारहो करधोलाजंकशनजाना. अगरफुरसतहोतो-यहांउतरकर (६) को-श्व अक्तीरास्ते वल्लभीनगरीजोिक--पुरानीनगरीहैजाना,--तीर्थकर महावीरस्वामीके निर्वाणहुवेबाद (९८०) वर्षपीछे-दुषमांधकार-तरिण-जैनाचार्य-देवर्द्धिगणिक्षमाश्रमण महाराजनेयहां ताडपत्रोंपर जैनआगमलिखेथे, जैनश्वेतांमवरमंदिर-और-देवद्धिगणिक्षमाश्रमण महाराजकी मूर्त्ति-यहांपर-जायेनशीनहै. दर्शनकरके वापिसधोला-जंकशनआना, औरधोलासें-जालिया-धसा-लाठी-चीतल-लुनी-धर-कुंकावाव-खाखरीया-वावडी-जेतपर-जेतलसरजंकशन-और वाडलहोतेहुवे-जुनागढजाना. रेलकिराया १-१२-० पोनेदोरूपये.

🝱 (तवारिख-तीर्थ-गिरनार,)

(करिब दाहर जूनागढ-जिले काठियावाड.)

जिले काठियावाड-मुल्क-सौराष्ट्रमें-जुनागढ-एक-अजनवी-और नायाबशहरहै, अमलदारीनवाबसाहवकी—देशनसेशहर वहुतकरीव— और—जानेश्रानेकेलिये सवारीइका—बगी—हरवख्तमिलतीहै, खास! दरवजेकेनजदीक एकमुसाफिरखाना बनाहुवाहै, मगरजैनश्वेतांबर यात्रीकोंशहरमेंहीजानामुफीदहै,—बाजारवडेलंबे—और -ग्रीनचौकवडी गुलजारजगहहै, जिसचीजकी दरकारहोयहांमिलसकतीहै, राजमहेल बढेउमदा—रंगवेंरंगेचित्र—मेहरावें--झाडफनुस—तस्बीरे-बडेबडेआइने औरसोनाचांदीकी कुर्शियं—इसमेंरखीहुइहै, बाजारमोहब्वत—सर्किल में—हरिकस्मकीचीजें—यहांभीमिलतीहै,—

खास ! जुनागढकी मर्दुमशुमारी (३१६४०) मनुष्योकी-अस्पताल-कचहरी-और-कइउमदाउमदा मकानात यहांपर तामीरहै रुइकी पैदाश ज्यादह-सक्करबाग-और सिरदारबाग यहां देखनेकी जगहहै, उमदा मकानात-पानीकानाला-और-क्षेर-हिर-न-वगैराजानवर इसमेंरखेद्ववेद्दे, महोलेउपस्कोट-किला-रायखें-गारकेवरूतका–तालाव–पुरानीइमारतें-–औरतलघर अजनवीवनेहु-वे है, फाटककेउपरसन (१४५०) इस्वीकावनाहुवा एकशिलालेख-दो-पुरानीतोपें-जुमामशजिद-दो-वावडीयें-और-कइग्रकायें बनी-हुइहै, जैनश्वेतांबरश्रावकोंकेघर जुनागढमेंकरीय (१२५)-महोले जपरकोटमें धर्मशालातीन-एक हेमाभाइशेटकी-दुसरी-जाबुकी-तीसरीलींगडीवाली पुरीबाइकी-यात्रीकोंइस्तियारहै दिलचाहेवहां उहरेकोइमनानही, जैनश्वेतांवरमंदिर जुनागढमेंदो-एक शिखरबंद-और-दूसराछोटा-तामीरहै, खजानातीर्थ-गिरनारका-देवचंद-ल-क्ष्मीचंदकेनामसे-जुनागढमें गारी है. ग्रुनीम-गुमास्ते-नोकरचाकर-घंटाघडीयाल-चोकीपहरा-चपरासी--वगेरासवटाटराजसी, जमाने तीर्थकरनेमनाथजीके बडेबडेमहेलात-और-किले--यहांपरमोजूदथे, दशदशास्त्ररवीरपुरपके वनायेहुवे वडेवडे आछिशान-मकानकि-जिनपरवेंशुमार दोलतलगीहुइ-और-खनानयहांपर मामूरयें, अ-बभीवहमकानात-औरखजाने जमीनसंनिकछते नजरआतेहै, पेस्तर यहांएकगढनामका किलापूरवदिशातर्फ मशहूरथा-और-उसकेतीन नामथे-उग्रसेनगढ-जीर्णगढ-औरखेंगारगढ-जिसमें -जीर्णगढकानाम जुनागढकहलाया, संस्कृतजवानमें जुनेकोंजीर्णकहते है, इसीलीयेलोग भाषामें जुनागढनाम मशहूरहोगया, पेस्तर यहांपरतीर्थंकरिषभदेवभ-गवानकावडापुराना मंदिरथाः यादववंशीराजीने कइ-जैनमंदिरयहां तामीरकरवायेथे जोकि-व-सववगर्दीसजमानेके अवनहीरहे. बाद-

तीर्थकरनेमनाथनीके कइनैनधर्मावलंबीराने यहांपरहुवे कहांतक कोइ बयानलिखे, विविधतीर्थकल्प ग्रंथमें तैहरीरहैकि-राजा-नयसिंहदेव ने खेंगाररायको परास्तकरके यहांपर अपना अमल दरामद किया और संवत् (११८५) में तीर्थकरनेमनाथनीका मंदिर फिरतामीर करवाया, जो अबतक मौजूदहै, -संवत् (१२२०) में छत्रपतिराजा कुमारपालके कोतवालदंडाधिपतिनेगिरनारपहाडपर सीढियांबनवाइ, जोकि-श्रीश्रीमालज्ञातिकाथा. सीढीकेदाहनेतर्फ लक्षारामनामकाबा-गथा, मगरवहअबगर्दीस जमानेकेवराबाद होगया. दिवानवस्तुपाल तेजपाल-जोकि-राजावीरधवलके वजीरथे. उनोनेकरीविगरनारपहा-ढकेएक शहरतेजलपुरनामकायहां आबादिकयाथा. और उसमेंअपने वालिदकेनामसेएक मंदिर तामीरकरवाकर तीर्थकर पार्श्वनाथजीको मूर्तितख्तनशीनिक इथी. और उसकानाम आसराजवीहार रखाया-वाल्दा कुमरदेवीकेनामसे एक-कुमरसरोवरबनवायाथा, तेजलपुर और जुनागढ—दोनो बहुत करीवथे इसलियेदोनो एकनामसे जुनागढ मशहूर होगये,—

४३ [पहाड—गिरनार,-]

शहरजुनागढसे पूरवकों गिरनारपहाड जैनोका एकवडा मशहूर तीर्थ है. शहरसें पहाडकी दामनतककरीव (२) कोशका रास्ता होगा, इका-वगी-बेंलगाडी-म्याना-पालली-डोली-वगेरासवा-रो आसानीसें जासकती है, जिसकी खुशीहो सवारी में जाय-या-पांवपैदलनाय. वडेबडेट एत-और-तरहतरहके जंगली में वाजात क-सरतसें खडे है. बंदरों के झंडट एतों पर कलोले करते रहत है, रास्ते में दाहनीतक-राजानियतर्शी-अशोकका-शिलालेख-एकतर्फदामोद-रक्कड-सुवणेरेलानदी-पहाडकी तराइमें जमदातालाव—ह एतों के झंड औरजगहसुहावनो है, खास! पहाडकी दामनमें -तलहटी-और-दो जैनश्वेतांबरधर्मशाला वनीहुइ-जिनमें-एकशेठ-प्रेमचंदरायचंदजी-की-दूसरी फुलचंदभाइ-लुख्तरवालोंकी दोनों धर्मशालामें करीब (५००) यात्री-ब-खूबीठइरसकते है, यात्रीकोंयहांपर अगरखान-पानकरनाहो करे. हाजत-ब-शरीरे फारकहोकर वदनसाक करे. औरपहाडपरजानेकी शुरुआत करे, शुरुमेंएकआलिशान दरवजाब-नाहुवा उसमेंहोकर सीढीके उपर कदमरखे,

सम्रंदरकेपानीसे गिरनारपहाड (३६७५) फुटऊंचा-और-इसकादुसरानाम रैवताचलभी है, तीर्थंकर नेमनाथजीने इसीपहाड-पर मुक्तिपाइ. और उनके दिक्षा-केवलज्ञान-और-मुक्ति-ये-तीन कल्याणकयहांहुवे. कुक्तवामुदेवने यहांपर तीर्थंकरनेमनाथजीके बढे बढे आलिक्षानमंदिर और मूर्तियें तल्तनशीनिक इथी, मगरतव दील जमानेकीवजहसं-वे-मंदिर-और-मूर्तियें अवनहीरही, कइराजेमहा-राजोंकी सलतनतइसजमीनपरगुजरी जिनकानामिनशानभी पुरेपुरा नजरनही आता, कुक्नजीकेब डेभाइ बलभद्रजीका तामीरकरवायाहुवा मंदिरभी इसपहाडपरथा, मगरवहभीनहीरहा, तीर्थंकरनेमनाथजीने इसीगिरनारपर सहस्राम्चवनमें दीक्षाइष्टितयार किइथी. वह जगह बढेब डेताज्जब-और-नायाबकी है, तरहतरहकेमेशाजात-वनास्थित अनार-वा-नारंगी-यहां-ब-कसरतके मौजूद है. परींदाजानवर-मौर-तोते-चीडिया-मेंना-वगरा हरिकस्मके द्रख्तेंपरकलोलेकरग्हे है, चीस्मे-आब-मानींदेबर्फ-सफेद और मीठायहांपरजारी है,

गिरनारकी गुफायें गुल्कोंमेंमशहूर बहेबहेग्रुनिमहिषयोंने यहां परध्यानसमाधिकिइ, सोने—चांदी—जवाहिरातकी खानें यहांपरमी-जूदथी. तरहतरहकी जढीबुटी औररसकुंपिका यहांपरकायमदायमथी मगर आजकु उनकेपहिचाननेवाले नहीरहे,

[अनुष्टुप-वृत्तम्]

न-स-वृक्षो-न-सा-वही-न-तत्पुष्पं-न-तत्फलं, नेक्षतेत्राभियुक्तैर्यत्-इत्येतिह्यविदो विदुः,—

ज्ञानशिला-छत्रशिला-और-अंजनशिला-वगेरा कइशिला-ध्यानसमाधिकेलिये यहांपरमशहूरथी. मगरआजकल-वे-नामांतर होजानेकीवजहसें पहिचाननेमेंनहीआती. वेगवतीऔर ज्ञानशिलाके निचेऐसीमीटीहोतीथीकि-अगरतरकीवकेसाथ उसकोपकाइजाय-तो सोनाहोजाताथा, मगरजमानेहालमें वहतरकीव-और-उसमीटीकों पहिचाननेवाले नहीरहे, पेस्तरजो-किमियागिरिका इल्मथा-वह-द्युटानहीथा, वेशक! आजकलइस इल्मकेजाननेवालेनहीरहे, गिर-नारपहाड आजकलभी तरहतरहकी वनस्पति और चीस्मेआबसेतर-ब-तरहे, आवहवायहांकी साफऔरउमदा-गिरनारपहाडकी सीढि-यां-जोकि-राजाकुमारपालके कोतवालनेवनवाइथी पुरानीहोजानेकी वजहसें यात्रीकों चढनेकी तकलीफथी, जैनश्वेतांवर संघने करीब अढाइलाखरूपये सर्फकरके वास्ते आरामके नयी सीढिये बनवाइ. जिससेंयात्री इनदिनोंमें बहुतआसानीसे आतेजाते है,

गिरनारपहाड बडेबडेजैनमंदिरोसें मुझयन-औरकाबीलेदीद है. तीर्थकरनेमनाथजीने इसपहाडपर ध्यानसमाधि करके मुक्ति पाइ, इंद्रदेवते उनकीखिदमतमें हाजिररहतेथे. पेस्तरकेजमानेमें कइजंघा-चारण-विद्याचारणमुनि इसपहाडपर कदमरंजा फरमाचुकेहैं जिसके बडेभाग्यहो इसतीर्थकी जियारतकरे, रास्तेमें कइजगह उमदाबेंद्रके-और-तरहतरहकीखुशबु मेहकरही है, तलहदीसेंकरीब (२) मील तीर्थकर नेमनाथजीकी टोंकहोगी, अवलटोंकइसीकोंकहते है, यात्री यहांपरपहुंचकर तीर्थकरनेमनाथजीकी मूर्त्तिकेदर्शनकरे, वडेघेरेमेंमं-दिरोंका जमाववनाहुवाहै, पूजारी-नोकर-चाकर सवइंतजामउमदा तीरसेंकायमहै, तीर्थकर नेमनाथजीकी टोंकपरबडेबडेसोलहजैनमंदिर निहायतखूबसुरतिकेशाथ एकदूसरेसेंवढकर वेंथुमारदौलत–और–पु-रूतगीसेंबने है, देखकरदिलखुश औरताजाहोगा, (१४५) फुटलंबे और (१३०) फुटचोडेअंगनमें तीर्थकरनेमनाथजीका शिखरबंदमं-दिरबद्दुतखूबीकेशाथ नामीरहै, औरइसमेंतीर्थकरनेमनाथजीकी मूर्त्ति--ज्ञामरंग-और-हमेशां सोनेजवाहिरातोंसं सजीहइतख्तनशीन है, द्र्शनकरकेदिलखुशहोगा, सन (१२७८) इस्वीमेंइसकीमरम्मतद्भइ, बढेबडेरंगमंडप-चरणपादुका-और शिलालेखयहांपरमौजूदहै, ती-र्थकरनेमनाथजीके मंदिरकी-चारोंतर्फडमदा ताजगीसे वनेह्रवे छोटे छोटे (७०) मंदिरदेखकरदिलखुशहोगा, वायीतर्फवडेवडेआलिशान तीनमंदिर-एकमंदिरमें तीर्थकररिषभदेवभगवानकी मूर्त्तितख्तनशीन है, सामनेइसके पांचभाइयोंकामंदिर-पश्चिमकीतर्फवडा आलिशान पार्श्वनाथजीकामंदिर-और-इसके उत्तरकीतर्फ फिरएकमंदिरपार्श्व-नाथजीका–इसकेउत्तर वगलकेपास–मंदिर–छत्रपतिराजाकुमारपाल का-और-नेमनाथजीकेमंदिरसें पिछाडीदिवान-वस्तुपाल-तेजपाळ केबनायेहुवे तीनमंदिर-जोकि-सन (११९९) इस्वीकेअर्सेमेंतामीर करायेगये है, बडीलागतके है,-

छत्रपतिमहाराज संपितकावनायाहुवा शिखरवंदकीमतीमंदिर वडीलागतका औरपुरानाहै. उसकीशिल्पकारीगिरीपर आजविल्कुल वंपरवाइहोरही है, और उसपरचुनापुतवायाजाताहै. असलमें ऐसीका-रिगरीपर चुनापुतवानाकोइ जरुरतनही. वगेरचुने के ही - वे-निहायत खूबसुरतमाल मदेते है, देखोखुशन सीवोंने क्याक्या उमदा कारीगिरी किइथी जो जमानेहालमें होनादुसवारहै, पथरोपर नक्सकारी और

तरहतरहकेचित्र जो अव्वलके कारीगिरीने अपनी चतराइसें कियेथे वैसेचित्रऔर नरूसकारीकाकाम. अवकहां है, किसकदर खुक्रनसीब औरइकवालमंदोने यहांपर अपनीदौलत सर्फाकिइथी जिसकीवरावरी करना आजकलनहीहोसकता, खुशनसीव औरधर्मपावंद होतोऐसेहो अवभीमंदिरोंपरऔरदिवारोमंं जोजोकारिगिरी औरनक्षकारीकामहै-अगरकोइखुश्चनसीव उसपरकोशिशकरे. औरमरम्मतकरावे क्याहीड मदाबातहो ! नयामंदिरवनानेसें पुरानेमंदिरोकी मरम्मक्कराना जादह फायदेमंदहै, तीर्थकरनेमनाथजीकी टोंक-और-मेकरवज्ञीकेबीच जोबडे बडेहर्फोके शिलालेखहैबेशक ! इसवय्वतउनपर लकडेकेढकनवनेहुवेहै मगरघुप औरबारीशमें औरभीज्यादहहिफाजत होनाजरुरी है पुरानीची जोंकोंबरबाद-न-होनेदेना इसीकानामतीर्थकीसेवाहै. संवत् (१९३२) केअर्सेमेंगिरनारपहाडपर कड्मंदिरोंकीमरम्मतकिइगइ. नेमनाथमहारा-जकेमंदिरकी चोतर्फ-जो-किला-और परकम्माहैउसकीमरम्मतहुइ, मंदिरअद्भुदजीका-पंचमेंरुका-और-मेकरवज्ञीका-मय परकम्माके जीर्णोद्धारकरायागया, मंदिरसंग्रामसोनीका-और उसकाचौक मर-म्मतिकयागया. मंदिरजोकि-ज्ञानवावडीके-नजदीकहै किलाउसका नयातामीरकरायागया मंदिरछत्रपतिमहाराजा--संपतिकाभी उसी अर्सेमेंमरम्मतकियागया. औरउसमेंनयेपथ्थरोका चौकनयावनवाया गया, करीव (३०) वर्षहुवेइसीचौकमेंसे (७१) मूर्ते-और-धातुका परिकरानिकलाथा. मंदिरवस्तुपाल-तेजपालकी चारोंतर्फनयाकिला वनवाया. औरचौकमेंनयेपथ्थरोंका फर्सलगाया. मंदिरसंभवनाय-जीका-और-पानीकाकुंड उसीअर्सेमेंमरम्मतकरायागया. औरचारें। तर्फनयाकिलातामीरकिया, राजुलगुफा-और-रथनेमिजीका-मंदिर जिणोंद्धारकरवायागया. औरअवलदरवजेपर नयावंगलावना. यह सबकाम–शेठ-नरसिंह-केशवजीकीतर्फसें (४५०००) हजाररुप-योंकेलर्चसेतामीरहुवाहै,

गिरनारकी गुफार्ये पेस्तरवडीथी, और उनमे वडेबडेग्रुनिमहर्षि ध्यान कियाकरतेथे, अबभी कइग्रफाये मौजूदहै. जिनोनेइसतीर्थकी जियारतिक इंहे उनको बखुबीमाञ्चम होगा. जिनके बडेभाग्यहो इस तीर्थकीयात्रा करे, धर्मशाला-पानीकेकुंड-कोठी-और-कारखाना-सबइंतजाम अछावनाहै. नेमनाथजीकी टोंकसेंआगे दुसरीटोंकके द-र्भनेंकों जानाचाहिये. रास्तेमेंपानीकेहीज-मकानात-औरराजुलगुफा वगेराआतेहै दसरीटोंकसेंआगे तीसरीटोंककोजाना सहस्राम्रवन जानेकारास्ता तीसरीटोंकसें फटताहै. सहस्राम्रवनसे आगे अगरकोइ यात्रीनीचे तलहटीकों जानाचाहेतो जासकताहै, रास्ता पगदंडीका बनाहुवाहै, सहस्राम्रवनमें तीर्थंकरनेमनाथमहाराजके दीक्षाकल्याणि-ककी जगह-छत्री-और-चरन जायेनशीनहै, दर्शनकरके जोकोइ यात्री पांचमी टोंककों जानाचाहे फिरवापिसआनकर चौथीटोंकको जावे, चोथीटोंकपर तीर्थकर नेमनाथजीकी अधिष्ठात्रीदेवीअंविकाका मंदिरबनाहुवाहै, चोथीटोकसे आगे पांचमी टोंकका रास्ता शुरुहै, उसरास्ते-पांचवी टोंककोंजाय. रास्ताअलवते ! कठिनहै. असलमें पांचवीटोंक गिरनारपहाडके सीरेपरऔर पहाडकासीरा-आस्मानसं विलकुल बराबरीकररहाँहै. यात्रीकोंपाचवीटोंककोजानादुसवारऔर हेरानी माञ्जमहोती है, गोकि-जवानआदमीहो-वगेरेलकडीके जाना नहीहोसकता. इससववसेहरयात्री वहांपरजानेकेलिये वतौरसहारेके लकडीशाय लेजाताहै, जिसकेबडेभाग्यहो इसतीर्थकी जियारत करे पांचवीटोंकपरतींथेकर नेमनाथजीके चरणजायेनशीनहै,-और एक मृत्ति दिवारमें उकेरीहुइ उसके दर्शनकरे. - जगहसुहावनी - देखकर दिलखुशहोगा.-जिसवरूतइसटांकपर खडेहोकर नजरफेरेतो मालुम देताहैमानो ! आस्मानसेंजमीनकी शैरकररहेहै, तरहतरहकी हरिया-

की-गांव-बगीचे-और-शहरजुनागढ सामनोदिखपडताहै, इसटोंकके द्र्ञनकरके यात्री वापिस आनेका इरादाकरे. गजपद्कुंड-सूर्यकुंड-तरहतरहकी वनास्पति-और-जडीबूटीयें यहांपरखडीहै, कहांतक कोइबयानकरे. पांचवीटोंकसे चौथीटोंक-और-चौथीटोंकसें तीसरी, तीसरीसे-दुसरी-और दुसरीसे पहेली-इसतरह जिसरास्ते गयेथे जसीरास्तेहोकर नीचेतलहटीपरआजाय,-यहांपरकयामकरनाहो-बे-शक ! करे-या शहरमेंजानाहो शहरमेंजाय, गिरनारपहाडकाचढाव तलहटीसें पांचमीटोंकतक (६) मील-आतेजाते (१२) मीलहुवे. श्वभहकोंगयेहुवे यात्री शामकों ब-खूबीवीछे-छीटसकतेहै,-

छत्रपतिमहाराजसंपति-छत्रपतिमहाराज कुमारपाल**-दिवान** वस्तुपाल तेजपाल-और-संग्रामसोनी-जिनके तामीरकरवाये दुवे जैनमंदिर यहां मौजूदहै.-वे-सव जैनश्वेतांवर आम्नायके श्रावकथे,

सुरासुरा अप्यतुलम्माणं-नमंतिबद्धांजलयो यसुचैः, ध्यायंतियं योगविदोह्रदंतः-तं नेमिनाथंप्रणतस्तवीमि,

्रअनुष्ट्प-वृतम् ो

स्थानेदेशः सुराष्ट्राख्यो-विभर्ति सुवनेष्यसौ, यद्भूमिकामिनीभाले-गिरिरेषविशेषकः, सहस्राम्रवनं लक्ष्यारामोन्योपि वनव्रजाः, मयूर कोकिला भृंगी-संगीतसुभगाइह, नदीनिर्झरकुंडानां−खनीनां विरुधा<mark>मपि</mark>, विदांकरोचात्रसंख्या-संख्यावानपिकःखळु. ् रैवताद्विमणिरत्न-किरणैर्धनवर्णकैः, अयत्नं चित्र निर्माण-मासीत्तत्रजिनाळये,

सन (२१०) इस्वीकेपेस्तरसेंगिरनारतीर्थ जैनश्वेतांबरींकेजियार-तकी जगहमशहुरहै-ऐसा-इतिहासकारोंकाभी फरमानाहै,-

(तवारिख-तीर्थ-गिरनारखतम-हुई,-)

तीर्थगिरनारकी जियारतकरके जनागढसंअगरकोड पौरवंदर तकरैलमें औरपौरवंदरसें ष्टीमरमेंबैटकर सम्रंदरकेराम्बं क्रिका जित हुवे मुल्ककछको जानाचाहेतो जासकतेहै, अगरकोः 🔑 💛 🥬 केरास्ते राजकोट-जामनगरहोकर-जामवरपटिस्तर 📡 🐠 👉 रास्तेम्रुल्ककछकों जानाचाहेतोभी जासकतहै. जिनकौंकछके जैन-तीर्थजानेकी फुरसत-न-हो-और-जुनागढसे बोलाजंकशन होते-हुवे-वढवान-वीरमगांव-अहमदाबादके रास्ते-उतर-पूरव-या-द-खनकों जानेकाइरादाहो-तोभी-जासकतेहै, कइरास्तेहै जिनकीजै-सीमरजीहो-मृताविकउसकेसफरकरे.

(बयान-पौरबंदर-और द्वारिका.

(जनागढसे पोरबंदर द्वारिकाहोतेहुवे-)

(मुक्कबछ जानेका रास्ता.)

*जुनागढसे-वडाल-जेतलसरहोकर धोरांजीजाय, यहांपर जैनश्वेतांवरमंदिर औरआवादीजैनश्वेतांवरश्रावकोंकी अछीहै, मर्दु-मथुमारी (२०४०६) मनुष्योंकी-और-जिसचीजकी दरकारहो

अ जनागढसें टखनमें वेरावल-पाटन-जैनोकी आवादिके-शहर और-उनमें बडेबडेआलिशान जैनमंदिरबनेहुवेहैं, रैलिकिसया -पनरह आने.

यहांमिलसकेगी. जिलेकाठियावाडमें एकमशहूर तिजारतीकस्वा-और-चारोतर्फइसके पकीदिवारिघरीहुइहै, धोराजीसेउपलेट-भाया-वदर-जामजोधपुर-साखपुर-और-रानावाव-होतेहुवे पोरवंदरटे-शनजाय. रैलकिराया-सवारूपया. जुनागढसे (९५) मील**-**पश्चिमकीतर्फ-सम्रंदरकनारे देशीराज्यकीराज्यधानी-पौरबंदरशहर-जिसकों-बहुतलोग-सुदामापुर बोलते है यहीहै, पौरवंदरकीमर्दुम-थुमारी−(१८८०५) मनुष्योंकी−जिनमेकरीव (१०००) जैनश्वे-तांवरश्रावकलोग आबादहै, कइजैनश्वेतांवर मंदिर-और-ठहरनेके-लिये मकानवनेहुवेहै यात्री—जाकर देवदर्शनकरे. पौरवंदरकी चारों तर्फ पकाकोट--और--बहुतसे मकान यहांपथरोंके बनेहुवेहै, राणासाहवके महेल-कचहरी-स्कूल--अस्पताल-और-धर्मशाला--बडीलागतके-मकानहै. पौरवंदरकी--तिजारत समुंदरकेरास्ते-सिंध-बळुचीस्तान-फारसकीखाडी-अरबस्तान-और-आफ्रिकाके वंदरगाहोतकहोतीहै, हिंदमें--सुरत--भरूच--नवसारी-वंबइ-को-कन-और-मलवारतकहोतीहै, पौवंदरराज्य सम्रंदरकनारे वडीदूर-तकलंबा फैलाहुवा मगरचोडाइमे (२४) मीलसें ज्यादहनही, जमीन-उपजाउहै. राज्यमेंतीन-चार-छोटी-छोटी-नदीयेंबहती है औरलोग अमनचैनकररहेहै, बंबइसे-जो-धीमर-वेरावल-मांगराल -पौरवंदर और-द्वारिकाहोतीहुइ करांचीजातीहै उसीमें द्वारिकाजा-नेबालेयात्री पौरवंदरसें सवारहोवे. सेकंडकलास पासेंजरकेलिये-दोरूपये-और-थर्डकलासवालेकेलिये एकरूपयाकिराया लोगां. ष्टीमरसे चढनेउतरनेवाली जोछोटीनाव होतीहैउसका किराया(४) आने अलगलगेंगे.-

क्क तीर्थ **हारि**का.

बंबइसे (३४२) मील-और-पौरबंदरसें (५६) मील-प-श्चिमोत्तर द्वारिकानगरी-एकनिहायतपुरानीजगहहै, पौरवंदरसेद्वा-रिकातकखुक्किरास्ता बनाहुवाहै, जोलोगष्टीमरमें वेटना−नापसंद करतेहो उनकोंखुक्कीरास्तेजानाही वेहत्तरहे, पेस्तरकेजमानेमेंजबदश द्शारवर वीर-पुरुष-समुद्रविजयजी-उग्रसेनजी-और वसुदेवजीय-हांरहतेथे उसवरुतद्वारिका वडीरवन्नकपरथी, बडेबडेआलिशानजैन मंदिरयहां मौजूद थे, क्या! उमदामहल--समुद्रविजयजीके -उग्र-सेनजीके-वसुदेवजीके-और--उनकीरानीयोंकेथे--जिसकी तारीफ बयानकरना अकलसेवइदहै. जमानेहालमेंजो द्वारिकामौजूदहै नयी आवादहुइहै--पेस्तर द्वारिकाकिसकदरझलाझल रोज्ञनीलियेथी ? वहरोशनी--और--खूबसुरतीअवकहाहैं ? वरायेनाम-एकछोटीसी पुरी-देखलो ! जमीनवेंशक ! वहीहै-मगर-वे-खुशनक्रीव-और -दौलतमंदलोग अवनहीरहै, इसवरूतद्वारिकाकी मर्दुमथुमारीकुल (५०००) मनुष्योंकी-आठ-दस-धर्मशाला-पांचसातस्कुले-कइ-अस्पताल-पुलिस-और-जेलखाना-वगेरेमकान वनेहुवेहै, समुंदरक-नारे-नमकबहुत औरइसीसबबसे शस्ताभीविकताहै, शिवायनमकके दूसरीचीजकी पैदाशयहांकमहोतीहै, गोमतीनामकी खाडीयहां बडी लंबीचलीगइ-जोकि-पानीसे-हरहमेंश-तर-व-तरवनीरहतीहै, क-नारेइसके (९) घाट-वडीलागतके वनेहुवे-जिनकेनाम-संगम-घाट–वसुदेवघाट–और–पांडवघाट–वगेरा, द्वारिकाकों वैदिकमजहब वालेभीतीर्थ मानतेहै, द्वारिकासें (१०) हैंकोशआगे वेटद्वारिका-एकअलग--टापुहै, पेस्तरलिखआये द्वारिकानगरी-बहुनवडीथी-असलमे-ये-सव-उसीके अलगअलगाहिस्से होगयेहै, असासमझो,

द्वारिकासे बेटद्वारिका (७) कोशपरहै, रास्ताखुक्कीसडकका बनाहुवा-सवारीकेलिये बेंलगाडीमिलसकतीहै किरायाएकरूपया गडीलगेगः वारंमडा-गांवतकवेंलगाडी जायगीऔरआरंमडासें(३) कोशआगे समुंदरकीखाडीमे-ब-जरीयेनावके-जानाहोगा. किराया नावका सीर्फ ! आधआनाहे, द्वारिका-टापु-करीव (७) मील-लंबाकइधर्मशाला-तालाव-और-हरजगहपकेघाट बंधेहुवेहै. जगह सोहावनी-और समुंदरकीतरंगे दिलकों मोहेलेतीहे, जैनश्वेतांबर मंदिरयहांतामिरहे, द्वारिकामें पेस्तरजैनतीर्थथा-तीर्थकरनेमनाथजीके यहांबडेबडेकीमित मंदिरथे,-मगरजमानेहाल उनमेसें एकभीनही-सीर्फ ! इसीसंदिरके दर्शनकरके-तीर्थद्वारिकाकी जियारतहुइ समझे बेटड्वारिकासे द्वारिकाआनकर समुंदरकेरास्ते ष्टीमरमें सवारहोना और मांडवीबंदरजाना औरआगेम्रलक्कलके जैन-तीर्थ-ष्टतकल्लोल-और-भद्रेश्वरकी-जियारतकरना-जनागढसे पौरवंदर-और-द्वारि-काकारास्ता खतमहुवा,

अगरकोइयात्री जुनागढसे पौरवंदरके रास्ते-न-जानाचाहै
औररैलकेरास्ते जुनागढसे जामनगरऔर जामनगरसे खुक्कीरास्ते
वैलगाडीमें द्वान्कि।जावे तोभी जासकतेहैं,-मगरकोइ जुनागढसेंरैले
रास्ते जामनगरऔर जामनगरसे समुंदरकेरास्ते ष्टीमरमेसवारहोकर
तुणा वंदरहोते मुल्ककछकों जाना चाहे तो नीचे बतलाये हुवे
रास्ते जाय,-

जुनागढसे रैलमेंसवार होकरवडाल-जेतलसर-नवागढ-वीर-पुर-गोंडल-और-रिवडा-होते राजकोटजावे, रैलकिराया पनरां अने लगतेहै, पोलिटीकलपजटका सदरम्रकाम राजकोट-जिलेका-

ठियावाडमें एकगुललारवस्तीहै, सन (१८९१) की मर्दुम**शुमा**-रिकेवरूत राजकोटकी मर्दुमथुमारी (२९२४७) मनुष्योंकीथी. महाराजराजकोट जाडेजाराजपुत कहलातेहै राजकोटराजकी जमीन कहीं उंचीकहीं नीचीऔर पथरीलीहै, औरअनांज-रूइ-इख ज्यादह पैदाहोतेहै,-हाइस्कुल सन (१८७५) इस्वीमें (७००००) रूप-योके खर्चसें तयारहुवा औरखुला. राजकुमार कालेजसन (१८७०) इस्वीमें तामीरहुवा औरखुळा. राजकोटमें जैनश्वेतांवरमंदिर-और श्रावकोंकेयर आवादहै, जिलाकाठियावाड (२२०) मीललंबा और (१६५) मीलचोडा–इसमेंमशहूर शहरभावनगर–जामनगर-जुनागढ–राजकोट–गोंडल–मोरबी–बांकानेर-पोरबंदर-वढवांण— र्लामडी-और-पालितानाहै. रूइऔर अनाजकीतिजारत इसजीलेमें ज्यादहहोतीहै औरजवानअकसर गुजराती बोळीजातीहै, खास ! पोलीटीकलएजंट-मुकामराजकोटमें रहतेहै, जिलेकाठियावाडमें श-वुंजय-गिरनार-मञहूरजैनतीर्थहे, यात्रीराजकोटसे रैलमेंसवारहो-कर पडधरी-हडमतीया-वणथली-और-अलियावाडा टेशनहोते-जामनगजाय, रैलकिराया बाराआने लगतेहै.-

राजकोटसें (५१) मील पश्चिमका जामनगर एकमशहूर-व-मारूफशहरहै, और इसकादृसरानाम नयानगरभी बोलतेहै, सन (१५४०) इस्वीमें जामरावलजीनेइसकों आवादकिया, जामन-गरकी मर्द्रमशुमारी (४८५३०) मनुष्योंकी, राजमहेल बडेउमदा -और-शहरदिनपरिदनतरकीपरहै, अंतराफशहरके पकाकोटिघरा-हुवा-इमारतें मजबुतपथरोंकी-शिवायजामनगरके दुसराकोइउमदा शहरहालारपांतमें नहीं, कारचोवीकाकाम--कमख्वाव-<mark>रेशम-दुपट्टे</mark> शेंले-तिलककरनेका कुंकुम-मोतीका सूरमा-औरइतरयहां उमदाब-नतेहै, जैन वेतांवरमंदिर जामनगरमें (९) और वेतांवर श्रावकाके

घरअंदाज (१५००) केहै, जैनश्वेतांवरमुनियोंको ठहरनेके आठ नवमकान-वर्गाचादादाजीका-और-वंडा-अजरामरहरजीका-वडी-ळागतकावनाहुवा-यात्रीइसमें कयामकरेऔर वख्वीजैनमंदिरोंके दर्शनकरे, जिलेजामनगरमें मारवलपथ्थर-तांवा-लोहा-रूइ-और-अनाजज्यादहहोताहै. पहाडीयोंमें पेस्तरशैरभी रहाकरतेथे, चीते औरतेंदुएअवभी पायेजातेहैं, जामनगरके राजवंशीजाडेजा राजपुतों-मेंसेंहैं, जामनगरकीउत्तर्फ कछकारण-और-समुंदरकीखाडी-पूरवमेंमोरवी-राजकोट-औरगोंडलराज्य-दखनमेंसीराष्ट्र विभाग-और-पश्चिममेंऊखमंडल-मौजूदहै, यात्रीजामनगरसे रवानाहोकर मुक्ककछकोंजाय, अवल वेंडीवंदर जोकरीब (२॥) कोशकेफा-सलेपरहै इक्केमेंसवारहोकरजावे, वेडीवंदरसे आगेष्टीमरमें सवारहोकरदियाइरास्ते-तुणावंदर-ऊतरे, रास्ताकरीव तीनघंटेका-और-किरायासीर्फ ! आठआनेफी-आदमीलगेगा, तुणावंदरसेआगे खुक्कीरास्ते-वेलगाडीमें-सवारहोकरतीर्थभद्रेश्वरजाय,-

🗫 [बीचबयान भद्रेश्वर और घृतकल्लोल.

मुलक्कछमें भद्रेश्वरतीर्थ निहायतपुरानाहै, गांवभद्रेश्वरबहुत बहानहीलेकीन! तीर्थकीवजहसे मशहूरहै,—धर्मशालायहांपर बनीहु-हुइहैयात्रीइसमें कयामकरेऔर तीर्थकीजियारत हासिलकरे, मंदिर शिखरबंद बावनजिनालयका—बहाआलिशान—बनाहुवाऔर इसमें तीर्थकरमहावीरस्वामीकी मूर्त्तितस्तनशीनहै, सालमेंदोदके यात्री-योंकायहां मेलाभरताहै और ऊनदिनोंमेंबडी रवनकरहतीहै, कार-खानातीर्थ भद्रेश्वरका वर्द्धमानकल्याणजीके नामसेजारीहै जोकुल-रकमतीर्थ भद्रेश्वरके खजानेमेंदेनाहो—यात्री—यहांपरदेवे, औरभद्रे-श्वरसेंरवानाहोकर शहरमांडवी बंदरकोंजाय, जो—करीब (१३) फासलेपरहै. रास्ता बैलगाडीका और किराया अंदाज तीन रूपये लगेगे.

मांडवीबंदर कछके दखनकनारेएक बडाशहरहै, सन (१८९१) की-मर्द्रमशुमारिकेवस्त-मांडवीकी मर्दुमशुमारी (३८१५५) मनुष्योंकीथी. मुल्ककछमें शिवायमांडवीके दूसराकोइ बडाशहरनही. महाराजकछकी अमलदारीकातरूत-वेशक! ग्रुजशहरहै, मगरआवा-दीमेंशहरमांडवी वडाहै, भुजशहरकीआवादी (२५४२१) मनु-ष्योंकी-औरमांडवीकी ऊपरवतलाचुकेहै देखलो ! ज्यादहहै. अत-राफशहरमांडवीके पकीदिवारवनीहुइ औरबहारशहरके दो-सराय-एकपुरानी औरएकनयी मौजूदहै जिनमंम्रुसाफिरलोग ठहराकरतेहैं. मगरजैनयात्रीकों शहरमें जानामुफीदहोगा-जामनगरसें कइजहाज कछकी खाडी केरास्ते मांडवीकों आतेजातेहै, हरसप्ताहमें जोएकष्टी-मर शहरवंबइसें खुलकरकरांचीकों जातीहै वेरावल-पौरवंदर-द्वारिका-और-मांडवीवंदरहोतीहुइजातीहै, और करांचीसेखुलकर जोष्टीमरवंबइकों रवानाहोतीहै-वोभी-मांडवीवंदर-द्वारिका-पौर-बंदर-औरवेरावलहोतीहुइ जातीहै, मांडवीवंदरकेपास एकलाइट-हाउस-(यानी) रौशनीघर बनाहुवाहै, रातकोंइसीके जरीये जहाजवाले अपनाकामलेतेहै, मांडवीमेंजैनश्वेतांवरमंदिर (५)–और कइजैनश्वेतांवरश्रावकोंके घरआवादहै, यात्रीबहरमेंजाकर जैनमं-दिरोकेटर्शन करे.-

मांडवीसेरवानाहोकर आगेसुथरीकस्वेकोंजाय, जो (११) को शकेफासलेपर वाकेहै,-किरायावैलगाडीका करीब (३) रुपयेलगेगें,

सुथरीकस्वावडाहै औरयहांपर घृतकल्लोलपार्श्वनाथजीका पु-रानातीर्थहै. जैनश्वेतांवरश्रावकोकेघरकरीव (२२५) औरधर्मशाला एकयहां बहुतबडीबनीहुहहै यात्रीइसमेंकयामकरे औरतीर्थकीजिया-रतब-खुबीहासिलकरे, मंदिरवेंशकीमती तामीरिकयाहुवा—औरइसमें तीर्थकरपार्श्वनाथमहाराजकी मूर्त्तितक्तनशिनहें, हरसालकातिकमु-दीपुनमकेरीज यात्रीयोंकायहां मेंलाभरताहे खानपानकीचीजेंजोचा-हियेयहांमीलसकेगी. मुथरीसेंरवानाहोकर जिसरास्तेगयेथे वेलगा-डीमेंमांडवीआना. मांडवीसेंडसीरास्तेफिर भद्रेश्वरऔर भद्रेश्वरसेंअं-जारदेशनआना, जोकरीब (४) कोशकेफासलेपरहे, कस्वाअंजार गुलजार और यहांपरहरचीज व—आसानी दस्तयावहोतीहे, सन (१८९१) की मर्दुमशुमारीकेवस्त अंजारकी मर्दुमशुमारी (१४४३३) मनुष्योंकीथी, अंजारसें रेलमेंसवारहोकर तुणाबंदरकोंआना, मुल्क कल्किसफर यहांखतमहोतीहे, इसमेंभद्रेश्वर औरघृतकल्लोलयही(२) बढेजैनतीर्थहे, जिनकावयान उपरवतलाचुके,—

मुल्ककछमं (८) कस्वेऔर (८८९) गांवआवादहै, जवान कछी-और-कुछलेग उर्द्भीवोलतेहै, कछकेराजासाहवक्षत्रीय खा-नदानके औरउनकातख्तभ्रजशहरहै, कछमेंकोइकदीमीनदीनही. अ-य्यामवारीशमें जवछोटेछोटेनालेबहते हैं उनहीकोंनदीयांसमझलिजिये अनाजकी तिजारतयहांज्यादहहोती है, मकानपुख्ता औरउमदाका-रिगिरीकेवनेहुवे, कछकामेंदानमुख्कोमें मशहुर-जिसकेदो-हिस्सेका-यमहै, अवलहिस्सा (७००) वर्गमीलका-और-दूसरा (२००) काहै, कछइलाकाकेमशहुरशहर मांडवी-भ्रज-मुद्रा-और-अंजारहै. सुथरी-कोटारा-निलया-तरा-जखी-और कोडाय-येभीअछेकस्वे है, औरइनसवमें-जैनश्वेतांवरमंदिर-और-हरजगह श्रावकोंकीआ-वादी है, जीवोंकीजिवेकारी कछमेंबहुतकम-और-लोग मिलनसार है, तुणावंदरसेंष्टीमरमेंबेठकर यात्रीवापिस जामनगरआवे, औरजा-मनगरसें रैलमें सवारहोकर-अल्यावाडा-वणाथली-हडमतीया-पडधरी-राजकोट-खोराना-सिधावधर-वांकानेर--थान-रामपर्डा मूलीरोड-वढवांणकेंप-लखतर-लीलापुररोड-सांवलीरोड--विरम-गांव-और-विरमगावसे खारागोढा लाइनमेंसवार होकर झुंडटेशन जाना, रैलकिराया करीब सवारुपया लगताहै,—

👺 [तवारिख-तीर्थ-शंखेश्वर,]

इंडटेशनसे (१५) कोशकेफासलेपर खुक्कीरास्ते बैलगाडीमें सवारहोकर तीर्थशंखेश्वरकोंजाना. शंखेश्वरगांव बहुतवडानही छे-कीन ! तीर्थकीवजहसें मशहुरहै, जैनश्वेतांबरश्रावकोके घरयहांदश –बारां–और बडाआलिशान जैनश्वेतांबरमंदिर यहांमानींदे स्वर्गाविमानकेखडाहै, परकम्मामंदिरकी बहुतबडी–रंगमं-डप-निहायतउमदा-और-फर्सदांगेमर्मरका लगाहुवादेख-करदिलखुशहोगा, तीर्थंकरपार्श्वनाथ महाराजकी सफेद मूर्त्ति-करीब सवादोहाथकेबडी-इसमें-तख्तनशीनहै, गत चौविशीके नवमेंतीर्थंकरमहाराजके जमानेमेंएक-अषाढी नामकेश्रावकने यहत।मीर करवाइथीः जबकि-जरासिंधुके शाथ-कृष्नवासुदेवजीकी लडाइहुइथी-और-उसनेजव जइफीहोने-का-बान-कृष्नवासुदेवजीकी फौजपरछोडाथा,-तमामफौज उसव-कृत कृष्नवासुदेवजीकी जइफहोगइथी. कृष्नवासुदेवजीने-इस-ती-र्थकरपार्श्वनाथजीकी मूर्त्तिकास्नानजल–लेकर अपनीफौजपरछि-डकाथाकि-फौरन ! उनकीफौज-ब-दस्तुरपहेलेके होशियारहोगइ-थी, यहमूर्त्ति-पेस्तर बहुतनियामत बक्षनेवालीथी जबाके-बहुतसें आकील-और-दानालोग मौजूद्ये, औरउनकाएतकात्वर्मपर मु-स्तकीमथा, इसवजहसेउनकोंफौरनपरचामिलताथा, आजकल−वो− वातनही है जोपेस्तरथी. कोइकोइइसदलीलकोंभी पेंशकरतेहैंकि-शं-खेश्वरपार्श्वनाथजीकी इतनीपुस्ननीमृत्तिं-इतनेकालतक कैसेरहसकी? मगर इसवातपरखयाल नहीं करते कि – अधिष्टायकदेव — जिसमूर्त्तिके रक्षकहोजाय – वो – मूर्त्ति बहुतकालतकभी कायमरहसकती है, —

धर्मशाला यहांपरवहुतवडी वनीहुइहै, मगर असकी मरम्मत होनादरकारहै, तीर्थशंखेश्वरका कारोबारवतौर शाहाना—वनाहुवा मुनिम—गुमास्ते—नोकर—चाकर—घंटा—घडियाल—और नोवतखाना सबचीजेंमीजृदहै, पेस्तर इसतीर्थकी—जैरिनगरानी राधनपुरकेश्राव-कोंकीथी, मगरचंदसालसें शहर अहमदाबाद वालोंकी हो गइहै, —या-त्रीकों जोकुछरकम—खजानेशंखेश्वरजीके देनाहो यहांदेवे. औरतीर्थ की जियारत हासिलकरके—व—जरीये वेंलगाडी केवापिस झंडटेशन आवे, वहांसेरेलमें सवारहोकर विरमगावजंकशन उतरे और विरमगांवसें भंकोडा—देतरो जहोते हुवेगेलडा—देशन जाय. रेलकिरायाती-नआनेनवपाइ, —गेलडाटेशनसे तीर्थभोयणी—करीवपौनको शके फा-सलेपरहै, व—जरीयेवेंलगाडी—या—पांवपैदलजाय, यह एक नयातीर्थ श्रमारिकयाजाताह, और इसकी दास्तान इसतरहहै,—

🗫 (तवारिख-तीर्थ-भोयणी,-)

एकमरतवाका जिक्रहेसंवत् (१९३०) की साल्रमंएकिकिसानकेखेतमेजोकि-मौजेभोयणीका वाशिंदाथा. औरजिसकानामकेवलपटेलथा, दुफेरकेवच्त उसकेनोकरकुवा खोदरहेथे. उसवस्तएक
दमकुवेकेभीतरसे बाजोंकीआवाजआनेलगी, लोगोनेताज्जुबिकयाकि-यह-क्या-! माजराहै, ? औरअतराफकुवेके देखनेलगे कुलनहीमाल्रमहुवा. जबअंदरकुवेके उतरेतोवहांसें औरभीज्यादह अवाजबाजोंकीआइ. लोगोनेकहा! यहांपरकुलअजीवबातहै, वे-फौरन! कुवेकेबहारआये, औरदिलावर मर्ददो-चार-भीतरकुवेकेउतरे
देखतेहै-कुवेकीकुल थोडीसीजमीन फटीऔरउसमेसें तीनमृतिं-

निकली. ऊनोनेउनमूर्तियोंकों बहारनिकाली. उसवस्त जैनश्वे-तांबरश्रावक-त्रिभोवनदास-जोकि-क्रंकवावगांवका वाशिंदा-अप-नी-शिकमपरवरीशकोलिये मौजेभोयणीमें दुकानकरताथा तीनोंमू-र्तियोंकोंदेखा, औरकहा ! येतोहमलोगोके मजहबकीहै,-इनमेंजो पदमासनमृतिंहै तीर्थेकरमछिनाथजीकीहै औरकायोत्सर्गध्यानमयजो औरहै वेभीहमारेहीमजहबकीहै,-तीनोंमृतिंये सफेदशंगमरमरकीब-नीहुइ देखकरसवखुशहुवे, कडीगांववाले लोगकहनेलगेहम अपने गांवमेंलेजायगे, कुंकवावगांववालेबोले हमलेजायगे.भोयणीकेटाको-रसाहबबोले हमअपने भोयणीगांवमें लेजायगें. क्यौंकि-हमारेगां-वके किसानखेतमें ये मूर्तियेनिकलीहै, औरइसलिये हमाराहकहै, गरजेकि-उसवरूत तकरारहोनेका मौकाआगया, कुंकवावगांवके वार्शिदेत्रिभोनदासने कहाकि-जराटहरो !! अगरदेवसचेहै-तो-सबकुछठीकहोजायगा. तकरारकरनेकी कोइजरूरतनही. एककाम-करो विनावैलजोते एकगाडीलाओ. औरइनमूर्तियोकों गाडीमेंस-वारकरो, जिसतर्फगाडीकाम्रह-खुद-ब-खुदफिरजाय उसतर्फले-जाओ, लोगोनेवैसाहीकिया, और फौरन ! गाडीकाग्रह मौजेभो-यणीतर्फ फिरगया, बस ! फिरक्यादेरथी ! ! भोयणीवाले खुद उसमूर्तिकों अपनेगांवमेंलेगये. भोयणीघांवके टाकोरसाइवने पेंज्ञवा-इकिइ. औरगांवमेंलेजाकर केवलपटेलकेघर-एक-अलगमकानमें तीनोंमूर्तिजायेनशीनिकइ, शहर-व-शहरसे यात्रीआनेलगे, पूजनका कारोबार बखुबीचलनेलगा. औरयात्रीकी आमदरफतसे खजाना दिनपरदिन बढतीपर होतागया, पेस्तरधर्भशालावनी और-बाद एकबडाआलिक्शान शिखरबंदमंदिरबनाकर संवत् (१९४३) माघ वदी (१०) केरौज-प्रतिष्टािकइगइ औरतीर्थेकर मिल्लनाथमहाराज की मूर्तिजसमेंतरूतनशीनाकेइ,-कारखाना-मुनीम-गुमास्ते-नोकर्-चाकर-पूजारी-सवटाठबनाडुवाहै, यात्रीजोक्कछरकम तीर्थकेख- जानमे देनाचाहेलुश्रीकेशाथदेवे. और जियारतकरके वापिसगेलडा टेशनआवे. और रैलमें सवारहोकर-कटोसन-जोटाणा-लीच-होते-हुवे-मेहसानाजंकशनजावे, रैलिकराया सवातीनआने लगतेहैं, मेन्हशानेसेचारतर्फ रैलवेलाइनगइहै, एक-शहरपाटनकों-दुसरीखेरा-छकों-तीसरीअहमदावाद-और-चोथीआबुरोड होकरमुल्कमारवाड कों,-यात्री-मेहसानेसे खेरालुलाइनमें तीर्थ-तारंगाकी जियारतकों जावे-मगरकस्वे मेंहसानेमेंजाकर जैनश्वेतांवर मंदिरकेदर्शनभीकरे छोटेबडे (१०) जैनश्वेतांवरमंदिर-औरबहुतआवादी जैनश्वेतांवर श्रावकोंकी यहांपरमोज्दहे, जैनपाठशालावगेरा सवइंतजाम-लाइक तारीफकेदेखोगे. यात्री-मंदिरोकेदर्शनकरके वापिसटेशनपर आवे, औरखेरालुजानेवाली रैलमेंसवारहोकर-रानदाला-विश्वनगर-वड-नगरहोतेहुवे खेरालुटेशन जावे. रैलिकराया सवापांचआनेलगतेहै,-

👺 [तवारिख-तीर्थ-तारंगा,]

मौजाखेराल एकअलीवस्ती है, जैनश्वेतांवर श्रावकोके घर (१५०) औरमहोलेडेहरासेरी-दो-जैनश्वेतांवरमंदिरमौजूदहै, धर्मशाळायहांपरवनीहुइहै, इसमेंकयामकरे औरतीर्थतारंगाजानेका इंग्तजामकरे. जोलुक्कीरास्तेफासले पांचकोशकेवाकेहै, सवारीकेलिये बेळगाडीमिळसकेगी. खेरालुसेरवानाहोकर यात्रीतीर्थतारंगाकोंजावे कोइतकलीफ-न-होगी. शाथआरामकेपहुचजाओगे, रास्तेमें एक इभोडानामकागांवामिलेगा, यहांपरधर्मशालावनीहुइहै, औरपांचसाव दुकाने-साहुकारोंकीभीमोजूदहै, करीवतारंगापहाडकीदामनमें एक टीबागांविमलेगा, रास्ताचढाइका-चढाव-दो-कोशका-और तमाम पहाडकाविराववारांकोशकाहै, घोडा-टटूभी-चढसकतेहै-और-पांच पेदलभी ब-आसानीजासकतेहो, लेकिन! पहाडकाचढनाजरा सु- दिकलकाहै, रास्तेमंद्रख्तोकेझंड-आम-अमरुद-खीरनी-शरीफे-इ-

मली-नीम-बबुल वगेरादरूतखडेहै. कभीकभीइसजगह शैरभीआ-जाताहै. जबपहाडकीचोटीपरपहुचोगे एकधर्मशालाऔरदुकानेबनी-योंकीमिलेगी,-हरेकिकसमका सामान-बास्तेगिजांके-जोकुछदरका रहो दस्तयाबहोसकेगा.

तारंगातीर्थकी तरकीवदौलत हेमचंद्राचार्यकेहुइ, क्यौंकि--ये--राजा--कुमारपालकेगुरुथे और कुमारपाल अठारादेशोका राजाथा, जवकुमारपालकों राज्यनहीमिलाथा हेमचंद्राचार्यजीनेउस केलक्षणदेखकर कहदियाथाकि-तुं! आलादर्भेकाराजाहोगा, जब-कुमारपाल-राजाहुवा हेमचंद्राचार्यकी कदमबोसीकोंआया, औरअ-पनेनगरमें वडीञ्चान-सौकतसेंछेगया, राजाकुमारपालकीसलतनतका खासमुकाम-शहरपाटन-जोकि-मुल्कगुजरातमें एकमशहुर-व-मा-रुफशहरहै जोकुछहुकमवगेरा सवजिलोमेंजारीहोताथा उसीपाटनसे निकळताथा. हेमचंद्राचार्य-बडेआलिमफाजिळ-संस्कृतविद्याके आ-ळादर्जेकेपंडितथे, जिनोनेअपनी अकल-और-इल्पसेअछेअछे धर्म-शास्त्र-और-व्याकरण-काव्य-कोश-न्याय-अलंकारवगेरा वनाये है, जिनकोपढकर आलादर्जेंकेपंदितलोगभी ताज्जुबकरते है राजा कुमारपाल हेमचंद्राचार्यके हुकमकोंसीरपररखताथा औरकभीहुकम अदुलीनहीकरताथा, दुसरेमजहबवाले जोकि-वडेमंत्रवादीकहलातेथे राजाकुमारपालके दरवारमें आनकर अपनामंत्रवलबहुतसा बतलातेथे मगरक्या ! मजाल्यीकि-कोइ उनकामुकाविलाकरसके ! क्यौंकि-आचार्यहेमचंद्रजीको शासनदेवीसिद्धथी, हेमचंद्राचार्य-हमेशांआम-लोगोकों व्यारूपानधर्मशास्त्रकासुनातेथे, औरधर्मसभा जुडतीथी. राजाकुमारपाल हमेशांधर्मशास्त्र आमलोगोंकीबराबरीमें जमीनपरवे-ठकरसुनताथा, औरउतनीवंदगी गुरुकीकरताथाकि-किसीतरहउनके हुकमकों नहीटालताथा, राजाकुमारपालको देवभक्तिमीऐसीथीकि

पाटनकेजिनमंदिरमें हमेशांखहाहोकर वीतरागस्तवपढताथा, जवजव शहरमेंजिनमूर्त्तिकी रथयात्रावगेराका जलसा होताथा-राजाकुमार-पाल-अपनेगुरु हेमचंद्राचार्यजीकेशाथ नंगेपांवचलताथा, औरशामके वरूत जिनमूर्त्तिकीआरती मंदिरमेंखुदजाकर उतारताथा, आजकल कितनेकश्रावक धर्मकोंयहांतक भूलगयेहैकि-जिनमंदिरमेंजानेकीभी उनकोंफुरसतनही. हेमचंद्राचार्यजेसे जैनश्वेतांवराचार्य गुरुऔर क-मारपालजेसा जैनश्वेतांवरश्रावक-होनादुसवारहे, हेमचंद्राचार्यजीने राजाकुमारपालकों इसवातकीखातिरजमा करवादिइथीकि-दुनिया-मं-दौलत-हकुमत-माल असवावऔर जींदगीकोइ उमदाचीजनही, उमदाचीज एक धर्मही है,

तारंगातिर्थकामंदिर इसी--राजाकुमारपालका ता-मीरिकयाहुवाहै, इसकीपायदारी औरबनावट ऐसी उम-दाहैिक--इसके बनानेमें जितने रुपयेसफेहुवे बयाननहीं करसकते, रंगमंडपऔर खंभेइसकदर बडेहैिक-देखकर-आदमीताज्जुब करनेलगताहै, चारोंतफेउसकी परकम्मा औरबडासहनदेखकर तबीयतनहीचाहती यहांसेबहारचले जाय, बाहरकीदिवारमेंचारोतफेगजथर औरअश्वथरलगा हुवा-हाथीघोडोंकीशकले--पथरमेंबनीहुइहै, अकसरशि-लपशास्त्रका कायदाहैिक-राजाओंके तामीरकरवाये हुवे मंदिरमें जरुरगजथर-अश्वथरलगायेजाय. राजाकुमारपा लका इरादाथाकि-इसमंदिरकों खुवंच्चावनाना, मगरहे-मचंद्राचार्यजीने फरमायाज्यादह उंचामतबनाओ बहुत उंचेमंदिरकी उमरअकसरकमहोतीहै, राजाकुमारपालकों उनकेफरमानेपर कुछज्जरनहीथा इसलियेउसनेउतनाही उंचातिमंजिलारखा, रंगमंडपकीएकतर्फसें—उपरितमंजिलेतकजानेकारास्तावनाहुवाहै, मगरकचेदिलवालोंकी हिंम्मतनहीहोतीकि—
तीसरीमंजिलतकचलेजाय. अकसरवीचमेंसेंहीलोटआते है, इसमेंदिर
कीकारीगरीदेखकर वडेवडेशंगतरासहेरान परेशानहोजाते है और
तारीफकरतेहैसायत! यहमंदिरदेवताओंकावनायाहुवाहोगा. राजा
कुमारपालकी कहांतकतारीफकरे जिसनेऐसामंदिरतामीर कराकर
अपनेलिये रास्तास्वर्गकाखोलादिया, तीर्थकरअजितनाथमहाराजकी
पांचहाथवडीसफेदरंगमूर्त्ति इसमेंतरूतनशीनहै, पूजाकरनेवालेलोग
सीढीपरचढकर मूर्त्तिकेमस्तकपरतीलककरसकते है, मूर्त्तिकेनिलाडपर
सोनेकापत्र—और—उसमेंजवाहिरातजडीहुइहै, हाथपांवोपरभी सोनेके
पत्रलगेहुवे—जिसवरूत मूर्त्तिकाशिगारिकयाजाताहै माल्सहोताहैसाक्षाततीर्थकर अजितनाथमहाराज यहांपरआगये है,—

अगरतम अपनीहमराह सितार-हारमोनियम-या-सारंगी-त-वलेलायेहो-तो-मंदिरमेंबेठकर ब-खुबीइबादतकरो, किसीकिसमकी रोकटोक यहांपरनहीहै, तमामऊमरदुनियाके कारोबारमें खतमिक्ड़ औरएशआराममें गायबरहे, अबचाहिये आकबतकाकुछ रास्तासु-धारे, जिंदगीकाकोइभरोसानही यहमानींदबुलबुलेकहै, दौलतआज है, कलनही, तीर्थकेखजानेमें जोकुछरकम देनाहो-दो, ऐसामतकर-नाकि-बखीलबनकर अपनेघरका रास्तालो, अगरतुमपरलोगमें कु-छआरामचाहतेहो-बतौरधर्मकीराहपर देतेजाओ-यही-तुमारेशाथ चलेगा, मंदिरकेबहार एकबहुतउमदा बगीचाजिसमेआम-अनार-संतरे-जाम-औरकेलावगेराके द्रष्टतखडेहै, गुलाब-चमेली-बेंला-मोतियावगेराके फुलभीकसरतसे यहांपदाहोतेहै औरहमेशांदेवपु-जनमें चढायेजातेहै, तारंगातीर्थका खजानाबहुतबडा और-बो-आनंदजीकल्याणजीके नामसेमशहूरहै, मुनिम-गुमास्ते-नोकर-चा- कर-सीपाद्दीघंटाघडीयाल-और नोबतखाना यहांपर मौजूदरै, इसकी जेरनिगरानी-जमानेहालमें वडनगरके श्रावकोंके ताल्लुकरै, जोयहांसे करीब (१०) कोसके फासलेपरवाकेहै,-

मंदिरकेबहार एकतालाव-वायेहाथकों कुंड-और-सामनेएक वावडीबनीहुइहै,—तालावकेआगे एकलोटापहाड—जिसकीचढाइं करीब कोशकेहोगी इस्नपरएकल्लेशी और उसमें तीर्थकरोके कदमबने हुवेकुंडके आगेदुसरालोटापहाड जिसकीचढाइ करीब-आधाकोशके होगी इसपरभील्लेशी-तीर्थकरके-कदम-औरएकतर्फ कोटीशिला नामसें एकशिला मौजूदहै, यात्रीसबजगह जाकरजियारतकरे, यह-बो-शिलानही-जिसकों वास्रदेवज्ठातेहै, वहगेरसल्कमेंहै तारंगाप-हाडपरएकतारणदेवीकाधामहै जहांअकसर गेरमजहबके लोगआया करते है,

तारंगाका मंदिरकब तामीरिकयागया इसपरगौरिकयाजायतो हेमचंद्राचार्य-संवत्-(११६६) में मौजूद्ये.
संवत् (१२२९) मे जनकाइंतकालहुवा, राजाकुमारपालहेमचंद्राचार्यजीके बख्तहाजिरथा-जिसने जनकीधर्मतालीमपाकर तारंगातीर्थका मंदिरतामीर करवाया, तारंगा
तीर्थकी जियारककरके यात्री खेरालुकोंवापिस लोटे, औररैल्लमेसयारहोकर बडनगर-वीशनगर रानदालाहोते फिरमेहसानाजंकशन
आवे. औरआधुरोडजानेवाली ट्रेनमेंसवारहोवे, टेशनभांड-जंझासिद्धपुर-लापी-उमरदेशी-पालनपुर-चित्रासन -रोहऔर--मावल
होतेषुवे आधुरोडजाव, रैलकिरायातेरह आनेलगतेहै, जिसकाइरदा
पालनपुरदेखनेकाहो-वह-पालनपुर उतरे, वरना ! सिधा आधु
रोड जाय,—

पालनपुर शहरअहमदाबादसे (८३) मीलके फासलेपर देशी राज्यकी राजधानी-और-एजेन्सीका सदरप्रकामहै. इसकीमर्दुम- शुमारी-(२१०९२) मनुष्योकी है, जैनलेतांबरश्रावकोकेघरकरीब (५००)-और जैनलेतांबरमंदिर छोटेबडेयहांपर (९) है,-अह- मदाबादसे पालनपुरराज्यमेंहोकर अजमेर-देहली-और-आगराकों सडकगइहै, पालनपुरमेंनवाबसाहबकेमहेल-पोलिटिकलएजंटकीकोठी - स्कुल-लायबेरी-अस्पताल-और—पोस्टआफिस-बडी लागतके मकानहै. पालनपुरकीउत्तरमें अमलदारीशिरोही ओर मारवाडका सबडिविझनहै, यात्रीपालनपुरके-जैनमंदिरोंके दर्शनकरकेवापिसटेश-नपरओव औररैलमें सवारहोकर उपरदिखलायेहुवे रास्ते आबुरोड टेशन जाय,-

पालनपुरदेशनसं-(१३) मील पूर्वोत्तरजोसरोत्रादेशन पेस्तर लिख बुके है वंबइहाताछुटकर वहांसेंराजपूतानाप्रदेश ग्रुक्होताहै. स-रोत्रासं (१९) और पालनपुरसे (३२) मील-पूर्वोत्तर-राजपूताना विभागमं आबुरोड एक वडादेशनहै-और -इसका दुसरानाम खरेडी-कस्वाकहते है, इसकी आवादी करीब (६०००) मनुष्यों की -और - दिनपरिदेनतरकी पर मालूमहोताहे, मकानपके - और - सडकों पर स-पाइअ श्री, अकसरदेखागया कि - जहां परपानिकी बहुतायतहोती है पेदावारी भी अ श्रीरहती है, इसव जहसें यह कस्वा दिनपरिदेन बढता जानाहे, और एक नदी - बनास - नामकी यहां परवहती रहती है, देशन और गांवबहुत न जदीक होने की वजहसें रव कक हमेशांवनी रहती है, अमल-दारीयहां पर शिरोही केराजासाह बकी, - और इंतजामसबठी कहे, जैन श्वेतांवर श्रावकों के घरकरी व (२०) - और - एक जैनश्वेतांवर मंदिर यहां परवनाहुवा - पासमें दो - धर्मशाला - एक रायबहादुर बुधीं सहजी - साकित - मुर्शिदाबाद की दुसरी पंचायती है. दो नों में करी व एक हजार आद-

मीव-खूबी उहरसकते है,-तीर्थकुंभारीया और-आबुजानेवालेयात्री इसीखरेडीटेशनपर उतरतेहैं और यहांसेदोनोंतीर्थकी जियारतकेलिये जाते है, पेस्तरकुंभारीयाजीतर्फ जानेवालेयात्री खयालकरे, उनके-लियेरास्ताबतलायाजाताहै. खरेडीसेकुंभारीयातीर्थ करीव (१२) कोशकेफासलेपरवाकेहै, सवारिकेलिये-डोली-चोडा-और-बैल-गाडीतयारमिलतीहै, डोलिकाकिराया साढेपांचरूपये-घोडेकाएक रूपया-ग्यारहआने-और गाडीकेपोनेचाररूपये- सीर्फ! जानेकेही लगतेहै, ऊतनेही वापिसआनेकेभी समझलिजिये, खरेडीसे रवाना होकरयात्री कुंभारीया तीर्थकोंजाय,-

🕼 तवारिख-तीर्थ-आरासण,—]

कुंभारीयातीर्थका असलीनाम-आरासणतीर्थ है, जमानेहालमें आरासणपहाडपर जोकुंभारीयागांवहै असलीनाम-आरासणनगर या,-पुरानेशिलालेखोमंभी आरासणनाम लिखानिकसताहै, यात्री खरेडीसे कुंभारीयागांवजाय, रास्ता-कठीन-कइजगह-नदी-नाले और बहुतसा झाडीझखडआताहै, उसकोंपारकरके जब-आरासण पहाडके करीवपहुचोगे-एकतर्फ अंबादेवीका धामआयगा, इससे आगेकरीव कोशभरदूर कुंभारीयागांव मौजूदहै,-जहांकि-वडेबडे आलिशान पांच-जैनमंदिर-वतौर स्वर्गविमानकेखडे है,-वहांजाकर धर्मशालामं कयामकरना, कुंभारीयागांव सीर्फ ! साठ-सतरघरोकी आबादीमें-रहगया. पेस्तर बडागुलजारथा, अमलदारी यहांपर दांताके राणासाहबकी जारी है, पेस्तरिलखचके है यहांपर बडेबडे पांचआलिशान मंदिरखडे है, और उनकीपूजनकेलिये-एकमुनीम तीनपूजारी-और-एकनोकर मुकररहे,—

यहांपर सबसेबडामंदिर तीर्थंकरनेमनाथजीकाहै, इसकेतीनत-र्फबडेबडेदरवजे–उत्तरतर्फकादरवजा बहुतवडा–तीमंजिला–मयमह-रावके गोया! देवलोकका खासदरवजा मालूमहोता है, जमानेहा-लमें जबवारीशहोती है दरवजेकी छतसें पानीगिरताहै, कोइइकबाल मंदहो इसकीमरम्मतपर-गौरकरे, दरवजेकीसीढीचढकर जबमंदिर केरंगमंडपमें पहुचते है मानो ! स्वर्गनजरआताहै. कया ! खुशनसी-बोंने मंदिरतामीर करवायाहै जिसकोंदेखकर अकलकामनहीकरती. परकम्मामें जाकरदेखोतो मंदिरकेपी छलेपासे दिवारमें गजथर लगा-हुवाहै,-इससेसबुतहुवा यहमंदिर किसीराजाका तामीरकरायाहुवा है, इसकाशिखर बहुतबुळंद–संगीन–और–वेंशकीमती है, तीर्थंकर नेमनाथमहाराजकी-सफेदरंगमूर्त्ति-करीव-चारहाथवडी इसमेंतख्त नशीनहै, और इसकेनीचेळिलाहै संवत् १६७५ वर्षे-माघशु-द्धचतुर्थ्यां-शनौ-श्रीउपकेशज्ञातीय वृद्धसज्जनायतपा गछे भट्टारक श्रीविजयदेवसूरि....श्रीनेमिनाथचैत्ये श्री नेमिबिबंकारितं--प्रतिष्टितं--च--भट्टारक श्रीहीरविजय सूरीश्वरपट्टप्राचीनाचलमार्तंड मंडलायमानमट्टारक श्री विजयसेनसूरि शर्वरीसार्वभौमपट्टालंकार....ग्रणगणारं-जितमहातपाविरुद्धारितमट्टारक श्रीविजयदेवसूरिभिः पंडितश्रीकुशलसागर गणिप्रमुखपरिवारसमन्वितैः-

इसकामतलब यहहुवाकि-संवत (१६७५) में यहमूर्ति तामीरकरवाइगइ औरश्रीविजयदेवसूरि महाः

राजने इसकीप्रतिष्टाकिइ, इसमूर्तिके पास दो-मूर्ति-औरहै जिसकाकदकरीव सवासवाहाथहै, गभारेके ब-हारलंडआकार चारमूर्ति--सफेदरंग-निहायत खुबसुरत जायेनशीनहे औरसब हेनीचेलेल मौजूदहै मगरबच-नहीसकते. इनमूर्तियोंकेसामनेसमवसरणका आ हारका-बिलंदेखनेकेहै, दिवारमें दाहनीतर्फ एकहीपथरमें १६४ मूर्ने-छोटीछोटीबनीहुइ-बीचमे-परिकरसमेत समवसर-णकाआकार बनाहुवाहै, दोनोंतर्फ दोद्खजेथे-न-माल्रमक्यो बंदकरियेगये, ? दाहनीतर्फकेदरवाजेकी जगहदिवारपर एकहीपथरपर (१९) मूर्त्ते बनीहुइ-और-उनकेनीचे लिखाहै संवत् (१३४५) में-श्रीप-रमानंदसूरिने इनकीप्रतिष्टाकिइ,

दुसरेरंगमंडपमें एकतर्फके आलेमें नंदीश्वरद्वीपका आकार-और एकतर्फ देवीकी मूर्त्तिवनीहुइहै, दाहनीतर्फ रिषभदेव भगवानकी सफेदमुर्त्ति करीव (२॥) हाथवडी जायेनशीनहे. औरउसकेनीचे लिखाहुवाहैकि-संवत् (१६७५) वर्षे माघवदि (४)श्री मालीज्ञातीयवृद्धशाखीय-शा० रंगाभायी-किला-भार्या-सःपःनीभार्या-संपूरसतहीरजी-श्रीआदिनाथविंबं कारितं-तपागछे-श्रीविजयदेवसूरिभिः पंडित श्रीकु-शलसागरगणिपरिवारयुतैः प्रतिष्टितं, बायीतर्फ पार्श्वनाथ भगवानकी सफेदरंग-मूर्ति-जायेनशीनहै, जोकरिव (५॥) हाथ

बडीहोगी. इसपरकुछछेखनही, सीर्फ! निशान संपतिराजाके वस्त-का बनाहुवाहै, संपतिराजाकी वनाइहुइम् तिपर ऐसाहीनिशानहोता है, इसमंडपमें शिंगारचोकीकीदाहनीतर्फ तिसरेखंभेमें छिखाहुवाहै, संवत (१३१०) वर्ष-वैशाखवदि (५) गुरो प्राग्वटा ज्ञातीय-श्रे-विल्हणमातृ-रुपिणीश्रेयोर्थ—आसपाछेन-सिद्धपाछ-पद्मसिंहसाहितेन-निजिवभवानुसारेण-आ-रासणनगरे-श्रीआरिष्टनेमिमंडपे-श्रीचंद्रगछीय श्रीपर-माणंदसूरिशिष्य श्रीरत्नप्रभसूरीणामुपदेशेन स्तंभः कारितः इसलेखसें सबुतहुवाकि-यह-खंभा-संवत (१३१०) में नयाबनायागया,—

इसलंभेकेपीछे एकलंभेकों छोडकरदूसरे लंभेपर लिखाहै, संवत (१३४४) वर्षे—आषाडस्रुदि पूर्णिमायां देवश्री नेमिनाथचेत्ये—कल्याणिकत्रयस्यपूजार्थं —श्रे—श्रीधर—तत्पुत्र—श्रे—गांगदेवेन विसलिप्रियद्रमाणां (१२०) श्रीनेमिनाथदेवस्य—भांडागारेनिक्षिप्तं—इसकेपास एक आलेके—लंभेपर लिखा है—श्रीकल्याणत्रये—श्रीनेमिनाथ विंबानि—प्रतिष्टितानि—नवांगद्यत्तिकार श्रीमदभयदेव सूरिसंतानीयश्री चंद्रसूरिभिः श्रे—सुमिग—श्रे—वीरदेव—श्रे—गुणदेवस्यभार्या जइतश्री साहूपुत्रवद्दरापुनालुणा विक्रमलेताहरपतिकर्मटराणा करमटपुत्र खीमिसंह-तथावीर-देवसुत—अरसिंहप्रभृतिकुटुंबसहितेन-गांगदेवेन कारितानि

इसनैमिनाथजीके मंदिरकीपरकम्मामें वायीतर्फ-जो-आठ-छोटेदे-बालयहै असमें अवल देवालयके द्रवजेकी दाहनीतर्फ दिवारमें एक शिलालेखशंगमर्गरपथरपर ऊकेराहुवा-और-ऊसमेलिखाहैकि-प्रा-ग्वाटवंशे-श्रे-चाहडेन-श्रीजिनचंद्रसुरि सद्पदेशेन-पादपरात्रामे-उंदेरवसहिका चैत्यं-श्रीमहावीरप्रतिमायुतं-कारितं-तत्पुत्रौ-ब्रह्मदेवसरणदेवौ-ब्रह्मदेवेन-संवत--१३ ७५ अत्रैव श्रीनेमिमंदिररंगमंडपे-श्रीडादाधरःकारितः-श्रीरत्नप्रभसुरिसद्वपदेशेन-तदनुज-श्रे-सरणदेवभार्या-सह-देवी-तत्पुत्राः श्रे-चीरचंद-पासड-आंवड-रावण-यैः-श्रीपरमाणंदसरीणामुपदेशेन-शप्ततिशततीर्थे -कारितं-संवत् (१३१०) वर्षे-वीरचंद्रभार्या-सुखमिणीपुत्रपुना-भार्यासोहगपुत्रॡणा झांझण-आंबडपुत्रवीजा खेतारावण भार्या-हीरुपुत्र-बोडाभार्या -कामलपुत्रकडुआ-दि-जय-ताभार्या-मुंटपुत्र देवपाल-कुमरपाल-तृ-अरिसिंहनाग-उरदेवीप्रभृतिकुंदुंबसमन्वितैः श्रीपरमाणंदसूरीणामुपदेशेन संवत् (१३३८) श्रीवासुपूज्यदेवकुलिकां-संवत् [१३४५] श्रीसमेतिशिखरतीर्थे-मुख्यप्रतिष्टां-महातीर्थयात्रां-विधा-प्य-जन्मपरंपरया सफलीकृतं,-इसलेखकों लिखनेवाले देवपा-ल-कुमरपाल-वयानकरतेहै-कि-हमने-अपनेकुटुंच परिवारसमेत-यहां--आनकरतीर्थकरवासुपूज्यभगवानका-यह-छोटादेवालय सं-वत् (१३३८) में वनवाया, और-संवत् (१३४५) में-समेतिश-खरतीर्थके मुख्यमंदिरकी प्रतिष्टा-और-महायात्राकिइ, इसलेखसे

शिखरजीतीर्थकेलिये सबुती मिलतीहैं कि-संवत् (१३४५) मे. शिखरजीतीर्थपर जैनश्वेतांवर मंदिरबनेहुवेथे, यह लेखलिखनेवाले पोसिनागांवके रहनेवाले जैनश्वेतांवर श्रावकथे अनकेनाम-देवपाल-उपरलिखचुकेहैं,-और-पोसिनागांव-जमानेहालमें तीर्थकुंभारीया-जीसे (१२) कोशकेफासलेपर वाकेहैं,

उपरालिखेहुवे वासुपूज्य भगवानके देवालयके अंदरवेदीपर लिखाहै-संवत् [१३३८] वर्षे ज्येष्टसुदि [१४] श्रीने-मिनाथचेत्ये-वृहदगळीयश्री रत्नप्रभसूरि शिष्यश्रीहरिम-द्रमृरिशिष्येः श्रीपरमानंदसूरिभः प्रतिष्टितं-प्राग्वाटज्ञाती यश्रीसरणदेवभायी-सुहडदेवी-तत्पुत्रश्रीवीरचंद्रभायी-सुभणीपुत्रपुनाभायी-सोहगदेवी... आंबडभायी-श्रीअभय सिरिपुत्रवीजाखेता-रावणभायीहीरुपुत्र बोडिसंहभायी-ज्यातलदेवीप्रभृतिस्वकुटुंबसिहतैः रावणपुत्रैः स्वकीय सर्वजनानां श्रेयोर्थ-श्रीवासुपूज्यदेवकुलिकासिहतं कारितं-प्रतिष्टापितंच, इसलेखमंजो रत्नप्रस्रितिके विषय-हरिभद्रस्रिरे लिखहै-वेहरिभद्रस्रिरे दुसरेजानना.-और-जिनोने पंचाककवणेरा प्रकरणवनायेहै-वे-हरिभद्रस्रिरे दुसरेजानना जो इनोसेअवलहेवहैं.

पांचवेदेवालयकी बेदीपर लिखाहै संवत [१२३५] वर्षे-माघसुदि [१२] चंद्रावत्या जालणभायी भायी मोहिनीसुतसोहडभ्रातृ सांगाकेन आत्मश्रेयोर्थ श्रीशांति-नाथ विबंकारापितं प्रतिष्टितंच, श्रीवर्द्धमानसूरिभिः-इसके नीचे एक दुसरे लेखमें-लिखाहै-संवत् [१२३८] वर्षे-ज्येष्ट सुदि १४ शुक्रे-वृहदगछीय श्रीचक्रेश्वरसारिसंताने पूज्य श्रीसोमप्रभसूरिशिष्यैः श्रीवर्द्धमानसूरिभिः श्रीशांतिनाथ विवं-प्रतिष्टितं--कारितं श्रेष्टिआसलभार्या मंदोदरी-तत्पुत्र श्रेष्टिगलाभार्याशील्द-तत्पुत्रमहातटभुजेन साहुखांखणेन--निजकुदुंबश्रेयसे--स्वकारितदेवकुलिकायां स्थापितंच-मं-गलमहाश्रीभद्रमस्तु—

सामनेकेदेवालयमें वेदीपरलिखाहै —संवत् [१३३५]मे श्री आदिनाथ भगवानकीमूर्त्ति-श्रीवर्द्धमानसूरिजीने प्रतिष्टित किइ, और नीचेउसके ऐसाभी छिलाहै श्रीमंदाहडगछे-श्रीमं-गलमस्त इसके आगेके देवालयमें लिखाहै संवत् [१३३५] मे तीर्थंकरिषभदेव भगवानकीमूर्त्ति--श्रीचंद्रसूरिजीकेशिष्य-वर्द्धमानसूरिजीने प्रतिष्टितिकइ, इसकेआगेके देवालयमें संवत् [१३३८] ज्येष्टसुदि १४ शुक्रवारकेरोज श्रीदेवेंद्रसू-रिजीने तीर्थंकर चंदाप्रभुकीमूर्त्ति प्रतिष्टितिकइ, इसके आगे सभामंडपकों छोडकर दुसरेदेवालयकी वेदीपर लिखाहै संवत् (१३४३) माघसुदि (१०) शनिवारकेरोज-वृ-श्रीहरिभद्र-सुरिकेशिष्य-परमानंदसुरिने तीर्थंकर अरिष्टनेमिभगवान-कीमूर्त्ति प्रतिष्टितिकइ, इसकेआगेके देवालयकी--वेदीपर लिखाँहै संवत् (१३४४) ज्येष्टसादि (१०) मीकेरीज तीर्थ-कर रिषभदेवभगवानकी मूर्त्तिप्रतिष्टितिकइ, प्रतिष्टाकरने वालेआचार्य महाराजका नामतोडागयाहै, इसकेआगेके

देवालयकी वेदीपरिल्लाहै संवत् (१३३५) मे तीर्थकर श्रीसुपार्श्वनाथ भगवानकी मूर्तिम्रगसीर वदि १३ केरौज वहद्गदछीय श्रीहरिभद्रसूरिके शिष्य-परमानंदसूरिने प्र-तिष्टित किइ,—

दूसरामंदिर तिर्थिकर महाविरस्वामीका—वडासंगिनऔरपुरुता
—रंगमंडपकी छतमेंकिसकदर कमदाकारीगरी हुइहैकि—जिसकावयानकरना जवानसेवहारहै. पथरमेंककेरेहुवे तरहतरहके भाव—
कहींकहीं तिर्थिकरोंके समवसरणका आकार—परकंगामें—चोइसदेवाछयवनेहुवे मगर किसीमें मूर्तिनहीरही, मूछनायक तिर्थिकरमहावीर
स्वामीकी सफेदरंग मूर्ति—करीव (२॥) हाथवडी इसमेंतरूतनशीन
है, और कसपर छिखाहै संवत् (१६७५) वर्ष माघशुद्ध ४शनो-श्रीउपकेशवंशीयवृद्धशाखीय-सात्राहियाभार्या-तेजछदेसुत...गोरदेसुत-सानानियाकेनभार्या-नामछ देवसुत
सोमजीयुतेन-श्रीमहावीर विवंकारितं-प्रतिष्टितंच-श्रीतपागछे-भट्टारक श्रीहीरविजयपूरिश्वर प्रभाकर-भ-श्रीविजयसेनसूरि पट्टालंकार भट्टारक श्रीविजयदेवसूरिभिः श्री
आरासणनगरे-दृ०-राजपालोदामेन,—

गमारेकेवहार दोनोंतर्फ खडेआकर दोवडीऔर दोछोटी मूर्ति निहायतखूबसुरत जिनकावनना जमानामौज्दामें निहायत सुश्किल-हैजायेनशीनहै, रंगमंडपमेंदोआले बगेरेमूर्तिके खालीपडेहै और उसमेंसिर्फ ! (११४८) का संवतही नजरआताहै ब-सबबहर्फीके वीसजानेसेंड्वारत नहीपडीजाती, दिगरआलेका लेखइससेंभीज्या- दह घिसाहुवा-उसका-न-संवत्-और-न-इबारत माल्पहोतीहै, मंदिरकी परकम्मामें दाहनीतर्फ निहायतउमदा शंगमरमरपथरपर समवसरणका आकार-तीनकोटवगेरादेखाव हुवहु मौजूदहै, मगर अपशोषहै, दुटगयाहै,

तीसरा मंदिर तीर्थेकर शांतिनाथजीका-इसकीकतावजा-मा-नींद नेमनाथजीके मंदिरकेहै, इसकेभी दरवजेतीन-परकम्मा-और -दोनोंतर्फमिलाकर (१६) देवालय तामीरिकयेहुवे-मगरिकसीमें मूर्त्तिनहीरही. छतमें ऊमदाकारीगरी और-इसकी महरावे अछीव-नीहुइथीमगर सीर्फ ! एकही मेहराव-वास्ते नम्रुनाके रहगइ-बा-कीकीतमाम नेस्तनाबुदहोगइ, सामनेकीतर्फजो छोटेछोटे आढदे-वालयहै-अवलदेवालयके उपरिलखाँहै संवत् (१९४६) ज्येष्ट शक्क (९) शुक्रे-प्रल्ठदेवहालिकासुतेन-प्रोहरिश्रावकेन--भ्रातृवीरकसंयुतेन-श्रीवीरजिन श्रतिमाकरिता-दूसरेदेवाल-यपरिलखोहे संवत् (१९३८) वीरकसलहिकासुतेन-देवीग-सहोदरयुतेन-जासक श्रावकेन विमलजिनश्रतिमा कारि-ता, इसकेपासकेदेवालयपर लिखाँहे संवत् (११३८) व-ल्लभदेवीसुतेन-वीरकश्रावकेन-श्रेयांसजिनशतिमा कारि-ता, इसकेआगेकेदेवालयपर लिखाहैसंवत [११३८) सो-मदेवसहोदरेण-सुंदरीसुतेन-शीतलजिनशतिमा कारिता, आगेके देवालयमें तीर्थंकर पार्श्वनाथजी प्रतिमा है, एक देवालयपर संवत् [११३८] सहदेवश्रावकेन सुविधिजिन प्रतिमाकारिता लिखाँहै, और दो देवालयके लेख दुटेहु-वे है, छोटे आउ देवालयोंके लेख खतम हुवे,

इसमंदिरमें मूलनायक-तीर्थकरशांतिनाथ-भगवानकी सफेद रंगमृतिकरीव (१।) हाथवडी तख्तनशीनहै. यहमूर्ति-राजासंप्रति कीतामीरिकइहुइ-वही-निशानात-मूर्त्तिकेनीचे वनेहुवे-जो-राजा संप्रतिकी तामीरिकइहुइ मूर्त्तिओंपर होतेहै, राजासंप्रतिकों इंतकाल हुवे करीव (२१२४) वर्ष गुजरे, मगरउसका नेकनाम अवतक जारिहै, दुनियामें रूपयापैसा किसीके शाथनहीजाता. सीर्फ ! धर्मही शाथजाताहै, एसेएसेशच्स दुनियामें होगयेजिनोने बडेबडे धर्मकेकामकिये, वदौलत ऊनकीनेंकनामीके आजतकऊनका नाम चलाआया, तुमभीकुछ धर्मकीराहपर नेंकीकरोजो तुमकों आइंदे फायदेमंदहै,

चोथामंदिर तीर्थंकरगोंडीपार्थनाथजीका-इसकीकतावजाभी जसी नेमिनाथजीकेमंदिरकी बतौरहै, शंगमर्मरपथरपर क्याउमदा कारीगीरीका नम्रुना जिसकों देखकर इनसान चिकतरहजाताहै, इसमें तीर्थिकर-पार्श्वनाथजीकी सफेदरंग मूर्त्तिकरीव (२॥) हाथ बडीतख्तनशीनहै. और उसकेनीचेलिखाहै संवत् [१३६५] वर्षे-माघधवलेतर शनौ उपकेशवंशीय-वृद्धसज्जनीय-सा०-जगडुभार्या-जमनादेसुतर्राहेयाभार्या -चापलदेसुतनान-जीकेन-भार्यानवरंगदेयतेन-आत्मश्रेयोर्थ-श्रीपार्श्वनाथिं वं कारितं-प्रतिष्टितं श्रीतपागछेश्वरभट्टारक श्रीहीरविजय सुरीश्वरपट्टोदय दिनमणि-भट्टारकश्री विजयसेनसूरिप-ट्टालंकाहार-भट्टारक-श्रीविजयदेवस्रुरिभिःपं० कुशलसा-गर गाणित्रमुखपरिवारयुतेः बु॰ राजपालोदामन

मंदिरकेगभारेके बहारछोटे रंगमंडपमेंदो-खडेआकार-सफेद-रंगमू त्तिकरीव तीनतीनहाथ वडी-जायेनशीनहै. छोटेरंगमंडपके दरवजेकी दाहनीतर्फके आलेकी वेदीपर लिखाहै संवत् (१२१६) वैशालसुदि (२)-श्रे० पासदेवपुत्रवीरापुनाभ्यां--भ्रातृ-जेहड श्रेयोर्थ-श्रीपार्श्वनाथ प्रतिमेयं कारिता-श्रीनेमिचं-द्राचार्य शिष्येः देवाचायेः प्रतिष्टिता, बडेरंगमंडपमें तरहत-रहकी कारीगरी और महरावें तामीर किइगइहै, मंदिरकी परक-म्मामें दाहनीतर्फ अखीरके देवालयकी वेदीपर एक शिलालेख--संवत (११६१) का है, इसके बनानेवाले आर प्रति-ष्टाकरानेवालेका नाम हर्गीके मिटजानेकी वजहसें पढा नहीजाता, सीर्फ ! निशान माल्यमहोतेहैिक-इसमें उनकी तारीफ किइगइथी, और अखीरमें धाराप्रदीयगच्छ्यगेरा-भी कुछनजर आतेहै,-

पाचमांमंदिर तीर्थकरसंभवनाथजीका इसमेंतीर्थकरसंभवनाथ-जीकी सफेदपूर्तिकरीव (२) हाथवडीतख्तनशीनहै, गभारेकेवहार आठआलेबनेहुवेसीर्फ ! एकहीआलेमें एकमूर्तिवाकीरही दुसरेसब खालीपडेहै. दरवजेतीन और अतराफमंदिरके कोटखीचाहुवाहै,-तीर्थआरासणकेकारखानेमें एकम्रुनीम-तीनपूजारी-एकपानीभरने-वाला कुछपांचआदमी हमेशांकेलियेतैनातहै. औरखिदमतगुजारी-क-रतेहै, म्रुनीमकीतनखाह रुपयेआठ-और-पूजारीयोंकीरुपये साढेचार माइवारी है. और-इतनीकलील (थोडी) तनखाइमें इनकागुजारा नहीहोसकता और-न-किसीतरहकी इनकोंदिगरआमदनी है, इस-लिये इनकीतनखाह बढानाचाहिये. तीर्थजंगलमें है-औरइतनीछोटी

तनखाहमें इनकारहना मुहालहै, कंवल-शतरंजीवगेराभी यहां कुछ नही, आने जाने वाले यात्रीकों मुक्किलगुजरती है; औरपूजारीवगेरा-कोंभी किसीतरहका आरामनही. अगरको इइकवाल मंद-इसले खपर गौरकरे और मजकुरसामान यहांभे जदे वे उमदाबात है मुकाम जंगलका है, एक घडी भी होना यहां जहरी है, को इखु शनसीव दसपनरां रहप ये की घडी खरीदकर भे जदे वे. को इमुक्किल की बातनही, दुनीया के खरा-जात इसीतरह चले जाते हैं जो कुछ ने कनामी करो गे वही अछा है, शर्जु-जय-गिरनारवगेरा ती थों में खर्च देने वाले बहुत है. — मगर ऐसे ती थे मंदे वे तारी फ उसकी ज्यादह है, इसती थे के दिखरे खदां ता के श्रावक लोगर खते है, इमार तें सब मरम्मत चाहती है, ती थे आरासणकी जियार तकर के बापिस उसी रास्ते आबु रोड देश न आना, —

👺 [तचारिख-तीर्थ आबु,]

आबुरोडटेशनसे आबुपहाडपरजानेकेलिये सडकपकीवनीहुइ घोडा-टडु-बेलगाडी-बगीवगेरासवारी पहाडकेसीरेतक जासकती है, यात्री-आबुरोडसेंसवारीका इंतजामकरके पहाडपरजाय, राज-पुतानाकेजनुवीसरहदपर आबुएकमशहूरपहाडहे, आबुकासीर (१२) मीललंबाऔर (४) मीलचोडापहाडकेउपरकामेंदान जमीनकीसत-हसें (३०००) और समुंदरकीसतहसें (४०००) फुटऊंचाहे, औरजोसबसेबुलंदिशखरहे उसकीऊंचाइ समुंदरकीसतहसें (५६५०) फुटहे, इसपहाडपरपेस्तर (१२) गांवआबादथे, अब (१५) होगये, ऊनकेनाम-१, देलवाडा, २-गवां, ३-तोरणा, ४-साल, ५-दुं-ढाइ, ६-हेठमची, ७-आरणा, ८-मास, ९-सानी, १०-ओरिया, ११-अचलगढ, १२-जावाइ, १३-उतरज, १४-सेंर, और-१५, आखी,-इनमेंदेलबाडा-ओरिया-ओर-अचलगढमें जैनमंदिरबनेहु-वेहे, आबुकाचढाव अठारांमील-चढनेकारास्तासाफ, दुतफाँदख्तों-

कीछाया-तरहतरहकीवनास्पति-और-सरचिश्मेआव-जिसकोंदेख-कर तबीयततरहोजातीहै, जब (१६) मीलपरपहुचोगे-छावनी मिलेगी, सवारीयहांतकहीजाती है, सरकारीअपसरोंके-वंगले-रे-स्सीडेन्सी-कलब-बाजार-वगेरायहांगुलजारजगहहै, नखीतालाव-झील-हरहमेशपानीसेतर वनीहुइपश्चिमकनारे वांधवनाहुवा रवत्रककी जगहहै. करीब-(१) मीलउत्तरतर्फदेलवाडेगांवमें जैनमंदिरवनेहुवे है, चारोतर्फपहाडकीचोटियां-और-देखावमानो ! स्वर्गलोगसा न-जरआताहै, जवनजदीकदेलवाडेकपहुचोगे. निहायतउमदाजैनमंदिर दुरसेदिखलाइदेगें, फौरन! सीरझकाकर नमस्कारकरो औरअपनी तकदीरकोंसाबाशीदो-जिसनेतुमकोंयहांतकपहुचाया, देलवाडाबहु-तछोटासागांवहै, ब-सबबजैनमंदिरोंके रवन्नकबनीहुइहै, घरदेखोती कुछ-(२५)-या-(३०) केकरीवमगर यहांकेवाशिंदे इसीजगहकों बसबबमंदिरोके उमदासमझतेहै, धर्मशालायहांपर (२) एकशेठ-ह-वीसिंह-केशरीसिंह-साकीनअहमदावाद---मुल्कगुजरातकी तामीर करवाइहुइ, दुसरीकोटके अंदरपंचायती-हठीसिंह-केश्वरीसिंहवाली बडी हैजिसमेंकरीव (२००) आदमीआराम करसकते है. अलावा इसकेपांचकोष्टरी औरभीवनीहुइ यात्रीइसमेंभी आरामकरनाचाहे शौलसेकरे, एकधर्मशाला-नयीतामीरहोरही है, यात्रीचाहेजिसधर्म-शालामें कयामकरे, कोइमनानही.-

कारलानातीर्थ आबुका बतीरशाहीके बनाहुवा-ग्रुनीम-गुमा-स्ते-नोकर-चाकर-घंटाघडीयाल-चपरासीवगेरा हमेशांयहांपरते-नातहै, जबयात्री-मंदिरमें जाकरदर्शन करेगें दिलबहारअनेका-न-होगा, अगरकोइ आबुपहाडपर सबसेपुराना मंदिरकोनसाहै ? तो कड़कहदेगे-विमलशाहशेटका, मगरनही ! इससेभी पुरानामंदिर-नो-है, जोविमलशाहशेटके बनायेहुवे मंदिरकीपरकम्मीमें दाहनीत- फ्रिंक कौनेमं देवीजीकेपासहै, जिसमेकि-कामरंगमूर्ति-करीब (३) हाथवडी-निहायत-खूबसुरतऔर पुरानीराजासंप्रतिकी तामीरिक इह तख्तनशीनहै. और वहीनिशान उसपरहै जोराजासंप्रतिकी बनाइहुइ मूर्तिओंपरहोताहै, मंदिरभी पेस्तरकाहै कारीगरी इसमें कमहे पुरानायहीहै, इससेभी पुरानेजेनमंदिर यहांपरथे-मगर-गर्दी सजमानेके-व-नहीरहे,-तीथोंमें यहकदीमी रवाजचला आयाकि-एकमंदिर पुरानाहोकरिगरगया किसीखशनशीवने दुसरातामीरक-रवाया, इसीतरह दर्जे-बदर्जे बनतेजातहै औरतीर्थ हमेशांकेलिये कायम-रहताहै, विमलशाहशेठने जबअपनानयामंदिरवनवाया-इसपुरानेमंदिरकी रदवदलनहीकिइ. पेहलेके मुताबीकही रखा,

अविमलशाह शेटके-और वस्तुपाल तेजपालके बनवायेहुवे
मंदिरोंकावयान सिनये ! हिंदके तमामजैनमंदिरमं-ये-दो-मंदिर
कारीगरीके काममं आलादर्जेके ख्वसुरतहे संवत् [१०८८]
में जब-विमलशाहशेठने यहांपर मंदिर बनवाया-[१५००]
कीरीगार और-[२०००] मजदूरमुकररथे, इसके-बनानेमं तीनवर्षलो कुलकाम शंगममरपथरका और
पहाडपर हाथीयोसे मालअसवाव चढायागया था,
ख्याल करो ! कहांकहांसे पथरमंगवायगयेथे और
किसकदर महेनतकेशाथ पहाडपर चढायेथे, अंदाज दो
करोडरुपये इसमें सर्फहुवेहोगे, मंदिरकी लंबाइ [१४०]
फुट-और चोडाइ (९०) फुटहै-रंगमंडपमें खंमोमं-और
महराबोमं कैसेकैसे वेलबुटेबनायहै जिसकीकारीगरीतारीफके बहारहै,-हाथी-घोडे-और पुतलीयोंकिसकदरऊम

दाऔर बेंमीशाल बनाइहै-जिसकों देखकर बडबेडकारीगरमी चिकितरहजातेहै, आलादर्जिकी कारीगीरीकरके
कारीगीरोने ऐसाकमालिकयांकि-ऐसीकारीगीरी दुनियामें
कम नजरआतीहै, परकम्मामें-चारोतर्फ बावनजिनालय मंदिर
बनेहुवे हरेकमें जिनेंद्रदेवोकी पदमासनमूर्त्तिये जायेनशीनहै, मंदिरक्ते अंगनमेंजो रंगमंडपहै (४८) खंभेलगेहुवे-औरठीकवीचमें
एकगुंबज-इसकदर कारीगीरीसेबनाहैकि-जिसकों-देखकर अकल
हेरानहोजातीहै, बावनजिनालयोंके सामने-खंमोमें-छतोंमे-औरदिवारोमें जोजो नकशकारीका कामिकयाहै जिसकीतारीफ-जबानसे बाहरहै, जोशख्श देखेगा वहीजानसकेगा. सबजिनालयोंमे
राजासंप्रतिकी तामीरकराइहुइ मूर्तिये जायेनशीनहै, विमलशाहशेठकीकहातक तारीफकरे जिनोने अपनी दौलत इसकदर धर्ममें
सर्फ किइ.—

इसमें मूलनायक-तीर्थकर रिषभदेव-भगवानकी मूर्ति चारहाथ बढी जोकि-राजासंमितकी तामीरिकइहुइ वेसेही-निशानातहै जो राजासंपितकी बनाइहुइ मूर्तियोंपर होतहै, संवत् [१०८८] में इसकी प्रतिष्टािकइगइ-शिलालेखांसे साबीतहै, इस मूर्तिके दाहनेऔर बायेपासे दोमूर्ति खडेआकार और है ऊनकेनीचे लिखाहै संवत् (१३८८) मे बनाइगइ. गभारेसे बहारजो मूर्ति सर्वधातमय पदमासनहै दाहने पासकी मूर्तिकेनीचे लिखाहै संवत् (१५२०) मे यह तामीरिकइगइ, इनमुर्तियोंकेआगे रंगमंडप तर्फबढोतो जोदो मुर्ति खडेआकार साढेतीनहाथ बडीहैउनके नीचे लिलाहै संवत् [१४०८] मे-ये-तामीरिक इगइ. औरजैनाचा र्यकक्सुरीजीने इसकीप्रतिष्टािकइ. परकम्मामें जोबावनजी-नालयके मंदीरबने हुवेहै, कइजीनालयोक दरवजेपर संवत् [१३७८] काएकपर संवत् [१३८२] काएकपर संस्कृतजबानमें [१३] काञ्य लिले हुवे औरअलीरमें ऊसकी बनीपाद संवत् [१२०१] की बतला इहै. एक जिनालयके दरवजे की दाहनीतर्फ कालेरंगके पथ्थरका एक लेलेहै उसमें संवत् [१३५०] औरइसके आगे-महाराजाधिराज-सारंगदेव-और-विशलदेवका नामहै. एक जिनालयके बहारदरवजेकी बायीतर्फ चौमुलाजी केपास इंगरपुरीपथ्थरपर (१६) श्लोक लिले हुवे है,—

इसिजनालयके दरवजेकी दाहनीतर्फ चरणपादु-काके पासएककाले पथ्यरका लेखहै जिसमे [४०] काव्य और संवत् [१२७९] लिखाहै. एकजिनालयके ऊपर संवत् (१२४५) वैशाखबदी पंचमीगुरूवार लि-खाहै, औरउसके थोडेदुरनीचे संवत् (१३७८) का लेखहै, जिसमे जैनाचार्य धर्मघोषमूरि-और-ज्ञानचंद्र मूरिजीकेनामहै, एकजिनालयके दरवजेपर संवत् (१२४५) का लेख दो-लंबी-सतरे और उसमे चारश्लो-कलिखेहुवे है, अवलसतरमे खंडेरगछ-महति-यशोभद सार--आर--इसके आग शांतिसूरिका नामहै. मंदिरकेठीक सामनेदरवजेके-एक पथरका एकघोडा-और-उसपर विमल्जाह- शेठ क्या! उमदा चेहरानजर आताहै जैसेकोइ वडासखी और इकवालमंदश इतहो, कमालहुस्न-और-मुवारीकवादी उनकेचहरे परझलकरहीहै, मुसल्मानी अमलदारीकेवरूत यहमुत्तिं कुलतोडी गईथी. हालमे कली चुनेसें मरम्मत किइगइहै. विमलशाहशेठके घोडेके अगलवगल औरपीले (१०) हाथी शंगमरमरपथरके क्याही खूबमुरतवनेहैं कि-मानो! किसीकारिगीरने अभीइसकों वना-याहो. जोकरीवतीनतीन हाथवडे औरचोडेहोगें-उनकी हिफाजतके लिये उपरलत बनी हुइहै, संवत् (१८१८) मे महाराजश्री पदम-विजयजीने जोतीर्थ आयुकास्तवन वनायाहै विमलशाहशेठके बना-येहुवे मंदिरमें (८७६) मूर्त्तिथी-लिखाहै, सेकडोंको शोंसें शंगम-मंपथर मंगवाकर पहाडपर मंदिरवनवाना कितना मुक्किलहै, हाथी-योंपर मालअसवाव लदवाकर चढायजाताथा जिसमें वेंग्रमार खर्च होताथा,-

अत्र वस्तुपाल तेजपालके मंदिरका वयानसनिये, खुशनशीवोंने दुनियाकी पुस्तपर क्याक्या करदिखायाहै जिसकानाम आजतक दुनियामेरोशनहै, असलमें-बस्तुपाल-तेजपाल-आसराजजीकेवंटे और राजावीरधवलके दिवानये, उनोनेभी मानींद विमलशाहशेठके दौलतलगानेमें कोई कसरनहीकिई. अपनाखजाना लाकरगोया ! आवुपहाडपर रखदिया. विमलशाहशेठके मंदिरकोंदेखकर उनोनेभी वैसाहीमंदिर यहांवनाया. शोभनदेवकारीगर उसवल्त तमाम शंग-तरासोका अप्सरथा. जैसा-उसका-नामथा वसाही शंगमरमरप-धरपर करकेदिखलादिया. बडाआलिशान मंदिरदेखकर दिलनि-हायतखुशहोगा. छतोमें-रंगमंडपमें-और-नेहरावोमें ऐसीऐसी

कारीगरी किइगइहैकि-जिनकीतारीफ-जवानसें वहारहै, जोजो-वेळबुटे-कमळफुळ-पुतलीया-गुळदस्ते-वनायहै देखकर अञ्चे अञ्चे कारीगर ताज्जुवकरतेहै, गुळनायक तीर्थंकर नेमनाथभगवानकी मूर्तिं करीव तीनहाथवडी शामरंग इसमें तल्तनशीनहै, यहमूर्तिराजासंम तिकी बनाइहुइ-वैसेही निशानात इसपरवनेहै-जैसे उनकी तामीर कराइहुइमूर्त्तियोंपरहोते है, इसमंदिरकीमतिष्ठा संवत (१२८८) में हुइ, परकम्माकेजिनालयोपरलिखाहै आसराजम्रत-वस्तुपाल-तेजपा-लने-यहमंदिरतामीरकरवाया, इसकेभीतरीरंगमंडपमें गभारेकेवहार बायीतर्फजोखडेआकार दोहाथवडीमूर्ति जायेनशीनहै उसकेनीचे लिखाहै संवत (१२८९) फाल्गुनसुदी (८) केरिटकीय गछपुन्यसिंहभायी--पुन्यश्रीसुत--श्रातृमूलगेहासहितेन-मुंडस्थलसत्कश्रीमहावीरचेत्ये--निजज्येष्टबांधवमहेदुदाश्रे-योर्थ-जिनयुगलंकारितं प्रतिष्टितं,—

बाहारकेरंगमंडपकीवायीतर्फ-परकम्मामें--जो-दो--बंडे बंडे शिलालेखसंस्कृतपद्यबद्ध-है-ऊसमेंएककालेरंगका-दु-सरासफेदरंगका--सफेदरंगके शिलालेखपरिलखाहै संवत् (१२८७) फाल्गुनवदी (३) इतवारकेरोजयह लिखागया, दोंनोंशिलालेख संस्कृतजबानमें-हर्फानहायतउमदा-म-गरकइजगह दुटगयहै, इसमंदिरमे बावनाजिनालयका आकारउमदाबनाहै कड़ाजिनालयोपर संवत् (१२९३) केलेखहै, एकपर (१२९०)-और-एकपरसंवत् [१२९१] कालेखहै,और-ये-सब-छोटेखोटोजिनालय वस्तुपाल-तेजपा- लकेलानदानवालोने बनवाये है, मंदिरकीपीछाडी शंगमर्पर पथरके (१०) हाथी-जोकरीव तीनतीनहाथ लंबेचोडेजिसकी का-रीगीरी-हदसेज्यादहहै-जोदेखेगेवेही जानसकेगें, इनहाथीयोंकेउ-परछतऔर पीछाडीदिवारबनीहुइहे, उसमेंअलगअलगआले-और और-उनआलोमें वस्तुपाल-तेजपाल-ऊनकीऔरतें-चचावगेरा रिस्तेदारोंकी मूर्तेशंगमर्परपथरकी बनीहुइहे, कैसीकैसीउनकी ख्- मसुरति-कमालहुस्न-और-इकबालमंदी-चेहरेपरझलकरहीहे, खुश- नसीब-बहाद्र-और-धर्मपावंदहोतो ऐसेहो,—

मंदिरकरंगमंडपमंदोंनोंतर्फजोदो-आले-एकवायी-और एक-दाहनीतर्फक्नेहुवे है. इसकदर उमदाकारीगरीकिइहैकि-शंगमर्परप्थरकों वतीरकागजकरके दिखलादिया, ये-दोनों-आलेवस्तुपाल-तेजपालकी आरतोंने-अपनेजेंवस्व चेसेतामीर करवायहै, दरअसलमें-ये-आलेनही है मगरकारीगरीमें वडेवडेमंदिरोंकों मातकरनेवाले है, शावाशहै जननेंक औरतोंके खयालोकों जिनोनेधमपर ऐसीनेंकना-मीकिइ. आबुकेजेनमंदिरोंकी जोतारिफस्रनतेहो इनहीविमलशाहशे-ठ-और-दिवानवस्तुपाल-तेजपालकेवनायहुवे मंदिरोंकी है, वस्तु-पाल-तेजपालकेमंदिरकी तामीरातमें एककरोड-असीलाखरूपये सर्फहुवे, अलावाइसके जिसजगहपर मंदिरवनाहै उसकीभरतीकर-नेमं छपनलाखरूपयेहुवे. जंगलीभील-लोगोनेइसमंदिरकों कुछ-तुकशानपहुचायाथा-तवसेइसकी रवन्नक-कमहोगइ मगरिफरभी बहुतकुछरवन्नकहै, जवयहमंदिरवनकर तयारहुवाहोगा उसवख्त-देखतेतो माल्यम-होताकि-क्यारवन्नकथी,—

मंदिरकी दाहनीतर्फपरकम्मामें अंबिकादेवीकी उरलीतर्फ वि-चलेदेवालयमें पूरवतर्फकीदिवारकेपास शंगमर्मरपथरपर उकेराडु- वा-जो-श्रकुनिका-विहारकाआकारहै उसमें भरुअछशहरके पासका दरियाव-जहाजमेंबेठीहुइ-सुदर्शनाराजकुवरी एकतर्फबोडकाद्ररूत-सामनेतीर लगाताहुवा एकशिकारी–जमीनपरगिरीहुइ शमलीऔर नमस्कारमंत्रसुनातेहुवे पासखडे-जैनम्रुनि-वगेराआकार-श्रकुनिका विहारका बनाहुवाहै, औरउसपरिलखाहै संवत [१३३८] वर्षे ज्येष्टशुक्क [१४] शुक्रेश्रीनेमिनाथचैत्ये-संविज्ञविहारिश्री चक्रेश्वरसूरिसंताने-श्रीजयसिंहसूरिशिष्यश्री सोमप्रभसू-रिशिष्येः श्रीवर्द्धमानसूरिभिः प्रतिष्टितं-आरासणाकरवा स्तव्यप्राग्वाटज्ञातीय-श्रे०-गोनासंताने-श्रे० आमिगभा-र्या-रतनी पुत्रतुलहारि-आसदेव-श्रे० पासड-तत्पुत्रसिरिः पाल-तथा-आसदेवभार्या-सहजू-पुत्रतु॰ आसपालेन-मा-धरणि....सिरिमति-तथा-आसपालभायो--आसिणि-पुत्रलिंबदेव-हरिपाल-तथा-धरिणभायी....ऊदाभायी -पा-ल्हणदेविप्रभृति कुटुंबसहितेन-श्रीमुनिसुत्रतस्वामिबिंबं-अश्वावबोध-शमलिकाविहारतीर्थोद्धारसहितं--कारितं-म-गलंमहाश्रीः-इसळेखकामतळबयहहुवाकि-आरासण नगरकेरह-नेवाले-पोरवाडज्ञाति-आसपालनामके श्रावकनेयहांनेमनाथभगवा-नकेमंदिरकी परकम्मामेंतीर्थकर मुनिसुत्रतस्वामीकी मूर्त्तिजायेनशीन किइ-और-अश्वावबोध-शक्कुनिका-विद्यारतीर्थकाआकार--पथरपर उकेरवाकर कायमिकया.

महाराज श्रीपदमविजयजीने तीर्थआबुके स्तवनमें उसवस्त वस्तुपाल-तेजपालके मंदिरमें (४६८) मतिमाथी-लिखाहै, पेथ- डशाहने-और-लल्लनामके साहुकारने-यहांकइदफे जलसोकिये और दौलतसर्फिकइ. हिंदमें आबुकेजैन मंदिरअपनी कारीगिरीसें आम-जगह मशहूरहै, मंदिर-सोना-चांदी-जवारातके वनेनहीहै पथरकेहैं मगर कारिगरीके सामने-सोना-चांदी-जवाहिरातभी-नाचीजहै. फीजमानाके कारीगिर यहांकीकारीगरी देखकर ताज्जुवकरतेहै और इसहुनरकों सीखनेकी कोशिशकरतेहै, कइअंग्रेज-इनमंदिरोका फोटो उतारतेहैं,-कीर्त्तिकोमुदी-औररासमाला कितावजोकि-आलादर्जे-की तवारिखें थुमारिक इजाती है उनमें आबुकेजैनमंदिरोका हालद-र्ज है, जोशस्त्रयहां आनकर नजरसेंदेखेगा अजहदखुशहोगा.-

वस्तुपाल-तेजपालके मंदिरसेथोडीदूरक्षेट-भेंसाक्षाहका तामी-. रिकयाहुवा निहायतउमदामंदिर बडेघैरेमें है. मूर्तिइसमेंमूछनायक भगवानकी करीवतीनहाथवडी सवधातकी तख्तनशीनहै, इसके नीचेलिखाहै [संवत् १५५२] मेंतामीरिकइगइ, तपग्छ-नायकश्रीसोमसुंदरसूरि-तत्पदे-मुनिसुंदरसूरि-तत्पदे-ज-यचंद्रसूरि-तत्पदे-रत्नशेखरसूरि-औरउनकेपट्टपर लक्ष्मी-सागरमूरि-जिनोने--इसमूर्त्तिकी प्रतिष्टाहिइ, गभारेके बहाररंगमंडपमें दोमूर्त्ति-एक-तीर्थंकरारेषभदेवभगवानकी दुसरी-मुनिसुव्रतस्वामीकी जायेनशीनहै, तारीककरनाचा-हिये भेंसाशाहशेठकी जिनोनेइसकदरअपनीदौलत इस तीर्थपरवर्चिक्इ, चोथामंदिरचौमुखाजीका तीमंजीला-और-तीनोंमंजीलोंपर मूर्तिचौमुखाजीकी तस्तनशीनहै. बडाबुलंदशिखरऔरसवकाम पुख्तावनाहै, रंगमंडपबहुत-बडा जिसमेंकरीब [५००] आदमीबखूबी बेउसकते है,

अव-अचलगढके मंदिरोंका-हालसुनिये, देलवाडेसें अचल-गढ (५) मीलके फासलेपर वाकेहै, सडक पकीवनीहुइ-मगर चोडाइमें बहुततंग सीर्फ घोडे-और-डोलीयें जासकतीहै, बगी-या-गाडीनही जासकती, रास्तेमें एकमीजा ओरीयानामका वाकेहैं जिसमें श्रावकोंका एकभीघर नहीरहा-सबघर दिगरमजहब वालों-के करीव (१००) है, जैनश्वेतांवर मंदिर एक-यहांनिहायत पुरा-नावनाहुवा-और-इसमें मूलनायक भगवान महावीरस्वामीकी मूर्ति करीब (१॥।) दो-हाथवडी तख्तनशीनहै, यहपूर्ति राजासंप-तिकी तामीरिकइहुइ-वही-निशानातइसपर वनेहुवेहै, वायीतर्फ एकमूर्ति-तीर्थंकर पार्श्वनाथजीकी-इसपरलेखनही-सीर्फ ! पार्श्व-नाथभगवानका नामहै, दाहनीतर्फ एकमूर्त्ति तीर्थकरक्षांतिनाथजी-की जो करीवपोनेदोहाथवडी जायेनशीनहै और यहभीराजासंप्रति आबुपहाडपर बहुतसीमूर्त्तियें राजसंप्रति-की तामीरकीइहुइहै, कीहीतामीरिकइहुइ पाइजातीहै, निगरानी-इसमंदिरकीअचलगढके खजानेसे किइजातीहै, इसकेदर्शनकरके-वापीस उसीसडककोंआना-जो-अचलगढकों गइहै.

अचलगढगांव पहाडकी दामनमंबसाहुवा जवतलहरीमं पहुचोगे राजाकुमारपालका तामिरिकयाहुवा मंदिरदाहनी तर्फकों नजरआ-यगा, जो-बहासंगीन-और-पुष्तिशिखरबंद वेंशिकमती बनाहुवाहै, और इसमें तीर्थिकर शांतिनाथ महाराजकी मूर्णि तष्त-नशीनहै, यहमूर्णिमी राजासंप्रतिकी तामीरिकइहुइ-और-वही-निशानात इसपरमोजुदहै, रंगमंडपमें शिलालेख लगाहुवाहे मगरब-वजहदुटजानेके बचनहीसकता, दो मूर्णि-जो-खंडआकार इसमेंजायेनशीनहै बायीतफिकी

मूर्तिकोनिचे लिखाहैसंवत् [१३०२] जेटसुदी (९) मी-ग्रुभवारकेरोज यहमूर्त्ति प्रतिष्टितिकइगइ, पल्लीवालज्ञा-तीयश्रावक [नामखंडित होगयाँहै] की भार्याने यहमूर्ति बनवाइ, और आंगेचौथीलकीरमें तीर्थकरशांतिनाथजीका नामिलंबाहुवाहै, आसपास-चुना-लगादियाँहै जिससे लेख पुरेपुरा बचनहीसकता, रंगमंडप बडाआलिशान-बहार-कीतर्फ उमदाकारिगीरी-और-अतराफमंदिरके संगीनकोट खीचा-हुवाहै. राजाकुमारपालके मंदिरकादर्शन-करके जववहारआओगे सामने एकतालाव नजरआयगा. और उसकी एकतर्फ तीनभेंसे पथरके बनेहुवे खडेदेखोगे, आगेपहाडकी-तर्फबढोतो-एकदरवजा -और-एक तालाव आयगा, इसकेभी आगे बढोतो दुसरादरवा-जाऔर अचलगढगांवकी आवादीशुरूहोगी, आवादीक्याहै, ? ब-रायेनाम वीशपचीशयर रहगये यहांपरएक मंदिर तीर्थकरकुंथुनाथ जीका-और-एकधर्मशाला पुरानी बनीहुइहै, यात्री इसमें जाकर कयामकरे, मंदिरमें सबधातकी बनीहुइ मूर्ति-तीर्थकरकुं-थुनाजीकी तस्तनशीनहै औरउसके नीचेलिखाँहै संवत् [१५२७] में. यहतामीर किइगइ,-

यहांसेआगे वहेमंदिरकों जाना जो बुलंदाशिखरपर मानींद स्वर्गाविमानके नजरआताहै, पास नयीधर्मशाला-कारखाना-मुनी-म-गुमास्ते-नोकरचाकर-चौकी पहरा सबटाट शाहाना देखोगे, यहकारखाना जेरसाया-रोहिडा गांवके श्रावकोंकेहै, औरअलवते! इसवस्त इसमंदिरकी तरकीहै, पहाडकेबुलंद शिखरपर जैसाखूब-सुरतमंदिर अचलगढकाहै दुसरीजगह नहीदेखोगे, इसके रंगमंडपमें बख्बी (५००) आदमी वेठसकतेहै, बडासंगीन रंगरोश्चन किया हुवा बतौरदेव मजलीश्चके देखलो ! मूलनायक तीर्थकर रिषभदेव भगवानकी-मूर्त्ति—सबधातकी बनीहुइ करीव (४) हाथबढी निहायत खूबसुरत तख्तनशीनहै, इसमें ज्यादाहिस्सा सोनेका— और-बाकी दिगरधातुकाहै,

इसपरलिखाहै—संवत् (१५६६) फाल्गुनसुदि (१०) मी-दिने-श्रीअचलचढदुर्गे-राजाधिराज श्रीजगमाल-विजयराज्ये-प्राग्वाटज्ञातीयसं-कुरपालपुत्रसं-रःनसं-ध-रणसं-रत्नपुत्रसं-लाषासं-सलषासं-सजासं-सालिंग-भासं-सुहागदेपुत्रसं-सहसाकेनभासं-सारदे पुत्रिपरा-जिह-अनुपमदेपुत्र--देवराज--पिमराज भारमादेपुत्र-जयमल-मनजीयुतेन-निजकारित चतुर्मुख प्रासादे-उ-त्तरद्वारे-पित्तलमयमूलनायक श्रीआदिनाथ विवंकारितं-तपगछनायक सोमसुंदरसूरि-तत्त्पदे मुनिसुंदरसूरि-त-त्यदेजयसुंदरसूरि-तत्यदेविशालराजसूरि-तत्यदे रतनशेलर मृरि-तत्पदेलक्ष्मीसागरमूरि--श्रीसोमदेवसूरिशिष्य--श्री सुमतिसुंदरसूरि-शिष्य-गछनायक श्रीकमलकलशसूरि शिष्य-संप्रतिविजयमान-गछनायक --श्रीजयकल्पाणसु-रिभिः श्रीचरणसुंदरसूरि प्रमुखपरिवारयुतैः प्रतिष्टितं,-

मुलनायकजीकी तर्फ जो मूर्ति जायेनशीनहै उ-सपरसंवत (१५१८) का लेखहै, उनकेपीछाडी जोदो १७

मृत्तियहै ऊनमें एकपर संवत् (१५१८) और दूसरीपर (१५६६) का लेखहै, बायीतर्फजो तीनमूर्तिये है ऊनमेएकपर संवत् (१५६६) एकपर संवत् (१५२९) औरएकपर संवत् (१५६६) का लेखहै, मूलनायकजीकी दोनोंतर्भ-जो-दोमूर्त्सि-खंडेआकारहै-वेथी -सबधातकी बनीहुइहै, रंगमंडपकी दाहनीतर्फके आलेमें तीर्थकरनेम-नाथ भगवानकी मूर्ति-और-उपरकी मंजिलपर चौमु-सामहाराजकी चारमूर्तियोपर संवत् [१५६६] का लेखहै औरएकपर विल्कुल लेखनही-ये-कुछ (१४) मुर्त्तियां-वजनमे (१४४४) मणकी शुमारिकइजातिहि, इनमें ज्यादा-सोना-और तांबा-पीतलवगेरा दिगरधातु कमहै, मंदिरकी छतपर जाकरदेखो तो तमामकेफियत आबुपहाडकी-और-मंदिरोंकी नजरआतीहै, किसकदर हरियाली तरहतरहके द्रस्त-चिश्मेआव-नदीनाले-और छोटे छोटे गांवनजरआतेहै ! एक उमदा कालीन वी छाहो, औरदेखने वाले आस्मानकी शैरकररहेहो, पासमें एकशिखरपर कुंभाराणा-जीके महेल-और-सावन-भादवा तालावके निशानातवनेहुवेहै, अचलगढके मंदिरकीजियारत करके नीचे आनाचाहिये, अचलगढ गांत्रमें पांचसातघर जैनश्वेतांवर श्रावकोंके आवादहै, यात्रीअचल-गढसें वापीस उसीरास्ते देलवाडेआवे.

आबुपहाडपर पेस्तर पारसपथर मिळताथाकि-जिसकेछनेसें लोहा-सोना-बनजाताथा, मगरयेवातें अवस्यावर्नेमी नजरनही-आती, न-वैसेनेकवरूत आदमीहै-न-वें-चीजेंहै, पेस्तरयहां ऐसी **ऐसीर्जडीबुटीयें** होतीथी -जिसकोंघीसकर आदमी अपनेत्रदनपर लगालेवेतो अदृष्टहोजातेथे, आजकल जमाना नाजुकहै उमदाचीजे गायबहोती जातीहै, और कमजोरचीजें दरपेशहोतीहै, पेस्तरयहां पीलेरंगके पथर असेहोतेथे अगरऊनकों द्धकेसाथ घीसकर बदन-पर लगादियेजाय तोतपामबीमारीयां रफाहोतीथी, ताकतवरऔप-धियें यहांऐसीहोतीथीजिसकों खाकरआदमी हजारशख्शोकीबराबर ताकतहासिलकरताथा, मगरआजकलसीर्फ! सुननेकेलिये बातेंरह गइ, न-वे-चीजे है-न-वे आदमी है, आबुकल्पमे लिखाहै,—

न सबुक्षो न सा वल्ली-न तत्पुष्पं न तत्फलं, न सकंदो न सा शाखा-या नैवात्र निरीक्ष्यते, १

ऐसाकोइद्रस्त-लता-वली-फल-फुल-और-कुंद--नहीथाजो यहांपर नहीपायाजाताथा, पेस्तरयहां सिद्धरसहोताथा, बुजुर्गलोग कहाकरतेहैंकि--

> पदेपदे निधानानि-योजने रसकुंपिका, भाग्यहीना न पुरुयंति-बहुरत्ना वसुंधरा, १,

आबुकीहवा मुल्कोंमेंमशहूरहै गर्मायोंकेदिनोमेंभी रातकोंयहांपर शर्दी मालमहोती है, कहाकिसमके परींदेद्रक्तोंपर कलोलेकरतेहै, आम अनार-अंजीर-बादाम-अंगुर-केले-जामफल-जंभीर-नींबु-नरंगी गुलर-खजूर-अद्रक-पोंदिना-कुष्मांड-कठेर-केर--किवट-ककडी-और-कचनारवगेराकइचीजें यहांपरपेदाहोती है, फुलोंकाबयानसुनों तो-तरहतरहकेगुलाव-हजारोमणपेदाहोतेहैं, चंपाकेद्रक्त औरफुल सकते वेंशुमारजतरते हैं, गर्मीयोंमेंऔर वारीश्रमेंजिधरदेखों फुलोंकी खुशबुमहेकरहीहै, औरतरहतरहके गिरेहुवेफुल जमीनपर इसकदर बीछेहुवे दिखाइदेतेहैं, मानो ! कोइजमदा कालीनबीछाहुवाहै, जाइ -जुइ-केतकी-डमरा-मह्आ-केवडा-और चमेली हरकिसमकी यहां खडीहै, गुलवेलिया-और-केशुवगेरा जंगली फुलोंकी गिनतीकरो, तो एकिकताब भरजाय, विद्याबाहमी-सहदेवी-काकजंघा-शरपुं-खा-लक्ष्मणा-मयूरिशखा-हंसराज-नकलीकनी-रतनजोत-जल-जमनी-और-पियंगु-यहांहजारोमण पैदाहोतीहै, सफेदमुशली-बहडे-आवले-अरीठे-मोंथ-घोडवेल-और-मरोडफलीभी-किसी-कदरकमनही, कांटालकासहेत यहांबहुत पैदाहोताहै. भौरे-कांटाल-जातिकी नाशपातीकारस पीइकर सहेतकों पैदाकरतेहै,-

अय्यामवारीभमं आबुपहाड बदलोंसं इसकदर छाजाताहै बुलं दिश्वसर बिल्कुलनजर नहीआते, आबुपर छावनीमं जिसचीजकी दरकारहो आसानीसे मिलसकतीहै, आबुकेजेनमंदिर जिनोनेनही देखे एकआलादर्जेकी कारीगरीका हिस्सानहीदेखा ऐसाकहनाकोइ गलतवातनही, मंदिरोंमें जातेवरूत-लकडी-हथियार-छडी-जुतेव-गेराबहार रखकर जानाचाहिये, देवमंदिर एकअदबकी जगहहै, अंदरजाकर कारीगिरीकों बिल्कुल-न-छीवे, द्रसे सबचीजदेखे, दरवजेपर इसीमजम्रनका एकइस्तिहारभी लगाहुवाहै, आबुतीर्थकी जियारतसें यात्रीकों दो-किसमके फायदेहोगें, अवलधर्मका दोयम कारिगीरीके देखनेका-देलवाडेसे यात्री उसीरास्ते वापीसखरेडी आवे जिसरास्तेगयेथे, आबुपरचढनेके रास्तेकइवनेहै, मगरखास रास्तेदो-है, अवल खरेडीका-दोयम-अनादरेका, पहाडपर चढते-वर्ष्त रास्ताचढावका-और-उत्तरतेवर्ष्त उतारकाहै, ब-सब्ब-स-हकके रास्तासाफ- हरजगहहरियाली कुछकुछ फासलेपर चौकी-पहरेलगेहुवे और सबइंतजाम अछाहै,-

(तवारिख आबु खतमहुई,)

🖾 । तवारिख तीर्थ बंभणवाड 📗

आबुरोडसे रवानाहोकर यात्री किरवरली-भिमाना-रोहिटा-और–बनासटेसन होतेहुवे टेशन पींडवाडा उतरे, रेल्लकिराया– पांचआने लगतेहै, पिंडवाडेमें श्रावकोके मकानात-धर्मशाला-और -पुराने मंदिर वनेहुवेहै, दर्शनकरके आगे वंभणवाडतीर्थकों जाना जो करीव (४) कोशके फासलेपर वाकेहै, सवारीके लिये बेंल-मिलसकेगी, रास्ता खुक्कीकाहै, चौकीदारकों भाष लेनाचाहिये. और खानपानका बंदोबस्तभी यहांसेही करलेना ठी-कहै. बंभणवाडगांव छोटाहै चाहिये वैसीचीज वहांपर नहीमिलस-केगी, तीर्थवंभणवाड पहुचनेपर धर्मक्षालामें कयामकरना जो-नि-हायतपुख्ता और आलिशान बनीहुइहै, वंभणवाड कस्वा बहुतब-डानही मगर तीर्थकी वजहसे मशहूरहै. यहांपर तीर्थकर महाबीर स्वामीका बडाआलिशान मंदिर-गांवसे-कुछ फासलेपर जंगलमें बतौर देवविमानके खडाहै, कारखाना-ग्रुनीम-ग्रुमास्ते-नोकरचा-कर और पूजारीवगेरा हमेशांकेलिये यहां तैनातहै, मंदिरके सामने पथरका-एकहाथी-मानींद असलीहाथीके-बनाहुवाखडाहै, मंदिरमें मूलनायक भगवान-तीर्थंकर महावीर स्वामीकी मूर्त्ति-बालुरेतकी-वनीहुइ जिसपर मोतीयोंका लेंप लगाहै करीव (?) हाथवडी तख्तनशीनहै, दर्शनकरके दिलखुशहोगा,

जोलोगकहते हैकि-तीर्थकरमहावीरस्वामीके कानोमें जो-गो-वालियेने लक्देकी बडीवडीकीले बतौरमेखके लगाउथी-बहस्वरक-नामकेवैद्यनेयहां निकालीथी, मगरयहवात विल्कुलगलतहै, असल-में-यहमाजरा मुल्कपूरवकाहै, देखो ! कल्पसूत्रमें जहांतीर्थंकर महावीरस्वामीका अंतर्वाचनाका जिक्रदर्ज है, ऐसापाठ मौजूदहै, कि-तीर्थकरमहावीर खणमानीगांवकेवहार खडेहोकरध्यानकरतेथे-

एक-गोवालीयेने ऊनकेकानोमें दो-मेखां-लकडेकीलगाइ, और जब-वे-मध्यमअपापानगरीकोंगये वहांकेरहनेवाले सिद्धार्थवणिक-और-खरकनामकेवैद्यने-ऊनोकेकानसे वडीकोशिकेशाथ मेखां नि-काली, कल्पसूत्रका पाठ और सबहक्षीकत आगेचलकरलिखेगे जहांकि-मुल्कपूरवके जैनतीर्थोंका वयान करेंगे, असलवात मृल्क पूरवमें वनीथी पीछेसे यहां ऊनकी-नकल-किइगइहै, वंभणवाडसें यात्री नादियागांवको जावे, जोकि—दोकोशकेकासलेपरवाके है, औरयहांपर तीर्थकरमहावीरस्वामीका वडाआलिशानमंदिर बनाहुवा है जियारतकरे, गांवनादियाके बहार एकछोटी पहाडीकी खोहमें-तीर्थकरमहावीरस्वामीकी मूर्त्ति पहाडमेऊकेरीहुइ-और-एकशिला-पर सर्पका निशानवनाहै जिससांपकानाम चंडकोशिक था-और इन्होंके पांवकों काटाथा, जब उससर्पकों तालीमधर्मकीदिइ उसका गुस्सा उतरगयाथा, और-वहधर्मी होगयाथा. यह माजराभी मु-ल्कपूरवकाही है, जब तीर्थकरमहावीर श्वेतांविकानगरीकों जातेथे-कनकखळतापसाश्रमके पास-चंडकौशिकनामके सर्पनेकनकेपांवकों काटाथा, उसकी नकल यहांपरवनाइगइहै, जैसे रायणदक्ष (यानी) लिरनीद्रस्तके नीचे तीर्थकर रिषभदेवस्वामीका पधारना तीर्थक-**द्वंजयपरहुवाथा–मगर−स्थापना–उसकी** औरभी कइजगह किइगइ है इसीतरह यहभी माजरा समझलो,

ः कल्पसूत्रमे देखो साफवयानहै तीर्थकरमहावीर छदमस्थ–हा-स्रतमें-मुल्कपूरवतर्फही विचरतेरहे मारवाडमें नहीपधारे, नादियाकें आसपास-लोटाणा-अंजारी-शिरोहीवगेराभी जैनोकी आबादीके मुकामहै, और बडेवडेजेनश्वेतांबरमंदिर वहांपरबनेहुवे है, अगरफुर-सतहोतो वहांभी जानाचाहिये, अगर कमफुरसतहो-तो-नादियासें नापिस वंभणवाद-और-वंभणवादसे उसीरास्ते देशनपींदवादेशाना,

और रैलमें सवारहोकर केशवगंज-नाणा-मोरीवेरा-एरनपुरारोड संदेराव-और-फालना होते रानी-टेशन उतरना, रैलकिराय छआने लगते है,—

👺 [तवारिख-पंचतीर्थी,-]

मुल्क मारवाडमें-रानीटेशनसे (२०) कोशके घैरेमें पंचती-थीं एकमशहूर जगहहै,-वरकाणा-नाडोल-नाडलाइ-घाणेराय-और-रानकपुर-ये-पंचतीर्थीके नामहै, सवारीके लिये बेलगाडी रूपयेरोजके किरायेपर मिलसकेगी, रास्ते दो−है, एक वरकाना होकर रानकपुर जाना, दुसरा रानकपुर होकर वरकाना आना, जिनकों जैसा सुभीताहो-वैसा करे, दोनों तर्फसे वापीस रानीटेश-नकोंही आनाहोगा. और कमसेकम आठरौज छगेगे, जोलोग भ~ गाभगी करके चार-या-पांचरीजमेंही खतमकरतेहै उनकी<mark>जियारत</mark> फिजुलहै, घरछोडकर तीर्थमें आये और तीर्थमें भी वही हालरहा नो इससे बेहत्तरहे घर हीबैठेरहना, यात्रीकों रानीटेशनसें चलकर एक रौजवरकानामें रहनाचाहिये, जोकरीब देढकोशके फासलेपर बाकेहैं. वरकाना-कस्वा पेस्तर वडाथा अव करीव (७५) घरकी आबा-दीका रहगया, जैनश्वेतांवरश्रावकोंके घरअंदाज दसपनराहकेहै, धर्मः शाला यहां (२) है, एकछोटी एकवडी, दोनोंमें मिलाकर करीब (१००) आदमी-ब-खूबीठहरसकतेहै, अतराफ-मंदिरके-एक पुष्ताहाता स्वीचाहुवा, कारस्वानेमें मुनीम-गुमास्ते-नोकर-चाकर पूजारी बगेरा हमेशांकेलिये तैनातहै, और जेरनिगरानी उनपर बीजवाके श्रावकलोगोंकी है, जोयहांसे मीलभरकेफासलेपर वाके है, यात्रीकों अगरभांडे-वर्तनकी दरकारहोतो कारखानेसे मीलसकेंगे, मंदिर वरकानेका-बहुतवडा आलिशान-बावनजिनालयका-निहा-यतपुष्ताहे, घेराव इसका चारसागजसे कम-न-होगा, दरवजेके-

बहार दोनोंतर्फ दोबडेबडेहाथी-पथरकेबनेहुवेखडेहै दरवजेमे घुसते बायीतर्फके हाथीकेनजदीक एकशिलालेख-खडाहै जोकरीब देढ गजलंबा एकहाथचोडा-उसपरिलखाहै-संवत् (१६८६) पोषवदी अष्टमी शुक्रवारकेरीज मेदपाटके अधीशराणाजगतिसहजीने तपग-छाचार्य-विजयदेवस्रिके वचनसे मेलेकेदिनोंमें चाररीजका महेस्रल माफिकया, पोषवदी-८-९-१०-११-तकमेला यात्रीयोंका यहां जमाहोताहै उनका मेहस्रललेना छोडदिया,

द्रवजेकेभीतर चौकमें एकवडाहाथी पथरकावनाहुवा ठीक-मृलनायकजीके सामने खडाहै, मंदिरकीचारोंतर्फ दिवारमें जोजो कारीगरी किइहै लाइकतारीफकेहै, देखकर दिलनहीचाहताकि-य-हांसे-बहारचलेजाय, मंदिरकेचौकमें तीनिश्चलालेख संवत् (१८०६) के लिखेहुवे खडे है मगरइनमें मंदिरकेवननेका कोइजिक्रनही, सी-र्फ ! इनवातोंका जिक्रहै जोउसअर्सेमें यहांकेलोगोने इकरारिकयाथा, जबमंदिरके रंगमंडपकेदरवजेपर पहुचोगे निहायत उमदाकारिगिरी नजरआयगी, रंगमंडपबहुतबडा-और-नवचौकीके एकखंभेपर शि-**ळाळेखळगाहुवाहै मगरजहांपर संवत् ळिखाहुवारहताहै–वो–जगह** द्वटगइहै, बहुतगौरकेशाथदेखागयातो संवत् (१२११) लिखापाया, आगेकेहर्फभी डुटेहुवे हैं अछीतौरसें पढेनहीजाते. सबुतहुवामंदिर बारांसोग्यारहके पेस्तरका वनाहुवाहै, मूलनायककी मूर्त्तिके सामने और नवचौकीके खंभेकेपास एकहाथी पथरका बनाहुवा-और-उसके उपर एक शेठशेठानी की - मूर्ति जायेनशीनहै, लेख इसपरनही-मगर यहांके वार्शिदोमें यहवात मशहुरहैिक इनोने यहमंदिर तामीर करवायाथा मूलनायक तीर्थकर पार्श्वनाथभगवानकी क-रीब एकहाथबडीमृत्ति-मयफणके निहायत खुबसुरत-तख्तनशीन है, इसपर कोइलेखनही मगरनिज्ञानात् राजासंप्रतिके जमानेकेपाये

जाते है, चारोंतर्फ इसके-जो-पीतलका परिकरलगाहुवाहे संवत् (१७०७) का-बनाहुवाहे, मंदिरके आलोमें-छोटेछोटे-जिनाल-योमें और रंगमंडपमें कुल्लमूर्त्तिये करीब (२००) के-हे, दर्शन करके दिलखुशहोगा-मानो ! स्वर्गमें आनखडे है, खुशनसीबोने कैसेकेसे आलिशानमंदिरबनवाये है यहांपर वगीचा-एक-बडागुल-जार जिसमें गुलाब-चंपा-जाइ-जुइ-चमेली-डमरा-मरुबा-वगे-राकेफुल हमेशां ऊतरतेहै और देवपूजनमें चढायेजाते है, फलोमें आ-म-नींबु-नरंगी-अनार-केलेवगेरा यहां पैदाहोते है, बयान-वरका-णातीर्थ-खतमहुबा,—

वरकाणासें रवानाहोकर यात्री नाडोल जावेजो अठाइस कोशके फासलेपर एककस्वाहै, जैनश्वेतांवर मंदिर इसमें (६)—जिनमें तीर्थिकर पदमप्रभुका शिखरवंद मंदिर निहायतपुराना और मूर्तिं इसमें राजा—संप्रतिकी बनाइहुइ तष्त्तनशीनहै, दुसरा और तीसरा मंदिर इसीवडे मंदिरमें सामीलहै, चोथामंदिर तीर्थिकर नेमनाथजीका पांचमा शांतिनाथजीका—और—छठा तीर्थिकर पार्श्वनाथजीका बतौर वैत्यालयके बनाहुवा, शिवायइसके उपाश्रयमेंभी कइधातुकी मूर्तिये जायेनशीनहै. जैनश्वेतांवरश्रावकोंके घर—धर्मशाला—और—खानपानकी चीजेयहां सब मिलसकतीहै. बयानतीर्थ—नाडोल—खतमहुवा.

नाडोलसें रवानाहोकर नाडुलाइकस्वेकों जाना, जोकरीब (३) कोशके फासलेपर वाकेहै, श्रावकोकेघर यहां बनीस्पतनाडोलके ज्यादह-धर्मशाला उपदा और मंदिरभी छोटेबडे मिलाकर (३१) है, इनमे (२) मंदिर गांवकेबहार और (९) भीतरहे, भीतरकेमंदिर बडीलागतके-पुराने और-एकएकसे आलाबने हुवेहे, एकमंदिर जो दरवाजेकेपासहे, मूलनायक तीर्थकरिषभदेवभगवानकी मूर्ति इसमें निहायतखुबसुरत-तब्तनशीनहे, यहांके लोगोमें यहबातमशहरहैिक

जैनश्वेतांवराचार्य यशोभद्रस्ति अपने मंत्रवलसे इसमंदिरकों उडाकर यहां लायेथे. जैनश्वेतांवराचार्य यशोभद्रस्तिका—और—शैवाचार्यका मंत्रविद्याकेवारेमें यहां विवाद हुवाथा. लोगोने कहा ऐसेविवादसे क्याफायदा! कोइबात ऐसीकरजाओकि—यहांपर आपलोगोंकानाम हमेशांकेलिये बनारहे, उसवस्त जैनश्वेतांवराचार्य—यशोभद्रस्तिजी यहमंदिर तीनसोकोशके फासलेपरसे—उडाकर—अपनेमंत्रवलसे यहां लायेथे और जमीनपर कायमिकयाथा, श्वेवाचार्य अपनेमंत्रवलसे अपना श्वेवमंदिर उडाकरलायेथे जोदुसरीतर्फके द्रवजेकेपास मीज्दहै, कुळलेखी सबुतइसवातका नहीमिलता, सीर्फ! यहांकेलो-गोमें यहवातमशहुरहै, वयान तीर्थ नाडुलाइ खतमहुवा,—

नाडुलाइसें रवानाहोकर यात्री-घाणेराय-कस्वेकोजावे. जो पंचतीर्थीमें-चोथेदरजेपर वाकेहै, जैनश्वेतांवर श्रावकोकेघर-यहांक-रीब (२००) और (१०) जैनश्वेतांवरमंदिर बनेहुवे है दर्शनकरके दिलखुक्रहोगा, कस्वेघाणेरायसे करीव (१॥) कोशकेफासलेपर एकमंदिर जो मुलालामहावीरकेनामसे मशहुरहे जंगलमें बतौरदेव विमानके खडाहै, और इसमें तीर्थकर महावीरस्वामीकी अतिशय मुक्त मूर्ति तख्तनशीनहें, रंगमंडप वडाआलिशान-और-सवकाम मंगीनबनाहुवा धर्मशाला बहुतबडी-जिसमें-जाकरयात्री आराम करे. पासमें जलका होजबनाहुवाहै, अतराफ मंदिरके झाडीझखड -द्रख्त-और-पहाडही-पहाडनजर आते है, जंगलमें मंगल इसीका नामहे, खुश्चनसीवोने क्या क्या कामकरवतलायेहैंकि-जिसकी ता-रीफ बेंमिशालहें, जिसकों धर्मप्याराहै-दिलकेदलेरहें-वही ऐसेकाम करसकेंग, सूमऔर बखील जोकि-अपनी कमाइहुइ दौलतआप नहीखा सकते, अनसें काम होना मोहालहें, बयान तीर्थ घाणेराय स्तमहुवा,-

घाणेरायसे रवानाहोकर यात्री सादरीगांव जावे, जो करीब चारकोशके फासलेपर वाकेहै. जैनश्वेतांवर श्रावकोके घरवहां क-रीव (४००) और-एक-बडाआलिशान जैनश्वेतांबर मंदिरबनाहुबा, इसमें मूळनायक-तीर्थकर चिंतामणि पार्श्वनाथजीकी मूर्तिं करीब देढ हाथ वडीतरूतनशीनहै, इसपर लेखनही, राजासंप्रतिकी तामीरक-राइहुइ मूर्त्तियोके निशानात इसपर पायेजातेहै. गर्भद्वारकी दोनों-तर्फ जो-दो-मृक्ति-जायेनशीनहै उसमें वायीतर्फकी मूर्त्तिपर संवत (१६८६) और तपगछकानाम छिखाहै, मंदिरकी-परकम्मा**में** दाहनीतर्फ एकदेवालयमें एकजगह एकमूर्त्तिपर संवत् (१६४४) और तपगछ-हीरविजय सुरिवगेराके नाम छिखेहै, रंगमंडप निहा-यतबुळंद और सबकाम पुरुताहै, यात्री सादरीगांवके मंदिरके दर्श-नकरके-तीर्थ-रानकपुरकी जियारतकों जावे, जो पंचतीर्थीके पां-चवे नंबरपर और सादरीगांवसे अंदाज तीनकोश फासलेपरहै, सादरीसेरवाना होतवख्त चौकीदार मीणा−शाथलेना चाहिये, व-गेरचौकीदारके रास्तेमें तकलीफ होगी. और राज्यकी तर्फसेभी सख्त मुमानीयतहै, रास्ता कठीन-पहाडोके घेरेमें-बडेबडे झाडी-**झुखडकों पारकरके जाना होगा, चौकीदार हरेक जगहका वाकीफ** होताहै.-

जब करीव रानकपुरके पहुचोगे वीचझाडी झुखडके एकआलिशान त्रेलोक्य दीपक-जैनश्वेतांवर मंदिर वतौर स्वर्ग विमानके दिखलाइदेगा, फौरन ! गाडीसें ऊतरकर मंदिरकों नमस्कार
करों. और अपनी तकदीरका शुकरमनाओकि-जिसने हमकों इस
जगहपर पहुचाया, इसमंदिरकी बनावट और खूबसुरित देखकर
ताज्जुब करोगे, जबधरणाशाह शेठनेइसकों बनाकर तयारकरवायाथा इसकी खूबसुरित देखतेतो माल्रुमहोताकि-झलाझल रीशनी

देवविमानकी यहांआगइहै, और इसीलिये इसकानाम त्रैलोक्य दीपक मंदिर कहागया, वावनजिनालयका उमदामंदिर और आ-ळादर्जेकी कारीगरीका नम्रना देखनाहो-नजरके सामने देखलो. चारोतर्फसे बराबर तीनतीनमंजील ऊंचा-और-चारोंतर्फके दरवजे इसतरह बनेहुवेहै, मानो ! समवसरणका आकार वना-हो, पेस्तरयहां रानकपुर नामका शहर आवादथा. संवत् (१५००) की सालमें कहतेहैं यहांपर जैनश्वेतांबरश्रावकोंके घरअंदाज(२०००) थे, जव-रानकपुरकी आवादीकमहुइ-कितनेकश्रावक-सादरीमेआन बसे, कइपाळी-मेवाड-और-माळवेतर्फ चलेगये, दुनियाकेकारोबार इसीतरहसे चलेजाते है, कभी नावगाडीपर-कभी गाडी नावपर-यह सब तकदीरीमामल्राहै, और पूर्वसंचितकर्मके ताल्लुकहै, श्रावक लोगही क्या ! दिगरकों भकेलोगभी रानकपुरसे रवानाहोकर दुस-रीजगह जावसे, गरजिक-इसवख्त रानकपुरमें एकभी घर जैन-श्वेतांबरश्रावकका नहीरहा. सीर्फ ! रानकपुरकीजगह-मंदिर-धर्म-शाला-बाग-और-पुरानेकोटके निशानात बाकीरहगये. राणाजीके बनायेहुवे मंदिरके पासजाकरदेखोतो पुरानेकोटकी दिवार बडी द्रतक लंबीचलीगइहै, और ऊसीके पाससे भानपुरहोकर मेवाड जानेका रास्ताथुरुहै,-

मंदिरकेपासवडी आलिशानधर्मशाला बनीहुइहै यात्री इसमें जाकर कयामकरे, और तीर्थकी जियारत हासिलकरे, तारीफक-रो! ऐसे बहाद्र और सखी धरणाशाहशेठकी जिसने ननाणवे लाखरुपये सर्फकरके यह त्रैलोक्यदीपकमंदिर तामीरकरवाया, जब पश्चिमकी-सीढी तयकरके मंदिरके रंगमंडपमें पहुचोगे, मानींद एक स्वर्गलोकके नजर आयगा, छतोमें-खंभोंमें-और-मेहराबोंमें जोजो कारीगिरीकिइगइहै जसकी तारीफकरना जवानसेबहारहै, छतमें किसिकसतरहके गुलदस्ते—पुतलीयं—वेल-बुटे—वगराबनाये हैिक-जिनकोंदेलकर आदमी ताज्जुबकरने लगताहै, जबदुसरे रंगमंडपमें पहुचोगे—पेस्तरकी बनीस्पत ज्यादहकारीगिरी नजरआयगी, दा-हनीतर्फका रंगमंडपदेखोतो उसकी कतावजा—उससेंभी निराली है, पीछलीतर्फका रंगमंडप देखोतो औरही कताका बनाहै, छतपर बा-रीककाम—और पुतलीये किसकदर तमाशा कररही है जोकाबिल देखनेके है, बायीतर्फका रंगमंडप—सबसे—ज्यादहखूबसुरतबनाहै, चाररंगमंडपबडे औरचार ऊनकेसामनेछोटे—कुल आठहुवे, और सोलहरंगमंडप चारोतर्फके कोनेमें कुल (२४) हुवे,

इसमंदिरमें मूलनायक चौम्रुखजीकी चारमूर्त्तिये-निहायतखूब-सुरत और अतिशययुक्त तस्तनशीनहै, पश्चिमतर्फजो मूर्ति-तस्त-नशीनहै उसपरसंवत् (१४९८) छिखाहै, ऊत्तरतर्फकी मूर्तिपर संवत् (१६७९) पूर्वतर्फकीमूर्त्तिपर संवत् (१४९८) और दखन तर्फकी मूर्त्तिपरभी वहीसंवत् (१४९८) का-लेखहै. पश्चिमतर्फके मूलनायके सामने दरवजेकी दाहनीतर्फ जोदिवारमेंलगाहुवा बडा शिलालेखहै उसमें संवत् (१४९६) श्रीमेदपाट–राजाधिराजश्री**व**-प्प-और-श्रीगुहिलवगेराराजाओकी (४०) पीढीयोंके नाम-और फिर आगे (३९) मी-पंक्तिमे लिखाँहै परमआईत धरणाशाह पोरवाडने यहमंदिर तामीरकरवाया, (४१) मी पंक्तिमेंलिखाँहै राणकपुरनगरे राणाश्रीकुंभकर्ण नरेंद्रेण सुनाम्ना-निवेशित:-फिर आगे (४२) मी-पंक्तिमें छिखाहै त्रैलोक्यदीपकाभिधान-श्रीचतु-र्भुखयुगादीश्वरविहार:–कारित:–इसकेआगे छिखांहै श्रीटहत् तपा-गछे-श्रीजगत्चंद्रसूरि-श्रीदेवेंद्रसूरि....आगेकुछखंडितहोगयाहै पढा नहीजाता, मगरअखीरकी पंक्तियोंमें तपगछके आचार्यमाहाराजने प्रतिष्टाकिइ लिखाहै, जबराज्यका उल्थाहुवाथा-किसीने प्रतिष्टा-चार्यकानाम तोडदियाहै,

मंदिरकी दुसरीमंजीलपरजानेसे औरही खूबी नजरआती है, हुबहु स्वर्गिवमानका नकशादेखलो. — मूलनायक यहांभी चौम्रखजी महाराजकी चारमूर्तिये जायेनशीनहै, जिनमें पश्चिमतर्फकी मूर्तिपर संवत (१५०७) लिखाहै. उत्तरर्फकी मूर्तिपर (१५०८) — पूरव तर्फकी मूर्तिपर (१५०८) — पूरव तर्फकी मूर्तिपर (१५०१) और दखनतर्फकी मूर्तिपर संवत (१५०६) लिखाहै. तीसरीमंजीलपर जाकरदेखों औरही उमदारव-त्रक दिखाइदेती है, मंदिरका बुलंदशिखर—और चौरासीजिनाल-योके छोटेछोटे—(८४) शिखरदेखकर स्वर्गिवमान मालमहोताहै, असलमें यह त्रेलोक्यदीपकमंदिर— निलनीगुल्म— विमानका— नकशाहै, तीसरीमंजीलपरभी मूलनायक चौम्रखजीहीकी मूर्तिये जायेनशीन है. और ऊनमें पश्चिमतर्फकी मूर्तिपर संवत (१५११) का—लेख है, तारीफकरों धरणाशाहपोरवाडकी— जिनोने— ऐसा त्रेलोक्यदी-पक-युगादीश्वरदेवका मंदिर बनवाया, जिसकीसानी दुसरा कोई नजर नहीआता,

परकम्मामें (८४) जिनालय-और-मूलनायककी दाहनी तर्फ-तीर्थ-समेतिशिखरका आकार—बनाहुवाहै, उसपर संवत् (१५४८)-लिखाहै, एकजगह संवत् (१५४७) लिखाहै, मेरूपर्वतके (१५५०) और एकजगह संवत् (१५४७) लिखाहै, मेरूपर्वतके आकारपर संवत् (१५५०) का लेखहै, इसके आगे एकजिनाल-यमें तीर्थकर महावीरस्वामीकी साढे तीनहाथडी मूर्ति तल्तनशीनहै, उसपर लिखाहै संवत् (१६५१) वर्ष-माघसुदी (१०) मीके रीज यह बनाइगइ. छोटे जिनालयोमें सबजगह बहुतकरके राजा संगतिकी बनाइ मूर्तियेही जायेनशीनहै. बायीतर्फ परकम्माकेएक जिनालयमें-तीर्थकर रिषभदेवभगवानकी साढेतीनहाथ बडी-मूर्ति जायेनशीनहै, और उसपर लिखाहै संवत् (१६७९)-वैशाखसुदी

(११) बुधवासरे-राजाश्री कर्णवीजयजित्समये भट्टारक श्रीवीजयदेवसूर्युपदेशेन-श्रीआदिनाथ बिंबं प्रतिष्टितं-पं-श्री वेलागिण-पंश्रीजयविजयगिण-पं-श्रीतेजहंसगताभि:-ओशवालज्ञाति-कोठारी
केशवभार्या-कपूरदे-तत्पुत्रकोठारी....इसकेआगेके हर्फ घीसगयहे खुलतेनही. मगर मतलव सवका यहीनिकलताहैकि-संवत सोलहसो
उन्नासीमे-राजाकर्ण विजयजीक वर्ष्तमें-विजयदेवसूरिके उपदेशसे.
कोठारीकेशवजीकी भार्या कपुरदेके बेटेने यह मूर्त्तिवनवाइ, धरणा
शाहपोरवाडके वाद-यह मूर्त्ति वनाइ गइहे ऐसाजानना, एक जिनालयमें तीर्थअष्टापदका-और-तीर्थनंदीश्वरद्वीपका आकार बनाहवाहै, मगरलेख इसपर कोइनही,

मूलनायक तीर्थकर रिषभदेवभगवानके सामने-एकहाथीपर मरूदेवाजीकी यूर्त्ति जायेनजीनहै उसपर संवत् (१७२८) कालेखहै, और छोटेछोटे जिनालयोंका जिक्र खतमहुवा, मूलनायक भगवानकी दाहनीतर्फ-रंगमंडपोकी बाजु एक रायणकाद्रख्त-और
- उसकेनीचे तीर्थकर रिपभदेवजीके कदम जायेनजीनहै, इसत्रैखोक्यदीपक मंदिरमें-(८४) तलघर बनेहुवे और उनका रास्तापश्चिमतर्फके दरवजेमे घुसते जो दोनों तर्फकी दिवारमें-सिलालगीहुइ बंदहै उधरसेहै, शेठ धरणाज्ञाह पोरवाडकी तारीफकरोकि-जिसने-असेअसेकाम-अपनी दिलोजान-ब-मालसें किये,
श्रावकहो-तो-असेहो,

इस मंदिरमें (४२) पाट पथरके दुटगयेहै जो काबिल नये बनवानेके, अगर आजकलमें बनजायतो बहतरहै बरना! ज्यादह सर्फा पडेगा, मूलनायक महाराजकी दाहनी तर्फकी परकम्मामें इशानकोंन तर्फकी दिवार अकगइहै, अगरइसकी मरम्मत-न-होगी तो यहदिवार गिरजायगी, जोकाम अब एकहजार रूपयोमें निक- लताहै-बादमें-वह-लाखरूपये-खर्चतेभी-न-निकलेगा, दाहनीत-फ्रीके रंगमंडपकी छतसेंअय्याम वारीश्रमेंपानी गिरताहै उसकीभी मरम्मत होना दरकारहै, आजकल जोजो श्रावक-जातेहै उपरसे देखभालकर चलेआतेहै, मगर यह खयालनही करतेकि-हमारे बुजुर्गोंके बनायेहुवेमंदिरका क्याहालहै, ?-जिसकों बनेआज (४००) वर्षहोगये मरम्मतहोना दरकारहै-या-नही ? लाजिमहै इसमंदिर-की-रकम चाहेजहां-जमाहो-मरम्मतमें लगादेनाचाहिये,

धरणाशाहशेटके खानदानमें ऊनकेभाइबेटे कस्वे घाणेरायमें अव-भी मौजूदहे, हरसालजबचैतवदी (१०) मी-के-रौज तीर्थरानकपुरमें यात्रीयोंका मेलाभरताहै मंदिरकेशिखरपर उनहीकीतर्फसें बनवाइहुइ धजा चढाइजाती है, अंगी-पूजाभी उसरौजमंदिरमें ऊनहीकीतर्फसें होती है. संवत् (१९६०) चैतवदी (१०) मीके रौज हमइसती-र्थके मेलेमें मौजूदथे, यात्रीयोंकामेला बहुतभराथा धरणाशाहशेटके खानदानकेलोग-घाणेरायकस्वेसे आयेथे औरशिखरपर धजाच-ढाइथी. शाबाशहै! ऐसे सखी-और-इकवालमंदके भाइबेटोंको!! जो-अवतक-अपनेखुजुर्गोंके नामसें-इतनाभीधर्मका कामचलाते है, कुल्लधर्मशास्त्रोंकी यहीनसीयतहैकि—बेटाबेटी-रिस्तेदार-औरत-चांदी-सोना-और-जवाहिरात कोइशाथ नहीजायगा, सीर्फ! धर्मही शाथजायगा,

मेलेकेरीज यहांबहुतलोग जमाहोते है, कभी पांचहजार - और कभीसातहजारतक यात्रीयहांआते है, जलसाभी अछाहोताहै, /दुकाने हरेकिकिसमकी लगती है, मंदिरमें पूजन-गीतनृत्य-अंगी रोशनी बगेराअजहदजलसा होताहै, जहांतकबनपडे उसरीजकी जियारत जहरकरनाचाहिये, हमने शंगतरासांसे रानकपुरकमंदिसका-नकशा लिया, मंदिरकी दुसरीमंजीलपर पूर्वतर्फके रंगमंडपकी पीछलीबाजु एकपाटपर-एकशिलालेखमें लिखाहै संवत् (१६४७) वर्षे फा-लगुनशुक्रपक्षे पंचम्यांतिथौ-गुरूवासरे श्रीतपागछाधिराज बाद-शाह अखबरदत्त जगद्गुरू विरूद धारक भट्टारक श्रीश्रीश्रीहीरवि-जयस्रीणां उपदेशेन चतुर्भुख श्रीधरणविहारे पाग्वाटज्ञातीय सुश्रा-वकशाह खेतानायकेन वद्धीपुत्र यश्चवंतादि कुटुंवयुतेन-अष्टचत्वा-रिशत् प्रमाणानि-(४८) सुवर्णनाणकानि-पूर्वदिक्सत्क प्रतौली-निमित्तं-अहमदाबाद पार्श्ववित्त-सापुरतः श्रीरस्तु,-

इसका माइना यहहैकि-संवत् (१६४७) फाल्गुनसुदी पंच-मीगुरुवारकेरौज-तपग आधिराज-आचार्य श्रीहीरविजयसूरिके उप-देशसे पोरवाड खेतानायक श्रावकने धरणाशाहशेठकेमंदिरमें पूर्व तर्फके द्रवजेकी मरम्मतकेलिये (४८) सोनामहोरे भेटकिइ, धर-णाशाहशेठ तपगछके श्रावकथे, प्रतिष्टाभी इसमंदिरकी तपगछके आचार्यनेकिइ उपरिलखचुके है, खरतरगळके श्रीयतसमयसुंदर-उपाध्यायने जो रानकपुरका स्तवन संवत् (१६७६) में बनायाहै उसकी पांचवी गाथामें बयानहै कि-'' खरतर वसही खांतसुरेला-ल "-वह-इसवडे मंदिरकी वहार जोछोटामंदिर वनाहै उसकीबात है, रानकपुरके मूलमंदिरकी तवारिख खतमहुइ, अब बहारके (२) मंदिरोंका वयानसुनिये! सामने धर्मशालाके जो-तीर्थंकर पार्श्वना-थजीका मंदिरहै उसकी दिवारोंपर तरहतरहकी कारीगरी-वेलबुटे और पुतलीये निहायत खूबसुरत बनीहुइ अतराफ मंदिरके पुरुता कोट खीचाहुवा और सबकाम पायदारहै, इसमें मूलनायक-तीर्थ-करपार्श्वनाथ भगवानकी शामरंग मूर्ति करीव सवाहाथ बडी त-क्तनज्ञीनहे, दुसरा मंदिर तीर्थकर नेमनाथजीका-इसमें-तीर्थकर नेमनाथ महाराजकी शामरंग मूर्त्तिकरीव सवाहाथ बडीतख्तनशीन

है, कारीगरी इस मंदिरमें कमहै, कोट वेशक ! पुरुता खीचाहुवा -संगीनहै,-

नेमनाथजीके मंदिरसे आगेजो सूर्यमंदिरहै-वो-राणाजीका तामीरकरवाया हुवाहै-जैनमंदिर यहां कुछ तीनहै, एकवडा और दो-छोटे, धर्मशाला यहांपर (२) एकवडी दुसरीछोटी, दोंनोंमें करीब (२०००) यात्री-आरामकरसकते है, वावडी मीठेजलकी और एकवाग यहांपरमौजूदहै, जिसमें मोगरा-जाइ-वगेराकेफुल हमेशां उतरते है और पूजनमें चढायेजाते है,—

(तवारिख पंचतीर्थी-खतमहुइ,—)

रानकपुरसें वापिस रानीटेशनआना, और रानीटेशनसे रैलमें सवारहोकर-जावाली--सोमेसर—भीनवालिया होतेहुवे मारवाड जंकशनजाना, और वहां उतरकर पाली-जोधपुरजानेवाली रैलमें सवारहोकर-बोमदराहोते पालिटेशनजाना, रैलकिराया रानीसे यहांतक दसआने लगतेहैं, अगर यात्रीकों फुरसतहो-एकरीज यहां कयाम करके यहांके जैन मंदिरोंकेभी दर्शनकरे पाली अला कस्वाहै मर्दुमशुमारी इसकी (१७१५०) मनुष्योंकी और बहुत जैनन्थे-तांबर श्रावकोके घर यहां है, बडेबडे जैनन्थेतांबर मंदिर-जिनमें-नवलखा पार्श्वनाथजीका मंदिर नामीग्रामीहै, जैनन्थेतांबर म्रानयोंको ठहरनेके कड़ मकान यहां बनेहुवेहै, यात्रीयोके लिये धर्मशाला मी-जुदहै, इसमें डहेरा करके जिन मंदिरोके दर्शन करे, दुसरेरीज वापीस पालीटेशनकों आवे औररैलमें सवारहोकर केरला-रोहात *छनी-सालावासहोते जोधपुर जावे, पालीसें जोधपुरतक रैल

^{*} छनीसे सिंधहैदराबादलाइनमें बालोतरा देशनजाना, वहां-नाकोडा-पार्श्वनाथका तीर्थ है,

किराया आठआनेलगेगे,–टेशनकेसामने धर्मशाला वडीपुख्तावनी हुइहै, एककोठरीमें डेहराकरके देवदर्शनको जावे,-

मारवाडकी-दशीरियासतोंमें-मशहूर-राजधानी-जोधपुर एक गुलजार शहरहै, सन (१४५९) इस्वीमें महाराजजोधरावजीने इसकों बसाया, जोधपुरकी मर्दुमशुमारी (६१८४९) मनुष्योंकी-जोधपुरराज्यकी जमीन रवन्नकिलये और जगहजगह पहाडीयोंका शिलशिला जारी है, खासजोधपुरभी पहाडीयोंकी दखनतर्फ क-रीब (६) मीलके घैरेमें आवादहै, वाजरी-जवार-और-मोंट इस राज्यमें ज्यादहपैदा होतेहै, जोधपुरके राजासाहव सूर्यवंशीराठोड राजपुतोमेसेंहै, अतराफजोधपुरके पकाकोटखीचाहुवा-सातफाटक और-बडेबडेआलिशानमकान उमदापथरोंके बनेहुवे है, जैनश्वेतांबर श्रावकोंकेघर यहांकरीव (६००) और (८) जैनश्वेतांबरमंदिर-जिनमे (२) धानमंडीमें-(१) कोलडीमें (१) गुंदीकेमहोलेमें (२) शींगीयोके चौकमें और (२) दफतरीयोंकेवासमें-नागोरी दरवजेके बहार मुताकुंदनमलजीका तामीरिकया हुवा शिखरबंद मंदिर-मूर्त्ति-इसमें तीर्थेकरपार्श्वनाथजीकी करीवपौनहाथ बडी तरूतनशीनहै, एकधर्मशाला-और-पासमें बगीचा-दलकर दिल खशहोगा.

जोधपुरसें देढकोशके फासले गुरांकेतालावपर (२) मंदिर और एकधर्मशाला-बनीहुइहै, बडेमंदिरमें तीर्थकरपार्श्वनाथजीकी सफेदरंगमूर्त्ति-मयधरणेंद्र पदमावतीके करीब (१) फुटबडी तख्त-नशीनहै, ऐसीमृत्तिं दुसरीजगह बहुतकमदेखीजाती है, मंदिरके पीछाडी एकतालाव-और-नजदीकमें एकबगीचा-जिसमें-अनार-नींबु-गुलाब-चमेली-वगेराके द्रस्तखडे है, देखकरिदल तरहोगा, जोधपुरसे (३) कोश उत्तरतर्फ मंडावरगांव-जो-जोधपुरकेपेस्तर

मुल्कमारवाडकी राजधानीथा—आजकल छोटासाकस्वा रहगया, पेस्तर इसमेवडी आवादीथी, किलामंडोंर—या—गढमंडोंर इसीकों कहते हैं, करीवपांचसो वर्षपेस्तर इसकावडानामथा, दरवजा वडा संगीन—वागवगीचे—द्रख्तोंकी चकाचक—आम—अमहद्—अनार—नारंगी—केले-शरीफे—द्राक्ष—वगेराकेपंड यहां कसरतसेखंड है, जैन खेतांवर आवकोकेघर पेस्तरयहां बहुतथे मगर आजवरायेनामकुछ एकघर रहगया मंदिरजैन खेतांवर (२) एकवडा-—एक छोटा——वडेमंदिरमें तीर्थकर—पार्श्वनाथजीकी वादामीरंगमृत्तिं करीव देढ-हाथवडी तख्तनशीनहै, और इसपरिलखाहै संवत् (१२२३) में—यह प्रतिष्टितिकिङ्गइ, दाहनीतर्फ तीर्थकरधर्मनाथजीकी—और—वायीतर्फ चंदापभुजीकी सफेदमूर्त्ति—एकएकहाथवडी जायेनशीनहै, और दोंनोंपर लिखाहै संवत् (१२२३) में यहप्रतिष्टित किङ्गइ, दुसरामंदिर छोटा—और—वादामीरंग मूर्त्तिं सवाहाथवडी इसमें तख्तनशीन है,

जोधपुरमें इका वगीवगेरा सवारी तयार मीलतीहै मंडोर जानेकेलिय-सडक पकी वनीहुइ यात्री शौखसें जावे और मंदिरके
दर्शनकरे, जोधपुरसें (६) मीलपर और मंडावरके रास्तेसें बाइतर्फ-बालसमन तालाव-निहायत पाकजलसें भराहुवा काबिल
देखनेकी जगहहै, पचासफुट उंडाजल-ठंडीठंडीहवा-दोनोतर्फ पके
महलात-और-घाटपथरोका वडीपुरूतगीके शाथ बनाहुवा देखकर
दिल-तर-ब-ताजाहोगा, पासमे एक वगीचा-अनार-नरंगीवगेराकेरंगबरंगद्रस्त और सब्जी-आंखोकों तरी देरहीहै, जोधपुर
शहरमें गुलावसागर-आनासागर तालाव वेंशक! काबिल देखनेकेहै मगर इसकीरवन्नकों कोइनहीपाता, जोधपुरके जैनमंदिरोंके
दर्शनकरके यात्री ओशियानगरी जानेकी तयारीकरे, ओशियान

गरी जोधपुरसे खुक्कीरास्ते (१६) कोशकेफासलेपर वाकेहै, स-बारीकेलिये बेलगाडीही कामदेगी और किराया जानेआनेका क-रीब (६) रूपयेलगेगे, रास्तेमें बालुरेत ज्यादहहोनेकी वजहसें इका-वगी काम-न-देयगे, शिवाय आक-बबुल-खेजडे-केर-और-नींबके दुसरेपेंड रास्तेमे न देखोगे. रास्तेमें आठकोश जानेपर एकम-थाणीयागांव मिलेगा. रातको-बहां कयामकरना और दुसरेरीज ओशियानगरीकों जाना,-

🞏 [तवारिख-ओशियानगरी,]

जब खास ओशियानगरी पहोचोगे करीब (५००) घरोकी आबादीका एकछोटासाकस्वा नजरआयगा, जो-रवन्नक इस नग-रीकी पेस्तरथी अवकहां है, ? पुरानेमकानोके खंडहेर देखकर मा-ल्पहोताहै पेस्तरयहांपर बडेबडेदौलतमंदवाशिंदेथे,-मथाणियागांव-जोपेस्तर (८) कोशके फासलेपर लिखचुकेहै वहां ओशियानग-रीकी धानमंडीथी, और जो तीवरीगांव मथाणियाकी बाजुपरहै बहां ओशियानगरीका तेलीवाडाथा, तीवरीके आगे-चारकोश्वपर जो घंटीयालागांवहै एक शिलालेख वहांपर जमीनमें आधागडा हुवा मौजूदहै उसपर लिखाहै यहां ओशियानगरीका सदर दरब-जाया, ओशियानगरीका असलनाम संस्कृत जबानमें उपकेश नगरीथा, पाकृतजवानमें उवयेश-और-लोकभाषामें ओशिया नगरी मशहुरहोगया, तीर्थंकर महावीरस्वामीके निर्वाणहोनेके बाद (७०) वर्ष पीछे जैनाचार्य-रत्नप्रभम्नुरि यहांपधारेथे, जो चौदहपूरवके-पाठी-श्रुतकेवली तरहतरहकी विद्यालिधके भंडार-और-तीर्थकर पार्श्वनाथजीके शासनमेसे एक थे, और तीर्थकर महावीरस्वामीके शासनमें दाखिल हो चुकेथे, क्योंकि-जबसें-महाराज केशीकुमार-जीकी-और-गौतम स्वामीकी चार-और-पांचमहाव्रतके उपर बहे-

सहुइ तबसे-वे-चारमहात्रतकी जगह पांचमहात्रत कुबुलकरचुकेथे,-महाराजरत्नप्रभस्रिजी उनहीसमुदायमेंसेंथे,-जब-वे-ओशियानग-रीमें तशरीफ लाये ओशियानगरी खुवतरकीपरथी, औरउसवख्त इसकी मर्दुमथुमारी लाखों आदमीयों कीथी. साहुकारोकी दुकानपर सोना चांदी-और-गंगंजलगतेथे-और कोटीध्वजवाशिंदोसे यहनगरी सरगर्मथी, राजासाहब-उपलदेव-परमार यहां अमलदारी करतेथे, और लोग अमनचैनमेंथे, महाराज रत्नप्रभम्नारिजीने उससालकी षारीश ओशियानगरीमें गुजारी, उनकी धर्मतालीमसे-महाराज-उपलदेवपरमार जैनधर्मपर एतकातलाये, और ओशियानगरीके (३८४०००) शख्शोने जैनधर्म मंजूरिकया, रत्नप्रमसूरिजीने अ-छेवख्तपर उनको नमस्कारमंत्रदिया, और-हिदायतिकइकि-अगर दुम-इससचेधर्मपर पावंदरहोगे-तुमारा इसलोक परलोकमेंभलाहोगा, ओशियानगरीके वार्शिदेहोनेसें इनकानाम ओशवालकहलाया, जै-नधर्म-तीर्थकर रिषभदेवभगवानके वरूतसे चलाआताहै, इस अव-सर्पिणीकालमें अवल तीर्थकर रिषभदेवहुवे-रिषभदेवकेबाद तीर्थ-करअजितनाथ-इसीतरह चौइसतीर्थंकर होचुके है, क्षत्रीय-ब्राह्मण वैश्य-और-शुद्र-ये-चारफिरके हमेशांसे चलेआतेहै उनमेंसे अखी-रके शुद्रफिरकेकों छोडकर बाकीके तीनोफिरकोमे जैनधर्मपालनेवाले लोग पेस्तरसें चलेआतेहै, चक्रवर्ती-वासुदेव-प्रतिवासुदेव-मांड-लीक-और-छत्रपतिवगेरा वडेवडेराजे जैनमजहबमें होगये अखीरके तीर्थेकरमहावीरस्वामीके बाद (७०) वर्षपीछे जब-रत्नप्रभग्नुरि-जीने ओशवाल-कायमिकये-तबसे-ओशवालनाम ज्यादहमशहूर हुवा, जोलोगकहतेहै–रत्नप्रभसूरिजीने–ओशियानगरीके शुद्रलोगों-कोंभी-सामीलकरलियेथे यहवात महेजगलतहै, क्षत्रीय-ब्राह्मण-और वैश्य-इनतीनोंफिरकेमेसें जिन्जिनोनेजैनधर्म इख्तियारिकया

वे-ओशवालकहलाये ऐसाजानना, ओशियानगरीसे रवानाहोकर जब (१८) वर्षकेबाद रत्नप्रमसूरि-लखीजंगल नामकेशहरमें गयेथे वहां (१००००) शख्शोकोंखनोने तालीमधर्मकी देकर जैनीकि-येथे, जोलोगकहते हैं, महाराजरत्नप्रभस्रि तीर्थकरमहावीरस्वामीके बाद (२२२) वर्षपीछेहुवे, विना तलाशिकये कहते हैं, तीर्थकर महाबीरनिर्वाणके बाद-(५२) वर्षपीछें महाराजरत्नप्रभस्रिकों-आचार्थपद्वी मीली, और (१८) वर्षकेबाद-वे-ओशियानगरीमें आये यहीबात सच माल्महोती है,

संवत् (१२२८) में जब कुमारपाल भूपाल प्रतिबोधक हैमचंद्राचार्य मुल्क गुजरातमें हुवे उनोनेभी बहुतसोंकों जैनबनायेहै,
श्रीयुत - जिनदत्तसूरिजीनेभी बहुतसे जैनीकिये, बादउनकेश्रीयुत बर्द्धमानसारिजीने कइयोंकों तालीमधर्मकी देकर जैनीकिये, संवत् (१६४०) में जब एहदसलतनत - बादशाह - अखबरकी जारीथी आचार्य हीरविजयसारिनेभी बहुतोंकों अपने धर्मोपदेशसों जैनबनाये, इसवस्त हिंदकेतमाम मुल्कोंमें ओशवाल लोग फैले हुवेहै,
ओशवालोमें कइगोतहे, मुल्कगुजरातमें गोतकी चर्चा - कमरही,
दखनमेंभी कमहे, मुल्कपंजाबमेंभी कम - सीर्फ ! मारवाड - और
पूरवमें - गोतकी चर्चा जारीहे, जैसे कोटारी - भंडारी - पारख - मुता गांधी - कोचर - शींगी - भणसाली - नवलखा - सुराणा - कासटीया - दढा
डाघा - भडकतीया - लुणीया - गोलेखा - सचेती - वांठिया - दुगड - दुधेडिया - नाहर - मुणोत - वगेरा वगेरा, कइ मशहूरहै, कइ - लुप्तहोगये, -

ओशियानगरीमे तीर्थिकर महावीरस्वामीका-मंदिर-जो-अब-मौजूदहै, संवत् (१०३३) में-इसकीमरम्मत किइगइ. और मूर्तिं तीर्थिकर महावीरस्वामीकी दुसरी पधराइ गइ, जोकि-राजासंप्र-तिकी बनाइहुइहै-और-अबभी मौजूदहै, रंगमंडपमें दोनोंतर्फ ती-

र्थकर रिषभदेव भगवानकी मूर्त्तिये दोदोहाथवडी राजासंप्रतिकी तामीर किइहुइ जायेनशीनहै, यहमूर्त्तियेभी संवत् (१०३३) में जबिक-मंदिरका जीर्णोद्धार हुवाथा वेटाइगइहै, मंदिरकी परकम्मामें बावन जिनालयका हकबनाहुवाहै, गगर इसवस्त (४) जिनाल-योंमें मूर्त्ति वाकीरहगइ. तीनाजिनालय विल्कुल खालीपडेहै, मंदि-रकेसामने निहायतपुरुता सभा मंडप बनाहवा और उसकीदि-वारमें देढहाथलंबा-सवाहाथचौडा-शाहरंगप्यरपर एक शिलालेख लगाहै, और उसमेंलिखाहै संवत् (१०३३) में-यहलेख यहां लगायागया, सवमीलकर पंक्ति (२८) है और उसमें तीर्थकर रिषभदेव और महावीर स्वामीकी तारीफबयान किइगइहै, आगे परिहार वंशका जिक्र-और-वत्सराजाका नाम-जिसने एकदफे ओशियानगरीको-वडीआफतसे वचाइथी, दिगर मतलब हर्फोंके घीसजानेकी वजहसे पढानहीजाता, वडीम्रुक्तिलसे इतनापढागया जो उपर दर्जकरचुके,

मंदिरकी मेहरावपर वायीतर्फकेखंभेमें छिखाहै संवत् (१०३४) आशादसुदीदसमी-आदित्यवार स्वातिनक्षत्रकेरीज इसतौरणकी प्रतिष्टा किइगइ, तौरण पथरकावनाहुवा और उसपर आठपदमा-सन जिनमूर्ति-चारकायोत्सर्ग ध्यानमय-और फिर चारपदमा-सन इसतरहंकुछ (३२) मूर्त्तियं वनीहुइहै, मंदिरकी शिल्पकारीको देखकर अछेअछे शंगतराशभी तारीफकरते है, शिखर इसकदर उ-मदा बनाहै जो दुसरीजगह हर्गिज! न-देखोंगे, जमानेहालमें मर-म्मत मंदिरकी चलरही है, रंगमंडपकाफर्सकाले औरसफेद शंगमर्म-रका इसकदर उमदाबनाहै गोया! एकगालिचा बिछादियाहो. पुरानादुटीहुई मूर्त्तियोंके ऊपर जहांकहीं जोडलगायाहे पुरानी और नयीकारीकांफर्क साफ नजरआताहै, जोकोइश्रावक तीर्थींमें दौलत सर्फकरनाचाहै ऐसेतीथौंमंकरे, यहांपरपुरानेमंदिर और मकानात

देखकर अंदाजिकयाजाताहै बडेबडेमोतबीर और मालदारश्रख्श पहांरहतेथे, सलतनतके रदबदलमें कइमंदिर बरबादहुवे,—और— कइतोडेगये, मगर यह—तीर्थकरमहावीस्वामीका मंदिर ऐसीघडीमें बनायाथाकि—इटनेपरभी वैसाही बनारहा, और मरम्मतहोनेपर सुधरगया, इसबस्त ओशियानगरीमें कोइजैनश्वेतांवर श्रावकनही, खानपानकी चीजें यहां सब मिलसकती है छोटासा बाजार और प्वाससाठ दुकाने आबाद है, जोचाहोसो चीज दस्तयाबहोगी, अलबते! शहर जैसी चीजतो कहांसेमीलेगी मगर मामुलीचीजे खानपानकी सबहाजिरहे, देवीजीकेमंदिरकी पीछाडी एकउपाश्रय जैनश्वेतांवर मुनियोंके ठहरनेका विरानपडाहे, उसके एक यंभेपर शिलालेखहैकि—संवत् (१२४५) फालगुणशुक्क (५) अद्य-श्रीमहावीर रथजाला निमितं पालिहयाधित देवचंद्रवधू-यशोधरभार्यया—संपूर्णश्राविकया—श्रेयोर्थगृहंदत्तं, मतलब इसका यहहुवाकि—तीर्थकर महावीर स्वामीकी रथशालाके लिये देवचंद्रजीकी औरत—यशोधरा श्राविकान—यहघर—धर्मार्थदिया,

ओशियानगरीकी पूर्वतर्क आधामीलके फासले एक छोटी पहाडीपर जमीनमें आधागडाहुवा एक गंभाहे उसपर एक चरणपादुका
और शिलालेख मौजूदहै, उसमें लिखाहै संवत् (१२४०) माघ
कुरुन (१४) शनिवासरे श्रीमज्जिनभद्रोपाध्यायशिष्यै:-श्रीकनकप्रभमहर्भि: कायोत्सर्गः कृतः-(यानी) संवत् (१२४५) माघवदी (१४) शनिवारके रौज श्रीमान-जिनभद्र-उपाध्यायकेचेलेश्रीकनकप्रभमहर्षिने यहांपर अपने देहका त्यागिकया, तीर्थ ओशिया
नगरीकी देखरेख पोकरन फलोदीके जैनश्वेतांवर लोग रखतेहैं,
मंदिरकेपास कारखाना बनाहुवाहै, जिसमें मुनिम-गुमास्ते-नोकर
चाकर-पूजारी हमेशांकेलिये तैनातहै, कोइयात्री यहांसाधारणखा-

तेमं कुङरकम देनाचाहै खुशीसेदेवे, छपीहुइ रसीद उसकी एवजमें पिलतीहै, वर्तन-विछीना वगेराकी दरकारहो-कारखानेसे मीलस-केंगा, धर्मज्ञाला एक-जिसमें (६) कोटरी और रसोइका मकान अरुग बनाहुवाहै, एककोठारी हीराचंदजीसचेती-साकीन अजमे-रकी-एकफलोदीवालोकी-और-रसोइकी जगह-सुरतवालोंकी ब-नाइहुइहै, मंदिरकी वायव्यकोंनमें उपाश्रयभी पुरुता बनाहुवा-म-गर खालीपडाहै,-एकदिन-वोथा-जो-यहां महाराज रत्नप्रभसूरि जैसे प्रभाविक-जैनाचार्य-कदम रखतेथे-आज-न-कोइ आचार्य हैं—न-मुनिहै, उपाश्रयके सामने–एकधर्मशाला बनाइजायतो–या-त्रीयोंकों आरामरहेगा-और-मंदिरकेकोटकी हिफाजतहोगी, ओ-शियानगरीके मंदिरमे (१५) मूर्त्तिये ऐसी मौजूदहै-जोकोइश्रावक खर्चादेकर अपने शहरमें मंगानाचाहेतो-मीलसकती है, और उसका दियाहुवा सर्चा-ओशियानगरीकेमंदिरमें वतौर जीर्णोद्धारके लगा-याजायमा, तीनमूर्त्तियेषडी-वारां छोटी है, ओशियानगरीकामंदिर बहुतबडाआलिशानथा, मगर दिन-ब-दिन चारोतर्फसें बाछरेतबढ जानेसेअवलद्रवजेकी सीढीयां-विल्कुलजमीनमें डटगइहै, हरसाल फाल्युनसुदी (३) केरीज यहांपर यात्रीयोंका मेंलाभरताहै, पोकरण फलौदीवगेराके श्रावकलोग यहांआते है और मंदिरकेशिखरपर धना चढाइजाती है,-हरझख्शकों ऐसेतीर्थकी जियारतकरनाचा-हिय-ओशियानगरीमें खतपहुचनेका पता,-पोस्ट-तीवरी-जिला-जीधपुर, मुकाम-ओक्षियानगरी, इतनालिखनेसे वहांचीठी पहुच सक्ती है, तवारिख ओंशियानगरीकी खतमहुइ.

🎾 [बयान-शहर अजमेर,]

ओशियानगरीकी जियारतकरके-यात्री-उसीरास्ते वापिस जोधपुर आवे, जाधपुरसे एकरैललाइन मेरटारोडगइहै जहांकि-फलवर्द्धी-पार्श्वनाथकातीर्थ है, मुल्कमारवाड जानेवालोको-यहला-इनमुफीदहै, मगर जो तमामजैनश्वेतांबर तीर्थकी जियारतकों जाना चाहते है–वे–जोधपुरसे रैलमेंसवारहोकर पालीटेशनहोते मारवाड जंकशनकों वापिसआवे, और वहांसे अजमेर जानेवालीरैलमें स-वारहोवे, मारवाडजंकशनसं आगे टेशनधारेश्वर-सोजतरोड-चंदा-वल-ग्रुरीया-हरीपुर--बार-सेंदरा-वियावर-खेरवा-मंगलीयावास-सरधना–और−आगे अजमेर मिलेगा रैलकिराया दसआने लगेगा अजमेरशहर बडागुलजारहै, टेशनपर बडीरवन्नक-बाजार लंबाचो-डा-और हरजगह सडकेंबनीहुइहै,-देहलीदरवजा-आगरादरवजा-जसरीदरवजा-और-मदारदरवजा-ये-चारदरवजे ज्यादह **मशहू**-रहै, पुतलीघर-कचहरीयां-और-कइ कारखाने यहां बनेहुवेहै, महोले लाखण कोठरीमें-जैनश्वेतांवर श्रावकोंकी आबादी-और-दो-जैनश्वेतांवर मंदिर वडीलागतकेहै, बडेवडे-आलिशान मकान-इरजगह पानीका नल-और-रातकों सडकोंपर लालटेनोंकी रोक्ष-नीहोतीहै,-तारागढकी पश्चिमघाटी तर्फ पुराना अजमेर अवभी म-शहरहै, जहांकि-चोहानराजाओंके मेहलातथे, अजमेरसें खाना होकर यात्री-चितोडगढकों-जावे, और नसीरावाद-बांदरवाडा-सिंगावल-वरल-रुपाहेली-सारसेरी-लांविया-मांडल-भिलवाडा--हमीरगढ-गंगरोर-चंदेरिया-होते-चितोडगढ टेशनउतरे,-

🅦 [तवारिख-चितोडगढ]

अजमेरसें (११६) मील दखनकीतर्फ-चितोडगढ पुराना बहरहै, पेस्तर वडाआबादथा-अवभी रैकका देशन होनेसें तरकी

परहै, चितोडकी मर्दुमगुमाही (१०२८६) मनुष्योंकी-जैनश्वेतां-बुरश्रावकों के घर अंदाज (५०) और (२) जैनश्वेतांवर मंदिर यहां पा बनेहुवेहै, एक जुनेवाजारमें-और-दुसरा तीर्थकर रिषभदेव भगवानका पुराना-जिसमें एकतर्फ राजा संप्रतिकी तामीरिकड् हुइ मूर्त्ति जायेनशीनहै बाजार चितोडगढका गुलजार और हरेकिक समकी चीजयहां मिलसकतीहै शहरकेमंदिरोंकेदर्शनकरकेद्सरेरौजया त्रीकिले चितोइगढपर जावे, मगरजानेकेपेस्तरराज्यकीतर्भसं इजाजत लेनाचाहिये. अगर राज्यका पास-त-लेनाओगे-तो-किला-न-देखसकारो, और अवल दरवनेपर रोकदियेनाओगे, किला-चि-तोडगृह निहायतपुरुवा-और-उपरजानेकेलिये-सडकपकी-चढाव जुतार करीवतीनकोश−रास्तावळखाता हुवा उपरकों गयाहै, सु-वारी हरेकिकसमकी उपर जासकती है, मगर किरायेपर वगीवगेरा नहीमिलती, सीर्फ ! बेंलगाडी मिलसकेगी, जब किलेपरपहुचीगे बहेबहे मेंदान-तालाव और आमरास्ता नजरपडेगा, कुउआगेवढ-नेसे बाजार दुकाने औरलोगोकी आबादी मिलेगी. गणेशपोल दरवजा लक्ष्मगदरवजा रामपोलदरवजा-कः दुरेफुटेमकान-और खंडहेर देखकर पुरानाजमाना यादआताहै, तत्रारिखोमें देखते है-तो-हरजगह चितोडगढकीतारीफ पाइजती है, पेस्तर यहां जैनोकी आबादी बहुतथी, मगरअबकुछ (२०) घर जैनश्वेतांबरश्रावकाके रहगये, नजदीकरत्रेश्वरतालावके−एकजैनश्वेतांवरमंदिर और उपान श्रय मौजूदहै, मंदिरमें राजासंप्रतिकी तामीरिकइहुइ तीनमृत्तिये जायेनशीनहै, पुराने की तिंस्थं भकेपास-और-रास्तेमें (२) जैन-श्वेतांबरमंदिर खालीपडे है, अंदाजिकयाजाताहै मूर्त्ति उठाकरद्सरी जगह पथराइगइहोगी. मंदिर खालीरहगये, क्याक्या ! कारीगीरी इनमंदिरोमें हुइहै देखकर ताज्जुबकरोगे, खुशनसीबोने क्याक्या उमदामंदिर बनवायेथे और अब ऊनकाहालदेखोतो बिल्कुलबिरान पडे है, रंगमंडपमें और थंभोमं जोजो नक्शकारी किइहै देखनेबा-लेही इसकावयानकरसकते है, दोनोंमंदिर गिरेगिरायेहै मगरजब अंदरजाकरदेखोगे बहारआनेको-जी-नहीचाहता, चितोडके जैन-श्वेतांवरमंदिरमें जोजोपाचीनपुस्तकथे-न-माल्स अब-वे कहां है ? एकदिन-बो-जमानाथाकि—बडेबडेआलिमफाजिल जैनश्वेतांबरा-चार्य यहां कदमरखतेथे, आज बिल्कुल उनकाअभावहै,

गौमुखकुंडकेपास जो सुकोशलसुनिकी सुकामशहूरहै, उसमें एक पथरपर सुकोशलसुनिकी-और-एकसिंहनीकीमृत्तिं वनीहुइहै, जैनशास्त्रोमें कीर्त्तिधरमुनिकी–और सुकोशलमुनिकीहिकायत इस तरहवयानिकइहैकि -जब-वे--दुनियादारीकी हालतमें थे-बाप-वेटथे, वालिदने दुनियाछोडकर अवलदीक्षा इंक्तियारकिइथी-और बेटने पीछेसे, गरजिक-महर्षि-कीर्त्तिधरजी गुरुथे-और म्रुनि सुकोशलजी उनकेचेलेथे, सुकोशलजीकी वाल्दा-जवकि-सुकोश-लजीने दीक्षा इंग्लियारिकइथी नाराजहोकर बुरेध्यानसे मरकर सिंहनी होगइथी और इसचितोडगढकी पहाडीयोंमें आनकररह-तीथी, एक रौजकी वातहै जबिक-महर्षि-कीर्तिथरजी-और-मुनि-सुकोशलजी-मुल्कोंकी सफरकरतेहुवे चितोडगढके पहाडोमें आये-तव सिंहनी उनकेसामनेआइ, इधर कीर्त्तिधरमहर्षि सुकोशलसुनिसे कहनेलगे उपद्रव आयाहै मुजे आगेको होनेदो, सुकोशलमुनिने कहा-में आगेहोउगा. क्षत्रीयका धर्म पीछेपांवकरनेकानही, उध-रसे सिंहनी उछलकर सुकोशलमुनियर झपटी, और उनकेशरीरकों तोडकर खागइ. बादमें गुरुजीने उससिंहनीकों धर्मका उपदेश दिया, अरे ! बेंरहम !! तेने अपने बेटकोही खाडाला, गुरुजीकों अपनेज्ञानसे माल्यमथाकि-यह सिंहनी पेस्तरकेभवमें सुकोशलसु-

निकी माताथी, और बुरेध्यानसे मरकर सिंहनीहुइहै, सिंहनीकों कीर्तिथरमहर्षिके धर्मीपदेशसे जातिस्मर्णज्ञानहुवा, दिलमें रंजिकया और उसरीजसे जीवोंकामारना कतइछोडिदया. पेस्तरकेजमानेमें जानवरोंकोंभी जातिस्मर्णझान होजाताथा जिससे पीछलेभवकी बात उसको यादआजातीथी,—आजकल—वैसाज्ञान नहीरहा. धर्मशास्त्रकी रुसेमाल्यहोताहै पेस्तर ऐसाज्ञान—होताथा.—

एक मंदिर शो-कीर्त्तिस्थंभके पास खाळीपडाहै दिवारमें एक छोटा शिलालेख लगाहै उसमें चौलुक्य वंशके मूलराज-सिद्धराज और-कुमारपाल वगेरा राजाओके नामहै. मगर अपशोपहैकि-वीचमेसे तोडागया जिससे असली मतलव नही खुलता,-कीचिं-स्थंभ अंदाज (१००) हाथ ऊंचा-और-उसपर चढनेकी सीढी-यां करीव (१२१) वनीहुइहै, नवमी मंजीलपर-चारशिलालेख छगेहुवेथे जिनमेसें अवसीर्फ (२) बाकीहै, सोभी कहीं कहीं तोडे-गयेहैं अछी तरहपढे नहीजाते, वीचमें हमीर भ्रुपाल वगेरा राजा-ओके नाम लिखेडुवेहै, इसमंजीलपर चढकर अगर चारोतर्फ नजर किजायतो माल्महोताहै आस्मानकी सैर कररहेहै, गांब-नगर–बाग–बगीचे–द्रख्तोके झुंड–सडक–और नदीवगेरा इसस्रव-सुरतीसे दिखाइ देते है-जिसको देखकर तबीयत खुशहोजातीहै, हिंदमें बहुतसे किलेहे मगर चितोडगढका किलाभी एकनामी आ-मीहै, तमामपहाड जडीबूटीयोंसे भराहुवा-जावजा-तालाव-कुंड-वावडी-क्रवे-और-चिक्सेआव-तर-ब-तरहै, श्रीयुत-रत्नसिंहजीका महेल जोकि-तेरहमीसदीका बनाहुवाहै-काबिल देखनेकेहै, स्वसिं-इजीकी रानी-पदमनीथी-उसका महेल और सरोवर अवभी वहां वनेहुवेहै. चितोडगढके किलेपर वडेवडेजंगहुवे, और कड्वहादुरोने अमुनी बुहादुरी बतलाइहै, चितोडगढके बहादूर योद्धेसमरसिंह-

हमीर-कुंभाराणा-संग्रामिंह-और-सूर्यमळ वगेराहुवे, जिनकों तबारिख पढनेका शौखहै बखूबी जानतेहोगें. कुंभाराणाजी जब सन (१४६८) इस्वीमें चितोडके तस्तपरथे चितोडराज्यकी बडी तरकीथी, कीर्त्तिस्तंभ-पटमनीका महेळ-मूरजपोळ दरवजा-हिंग- छहाडाका महेळ-येचीजे यहांपर काविळदेखनेकेहैं,-िकळे चितोड- गढकी परकम्मा करीब (७) मीळकी-और हरजगह पुराने मका- नात खडेहै, किळेके जैनमंदिरोंकी जियारतकरके यात्री चितोडमें वापिस आवे और टेसनपर जाकर उदयपुरके ळिये रैळमें स- वार होवे,

🎾 [बयान-शहेर-उद्यपुर]

चितोडसें गोसंडा-कपासन-सनवार-मावली-खेमली-और-देवारी होतेहुवे टेशन उदयपुरकों जावे, रैलिकराया ग्यारह आना छपाइ, चितोडसे (६३) मीलके फासलेपर मेवाडका शिरोताज उदयपुर एकनामी शहरहे, उदयपुरके महाराज राणासाहव चितोड-राज्यके वंशानुयायीहे, उनमेंसे महाराज उदयसिंहजीने मुल्क मे-वाडमें आनकर उदयपुर बसाया. अतराफ शहरके पकाकोट खी-चाहुवा-कइबाग-और-चारदरवजे यहां मशहरहे, बडेबाजार होते राजमहलकों जानेका रास्ता बनाहुवाहे, अजायब घर-लाइ-ब्रेरी-और विद्यालय यहां देखनेकी चीजे हे, गुलाववाग-और पि-छोलाइलि मशहूर जगह-और वाजार लंबाचोडा-जिसचीजकी दरकारहो यहां मिलसकती हे, जनश्वेतांवर श्रावकोके घर करीब (४००) और छोटेवडे (३५) जैनश्वेतांवर मंदिर यहांपर बने-हिवेह, सबसे बडा मंदिर बीचवाजार कोतवालीके पास-तीर्थंकर घीतलनाथ महाराजका-जोकि-वडाख्बसुरत और मजबूतहे. मंदिर चंदामञ्जीका मंदिर रिषभाननजीका-मंदिर रिषभदेवभगवानका-

मंदिर गोडीपार्श्वनाथजीका-मंदिरवाडीजीका-हाथीपोल दरवजेके पास रिषभदेव स्वामीका-और-शहरके बहार वडाआलिक्शान मंदिर-चोगानका-जिसमें अनागत तीर्थंकर पदमनाभजीकी-(९५) इंच लंबी-और (८१) इंचचोडी बडीआलिशान मूर्ति तस्तनशीनहै, इसमंदिरके सामने थोडीदूरके फासलेपर मंदिर पार्श्वनाथजीका-जोकि-शेटजीकी वाडीके नामसे मशहूरहै वहांपर यात्रीयोंकेलिये ठहरनेकी जगहभी बनीहुइहै, यात्री उसमेजाकर कयाम करे और उदयपुरके जैनमंदिरके दर्शनकरे,

उदयपुरसें (१॥) मीलकेकासलेपर एकपुराना जैनतीर्थ आ-घाटपुरके नामसें मशहूरहै, राज्य उदयपुरका और छोटासाकस्वा रहगया, जहांकि-महाराजश्री-जगतचंद्रसूरिजीकों तपाविरुद्-तप-गछकाखिताब मिलाथा,-आघाटपुरमें (४) जैनश्वेतांवरमंदिर इस-वरूतमौजूदहै, वडामंदिर तीर्थकररिषभदेवजीका-राजासंपतिकेव-ख्तका तामीरिकयाहुवा पुरानाहै, इसमें तीर्थकर रिषभदेवभगवा-मकी मूर्त्ति-करीव (२॥) हाथवडी तस्तनशीनहै, निशानभी इसपर वही है जो राजासंप्रतिकी तामीरिकइहुइ मूर्त्तियोंपरहोताहै, दिगर (४) मूर्त्तियेंभी उसीनिशानवाली इसमेंजायेनशीनहै, मंदि-रकीवहार दिवारोपर क्याही उमदाकारीगीरी किइगइहै कि-जिसको देखकर दिल निहायतखुशहोताहै, दुसरामंदिर तीर्थकरशांतिनाथ-जीका-इसमें जो पुरानीमृत्तिंथी अवनहीरही, संवत (१८१७) की-प्रतिष्टित नयी-तख्तनशीकिइगइहै, तीसरामंदिर शंखेश्वरपार्श्व-नाथजीका इसमें तीर्थकरशंखेश्वरपार्श्वनाथजीकी पौनहाथवडीमूर्ति-ंसंवत् (१८०५) की-प्रतिष्टिततस्तनशीनहै, अतराफ बावननि-नालय बनेहुवे-मगर-इसवख्त सबखालीपडे है, चोथामंदिर सुपा-र्श्वनाथजीका–शिखरवंद वेंशकीमती वनाहुवा–मूलनायक तीर्थकर

सुपार्श्वनाथभगवानकी (१) हाथवडी मृत्तिं-राजासंप्रतिकी ता-मीर किइहुइ इसमे तल्तनशीनहै, रंगमंडपमें एकतर्फ तीनचरनपा-दुका-जायेनशीनहै और उनपर संवत् (१६९२) भट्टारक श्रीहीर-विजयस्रिके बाद-जो-भानुचंद्रगणिहुवेहै उनकानाम लिखाहुवाहै, जोकोई यात्री शहर उदयपुरकों आवे आघाटपुरकी जियारत जरूरकरे, कौंकि-यह पुराना शहरहै, सवारीके लिये इक्का-बगी-उदयपुरमें तयार मिलतीहै-दो-घंटेमें दर्शनकरके लोट आसकतेहो, आघाटपुरसें वापिस उदयपुर आना, औरिकर केशरीयाजी तीर्थ जानेकी तयारी करना,

उद्यपुरसे (२०) कोशके फासलेपर खुक्कीरास्ते-केशरीयाजी-एकमशहूर तीर्थ है, सवारीकेलिये दो घोडोकीबगी-या-बेलगाडी जो चाहो मिलसकतीहै, रास्तेमें (९) चोकीयां आयगी उदयपुरसें रवानाहोतेवल्त पांचरुपयेके उदयपुरी पैसे इसलिये साथ
लेने चाहियेकि-रास्तेमें-भीललोग-जो-चोकीदारहै, और-फीचौकी-चारचार आने-एकगाडीके लेते है, नवचौकीके नाम-१,
बलीचा-२, कायां-३, बारांपाल-४, बोरीकुडा-५, टीडी-६,
पडोगा-७, बारां-८, परसाद-और-९, पीपली, लोटतेवल्त चौकीएक-घुलेवाजीकी ज्यादह देनापडेगी, मुकाम परसाद पर आठ
आने लगतेहै, चाहे बगीहो-या-बैलगाडीहो रास्तेमें एकरोज
मुकाम जरूर करना चाहिये.-सवेरके चले शाम तक नही
पहुचसकते,

जव खास केशरायाजी तीर्थ पहुचजाओंगे (५००) घरोंकी आबादीका कस्वा धुलेवा मिलेगा, धर्मशाला यहांपर चार बनीहु-इहै, जिसमे एक बहुतवडी-एकपुरानी-एकमेहतागोविंदसिंहजी साकीन उदयपुरकी-और-एकजयपुरवालोंकी-इनचारोमें करीब

(३०००) आदमी ब-खुबी कयाम करसकतेहै, खानपानकी चीजे-आटा दाल-घी-सकर मेवा-मिटाइ-जोचाहो मिलसकती है, जैन**क्षेतांबरश्रावकोके घर-यहां पांचसात-**और-कुङ्ख्यापारीयोंकी दुकाने (१००) के-करीवहोगी, यात्री किसीधर्मशालामें जाकर कयामकरे, कोइमना नहीकर सकता,-करीव एकहजार मूर्त्ति-केशरीयाजीकी-धुलेवा-गांवसे वहारकी जमीनसें निक-ळीथी,-मूर्ति-ततकाल परचा देनेवाली होनेसें-यात्री-बहुतआने लगे और दिन-ब-दिन पूजामें तरकी होनेलगी. बाद चंदरीजके जब खजाना तरहुवा-मंदिर बननेका काम शुरूहुवा, और जबबन कर तयार होगया-बडीशान-ब-सोतकसे प्रतिष्टाकिइगइ, वहीमंदिर अबतककायमहै, उदयपुरकी तवारिखर्से माळ्महोताहै. महाराणा मोकलजीकेवरूतमें यहमंदिर बना, बडासंगीन-बेंशकीमती-बावन जिनालयका मंदिर देखकर दिलखुशहोगा, रंगमंडपकी दाहनीतर्फ दिवारमें एकशिलालेखलगा हुवाहै उसमे लिखाहै संवत् (१४३१) वैशाखसुदी (३) बुधवारकेरौज फलां सख्झने इसतीर्थकी जिया-रतिकइ, बायीतर्फकी दिवारपर जोद्सराशिलालेख लगाँहै उसमें संवत् (१५७२) वैशाखसुदी (५) सोमवारके रौज फलांशख्याने इसतीर्थकी जियारतिकई, इनलेखींसे सबुतहुवा-संवत् चौदहसोके पेस्तरका यहमंदिरवना हुवाहै,-शिवायइसके दूसरे कोइशिलालेख . नहीपायेजाते,—

बहारकेरंगमंडपमें जोबायीतर्फकी दिवारपर एकक्किलालेख मौजूदहै संवत् उसका दबगयाहै-नीचेकीतर्फ जिनभक्तिस्रार-और-जिनलाभस्रारिवगेरा जैनाचार्योकेनामहै. मंदिरका रंगमंडप-और-श्लिंगारचौकी उमदा कारीगीरीसे वनाइगइहै, अतराफमंदिरके कोट स्वीचाहुवा-और-वृलनायक तीर्थकररिषभदेवमहाराजकी आगरंग मूर्ति—करीव अढाइहाथवडी तख्तनशीनहै, मूर्तिपर कोइलेखनही— शिंगार—गेहने—आभूषन—अंगीवगेरा काम—मुताबिक जैनश्वेतांवर आम्नायके होताहै,—इसमूर्तिपर जाफरान बहुतचढती है और जा-फरानकों संस्कृतजवानमें केशरबोलते है—इसीवजहसे इसमूर्तिका नाम केशरीयाजी कहागया. मंदिरकेरंगमंडपमें—नवचौकीकी छतमें सभामंडपमें—और—परकम्मामें—जोजोकाम पथरोपरहुवाहै सवउमदा कारीगीरीके शाथहै,

मंदिरकीवहार नकारखानेकेनीचे थंभेकी बरावरीमें जोबडा श्चिलालेखहै महाराणा संप्रामसिंहजीकेवख्तकाहै, इसकेपास छोटे षथरपर संवत् (१८४९) जो–गांव−विलखकेलोगोका इकरारना-माहै उसमेलिखाहै, हमलोग मंदिरकीचौकी वखुबीकरेगें, एकलेख संवद (१९३७) काहै उसमें भीळलोगोंका इकरारनामाहै,-एक लेख अरिसिंहजीकाहै, इसमें संवत्कीजगह दुटीहुइहै.-मंदिरकेदर-वजेकी बहार अवलचौकीकी छतमें (८१) कोठेका-यंत्र-पथरमें **ऊकेराहुवाबडाप्रभाविकहै,**-मंदिरकेपास केशरीयाजीतीर्थका कार-खाना बनाहुवाहै-मुनीम-गुमास्ते–नोकर-चाकर-चपरासी-और∗ नकारखाना हमेशांकेलिये जारी है, परकम्माके जिनालयोमें-कइ जिनमूर्तिये संवत् (१७३६) की है, कइसंवत् (१७५४) की-कइसंवत् (१७७८) और कइसंवत् (१७९०) की-प्रतिष्टित जा-येनशीनहै, मूलनायकजीके सामने एकहाथी पथरका बनाहुवा– और-उसपर-मरुदेवजीकी मूर्ति-जायेनशीनहै, मंदिरकी सीढीकी दोंनोंक्फ-शासनदेवी-चक्रेश्वरी-और-पदमावती शंगेमर्मरपथरपर ज्यदावनीहरू-निचली डयोढीकेपास-दोहाथी-आमनेसामने-शाम-रंग पंथरके बनेहुवे-और-बडेदरवजेके बहार नकारखानेकेनिचे फिर-दोहाथी-उतनेहीबडे निहायखूरत पथरकेवनेहुवे बतौर्सेंब-बाउचे खडे है.—

मंदिरकी बहारकीपरकम्मामें एकजिनालय तीर्थकर पार्श्वना-नाथस्त्रामीका बनाद्भवा-मूर्त्ति—जगवल्लभपार्श्वनाथजीकी करीब साढेतीनहाथबडी-जायेनशीनहै, और उसपरिखाहै संवत् (१८०९) वैशाखसुदीपंचमी शुक्रवारकेरौज यहतामीरिकइगइ, और तपगछके सुमतिचंद्रगणिजीने इसकीप्रतिष्ठा किइ, केशरीया-जीकेमंदिरकी पीछाडीकी दिवारपर तरहतरहकीकारीगीरी-पुत-लीय-और-गुल्दस्ते वनेहुवे है, इसमंदिरकी तामीरातमें अंदाज (१५०००००) रुपयेसर्फहुवे कहेजाते है-अगरकोइयात्री-केशरी-याजीमहाराजकी मूर्त्तिपर-सवालाखरुपयोकी जेवरात-जोकि-य-हांकेखजानेमें जमाहै-एकरौजकेलिये चढानाचाहे-तो-(२३) रूपये सर्फाहोगा.-यानी—मंदिरकेखजानेमें देनाहोगा, अगरकोइयात्री-मंदिरमें रौशनीकरानाचाहे–तो–एकरौजकेलिये — ज्यादहसेंज्यादह (१६॥) रुपये खर्चलगेगे, औरकम रौशनीकरानाचाहे-तो (२) तकभी होसकती है, जिसकीजैसीताकातहो-वैसा-करे,-यात्रीको तीर्थकीजगहपर दिलकेदलेर होनाचाहिये. केशरीयाजीमहाराजके मंदिरमें नोकर-चाकर-छडीदारवगेरा (२७) आदमी हरहमेश हाजिररहते है,-और-खर्चभी-इसतीर्थमें ज्यादहहै,-बनीस्पत और तीर्थोक-माकुलपेदाशभी यहां अछीहोती है-जिससे तमामरवन्नक बनीहुइहै,—

हरसाल चैतवदी अष्टमीकरोज यहांपर यात्रीयोंका मेंला भर-ताहै उसरोज महाराज उदयपुरकी तर्फसें-हाथी-घोडे-फौज-स-बार वगेरा मयलवाजमाके आते है और-बंदोबस्त करतेहै, बाजा-नकारखाना-कोतल घोडे-संगीत कलावगेरा जुलुसके साथ-भग-वानकी सवारी मंदिरसें-छत्रीतक जाती है, यह वही जगहहै, जहांसें केशरीयाजी महाराजकी मूर्ति जमीनसें निकलीथी, धुलेवा

गांवके सब-लोग-और-आसपासके आयेहुवे देहातीलोग-भील-वगेरा-दोतीन हजार आदमी-शाथ-चलतेहै,-और-वडाजलसा होताहै,-जिसकी अञ्चीतकदीरहो असे मोकेपर जियारत करे इस मेलेमें कभीकभी दसपनरां हजार आदमीतक जमाहोतेहै, कोड यात्री मणभर केशरतक केशरीयाजीकी मूर्त्तिपर चढाताहै, छत्रीपर जहांकि-सवारी लाइजातीहै उमदालत्री-वगीचा-और-तीनवावडी मीठं जलकी भरीहुइ मौजूदहै, वागमें-गुलाव-चंपा-चमेली-जाइ-जुइ-डमरा-मरूआ-वगेराफुलोंके पेंड-खडे है, छत्रीमें केशरी-याजी महाराजके कदम-जायेनशीनहै, और उसकेसामने पहाडकी दामनमें आमखास-नज्ञीस्तगाह वनीहुइ-उसपर-मेळेके रौजमूर्त्ति तष्तनशीन करके उसका पूजन कियाजाताहै, आमलोगके लिये बेठनेकी जगह चुनागचीकी बनी है जिसपरपांचहजार आदमी बखुवीवेठ सकतेहै, मेंलेके राज यहांपर गीतगान-नाच मुजरा कि-याजाताहै, महाराजकी सवारी मंदिरसे दिनके (२) बजे रवाना होकर शामके (६) वजे मंदिरमें वापिस आजाती है, तीर्थकेशरी-याजीकी जियारत करकेयात्री उसी खुक्कीरास्ते वापिस उदयपुर आवे, और रैलमें सवारहोकर चितोडगढ जाय, चितोडगढसें नीमच-मंदसोर-रतलाम-उज्जेनहोती हुइ मकसीजी तीर्थकोंभी रैल-गइहै. और इंदोर-खंडवाहोकर भ्रसावलकोंभी गइहै. मगरतुमकों चितोडगढसे अजमेर-फुलेरा होतेहुवे फलोदी तीर्थकों जानाचा-हिये. इसलिये चितोडगढसें रैलमें सवार होकर वापिस अजमेर आना रैलकिराया पेस्तर बतलाचुके है, अजमेरसें रैलमें सवारहो-कर-मदार-लाडुपुरा-अाखरी-किशनगढ-तिलोनिया-साली-स-खुन-नरायणा-होते फुलेराजंकशन जाना, रैलकिराया आठआने लगते है, फुलेरा जनरकर मेरटारोड जानेवाली रैलमें स्वारहोना,

और-सांभर-गुढा-कचामनरोड-नारायणपुरा-मकराना-बोरावर-गछीपुरा-देगाना-और-रैन-होतेहुवे मेरटारोड टेशन उतरना. इसीकानाम फलोदी तीर्थहै,-फुलेरासें मेरटारोडतक रैलकिराया पनरा आना-तीनपाइ लगते है,-

👺 (तवारिख-तीर्थफलोदी.)

फलौदी पार्श्वनाथजीका-यहां-पुराना जैनतीर्थहै, इसकी तवारिख बुजुर्ग लोग इसतरहसें वयान करतेहै, संवत् (११८१) में यहां एक-श्रीश्रीमाल-धुंधलकुमार-जैनवेतांवर श्रावक रहताथा उसके वहां बहुतसी गायेंथी. जिनमेसें एक गौका-यहहालथाकि-जब-जंगलसें चरकर-शामकों घर वापिसआती-तो-रास्तेमें एक बेरीकेनीचे उसका द्ध−खुद्−ब−खुद्झर जाताथा, कुछ−दिनकेबाद धुंघलकुमारने गोवालियेसे ताकीद्किईकि-हमारीगौका दृध-कौन दोहताहै, ? उसनेकहा ! आप मेरेसाथ जंगलमें चले, और-ब-चन्न-खुद इसबातकों अजमावे, दुसरेरीज धुंधलकुमार खुद जंग-लकोंगया, और गौके पीछेपीछे वापिस घरकों आया, तो सस्तेमें एक-अजुवा-देखाकि-उसवेरीके द्ररुतनीचे गायका दूध खुद-च-खुद झरनेलगा यहहाल देखकर वह हैरानहुवा और दिलमें सौच-नेलगा क्या माजराहै, ? जरूर यहांपर कुछ सबबहै घरआनकर जब सबकासोसे फारीकहुवा और अत्रामसे सोगया, रातके वरूत उसकों एकष्वाबहुवाकि-उसमुकामपर देवाधिदेव-पार्श्वनाथ भगवानकी मूर्त्ति जमीनमें बौजूदहै, तुं ! उसकों निकालले !! उन सने दुसरेरोज यह माजरा अपने दोस्त एक-शिवंकर नामकेश्राय-कर्तांकहा, और दोनों मिलकरजंगलकों गये, और उसबेरीके द्रहत नीचे जमीनको खोदा-तो-एक-निहायत उपदा-मूर्ति-शामरंग-तीर्थकर पार्श्वनाथ भगवानकी उनकों मीली, - और -वे-अपने क्कान

नकों स्रेआये.-और-अलायधा एक मकान बनाकर पूजाकरना शुरूकिह. ज्यूं ज्यूं यात्री आते रहे तीर्थकी तरकी होतीगइ. और बडा आहिशान मंदिर बनाकर मूर्त्ति उसमें तख्तनश्चीन किइगइ. जो-मंदिर अब मौजूदहै उसी वष्तका बना हुवाहै,-इसकी पतिष्ठा जैनश्वेतांवराचार्य धर्मघोषसूरिजीने किइ, फलौदी गांवमें मृर्त्ति जाहिरहोनेसें इसकानाम फर्टोदीपार्श्वनाथ रखागया. दिनपरदिन तीर्थकी तरकी होनेलगी, पेस्तर जब यहां रैलनहीथी यात्री-बजरीयेबेंलगाडी-या-पांवपैदल जातेथे. आजकल रैलहो नेकीवजहसें बहुतसेंयात्री आतेजातेहै. टेशनके उतरतेही सामने बडाआलिशान-शिखरबंदमंदिर-और-धर्मशाला नजरआती है. यात्री वहांजाकर मुकामकरे. धर्मशालामें चालीशकोठरीये-और-एकबडासहेन बनाहुवा-गर्मीकेदिनोमें वडाआराम देताहै, अगरए-कहजारयात्री-एकशाथ आजाय-इसधर्मशालामें व-खुवी <mark>कयाम</mark> करसकते है,-बीच धर्मशालाके मंदिरफलौदी पार्श्वनाथजीका नि-हायतज्ञमदाशिखरवंद-बनाहुवा-और इसमें-तीर्थकरपार्श्वनाथभग-वानकी शामरंगमृत्ति-करीव अढाइहाथवडी-तख्तनशीनहै. दर्शन करके दिलखुशहोगा,

गर्भद्वारके दरवजेकेनीचे दाहनी-और-वायीतर्फ संस्कृतज-बानमें लिखाहै संवत् (१२२१) मृगशीर्षस्रदी (६) के-रौज-फलवर्द्धिवायां (यानी) फलौदीगांवमें तीर्थकरपार्थनाथजीका-मंदिर-तामीरिकयागया,-कुछहर्फ घीसगयये है वराबरखलतेनही, बायीतर्फ लिखाहै-चैत्येन-नरतरे-येन, श्रीमछक्ष्मटकारिते-मंडपो मंडनं लक्ष्मयाः, आगे फिरकुछहर्फ घीसजानेकी वजहसे खुलतेनही तीसरे श्लोकके तीसरे चरणमें-लिखाहै-उत्तानपट्टं-श्रीपार्थचैत्यं-(यानी) बडेपट्टवाला-नीर्थकर पार्थनाथजीका मंदिर तामीरिक- यागया, भीतरके रंगमंडपमें जो-दाहनीतर्फ-तीनमूर्तियं जायेनश्रीनहै वडीमूर्तिके नीचे संवत् (१६५३) में यहतामीर किइगइ लिखाहै. तपगछाचार्य हीरविजयसूरि और उनके चेलोकेनाम-भी-लिखेहै, वार्यातर्फ जो तीनमूर्तिये हैं उनमें एक मूर्तिके नीचे संवत्
(१६५३) वैशाखसुदी (४) बुधवारके रौज-तीर्थकर शीतलमाथजीकी मूर्ति तामीर किइगइ लिखाहै, और तपगछाचार्य विजयसेनसूरि-और-विनयसुंदर गणिके नामभी मौजूदहै, एक शामरंगमूर्ति-सुंडियाल गांवसें लाइहुइ नयी है, तीसरीमूर्ति-तीर्थकर
अरनाथजीकी उसीसंवत् (१६५३) और वही तपगछाचार्य विजयसेनसूरि-और-विनयसुंदर्ग गणिके-नाम इसपर मौजूदहै, रंगमंडपवहारका-बहुतपायदार वनाहुवा-जिसमें (५००) आदमी
बखुवी वेटसकते है,

एकतर्फके कौनेमें तीर्थअष्टापदजीका नकशा—संगमरमर पथर पर—उकेराहुवा इसमें असी मुश्यवरी और सुनहरीकाम बनाहुवा जो दुसरी जगह नही दिखाइदेता.—श्रीयुत—वरधीचंदजी सचेतीने—तीन नकशे तामीर करवायेथे. जिनमेसे एक—शत्रुंजयतीर्थपर विम्छ वशीटोंकमें चक्रेश्वरी देवीके मंदिरसे आगे—हाथीपोलसे उरे—दाहने हाथतर्फ उनहींके तामीरकरवाये हुवे मंदिरकी दिवारमें लगाहै, दुसरा लशकर गवालियरके मंदिरमें—और तीसरा यहां फलिदी पार्श्वनाथजींके मंदिरमें—कुल्ल (३) हुवे. इसमें क्या !! उमदालोटीलोटी मूर्तिये पनरासों तापसोंकी बनीहुइ—जोकि-गण्धर गौतमस्वामीके चेले होगयेथे,—एकतर्फ रावण—और—मंदोदरी-कीमूर्ति—नृत्यकर रही है. बीचमें [२४] तीर्थकरोकी मूर्तियें—और—अस्मानसें उतरते हुवे देवतोंके विमान इसकदर खुवसुरित कैसाथ बनेहुवेह जिसकी तारीफ जवानसे बहारहै, इसको देखकर

माल्य होताहै-सर-ब-सर-तिर्धअष्टापद नजरके सामने मौजूदहै, दूसरी तर्फके कौनेमें-नंदिश्वरद्वीपका नक्क उसीतरह-शंगमर्भर पथरपर बनाहुवा दिवारमें लगाहै. द्वीप-समुंदर-और-तरहतरहकी निहायत खूबमुरत मूर्जियें दिलको इसकदर असर करती हैकि-गोया! अभीमुंहसें बातेंकरेगी.-मेरूपर्वत-युगलीक मनुष्योके क्षेत्र-और-उदयाचल वगेरा पहाड इसकदर कारीगरीसें बने हैकि-देखने वालेही उसकी खूबी बयान करसकतेहै, वाणव्यंतरदेवता-और देवांगना इसकदर बनेहैकि-मानो!-वे-सचमुच-यहांआगयेहो,-

दुसरा मंदिर कोटकेवहार जो थोडी दूरपर बनाहुवाहै इसमें मूलनायक-चौमुख महाराजकी चार मूर्तिये तख्तनशीनहै, उनमें एक मूर्त्तिपर संवत् (१८९१)-और-एकपर संवत् (१८९६) लिखाहुवाहै, चारोंकोंनोंमें-चार-छोटीछोटी छत्रीये एकमे-चौदह स्वप्न-एकमें जन्मकल्याणिक-और-एकमें दीक्षाकल्याणिकका कार शंगमर्मरपथरपर ऊकेराहुवा मौजूदहै, अतराफ मंदिरके कोट खीचाहुवा और सवकाम संगीनहै कारखाना फलोदी तीर्थका– भीतर धर्मशालाके एकतर्फ बनाहुवा-मुनीम-गुमास्ते-नोकर-चाकर-चपरासी-सबकाम शाहानाहै,-यात्रीकों खानपानकी मामु-ली चीजेंयहां दस्तयाव होसकतीहै, टेशनपर हलवाइयोंकी दुकाने-भी मौजूदहै, मिठाइवगेरा वहांसेमिलसकेगी. हरसाल आसोजखुदी द्शमीकों-यहां-यात्रीयोंका मेंलाजुडताहै, करीवउसवस्त दशहजार आदमी जमाहोते है,-तीर्थेकरफलौदी पार्श्वनाथजीके सोनेकेबनेहुवे जेत्ररात उसरीज मेरटेसें यहांलाये जाते है और मूर्त्तिपर चढायेजा-चांदीका सामान-नकारखाना-निशान-और-तरहतरहके बाजेभी शहर मेरटेसें आतेहे और बडेजुळुश्वकेशाथ-तीर्थकरफलीदी पार्श्वनाथजीकी-सवारी-मंदिरकीचारों तर्फ फिराकर बहारतालाव पर लाइजाती है, और वहां पूजन होनेकेबाद शामकों वापिस मं-दिरमें आतीह. जिसकी अङीतकदीरहो अैसे मौकेपर जियारतकरे,

मंदिरकेपास मीठजलका कुवा और एकगुलजार बाग बनाहु-विहे. मोर-तोत-चिडिया वगेरातमाम किसमके परींद यहां हर-वरूत कलोले करते रहते हैं, और दाना चुगनेकोभी उनकों यहां मिलताहै, कहदके इसतीर्थपर मुसीवतें आइ, मगर बदौलत देवधमें के सब रफाहोतिगइ, -फलौदी तिर्थकी जियारतकरके टेशन मेरटारोडपरआना-और अगर फुरशतहोतो-मेरटासीटी-नागोर-और-विकानेर जाकर वहां के मंदिरों के दर्शनकरना, मुल्क मारवा-डमें-ये-मशहूर शहरहें इसलिये उनका वयानभी यहां वतलाते हैं, जिसकों जानाहो-जावे, न-जानाहो-न-जावे, मेरटारोडसे रेलमे सवार होकर मेरटासीटीजाना, रैलकिराया देढआना,—

मेरटाशहर एकपुरानी आवादी है. अतराफ कोट बनाहुवा— बाजार पसारहटा—और—सदर जिसमे सराफ औह कपडेबेचनेवाले बेटते हैं किसीकदर रवन्नकदारहें, मेरटेकी शोहोरत—जो—पेस्तरथी अबनहीरही मगरिकसीकदरटीकहें, हाथीदांतके छल्ले—अंगुटी—फुल और घडीकी जंजीर यहांआलादर्जेकी बनती है, खसकेपंखे—उनी— कपडे—और—मीटीके खिल्होंने यहांकेनामी है, जैन-धेतांवर श्रावकोंके घरपेस्तरबहुतथे—मगरअबसीर्फ! (८०) के—करीबरहगये, जैन-धे-तांवरमंदिर (१४) और—उनमेख्बसुरत पुरानीमृर्त्तिये तख्तनशीनहें जैनपुस्तकोंका पुराना मंडारयहांपर मौजूदहें, जैनस्रानिजनोंको ठइ-रनेकेलिये कइमकान बनेहुवे है, बहार शहरके छत्री दादाजीकी और—बगीचा उमदाहे—मगर मरम्मत दरकारहें, मेरटेके जैनमंदि-रोके दर्शनकरके यात्रीनागोरजावे, रैलकिराया पोनेसात आनेलगते है, और—देशवाल-खजवाणा—सुंडवा-ये—टेशन रास्तेमे आते है,—

मुल्क मारवाडमें नागोर एकपुराना शहरहै, अतराफ शहरके पकाकोट खीचाहुवा, (६) दरवजे और (२) बारीयेमीजूदहै, कपडा बाजार-सराफा-पसारीवाजार-और-धानमंडीरवन्नक लियेहै, दर मियान शहरकेकिलेमें राजमहेल-मोतीमहेल-और त्रिपोलीयादरव-जा काबील देखनेके है, जैनश्वेतांबर श्रावकोके घर करीब (४००) और (५) जैनश्वेतांवर मंदिरयहां बनेहुवेहै, सबसे बडामंदिर तीर्थ-कर रिषभदेवजीका-इसमें-तीर्थकर रिषभदेवजीकी सर्वधातमय मूर्त्ति तख्तनशीनहै, दुसरा मंदिर ढाडीवालोंके महोलेमे-तीसरा घोडावतोकेमोहलेमे और-दो-दफतरीयोके महोलेमे यात्रीइनमें जा-कर देवदर्शनकरे. माहीदरवजेके बहार यतिजी रूपचंदजीका तामीर कियाहुवा–और–इसकेआगे आधमीलके फासलेपर छत्री दादाजी-की-और नजदीकमें बगीचा-होजवगेरा बनेहुवे है, नागोरमें वख्त सागर-गिनाणी-और-शम्पस-ये-तीनतालाव मशहूरहै, गर्मीयोके दिनोमें बहुत कामदेते है, शहरमें मुनिजनोके ठहरनेके लिये कड़म-कानहै, जैनपुस्तकोके लिखनेवाले कइलिखारी यहां रहते है, चार रूड्ये हजारश्लोक लिखेगे, मगर कागजका खर्चालिखाने वालोके जुम्मे होगा, नागोरके जैनमंदिरोके दर्शनकरके-यात्री-वापिस टेश-नपर आवे और शहर विकानेरकों रवानाहोवे. बुदवासी-अलाय-भग्गु-विकासर-सुरपुरा-और गीगासर-होतेहुवे-टेशन विकानेर परउतरे, रैळकिराया साढे बारह आने लगते है,

मुल्क मारवाडमें विकानेर शहर पथरीली जमीनपर वसा हुवाहै, श्रीयुत-विकारावजी महाराजने इसकों आबाद किया इसलिये विकानेर कहलाया. विकारावजीका जन्म सन (१४३९) इस्तीमें हुवाथा, पांचदरवजे और तीनतर्फ इसके पुख्ता खाइ बनी हुइ है,-सन (१८९१) की-मर्दुगश्रुमारीमें विकानेरकी मर्दु-

मथुमारी (५६२५२) मनुष्योंकीथी, शहरपनाहके फाटकसें करीब (३००) गजके फासलेपर एकिकला-जिसमे उमदा राजमहेल-–तामीर कियेद्ववे–और-अतराफ उनके पुरुता खाइ मौजूद है, विकानेरमें–कड़कुवे अैसे है, जिसमे (१५०) या (२००) हाथ तकलंबीरसी लगती है, जैनश्वेतांबर श्रावकोके घर विकानेरमें अंदा ज (१०००) होगे जैनश्वेतांबर वडेबडे मंदिर (८) और (२०) के अंदाज छोटे है, बडेमंदिरोमें तीर्थकर रिषभदेवजीका-भांडासर-जीका-तीर्थकर नेमनाथजीका महाविर स्वामीका शांतिनाथजीका बडेआलिशानहै, जैनश्वेतांवर मुनियोकों उहरनेकेलिये पोषधशाला-एक-पंचायती और करीव (१०) वडेछोटे उपाश्रयहोगें, जैनपुस्त-क लिखनेवाले लिखारी यहांभी-अछेअछे मौजूदहै. और चाररू पये हजार श्लोक लिखतेहैं, विकानेरके (२) बाजार अछेगुलजार-मीसरी विकानेरकी निहायत उपदा-और-चुरनभी यहांका नामी बनताहै, किलेके पास सुरसागरतालाव-एकअछी जगहहै,

इसरियासतमें नदीयें कम-वारीसके जलपर लोगज्यादह भरू-सा रखते है, पोखरोमे–और–कुंडोमें–वारीशका जल–इसकदर भररखते है जो गर्मीयोके दिनोंमें बहुतकाम देताहै, वैशाख-जेठमे गर्मी-इतनी सरुतपडतीहै-और-इसकदर हवा चलती है-कि-कहीं कहीं बालुरेतके टीबे जमाहोजाते है. असलमें इसग्रन्कमें बालरेत ज्यादह-और यहांकी फसल बाजरी-मोंठ-तरबज-खेलरे ककडी-केर-सागरी वगेराहै,-घोडे यहांकेवडे मजबूत-हाथीदांत-की चुडीयां और कंवल मुल्कोंमें मशहूरहै,-वारीशके दिनोंमें मुल्क हराभरा होजाताहै. विकानेरसे (२०) मील दखन-पश्चिमकीतर्फ एक-गजनरझील-हमेशांमीठेजलसे भरीहुइ बाग-बगीचे-हरीयाली और उमदाजगह बनीहुइहै,-विकानेरके जैनमंदिरोके दर्शनकरके

यात्री वापिस मेरटारोड और मेरटारोडसें फूलेराजंकशनआवे रैल किराया पेस्तर बतलाचुकेहैं,—फुलेरासें जयपुरके लिये रवाना होवे क्योकि—देहली होकर तीर्थहस्तिनापुरकी जियारतकों—जाना होगा मगर रास्तेमें जयपूर शहर काबिल देखनेकेहैं, वहांके जैनमंदिरोके भी दर्शन करना चाहिये—फुलेरासे—रैलमें सवारहोकर—हरनोदा— आसलपुर—उगरीयावास—धांकिया—और—कनकपुरा होतेहुवे जयपुर देशन उतरना. रैलकिराया छआना,

🖾 (दरवयान–शहर–जयपुर.)

राजपुतानेके देशीराज्योंमें जयपुर एक गुलजार राज्यहै. क-रीबटेशनके एकडमदा धर्मशाला बनीहुइहै. मगर जैनश्वेतांबर यात्रीकों शहरमे जाना बेहतर होगा. टेशनपर इके-बगी-तयार मिलते है, सांगांनेरी द्रवजेके पास जो शेठ-नथमलजीकी धर्मशा-ला बनीहुइहै जाकर उसमें कयामकरे, सन् (१८९१) की-मर्दुम-थुमारीमें-जयपुरकी मर्दुमथुमारी (१५८९०५) मनुष्योकीथी, शहरकी लंबाइपूरव-पश्चिमदो-मील-और-चोडाइ उतर दखन देडमील होगी, वहुतसी सडकें वसी-और-लंबी, बाजार इसउमद-गीसे बनेहें मानो ! कारीगिरोने अभीवनाकर तयारिकये है, हरेक सादर-नादरकेमकानमें--आरामगाह--नाहनेधोनेकीजगह--और-नसीस्तगाह ऐसे उपदा बने है जोदिगरशहरमें कमदेखोगे, जहोरी बाजार-हवामहल-रामगंज और त्रिपोलीया वगेरानामी बाजारहै, जिसमें सांगानेरीदरवजेसें-हवामहेलहोतीहुइजो आमेरीदरवजेतक-सडकगइहै वडीरवन्नकपरहै. वडेवडे आलिशानमकान-वेंलबुटे-और-चित्रकारी -झलकरही है, हरेकिकसमके-मेवे-मिठाइ-और-मालअसबाब-यहांमिलसकताहै, हिंदुस्थानमें बहुतशहर देखेहोगे मगरइसकी कतेवजेभी एकनिराली है, वाजारकीसडके इतनीसाफ-

कि-जहां-गर्देका नामनही. जयपुरके मकानोंकी कहांतक तारीफ करे हरमकानपर रंग और चित्रकारी बनीहुइहै, हरजगह पानीके नल और-रातकों सडकोंपर लालटेनोंकी रौशनीहोती है, जयपुरके राजमहल बडेडमदा-और कींमती क्या! उमदाबावनकचहरियां-जिनकी कतेवजे निराली है, देखकर ताज्जुबहोगा,

जैनश्वेतांवरश्रावकोकेघर करीव (१२५) और—जहोरीवाजार मेवीवालोकेरास्तेपर—दो—जैनश्वेतांवरमंदिर बनेहुवे है, जिनकीका-रीगीरी—नक्शकारी—शंगमंगरपथरका काम—वेलबुटे—और—चित्रका-रिदेखकर दिलखुशहोगा.—जैनश्वेतांवरमुनिजनोकेलिये ठहरनेके कश्मकान यहांपरहे, घाटदरवजेके आगेकरीव (२) मीलकेघेरेमें—घाटनामसें एक उमदाजगह वनीहुइहे जहांपर अकसर बडेबडेआ-दमीयोंकी गोंठहुवाकरती है, और खानपान बनताहै, चाहे दुकाल पडे तोभीवहां आनंद बंधनहीहोता, रास्तेमंदुतर्फी जालीदारमकान बीचमें सडक—मकानोपर तरहतरहकी मेहराबे—महल—बागात—पानीकेहोज—चिश्मेआब—और—सडकपर फर्सपथरका लगाहुवा—जगह सोहावनी है, एकजैनश्वेतांवरमंदिर यहांपर वेंशकीमती बनाहुवाया-त्री इसकेदर्शन जरुरकरे, जयपुरमे हरजगह इका—बगी—किरायेपर तयारिमलते है,—वेठकर जहां—जी—चाहे सैरकरलो,—

सांगानेरीद्रवजेके वहार-रामिनवासवाग-काबिलदेखनेकी जगहहै, अजायवघरभी इसमें मौजूदहै, जिसमें दुनियाकी अजनवी चीजेरखीहुइ देखकर दिलकों औरही असरहोती है, खास! ग्रह-वेधके मकानकानकशा, तरहतरहकेसीके-नकलीआदमी-शंगममरका बनाहुवा आगरेका ताजमहेल-हिंदुस्थानके तमामदेवताओंकी मूर्ति तीर्थकरोके समवसरणका आकार-शंगममरका तामीरिकयाहुवा निहायत उमदाहै, मुल्कवर्माका बनाहुवा चांदीकाकाम-सिंहलद्वी- पके बनेहुवे मीटीके बर्तन-इजीप्तकीतस्वीरोंके नकशे-सुपारीकी बनीहुइलकडी-भरतपुरका बनाहुवा-बांसकीचीरोंका बाजा-सुल्क चीनके मंदिरका नकशा-आदमीका कलेवर-जिसमें नशें-पसली-हुडीवगेराके आकारदेखकर दिलमें असरहोताहैकि-आदमीकाश-रीर इनइनचीजोंका बनाहुवाहै,-लंकानगरीका चित्र-दमयंतीका स्वयंवर-जयपुरके कारीगिरोने इसकदर चित्रामिकयाहैकि-इन्सान देखकर ताज्जुबकरताहै, जयपुरकेचितारे आलादर्जेके होशियार, चाहे जिसजगहजाकर देखो जयपुरकीसी नक्शकारी बहुतकमदेखोगे,-दिवारपर (१४) राजेमहाराजोंकी तस्वीर-इसकदरउमदा चित्राम किइहै मानो ! अभी बोंलने लगेगी. हरम्रत्कके परींदे-और-जानवर-आफ्रिकाका-केशरीसिंह-जिसकी गर्दनपर केशोंका मुंडहोताहै, शास्त्रोंमें जिसकों केशरीसिंह कहा-यहांपर मौजूदहै,- हरेक किसमके सांप-हरेकिकसमकी मछलीयें-मौर-कबुतर-तोते वगेरारखेहुवे है अजायवघर-इतवारकों बंद रहताहै दुसरे दिनोंमें जबतबीयत चाहे जाकर देखले। ! कोइ रोकटोक नही,-

शहरके बहार दादावाडी-उमदा-और-चरनपादुकाकी छत्री काबिछदेखनेके बनीहुइहै. जयपुरसे थोडीदूरपर एक-गलता-ना-मका स्थान-जलके झरने-कुंड और मेंदान सोहावनी जगहहै, ज-यपुरके जैनमंदिरोंके दर्शन करके यात्री-झालना-सांगानेर-कनौ-ता-बसइ-झीर-जटवाडा-डोंसा-भाखरी-आरन-वांदीकुइ--वसुवा राजगड-दिगवाडा-मालाखेडा-महवा-होतेहुवे अलवर टेशन उतरे रैलकिराया ग्यारहआने,-राजपुतानेके देशीराज्योंमं अलवर राज्य-भी-अलाहे, शहर अलवरमें अलेअले बाग-सराय-और-उमदा मकान बनेहुवे हे, सवारीके लिये इका-बगी-टेशनपर तयार मि-लतीहे शहरमें जाकर वहांके जैनमंदिरोंके दर्शनकरो,--सन् (१८९१) की-मर्दुमशुमारीमें अलवरकी मर्दुमशुमारी-(५२३५८)
मनुष्योंकी-थी, अलवरक्षहर पहाडके नीचेकी सतहपर बसाहुवाहै,
राजमहेल उमदा-बाजार गुलजार-और अनाजका व्यापार यहां
ज्यादहहै, देशन और शहरकेबीच कंपनीवाग-काबिल देखनेकी जगहहै, अलवरमें जैनश्वेतांवर श्रावकोकी आबादी-और-मंदिर मीजूदहै, दर्शनकरके-वापिस देशनपर आवे-और-देहलीके लियेरवाना होवे,-देशन अलवरसे परिसाल-खेरस्थल-हरशौली-अजेरका-वावल-रेवाडी-खलीलपुर-जादौली-पादली-गढीहरसरू-गुडगांव-पालम-और-सरायरोहिला-होतेहुवे देहली जावे,-रैलिकराया सवारूपया लगताहै, कमीवेंसी होगयाहो-तो-टाइमटेबलमें
देखलेना,

🖾 (बयान-शहर-देहली,)

रैवाडीसे (५२) और गुडगांवसे (२०) मील-पूर्वोत्तर जमनाके पश्चिमकनारे देहली एकमशहूर और मारूफ शहरहे, न्महा राज पृथवीराज चौहानके वस्त इसकीरवन्नक वहुतथी, और क-स्वे मेहरोलीतक जहांकि -कुतुवकी लाटवनीहुइहे आवादथा. -महा-राजपृथवीराजने जो अपनी अहदमें किला तामीर करवायाथा - अवतक उसकेनिशानात अतराफ देहलीके पायेजाते है, -पृथवीराज चौहानके जमानेतक हिंदुस्थानमें स्वंयवर विवाह होताथा. और - लडाइके वस्त क्षत्रीयलोग शंवजातेथे, वेंग्रमार दोलत - और - वडे- वडे इकवाल मंद लोगथे, बहुत असेतक देहलीके तस्तपर क्षत्रीय-राजे सलतनते करते रहे, वाद - ग्रुसल्मानोंकी सलतनत जारी हुइ और कइवादशाहोंने अमल्दारीकिइ. सन (१६४०) इस्वीमें - देहलीके तस्तपर शाहजहांबादशाह अमल्दारी करताथा, लालिकला जो जाने जमना कनारे अवमीज्दहे वहुत दौलतसर्फ करके नववर्षमें

बनाया, बादशाह—शाहजहांने हमेशांके छिये इसमें अपनी सकुनत कायमिकइ. कइमहल—जनानखाना—दिवानेआम—और-दिवानेखास इसमें बनेहुवे है, देहलीसे तीनको सके फासलेपर बादशाह—हुमायुका सुकबरा जो उसकी वेगमने अपनेखाविंदकी यादगीके लिये वनवा-याथा सन (१५५४) में बनना शुरूहुवा और (१५७०) इस्वीमें तयार हुवाथा. दिवारमें नगीने जडेहुवेथे और—सुनहरी चिक्रका-रीका कामया, मगर अब वेंमरम्मत खाली मकान पडाहै, देहलीके अतराफ दसदस कोसके फासलेतक—कइइमारतें—और—सुकबरे बने हुवे बतीर खंडहेरके पडेहै. एकदिनवो रवन्नकथी—जो—देखनेवाले ताज्जव करतेथे, आज वो ख्वाबमेंभी नजर नहीं आती जमाने हालमें अंगेज सरकारकी अमल्दारी मौजूदहै और सबलोग अमन चैन कररहे हैं,—

सन (१८७७) जनवरीमें यहां--एक्ष--इम्पिरियल-अंभेदरवारहुवाथा--उसवरूत बडाजलसा हुवाथा. सन (१९०३)
जनवरीमें-महाराज-सप्तम-एडवर्डका दरवार यहां बडीशानसीकतसेहुवा, उसवरूत (२०) कोशके घेरेमें वास्तेदरवारके देहलीका
मेंदानआरास्ता कियागयाथा. हिंदुस्थानकेसवराजा-नवाब-औरबडेवडेरहीश यहां जमाहुवेथे. और सवारीनिकलीथी. देहलीकेमकान उमदाबनेहुवे-सडकेलंबी-चोडी-हरजगह पानीकानल औररातकों लालटेनोंपररीशनीहोती है, करीबटेशनकेपास एकधर्मशाला
और-सरायवनीहुइहै-मुसाफिरलोग इसमेटहराकरते है, सवारीके
लिये इका बगी तयारिमलते है, जमनानदीपर दो-मंजिला पुलसन (१८६७) इस्वीमें-बनायागया, चांदनीचौक-जहोरीबाजारदरीबा-अलेगुलजारहै, तरहतरहकी चीजें और मालअसबाब यहां
मिलताहै. वर्क चांदीसोनेके-और-काम सल्मेसितारोंका यहां इस-

कदरउमदावनताहै-जो-दुसरीजगह-कमदेखोग,--हरेककिसमकेमेवे-मीठाइ-दुकानोमें मौजूदहें औरचोराहेपर चुरनवेचनेवाले दोहकवित्त बोलकर अपनेचुरनकी तारीक्षकरते है, शामकेवरूत तरहतरहके खु-मचेवाले और कुलगजरेबेचनेवाले बाजारमेंनजरआते है, औरबौकीन लोग-उमदासे उमदाकपडे पहनकर हवाखोरीकेलियेनिकलते हैं. खा-नपान-बोलचाल-और-पुशाकयहांकी निहायतउमदा-बीचशहरके घंटाघरबनाहुवा औरइसकीअवाज दूरदूरतकजातीहै,-सन (१८९१) कीमर्दुमग्रमारीमे देहलीकी मर्दुमग्रमारी मयलावनीके (१९२५७९) मनुष्योंकीथी, जैनश्वेतांवरश्रावकोंकेघर करीव (१००) और (२) जै-नश्रेतांवरमंदिर यहांपरवनेहुवे है, वडामंदिरमहोले नवघरेमें-औरछोटा अचेलपुरीमे, जोकोइ जैनश्वेतांबर यात्री देहलीमें कदमरखे अवल नवघरेमें जावे और मंदिरके दर्शनकरे, देहलीसे (४) कोशके फा-सलेपर छोटे दादाजीकी छत्री-और-कुतुवलाट-महरोलीके पास बडेदादाजीकी छत्रीभी वनीहुइहै कुतुब भिनार जिसकों कुतुब लाट बोलते है देहलीसे करीब (१०) बीलके फासलेपर मौजूदहै, पेस्तर छमंजिलयी, भूकंपसे उपरका हिस्सा कुछहुटगया, सन (१८२९) में फिर बनायागया पेस्तर (२५०) फुट ऊचीयी अब (२४०) फुट रहगइ, इसकी पांचमंजिलें अब कायमहै, तीनमंजिलोमें लाल-पथर लगाहुवा उपरकी दोमें सकेद मारवल पथर लगाहै और इसके भीतरसें चकरदार सीढीयें बनीहुइ जिसके जरीये उपरसीरे तक जासकतेही जब उपर चढकर चारींतर्फ नजर करोगे-गांव-नगर वागवगीचे-द्रख्तोकेश्चंड-सडक-और-नदीयां वगेरा देखकर तत्रीयत खुशहोगी, और यह माख्म होगाकि-मानो ! आस्मानकी सैरको चलेहै, देहलीकी इमारतें-आसपासके मुकबरे-और-पुराने खंडहेर हुदेफुटे मकानात देखकर पुराना जमाना याद आताहै,- कुतुबलाटके पास एक-लोहकी छोटी लाटभी-खडीहै इसपर राजा धवके प्रतापका वयान लिखाहुवा दुसरे लेखमें-संवत (११०९) दुसरे अनंगपालका-और-आठमी सदीके पहलेके अनंगपालका नाम दर्ज है, इससे सबुतहुवा-पहले अनंगपालने इसकी तामीर करवाइ होगी, इसकी जंचाइ (२२)फुटकी-और चोडाइ (१६) इंचहै,—

देहळीके जैनमंदिरोके दर्शनकरके-यात्री-तीर्थहस्तिनापुरकी जियारतको जावे, देहलीसे-शाहदरा-गाजियाबाद-मुरादनगर-<mark>र्वेगमाबाद−म</mark>हीउददीनपुर होतेहुवे मेरटसीटी टेशनपरउतरे,–रैल-किराया सातआने-नवपाइ, जिलेका सदरप्रकाम मेरट एकवडा शहेरहै, सन (१८९१) की मर्दुमशुमारीकेवस्त-मेरटकी मर्दुमशुमा-री (११९३९०) मनुष्योंकी-बाजार वहुतवडा और जिसचीजकी दरकारहो यहां मिलसकती है,-मेरटमें हरतरहकी तिजारतहोती है जैनश्वेतांबर श्रावकोकी आबादी यहांपर नही-न-जैनश्वेतांवर **मं**-दिरहै, बहारशहरके धर्मशाला मौजूद है यात्री इसमें कयामकरे, और दुसरेरीज तीर्थहस्तिनापुर-जानेकी तयारीकरे, जो (१८) कोशके फासलेपर खुक्कीरास्ते वाके है,-अववहां-न कोइवाशिंदा है-न-इमारते है,-सीर्फ ! मंदिर और धर्मशाला बनीहुइ है, मेरटसे सवारी हरिकसमकी दस्तयाव होसकती है, जिसकदर रुपयासर्च करोगे आरामपाओग. मगर बखीलोंका रास्ताही अलायधाहै, न--वे-खासकते है-न-पुन्यकरसकते है. शुभहके गयेहुवे यात्री शा-मकों-स्वास हस्तिनापुरमें पहुचसकेगे. मेरटसे मोहानागांव तक पकी सडकमिलेगी, आगे छकोश कचा रास्ता है, खास! हस्ति-नापुरकेपास रेतकारास्ताभी मिलेगा, सडककी दोनोतर्फ हरिकस-मके द्रष्टतलगेहुवे गंगानदीकी तरावटसे हमेशां यहां सब्जीबनीहुइ है. और द्रख्तभी बडेबडेबुछंद और-पुख्ता-मोसमगर्मामेंभी यहां पर वनिस्पत दिगरमुल्कोके गर्मी कमपडती है, बल्कि! शुभइके वरूत किसीकदर शदींभी मालुमहोती है,-मोहानागांवसें आगे एक मौजा-जिसकानाम गणेशपुरा है,--मिलेगा,

🎾 [तवारिख-तीर्थ-हस्तिनापुर]

हस्तिनापुर एक पुराना शहरहै-तीर्थकर रिषभदेव महाराजने साधुपनेकी हालतमें वैशाख सुदी तीजके रीज अपने वार्षिक त-पका पारना यहां कियाथा, तीर्थकर ज्ञांतिनाथ महाराज इसी हस्तिनापुरमें पैदाहुवे, चवन-जन्म--दीक्षा-और--केवल्र**ज्ञान-ये** चार कल्पाणिक उनके यहांहुवे, विश्वसेन राजाके घर अधिरा रानीकी-कुससे जेडबदी (१३) भरणी नक्षत्रके रीज उनका यहां जन्महुवा, तीर्थकर शांतिनाथ महाराज चक्रवर्ती पदवीके धारक हुवे और वहुत अर्सेतक उनोने यहांपर अमलदारीकिइ, पे-स्तरदीक्षालेनेके एक सालतक उनोने यहां खेरातकिइ, और जेठ बदी (१४) के रौज दुनिया फानीसरायकों छोडकर उनोने यहां दीक्षा इस्तियार किइ, पौषमुदी (९) के रौज उनोकों यहां के-वल ज्ञान पैदाहुवा, इंद्रदेवते वगेरा उनकी खिद्मतमें हाजिर हो-तेथे,-सतराहमें तीर्थंकर कुंथुनाथ महाराजभी इसीहस्तिनापुरमे पैदाहुवा,-चवन-जन्म-दिक्षा-और-केवल्रज्ञान--ये-चारकल्याणक उनके यहांहुवे, सुरराजाके घर--श्रीरानीकी कुखसे वैसाखबदी (१४) कृत्तिकानक्षेत्रके रौज उनका यहांजन्म हुवा, तीर्थकर कु-्थुनाथ महाराजभीचक्रवर्त्ती पदवीक्रे धारकथे, और बहुतअर्स्नेतक उनोने यहांपर अमलदारी किइ, दीक्षाके पेस्तर एकसाल तक बरा बर उनोनेयहां खैरात किइ, चैतवदी (५) के रौज दुनियांके पुत्रआराम छोडकर उनोने यहां दीक्षा इस्तियारिकइ, चैतसुदी

(३) के रौज उनको यहां केवलज्ञानपेदाहुवा, इंद्रदेवतेवगेरा उनकी खिद्मतमें आतेथे,-

अठारहमें तीर्थंकर अरनाथ महाराजभी इसी हस्तिनापुरमें पैदाहुवे, चवन-जन्म-दीक्षा-और-केवलज्ञान-ये-चार कल्याणक उनके यहां हुवे, सुर्दशन राजाके घर-देवीरानिकी कुखसे मृगशीर्ष सुदी (१०) रेवती नक्षत्रके रोज उनका यहां जन्महुवा, तीर्थंकर अरनाथ महाराजभी चक्रवर्ती पदवीके धारकथे और बहुत अर्सेतक उनोने यहांपर अमलदारी किइ, दीक्षाके पेस्तर एकसालतक उनोने यहांबहुत खरातकीइ, और मृगशीर्ष सुदी (११) के रौज दुनी-यवीकारोवार छोडकर उनोने यहां दीक्षा इिल्तियार किइ, कार्तिक सुदी (१२) केरीज उनोकों यहां केवलज्ञान पैदाहुवा, उनकी खिदमतमें इंद्रवेवता हाजिर रहतेथे,

उन्नीसमें तीर्थंकर मिल्लनाथमहाराज यहां तशरीफ लायेथे, और उनका समवसरण यहांपरहुवाथा,—कौरव-पांडवोका युद्धइसी हस्तिनापुरके मेंदानमें हुवाथा, सुभूमचक्रवर्ती इसीहस्तिनापुरके तख्तपरहुवा, बढीवडी अजुवाबाते यहांपर गुजरचुकी है. बहुतसें खुशनसीव-इक्कबालमंद-आलीम-फाजील-जमामर्द--दलेर-और-बहाद्रशख्श यहां पैदाहुवे कहांतक लिखे? कार्तिकशेठ-इसी हस्तिनापुरके रहनेवालेथे, महर्षि-दमदंत--यहांपर तशरीफलाये और मुकम्मीलइबादत यहांपरिकाइ, ऐसीऐसी जडीबुटीयें यहांजंगलमें खडी है जिनके पहिचाननेवाले नहीरहे, तीनतीन-बारचार कोसकेवेरेमें बहुतसी नासपातीयोके द्रख्त, मशलन! जामुन-अम्बद-अनार-शरिफे-अमरख-शंयल-शिशम-वेल वगेरा हरिक्रस-मके पेंड यहांपरखडे है, पटेराके पेंड जिसकी चटाइ बनजाती है यहां कसरतसे देखोगे,-अध्यामवारीशमें कभीकभी यहां-जबाहि-

रातके नगीने जमीनसे निकस आते है इससे सबुतहोता है पेस्तर यहांके लोग बडेमालामालथे,—

जोकोइयात्री हस्तिनापुरमें तशरीफलावे अपने खानेपीनेका इंतजाम-मेरट-या-मोहानागांवसे करते आवे, (यानी) आटादाल -घी-सकर-मिठाइवगेरा शाथलेतेआवे,-अगुर किसीचीजकी दर-कार पडे पूजारीको बुलाकर कहसकतेहो वह इंतजाम करसकेगा. और गनेशपुरेसं-या-वसुमागांवसं चीजमंगवाकर तुमकोदेसकेगा, स्वास हस्तिनापुरमें--जहांकि--वडाआलिशान जैनश्वेतांवरमंदिर और धर्मशाला बनीहुइ है यात्रीउसमें कयामकरे,-और तीर्थकी जियारतकरे, पेस्तर यहां तीर्थंकर शांतिनाथ-कुंथुनाथ-और-अर-नाथमहाराजके बडेवडे कीमतीमंदिर बनेहुवेथे, बीचलेदिनोर्मे जब इस्तिनापुर विरानहोतागया ऐसा वख्तभी आगयाथाकि-थोडी दूरपर एकद्रस्तकेनीचे तीर्थकर शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरनाथ म-हाराजके कदमकी छत्रीही सीर्फ ! कायमरहगइथी. जैनश्वेतांवर ंश्रावकोंकी आबादी पेस्तरसेही वरवादहोगइथी, जव-जहोरी-पर-तापचंद्जी-पारसान-साकीनकलकत्ता यहांपर तशरीफलाये, और देखाकि-तीर्थ-दिनपरदिन विरानहोजाताहै करीव एकलाखरुपये खर्चकरके उपदा आलिशान जैनश्वेतांबर भंदिर तामीरकरवाया, और संवत् (१९२९) वैशाखमुदी तीज़केरीज उसकी प्रतिष्टाकिइ, एकधर्मशाला निहायत उपदा बनवाइ जिसमें (६) कोठरी और आठदालान बनेहुवेहै, जोकोइ जैनश्वेतांबर यात्रीआतेहै इसीमें क्यामकरते है, ज्यादहयात्री आनेपर वेशक !ाबिद्न दुसरी धर्म-शालाके तकलीफहोती है कोइखुशनसीव यहां दुसरी धर्मशाला तामीरकरावे उमदावातहै, बडेतीर्थीमें बहुतसीधर्मशाला बनीहुइ रहती है और वहां दूसरी वनवानेवालेभी वहुत है, मगर तारीफ उसी शस्त्राकी है जो एसीजगहपर खयालकरे,—

वगीचा एकयहांपर मंदिरकी पूर्वतर्फवना हुवाहै मगर वंदरोकें सबब द्रख्तोंकी बढवारी कमहोती है, ताहम ! इसमे हरेक किस-मके द्रस्त मौजूदहै, मशलन ! आम-अमरूद-कमरख-खीरनी-अनार-नींबु-चकोतरा-नारंगी-शरीफा-जाम्रुन-जमोआ-सीसम-नींबवगेरा, और फुलभी हरेकिकसमके पैदाहोते है मंदिरमें मूलना-यक तीर्थिकर शांतिनाथ महाराजकी करीव देडहाथ बडीमृत्तितख्त-नशीन है,-जो राजासंप्रतिकी तामीरिकड़-वही--निज्ञान इसपर पायेजाते है, दाइनीतर्फ सीमंधर स्वामीकी मूर्त्ति करीब सवाहाथ बडी जायेनशीनहै और यहभी-राजासंप्रतिहीकी तामीर कराइहुइहै बायी तर्फ तीर्थकर अभिनंदन स्वामीकी मूर्त्ति सवाहाथवडी जाये-नशीन है और उसपर लिखाहै-संवत् (१६८२) जेठवदी नविं गुरूवारके रौज यहप्रतिष्ठित किइगइ,-तपगछके आचार्य-विजयदेव सुरिजीके जमानेमें-विवेकहर्यगणिके शिष्य-महोपाध्याय-सुक्तिशा-गरगणिने इसकीप्रतिष्टाकिइ, एकपूर्ति करीव पौनहाथ वडी जो-तीर्थंकर शांतिनाथ भगवानकी है उसपर संवत् (१९३१) छिला है, नवमूर्ति-सर्वधातुकी-और-एकसिद्धचक यंत्रभी-वनाहुवा मी जूदहै, परकम्माके पास दाहनीतर्फके जिनालयमें तीर्थकर कुंधुनाथ भगवानकी मृत्तिं जायेनशीनहै, और उसपर संवत् (१९३१) छिखाहै, बायीतर्फके जिनालयमें तीर्थकर-अरनाथ भगवानकी मूर्ति जायेनशीन है और उसपरभी संवत (१९३१) का-दर्ज है, --अधिष्टात्रीदेवी निर्वाणी--और--यक्ष गरूडकी मृत्ति सं-बत् (१९२९) वैशाख सुदी तीजकी प्रतिष्टितभी इस मंदिरमें मोजूदहै,—

मंदिरका चौक निहायत उमदा-जब-वडीपूजन-पढाइजाती है संबलींग इसीमें बेठतेहैं, उपर इसके लोहेकी जाली लगी हुइहै-

ताकि-कबुतर-चिडीया वगेरा इसमें-न-जासके, मंदिरके पास-जमीन-जहोंरीपरतापचंदजी पारसानकी खरिदीहुइ मौजूदहै अगर कोइ खुन्ननसीव यात्री यहां दुसरी धर्मन्नाला-या-मंदिरवनवाना चाहे बना सकते है,-इसकी जेर निगरानी आजकल देहलीके जैन-श्वेतांबर श्रावकोके तारछकहै, जोक्कछ चढापा मंदिरमें चढताहै भंडा-रमें जमाहोती है. और पूजारीकी तनखाह मुकररहे,-

तीर्थंकर रिषभदेव महाराजके कदमोकी छत्री-जो-उत्तरतर्फ सवामीलके फासलेपर बनीहुइहै, इसकी पूजावगेरेका इंतजामभी जैनश्वेतांबर संघके ताल्छकहै, असलमें पुरानीजगह यही है, मंदि-रसें छत्रीतकजाते रास्तेमें जो-नाला-आताहै, बहुतसे खजुरीके पंड-और--ककडी-खरबुजे-कुष्पांड--धियावगेश यहां कसरतसे पैदाहोते है. पानीयहांपर जमीनमें वहुतनजदीक अगर पांचहाथ-जमीन खोदीजावे फौरन! पानी निकलआताहै, जगह सोहावनी और तरहतरहकी जडीबुटीयें यहांपरखडी है, छत्रीमें तीर्थकर रि-षभदेव भगवानके कदमतरूतनशीनहै यात्री वहांजाकर दर्शनकरे, छत्री पुरानीहोजानेकी वजहसे इसकीमरम्मत होनादरकारहै, दिवारे इसकी टेडीपडगइहै और कहींकहीं दराजेभी नजरआती है. अगर कोइयात्री इसकी मरम्मत करानाचाहे करीव (५०००) रुपये लगेगे अतराफ छत्रीकेहाता लोहेकेसिकचोंका बनवादियानाय-और-एक मजबृतद्रवजा तयारकरके उसकेकिवाड वनादियेजाय-तो-छत्री की हिफाजतहोगी,-छत्रीपर वेठकर चारोतर्फ नजरकरते है तो शिवाय जंगलके दुसरीकोइचीज नजरनहीआती, चारकोशके फा-सलेपर गंगानदीकी धारा वहरही है और जगह बहुतही सुद्दावनी दिखाइदेती है जिसकेवडेभाग्यहो-ऐसे-तीर्थकी जियारतकरे, छ-त्रीके दर्शनकरके यात्री वापिस धर्मशालामें आवे. जहांसेगयेथे, इस्तिनापुरकी जियारतकरके वापिस उसीरास्ते टेशन मेरट आना, और मेरटसे रैलमें सवारहोकर मुल्कपंजाबके जैनतीर्थोकी जिया-रतको जाना,—

(तवारिख हस्तिनापुर खतमहुइ. —)

ब्यान-शहर-अंबाला-और-लुधिहाना ब्रिंग्यान-शहर-अंबाला-और-लुधिहाना ब्रिंग्यान-शहर-अंबाला-अंबाल-अंबाला

मेरटसे मेरट केंटोन्मेंट-सर्धना-खतौली-मन्सुरपुर-मुजफर-नगर-रोहाना-देवबंद-नगाल-टपारी--सहारनपुर-सरसवा-कला-नोर-जगादी-दराजपुर-ग्रुस्तफाबाद-बरारा-केश्वरी--और-अंबाला केन्टोन्मेंट–होतेहुवे टेशन अंबालासीटी उतरना,–रैलकिराया एक रुपया छ आने नवपाइ, जिलेका सदरमुकाम अंवाला एकअछा शहरहै,-तवारिखोंमें वयानहैं कि इस्वीसनकी चौदहमी शताद्वीमें एक अंबाजी नामके राजपुत महाशयने इसकों आबादिकिया,-इसीलिये अंवाला नाम मशहुरहुवा,-सन (१८९१) इस्वीकी मर्दुमथुमारीके वरुत--अंबालेकी मर्दुमथुमारी मय छावनीके (७९२९४) मनुष्योंकी थी.-बाजार गुल्रजार-और जिसचीज-की दरकारहो यहां मिलसकती है, पूरी--कचौरी मिठाइ-हरवस्त तयार भिलेगी, यात्रीकों कोइ तकलीफ-न-होगी, अंबालेमें रूइ-अनाज-दरी-और-कपडेकी तिजारत ज्यादहहै,-शहर और छाव-नीकेवीछ सरकारीइमारतें–कचहरी–खजाना–और–स्कुल वगेरा मकानात वनेहुवे है, जैनश्वेतांबर श्रावकोंकी आवादी और मंदिर मौजुदहै, यात्री दर्शनकरके आगे छिधयानेकों जावे,-अंबालेसे-संग्र–राजपुरा–सराइवंजार–साधुगढ-–सरहिंद–गोविंदगढ–संन्ना– चावा-दुराहा-सनाहवाल-और डंडारी होतेहुवे टेशन छिथयाना उतरे,-रैलकिराया तेरहआने तीनपाइ,-अंबालेसे (७१) मील-

पश्चिमोत्तर शतलज नदीसे (८) मील दखनकी तर्फ--जिलेका सदर मुकाम छिधहाना एक उमदा शहरहै, सन (१४४०) इस्वी में लोदीखानदानके युसुफ और निहंगामके शाहजादोने इसकों आबादिकयाइसलिये लिधिहाना कहलाया,-सन (१८९१) की मर्दुम शुमारीके वरूत छिधहानेकी मर्दुम शुमारी (४६३३४) मनु-ष्योंकीथी,-जिला कचहरी-सराय-खेराती अस्पताल-और स्कुल अछी लागतके मकान वनेहुवे है, कश्मीरी-कावली-और-पटाण लोग यहां ज्यादह रहते है. शाल-दुसाले-और पश्मिनेका काम यहां लाइकतारीफके बनताहै,-पघडी दुपट्टे और हरेक किसमफी सोदागीरी यहांपर होती है,-वाजार गुलजार खानपानकी चीजें पुरी-कचौरीमीठाइ वगेरा यहां उमदा बनती है,-जैनश्वेतांबर श्राव-कोंकी आवादी-और मंदिर यहांपर बनाहुवाहै, यात्री दर्शन करके आगे जालंधरकों-जावे,-छिधहानेसे रैलमें सवार होकर लाधोवाल-फिलोर-गोराया-फगवाडा-और-चिहेरू होते जालंधर टेशन उतरे, रैळकिराया छआने छपाइहै,-जिलेका सदर मुकाम जालंघर एक पुराना शहरहै, सिकंद्रकीचढाइके पेस्तर जालंघर फटौचराजपुतोकी राजधानीथी, सातमी सदीमें-चीनके मुसाफिर ह्वांक्तसांगने जब जालंधर शहरकों देखाथा अपनी तवारीखमें ली-खाहै उसंबद्धत दोमीलके घेरेमेंथा सन (१७६६) के करीब सिख्खीं-के कबजेनें आया. जमाने हालमें अमल्दारी अंग्रेज सरकारकी यहां पर जारी है, सन (१८९१) की मर्दुमशुमारी में जालंधरकी मर्दु-मधुमारी (६६२०२) मनुष्योकीथी, सरकारी कचहरीयां-जना-नास्क्रल-और-सरायवगेरा पुरुता मकान बनेहुवे है, जैनश्वेतांवर श्रावकोंकी आबादी और मंदिर यहां मौजूदहै, यात्री दर्शशनकरे, बाजार बडागुलजार पुरीकचौरी-उमदामिठाइ-और गर्मद्ध जबचाहो

तयारिमल्राकता है,—रैशमका काम यहा लाइक तारिफके बनताहै, जालंधरसे खुक्की रास्ते (१८) कोशके फासलेपर होशियारपुर एक अला कस्वाहे,—जैनश्वेतांबर श्रावकोकी आवादी और मंदिर वहांभीमौजूदहे, फुरसत हो—तो—वहांभी जावे, और अगर फुरसत न—हो—तो जालंधरसे रैलमेंसवार होकर आगे अमृतसरके लिये खाना होवे—सुरानसी—करतारपुर—हमीरा—बीझ—बुटारी जांडियाला—और—मननवाल टेशन होते अमृतसर टेशन उतरे, रैल-किराया नवआने तीनपाइ,

🎾 [दरवयान-शहर-अमृतसर,]

मुल्कपंजाबमें अमृतसर एकवडा-नामीग्रामी शहरहै, रैलवे टेशनसें करीव आधमीलके फासलेपर आबादी शुरूहोती है, सवा-रीकेलिये इका-बगी-टेशनपरतयार मिलेगी, सन (१५७४) इस्वीमें सिख्खोके गुरू-रामदासजीने इसको आवादकिया, और अमृतसर नामका एक तालाव बनाया जिसकी वजहसें शहरका नाम अमृतसरं कहलाया,–सन १८०९) इस्वीमें महाराज–रण-जितसिंहजीने गोविंदगढ किला बनवाया,-सन (१८९१) कीम-र्दुमग्रमारीमें अमृतसरकी मर्दुमग्रमारी-(१३६७६६) मनुष्योंकी थी,-शाल-दुशाले यहां आलादर्जेके तयार होते है, अंदाज चार हजार किमरी कारीगीर यहां दुशाले बनानेका कामकरतेहै, और (८००) रूपये तकका दुशाला यहां तयारहोताहै,-सिख्ख-क्ष-त्रीय-ब्राहमन--शेठ-साहुकार-अफगान-कश्मिरी-नयपाली-बुखारा वाले-और बल्जचीस्तान वगेराके लोग-यहां आबादहै, बाजारमें हरिकसमकी चीजे-पुरी-कचौरी-मिठाइ-जबचाहो तयारहै,-टाउ नहोल-अस्पताल-और-स्कुल-वगेरा मकान अछे बनेहुवे है, उनी रेशमी कपड़े-और-कारचोवीका काम-यहां लाइक तारीफके बन- ताहै, गालीचे यहांके वडेउमदा—और—दस्तकारीका-कामभी
मशहूरहै, मुसाफिरोके लिये शहरमें दो-सराये वनीहुइहै, जैनश्वेतांवर श्रावकोके घर अंदाज पचीस-और-एक-जैनश्वेतांवर मंदिर
यहांपर मौजूदहै-यात्री-शहरमें जाकर दर्शनकरे.-

सिख्खोंका गुरूद्वारा-जिसकों दरवार साहव-बोलते हैं वी-च शहरके बनाहुवा काबिल देखनेके हैं,-आसपास तालाव करीब (४७५) फुटलंबा-और-उतनाही चौडा-चारोंतर्फ सफेद मार-बल और कालेपथरोंका फर्स--और--तालावके जलसे उपरतक सफेद मारवलकी सीढियां बनीहुइहै, ठीकबीचमें सुवर्ण मंदिर जि-सकी दिवारोंपर और उपरके भागमें तांबेके पतरे और उनपर सो-ना लगाहुवाह इसलिये इसकों सुवर्ण मंदिरभी बोलते हैं,-इसमें सिख्खोंका धर्म गुस्तक जिसकों ग्रंथसाहव बोलतेहैं रखागयाहै, और उसका पूजन होता है,-मंदिरकी मंजिलमें एक छोटासा-शी-श्वमहल,--और तालावके एक कनारेसे मंदिर तक जानेका पुल बंधाहुवाहै.--

अमृतसरके जैनमंदिरका दर्शनकरके यात्री-पठाणकोट जानेवालीरेलमं सवार होकर पठाणकोटको जावे.-वेरका-काठुनंदगालजयंतीपुर-बटाला-छीना-धारीवाल-सोहल -गुरूदासपुर-दीनानगर-परमानंद-जकलारी-और-सारना टेशन होतेहुवे पठाणकोट
खतरे रेलिकराया साढेबाराह आने लगते है,-पढाणकोटसे कांगडा(५१) मीलके फासलेपर-रास्ता पकीसडकका-और-इका बगी
बगेरा सवारीजाती है. किराया पांचलपये जातेके-और-उतनेही
आतेके समझो. रास्तेमं पडाव तीन-तुरपुर-कोटला-और-शाहपुर
जहां दिलचाहे रातकों ठहरजाओ, कोइतकलीफ नही,

(तवारिख-तीर्थ-कांगडा)

जालंधर विभागमें कांगडा एक कस्वाहै. पेस्तर यहां जैनतीर्थ था-अब नहीरहा,-कांगडेकी पूर्वीत्तर हिमालयका सिलसिलाजारी है, गुरूदासपुर-चंबा -होशियारपुर,--और--धर्मशाला नामका कस्वा-कांगडेकी आसपास आवाददै, जिले कांगडेके वनोमें-चीता रींछ-भेडिया-शेर वगेराभी कभीकभी नजर आतें है, शीशा-लोहा-और-तांबेकी खान इस जिलेमें पाइजाती है. ब्यासनदीकी रेतमें कभीकभी सोनाभी मिलताहै. बादशाह अखबरने सन (१५५६) में कांगडेपर चडाइ किइथी. जमाने हालमें यहांपर अमलदारी अंग्रेज सरकारकी जारी है, कांगडेकी मर्दुमशुमारी करीब (५३८७) मनुष्योंकी-जबसन (१९०५) अपेल महिनेमें भूकंप हुवाथा अजहद नुकशान पहुचाथा,-करीव (२) मिनिटतक भूकंप होतारहा. भूकंप क्याथा एकतरहका मलयथा, इसके कुछ **ऊचे भागपर एक किलाहै, मुसाफिरोंके** छिये धर्मशाला यहांपर बनीहुइ है, खानपानकी चिजेसव मिलती है,-कइ अर्सेतक कांगडेका नाम-नगरकोटभी-मशहूररहा, तेहसील्र-खेराती अस्पताल-वर्गरायहां बनेहुवे है,-कांगडेसें भागसु (१०) मीलके फासलेपर आबादहै, और बहांसे हिमालयका सिलसिला मुल्क काक्मिरतक चलागया, कांगडेसें वापिस उसी रास्ते पठानकोट आना. और पठानकोटसे रैलमें सवार होकर जिसरास्ते गयेथे अमृतसरकों आना,-रैलकिराया पेस्तर बतला चुके है,-अमृतसरसे रैलमं सवार होकर छहेलटा-खासा-अटारी-और जालों होतेहुवे लाहोर जंकशन उतरना, रैलकिराया छआने लगते है,-

(बयान-शहर-लाहोर-और-गुजरानवाल,-)

मुल्कपंजाबमें रावी नदीके बाये कनारे लाहोर एकवडा नामी शहरहै, लाहोरकी मर्दुमशुमारी लावनीकों मिलाकर (१७६८५४) मनुष्योंकी-लाहोर शहर मुल्क पंजाबमें पुरानाहै, चीना मुसाफिर वहांक्तसांगने अपने सफरनामेमें छिखाहै मुल्कपंजाबमें लाहोर शहर वडागुलजारथा, सन (९७७) इस्वीमें लाहोरके तख्तपर छत्रपति-राजा-जयपाल अमलदारी करताथा, बादशाह अखबरने लाहोरकों तरकीपर किया,-और किलेकों बढाया. बादशाह जहां-गीर लाहोरमें बहुत मुद्दतक रहा, सिख्खोंके महाराज रणजित-सिंहने सन (१७९९) इस्वीके अर्सेमें लाहोरपर अमलदारी किइ. जमाने हालमें अंवेज सरकारकी अमलदारी यहांपर जारी है, ला-होरकी चारोंतर्फ (१५) फुटउची-इंटोकी दिवार और (१३) दरवजे है, शहरपनाहके बहार चारोंतर्फ पकी सडक बनीहुइ.-और टेशनके पास एक धर्मशाला मौजूदहै,-पानीका नलहरजगह लगाहुवा−और सडकोंपर रातके वख्त लालटेनोंकी रौशनी होती है, अनारकली चौक वडा वाजारहै, हरेक चीज यहांपर मिलसक-ती है,-पुरी कचौरी-मिठाइ वगेरा खानपानकी चीजे यहां उमदा बनती है.-

चीफकोर्ट दो मंजिली इमारत वनीहुइहै, चिडियाखानेमें तर-हतरहके जानवर रखेहुवे है, यहांके गालिचे उमदा और-अमारिका इग्लांड तक भेजे जाते है, रावीनदीपर नावका पुल वधाहुवा-जि-सपर होकर शाहदरा जानेका रास्ताहे, रेशम और सोनाचांदीके लेश-लाहोरमें-उमदा वनतेहै, पोस्टओफिस-टेलीग्राफ आफिस-अजायबघर-गवर्नमेंटकालेज-लोटीकचहरीयां-मेओ अस्पताल-कि-ला-सिख्लमंदिर-शीशमहल वगेरा वडी लागतके मकानात है, छावनी मियांमीर-लाहोरसें-तीनमीलदुरहै, शालामार वाग-टंक-शाल दरवजेसें (६) मीलके फासलेपर काविल देखनेकी जग-हहै, सन (१६३७) में बादशाह शाहजांके हुकमसें बनाया गयाथा,—

लाहोरसें राविंड और-खानावाल जंकशन होतीहुइ एकरैलवे लाइन मुलतानकोंभी गइहै, जोकि-आगे-सिंधहेंदराबाद और करां-चीतक जारीहै, मुलतान शहर बडाहै, -जैन खेतांवर श्रावकोंके घर अंदाज (२०) और-एक जैन खेतांवर मंदिर वाजार चुडीसरायमें बनाहुवाहै, मूलनायक तीर्थकर पार्थनाथ महाराजकी मूर्ति संवत् (१५६४) की मतिष्ठित इसमें तख्तनशीनहै, दुसरी एकपूर्ति-जोकि-बादामी रंगकी है राजासंप्रतिके वख्तकी बनीहुइ-वही निशानात उसपर पायेजाते है जोराजा संप्रतिकी बनाइ मूर्तिपर होते है, मुलतानसे डेहरा गाजिखान-नजदीकहै और बहांभी जैन खेतां-बर श्रावकोंकी आवादी और मंदिरहै, -यात्रीकों-मुलतान जानेकी फुरसतहो तो जावे-और-अगर फुरसत-न-होतो शहर गुजरान-वालको जाय,

🖾 [वयान-शहर-गुजरानवाल.]

लाहोरसं रेलमं सवार होकर वादामीवाग-शाहदरा-मुरीदकी कामोकी-और-अमीनावाद होते गुजरानवाल टेशन उतरे, रैल-किराया सातआने-नवपाइ लगते है, जिलेका सदर मुकाम गुज-रानवाल एकअला शहरहे, मर्दुमशुमारी गुजरानवालकी (२६७८५) मनुष्योंकी लाहोरके महाराज रणजितसिंहके वालिद यहां रहतेथे, जमाने हालमें अमलदारी यहांपर अंग्रेज सरकारकी जारी है, जिले गुजरानवालके पश्चिमोत्तर चनावनदी-और-शाहपुर जिलाहै, दखनपश्चिमकों झांग-मोंटगोमरी-लाहोर जिला-और-पुरवको

स्यालकोट जिलाहै,शहर गुजरानवालका बाजार अछा-और-हरे-क किसमकी चीजें यहांपर मिलसकती है, दिवानी-फोजदारी कचहरियां–सडक लंबीचौडी–और–मकान पकेबनेहुवे है, शालदु-शाले और रेशमका काम यहां अछा होताहै, जैनश्वेतांवर श्रावकों-के घर करीब (७५) और--एक--जैनश्वेतांवर मंदिर यहांपर बनाहुवाहै, यात्री दर्शनकरे, आधेमीलके फासलेपर जैनश्वतांवरा-चार्य--न्यायांभोनिधि--महाराज आत्मारामजी-आनंदविजयसूरि-जीके चरनोंकी छत्री वडी लागतसे बनीहुइहै,-यात्री वहां जाकर गुरूवंदनका फायदा हासिल करे, और फिर गुजरानवालके आगे वितभय पत्तननगर जिसका नाम आजकल मेंरा कस्वा बोलते है जावे. टेशन गकर-वजीराबाद-केंथला-शहर गुजरात-लाला मु-साजंकज्ञन-जौराह-डिंगा-चिलियानवाल-बहउद्दीन--आला--ह-रिवाह-मुल्कोवाल जंकशन-मियानी-हुजुरपुर-होते मेंरा टेशन उतरे गुजरानवालसे वजीरावाद तक रेलकिराया करीव तीनआने नवपाइ, वजीराबादसे लालामुसातक तीनआने नवपाइ, लालामु-सासें मुक्कोंवालतक आठआने छपाइ, और मुक्कोंवालसें भेरेतक तीनआने तीनपाइ लगते है.-

🌬 [तवारिख-तीर्थ-वीतभयपतन,-]

आवश्यक सूत्रमं–इसकानाम वितभय पतन नगर छिखाहै, जमाने तीर्थकर महावीर स्वामीके-यहांपर-राजा उदयन-अमलदा-रीकरताथा, जोकि-वितभय अउदयनके नामसे मशहूरथा, उसव-रुत शहर वडागुलजार और वेशुमार दौलतथी, बडेबडे जैन मंदिर और-इमारते पायदार संगीन वनीहुइथी. राजा उदयन पेस्तर जैन

कौशांबीका राजा उदयन वत्सउदयन कहलाताथा.—

नहीथा,-पीछेसे जैन मजहबपर पावंदहुवा, उसकी पटरानी प्रभा-वती पेस्तरसेही जैन मजहबसे ताल्छक रखतीथी जोकि-विशाला नगरीके चेंडा राजाकी वेटीथी. जब-गांधार नामका श्रावक जैन तीर्थोकी जियारत करताहुवा यहां आयाथा, उसके साथ तीर्थकर महावीर स्मामीकी चंदनमय मूर्त्तिथी, राजा उदयनके दरबारमें उसकी वडी तारीफहुइ, गांधार श्रावकने खुशहोकर वहमूर्त्ति-राजा उदयनकीरानी प्रभावतीकों दिइ, और प्रभावतीने अपने जेबखर्चसें एकवडा आलिशान मंदिर बनवाकर उसमें-वह-मूर्त्ति तख्तनशीन किइ,-हरहमेश उसकी पूजन करतीरही,-जब प्रभावतीने-दुनीय वीकारोबार छोडकर दीक्षा इंग्लियार किइ, और उसका इंतकाल हुवा, उज्जेनका राजाचंडमद्योत पोशिदगीसे वीतभय पतनमें-आया और एक स्वर्ण गुलिका दासी-और-उसमृत्तिकों उज्जेन लेगया, जब उदयनकों यहबात माऌम हुइ बडी फौजलेकर चंड प्रयोतका पीछा किया-मारवाडके रास्ते मुल्क मालवेमें जाकर शहर उज्जेन कों घेरा, चंड पद्योतभी बडी तयारीसे सामने आया और दोनों-का जंगहुवा, आखरीश-चंड प्रद्योतने सिखस्तखाइ, और उदय-नकी फतेहहुइ,-इस किस्सेका कुछ हिस्सा उज्जेनकी तवारिखमें बतलायगें, यहांइतनाही लिखना काफी हैकि-उदयनकी फतेह हुइ और अपनेवतन वितभय पत्तनकों लोटआया,-

भेरेकस्वेकी मर्दुमगुमारी (१७४२८) मनुष्योंकी-न्याजार रवन्नकदार-और-हरेक किसमकीचीजें यहांपर मिलसकती है, पेस्तर जैनश्वेतांवर श्रावक यहां बहुतथे, मगरदिनपरदिन कमहोते गये, थोडे अर्सेकी बातहै दोचार श्रावकथे-मगर-वेभी शहरगुज-रानवाल तर्फ चलेगये, एक-जैनश्वेतांवर मंदिर यहांपर मौजूदहै, और एकपूजारी तैनातहै, आये गये यात्रीयोंसे सर्वचलताहै,

ऐसी जगहएरकोइ यात्रीमंदिरकी मरम्मत करावे—और— धर्मशाला बनवावे बहुतअछीबातहो, वरना ! जोकुछ अबहै वह-भी-न-रहेगा, यात्री यहां आनकर मंदिरके दर्शनकरे, और जो-कुछ बनपडे तिथेमें देवे, तिथेमें खेरात करना वडापुन्यहे, मेंरेके पास-पिंडदादन खानमें जैनश्वेतांबर श्रावककोंके घर पनराह वीस आबादहे, तीर्थ वितमयपतनकी जियारत करके यात्री रैलमेसवार होवे और मुक्कोंबाल जंकशन होतेहुवे वापिस लालामुसाजंकशन आवे, लालामुसासे शहर गुजरात और केथला देशनहोते वजीरा-बाद जंकशन उतरे, रैलकिराया पेस्तर लिखचुके है, वजीरावादसे जंबुजानेवाली रैलमें सवार होकर-सोधरा-बेगोवाला-संत्रियल-उगोकी-स्यालकोट-डालोवाली-मुचेतगढ-रणविरसिंह-मिरानसा-हव-और-सतवारी केंटोन्मेट देशनहोते-जंबुकेपास टावीटशनउतरे, वजीराबादसे यहांतक रैलकिराया नवआने नवपाइ लगतेहै,-

🖙 [बयान-दाहर-जंबु-और-कादिमर.]

मुत्क काश्मिरकी अमलदारीमें राज्यकी दखनपश्चिम सीमाके पास—चनावनदीकी सहायक टावीनदीके कनारे जंबु एक निहायत उमदा शहरहे, काश्मिर महाराजका तख्त जंबुमेंभी है और श्रीनगरमी राजधानी कामिरहीकी है, सन (१८९१) की मर्दुमाश्चरीमें जंबुकी मर्दुमशुमारी (३४५४२) मनुष्योकीथी, राजमहल नदीके दाहने कनारे और किला वाये कनारे पर नदीकी सतहसे (१५०) फीट उपरकों है, जंबुका बाजार बहुत अला और हर किसमकी चीज यहांपर मिलसकती है, मकान उमदा और खूबसुरत बनेहुवे यहांसे श्रीनगरतक सोदागीरीका मार्ग-और आमदरफत होतीरह-ती है, मुलककाश्मिरमें पेस्तर जैनोकी आवादीऔर जैनमंदिरथे. मगर अब नहीरहे, यात्री अगर क्षेत्रफरसना करना चाहे-तो-

खुश्किरास्ते श्रीनगर जासकते है, इका-बगीजाती है, रैलनहीगइ,-मुल्क काक्मिरमें श्रीनगर वडा शहरहै, सन (१८९१) की∽ मर्दुमशुमारीमें श्रीनगरकी मर्दुमशुमारी (११८९६०) मनुष्योंकीथी राजमहल काविल देखनेके बनेहुवे है, गर्मीयोंके दिनोंमें काश्मिरके महाराज-जंबुसे यहां आनकर रहते है, महाराजगंज बाजार नामी और-जिस चीजकी दरकारहो-यहां मिलसकती है, शालदुशाले यहां उमदासे उमदा बनते है और यहबात आमम्रुटकोमें मशहूरहैकि दुशाले काश्मिरके मानींद किसी मुल्कमें नहीवनते, रेशमी दस्तका-रीभी यहां उमदा बनती है,--स्कुल-अस्पताल-और-टंकशालघर अछे मकान वनेहुवे है,--और--राममुन्जीवाग काविल देखनेकी जगहहै,-काश्मिरके पहाड-नदी-झील-और बन बडेसोहावने और जाडेके दिनोमें यहां ठंड बहुत पडतीहै, बल्कि ! पहाडोंपर बर्फ जमजातीहै. बादाम-पिस्ते-सेव-अंगुर-नासपाती-आछचा-शाह-दाना-सहतुत-और-अखरोट वगेरा मेवा यहां ज्यादह होताहै, जेहलपनदी काक्ष्मिरसें निकसीहुइ और दुसरी कइ छोटी नदीयेंभी इसमे आकर मिली है, काश्मिरमें कइ-खानें-लोहेकी और जंबुकी पहाडियोमें सुर्माभी पैदाहोताहै, कस्तुरियेमृग--वराहसिंगा--और-बडाहिरणभी यहांकी पहाडियोमें अकसर नजर आता है, पामपुरमें केशर पेदा होती है, काझ्मिरके आदमी बडे मजबुत और खुवसुरत होते है,-काक्मिरमें संस्कृत विद्याकी पेस्तर बडी तरकीथी बडेवडे आलादर्जेके पंडित यहां होचुके-यात्री-जंबुसे रैलमे सवार होकर वापिस उसी रास्ते वजीराबाद जंकशन आवे,-रैलकिराया अवल लिखचुकेहै,-

वजीराबादसे-गुजरानवाल--लाहोर-अमृतसर-जालंधर-लुधि हाना-अंबाला-मेरद होते वापिस गाजियाबाद आना, रैलकिरामा और रास्ता पेस्तर बतला चुकेहै, -टाइमटेबलमें सब बातका खुला-सा लिखारहताहै देखलेना, -प्रल्क पंजाबमें -शतजल -ब्यासा-रावी चनाव-और-जेहलम-येपांच बडीबडी नदीयां है, और इसी स-बबसें इसका नाम पंजाब कहलाया, संस्कृत जवानमें पांचाल बो-लते है, -गाजियाबादसें तीर्थकंपिलपुरकीजियारतके लिये रैलमें सवार होकर-मारीपट-दाद्री-अजायबपुर-सिंकंदराबाद--वायर -चोलाबुलंद शहर-खुर्जा-डामर-सोमना-कुलवा-अलिगढ-माद्रक-सासनी-हाथरससीटी (मंडु)-हाथरसरोड-रितकानागला-सिकं दरारोड-अगसोली-मरेहरा-काशगंज-वधारीकला-साहाबारटाउ-न-गंजडुंडवारा-पिटयाली-दर्वावगंज-और-स्दैन होतेहुवे कायम गंजटेशन उतरना, गाजियाबादसे हाथरस जंकशन तक रैलिकराया एकरूपया एकआना, और हाथरस जंकशनसे कायम गंजतक चौ-दहआने लगते है,—

🕊 [तवारिख-तीर्थ-कंपिलपुर]

टेशन और कायमगंजके बीच एककोशका फासलाहै, सवा-रीकेलिये इका-बगी-तयार मिलती है शहरमें जाकर सरायमें टहरे, सराय यहांपर दोबनीहुइहै एक बीचशहरके और दुसरी बहार, तीर्थ कंपिलपुर यहांसे तीनकोशकोफासले पर वाके है, सडक कची बनीहुइ इका-बगी-मजेमें जासकते है, कायम गंजसे शुभहके वख्त रवाना होकर जियारत करके शामकों वापिस आसकतेहो, खान पानकी चीजे वहांपर मिलसकेगी मगर उमदातौरपर नही, बहेतरहै कायमगंजसे इंतजाम करतेजावे-कंपिलपुर पेस्तर बडा गुलजार शहरथा, तेरहमे तीर्थकर विमलनाथ महाराज इसीकंपिलपुरमें पै-दाहुवे-चवन-जन्म-दीक्षा-और-केवलज्ञान-ये-चार कल्याणक उनके यहांहुवे,-कृतवर्मा राजाके घर-स्थामा रानीकी कुखसे माध

स्रदी (३) उत्तरा भाद्रपद नक्षत्रकेरीज उनका यहां जन्महुवा, बहुत अर्सेतक उनोने कंपिलपुरके तख्तपर अमलदारी किइ, दीक्षाके पेस्तर उनोने यहांपर बहुत खैरात किइ. माघशुदी (४) के रौज उनोने दुनियाके एशआराम छोडकर दीक्षा इंग्लियारिकइ पोषसुदी (६) के−रौज उनको यहां केवल ज्ञानपैदा हुवा, इंद्र देवते उनकी खिदमतमें आतेथे. दसमे चक्रवर्ती हरिषेण-और-बारहमे चक्रवर्ती ब्रहमद्त्तजी इसीकंपिलपुरमें हुवे. बडेबडे दौलत मंद यहांपर पेस्तर आवाद्थे. तीर्थकर महावीर स्वामीके निर्वाण हुवेबाद (२२०) वर्ष पीछे अश्वमित्र नामकेचोथे निन्हव इसीकं-पिलपुरमें आनकर सुधरे, गांगलिकुमार इसीकंपिलपुरका वाशिंदा था, जोकि-पृष्ट चंपानगरीके राजा-शाल-महाशालका-भानजाथा, पृष्ट चंपानगरी हिमालय पहाडकी उत्तरकों मुल्क तिब्बतमें आबा-दथी, जब–शास्त्र–महाशास्त्रने दुनियाछोडकर तीर्थंकर महावीर स्वामीके पास दीक्षा इच्हितयार किइ, अपने भानजे गांगलिकुमार-कों कंपिलपुरसे बुलाकर अपनीगदीदिइ और आप मुनि होगये, दुर्मुख नामका राजा जोइसी कंपिलपुरमें अमलदारी करताथा एक रौज जब बागकीसैरकों निकला एक मोटाताजा बेंल रास्तेमें उ-सकी नजरसे गुजरा, देखकर दिल्लमें निहायत खुशहुवा और कह-नेलगा क्या उमदा वेंलहै, दुसरे रौज वही बेंल मरगया, और उ-सीरास्तेमें पडाहुवाथा जिसरास्तेसे राजादुर्धुख फिरनिकले, और देखते है–तो–वही बेंछ मराहुवा नजर आया, इस परसे उसकीं नसीहतहुइकि-दुनियामें-एकदिन सबकों मरनाहै, इससें यहीग्रुना-सिवहै दुनयवी कारोवार छोडकर दीक्षा इंग्लियार करना, दुसरे रोज उनोनें वैसाही किया,

द्रुपदराजाकी कुंवरीद्रौपदी इसी कंपिलपुरमें पैदाहूइथी, और उसका स्वयंवर मंडप यहांही रचागयाथा, जो रवनक और आबा-दी पेस्तरथी अब नहीरही, आजकलकरीब (६००) घरोंकी आबा-दीका कस्वा रहगया, जैनश्वेतांवर श्रावकोका घर एकभी नहीरहा, बाबु छोटालाल सरूपचंद साकीन लखनउका तामीर करवाया-हुवा-तीर्थंकर विमलनाथ महाराजका वडाआलिशान मंदिर यहां पर मौजूदहै, जिसकोअंदाज पचास वर्ष हुवेहोगे, पेस्तर जबिक-चक्रवर्ती राजाओका जमानाथा वडेवडे जैन मंदिर और मृर्त्तिये यहांपरथी, तीर्थोमेंयह अकसर होता चलाआया एक मंदिर पुरा-ना होकर गिरगया किसी खुशनशीवने उसकों फिरसे बनवाया, इसीतरह तीर्थ कायम बनारहताहै,-इसमंदिरमें मूलनायक तीर्थकर विमलनाथ महाराजकी मृत्तिं तख्तनशीनहै, दोनोंतर्फ दो-मृत्ति-तीर्थंकर चंदाप्रभुकी और आगे तीर्थंकर महावीर स्वामीकी मूर्तिभी इसीवेदीमें जायेनशीनहै, दर्शनकरके दिल खुशहोगा, अतराफ मं-दिरके कोट पकावनाहुवा-और-चारकोनेमें चार छत्रीये कायमहै उनमे तीर्थकर विमलनाथ महाराजके-चवन-जन्म-दीक्षा-और केवलज्ञान-ये-चार कल्याणक और-उनके-कदम जायेनशीनहै,-मंदिरके कोटके नीचे एकतर्फ इसकदर खड्डा होगयाहैकि-वारीशके दिनोमें पानीकी मारसे कोटकों खतराहै, अगर पथर और चुनेसे उसखड्ढेकों भरादिया जाय और पानीके जानेका रास्ता बनादिया जायतो कोटकीहिफाजत बनीरहेगी और तीर्थ कायम रहेगा, बडे तीर्थोमें बहुतसे मंदिरवनेहुवेहै मगर ऐसे तीर्थीमें नया मंदिरवनाना या-पुराने मंदिरकी मरम्मत कराना बडेपुन्यका कामहै,

धर्मशाला यहांपर एक निहायत पुरुता भंडारी ग्रंनालाल साकीन फरकाबादकी वनवाइहुइ मौजूदहै, जिसमें (२५०) आ-

दमी बखूबी कयाम करसकते है, इसकों बनेबहुत अर्सा होगया इसकी मरम्मत होना दरकारहै,—आगेका दरवजाभी मरम्मत होने के काबिलहे, इसतीर्थकी जेरनिगरानी लखनउके जैन बेतांबर श्रावक लोग करतेहें. मंदिरका खर्चा—और—पूजारीकी तनस्वाह वगेरा भी लखनउके श्रावक देतहें, अगर कोइ यात्री अपनी दौलत खर्च करना चाहे ऐसे तीर्थमें करे, तुमने अकसर कइदफे देहली आगरेकी सफरिक होगी मगर कंपिलपुर तीर्थकी जियारत नहीं किइ बडेअपशोसकी बातहें, खेर ! अबभी खयाल रखों, जिसके बडेभा गयहों ऐसे तीर्थकी जियारत करे, कंपिलपुरकी जियारतकरके यात्री कायमगंज वापिस आवे, और कायमगंजसे रैलमें सवार होकर हाथरस रोड आवे, रैलकिराया पेस्तर लिखचुके हैं, हाथरसरोडसे मेंड—हाथरस सीटी—मुरसान—राया—मथरा केन्टोन्मेन्ट होते मथरा सीटी उतरे, रैलकिराया चारआने,—

🖾 (तवारिख-तीर्थ-मथरा.)

पश्चिमोत्तर प्रदेश आगरा विभागमें जमनाके दाहने कनारे जिलेका सदर मुकाम मथरा एक पुराना शहरहै. जैनशास्त्रोमें इसके आसपासकी जमीनको सुरसेन देश लिखाहै, तीर्थंकर सुपार्श्वना-थजीकः वच्त यहां बहुतसे जैनमंदिरथे, यादव कुल दिवाकर-समुद्र विजयजी—उग्रसेनजी—और-वसुदेवजी बगेरा दशदशारवर-वीर पुरूष इसी मथरामें हुवे, कृष्न वासुदेव और उनके बढेभाइ बलमद्रजी यहांही पैदाहुवे जो दुनियामें बढे नामी ग्रामी और मशहूर कहलाये. १-अर्कस्थल, २-चीरस्थल, ३-पदमस्थल, ४-कुरूस्थल, और-५-महास्थल येपांच यहां पेस्तर बढेबडे स्थल-थे,-लोहजंघवन-मधुवन-छिल्वन--तालवन-कुमुद्वन--हुद्वन--

भंडीरवन-खदीरवन-कामितवन-कोंलवन-बहुलवन-और-महावन ये-(१२) वन यहांपर थे. इनमेंसें कइ मौजूदहै, कइनहीरहे, द्यंदावन इसवख्त बहुत तरकी परहे,-जैनाचार्य आर्य रक्षितसूरि यहां तशरीफ लायेथे उसवख्त जैनोंकी आवादी यहां अछीथी. स्कंदिलाचार्यने यहां जैनसंघकों इकटाकरके जैनागमका अनुयोग मवर्तीयाथा, जिनभद्रगणिक्षमाश्रमणने महानिज्ञीयसूत्रका यहां अ-तुसंधान कियाथा, कृष्नजीकी जन्मभूमिहोनेसे वैश्नव संपदाय वा-छे−शहर मथराकों वडा तीर्थ मानते है. उनकी संपदायके बहुत मंदिर और विश्रामघाट वगेरा कइ घाट यहां बनेहुवे है. चीना म्रसाफिर−फाहियान−और−हवांक्तसांग जब हिंदुस्थानकी सफरकों आयेथे-उनोने अपने सफरनामेमें लिखाहै हमने मथराको देखा फाहियान अवल आयाथा, हवांक्तसांग (२५०) वर्षके बाद आया हवांक्तसांगने छिखाहै उसवस्त मथरामें (२०) बौद्धमठ-थे,–मथराजिलेमें बहुतेरे गांव-–उपवनः–और-–कुंजोसे घेरे हुवे है, जिलेकी खास फसल गेहु–जवार–बाजरा-–कपास–और– उखहै. सन (१८९१) की मर्दुमशुमारीके वरूत खास शहर म-थराकी मर्दुमथुमारी (६११९५) मनुष्योंकीथी, वडी बडी सडके बहुतेरे मंदिर और-मकान-पथरके बनेहुवे है, बाजार लंबा चोडा और हरेक किसमकी चीजें यहां मिल सकती है, बडीबडी आलि-शान इमारतें बागवगीचे-और दौलतमंद लोग यहां आबादहै. महोले घियामंडीमें एक जैनश्वेतांवर मंदिर बनाहुवाहै, थोडे वर्स पेस्तर जैनर्थेतांवर श्रावकोकी आवादीभीथी, मगर जमाने हालमे कमहोगइ, इसलिये इस मंदिरकी जेरनीगरानी लग्नकर गवालियर के जैनश्वेतांबर श्रावक लोगरखते है. इसमें मूलनायक तीर्थकर पा-र्श्वनाथ भगवानकी यूर्त्ति-निहायत खूबसुरत एक बिलस्तवडी तख्त

नशीनहै, बायीतर्फ एक पुरानी मूर्त्ति जोकरीब देढहाथवडी है दर्शन करके दिल खुशहोगा, मथराके बहार थे डी दूरपर जो जैन टीला पुरानी जगहहै, कहतेहैं यहां जैनोकी आबादी और मंदिरथे. म-गर अब तमाम विरानहै, जब-सर-ए-किनंगहाम साहवने-पुराने शिला लेखोंकी तलाश किइथी-तो-कइजगहसे पुराने लेखिमलेथे, एकलेखमें लिखाहै, सिद्धं० संवत् (२०) गृष्यरूतुका पहला महिना तिथि पुनमके रौज जयपालकी माता-वि-की-स्त्री-दत्तिलकी पुत्रीदत्ताने यहकीत्तिमान वर्द्धमान स्वामीकी मूर्त्ति चतुर्विध संधको अर्पण किइ. और कौटिक गछ-वाणिज्यकुल वज्रीशाखाके सीरी भागके आर्यसिंह-आचार्यने इसकी प्रतिष्टाकिइ, दुसरे छेखमें छि-खाहै अरिहंतकों नमस्कार सिद्धकोंनमस्कार संवत् (६०) उष्न रूतुका तिसरा महिना तिथि पंचमीके रौज यह स्थान उस समुदा-यके उपभोगके छिये दियागया जिसमे चारवर्गका समावेश होताहै, दुसरा अर्थ यहभी निकलताहैकि-एकएक वर्गके लिये इसका एक-एक हिस्सा देनेमें आयाथा, तीसरे छेखमे छिखाहै सिद्धं महाराज कनिष्कराज्यके संवत् (९०) महिना पेहले तिथि पंचमीके रौज ब्रहमाकी पुत्री-भट्टि मित्रकी स्त्री-विकटाने सब जीवोंके फायदेके वास्ते-यहकीिं मान वर्द्धमानकी प्रतिमा बनवाइ. इसकी प्रतिष्टा कौटिकगण-वाणिज्यकुल-और-वयरी शाखाके आचार्य नागनंदीने किइ, चोथेलेखका पुरेपुरा समाधान मिलना मुक्किलहै लेकिन ! अवलपंक्तिके एकडुकडेकेदेखनेसे माऌम होताहैकि-यह अपर्णकर-नेका काम एकब्रीसे हुवाथा-और वह अम्रुक पुरूषकी-स्त्री तरीके लिखनेमें आइयी. दुसरीपंक्तिमें कौटिक गगतः मश्रवाहनतः कुलतो मध्यमातः शाखातः छिखाहै, पांचमें छेखका मतलब यहहैकि-वर्षः (४७) उष्तरूतुका दुसरा महिना मीति विश्वमीके रोज यह एक पानी पीनेका स्थान अर्पण करनेमें आया, छठे लेखमे लिखाँहै अरिहंत महावीरकों नमस्कारहो, राजावासुदेवके संवत (९८) वर्षारूतुका चौथा महिना (११) के यह एक स्रीकी तर्फसे वन-वायीगइ. और पारिहासिक कुलकी पौर्णपत्रिका शाखाके आचार्य आर्यरोहने यहस्थापन किइ यहलेख एक अलगपाषाण परहै इस-लिये निश्चय नहीं कियाजाताकि-यह-क्याचीज स्थापनिकइ,

इनमें जो अवल लेखकी अखीरमें कौटिकगछ-वाणिज्यकुल-वजी शाखावगेरा नामदर्जहै जैनश्वेतांवर आम्नायके कल्पसूत्रसें संबंध रखते है, तीसरे छेखकी अखीरमें जो कीर्त्तिमान वर्द्धमान स्वामीकी मृत्ति-कौटिक गछ-वयरीज्ञाखाके आचार्य नागनंदीने मितिष्टित किइ लिखाहै, यह मूर्ति जैनश्वेतांवर आम्नायकी सबुत सबुत होती है, क्योंकि-कौटिकगछ-वयरीशाखा-कल्पसूत्रमें साफ जाहिरहै, और कल्पमूत्र जैनश्वेतांवर आम्नायका सूत्रहै, जमीनसे निकलेहुवे शिलालेखका और कल्पमूत्रका पाठ एक मिलगया,-चोथे लेखकी अखीरमें कौटिकगछ-त्रश्रवाहनकुल-मध्यमा शाखा लिखाहै-छठे लेखकी अखीरमें पारिहासिक कुल और पौर्णपत्रिका शाखा लिखी-ये-सब शाखा-कुल-और गणभीजैनश्वेतांवर आ-म्नायके शास्त-कल्पसूत्रसे संबंध रखते हैं. जीजो संवत लिखाहै हिंदुस्थान और सीथियादेशके-बीचके राजा कनिष्क-और वासु-देवके जमानेके-है, अबतक इन संवत्सरोकी शुरूआत माल्मनही हुइ मगर इतना सबुत होसकताहैकि-हिंदुस्थान और सीथिया देशके राजाओंका राज्य इस्वीसनके अवल सेकडेकी अखीरसें–और

दुसरे सेंकडेके पौन भागसें कमनही होसकता. क्यौकि-इस्वीसन (७८) वा-(७९) के वर्षमें कनिष्कमहाराज-तख्त नशीन हुवा स-बुत होचुकाहै,-

मथराकी जियारत करके जो यात्री दंदावन जानाचाहे तो व जिर्येरैल जासकते है. मथरासे (६) मील उत्तर यमुनाके दाहने कनारे दंदावन एक गुलजार कस्वाहे. मथरा लावनीटेशनसें (८) मीलकी रैलवेशाखा दंदावनकों गइहे, सन (१८९१) की मर्दुम-मग्रमारीके-वरूत-दंदावनकी मर्दुमग्रमारी (३१६११) मनुष्यो की-जैनम्बेतांवर श्रावकोंकी आवादी यहांपर नहीरही, बाजार लं-बाचोडा-और-हरेक किसमकी चीजे यहांपर मिलसकती है, नि-जवन-सेवाकुंज-कालिद्रह-और-चीरघाट-अलग अलग स्थानबने हुवे है, दंदावनसे यात्री-वापिस मथरा केन्टान्मेट टेशनको आवे, और वहांसे आगरे जानेवाली रैलमें सवार होकर-मेंसा-पारखाम और अचनेरा जंकशन होतहुवे आगरा फोर्ट जावे. रैलकिराया छआने लगते है,—

🕼 [बयान-शहर-आगरा,]

जमनाके दाहने कंनारे जिलेका सदरमुकाम आगरा एक अजिब और नायाब शहरहै, सन (१८९१) की मर्दुमशुमारीके
बख्त आगरेकी मर्दुमशुमारी (१६८६६२) मनुष्योंकीथी. आगरेकाद्सरानाम अकबराबादभी बोलतेहै, करीबटेशनके धर्मशाला
बनीहुइ और किरायेकेमकानभी मिलसकतेहै, यात्री जहां सुभीता
देखेकयाम करे, शहरके मकान निहायतखुबसुरत और पथरके
बनेहुवे जिनपर खुलीलत देखकर दिलखुशहोगा, सडकेलंबीबोडी
बजार गुलजार-पुरीकचौरी मेवामिटाइ-शाल दुशाल और तरह-

तरहकी चीजे यहांपरमिलतीहै, शामकेवस्त बडीरवन्नकदेखोगे. जगहजगहपरखुमचेवाले तरहतरहकी मीठाइ और चुरनवाले चुरन वेचरहेहै, अमीर उमराव उमदापुशाकपहनेदुवे शामको जबहवा-खोरीको निकलतेहै वडीही स्वन्नक मारूम देतीहै, जैनयात्री लो-नमंडी और रोशनमहोलेंमंजाकर जैनमंदिरोके दर्शनकरे, बडेबडे आिळशानजैनश्वेतांवरमांदिर वनेहुवेहै, जिनमें चिंतामणी पार्श्वना-थजीका मंदिर बडाखूबसुरतहै,-जबिक-जैनश्वेतांवराचार्य हीरवि-जयसारिजी शहर आगरेमें तशरीफलायेथे जैनधर्मकी तरकी अछी हुइथी. जमानेहालमें जैनश्वेतांवरश्रावकोके घर यहांपर (२०) के अंदाजहै.-कइवागवगीचे और मकान वडेहीसोहावन वने हुवेहै,

जमनाकेकनारे पकाघाट-और-रैलका दोमंजिला पुल-निहा-यतपुरुता बंधाहुवाहै, आगरेमें कारचोवीका काम-पथरकाकाम-और विजानेकी दरी उमदावनतीहै. जमनाके दाहनेकनारे आ-गरेका किला एकदेखनेकी चीजहै, और जोकोइ उसमें जानाचाहे पासलेकर देखनेकों जायाजाताहै, सन (१५६६) इस्वीमें बाद-शाह अकवरने इसकों तामीर करवाया, दिवानेआम-दिवानेखास-सुनहरा सायवान-अंगूरीवाग-शीशमहल वगेरा कीमती मकान इसमें बनेहुवे है, किलेसें-एक मीलके फासलेपर जमनाके दाहने कनारे ताजमहल एक मशहूर मकान है, सन (१६३०) इस्वीमें बादशाह-शाहजहांने अपनी मुमताज महलबेंगमकी कबरके लिये बनवानाग्ररू किया जोकि (१७) वर्षके अर्सेमें तयारहवाथा, चारोंतर्फ वाग-चारसडके-जलके फवारे-होज-मारबल पथरका-फर्स-कइ कमरे-महेरावें-और-चारोंतर्फ चारमनारे बनेहुबे है, जैन यात्री आगरेके जैनमंदिरोके दर्शन करके तीर्थ-शौरीपुरकीजियारत कळिये रवानाहोवे, आगरेसें - कुवेरपुर-एतमादपुर-इंडलाजंकशन-

हरनगांव फिरौजाबाद-और-मकनपुर होते सिकोहाबाद टेशनउतर रैलकिराया करीव छआने तीनपाइ लगते है,—

🗠 (तवारिख-तीर्थ-शौरीपुर,)

सिकोहाबाद टेशनसें सात कोशके फासले जमना कनारे शौरीपुर एक निहायत पुराना जैन तीर्थहै, यात्री सिकोहाबाद टेशन
उत्तरकर सरायमें कयामकरे और खाने पीनेसें फारिगहोकर शौरीपुरजानेकी तयारी करें. सिकोहाबादसें चार कोश तक सडकपक्कीमिलेगी आगे कची है, इका-बेशक! जासकताहै. मगर कमजोरघोडा बिल्कुल-न-चलसकेगा, इकेका किराया जातेआते अंदाज
तीन रूपये लगेगा, और उसमे तीन सवारी जासकेगी, वडिफजर
सातवजे सिकोहाबाद सरायसे रवाना होकर-वारांवजे शौरीपुर
पहुचसकतेहो और अगर तीर्थ शौरीपुरकी जियारत करके उसीरौज लोटना चाहोतो लोटसकतेहो मगर बेहतरहै एक रौज यहांपर
कयाम करना, भगा भगीकी जियारत करना ठीकनही. सिकोहाबाद सरायसें रवाना होते वष्त खानपानकी चीज पुरीकचौरी
मिठाइ वगेराका इंतजाम करलेना जैसी उमदाचीज यहांमिलेगी
वहां-न-मिलेगी.

तीर्थकर नेमनाथमहाराजकी जन्मभूमि शौरीपुर-पेस्तर बडा आबाद और रवनक अफज्ंथा, मगर जमाने हालमें वहरवसक नहीरही, पेस्तर बडेबडे दौलतमंद और ख्रानसीब आबादथे जिन् नकेघर बेंशुमार दौलतथी, आज लखपितभी कमनजरआते हैं, सीर्फ एकहजार आदमीयोंकी वस्तीका कस्बारहगया, न कोइ-जैनन्वेतांबर आवकहै-न-धर्मशाला सीर्फ ! जमनाकी वीहडमें एक उंची पहाडी-पर बेंमरम्मत पांच जैनन्वेतांबर मंदिरखंड है, जिनमें चार खालीहै

एकमें-तीर्थकर नेमनाथमहाराज्के कदम तख्तनशीनहै,-जबतुमारा इका शौरीपुर पहुचे जहां सुभीतादेखो कयाम करलो और एक मीलके फासलेपर जमनाकी वीहडमें ऊंची पहाडीपर जाकर तीर्थ शौरीपुरके जैनश्वेतांवर मंदिरोंकी जियारतकरो, जिसमंदिरमें तीर्थ-कर नेमनाथमहाराजके कट्म तख्तनशीन है चारोतर्फ इसके चबु-तरा बनाहुवा है, पुरानेकदम अवनहीरहे, संवत् (१९०५) के मितिष्टित मौजूदहै इसके दर्शनकरे, चारमंदिर जो खालीपडे है उन-की कारीगिरी और खुबसुरति क्या उमदा वनीहरह मगर मूर्ति-के न होनेसे विरानहोगये, दिवारे देखोतो क्या! पुरुता-और-इ-टेंबतौरतांबेंके चमकरही है, जैनश्वेतांबराचार्य हीरविजयस्रिजी जबिक-यहां-तक्षरीफलायेथे और जियारतिकइथी बडाजलसाहु-वाथा, और तीर्थका जीर्णोद्धार करवाया गयाथा, जिसवातकों आजकरीब साढेतीनसोवर्षके होगये, इनदिनोमें मरम्मत होना द-रकार है.--

इस मंदिरकी जेरनिगरानी लक्कर ग्वालियरके जैनश्वेतांबर श्रावकलोग रखते है, पूजारीवगेराका-वेही-वंदोवस्तकरते है, शौ-रीपुरका रहनेवाला एकशस्त्र जो हमेशां एकमील जंगलमेंजाकर उसमंदिरकी पूजाकर आताहै, और उसकों सालीयाना तनस्वाह जो उनकेवहांसे मुकररहै देतेहै, जगह निहायतपाकीजा देखकर दिलखुशहोगा, एकदिन वोथा इसमुकामपर बडेबडे राजेरहीश और दौलतमंद यात्री यहांआतेथे, आज वोजगह मानो! विरान और उजाडपढी है एकजनेश्वेतांबर धर्मशाला यहांपर बननाजरुरी है, कोइखुशनसीव सखी यात्री इसतीर्थमें (१००००) रुपये सर्फकरे इसतीर्थका उमदातीरसे जीर्णोद्धार होसकताहै, पांचहजारमें धर्म-शाला कायमकरे पांचहजारमंदिरकी मरम्मतमें लगावेतो अलवते ! इसतीर्थका कुछअसेतक नामनिशान बनारहेगा बहुतसे यात्री बडे बडे तीर्थोकी जियारतकों जाते है मगर ऐसे तीर्थकी जियारतकों भी जरुर जानाचाहिये, वहांपरजानेसे तमामहाल बख्बीमाल्म होसकेगा,— तीर्थ-शौरीपुरकी जियारतकरके यात्री उसीरास्तेवापिस सिकोहा-बाद आवे और रैलमें सवारहोकर-करोरा-भदन-बलराइ-जशवं तनगर-सरायभोपट-इटावा-एकदिल-भरथना-सामहोन-अचल्दा पेटा-फफुंद-कानचौसी-झींझक-अवियापुर-रुरा-मेथा-भावपुर और पांकी-होतेहुवे-टेशन कानपुर उतरे,—

👺 (द्रबयान-कानपुर)

हाथरस जंकशनसे (१८८) मील पूरवकों इलाहाबाद विभा गमें गंगाके दाहने कनारे जिलेका सदरमुकाम कानपुर एक गुल-जार शहरहै, सन (१८९१) की मर्दुमथुमारीके वरूत कानपुरकी मर्दुमशुमारी मयछावनीके (१८८७१२) मनुष्योकीथी, टेशनसे शहर कुछ फासलेपरहै और सवारीकेलिये इका-वगीतयार मिलतीहै. वेटकर शहरमें चलेजाओ. घर्मशाला कइवनीहुइ जहां सुभीता देखो कयामकरो, वाजारकी सडकेलंबी चौडी मगर गली ओर रास्तेतंगहै, वडेवडे आछिज्ञान–रंगरौज्ञन कियेहुवे मकान–कोठिये यहां वनीहुइहै, कपडे वनानेकी कले-और-कइकारखाने यहां मौजूदहै वाजारमें हरेकिकसमकी चीजे पुरी कचौरी-मेवा मिठाइ-शाल दुशाले और जेवर जिसचीजकी दुरकारहो मिलसकती है, अनाजकी तिजारत यहां ज्यादह होती है, जैनश्वेतांवर श्रावकोंके घर वीज-और-एक जैनश्वेतांवर मंदिरयहां महेशरी महोलेमें मौ-जुट्है, जो भंडारी रूगनाथत्रसादजीका तामीर करवाया हुवा काविलदेखनेके है, यात्री जाकर वहां दर्शन करे, पासमें एकमकान जैनमुनियोंके ठहरनेके लियेभी मौजूदहै,

शहर कानपुर इन दिनोनें व्यापारकी तरकी परहै, नये कानपुरसें (२) मील पर पश्चिमोत्तर गंगाके दाहने कनारे पुराना
कानपुर आबादहै, बीच दोनोंके कई बाग और मेंदान नजर आतेहैं, हरिद्वारसे गंगाकी नहर (६३५) मील चलकर कानपुरके
पासगंगामें आमीलीहै, कानपुरसे एक रैल क्ष्लखनउ होकर अयोध्याको गईहै, और एक रैल इलाहाबाद होकरभी अयोध्या गईहै.
यात्रीकों कानपुरसे भरवारी देशनके पास कौशांवी नगरीकी जियारतकों जानाचाहिये, जोकि-कानपुरसे इलाहाबादकों जाते
रास्तेमें है,—

१८०० [तवारिख-तीर्थ-कौदाांबी,]

कानपुरसे रैलमेंसवार होकर-चाकेरी-सारसोल-कारविगोन विंदगीरोड-कंसपुर गुंगवाली-मालवा-कुरास्टी कल्यान-फतेपुर-

^{*} अवध प्रदेशमें जिलेका सदर मुकाम लखनउ एक उमदा शहरहै, सन-(१८९१) की मर्डुमशुमारीके वक्त लखनउकी मर्डुमशुमारी मयछावनीके (२७३०२८) मनुष्योंकीथी, मकान यहांके बडे पुरुता-द्रस्त-वाग-गुंवज-मीनार-और दौलत मंदलो-गोके मकानपर सोनेकी कलशीयां दिखपडतीहै. जैनश्वेतांवर श्रावकोके घर (५०) और (८) जैनश्वेतांवर मंदिर यहां मौ-जूदहै, बहोरनटोला-चुडीवालीगली-सोंदीटोला-और-फुलवाली गलीमें मंदिर बनेहुवेहै यात्री वहांजाकर दर्शनकरे, लखनउका खान पान-बोल चाल-और-पुशाक-उमदा, गोंल दरवजेसे अकबरी दरवजे तक बडी रवन्नक देखोगे. हुसेनावाद-अमीना-वाद-शाहनजफ-वेंलीगार्ड-केशरवाग-अजायव घर वगेरा देखने-की जगहहै.—

फेजुल्लाहपुर--रम्रलाबाद---टेनी--खागा-कुनवार-सिराथु--और-मुजातपुर होंते भरवारी टेशन उतरे, रैलकिराया करीव बारांह आने लगते है, टेशनके पास सराय वनीहुइहै जाकर उसमे कयाम करे, तीर्थ कौशांबी यहांसे खुक्कीरास्ते दसकोसके फासलेपर वाके है, सवारीकेलिये इका−वगी तयारमिलती है, इक्केकाकिराया जाते आतेकरीव तीन-या-चाररुपये लगेगे, और तीनसवारी व-खूबी उसमें वेडसकेगी, टेशनभरवारीसे शुभहकेचले बारांबजे पपोसागांव पहुचसकोगे, जहांसे कौशांवीनगरी करीब (२) कोशपर रहजा-ती है भरवारीसे चारकोस पकीसडक-और-आगे कचारास्ताहै. गांव-सडककी आजुवाजु रहजाते है रास्ताकठीन-बहुतसेकेथुकेपेंड और-गंगाकीनहर जो कानपुरसे इलाहाबादको गइहै मिलेगी. नहरकी वजहसे जमीन तर-और-अनाजकी पैदाश ज्यादहहोती है भरवारीसे परोसा गांवतक इक्केमेंजाना और वहांसे दोकोस आगे पैदल चलनाहोगा, क्योंकि–रास्ता–कठीनहै, इका–वगी–जानही सकते. कौशांवीतीर्थ यहांसे आगे दोकोसद्रहै, जिसकों आजकल कोसंवपाली बोलते है,-यात्री वहांजाकर तीर्थकौशांबीकी क्षेत्र-फर्सना करे.--

कौशांबीमें जाकर जहांसुभीतादेखे कयामकरे, और पूर्व-या-उत्तरकी तर्फ सहकरके तीर्थकर पदममस्रकी इबादतकरे, क्योंकि-तीर्थकर पदममस्रकी जन्मभूमि यही कौशांबी है, आजकल-न-कोइ यहां जैनश्वेतांबर मंदिरहै-न-श्रावकहै, सीर्फ ! क्षेत्रस्पर्शना करके तीर्थकी जियारतहुइसमझे, अगर कोइयात्री (२५०००) हजाररूपये खर्चकरके यहां मंदिरधर्मशाला बनवादे-तो-तीर्थ कौशांबीका फिरसे उद्धार होसकताहै, दुनियाकी नामवरीमें हजाराहरूपये खर्चकरते हैं मगर तारीफ उनकी है जो तीर्थकरोकी जन्मभूमिपर मंदिरमूर्ति धर्मशाला बनावे, जिनके बडेभाग्यहो ऐसे तीर्थकी जियारतकरे, आजकल कौशांबीनगरीकी आबादी कुल (२००) घरोकी रहगइ, एकदिन वोथा जहां झलाझल रोशनी-और-वेंग्रमार दोलतथी. आज वही जमीन वेंरवन्नकहै, चोथेकालमें जहांजहां तीर्थेकरोके कल्याणकोंकी भूमिथी पंचमकालमें वहां धर्मकी कमीहोजायगी ऐ-सा जो तीर्थकरोंका फरमाना था नजरसे देखलो,—

पेस्तर यहां कसुंभकेद्रख्त बहुतपेंदाहोतेथे इसिछये इसकानाम कीशांबीनगरी कहागया, छठेतीर्थकर पदमप्रभु इसीकीशांबीमें पेदा हुवेथे. और वत्सदेशकी राजधानी यहीकौशांबी कहलातीथी, च-वन-जन्म-दीक्षा--और--केवलज्ञान--ये--चार कल्याणक तीर्थंकर पदमत्रभुके इसी कौशांवीमेंहुवे, श्रीधरराजाकेघर सुसीमारानीकी कुखसे कातिकवदी (१२) चित्रानक्षेत्रकेरीज उनका यहां जन्म-हुवा, बहुतअर्सेतक उनोने कौशांबी पर अमलदारीकिइ, पेस्तरदी-क्षालेनेके एकसालतक वरावर उनोने यहां खेरातिक और काति-कवदी (१३) के रौज दुनियाके एशआराम छोडकर उनोने यहां दीक्षा इंग्लियार किइ, और चेतसुदी (१५) के रौज उनकों यहांकेवलज्ञान पैदाहुवा, इंद्रदेवता वगेरा उनकी खिद्मतमें आतेथे धवलशेठ-जोकि-श्रीपालजीकों-भरूअछ नगरमें मिलाथा इसीकौ-शांबीका वाशिंदा था, श्रीपालजीकी वाल्दासाहिवा यहांपर हकी-मकी तलाश करनेकों इसलिये आइथीकि-मेरेवेटेकी आर्जा-कोढ-की कोइरफाकरे, और उसने यहांपर एकज्ञानीम्रनिके मुखसें यह अजूवा सुनाथाकि-तुम-उज्जेनकों जाओ! तुमारावेटा अछाहो गया, तीर्थेकर महावीरस्वामीको चंदनवालाने उनकेतपका पारना यहांकरायाया, बडेबडे इकबालमंद शख्स यहां आवाद्ये, और बडेर्कीमती और मशहूर जैनश्वेतांवरमंदिर यहांपर मौजूदथे जिनके नामनिश्चान अवनहीरहे, उज्जेननगरीके राजाचंडप्रयोतने कौशांबी-पर चढाइकिइथी, और उसका इरादाथाकि—कौशांबीके राजाशता-निककी रानीमृगावतीकों-—लेकर अपनीरानी वनालुं,-—मृगावती बढीपाकदामनथी, जबतक शतानिकराजा लडतारहा चंडप्रयोत उसे-न-लेसका, जबशतानिकका इंतकालहुवा रानीमृगावती—ती-र्थकर महावीरस्वामीके चरनोमेंगइ और दुनियादारीको छोडकर दीक्षाइस्तियारिकइ,—जबकोइश्चरूश दुनियादारीको छोडकर दीक्षा इस्तियारिकरे और धर्मका सहारालेवे तो उसको कोइ क्याकरस-कताहै ? दुनियामेंधर्म उमदाचीजहै, अजहद तकलीफमेंभी धर्मही कामदेताहै,—

शतानिकराजाका वेटा—उदयन—जोकि—गानेकेइल्ममें-आलादर्जेपर पहुचाहुवाथा चंडप्रद्योतने चाहा उदयन—उज्जेनमेंआकर
मेरी लडकी वासवदत्ताकों इल्मगानेका शिखलावे, चंडप्रद्योतने
उदयनको बुलानेकी कौशिशकिइ, मगर उदयन राजी—न—हुवा,
असलमें इल्मदारलोग अपनेइल्ममें मशगुलरहते है, रूपयेपैसेकी परवाह नहीकरते, आखीरकार चंडप्रद्योतने उदयनकों धोखादेकर
उज्जेन बुलवाया, और कहा वासवदत्ताकों गाना शिखलाओ, उदयननेकहा इल्मसिखलाना—उस्तादकी मरजीके ताल्लुकहे, अगर
मुताविक मेरेफरमानके चलेगी, वेशक! इल्म सिखजायगी. चंडप्रद्योतने कहा तुम तालिमदेना शुरुकरो, उदयनने कुबुलकिया खेर!
में उसे तालिमदुंगा, चंडपद्योतने उदयनकों कहा-वासवदत्ता एक
आस्त्रसे कांणी है—वह—शर्मकरेगी, इसलिये तुमारे दोनोंके वीचमें
पर्दा वांधकर तालीमदेना, इधर वासवदत्ताकों कहा उदयनके वदनमें—कोढकी वीमारी हुमकों द्याजाय, आखरीक पदीलगाया

गया, और तालीमदेना शुरुकिया, बादचंदरौजके जबएकरौज वा-सवदत्ताने गानेमें भूलिकइ उदयननेकहा! अरि! कांणी!! ऐसा बिताला क्यों गाती है! वासवदत्तानेकहा—यहां कांणी कौनहै? आपकैसेबोलते है? उदयननेकहा—में—नहीजानता, तुमारे वालिदने कहाथाकि—वासवदत्ता एकआंखसे कांणी है, वासवदत्ताने खयाल किया—जैसे—मुजकों कांणीवतलायी—मगर—में—कांणीनहीहुं, इसी तरह—येभी—कोढीनहोगें, वासवदत्ता अपने वालिदकी धोखावाजीसे नाराजहुइ, और उदयनकेशाथ कौशांबी—जानेकोतयारहुइ, उदयनने कहा—में—राजकुमारहुं इसतरह छीपीहालतमें—न—ले—जाउगा, तुमा-रे—वालिदकों इत्तिलाकरके लेजाउगा, एकरौज उदयनने राजा चंडमद्योतसे कहा आपने मुजकों धोखादेकर बुलवाया—मगर—में—तुमकों—इत्तिलादेकर कौशांबीजाताहुं—तुमारी मरजीहो-—सो-—तुम करलेना. ऐसाकहकर उदयन—और—वासवदत्ता उज्जेनसें—कौशांबी चलेगये, और चंडमद्योत उसका कुछ—न करसका,—

वारीशकेदिनोमं-कौशांबीकी जमीनसं अनमोलचीजे-जवाहि-रात जडीहुइ अंगुठीये-हीरेपनेके-टूकडे-औरपुरानी सोनामोहरे निकलआती है, इसलिये लोग इसकों रत्नशूमि कहते है, कैसेकैसे खुशनसीव और-इकबाल मंदलोग यहां होगये, जिनकेघर बेंशु-मार दौलतथी, किला कौशांबीका पेस्तर बडामजबूतथा-जिसकी निशानी यहहैकि-अबभी उसमेसे देढदेढ फूटलंबी-और-एकफूट चोडीइंटे लालमुर्ख-बतौर तांबेके निकलती है, आजकल वैसी इंटे बनना मुश्किलसमझो.-तीर्थकौशांबीकी जियारतकरके वापिस उसीरास्ते भरवारी टेशनआवे,—

भरवारी टेशनसे रैलमें सवार होकर मनोहरगंज-मनवारी-वंरावली-क्होतेहुवे इलाहाबाद टेशन उत्तरे, रैलकिराया तीन

आने लगते हैं, गंगा-जमना के संगमपर इलाहाबाद एकपुराना शहर और रैलवेका जंकशनहै, इसका दूसरानाम प्रयागभी कहते है, इलाहाबादसे (५६४) मील पूर्वको कलकत्ता, (३९०) मील पश्चिमोत्तर देहली और (८४४) मील पश्चिम दखन बंबइहै, इ-स्वीसनके करीव (३००) वर्ष पेस्तर जव चीना मुसाफिर मेग-स्थनीज हिंदमें आयाथा इलाहाबाद देखाथा. सन (४१४) इ-स्वीमें बौद्धयात्री फाहियानने इसजिलेका हाल लिखाँहैकि-यह कोशलराज्यका एक हिस्साथा, उसके (२००) वर्षवाद जब हवांक्तसांग चीना मुसाफिर हिंदमें आयाथा अपने सफरनामेमें लिखाहै उसवरूत यहां (२) वौद्धमट और बहुतेरे हिंदूमंदिरथे, सन (११९४) इस्वीमें शहाबुद्दीन गहोरीने प्रयागकौ फर्तेह किया सन (१५७५) इस्वीमे वाद्शाह अकवरने इसकी आवादी बढाइ और इलाहाबाद नाम रखा, गंगा-यमुनाके विचलेभागमें यमुनाके बाये कनारे निहायत पुरुता किलावनवाया, जोअब मौजूदंहै, इसकी दिवार (२०) से (२५) फीट उंची-और-तीनतर्फ खाइ बनीहुइहै. वडा फाटक गुंवजदार और पुख्ता बनाहुवाहै, बादशाह जहांगीरने किलेमें रहकर इलाहाबादकी हकुमतकिइ, जमाने हालमें अंग्रेज सरकारकी अमलदारी यहांपर जारीहै, किलेके भी-तर अपसरोंके मकान--मेगजीन--मेंदानमें तोपोंकी कतार-और तरह तरहके गोल्लोंके ढेंर देखपडताहै, पूरवफाटकसें किलेमें जाया जाताहै, एकतर्फ साढेनव फीटऊचा–एकहीपथरका वनाहुवा अशो-कस्थंभ खडाहै, और उसपर इस्वीसनके (२४०) वर्ष पेस्तरके राजा आशोकका हुकमनामा खुदाहुवाहै,

इलाहाबादसे उत्तरतर्फ परतापगढ, पूरवमें जोंनपुर-और-मिर्जापुर-दखनमें रिवांका राज्य-दखनपश्चिममें बांदा-और-फते- हपुर जिलाहै, सन (१८९१) की मर्दुमशुमारीके वस्त इलाहा-वादकी मर्दुमशुमारी (१७५२४६) मनुष्योंकीथी, सिविलकचहरी— हाइकोर्ट-पब्लिकलाइबेरी-अस्पताल-मेओकोलेज वगेरा खूबसुरत मकानहै, सडके लंबी चौडी-बाजार गुलजार-शामकेवस्त चौक वजारमें वडीरवन्नक रहतीहै. हरेक किसमकी चीजे-जवाहिरात-सोनाचांदी-ऊनी-और-रेशमी कपडे यहांपर मिलते है, पुरी-क-चौरी-और ताजीमिटाइ जबचाहो तयार मिलेगी, चुरन वेचनेबाले दोहे-कवित्तगातेहुवे अपना चुरन वेचरहे है.-

जैनचैत्यस्तवमें छिखाहै पेस्तर यहां जैन तीर्थथा, अंगे बंगे किलेंगे सुगतजनपदे सत्प्रयागे तिलंगे, गौडे चौडे मूरींडे वरतरद्रविडे उद्रियाणेच पौद्रे, आदे माद्रे पुर्लाद्रे द्रविडक्जवलये कान्यकुन्जे सुराष्ट्रे, श्रीमत्तीर्थंकराणं प्रतिदिवसमहं तत्र चैत्यानि वंदे, ६,

इसमें जो सत्प्रयागे उल्लेखहै इसका माइना यहहुवाकि-प्रया-गमे पेस्तर जैन तीर्थथा, अबनहीरहा, यात्री यहां क्षेत्रस्पर्शना करे, आजकल यहां जैनम्बेतांवर श्रावकोंका कोइ घरनही. व्यापारके लिये आयेगये रहते है,

गंगा-यमुना-और-सरस्वतीका जहा मिलापहुवाहै-वैश्वव आम्नायवाले उसजगहकों त्रिवेणी बोलते है और तीर्थ मानतेहै, हर-साल माघ महीनेमें यहा वैश्ववयात्री बहुत आते है, टेशनके पास धर्मशाला-और-सराय बनीहुइहै, यात्री जहां दिलचाहे ठहरे, और क्षेत्र स्पर्शनकरके इलाहाबादसे परतापगढ लाइनमें सवार होवे और-टेशन फाफामड-स्वेत-मडएमा-विश्वनाथगंज-कुरेभार-खजुरहाट-विकापुर-और-भरतकुंड होते फेजाबाद जावे, अवध

विभागमें जिलेका सदर मुकाम फैजाबादभी एक अछा शहरहै, बाजार उपदा और हरेकिकसमकीचीजे यहांमिलसकती है, टेशनसे शहरकुछ फासलेपरहै, सवारीकेलिये इका-बगी--तयारमिलेगी, शहरमें जाकर यात्री चौकवाजार त्रिपोलिया दरवजा तलाशकरे, और महोले पालखीखानेमें जो बडाशिखरबंद जैनश्वेतांवरमंदिर बनाहै दर्शनकरे, इसमें मूलनायक तीर्थकर शांतिनाथमहाराजकी मूर्ति करीव सवाफुटवंडी तख्तनशीनहै,-फैजाबादसें यात्री तीर्थ रत्नपुरीकी जियारतकों जावे, रास्ते दो है,-एकरैलका-दुसरा-खुक्की, रैलरास्तेजानेवाले यात्री फैजाबादसे रैलमें सवार होकर सोहावल टेशन जाय, फैजावाद और सोहावल टेशनका कुछबहुत फासलानही है, एकहीटेशन आगे है, सोहावलटेशन उतर्कर बज-रीये बेलगाडीके तीर्थरत्नपुरी पहुचे जो पोनकोश दुरहै, खुक्की रास्ते जानेवालेयात्री फैजाबादसें इके-या-वगीमें सवारहोकर र-त्नपुरीकोंजावे, सडकपकी बनीहुइहै, रास्ताकरीव (१०) मीलका होगा, फैजाबादसे शुभहकेगयेहुवे जियारतकरके शामकों वापिस आसकतेहो, मगर जियारतमें जल्दीकरना मुनासिवनही, एकरौज रत्नपुरीमें टहरकर दुसरेरौज फैजाबाद आना अछाहै,---

👀 [तवारिख तीर्थ रत्नपुरी,]

रत्नपुरी पेस्तर बहुत आवादथी, आजकल छोटीवस्तीरहगइ, इसका दुसरानाम नवराही बोलते है, पनराहमें तीर्थकर धर्मनाथ महाराज इसीरत्नपुरीमें पैदाहुवे चवन-जन्म-दीक्षा-और-केवल ज्ञान-ये-चारकल्याणक उनके यहांहुवे, भानुराजाकेघर सुव्रतादे-वीकी कुखसे माघसुदी (३) पुष्पनक्षत्रकेरीज उनका यहां जन्महुवा कइअर्सेतक उनोने यहां रत्नपुरीपर अमलदारी किइ दीक्षाके पेस्तर उनोने यहां एकसालतक हरहमेशां खैरातिकइ, और माघसुदी (१३) के रौज दुनियाके एक्क आराम छोडकरदीक्षा इ-ख्तियारिकइ. दोसालतक उनोने तपिकया, और पोषसुदी (१५) के रौज उनको यहां केवलज्ञान पैदाहुवा, इंद्रदेवते वगेरा उनकी स्विद्मतमें आतेथे, पेस्तर वडेवडे वनखंड-उद्यान-और छतावछी यहां इसकदर होतीथीिक-जमीन-हमेरां सब्ज-वनीरहतीथी, बडे वडे गुलजारवाग-और-तरहतरहकेफल-केले-अनार-अमरुद-जा-मन-और-किसमिसके पेंड यहां मौजूदथे, चावलकीपैदाश यहां बहुतहोतीथी. मंदिर तीर्थकर धर्मनाथमहाराजका यहां हमेशां मौ-जुदरहा, तीर्थोंमें यहकदीमीरवाज हमेशांसे होताचलाआयाकि-एक मंदिरपुराना होकरगिरगया किसीखुज्ञनसीवने दुसरावनवाकर त-यार किया, इसीतरहसे तीर्थ कायम बनारहताहै,---

रत्नपुरीकी आवादी आजकल कुछदेढ हजार घरोंकी रहगइ. धर्मशाला (४) जिनमें (२) धर्मशाला रायबहाद्र धनपतिन-हजी-साकीन-मुर्शिदावादकी-(१) लखनउवाले जहोरी छोटन लालजीकी-और (१) पंचायतीकी तर्फसे बनीहुइहै. पूरवतर्फ एककोटरी भंडारी-रूगनाथप्रसादजी-साकीन कानपुरकी-एक-मुल्कगुजरात-भावनगरवालोंकी-और-एककोटरी पंचायतीकी त-र्फसे-वनीहुइहै, मंदिर-धर्मशाला-और-कोटरीयोंके अतराफ एक पुरुताकोट खीचाहुवा-करीव-पांचिविघेके फासलेमें मानो ! एक हातामाऌम देताहै, यात्री धर्मशालामें जाकर कयामकरे और तीर्थ-की जियारतकरे, यहांपर जैनश्वेतांबरमंदिर (२), एकवडा-दूस-राछोटाहै, बडेमंदिरमें तीर्थंकर पार्श्वनाथमहाराजकी शांमरंग मूर्त्ति करीव देढहाथवडी तख्त नशीनहै, दाहनीतर्फ तीर्थकर अनंतनाथ जीकी-और-वायी तर्फ-तीर्थकर धर्मनाथजीकी एकही सिंहासन पर जायेनशीनहै, मंदिरके वीचले भागमें तीर्थकर धर्मनाथजीके

केवलज्ञानकल्याणककी स्थापना और उनकेकद्म बनेहुवे है, मं-दिर पुरुता और चारोंतर्फ चार छोटेछोटे जिनालय-कता वजा समवसरणकी--अतराफ संगीन कोट खीचाहुवा और वीचमें उमदा चौक-जिसमें-(१०००) आदमी बखूबी बेटसकते है, दे-खकर दिल खुशहोगा,—

अग्निकोंनके जिनालयमें तीर्थकर धर्मनाथ और महावीर स्वा-मीके कदम तख्तनशीनहै, नैरूत्यकोनके जिनालयमें तीर्थकर धर्मनाथजीके चवन कल्याणीककी स्थापना और कदम तख्त न-शीनहै, वायव्यकोनकें जिनालयमें जन्म कल्याणककी स्थापना इशानकोंनके जिनालयमें दीक्षाकल्याणककी स्थापना और कदम तख्तनशीनहै,-मंदिर पुराना होनेकी वजहसे मरम्मत दरकारहै, जोकोइ यात्री तीर्थेंमिं दौलत खर्चकरनाचाहे असे तीर्थेंमिं करे, करीव पांचहजार रूपयेमें इसतीर्थकी मरम्मत होसकतीहै, छोटा मंदिर तीर्थकर रिषभदेव माहाराजका-इसमें तीर्थकर रिषभदेव महाराजकी मूर्त्तिकरीव पोनेदो हाथवडी तख्त नशीनहै, कुल्लमूर्त्तिये इसमें (८) है, जिनमें (६) मूर्त्ति राजासंप्रतिके वरुतकी-और (२) उनके वादकी बनीहुइहै, धर्मशालामें बगीचा एक-जिसमें –आम-अमरूद्--शरीफे-वेंल-इमली--कटेर--जाम्रन-और आवले वगेराके पेंडखंड है, फुलोमें गुलाब-चमेली-बेंलावगेराके फुलभी पैदाहोते है और हमेशांकी पूजनमें चढायेजातेहै, दोंनों मंदिरके दो-पूजारी-और-दो-नोकर यहांपर तैनातहै, दोनों मंदिरके वहीखाते अलग अलग बनेदुवे है, बडेमंदिरमें चारखाते है, अवलभंडारका, दोयमजीर्णोद्धारका-तीसरा साधारणका-और-चौथा गेहने आ-मूषणका, जिसका जीचाहे उसखातेमें रूपया देवे, छोटे मंदिरके दो-खाते है, अवल भंडारका, दूसरा साधारणका-जिसकी मरजीहो

उसखातेमं देवे, मंदिरकी मरम्मतके वारेमं अगर कोइ यात्री अपने सुनीम-गुमास्तेकों भेजकर मरम्मत करादेवेतो बहुतही बहेतरहै, रत्नपुरीकी जियारतकरके यात्री-फैजाबाद वापिसआवे, और फै-जाबादलें तीर्थ अयोध्याकों जावे, जो करीब दो-तीन कोशके फासलेपर वाके है, रैलभी जातीहै, और इका वगीभी जाते है जिसकी जैसी मरजीहो-उस रास्ते जाय,-तबारिख तीर्थ रत्नपुरीकी खतमहुइ,—

👺 (तवारिख-तीर्थ-अयोध्या,)

अयोध्या शहर निहायत पुराना और रैलवेका टेशनहै, विनि ता–कौशला–और–साकेतपुर इसीके नामहै. अवल तीर्थकर रिप-भदेवमहाराज इसी अयोध्यामें पैदाहुवे, चवन-जन्म-और दीक्षा-ये तीनकल्याणक-उनकेयहांहुवे, नाभिकुलकरके घर-मरूदेवाजीकी-कुखसें चैत वदी (८) मी-पूर्वीपादा नक्षेत्रके रौज उनका यहां जन्महुवा, बहुतअर्सेतक उनोंने यहांपर अमलदारीकिइ, और दी-क्षालेनेके पेस्तर एकसाल अतवारित वहुत खैरात किइ, चैतवदी(८) मीके रौज दुनयवीकारी वारकों छोडकर उनोने यहां दीक्षा इच्ति-यार किइ. एकहजार वर्षतक छदमस्य हाछतमेरहे और फालगुन-बदी (११) के रीज उनकों यहां केवलज्ञान पैदाहुवा, इंद्रदेवता-वगेरा उनकी सेवामें आतेथे,-दुसरे तीर्थंकर अजितनाथ महारा-जभी इसीअयोज्यामें पैदाहुवे, चवन-जन्म-दीक्षा-और केवल ज्ञान-ये-चारकल्याणक उनके यहांहुवे, जितशत्रुराजाके घर विज-यारानीकी कुखसे माघसुदी (८) मी-सोहिणी नक्षत्रके रौज उ-नका यहां जन्महुवा, बहुत अर्सेतक उनोंने अयोध्यापर अमन्दारी किइ, दीक्षाके पेस्तर एक सालतक उनोने यहां खैरातिकइ और माघवदी (९) मीके रौज दुनियाके एक आराम छोडकर उनोने

यहां दीक्षा इंग्लियारिक इं, बारांवर्षतक तपिकया और पोषवदी (११) के रौज उनकों यहां केवलज्ञान पैदाहुवा, तीर्थकरअभि-नंदन महाराज सुमितनाथ और अनंतनाथ महाराजभी इसी अयोध्यामें पैदाहुवे, और उनके चारचार कल्याणक यहांहुवे,—

रघुवंशके खानदानमें रामचंद्रजी और लक्ष्मणजी बडेबहादुर शख्शहसी अयोध्यामें हुवे. जिनकानाम दुनियामें मशहूर और मारूफहै, लंकायुद्धमें उनोंने जोजो बहादुरी किइ, रावणके भाइ विभीषणकों लंकाका राज्य दिया और सती सीताकों अपनी की-वत बाजुसे वापिस लाये जोकि-रावन छलकरके लेगयाथा,

सत्यवादी हरिश्रंद्र इसी अयोध्याका राजाहुवा जिसने अपने सतके उपर राजपाट छोडदिया, और अपना वचन पुराकरनेके <mark>रिये अपनी रानी</mark> और लडकेकों वेचकर खुद्भी विकगया, देखि-ये ! अपने सत्यके पीछे उसने कितनी तकलीफ उठाइ ? हरश-ख्शकों-लाजिमहै अपने सत्यकों-न-छोडे, और धर्मपर साबीत, कदम रहे, चंद्रावतंसकभी एक धर्मपावंद राजा इसीअयोध्याके तस्तपर हुवा, एक रौजका जिक्रहै उसने अपने महेलमें खडेहोकर शामके छबजेसे परमात्माकी इवादत करना शुरूकिइ, और दिलमें यहशर्तकर लिइकि-जो-चिराग मेरे सामने जलरहाहै जबतक ज-लतारहेगा-में-खडेखडे इबादत करता रहुगा, चिरागमें तेल उ-तनाथा-जो-तीन घंटेतक जलसके, इवादत करते जब नवबजे एकनोकर जो उसजगह पहरा देताथा सोचा ! कि-मालिकको अंधेरा-न-होजाय ! यहसमझकर चिराग तेलसे भरदिया. जब रातके बारांबजे वोभी तेल खतमहोगया, नोकरने फिर दोवारां तेलभरदिया, जब रातके तीनवजे फिर चिरागगुल होनेलगा. ती-सरे मरतवा फिरतेल डाला, नोकरका इरादाथाकि-मालिककों अंधेरा-न-हो, और राजाकी श्रतिथीकि-जवतक-चिराग-न-बुझे इवादतकरतारहु, गरज कि−सवेरतक राजा इबादत करतारहा, और नोकरके उपरविस्कुल नाराजी नही लाया, बल्कि ! उसकी खिटमत अपनी इवाटतमें व-खुबी समझी.

तीर्थंकर महावीर स्वामीके नवमें गणधर इसीअयोध्याके रहने वालेथे, करीब (४००) वर्ष पेस्तर जैनश्वेतांबर श्रावकोंके घर अयोध्यामें-बहुतथे, आजकल एकभी नहीरहा, फैजाबादसे (६) मील पूर्वोत्तर सरयूके दाहने कनारे अयोध्याकी आबादी फैलीहुइहै जमाने हाळमें अयोध्याकी मर्दुमशुमारी करीव (१४०००) मर्-प्योकी-वाजारमें हरेक किसमकी चीजें मिलसकती है, सरयूकनारे सोहावनेघाट वनेहुवे और वडीरवन्नक रहती है,--वगीचा अवध नरेशका-और-महल काविलदेखनेकेहै, सरयूकी तरीसें व-नास्पति यहां ज्यादह-और बंदरोकी तरकी इसकदर बढीहुइहैकि-जराभी नजर चुकजायतो हरेक चीज उठाजातेहै, कितनाही इंत-जामकरो हाथमेसेभी चीज लेजानेकों मुस्तेज रहते है, अयोध्याके इर्दगीर्द-बहुतसी इमारतोंके निशान दूरदूरतक पायेजाते है इससे माऌमहोताहै पेस्तर बहुतवडी नगरीथी, जोकोइ जैनश्वेतांवरयात्री अयोध्यामें कद्मरखे कटरामहोला तलाशकरे, जैनश्वेतांवर मंदिर धर्मशाला-और-कारखाना बनाहुवाहै, यात्री धर्मशालामें जाकर कयामकरे. और निहायत खूबसुरत शिखरबंद मंदिर जोकि-तीर्थ-कर अजितनाथ महाराजका बनाहुवाहै दर्शनकरे, मूलनायक तीर्थ-कर अजितनाथ महाराजकी मृत्ति करीव एकहाथ वडी इसमें त-च्तनशीनहै. अलावा इसके तीन मूर्त्तिये औरभी इसमें जायेन-शीनहै जिनके नाम रिषभदेव-अभिनंदन-और-महावीर स्वामी है,

मंदिरके बीच जो समवसरणका आकार बनाहुवाहै तीर्थंकर अजितनाथ महाराजके केवल ज्ञानकल्याणककी स्थापना और कदम उसमे तख्तनशीनहै, उपरकीतर्फ एककोंनेमें अभिनंदनजीके कदम एकमें सुमितनाथजीके कदम एकमें अनंतनाथजीके और एकमें निर्मिदेव महाराजके कदम जायेनशीनहै, नीचेकी तर्फ एककोंनेमें पांचभगवानके चवन कल्याणक एकमें पांचभगवानके जन्मकल्याक एकमें चारभगवानके न्दीक्षा कल्याणक और एकमें चारभगवानके गणधरोंके कदम और पांचभगवानके यक्षयक्षणी बनेहुवे है, अयोध्यामे तीर्थंकर रिषभदेवजीके तीनकल्याणक चवन जन्मदीक्षा, अजितनाथजीके चारकल्याणक चवन जन्मदीक्षा, अजितनाथजीके चारकल्याणक चवन जन्मदीक्षा, अभिनंदनजीके चारकल्याणक समितनाथजीके चारकल्याणक समितनाथजीके चारकल्याणक समितनाथजीके चारकल्याणक समितनाथजीके चारकल्याणक समितनाथजीके चारकल्याणक हो, तीर्थंकर रिषभदेव महाराजका केवलज्ञान कल्याणकमी यहांही हुवाथा. मगर वह इसजगहसे थोडी दूरपर पुरिमताल नामका शाखानगरथा इसलिये जुदागिनागया.

धर्मशाला यहांपर (२) वडीपुल्ता वनीहुइहै-एक रायबहादूर बुधिसहजी-साकीन मुर्शिदाबादकी और-एक पंचायती, यात्री
जहां मरजीहो टहरे, तीर्थ अयोध्याका कारखाना-यहांपर बनाहुवा
है, मुनीम-गुमास्ते-नोकर चाकर पूजारी चौकीदार वगेरा मौजूदहै
यात्री इसमें जोकुछ देनाचाहे देवे. जिसके बडेभाग्यहो ऐसे तीर्थकी
जियारतकरे, कइदफे तुम देहलीसे कलकत्ता-और-कलकत्तेसे देहली आयेगये, मगर अयोध्याकी जियारतसें मेहरूमरहे. अगर
तुमारा खयालहोकि-फिरकभी जियारत करलेयगे तो यह खयाल
गलतहै, जिंदगीका कोइभरूसा नहीं. जोकुछ धर्मकाम करलिया
वही अपनाहै, वैदिकमजहबवालेभी अयोध्याकों तीर्थ मानते हैं,

और उनके कइ मंदिर यहांपर बनेहुवे है, अयोध्याकी जिया-रत करके यात्री सावथ्थी नगरीकी जियारतकोंजावे. अयोध्यासे सरयूनदी पारहोकर लकडा घाट टेशन जाना. सरयूनदीका पुल बंधाहुवाहै रास्ता करीव सवाकोशका होगा, सवारीमें जानेवालो-कों इक्का मिलसकताहै, पैदल जानेवाले पैदलभी जासकते है, लकडा घाट टेशनसे रैलमें सवार होकर कटरा-नवाबगंज-और टीकरी होतेहुवे मनकापुर जंकशन उतरना. रैलकिराया तीनआने तीनपाइ फिरवहांसे गोंडा लाइनमें सवार होकर विद्यानगर होतेहुवे गोंडा जंकशनजाना, रैलकिराया तीनआना, वहांसे रैलमें सवार होकर इंटियाथोक होते हुवे बलरामपुर टेशन उतरना रैल किराया चारुआना,-

४८ [तवारिख्न-तीर्थ-सावध्थी.]

् बलरामपुर टेशनसे खुश्कीरास्ते सातकोशदूर सावथ्यी पुरा-नातीर्थ है, टेशनसें शहर कुछफासलेपरहै सवारीकेलिये इका-वगी तयारमीलेगी यात्री शहरमेंजाकर सरायमें ठहरे, और दुसरेरौज सावथ्यीकों जानेकी तयारीकरे, सावथ्यीकों आजकल सहेटमेटका किला बोलते है, और वलरामपुरसे सहेटमेटतक सडककची वनी हुइहै, सवारीकेलिये इका-बगी-जासकते है, इक्केका किराया जाते आते अंदाज तीन-या-चाररुपयेलगेगे,-शुभहके आठबजेके चले बारांबजेतक सहेटमेट पहुचसकतेहो, रास्तेमें दुतर्फा द्रख्तल्लोहुवे है, जब करीव सहेटमेटके पहुचोगे कोशभरके फासलेपर द्रख्तोकेझंडमें सडकपर इका ठहरजायगा, क्योंकि-आगे इकेजानेका रास्तानही है ख्वाह-अमीरहो-या-गरीव पैदल चलनाहोगा, जबकोशभरके फा-सल्लेजाओंगे तुमकों सावथ्यीनगरी नजरआयगी, पेस्तर बहुतवडी आबादयी जमानेहालमे विरानकस्वा रहगया, बढेबडे मकानातऔर संढहेरपडे है, एकरीज वहथाकि-यहांपर जवाहिरात और सोना--चांदीके ढेर लगतेथे, आज वहदिनहै चारोतर्फ झाडीझखड-द्र-ख्तोकेग्नुंड-और-जंगलहीजंगल नजरआताहै, किला सहेटमेटका विरान और उसमे तीर्थकर संभवनाथका मंदिर वगेरमूर्तिके खाली पडाहै, आजकल-न-कोइ यहांपर श्रावकहै-न-वो-रवन्नकहै, शि-वाय ज्ञानीयोंके कौन कहसकताहैकि-किस्किस जुमीनपर क्याक्या वनाववने और वनेगें, वारीशके दिनोमें यहांपर अकसर जवाहिरा-तके नगीने-मोहर वगेरा-निकलआते है इससे माछमहोताहै यहांपर वडेबडे दोलतमंदलोग आवादहोगये, इसवख्त यहांपर एक चक्रभं-डार-और-दुसरा कानभारी नामके दो गांव अलग अलग मीजूद है,-मानलो ! यह सबजमीन पेस्तर बडीरवन्नकपरथी और साव-थ्थीसे ताल्छक रखतीथी,-

्बडीबडी अजुवा वार्ते यहां होचुकी और बडेवड़े सखी दौल-तमंद यहांपर पैदाहो चुके है,-तीसरे तीर्थंकर संभवनाथ महाराज इसीसावथ्यीमें पैदा हुवेथे, चवन-जन्म-दीक्षा-और-केवल्रज्ञान-ये चार कल्याणक उनके यहांहुवे, जितारी राजा और सेनारा-नीकी कुखसे माघसुदी (१४) मृगशिरा नक्षत्रकेरीज उनका यहां जन्महुवा, बहुत अर्सेतक उनोने सावथ्थीपर अमलदारी किइ. और दीक्षाके पेस्तर एकसालतक उनोने यहां खैरातिकइ, मृगशीर्ष सुदी (१५) के रौज दुनियाके एशआरम छोडकर उनोनेयहां दीक्षा इख्ति-यार किइ और कातिकवदी (५) मीकेरौज उनकोंयहां केवलज्ञान पैदाहुवा, इंद्रदेवता वगेरा उनकी सेवामें आतेथे तीर्थकर महावीरस्वा-मीने यहां चौमासा किया और कइदफे तशरीफलाये, तीर्थकर पार्श्वनाथजीके शासनके आचार्य केशीकुमार महाराजकी और ती-र्थकर महाबीर स्वामीके बडेचेले गौतमगणधरकी यहांपर तेंद्र- कवन उद्यानमें मुलाकात हुइथी, और धर्मचर्चाके बारेमें वहेस हुइथी.—

बडेबडे नवखंड और बागवगीचे यहांपर मौजूदथे. अबभी तरह तरहकी जडी बुटीये यहांपर खडी है, कुवे—तालाव—द्रख्तोके झुंड— और—जगह सोहावनी नजर आती है. सावथ्थीकी क्षेत्रफरना करके—यात्री अपनी जियारतकों कामयाबहुइ समझे. जिसके बडे भाग्यहो ऐसे तीर्थकी जियारत करे. और अपना परलोकका रा-स्ता साफकरे, यात्री सावथ्थीकी क्षेत्र स्पर्शना करके वापिस उसी रास्ते बलरामपुर आवे.

🕼 [मुल्क नयपाल और हिमालय,-]

मुल्क नयपालमें पेस्तर जैनतीर्थ था, जैनचैत्यस्तवनमें लिखाहै,

श्रीमाले मालवेवा मलयजनिखिले मेखले पीछलेवा, नेपाले नाहलेवा कुवलयतिलके सिंहले मैथलेवा, डाहाले कौदालेवा विगलीतसलिले जंगले वातिमाले, श्रीमत्तीर्थंकराणां प्रतिदिवसमहं तत्रचैत्यानिवंदे, ५

इसमें नपाले-ऐसा जोपाउहै इसका माइना यहहुवाकि-मुल्क नयपालमें पेस्तर जैनतीर्थथा अवनहीरहा. नयपालके लोग ताकत-वर आवहवा अछी और वोली उनकी नयपाली है, रास्ता पहाडों-का-और कइजगह पगदंडीभीहै, सागवान-और-सागकी लकडी ज्यादह, हाथीभी नयपालमें पैदाहोते है जिसमें सफेदरंगके हाथी ज्यादह देखोंगे, कस्तूरी नयपालमें अछी मिलती है. नयपाल रा-ज्यों वगेर इजाजत नहीं जायाजाता. पहाड हिमालय हिंदुस्था-मकी उत्तर सरहदमे-काश्मिरसें लगाकर वंगालतक चलागया. हिमालयमें कर्जगह आबादी—जंगल—और कहीं कहीं खेतीभी पैदा होती है, ज्यूंज्यूं पहाडकों देखो द्रख्त—झाडी—फलफुल—और खेती-योंकी सुरत बदलती जाती है, तरहतरहकी बनास्पित और जड़ी बुटीयोंका खजाना हिमालय पहाड एक उमदा जगहहै, कस्तूरीय मृग—और—चमरीगी इसमें पैदा होती है, देवदार और भोजपत्र वगेरा तरहतरहकी चीजें यहां देखलो. कर नदीयें हिमालयसें निकलकर ससुंदरकों जामीली, इस पहाडपर द्रख्त-फलफुल—और—औषधि इतनी पैदाहोती है आदमीकी ताकात नहीं उसका तमामहाल लिखसके, केशर—कस्तूरी—बादाम—एलाची—शाहदाना—अखरोट—खजूर—नारीयल—कदम—कचनार—खीरनी—म गूरशिखा—कर्त्युंखा—काकजंघा—अपामार्ग—सहदेवी—लजवंती—मोलसीरी—लक्ष्मणा—विद्याबाद्यी—शिलाजित—सालम—वगेरा—उमदाचीजें यहांपर पैदाहोती है, जानवरोंमें—शेर-ज्याघ—चिता—रींछ—हिरन-वाराहिंसे-गा वगेरा इसपहाडमें रहते है.

पहाड हिमालयमें पेस्तर जैनतीर्थथा-विविधतीर्थ करपमे लि-खाहै हिमालये छायापार्थ्वो-मंत्राधिराजः श्रीस्फुलिंगः— इसका मतलव यहहैकि-हिमालय पहाडमें-छायापार्थनाथ-मंत्राधि-राज-और-स्फुलिंगपार्थनाथका-तीर्थथा, अवनही रहा. जैनचैत्य-स्तवमें वयानहैकि—

चित्रै शैले विचित्रे यमकगिरिवरे चक्रवाले हिमाद्रौ, श्रीमत्तीर्थंकराणं प्रतिदिवसमहं तत्रचैत्यानि वंदे, २

इसमें जो हिमाद्री ऐसा पाउहै इसका माइना यहहुवाकि-पे-स्तर हिमालयमें जैनतीर्थथा. अवनहीरहा.-इसलिये वहां जानेकी जरूरत नहीरही. प्रसंगोपात यहां इतनावयान इसलिये लिखागया हैकि-पेस्तर-वहां जैनतीर्थथे.-

वलरामपुरसें यात्री रैलमें सवारहोकर गोंडां जंकशन-मन-कापुरजंकशन होकर लकडाघाट टशन आवे और वहांसे सरयू नदी लंघकर अयोध्या वापिस आवे, रैलकिराया वगेरा पेस्तर **छिखचुके है,-अयोध्यासे तीर्थ बनारसकी जियारत जानेके** छिये रैलमें सवारहोकर यात्री दर्शननगर–विल्हारघाट–टांडोली–गोसाइ गंज-कटहरी-अकवरपुर-माळीपुर-विखवाइ-शाहगंज -खेंटासराय मेहरावन-जोनपुर-जाफरावाद--जलालगंज-खलीसपुर-बाबतपुर-शिवपुर होतेहुवे वनारस टेशनजाय, रैल्लिक्साया एकरूपया सात आने नवपाइ लगते है,--

🅦 🗲 🛘 तवारिख-तीर्थ-बनारस 📗

वनारस शहर निहायत पुराना और इसका असळीनाम वर-नाअसी था, असलमें यहांपर वरना और असीनामकी दो-नदीयां आनकर गंगाकों मिली. और उसजगह शहरआवादहुवा इसलिये वरनाअसी कहलाया, मगर लोकभाषामें आमलोग इसकों बनारस कहनेलगे. वडेवडे दौलतमंद और खुशनशीव लोग यहां हमेशां आबाद होते चलेआये, सातवे तीर्थकर सुपार्श्वनाथ इसी बनारसमें पैदाहुवे, चवन-जन्म-दीक्षा-और--केवलज्ञान ये चारकल्याणक उनके यहांहुवे,-प्रतिष्टराजाके घर पृथवीरानीकी कुखसें ज्येष्टसुदी (१२) विशाखा नक्षत्रकेरीज उनका यहां जन्महुवा. वहुतमुद्दततक उनोने यहांपर हकुमत किइ, दीक्षालेनेके अवल-एक वर्षतक उनोने यहां अजहद खैरात किइ, जेठसुदी (१३) के रीज दुनयवीका-रोबहार छोडकर उनोने यहां दीक्षा इिंग्तियार किइ और फाल्गुन वदी (६) के रौज उनकों यहां केवलज्ञान पैदाहुवा, इंद्रदेवते व-गेरा उनकी खिद्मतमें आतेथे,

तेइसमें तीर्थंकर पार्श्वनाथ इसी बनारसमें पैदाहुवे, चवन-जन्म-दीक्षा-और-केवलज्ञान-पे--चारकल्याणक उनके यहांहुवे, अश्वसेनराजाकेघर-वामारानीकी कुखसें पोषवदी (१०) विशाखा नक्षत्रकेरीज उनकायहां जन्महुवा, तीर्थंकर पार्श्वनाथजीने अपना विवाह नहीकराया, दीक्षाके पेस्तर एकसालतक उनोने यहांवहुत-सी खैरातिकइ. और पोषवदी (११) के रीज दुनयवीकारोबार छोडकर उनोने यहां दीक्षा इंग्लियारिकइ, और चैतवदी (४) के रीज उनको यहां केवलज्ञान पेदाहुवा, इंद्रदेवते वगेरा उनकी खि-दमतमें आतेथे, बनारसके चारहिस्से पेस्तर मशहूरथे, देववाणारसी राजवाणारसी-मदनवाणारसी-और-विजयवाणारसी, बडेबडे बन खंड-उद्यान-और-वागवगीचे यहांमीज्दथे, जिसमें तरहतरहके फल-और-फुल पेदाहोतेथे, अवभी किसीकदर कमनही है, इल्म संस्कृतकी यहां हमेशां तरकीरही,

चीनामुसाफिर हवांक्तसांगने अपने सफरनामें लिखाहै-मैने
-शहर बनारस बचश्म देखाथा. राजाजयिसहजीके बनवाये हुवे
चंद्रसूर्य और तारा वगेराके देखनेकेयंत्र पेस्तर यहां बनेथे आजकल विट्कुल बेंमरम्मतह, ज्योतिषकी वेधशाला पेस्तर इसालिये बनाइ जातीथीकि-ज्योतीषीलोग चंद्रसूर्यतारा वगेराके चलनेफिरनेका हाल ब-ख्वी-माल्लमकरसके, बनारसकी इमारते बहुतख्बमुरत और संगीनहै, गलियां तंग और मकानात इतनेऊंचोकि-गमींयोंकेदिनोमें चलनेफिरनेका बहाआराम-छातेकी कोइदरकारनही, छांव डांवमें हरेकजगह धूमआओ, बनारसकी मर्दुमशुमारी छावनीकों मिलाकर (२१९४६७) मनुष्योंकी-चौकवाजार बहागुलजार-और-हरेक किसमकीचीजें यहांपर मिलती है, सहकेलंबीचोडी और हरजगह पानीकानल मोजूदहै, बाजारमें पुरी-कचौरी-हरवष्त त्यारिमेल-

ती है, किरायेके इका-बर्गाभी-हरजगह तयारमिलेगे, चूरनवेच-नेवाले दोह–कवित्तोंकों वोलकर अपनेमालकी तारीफ कररहे है. चांदनीचौक--जहोरीवाजार-चौखंभा-और-नयाचौक-ये-बनारस-के नाभीवाजारहे. वनारसकी मश्रहूरचीजे–जरीके दुपटे–कमख्वाब रेशमी किनारीके घोतीजोडे-तांबे पित्तलके बर्तन-और-सल्मेसि-तररेका कामहै. रेशमी कपडोंपर कारचोबीका काम यहां आलाद-जिंका बनताहै.

वनारसमें जैनश्वेतांबर श्रावकोंके घर कुछ (२५) और-जै नश्वेतांवर मंदिर (८) है, महोले भेलुपुरेमें-जोकि-शहरसे कुछ-फासलेपरहे एकजैनश्वेतांवर मंदिर और धर्मशाला यहांपर बनीहु-इहै. मंदिरमें तीर्थेकर पार्श्वनाथजीकी मूर्त्ति तख्तनशीनहै, यात्री दर्शनकरे, धर्मशाला, बडी गुलजार जैनश्वेतांवर यात्री अकसर इ-सीमें ठहरा करते है, जोकोइ यात्री बनारस आवे और महोले भे-ळुपुरेमे जानाचाहे -तो-बनारस केंटोन्मेंट टेशनपर उतरे. और शहरमें जानाचाहे राजघाट टेशनपर उतरे. महोला भदैनी-जोकि-बनारससे एककोशके फासलेपर वाकेहै वहांपर गंगाकनारे वछराज घाटपर एक जैनश्वेतांवर मंदिर वनाहुवाहै. और इसमें तीर्थकर सुपार्श्वनाथ महाराजकी मूर्त्ति तरूतनशीनहै,-वछराजघाट अैसेमो-केपर वनाहैकि–वनारसके कुछ घाटोंका–देखाव–यहांपर खडेहो-कर देखलो मंदिरके पास दों-छोटीछोटी जैनश्वेतांवर धर्मशाला वनीहुइहै यात्री इसमे-ठहरनाचाहे तो ठहरसकते है,

शहर बनारसकों वैदिक मजहब वालेभी बडातीर्थ मानते है. इसवजहरों वैदिक मजहवके यात्री यहां बहुतआते जाते है, और गंगाकनारे कड्घाट वनेहुवे है. राजघाट टेशनपर सवारीकेलिये इका-बगी-तयार मिलती है, देशनकेपास धर्मशाला मौजूदहै-

हरकोइ मुसाफिर वहांजाकर ठहरसकताहै, कंपनीवाग बनारसमें नामीयामी है, और वहाखोरीकेलिये इसमें जानेकों कोइ रोकटोक नहीं, गंगानदीका पुल-लोहेके बडेबडे खंभेपर पुल्ता बनाहुवाहै, बनारससें तीनकोशके फासलेपर वौधलोगोका एकस्थूभ-जिनकों बे-अपना पूज्यस्थान मानते हैं बनाहे, जोकि-अंदाज (९०) फुट ऊचा-और (३००) फुटके घेरेमें होगा, इस गुंबजके पास थोडीदुरपर बौधमजहबकी मूर्तिये निकली है जिनमें कइबेठीसुरतमें और कइखडी सुरतमेंहै,—

👺 (तवारिख-तीर्थ-सिंहपुरी,)

तीर्थ बनारसकी जियारत करके यात्री सिंहपुरीकों जावे जोकि तीर्थकर श्रेयांसनाथ महाराजकी जन्मभूमि है. बनारस केन्टोन्मेंट-देशनसे छोटीलाइनपर अलाइपुर टेशनसें रैलमें सवार होकर सार-नाथ टेशनपर उतरे, सारनाथ टेशनसे सिंहपुरी (१) मीलके फासलेपरहै, सवारी नहीमिलेगी पैदल जानाहोगा, बनारससे अगर इका-वगीके जरीये सिंहपुरी जानाचाहो-तोभी जासकतेहो, करीब (१) घंटेका रास्ताहै, सिंहपुरीकी जगह आजकल हिरा-वनपुर गांव आबादहै, ग्यारहमें तीर्थकर श्रेयांसनाथ महाराज इसी सिंहपुरीमें पैदाहुवे, चवन-जन्म-दीक्षा-और-केवलज्ञान-ये-चार कल्याणक उनके यहांहुवे, विश्वरानीकी कुखसें श्रवणनक्षेत्रके रौज उनका यहां जन्महुवा, बहुतअर्सेतक उनोने सिंहपुरीके तस्तपर अमलदारीकिइ. दीक्षा लेनेके पेस्तर यहां एकसालतक उनोने दान दिया,-फाल्गुन वदी (१३) के रौज दुनियाके एक्सआराम छोड कर उनोने यहां दीक्षा इल्तियारिकइ, और माघवदी (३) के रोज उनकों यहां केवलज्ञान पैदाहुवा,-सिंहपुरी पेस्तर बडेबडे दौल-त मंद लोगोकी आबादीसे सरगर्मथी, जहां रवन्नक अफजुथी-

आज-वहां विल्कुल सुनसानहै, दिनोंकी गर्दीस सवपरहै, जमानेकी खूबी और रदबदल इसीकों कहते है,—

सिंहपुरीका मंदिर गांवसें थोडीदूर जंगलमें बनाहुवाहै, दोधर्मशाला-और वगीचा एकही हातेमें करीब पांचित्रियेके चैरेमें
बनेहुचे,-मंदिरके ठीक बीचमें समवसरणका आकार और उसमें
तीर्थकर श्रेयांसनाथ महाराजके केवलज्ञान कल्याणककी निहायत
उमदा छत्री देखकर दिललुश होगा, अग्निकोंनमें जो एकछत्री उपरके भागमें बनीहुइहै अधिष्टायक देवकी मूर्त्ति उसमे स्थापितहै.
नैरूत्य कोनकी छत्रीमें तीर्थकर श्रेयांसनाथ महाराजकी माताकी
मूर्त्ति और चौदह स्वप्नेका आकार शंगमर्भर पथरपर उकेरा हुवा
मौजूदहै, वायव्य कोंनकी छत्रीमें तीर्थकर श्रेयांसनाय महाराजके
जन्मकल्याणककी स्थापना-और-इशानकोंनमे दीक्षा कल्याणककी
स्थापना-अशोकष्टक्षका आकार शंगमर्भरपर उकेराहुवा-मौजूदहै,
निचेकी एकछत्रीमें तीर्थकर श्रेयांसनाथ महाराजके गर्भ कल्याणककी स्थापना एकछत्रीमें मेरूपरवतका आकार-और एकछत्रीमें
तीर्थकर श्रेयांसनाथ महाराजके कदम जायेनशीनहै,—

समवसरणकी पश्चिमकों तीर्थकर चंदाप्रभुका एक मंदिर जिसमें मूलनायक तीर्थकर चंदाप्रभुकी करीव (१) फुट वडीमूर्ति त- ख्तनशीनहै, दर्शनकरके दिलखुश होगा. धर्मशालामें करीव (२००) आदमी बखूबी टहरसकते हैं, कोटरीये अलग अलग बनीहुइ और उत्तर तर्फकी धर्मशालामें छतभी मौजूदहै, यात्री धर्मशालामें कयामकरे, और तीर्थकी जियारतकरे. वगीचेमें गुलाव चमेली-बेंला-गुलदाउदी-मुक्आ-जुही-केवडा-चंपा वगेराके फुल पैदाहोते हैं और हमेशांकी पूजनमें चढायेजातहै, नोकर-चा-कर-चौकीदार बगेरा हमेशां यहांपर बनेरहते हैं.

👺 (तवारिख-तीर्थ-चंद्रावती.)

बनारसमें सातकोशके फासलेपर गंगाकनारे चंद्रावती एक पुराना बहरहै, रैलमें जानेवालोंकों (१५) मीनीटका रास्ता– और इक्के-बगीमें जानेवालोंकों (२) घंटेका रास्ताहै, जिसकी जैसी मरजीहो- अैसाकरे, इक्के-वर्गीमें जानेवालोकों वनारससे (७) मील जानेपर एक मौजा जिसकानाम उमरहाहै मिलेगा, (१२) मील जानेपर चोवेपुर-और-चोवेपुरसे (३) मील आगे-चंद्रावती मिलेगी. आठवे तीर्थंकर चंदाप्रभ्र इसी चंद्रावतीमें पैदाहुवे, चवन–जन्म–दीक्षा-–और-–केवलज्ञान–ये-–चारकल्या-णक उनके यहां हुवे, महासेन राजाके घर छक्ष्मणा रानीकी कुखसे पोषवदी (१२) अनुराधा नक्षत्रके रौज उनका यहां जन्महुवा, बहुतअर्सेतक उनोने चंद्रावतीपर अमलदारीकिइ, दीक्षाके अवल एकसालतक उनोने यहां बहुतखैरातकिइ, पोषवदी (१३) के रौज दुनियाके कारोबार छोडकर उनोने यहां दीक्षा इ-क्तियारिक इ, और फाल्युनवदी (७) मी के रौज उनकों यहां केवलज्ञान पैदाहुवा, पेस्तर चंद्रावती बहुतवडी नगरीथी, जमाने हालमें छोटासा कस्वा रहगया, दुनियाका यही कारोबारहै कोइ आबाद और कोइबरबाद होताहै,-

धर्मशाला यहां एक वहुतवडी वनीहुइहै जिसमेंकरीव (५००) आदमी व-लूबी ठहरसकते हैं, कोठरीये (२०) पका सहन और कोठरीयोंके उपर छतवनीहुइ गर्मीयोंकेदिनोमें आरामकी जगहहै, यात्री धर्मशालामें कयामकरे, धर्मशालासे करीव (३००) कदमके फासलेपर गंगाकनारे एकवडाल्बसूरत जैनश्वेतांवर मंदिर बनाहुवा है जो मानींद देवलोकके नजरआताहै, इसमे तीर्थकर चंदामक्षके

कदम और तीर्थंकर शांतिनाथ महाराजकी शामरंगमूर्ति करीव (१॥) फूटबर्डी तस्तनशीनहें, दर्शनकरके दिलखूशहोगा. करीब (४) विघेके घेरेमेंमंदिर और कोट इस खूबसुरतीकेशाथ बने हैिक —मानो ! एक देवमजिल्स नजरआती है. कोटकी पूर्वतर्फ गंगा नदी वहती है, पहाडकी चोटीपर क्याही ! उमदा तीर्थस्थान बना हुवाहैिक —जिसकी तारीफ वेंमीशालहें. कोटकेघेरेमें करीव पांचह-जारआदमी बखूबीवेठसकते हैं, —मंदिरकी पश्चिमतर्फकाकोट गिरग-याहें, इसकी मरम्मतहोना दरकारहें, यात्री चंद्रावतीकी जियारत करके वापिस बनारस आवे. रैलरास्तेगयेहो—वे—रैलसे—और—इके वगीमें गयेहो—वे—इके बगीमें बनारसही आवे,—क्योंकि—आगे—जानेकेलिये रास्ता इथरहीसे हैं.—बनारससे यात्री गया शहरहोतेहुवे आगे भदीलपुरकी जियारतकों जावे.—

वनारससे रैलमें सवारहोकर-मोगलसराय-मझवार-सैयदराज-कर्मनासा-दुर्यटी-भाबुआरोड-पुसौली-कुद्रा-सहसराम-करवंडिया-देहरीआनसोन-सानइष्ट्रवंक-पालमेरगंज-फिसार-जिल्लीम-रफीगंज-इस्माइलपुर-और-परैया होतेहुवे गयाशहर जाय,
रैलकिराया अंदाज पनराआने नवपाइ, बिहारप्रदेशमें गया-एक
पुरानाशहरहे, गयाके दो हिस्से है, एकपुरानागया-और-दुसरासाहवगंज, फल्एनदीके वायेकनारे दोनोंहिस्से आवादहै, साहवगंजमें सडकेलंबीचौडी-मकानात-दोतीन-मंजिले-और-वाजार रवनकपरहे. जैनश्वेतांवर आवकोके घर-या-मंदिर यहांपर नही. तिजारत गयामें ज्यादहहोती है, फल्एनदीके कनारे कड्याट बनेहुवे
है, वैदिक मजहबवाले गयामें अपनातिर्थ मानते है, और पींडदान
करते है, गयाशहरसे (६) मीलके फासलेपर बौधगया नामसें
एकमशहूर मंदिरहे. और बौधलोग वडीबडीद्रसें यहां आते है.

गयाशहरकी मर्दुमशुमारी साहवगंजको मिलाकर (८०३८३) मनु-ष्योंकी-और-टेशनसें शहर कुछ फासलेपरहै, सवारीकेलिये इका बगी तयार मिलती है.—

👀 (तवारिख-तीर्थ-भदीलपुर,)

गया शहरसें भदीलपुर खुक्की रास्ते करीव (१६) कोशके फासलेपर वाकेहै, और वहांजानेकेलिये (२) रास्ते हैं, एक शहर घाटी होकर दुसरा डोवीगांव तर्फ, शहरघाटीवाला रास्ताअलाहे, गयासे शहरघाटी (१०) कोश—और—शहरघाटीसे हंटरगंज (४) कोश—और हंटरगंजसे (२) कोशआगे हटवरीयागांव मिलेगा. गयाशहरसे इका—वगी—िकराये मिलसकते हैं. इकेका किराया जातेआते करीव (५) रुपये—और—बगीके दस या—बारां समझो. खानपानके लिये गया शहरसे बंदोवस्त करलेना बहेतरहें, गयासे शुभहकों इकेमें रवाना होकर शामतक हंटरगंज पहुच सकोगे, वहां रातको ठहरकर शुभहकों हटवरीया गांव जाना, पहाडकी तराइमें झाडी झुखड-—द्रख्तोके झुंड और वीश पचीश घरोंका कस्वा—हटवरीया गांव—आवादहें, पेस्तर यहां भदीलपुर शहर आवाद्या,—

दसमे तीर्थकर शीतलनाथ महाराज इसी भदीलपुरमें पैदाहुवे, चवन--जन्म--दीक्षा -और--केवलज्ञान--ये--चारकल्याणक उनके यहांहुवे, द्रदृश्य राजाके घर नंदारानीकी कुखसें माघवदी (१२) पूर्वीषाढा नक्षत्रके रीज उनका यहां जन्महुवा, बहुत अर्सेतक भदीलपुरपर सलतनत किइ, दीक्षाके पेस्तर एक सालतक उनोने यहां खैरातिकई, माघवदी (१२) के रीज दुनियाके एशआराम छोडकर उनोंने यहां दीक्षा इिंग्तियार किइ, और पोषवदी (१४)

के रीज उनकों यहां केवलज्ञान पैदाहुवा, देवकीजीके (६) पुत्र इसी भदीलपुरमे परवरीश हुवे, पेस्तर जोकुछ रवन्नकथी अवन-रही,-अाजकल-यहां-न-कोइ श्रावकहै,-न-जैनश्वेतांवर मंदिरहै, पहाडपर वेशक ! एक मंदिरहै मगर वगेर मृत्तिके खालीपडाहै. हटवरीया गांवसे एक आदमीकों शाथलेकर-पहाडपर जानाचा-हिये, वर्गर आदमीके रास्तेका पता-न-लगेगा. पहाडका चढाव करीव (?) कोशका होगा. जिधर देखो तरह तरहकी वना-स्पति और हरेक किसमके द्रख्त खडे है. जब पहाडके सीरेपर जाओंगे वडा मेंदान और वहांपर एक आकाश लोचन तालाव मिलेगा. इसके पास थोडी दूरपर एक खाली जैनश्वेतांबर मंदिर जो उपर छिखचुके है खडाहै. उस जगहपर जाकर तीर्थकर शी-तलनाथ महाराजकी इवादतकरे और अपनी भदीलपुर तीर्थकी जियारत कामयाव हुइ समझे, आकाश छोचन ताछावकी पूर्वतर्फ एक पाताल पानीकुंड वनाहुवाहै,-पहाडसें करीव (६) घंटेमें दर्शन करके नीचे हटवरीया गांव आसकतेहो, भदीलपुरके पहा-डकों आजकल यहांके लोग कोलुका पहाड वोलतेहै, मगर असली नाम भदीलपुर तीर्थ है, हटवरीया गांवसे इक्रेमे सवार होकर वापिस हंटरगंज होतहुवे शहर घाटी आकर रातकों आराम क-रना. और दूसरे रौज सबेरे चलकर दिनके दो−बजेतक गया **शहरकों** आना, गया सहरसे रैलमे सवार होकर मानपुर-पैमार-वजीरगंज-तिलेया देशन होतेहुवे नवादा देशन उतरे, रैलिक-राया दो-आने-नवपाइ, यहांसे खुक्की रास्ते पंच तीथींकी जियारतकों जावे,-

नवादेसे पंचतीर्थकों जानेकेलिये सवारी मिलसकती है, खु-इकी रास्ते अंदाज (२०) कोसके घेरेमें पंचतीर्थीकी जियारतकरे

गुणायाजी-पावापुरी-राजगृही--कुंडलपुर--और--सुबेविहार-ये-पंचतीर्थीं नामहै, और सुबेविहार-रैलका टेशनहे, जो यात्री सु-बेविहार टेशन उतरकर पंचतीर्थीं की जियारत करना चाहे-उनको तीनकोसपर अवल कुंडलपुर जानाचाहिये, कुंडलपुरसे (४) कोश राजगृही-राजगृहीसें (५) कोश पावापुरी और पावापुरीसें (६) कोश गुणायाजी-और गुणायाजीसे करीव (१) कोशपर कस्वा नवादाहै. जोकोइ यात्री नवादा टेशन उतरकर पंचतीर्थीं करनाचाहे तो अवल गुणायाजीकी जियारतकरे, गुणायाजीसें पावापुरी, पावापुरीसे राजगृही-राजगृहीसें कुंडलपुर और कुंडलपु-रसे मुबेविहार जावे, जिनकी जैसीमरजीहो-वैसाकरे,—

जोकोइ यात्री नवादा टेशन उतरकर पंचतीर्थीकी जियारतकरे और वापिस नवादा आवे तोभी बनसकताहै, नवादासे अवल राजगृही जाय,—

🌬 [तवारिख तीर्थ राजगृही,]

मुलक मगधकी राजधानी राजगृही नगरी पेस्तर वडीरवश्रक परथी, क्षितिंत्रतिष्ठित नगर-रिषमपुर-कुशामपुर-ये-सवइसीके नामहै. बीसमें तीर्धकर मुनिसुत्रतस्वामी इसी राजगृहीमें पेदाहुवे, मुनिस्तराजाके घर पदमावती रानीकी कुखसें ज्येष्टवदी (८) मी अवण नक्षत्रके रोज उनका यहां जन्महुवा. बहुत असेतक उनोने राजगृहीपर अमलदारी किइ. दीक्षा लेनेके पेस्तर एकसालवक उनोने यहां बहुत खैरात किइ, फालगुन मुदी (१२) के रीज दुनीयाके एस-आराम-छोडकर उनोने यहां दीक्षा इल्तियार किइ, ग्यारह महीने छदमस्थ हालतमें रहे, यानी तपकिया, और

फाल्गुन वदी (१२) के रीज उनकों यहां क्षेत्रलज्ञान पैदाहुवा. इंद्रदेवने वगेरा उनकी खिदमतमें-आतेथे,-

तीर्थंकर महावीरस्वामीने यहां (१४) चौमासे किये. महाराज यसेनजित इसीराजगृहीके राजाथे. जो राजा श्रेणिकके वालिद्थे महाराज प्रसेनजितकों औरभी कड लडकेथे. एक वस्तकी बातहै तमाम लडकोंकों हुकम दियाकि–तुम–आयुधशालामें जाओ ! और एकएक चीज-जो-तुमारे दिल पसंदहो-उठालाओ, तमाम लडकोने अपने दिलके मुताविक एकएक चीज उठाइ किसीने हीरा-जवाहि रात-और किसीने मोती वगेरा उठाया, और अपने वालिदके सामने आये. श्रेणिक लडकेने एक विंभीसार नामकी भेरी उठाइ और अपने वालिद्के सामने लाया, महाराज त्रसेनजितने पुछा यह भेंरी क्यों लाया! श्रेणिकने वडी होशियारीके शाथ जवाब दियाकि-जहां-मेरे नामकी भेरीबजेगी वहांही मेरा राज्यहोगा. उसके वालि-दने अपने दीलमें रूपालकीयाकि लाइक तरूतके यही है, मगर जाहिरातमें उसपर नाराजी इस गरजसे वतलातेथेकि-कोइ-रानी-या-नोकर चाकर इसकों मार-न-डाले, इधर श्रेणिक अपने वा-**छिदके खयालात देखकर अैसा समझ गयाकि**−मरे वालिद सुजसे नाराजहै-मुजे- लाजिमहै-में-कहीं दुसरे शहरमें चलांजाउ. गर-जिक−राजग्रही छोडकर चलागया. जब वालिदका अखीर वरूत आया-उसवष्टत उनोने श्रेणिककों यादाकिया, दिवान वगेरासे कहा इसकों हृंढलाओ ! और राजग्रहीके तस्तपर विठाओ !! नोकर चाकर लोग इनकों तलाश करके लाये और बाद प्रसेन-जितके उनकों तख्तपर वेठाये, तीर्थंकर महावीर स्वामीके जमानेमें राजगृहीके तस्तपर श्रेणिकराजा राज्य करताथा, पेस्तर दिगर मजहबपर इसका एतकात था मगर जब तीर्थंकर महाबीर स्वामी-की धर्मतालीम पाइ उसका एतकात जैनमजहबपर पावंदहुवा,

तीर्थंकर महावीर स्वामीके ग्यारह गणधरोने यहां मुक्तिपाइ, जंबुस्वामी-एकवडे कामील शख्श जिनकेघर करोडो रूपयोंकी दौलतथी–और–जिनके आठऔरतें वडीकमालहुस्न–और–खुबसु-रतथी−छोडकर उनोने यहां दीक्षा इक्तियारिकइ, धन्ना−और− शालिभद्रजी–इसी राजगृहोके रहनेवालेथे. जिनकेघर अजहद दौ-ळतथी उनोनेभी यहांदीक्षा इच्तियारिकइ, अगर धर्म-प्यारा-न-होतातो औसा कौनकरता !-शय्यंभवसूरि इसी राजगृहीमें जैना-चार्योकी धर्मतास्त्रीमसे जैनहुवे, वडीवडी नायाव--और-अजुबा वातें-यहां होचुकी है. राजा श्रेणिकके कइरानीयां और लडकेथे, जिनमें अभयकुमार एकलायक और अकलमंद शख्शथा. और वही उनका दिवानथा, जब उसने दुनियाछोडकर दीक्षा इंग्लियार किइ, कौणिक नामका लडका जोकि-वडाजाहिलथा-रा<mark>ज्यकी</mark> लालचसे अपने वालिद श्रेणीककों केदकरके आप राजगृहीके तस्त परवेठा, अभयकुमार अगर दुनियादारी हालतमें मौजूदहोतातो कौ-णकी ताकत न-–होतीकि-–अपनेजइफ वालिदकों केदकरसकता. राजाश्रेणिक जइफीहालतमें होहीगयेथे, केदमेंही उनका इंतकाल हुवा, राजगृहीके वार्किदे कौणिकपर बहुतनाराजहुवे, और कहने लगे जिसने अपने वालिदकों केदकिया-वह-हमारेशाथ कयासछ-ककरेगा ? श्रेणिक जैसे राजा और अभयकुमार जैसे दिवानहोना दुसवारहे, राजाश्रेणिकके मरनेपर कौणिकने राजगृही छोडकर चंपानगरीमें रहना इच्तियार किया, हल्ल-विहल्कुमार जो कौणि-कके छोटेभाइथे, उनकेशायभी उसने नेकी नहीकिइ, गरजिक-कौ-णिकने अपनी तमामउमर झगडेबखेडेमेंही खतमिकइ, आखीरकार तीर्थकर महावीरस्वामीकी नसीहतसें कुछजैनधर्मपर एतकातलाया था-मगर वसववजद्फीके ज्यादह धर्मनही करसका. उसकी वफा-तुकेबाद उसका वेटा उदायि-उसकी जगहपर-तुष्तुनश्चित्र,

लेकिन! उसने अपना तरूत चंपानगरीमें रखना पसंदनही किया, और नयाशहर पटना आबाटकरके वहांपर अपना रहना वसना इस्तियार किया.

रोहिणीयाचौर इसी राजगृहीके पास वैभारगिरिकी कंदरामें रहनेवाला था, और किसीसे गिरफतार नहीहोसकताथा, एकरौज इत्तिफाकसे उसने तीर्थकर महावीरस्वामीकी कुछ धर्मतालीमसुनी, और उसतालीमसे उसको नसीहतहुइकि-में-ऐसे फेलोंकों छोड-**कर परमात्माकी इवादतमें दिललगाउ. गरजिक-उसने चौरीकर**ी ना छोडकर धर्मपर दिललगाया, राजगृही आजकल एकछोटासा कस्वाहे, करीब अढाइइजारवर्षके पेस्तर यहां झलाझलरौशनी और दौस्रतथी, आजयहां न-वह-दौलतहै-न-एवन्नकहै, असलमें-ज-वाल-और-कमाल सबकों लगाहुवाहै, राजगृहीका एकमहोल्ला-नाळंदनामका-ओ-बहुतमशहूर और मारुफथा, जिसमें जैनलोगोर की बहुतआबादीथी, चीनामुसाफिर हवांक्तसांग-और-सीनयन-अपनेसफरनामेमें बयानकरते हैकि-हमने-राजग्रहीकों और नालंद महोलेकोंभी देखाथा. बडेबडे पंडित-और-दोलतमंद लोग यहां रहतेथे. इसवरुत राजगृहीमें जैनोकी आवादी नहीरही. जैनश्वेतां-बरमंदिर और एक-बडी आलिशान जैनश्वेतांवर धर्मशाला-करीव (४) विघेके घेरेमें पुरुता वनीहुइ है. इसमें तीनकोटरी-जो⊸ दखनकीतर्फ बनीहुइ है. श्रीमती-हुलासवाइ--साकीन बंबाइ-बनाइहुइ है. अठारांकोठरी पंचोकीतर्फसे-और-बीचमें एकवंगला -क्षेठ रुपचंद रंगीलदास-साकीन एवला-ग्रुस्क दखनवालोका व-नायाहुवाहै. एकवगीचा वीचइसी धर्मशालाके बनाहुवा जिसमें गुलाव-चमेली-वेला-गुलदाउदी--जुही--निवार-और हारशिंगा-बरोराकेफुल पैदाहोते हैं और हमशांकी पूजनमें चढायेजाते है यात्री धर्मशालामें कयामकरे. इका-बगी वगेराकेलिये पासमें दुसरी ध-र्मशाला करीव (५) विघेके घैरेमं मौजूदहै, चारोंतर्फ कोट घिरा हुवा-करीव-(२००) गाडीबेंल-इसमें व-खूबीरहसकते है.

जैनश्वेतांवर मंदिर यहां तीनहै मगरएकही हातेमें बनेहुवे हो-नेकी वजहसे दूरसें एकही माऌमहोते है, एकपुराना-और-दो-नये है, एकमंदिरमें तीर्थकर पार्श्वनाथजीकी मूर्त्ति-दुसरेमें तीर्थकर रिषभदेव महाराजकी-और-तीसरेमे-तीर्थकर मुनिसुत्रतस्वामीकी मूर्त्ति-तख्तनशीनहै. तीर्थ राजगृहीका कारखाना-मुनीम-गुमास्ते -नोकरचाकर-पूजारी वगेरा सबश्वेतांवरोंकी तर्फसे है, खानपान-कीचीजे आटा-दाल-घी-सकर-वगेरा यहां मिल सकती है.

राजगृहीके पंचपहाड जिनपर जैनश्वेतांवर मंदिरवनेहुवे, का-बिलदेखनेके है, राजगृहीसें थोडीदूरपर चलनेसे विपुलगिरि पहा-डकी दामनकों जाते रास्तेमें गर्मपानीके भरेहुवे पांचकुंड मिलते है, वहांसें आगे पहाडकारास्ता शुरुहोगा, रास्ता वांकाटेडा-और-च-ढाव मुक्किलहै. पहाडके सीरेपर अइमंता मुनिकी छत्री वनीहुइ और उसमें अइमंताम्रनिकी शामरंग मृर्त्ति-खडेआकार तख्तनशीन है, और उसपर लिखाई संवत् (१८४८) काति<mark>कसुदी−पुनमके</mark> रोज जैनश्वेतांवर संघने यहां अतिम्रुक्तकमुनिकी मृत्ति तख्तनशीन किइ, और अमृतवाचक महाराजने इसकी प्रतिष्ठा किइ, दूसरा मं-दिर तीर्थकर महावीरस्वामीका इसमें उनकेकदम कमलदलपर त-रुतनशीनहै. तीसरा मंदिर तीर्थकर चंदापभ्रका इसमें चंदापभ्रके कद्म तरुतनशीन है. चोथामंदिर तीर्थकर महावीरस्वामीका-इसमें तीर्थकर महावीरस्वामीके कदम-और-एकमृत्तिं खडीसुरतमें तख्त-नर्शानहै, इसमंदिरकी दूसरी मंजिलपर समवसरणकी शिकलबनी हुइ–तीनकिले–और–वारांपरखदाका आकार उमदा बनाहुवा–दे-

खकर असलीसमवसरण यादआताहै, पांचवामंदिर तीर्थेकर मुनि सुत्रतस्वामीका-इसमें सुनिसुत्रतस्वामीके कदम तरूतनशीनहै, और उसपर लिखाहै संवत् (१९२८) में इसकी मरम्मत किइगइ, छटामंदिर तीर्थेकर रिषभदेवस्वामीका-इसमें उनके कदम तरुतन-शीनहै और उसपर लिखाहै संवत् (१८१६) ओश्चवंशगोत्रे--बुलाखीदास-तत्पुत्रमाणिक्यचंद्रेण-राजगृहे --वैभारगिरौ-जीर्णी-दार:कारापित:-असलमें यहकदम-वैभारगिरिपरथे वहांसे यहां लायेगये है. दुसरेकदम-तीर्थकर रिषभदेव महाराजके यहांपर मौ-जूदहै, और उसपर संवत (१८७४) में-श्रीजिनहर्षसूरिने इसकी प्रतिष्टािकइ लिखाहै, यह कदमभी पेस्तर वैभारगिरिपरथे, वहांसे यहां लायेगये है, तीसरे कदम तीर्थकर महावीरस्वामीकेभी यहां-पर जायेनशीनहै. और उसपर छिखाहै संवत् (१९००) में इस-की मतिष्टा किइगइ-और-ओशवाल वंशोद्भव-वाबु खुशालचंद्र पत्नी-प्राणकुमारीबीबीने इनकों वनवाये, विपुलगिरिसे उतरकर रत्नागिरि पहाडपर जाना. विपुलगिरिका चढाव एककोशका-और-उतारभी एककोशका है.-

रत्नागिरि पहाडपर दो-मंदिर वनेहुवे है एकवडा और एक छोटा-बडामंदिर तीर्थंकर शांतिनाथजीका-इसमें शांतिनाथमहारा-जके कदम तस्तनशीनहै. और उसपर छिखाहै संवत् (१८१९) में ओश्ववालगंधीगोत्र–बुलाखीदासके वेटे–मणीक्यचंद्रगंधीने इसकों तामीरकरवाये, तीनकदम औरभी है उनपरभी यहीलेख लिखाहुवा है, दूसरामंदिर तीर्थेकर चिंतामणीपार्श्वनाथजीका–इसमें उनके कदम-तख्तनशीनहै, और उसपर छिखाहै संवत् (१९००) में-सचितीगोत्र-वाबु-महतावचंदजीकी औरत-चिरोंजीबीबीने इसकी मरम्मतकरवाइ, ये-कदमभी पेस्तर वैभारागिरपिरथे, बादमें यहां

लायेगये है, रत्नागिरिसें उतरकर उदयगिरिकों आना, पहाडसें उतरकर एक मीलतक साफरास्ता मिलेंगा, इसजगह बहुतबडा मेंदान-और-तरहतरहकी जडीबुटीयें-खडी है, अनंतमूल-गोर-खंडी-शतावर-सहदेवी-आसगंध-वगेरावगेरा, फुलोंमें चमेली-बेला-गुलदाउदी-जुही-निवार वगेरा यहांपर पदाहोते है. रास्तेमें मीठेजलका कुवा मौजूदहै जिसकेजरीये यात्रीयोंकों आराम मिलताहै,—

उदयगिरिका चढाव-कठिनहै, और इसपर दो-मंदिर-मौजू-दहै. एक-शामलियापार्श्वनाथजीका-दुसरा शांतिनाथजीका-शा-मिलयापार्श्वनाथजीके मंदिरमें—तीर्थकरपार्श्वनाथजीकी निहायत खूबसुरतमूर्त्ति-करीव (२) हाथवडी तख्तनशीनहै, इसपर छेख नहींहै, और जो तीर्थकर पार्श्वनाथजीके कदम जायेनशीनहै उस-पर लिखाहै संवत् (१८२३) में-ओशवालगंधीगोत्र–बुलाखीदा-सजीके बेटे माणिक्यचंद्रजीने इसकों तामीरकरवाये,-मंदिरकी परकम्माके सामने एक छत्री बनी हुइहै, उसमें तीर्थकरपार्श्वनाथ जीकी शामरंगमृत्ति-और-तीर्थकर अभिनंदनजीके कदम तख्तनशीन है. उसपरिक्रवाहै संवत् (१८२३) में ओशवालगंधीगोत्र-बुलाखीदास-जीके वेटे माणिक्यचंद्रजीने इनकों बनवाये, दाहनीतर्फकी दिवारमें एकछत्री वनीहुइहै और उसमें तीर्थकर पदमप्रभुकी शामरंगमुर्ति जायेनशीनहै. पिछाडीतर्फ दिवारमें एकमूर्त्ति और उसकेपास ती-र्थकर सुमतीनाथजीके कद्म जायेनशीनहै, और उसपर छिखाहै संवत् (१८२३) में ओशवालगंधीगोत्र-माणिक्यचंद्रजीने इसकों तामीर करवाये. वायीत र्ककी दिवारमें एक छत्री और उसमें एक-मूर्ति शामरंगकी तख्तनशीनहै, पूर्वतर्फ तीनमंदिरगिरेह्रवेपडेहै, उ-द्यगिरिपर पेस्तर औरभी कइमंदिरथे मगर सबनेस्तनाबुद होगये, उदयगिरिसें उतरकर स्वर्णगिरिकी तर्फजाना. रास्ताकोसभरका-

उतार-वीचमें कुछ सिधीसडकभी आतीहै. यहांपर पानीका एकनाला हमेशां वहता रहताहै, यात्रीकों पानीकी तकलीफ नहीहोती.

स्वर्णगिरिपहाडका चढाव और उतार दोंनोंबराबरहे और इसपर (२) मंदिर वनेहुवेहै, वडामंदिर तीर्थकर रिषभदेवस्वामी-का-इसमें तीर्थकररिपभदेवमहाराजकी शामरंगमूर्त्ति-और-उनकेक-दम तख्तनशीनहै, मूर्ति करीव (३) फुटवडी और इसपरिलखा हुवाहै संवत् (१५०४) फाल्गुनसुदी (९) वीजाहडगोत्र-सं-देवराजपुत्र–सं–स्वीमराज–सं−िशवराज –भार्यामाणिक्यदेपुत्र-–सं− रणमञ्जधर्मदासने-यदमूर्ति तामीरकरवाइ. दुसरामंदिर छोटाहै, और इसमें तीर्थकर शांतिनाथजीकी मूर्त्ति करीव पौनफुट वडी त-रूतनशीनहै, वडेमंदिरकी पश्चिमतर्फ एकमंदिर गिराहुवापडाहै, पेस्तर औरभी कइमंदिरथे-मगर-अवनहीरहे. स्वर्णागिरिसें उतरकर वैभा-रगिरिपहाडकों जाना, रास्तेमें तरहतरहकेद्रख्त और जडीबुटीयें इत-नीखडीहै जिनका पहिचाननादुसवारहै, वैभारगिरिकीतराइमें-ख-र्णभंडार-जो-राजाश्रेणिकका मशहूरखजानाथा पहाडकी खोहमेंबना हुवाहै, वडीभारीगुफा-और-उसके भीतरजानेकारास्ता पेस्तर वना हुवाथा आजकलवंदहै. गुकाकेद्रवजेकेकरीय तीर्थकरिषभदेवमहा-राजकी मूर्त्ति खडीसुरतमें कायोत्सर्गध्यानमयमोजूदहै, और कुमा-रनमि-विनमि-उनकी खिद्मतमें खंडेहै, दर्शनकरके दिलखुशहोगा, स्वर्णभंडारसें पूरवर्कातर्फ निर्माल्यकुइ जहांकि–शाल्ठिभद्रजीकी औरतें हरहमेश नयेनये गेहने और पुशाकपहेनकर पुराने छोडदेतीथी, बो-जगह मौजूदहै, यात्री वहांभी जाकरदेखे, क्या क्या! खुज्ञनसीव और इकवालमंदोकीजगहथी और अवक्या ! रहगइ ? सीर्फ ! जमीन पडीहै. न-वो-रवलकहै-न-वो-चीजेहै. निर्माल्यकुइसे वापिस स्व-र्णभंडारकी तर्फअकर वैभारिएरिएहाडकों जाना.

वैभारगिरिपहाड करीव कोसभरऊंचा-और-वनिस्वतचारों-पहाडोंके इसका चढावउतारआसानीपरहै, इसपरअवलमंदिर तीर्थ-करवासुपूज्यस्वामीका-इसमें-तीर्थकरवासुपूज्यस्वामीकीमूर्त्ति करीव (२) हाथवडी परिकरसमेत तल्तनशीनहै, दाहनीतर्फ तीर्थेकरने-मनाथजीकेकदम जायेनशीनहै, इसकी मरम्मत संवत् (१७७६) में हुइ, वायीतर्फ तीर्थकरशांतिनाथजीकेकदम मौजूदहै, इसकी मरम्मत संवत् (१९००) में हुइ, दुसरा मंदिर तीर्थकरमहावीरस्वाभीका इसमें तीर्थकरमहावीरस्वामीकीमृत्तिं करीव तीनफुटवडी शामरंगत-ख्तनशीनहै, और तीर्थकर कुंथुनाथमहाराजके कदमभी इसमें मोजू-दहै, इसकी मरम्मत संवत् (१९००) में-वाबु मोहनलालजीके बेटे-हकुमतरायजीने करवाइ, तीसरामंदिर तीर्थकरमहावीरस्वामीका इसमें उनकेकदम संवत् (१८७४) के प्रतिष्टित–और–तीर्थकर नेमनाथजीकेकदमभी जायेनशीनहै, एकमृत्तिं तीर्थकरपार्श्वनाथजीकी करीव (२) हाथवडी शामरंग जायेनशीनहै, यहमंदिर श्रीयुतवाबु परतापसिंहजी-साकीन मुर्शिदाबादने तामीरकरवाया, जोकि-बडा संगीन-और-पायदारहै, इसके चारोंकोंनेंमें चारकदम अलगअलग जायेनशीनहै, इसमंदिरकी दोंनोंतर्फ और सामने तीनमंदिर मिरे हुवे विरानपडेहै, पेस्तर इसवैभारगिरिपर बहुतसेमंदिरथे-अबदिन ब-दिन कमहोतेजातेह, चोथामंदिर चौइस तीर्थकरोंका इसमें चौ-इसतीर्थकरोंकी छोटीछोटी (२४) मूर्ते एकही परीकरमें तख्तनशी-नहै, पांचवामंदिर तीर्थकररिषभदेवस्वामीका इसमें तीर्थकररिषभदेव महाराजकीमूर्ती तख्तनशीनहै, यहमंदिर-ओशवालगंधीगोत्रमाणे-कचंद्रजीने तामीरकरवाया, रंगमंडप इसका उमदा और काबिल देखनेकेवनाहै, इसकी उपरकी मंजिलपर नकशा समवसरणका-निहायतउमदाबनाहै-जो-आस्मानसं मशवरा करताहै देखकर अ-सुद्धी समवसरण यादआताहै, छठामंदिर गौतमगणधरका-जो-

पांचवेमंदिरसे आगे आधमीलके फासलेपरहै, इसमें तीर्थकर महा-वीरस्वामीकीमूर्त्ति करीव (४) फुटबडी तख्तनशीनहै,-और एकतर्फ (११) गणधरोंके कदम जायेनशीनहे, और उनपरिलखाहै संवत (१८३०) माघ गुक्लपंचमी शुक्रवारकेरौज ओशवालवंश-गहेलडा गोत्र--नगतशेठ--फतेचंद्रजी--उनके वेटे आनंदचंद्रजी-उनके वेटे मेहतावरायजी–उनकी-शेठानी–-शिंगारदेवीने–राजग्रहीके वैभार-गिरि पहाडपर--(११) गणधरोंके कदम तामीर करवाये, सातमामंदिर धना--शालिभद्रजीका--इसमें धन्नाशालिभद्रजीकी मूर्ति-कायोत्सर्गध्यानमयखडे आकार करीव (१) फुटवडी त-ख्तनशीनहे, और उसपरिव्याहे संवत् (१५२४) आषाढ (१३) के रौन श्रीजिनचंद्रमूरिमहाराजके उपदेशसें श्रीकमल्रसंयमोपाध्या-यने यहां धन्ना-शालिभद्रजीकी मृर्त्ति प्रतिष्टित किइ, इसके नीचे जिसश्रावकने मंदिरवनवाया उसकानाम वगेरालिखाहै मगर इर्फोंके घीस जानेकी वजहसे उठ सकता नही,-

वैभारगिरि पहाड वडेवडे अजायव और नायाव <mark>चीजोंकी</mark> जगहहै, बडेबडे आलिम फाजिल जैनम्रुनियोंने यहांपर ध्यानसमा-धि किइ. हरेकयात्रीकों ऐसे तीर्थकी जियारत करना चाहिये. वैभारगिरि पहाड सव पहाडोंसें रवन्नकदार है तरहतरहकी किंमती जडीवूटीये यहांपर खडी है. पांची पहाडके तमाम जैनमंदिरमें पूजा-री-नोकर-चाकर खर्च आमद्नी वगेरा श्वेतांवरसंघके मातहेत है, और हरेकमंदिरपर मरम्मतहोना दरकार है, वैभारगिरिसे उतरकर राजग्रहीकों आना, पहाडकी दामनमें (१३) कुंड पानीके भरेहुवे पके बंधे हैं, पांचो पहाडोका चढाव-उतार-करीव (१२) कोशके घैरेमें होगा, जोकोइयात्री शुभहके सातवजे राजगृहीसे डोलीमें-या -पांतरेदल-जाव-वह-जियारत करके शामकों वापिस आसकते है,

गर्मीयोके दिनोमं द्फेरकी धूप वैभारगिरिकी तराइमें गुजारनाठीक है, वहां ठहरनेकी जगहवनी हुइ है, चारवजे वैभारगिरिपर जाकर सामकों राजग्रही आसकतेहो, ठंडके दिनोंमें चाहे दिनभर पहाड-की जियारत करतेरहो, धूप विलक्जल-न-सतायगी, जो यात्री डोलीमें जानाचाहे उसको दोरुपये नवआने लगेगे, और डोली उ-ठानेवाले (४) आदमी आयगें, उनकों पहाडपर चढनेउतरनेका महावरा बनाहुवा है, तुमकों वसूबी शामकों राजग्रही पहुचादेयगे. मगर एकरीज पेस्तर डोलीका इंतजाम करलेना चाहिये ताकि--वरवस्त जियारतके देर-न-हो, जो यात्री पांवपेदल जियारत करेतो वहुत वहेत्तरहै मगर कमजोर और जइफआदमी अगर इत नी मेहनत-न-उठासके उनकेलिये डोलीमें जानाभी कोइहर्जनही.

👺 (तवारिख-तीर्थ-कुंडलपुर-और-सुबेविहार,)

कुंडलपुरगांव करीव (५००) घरोंकी आवादीका एककस्वा है, इसका दूसरा नाम आजकल वडगांव वोलते है, करीव चौइस-सोवर्ष पेस्तर इसकानाम माहणकुडगांव था, जिसकाबयान कल्प-सूत्रमें दर्ज है. जमानेहालमें यहां कोइ जैनश्वेतांबर श्रावकनही. एक जैनश्वेतांबर मंदिर यहांपर बनाहुवाहै, और इसमें मूलनायक तीर्थ-कर रिषमदेव महाराजकी मूर्त्ति करीव (३) फुट बडीतप्लतन्त्रीन है. जो-कि संवत् (१५०४) की तामीरिकइहुइ शामरंग निहायत खूबसुरत दर्शनकरके दिलखुशहोगा. सबमूर्त्तियें इसमंदिरमें (१६) है, और एकतर्फ गणधरगौतमस्वामीके कदम जायनशीन है, मंदि-रमें फर्स शंगेमर्मरपथरका और सभामंडप अछा बनाहुवाहे, रंगमं-हपके दरवजेपर एकशिलालेख लगाहे, और उसमे लिखाहेकि-संवत् (१९६०) में जैनश्वेतांवर श्रावक-शेट-रुपचंद-रंगीलदास साकीन एवला-मुल्कदखनने मंदिरकी मरम्मतकरवाइ, मंदिरकेपास भर्मशाला वनीहुइहै, दुरसेमंदिरका और धर्मशालाका एकही हाता माल्म देताहै, यात्री यहां कयामकरे और तीर्थकी जियारतकरे, न्वगीचा एक यहां बनाहुवाहै जिसमें गुलाव—चमेली—बेंला—कामिनी कुंद—जुही—गुलदाउदी वगेराके फुल उतरते है और पूजनमें चढाये जाते है, खानपानकी चीजोमें शिवाय आटादालके और यहांनही मिलेगी, कुंडलपुरकी गिर्दनवाहीमें चारपांच तालाव इसकदर गहरेजलसे भरेहुवे मौजूद है जिनमें हजारां कमलकेफुल पैदाहोते है, जिसके बढेभाग्यहो—ऐसे तीर्थकी जियारतकरे.

🖎 [तवारिख-सुबेविहार.]

जिले पटनेमें सुवेविहार एक रैलवेका टेशनहै, और टेशनसें करीब पौनमीलके फासले वस्ती सुवेविहार शुरुहोती है, सवारी टेशनपर इका-वर्गी वर्गरा तयार मिलती है शहरमें जाकर महोले-मेथीआन-जैनधर्मशालामें कयामकरे, यहांसेभी पंचतीथीं जानेका रास्ताहै. सुवेविहारमें पेस्तर जैनश्वेतांवर श्रावकोंकी आवादी बहुत थी, मगरं इसवख्त सीर्फ ! पांच-छ-घररहगये, मंदिर तीर्थकर महावीरस्वामीका-जो-इसीधर्मशालामें बनाहुवाहै इसके दर्शनकरे, मूलनायक तीर्थकर महावीरस्वामीकी मृत्ति इसमें तख्तनशीन है, इस मंदिरमें एकशिलालेख जो अलगरलाहुवाहै करीव (२) हाथ लंबा-और-एकविलस्त चौडा है, और इसमें राजगृहीके विप्रला-चल पहाडका बयानदर्ज है, तीर्थकर महावीरस्वामी-गणधरमुध-र्मीस्वामी-राजाश्रेणिक-और अभयकुमार वगेरानामभी मौजूद है. संबत् तिथि वगेराकी जगह दुटीहुइहै, पंक्ति (१६) हर्फ उमदा-म-गर बीसजानेकी वजहसें कमपढनेमें आते है, अखीरकी पक्तिमें जहां गचकानाम होता है वहां किसीने तोडदियाहै, वज्र शाखा वगेरा नाम बेशक मौजूद है,

दुसरामंदिर वाजारमें तीर्थिकर चंदामश्रस्वामीका-इसमें तीर्थ-कर चंदामश्रकी मूर्त्ति तस्त्तनशीन है. इसकेपास तीसरामंदिर ती-र्थिकर अजितनाथ महाराजका-इसमें तीर्थिकर अजितनाथ महारा-जकी मूर्त्ति तस्त्तनशीन है, चौथामंदिर महोलेचोखंडीमें तीर्थिकर रिषभदेवस्वामीका-इसमें तीर्थिकर रिषभदेवस्वामीकी मूर्ति विराज-मानहे, इसकेपास एकउपाश्रय जैनसुनिलोगोके उहरनेकेवास्ते मी-जुदहे, बाजार सुवेविहारका उमदा-और हरेकिकसमकी चीजे यहां पर मिलसकती है, तुंगीयानगरी जोकि-आजकल तुंगीगांवके ना-मसे मशहूरहे सुवेविहारसे (२) कोस दखनकीतर्फ वाके है, तुंगी-यानगरीके श्रावकोका वयान जैनशास्त्रोमें जो दर्ज है-वह-यही नगरीथी. पेस्तर वडी आवादथी और यहांके श्रावक बढेधर्मपावंद थे, मगर आजकल-यहांपर-न-कोइश्रावकहे-न-जैनमंदिर है, सीर्फ ! एक छोटासा गांव आवाद है,—

😂 [तवारिख पावापुरी और गुणिशालवन उचान,]

तीर्थकरमहावीरस्वामीकी निर्वाणभूमि पावापुरी एक जैनतीर्थ है, केवलज्ञान होनेकेवाद जब तीर्थकरमहावीरस्वामी यहां तक्षरीफ लायेथे देवताओने उनका यहां समयसरण बनायाथा, समवसरण उसजगहकों कहतेहैं जहां धर्मकेबारेमें तालीम आमलोगोंकों दिइजाय इंद्रभूति-आग्निभृति-और-वायुभृतिवगेरा (११) बढेचेले इसीपावा-पुरीमेंहुवे, वाद पावापुरीसेरवानाहोकर मुल्कोमें आमलोगोंकों ता लीमधर्मकीदिइ, और हरजगह धर्मकीवाज करतेरहे, जवउनकी उ-मर (७२) वर्षकीहुइ फिर पावापुरीमें आये, और अस्तीरका चौ-मासा यहां किया, -जब उनके निर्वाणहोनेका वख्त आया दोहिन-

तक उनोने आमलोगोंकों तालीमधर्मकीदिइ, साधु-साधवी-श्रावक -श्राविका-उसवरूतके कइराजे-और इंद्रदेवतेवगेरा वहांहाजिरथे. उसवष्त तीर्थकरमहावीरस्वामीसे-गौतमगणधरनेपुछाकि--महाराज! अव-आगे दुनियामें धर्मकायचार कैसारहेगा? तीर्धकरमहाबीरस्वा-मीने जवाबिंदयाकि--मेरेनिर्वाणकेबाद तीनवर्ष और साढेआठमहिने गुजरेगे जब पांचमाआरा शुरुहोगा. उसरीजसे धर्मकी दिन-ब-दिन घटतीहोतीजायगी और अछीअछीचीजोंका जवालहोताजाय-मा, साधुलोग तकलीफ पायमें और असाधुलोग चैनकरेगें, वा-रीश जैसी होनाचाहिये-न-होगी, देवमंदिर कमहोतेजायगे, और धर्ममेंभी लोग फरेवकरेगें, पांचवेआरेके एकीसहजारवर्षमें तेइसद्फे अर्मका उदय और तेइसदफे अस्तहोगा, जंबूअणगारकेवाद मुक्ति-काहोना इसक्षेत्रसें बंदहोजायगा, और अधर्मकीवृद्धिहोगी, इसतरह बयानफरमाकर कार्तिकवदी अमावासकेरीज जब चंद्रमा-स्वातिन-**क्षत्र**परथा उनका इसीपावापुरीसें निर्वाणहुवा. (यानी) यहांसे उन् नोने मुक्तिपाइ, देवताओने और मनुष्योने मिलकर उनकेशरीरका यहां अग्निसंस्कारिकया,-

भत्रीयकुंडगांवकेराजा नंदीवर्द्धनने यहां मंदिर तामीरकरवाया जो कमलसरोवरकेवीच अवतक मौजूदहै, दोकोशदूरसे यहमंदिरन-जरआताहै और इसका दूसरानाम जलमंदिरभी बोलतेहै,-पावा-पुरी पेस्तरवहुत आवादथी मगर दिनपरिदन कमहोतीगइ, आज-कल एकछोटासाकस्वा रहगया, जैनश्वेतांवरधर्मशाला यहांपर (४) कायमहै, दो-पंचायती, एक रायबहाद्र्युधसिंहजी-साकीनमुर्शि-दाबादकी-और-एक-दुगड-मुन्नीलालबाबु-साकीनमुर्शिदाबादकी-यात्री इनमें जहांमरजीहो-आरामकरे, बडीधर्मशालामें एक जैनश्वे-तांबरमंदिर बनाहुवाहै, और इसमें तीर्थकर महावीरस्वामीकी मूर्ति तस्तनशीनहै, असलमें यहमूर्त्ति पुरानी है. और उसपर लिखाहैिक संवत् (४४४) में यह प्रतिष्टितिकइगइ, प्रतिष्टा करानेवाले आचा-र्यका नाम घीसजानेकी वजहसे पढनेमें नहीआता, इसमूर्त्तिके इर्द गीर्द तीर्थकर रिषभदेव-चंदापग्र-सुविधिनाथ-और-तीर्थकर नेम-नाथमहाराजकी मूर्तिये जायेनशीनहै, मूळनायकके सामने तीर्थकर महावीरस्वामीके चरन-दाहनीतर्फ पुरानेचरन-बायीतर्फ ग्यारहग-णधरोंके चरन-और-देवर्द्धिगणि क्षमाश्रमण महाराजकी मूर्ति क-रीव (१) फुटवडी जायेनशीनहै, चारोकोंनोंमे चारछत्री-एकमें ती-र्थकर महावीरस्वामीके चरन–एकमें स्थूलभद्रजीके **चरन–एकर्मे** चंदनवालाके-और-एकमें दादाजीके चरन-मौजूदहै, रंगमंडप मंदि-रका निहायत पुरुता-और-निचे फर्स शंगमर्भरपथरका साफबना हुवाहै, मंदिरका शिखरवहुत बुलंदहै, और उसपर बावनकलसीयां लगीहुइ-निहायत खूबसूरित देरही है, मंदिरके वहार बगीचा एक बहुत–तर–व–ताजा–वनाहुवा इसमें गुलाव–चमेली–चंपा–केतकी-–वेंला–मोघरा−गुलदाउदी−डमरा−मरुआ--जु<mark>ही−कुंद−वगेराकेफुल</mark> पैदाहोते है और हमेशांकी पूजनमें चढाये जाते है,—

धर्मशालाके अंदर (२१) कोठरी और कइदालानहै, सब काम मजबूत और लदावका कियाहुवा—करीव (४००) आदमी इसमें व-खूबी आराम करसकते हैं, और दरवजेके फाटकपर न-कारखाना जारी हैं, दुसरी धर्मशाला इसीकी दिवारसे लगीहुइ इसमें वडाभारी कमरा और चारोतर्फ चारदालान बनेहुवे हैं. चा-रोंतर्फ कोट खीचाहुवा और एकवगीचा इसमेंभी मौजूदहै, दोंनो धर्मशाला—और—मंदिर करीव (५) विधेकेधेरेमें बनेहुवे—और चारकुवे मीठेजलके यहांपर मौजूदहै, धर्मशाला और मंदिरके सा-मने जो सिधिसडक जाती है वह कमल सरोवरतक पहुची हैं. जहां तीर्थंकर महावीरस्वामीके चरन मुकीमहै, रास्तेमं-एकमंदिर-मेहता-बकुंवर-साकीन-मुर्शिदाबादका तामीरकरायाहुवा शिखरवंद मी-जूदहै, और उसमें मूलनायक तीर्थंकर महावीरस्वामीकी मूर्ति क-रीव (२) हाथबडी तख्तनशीनहै, एकतर्फ तीर्थंकर रिषभदेव--और-एकतर्फ-शांतिनाथ महाराजकी मूर्त्ति जायेनशीनहै, मंदिर-के उपर चौमुखाजीकी चारमूर्त्तिये-शिखर निहायत पुख्ता-जिस-पर सोनेका कलश लगाहुवा देखकर दिलखुशहोगा. सामने मीठे जलकाकुवा और एकवंगीचा लगाहुवाहै, जिसमें गुलाव-चमेली-वेला-गुलदाउदी--कुंद-जुही--जासूस--वगेराके फुल पैदाहोते है, और हमेशांकीपूजनमें चढायेजाते है. मंदिरके पिछाडी धर्मशाला एक रायवहादृर बुधिसहजी-साकीन मूर्शिदाबादकी तामीर कराइ हुइ जिसमे चारकोटरी-दोदालान-और-एक-कमरा-बनाहुवाहै, करीब (१००) आदमी इसमेंकयाम करसकते है दुसरी धर्मशाला वाबु मुनीलाल दुगडकी इसमें पांचकोटरी-चारदालान-और वी-चमे खुलाचौक मौजूदहै इसमें करीब (५०) आदमी टहरसकते है,

कमलसरोवरकी उत्तरमें एकमंदिर समवसरणका-जिसकीक-तावजा निहायत उपदा-आठ मेहरावें -चारोंतर्फ लोहेकीजाली,--मेहराबोकेउपर तरहत्रहके शीशे लगेहवे-मंदिरकेठीकवीचमें शंग मर्भरपथरकी वेदी बनीहुइ और इसमें तीर्थकर महावीरस्वामीके पु-रानेंचरन तख्तनशीनहै. इसपर पुराना लेखथा, मगर-ब-सवब घीसजानेकी वजहसे खुलनहीसकता, मंदिरकीचारोतर्फ (४८) चश्मोंका कोट-और-लोहेकाकठहरा बनाहुवाहै, जमीन पथरचुनासे गचीकिइहुइ-और-करीव एकवियेके घेरेमें यहमंदिर आवाद है, केवडेकेद्रख्त सामनेलगेहुवे और इसकी खुशबुचारोंतर्फ महेकरहीहै.

(बयान मंदिर कमलसरोवर.)

मंदिरकमलसरोवर जिसकाहाल उपरवतलाचुकेहैकि—यह—मं-दिर—श्रत्रीयकुंदगांवके राजानंदिवर्द्धनका तामीरकरायाहुवाहै. इस मंदिरका आसार और दिवार इसकदर पायदारीसे बनाइगइहैकि—जमानेहालमें ऐसावनना दुसवारहै, कमलसरोवरके कनारेसे मंदि-र तकजानेकेलिये (५८८) फुटकां पुलवनाहुवाहै यात्री इसीपुलपर होकर जलमंदिरकों जातेहै, दोंनोंतर्फ पुलकेउपर पथरकेकटहरे बने हुवेहै, यात्री जब मंदिरकेपासपहुचतेहै—तो—कोटका—अवलदरवजा मीलताहै, चारोंकोनेपर चारछत्रीये—लोहेका कींमतीकटहरा बहुत बढीकारीगिरीसे सनातिकयागयाहै, यात्री जब दूसरीपरकम्मामें पहुचतेहैं निहायतउमदाजगह माल्पहोतीहै, बहारआनेकों दिलनहीं होता तीसरीपरकम्मा जोिक—दिर्मियान मंदिर और कमलसरोवरके है मानींद स्वर्गकेदैखलो !

जलमंदिरमें तीर्थकर महावीरस्वामीकेचरन पुराने बनेहुवे त-स्तनशीनहै, दाहनीतर्फके आलेमें गौतमस्वामीके और बायीतर्फकें आलेमें सुधर्मास्वामीके चरन जायेनशीनहै, तीर्थकर महावीरस्वामी के चरनोपर हमेशां सोनेचांदीके छत्र बंधेरहते है, वेदीमें और दिवा-रोंपर चांदीकेपत्र लगेहुवे-और-चांदीके खंभोपर शमियाना कम-स्वाबका बनाहुवा रहताहै. यात्री मंदिरमें जाकर तीर्थकर महावीर स्वामीके चरनोंके दर्शनकरे, इसमंदिरके तीनोंतर्फ तीनदरवजे और चारोंतर्फ परकम्मा बनीहुइहै, कातिकबदी-अमावासकरोज तीर्थ-कर महावीरस्वामीके निर्वाणकल्याणका जलसा बढीधूमधामसे य-हांपर होताहै. और उसवस्त बहुतसें यात्री यहांपरजमाहोत है, उस रौज तीर्थकर महावीरस्वामीकी सवारी पावापुरीसे निकलकर इसी कमलसरोवरके मंदिरमं आतीहै, हाथी-घोडे-निशान-धजा-पता-का-रथ-म्याना-पालखी-चांदीका समवसरण और-तरहतरहके बाजे शाथचलते है, इसतरह जलमंदिरमें जाकर शामकों उसी जल सेकेशाथ सवारी वापीस पावापुरीआतीहै, उसवस्त मगधदेशके बहुतसे देहातीलोग जमाहोते हैं, और वडाजलसा होताहै, ऐसा नायाबजलसा यात्रीकों जहरदेखना चाहिये, जिसकेबडेभाग्यहो-ऐसे-मौकेपर जियारतकों जावे, जलमंदिरमें तीर्धकर महावीरस्वा-भीके चरनपर जो अंगीसोनेकी वनीहुइहै रायवहादूर धनपतिसंहजी साकीन-मुश्चिदाबादकी-वनाइहुइहै, पूरवदखनकी कोंनमें जो सो-लहसतीयोंके चरनहै उसपर लेख परतापिसंहजी धनपतिसंहजीका है. उत्तरप्रवकीकोनमें जो गणिदीपविजयजीके चरनहै-वे-जैनथे-तांवरथे, और श्वेतांवरोंकितर्फसे बनायेगयहै, बहारकीलिशीमें जो दादाजीके चरनहै-उसपरलिखाहै संवत् (१७५३) आषादसुदी पंचमीकेरोज प्रतिष्ठित कियेगये,-

कमलसरोवरमें उतरनेकी सीढियां पूरवतर्फकी बनीहुइहै, उस जगह (३०) हाथ उंडा जल हमेशां भरारहताहै. कमलसरोवर (८४) विघेकघेरेमें बनाहुवा हमेशां पानीसे भरारहताहै, कभी सु-कतानही. वारीशकोदिनोमें वडीरवलकदेखोगे, और हरसाल इसमें हजारां कमलफुल पैदाहोते है. मोर-तोते-चिडिया-मुर्घे इसमेंहमेशां कलोले करतेरहते है. पेस्तर यहसरोवर बहुत वडाथा, पावापुरीसे पूरवकों आधमीलके फासलेपर पुराने समवसरणकी जगह छत्रीमें जो चरनथे-कमलसरोवरके नजदीक केवडोंके पेंडोंके पास जो स-मवसरणका मंदिर उपर बतायाहै उसमें तल्तनशीन कियेगये है, पावापुरीमें तीर्थका खजाना-मुनीम-गुमास्ते-नोकर-चाकर-चप-रासी वगेरा सवठाठ वतीर शाहानाके मौजद है, स्वर्च-आमदनी- चढापा-जैनश्वेतांबरसंघके ताल्छकहै खानपानकी चीजे आटा-दाल -घी-दूध-सकर-वगेरा हरवष्टत यहां मिलसकती है, —यात्रीकों कोइतकलीफ नहीहोगी,—

(तवारिख पावापुरीकी खतमहुइ.)

👺 [तवारिख गुणशिलवन उद्यान.]

गुणशिलवन उद्यान-जिसकों-आजकल-गुणायाजीगांव बो-लते है, करीव (३००) आवादीका एककस्वा रहगया, यहांपर बीचतालावके बडाकीमती पुरुता और पायदार मंदिर देखकर पा-वापुरीके हालात माळ्मदेते है. पावापुरीका काम वेशक! बडाहै यहांका तालाव-मंदिर वगेरा छोटे है, तालावके कनारेसे मंदिर तकजानेकेलिये पुल पकावंधाहुवा जो करीव (१७५) हाथलंबा और (४) हाथचौडा-दोनोतर्फ पुरुताकटहरा वनाहुवा-यात्री पुलपरहोकर मंदिरको जावे, वारीशकेदिनोमें तालाव पानीसे भर-जाताहै मगर गर्मीयोंके दिनोमें वेशक! सुकजाता है, मंदिरमें मूल-नायक तीर्थकर महावीरस्वामीकी मूर्त्ति एकफुटवडी निहायत खूब-सुरत तल्तमशीनहै दर्शनकरके दिलखूशहोगा, कदम तीर्थकर म-हावीरस्वामीके-संवत् (१६८६) के प्रतिष्टित-इसीमें जायेनशीन है. बायीतर्फ एकआलेमें कदम गौतमस्वामीके जायेनशीनहै और उसपर लिखाहै संवत् (१६८८) मे-ये-प्रतिष्टित कियेगये, अग्नि-कोंनकी छत्रीमें वीशतीर्थंकरोके कदम संवत् (१९२४) के प्रतिष्टित जायेनशीनहै, वायव्यकोंनकी छत्रीमें संवत् (१९२४) के प्रति-ष्टित तीर्थकर नेमनाथजीके कदम-नैरुत्यकोंनकी छत्रीमें रिषभदेव-स्वामीके कदम-और-इञ्चानकोंनकी छत्रीमें तीर्थकर वासुपूज्यस्वा-मीके कदम-उसीसंवत् (१९२४) के प्रतिष्टित जायेनशीनहै, इसमंदि- रकी मरम्मत संवत् (१९२४) में रायबहादूर धनपतिसंहजी-साकीन मुशिदाबादने करवाइ, और एकधर्मशालाभी यहां बनवाइ,

मंदिरके रंगमंडपमें फर्स शंगमंपरका—और-नवेदी-संवत् (१९५९) में-शेठ-रंगीलदास रुपचंद-साकीन एवला-मुल्कदखनने तामीर करवाइ, और धर्मशालामें पांचकोठरी वनवाइ, बगीचा एक-धर्मशालामें-बनाहुवा-जिसमें-गुलाब-चमेली-बेंला-गुलदा- उदी-जुही-कुंद-वगेराके फुल पैदाहोते है और पूजनमें चढायेजाते है, यात्री धर्मशालामें दिलचाहे जहां कयामकरे और तीर्धकी जियारत हासिल करे, तीर्ध गुणिश्चलवनउद्यानमें गुमास्ता-पूजारी--सिपाही-और-माली-वगेरा हमेशांके लिये तैनात है, खानपान-की मामुलीचीजे यहां मिलसकेगी, अलीचीज कस्वे नवादेमें-मिल्लेगी, जो करीब (१॥) कोशके फासलेपर वाकेहै,-तवारिख पंचतीर्थी खतमहुइ,--

[जैनतीर्थगाइडका-प्रथम-भाग-समाप्त,--]

[भाग दुसरा.]

🕦 [तवारिख-तीर्थ-पटना,]

पंचतीर्थींकी जियारतके अगर कोइ यात्री नवादेसे रैलमें सवार होवे और लखीसराय-मधुपुर होते गिरिडी टेशन उतरकर समेतिशखरजी जानाचाहे-तो-जासक्तेहैं, नवादेसे वापिस गयाजं-कशन आकर गयासे हजारीवागरोड होकर इसरी टेशनसे समेतिशिखर जानाचाहे-तोभी-जासकतेहैं, गयासे वांकीपुरहोते पटना जानाचाहे तो जासकतेहैं, मगर यात्री पंचतीर्थींकी जियारतकरके विहार टेशन आवे और रैलमे सवार होकर-सोह-पचासा-वेंना-हरनाट-चेडो-चिल्तयारपुर-करोता-खुशरोपुर-फतवाह,-और-बांकाघाट-होते-पटनासीटी जाय, रैलकिराया आठआने लगतेहैं,-

जव राजगृहीके राजाश्रेणिकका इंतकालहुवा उसके वेटे कौणिकने अपने वालिद्की फिक्रसे राजगृही छोडकर चंपानगरीमें
रहना इंग्लियार किया, कौणिकके तीन नामथे, कौणिक—अशोकचंद्र—और—अजातशत्रु, जब कौणिककी उमर खतमहुइ उसके वेटे
उदायिने अपने वालिदकी फिक्रसे चंपा छोडकर दुसरा शहर
आबाद करनाचाहा, और अपने नोकरोंकों बुलाकर हुकमदियािक
जाओ ! तुम असी जगह तलाशकरों जहां—में—दुसरा शहर आबाद
कहं, और अपना अमलदरामद रहना बसना वहां कायम कहं,
नोकर लोग चंपासे रवाना होकर जगह तलाश करने लगे, और
और घूमते घूमते—जहां—शहर पटना आबाद है आये, और देखा
तो गंगाकनारे एक—पडल नामका द्रक्त—बडा गुलजार—और उसके सुराखमें एक—परैया—बेटापाया, गंगाका पानी जोरसे बह-

रहाथा और फव्वारे उसके उछछकर पपैयाके मुहमे गिररहेथे, नो-करोने खयाल कियाकि-जैसे परींट्के मुहमें गंगाकापानी खुद-ब−खुद गिररहाहै अगर यहांपर शहर आवाद किया जायतो खुद ब-खुद दौलत आनकर लोगोंकों मिलेगी. और तमामलोग अ-मन-व-आराममें रहेगें. गरजिक-नोकरलोग तलाश करके चंपामें आये, और अपने मालिकसे तमाम हाल सुनाया, राजाउदायिने वहांजाकर शहर आवाद किया. और उसकानाम पाटलीपुत्र रखा, मगर छोगोंने अपनी जवानमें पटना कहा, इन सबुतोसे माछम होताहै करीव (२०००) वर्ष हुवे पटना शहर आवाद है, पटनेका दुसरा नाम कुसुमपुरभी कहलाया, क्योंकि–उनदिनोमें फूलोंकी पैदाश ज्यादह होतीथी. उदायिके वाद पटनेके तरुतपर नंदनामका राजा बेटा, उसके पीछे दुसरानंद-फिर तीसरा, फिर चौथा, गरजिक-इसीतरह नवनंद पटनेकी गदीपर राजाहुवे. नवमे नंदका दिवान-शकडाल था, और उसके दो-वेटे-थे, पहलेका नाम स्थुल-भद्र-और-दुसरेका नाम सिरियक, उस अर्सेमें कोशानामकी एक कस्वन-इसपटनेमे-रहतीथी, जो बहुत खूबसुरत-और-कमालहु-स्नथी, इत्तिफाकसे स्थूलभद्रजीकी निगाह उसपर पडी, और आशक होगये, यहांतकिक-घरकाकाम छोडकर वारांवर्ष उसीकी मोहब्बत में फसेरहे, जब इनके वालिदका इंतकालहुवा नंदराजाने इनके छोटेभाइ-सिरियककों-बुलाया, और कहाकि-तुम-पटनेकी दिवा-नगिरि लेलो. उसनेकहा-में-इसकामके लाइक नहीहुं, मेरावडा भाइ स्थुलभद्रजी है आप उनकों बुलवावे, राजानंदने हुकम दिया कि-तुम-जाओं ? और उसकों बुलालाओ, छोटाभाइ अपने वडे-भाइके पास गया, और कहा तुमकों राजानंद बुलातेहै, चलो, ! और पटनेकी दिवानगिरी देतेहैं लो,-जबाके-कस्वनके घरसे स्थु-

लभद्रजी राजानंदके दरवारमें गये, और पुछाकि-मेरेवालिदका-इंतकाल किसतरह हुवा, राजानंदने कहा क्या ! तुम ख्वाबमेथे,जो अपने वालिदका हालभी नहीं जानते, उनोने एक-संगीन-गुनाह कियाथा जिसकी वजहसे उनकों वेंमोत मरनापडा, अवतुम उसकी दिवानगिरी कुबुलकरो, स्थुलभद्रजीन अपने दिलमें खयाल किया कि–मुजे–अैसी दिवानागेरीसे कोइ जरुरतनही. जिससे कभी– वेंमोत माराजाउ, जाहिरातमें राजा नंदसे कहा, में–कल इसका जवाव दुंगा, असा कहकर राजा नंदके दरवारसे-वे-अपने घर-आये, और दुनयवी एशआरामकों छोडकर संभूतिविजय गुरुके पास दीक्षा इंख्तियार किइ, दुसरे रौज राजानंदके दरवारमें जा-कर कहाकि-मुजे-परमेश्वरके घरकी दिवानगिरी अछी मालूम दे-तीहै, राजानंदने इसवातपर तारीफ किइ, और कहा, जो कुछ– किया अछाकिया, मगर इस दिवानगिरीकों उमदा तोरसे निभाना अैसा मतकरना कि–दोंनों−दीनसे जाओ. पेस्तरके लोग कैसे अछे दिल्रवालेथे–जरा नसीहत–पाइकि–धर्मके पावंद होजातेथे, आज ताबे उमर नसीहत पातेरहे मगर क्या ! मजाळहे ! ! असरहो वस्कि कइलोग दीक्षालेनेवालेकी दिल्लगी करतेहैं कि-इनसे कमाया नहीगया, फकीर होगये.

नवमेनंदके बाद पटनेके तरुतपर मौर्यवंशी राजाचंद्रग्रप्त बेठा, निदानिक-नवमेनंदका और चंद्रग्रप्तका जब पटनेके मेदानमें जंग हुवा नवमेनंदने सिकस्तखाइ, चंद्रग्रप्त फतेहमंद हुवा, चाणाक्य इसी चंद्रग्रप्तका दिवानथा, जैनश्वेतांबर उमास्वाति वाचक इसी पटनाकें रहनेवालेथे, जैनाचार्य-भद्रबाहु-आर्यमहागिरि-आर्यसुह-स्ति-और-वज्रस्वामि-इसपटनेमें तशरीफलायेथे, और जैनधर्मकी तरकी किइथी, पेस्तर यहां (८४) वाद्शाला (यानी) मजहबी

वहेसकरनेके मकानातथे, जिनमें हमेशां मजहवपर वहेस हुवाकर-तीथी, षट्दर्शनके जाननेवाले पंडित यहांपर मौजुद्धे. बडेबडे मंत्र-वादी और बहत्तरकछाके जाननेवाछे यहांद्ववे, रसायनविद्या-अदृष्टविद्या-और इंद्रजालविद्याके वाकिकगार यहां होगये, हाथि-योंके सोदागिर-और-तलवारकी धारपर नाचकर अपनाहुनर बतलानेवाले यहांरहतेथे, संस्कृत इत्पक्ते जाननेवाले और संगीत-कलाके माहितगार यहांपर मौजुद्धे. कहांतक वयानकरे बडेबडे अजुवात यहांपर होचुके हैं. पेस्तर-इस्वीसनके जब मेगेस्थनीज चीनामुसाफिर पटनेमं आयाथा अपने सफरनामेमें छिखाहै-मेने-गंगा और सोननदीके संगमपर पटनाशहर देखा उसवस्त करीव (२४) मीलकेघेरेमें गुलजारशहरथा. और वडेवडेलंबे वाजारथे, हवांक्तसांगचीना मुसाफिर जव हिंदमे आयाथा उसनेभी इसकों देखाथा, उसवरूत (११) मीलकेघेरेमें पटनाशहर आबाद्या, वादशाह अखबरने अपनी हकुमत यहां किइ, औरंगजेबने अजि-मकों पटनेका सुवेदार बनाया तवसे पटनेकानाम अजिमाबादभी कहलाया, पटनेकी आवहवा उमदा और चावलकी पैदाश यहां ज्यादहहोती है, जहांपर गंगा और सोननदी मिली है पेस्तर वहां तक शहरपटना आबाद्या, अव-वो-जगह (१६) मीलके फास-लेपर होगइ है.

पटना इसवरूत कलकतेसे (३२०) मील वायुकोनकों झकता हुवा विहारमे अवलदर्जेका शहरहे, गंगाकनारे नवमीलतक लंबा बसताचलागया, पटनेकी मर्दुमथुमारी (१६५१९२) म**तुष्यों**की-पुरानाकिला-जो-शहरको घेरेहुवेथा अवनहीरहा, गलियां तंग-मकानात इंटचुनेके पक्केबनेहुवे जिनकी-छत-खुळी, और कवेछ-्छायेहुवे मकान बहुतकम देखोगे, वाजारमे–सोनाचांदी–जवाहि-

रात-शालदशाले-मेवा-मिठाइ--जिसचीजकी दरकारहो तयार मिलती है, पटनेका अफीमगोदाम भारी-और-कइजिलोसें अफीम यहांआताहै. तिजारतके लिये पटनाएक नामीश्वहरहै, और नीलका व्यापार यहां ज्यादह होताहै, मुल्कनयपालसे मणोबंद वडीइलायची यहांआती है, और मुस्कोमें भेजीजाती है, पटनेकी चारोतर्फ कइ बाग बनेहुवे और उनमे तरहतरहके फलफुल पैदाहोते हैं, मेडिकल कालेज-लाइब्रेरी-विहारनेशनेलकालेज-और खेराती अस्पताल-बडीलागतके वनेहुवे है, पटनेके नजदीक गंगाकापाट वारीशके दि-नोमें करिब चारकोशका होजाताहै, पटनेसे पश्चिमकों आठकोश सोन-भद्रनदी–दखनसे-आनकर गंगामें मिली, और सरयूभी आनकर उसी जगह मिली है. वारीशके दिनोमे उसजगह गंगाकापाट सातकोत्र चोडाहोजाताहै, अतराफ पटनेके-जव-चने-मटर-अरहर-सरसों-तील–और–अलसी–कसरतसे पेटाहोती है. पटनेमें जैनश्वेतांबर श्रावकोके घर-पांच-सात-और-वाडेकी गलीमे (२) जैनश्वेतां-वरमंदिर बनेदुवे है, दोनोमें मूळनायक तीर्थकर पार्श्वनाथजीकीमूर्त्ति तष्तनशीनहै, और दोनोंमंदिरोंकी मरम्तहोना दरकारहै, धर्मशा-ला एक-बडेमंदिरके दुरवजेपर वतौरकमरेके वनीहुइहै, दुसरी बग-लमें गिरीहुइपडी है, अगरकोइ खुशनसीव इसकों फिरसे वनवावे यात्रीयोकों आराम रहेगा.

पटनेसें पश्चिमकों महोले तुलसीमंडीमें स्थूलभद्रजीके चरनोंकी छत्री और सुदर्शनशेठका शुलीसिहासन बननेका स्थान काबिल देखनेके है, इस जगहकों कमलद्रहभी बोलते हैं, क्यौंकि-पेस्तर-यहां कमल बहुत पैदा होतेथे, करीब (९) विघेके घेरेमे कमलद्रह तालाव-और-वगीचा वगेरा आबादह, जो कोइ जैनश्वेतांवरयात्री पटनेमें कदमरखे कमद्रहकों जरुर देखे. और वहांकी जियारत करे

वाडेकी गलीसे—या—चौकवाजारसें इका—वगी किराये मिलसकतेहै, अगर कोइ यात्री पश्चिमसे आयेहो—या—पटनेसे व—जरीये रैलके कमलद्रह जानाचाहे—गुलजारवाग टेशनपर उतरे, कमलद्रहतालाव गुलजारवाग टेशनसें वहुत करीवहै, इके—वगीकी वहां कोइ जरुरत नहीं, कमलद्रहमें छत्री स्थूलभद्रजीकी पुरानी वनीहुइ और उसपर लिखाहै संवत (१८४८) में इसकी मरम्मत किइगइ, और जैनश्वे-तांवराचार्य—अमृतचंद्रम्हरिने—इसकी प्रतिष्टा किइ, छत्री मुदर्शनशे-टकी कुल नीची जमीनपर वनीहुइ है, जगह निहायतपाक—एक—मीटेजलका कुवा—और—दश्वारां आमकेपेंड लगेहुवे है, लत्रीके पासकी जमीनमें वहे वहे गढे पडगये हैं उनमें मीटी भरादिइ जाय और छत्रीकी मरम्मत करादिइ जाय कोइ रीज तीर्थकी हिफाजत वनीरहेगी, करीव (२०००) रुपये सर्फा होगे, ऐसे नीर्थोमें दोलत लगाना हरयात्रीकी फर्ज है. तीर्थोमें यह कदीमीरवाज होताचला-आयाकि—एक मंदिर पुरानाहोकर गिरगया किसी खुश नसीवने फिर नया वनादिया इसीनरह तीर्थकी हिफाजत वनीरहती है.

शहर पटनेसे करीव (१) मीलपर जहां वर्गीचा दादाजीका और-एक छोटी धर्मशाला बनीहुइ है कोइ यात्री वहां ठहरनाचाहे तो-ठहरसकते है, वर्गीचेमें - आम-अमरुद-कटहेर -- अंजीर -- नीबु वर्गरा पेंड - और फुलोंमें - गुलाव - वेला - मोतिया - जुही वर्गराके पेंड खडे है, छत्री - दादाजीकी - संवत (१६८२) की तामीर किइ हुइ और उसके दरवजेपर शिलालेख लगाहुवाहे, शेठ मृद्र्शनके कदमोंकी छत्री यहांभी वनीहुइहै, और कदमोंपर लिखा है. अव्यय पद्मासस्य - श्रेष्टिसुद्र्शनस्य - इमेपादुके संप्रतिष्टिते - सकल संघेन - वर्गीचेके कोटकी सफील एक तर्फसें गिरीहुइहै, वारीशके दिनोमें भीतर वर्गीचेके - और - छत्रीतक - पानी आजाता है, इसकी

मरम्मत होना जरुरी है, अगर कोइ यात्री मरम्मत कराना चाहे करीब हजाररुपये लगेगे, शहरपटनेमें जैनश्वेतांवर श्रावकोके घर पेस्तर वहुतथे, मगर आजकल सिर्फ ! पांचचार रहगये, उपाश्रय चार मौजूदहै मगर सब खाली पडे है, तीर्थकरोंका-जो-फरमाना थाकि-पांचमेकालमें धर्म कमहोजायगा-सो-नजरके सामने देखलो ! पटनेका वाजार रवन्नकटार-लोग खुश्तमिजाज-और-पुशाक उमदा है, मकान-यहांके इसकदर खूबसुरत और मजबूतहै कि-जिनकी बनावट देखकर हरकिसीकों ताज्जुव आताहै, यात्री पट-नेकी जियारत करके आगेकों रवाना होवे.

पटनासीटीसे रैलमें सवारहोकर-वंकाघाट-फतवाह-खुशरो-पुर-करौता--विक्तियारपुर-अथमलगोला--वाढ, विक्तियारपुरसे (११) मील दूर वाढ एक—रैलवे टेशनहै, पटना जिलेमें गंगाके दाहनेकनारे वाढ एक अच्छा कस्वाहै, सन (१८९१) की मर्दम-शुमारीमें बाढकी मर्दुमशुमारी (१२३६३) मनुष्योकीथी. वाढसे-पांडराक-मोर-कल्पमूत्रमें-जो-मोराकसंनिवेश छिखाहै जहांकि-तीर्थकर महावीरस्वामी कदमरंजा फरमाचुके हैं यही है, मोरसे-मुकामा जंकशन जाना, रैलकिराया सवासात आने लगते है, मोकामा जंकरानसे सीतामढी टेशनकी टिकीट लेना और रैलमें सवारहोकर मोकामाघाट टेशन उतरना, और वहांसे ष्टीमरमें बेठ-कर गंगापार जाना, ष्टीमर तयार रहती है, ष्टीमरका किराया अ-लग नहि लगता. वही टिकीट कामदेगा-जो मोकामासे सीताम-ढीतक लियाँहै, ष्टीमरमें माल चढाने उतारनेकोलिये कुली मौजूद रहते है. चार पैसे दियेकि-माल-चढादेयमें, गंगापार जाते कुछ बहुत देर–न–लगेगी, गंगाके सामने कनारे पहुचतेही रैल तयार मिलती है. सेमरियाबाट टेशनसे रैलमे सवारहोकर घरारा व-

रानीगंज-तेगरा-बछवारा-दल्लिंहसराय-और उजारपुर होते स-मस्तीपुर जंकशन उतरना, रैलिकिराया मोकामा जंकशनसे यहांतक आठआने लगते हैं, सीतामढी देशन जानेवाले यात्री यहांउतरकर दरभंगा जानेवाली रेलमें सवारहोंवे, और किसनपुर-हैयाघाट-और-लहेरियासराय-देशनहोते दरभंगा जाय, रैलिकिराया पोने-चारआने.

वागमती नदीके कनारे जिलेका सदर मुकाम-एक-गुलजार शहरहे, सन (१८९१) की मर्दुम्युमारीके वर्ष्त-द्रभंगाकी-मर्दुम्युमारी (७३५६१) मनुष्योंकीथी,-सिविलकचहरी-स्कुल-अस्पताल-शिवसागर तालाव-वाग वर्गाच-वहेवहे वाजार-और राजमहल काविल देखनेके है, मकान वनानेकी लकडी यहां उमदा होतीहै, अनाज-निमक-लोहा-वगेरेकी तिजारतभी अली होतीहै द्रभंगाके उत्तरमें नयपाल राज्य-पूरवमें जिला भागलपुर-दखनमें गंगानदी-और-जिला-मुंगेर-और पश्चिममें जिला-मुजफरपुरहे, द्रभंगामें-कोइ जैनश्वेतांवर श्रावक-या-मंदिरनही, यात्री शहर देखना चाहे एक रीजके लिये उत्तरे और शहर देखे, द्रभंगासे रैलमें सवार होकर-महम्मद्पुर-कमतोल-जोगियारा-जनकपुररोड-और-वाजपटी-होते सीतामही देशन उत्तरे, रेलकिराया चारआने लगतेहै, टेशनसे शहर वहुत दुरनहीं है सवारीभी मिलती है शहरमें जाकर जहां सुभीता देखे कथामकरे.

😂 [तवारिख-तीर्थ-मिथिला,]

मुल्क-विदेहकी-राजधानी मिथिछानगरी पेस्तर वडी आबा-दथी, उन्नीसमें तीर्थिकर मिछिनाथ इसीमें पैदाहुवेथे, कुंभराजाके खानदानमें प्रभावती रानीकी कुखसे मृगशीर सुदी (११)-अ- िवनी नक्षत्रके रीज उनका—यहां—जन्महुवा, वडीउमर होनेके बाद— उनोने—दुनयवी एशआराम छोडकर मृगशीर सुदी (११) के— रीज—यहां दीक्षा इिंतियार किइ, केवछशानभी उनको यहांही पदाहुवा, जगह जगह फिरकर उनोने छोगोकों ताछीम धर्मकी दिइ, इंद्रदेवते वगेरा उनकी खिदमतमें आतेथे, एकीसमें तीर्थंकर निमनाथ इसीमिथिछामें पैदाहुवे, विजय राजाके खानदानमें विमा रानीकी कुखसें श्रावणवदी (८) के रीज उनका यहां जन्महुवा, कइ असेतक उनोने मिथिछापर अमल्दारी किइ, और आषाढवदी (९) मीके—रीज दुनिया फानीसरायकों छोडकर यहां उनोने दीक्षा इंग्लियार किइ. मृगशीरसुदी (११) के—रीज—उनकों यहां केवछशान पैदाहुवा, इंद्रदेवते वगेरा उनकी खिदमतमे आतेथे.—

राजा-रामचंद्रजीकी पटरानी महासती सीता इसीमिथिलामें जनकराजाके घर पैदाहुइ, और यहांही उसका स्वयंवरमंडप रचाग-याथा, जब रामचंद्रजीने धनुष्यचढाया सीताने खुशहोकर उनके गलेमे वरमाला पहनाइ, निमराज नामकेराजा-इसी-मि।थिलाके राजाहुवे, एकमरतवेका जिक्कहेकि-जब-ये-बुखारकी तेजीमें गा-फिल्रहुवे हिकमोने सलाहिद्द आप तमामवदनपर चंदनका लेप करावे, इनकी बहुतसी रानियांथी, पासके कमरोमें उनोनेजब वास्ते राजासाहवके चंदन घीसना शुरुकिया, चंदनके घीसनेकी वजहसे हाथोमें-जो-कंकन पहनेहुवेथे आपसमे अवाज करनेलगे, राजाने सुनाकि-यह-क्या! माजराहै, ? उनोने जवाबिद्या-हम लोग-आपकेलिये-जो-चंदन घीसते है उससे चुडियांकी अवाज निकलती है, निपराजाने हुकमिद्यािक-सब-चुिडये निकालडालो सिर्फ! एक एक रहनेदो, उनोने ब-हुकमराजाके वैसाही किया, तब अवाज वंद होगइ, इस बातपरसे राजाकों-यह-खयाल पैदा

हुवाकि-दुनियामें अकेला रहनाही बहुत बहेत्तर है, जहां बहुत है वहांही झगडाँहे, अगर मुजे इसवीमारीसे–आराम मिला फौरन! में−दुनिया छोडकर अकेला जंगलकी राह छंगा, और दिक्षा इ-ख्तियारकरके जंगलमें तपस्या करुंगा, आखीरकार खुशिकस्मतिसे उनकों आराम हुवा और सलतन छोडकर जंगलका रास्ता लिया, तनाहीमेंजाकर तपकरने लगे, एकमस्तवा इंद्रने आनकर उनका इम्तिहानलिया, और कहाकि-आपकी रानीयां-और-रियाया आ-पकेवास्ते रोरही है, निमराजरिषिने कहा-न-मेरा कोइहै-न-में किसीकाहुं. कहांका राजा! कहांकी रानी! मेरा धर्म मेरे शाथ है, जोशस्त्र परलोकका रास्ता साफकरना चाहे धर्म करे. ए ! ना-जरीन!! इन वातोंपर जरा गौर करो, कैसे कैसे एश-आराम छोडकर राजाओनेभी दीक्षा इंग्लियार किइंहै, और तुम अवतक अपने एशआराममें गाफिलहो, मगर याद्रहे! जोकुछ धर्म करोगे वही बहेत्तर होगा. आदमीका चोला-वारवार-नहि मिलता, मगर अपशोस इसवातकाहैकि-बहुतसे अनजानलोग धर्मकों पहिचानते-भी नहीं, उनको इसतेहरीरका असर होना मुक्किल है,

तीर्थकर महावीरस्वामीने यहांपर (६) चौमासे गुजारे. आ-ढमे-गणधर इसी मिथिलाके रहनेवालेथे, चोथे निन्हव-जो-ती-र्थकर महावीरके निर्वाणवाद (२२०) वर्ष पीछे पैदा हुवेथे–इसी मिथिलाके रहनेवालेथे, भिथिलाके नामसें मुल्कका नामभी मैथिल मशहूरहुवा, पेस्तर-विदेह-ग्रुल्क कहलाताथा, पानीकी बहुतायतमें क्कवे−वावडी−और−तालाव−जावजां मौजूद्ये, अवभी किसीकद्र-कम नही. जलकी तरीसे वनास्पातिकी तरकी यहां हमेशांसे रहती रही, केलेके पेंड इसकदर होतेथेकि-सालभरकी फसल सारा मुल्क नही-खासकताथा, दूध यहां इसकदर होताथाकि-हरशाख्श एक पैसेका दृध लेकर खीर बनाताथा और पेटभरकर खाताथा अब-भी-ये-चीजे यहां किसीकदर कम नहीं, वडे वडे दौलतमंद यहां-पर होचुके जिनके घर हाथी बंधतेथे, संस्कृतिवद्याकी यहां इतनी तरकीथीकि-किसानलोगभी-संस्कृत जवानमें वातचीत करतेथे, आजकल संस्कृत इल्मकी उतनी तरकी नहीं रही, मुल्क निहायत उमदा-और-लोग खुशमिजाज है.

पेस्तर यहां तीर्थकर मिललनाथ-और-निमनाथके मंदिर बने हुवेथे, आजकल-न-कोइ जैनश्वेतांवर मंदिरहै-न-जैनश्वेतांवर आ-वकहै, मुज्जफरपुर यहांसे करीव (१५) कोसके फासलेपर वाकेहै. जबतक उसमें जैनश्वेतांवर श्रावकोकी आवादी रही, इसतीर्थकी देखरेख करतेरहे, बादअजां कुछ नहीरही, और तीर्थ बिरान हो-गया, तीर्थकर मिललाथ-और-निमनाथजीके चरन-जो-यहां छ-त्रीयोमें कायम रहगयेथे-उठाकर भागलपुरमें लाये है, और सामने टेशनके रायवहादुर धनपतिसंहजीकी धर्मशालाके मंदिरमें कायम किये है, सीतामढी इसवरूत जनकपुररोडसे (१६) मीलके फासले करीब दसहजार आद्मीकी वस्तीका कस्वा रहगया, बाजार-न-बहुतबडा-न-छोटा-मगर सब किसमकी चीजे यहांपर मिलसकेगी स्कुल-अस्पताल-कचहरी वगेरा मकानात अछे बनेहुवेहै, चावल-और नथपालकी पैदावारीकी चीजे यहां बीकती है, लखनदेइ न-दीपर लकडीका पुल बनाहुवाहै और चैतकी रामनवमीके रौज य-हांपर मेंलाभरताहै. उसमें हाथी-बेल-पितलके वर्तन-और कपड़े वगेराकी तिजारत अछी होती है, यात्री-यहां-पूरव-उत्तरकीतर्फ हंइकरके तीर्थकर मिल्लिनाथ-और-निमनाथकी इवादत करे, और दिलमें समझेकि-तीर्थमिथिलाकी जियारतकामयाबहुइ. अगर कोइ खुशनसीव−इस तीर्थकों फिरसें तरकी देनाचाहे−मंदिर−धर्मशास्त्रा वनवाकर पूजनका बंदोबस्त करे, और तीर्थकों फिरसे कायम करे, निहायत उमदाबातहै, बीस-पचीसहजार रुपये खर्च करनेसे तीर्थ कायम होसकताहै, दुनियादारीके कामोमें हजारांह खर्च होते हैं धर्ममें अगर उतने खर्च कियेजाय कितना फायदाहो, रामचंदजी लक्ष्मणजीका मंदिर और सीताकुंड यहांपर बनाहुवा है इसलिय वैदिकमजहबबालेभी इस जगहकों तीर्थ मानते है, सीतामढीसे रैलमें सवारहोकर उसीरास्ते वापिस दरभंगा-समस्तीपुर-सेमरियाघाट-मोकामाघाट-होते-मोकामा जंकशन आना, और मोकामा जंकश-नसे रैलमें सवारहोकर-डर्मा-वहीं-मंकाथा-होते लखीसराय-उत-रना, रैलकिराया साढेतीन आने,

[तवारिख-तीर्थ-काकंदी,]

लखीसरायसे बेलगाडीके रास्ते रवानाहोकर यात्री काकंदी नगरीजाय, जोकरीव (६) कोशके फासलेपर वाके है, और आजकल काकंदगांवके नामसे मशहूरहे, तीर्थकर स्रविधिनाथमहाराज इसीकाकंदीमें पैदाहुवे, चवन-जन्म-दीक्षा-और-केवलज्ञान-ये-चारकल्याणिक उनके यहांहुवे, सुग्रीवराजाकेघर मृगशीरवदी (५) मूलनक्षत्रके रौज उनका यहां जन्महुवा, कइअर्सतक उनोने काकंदिके तख्तपर अमल्दारी किइ, पेस्तर दीक्षाके एकसालतक उनोने यहांपर खूब-खैरात-किइ, मृगशीरवदी (६) के-रौज-दुनियाके पश्चाराम छोडकर उनोने यहां दीक्षा इख्तियार किइ, और का-तिकसुदी (३) के-रौज-उनकों यहां केवलज्ञान पैदाहुवा, इंद्रदे-वतेवगरा उनकी खिदमतमें आतेथे, पेस्तर यहनगरी वडी रवक-कपरथी. बढेवडे दौलतमंद वाशिंदे यहांपर आवादथे और बडेवडे खुशनसीव राजेमहाराजे यहांपर अमल्दारी करचुके है, धन्नाका-कंदी नामके-जैनसुनि-इसीकाकंदीके रहनेवालेथे, जिनोने तप

किया और उमदागित पाइ, जैनलेतांवरमंदिर-यहांपर-निहायत पुछ्ता बनाहुवाहै, और इसमें-तीर्थिकर पार्श्वनाथमहाराजकी-मूर्त्ति तछ्तनशीनहे, जोकि-संवत् (१५०४) फाल्गुनसुदी सप्तमीकी प्रतिष्ठित निहायत खूबसुरत-और-अतिशययुक्तहे, तीर्थिकर सुविधनाथमहाराराजके कदमभी इसमें जायेनशीनहे, जो—संवत् (१८२२) वैशाखसुदी छटके प्रतिष्ठितहे, करीव मंदिरके धर्मशास्त्रा बनी हुइ-यात्री-इसमें कयामकरे, और तीर्थकी जियारतकरे, खानपानकी चीजे यहां अछीनही मिस्रती, स्वसिरायसे बंदोव-स्तकरते आनाचाहिये, तीर्थ-काकंदीकी-जियारतकरके यात्री क्षत्रीयकुंडगांवकी जियारतकों जावे,

🖾 (तवारिख-तीर्थ-क्षत्रीयकुंड गांव)

काकंदीसे (९) कोशके फासलेपर तीर्थंकर महावीरस्वा-मीकी जन्मभूमि क्षत्रीयकुंड गांव पुराना जैन तीर्थंहै, सिद्धार्थ राजा-केघर त्रिश्चलारानीकी कुखसें चैतसुदी (१३) उत्तराफाल्सुनी नक्ष-त्रकेरोज उनका यहां जन्महुवा, उनोने अमल्दारी इिल्तियार निह-किइ, और धर्मकी राहपर कदमरखा, पेस्तरदीक्षाके एक सालतक उनोने यहां बहुत खैरातिकइ, और मुगसीर सुदी (१०) उत्तरा फाल्सुनी नक्षत्रके रोज दुनियाके ऐश आराम छोडकर उनोने यहां झात वनखंड उद्यानमें दीक्षा इिल्तियारिकइ, साढेबारां वर्षतक तप किया, और वैशाखसुदी (१०) उत्तरा फाल्सुनी नक्षत्रके रौज रिज्जवालुका नदीके कनारे उनकों यहां केवल झानपैदाहुवा. इंद्रदे-वता वगेरा उनकी खिदमतमें आतेथे, क्षत्रीयकुंड गांव पेस्तर ज्या-इहरवन्नकपरथा, जोकोइ यात्री मुल्क पूरवकी जियारतकों जावे क्षत्रीयकुंड गांवकी जियारत जरुरकरे, तीर्थंकर महावीर स्वामीकी जन्मभूमि होनेसे बडीपाक जगहहै, एकजैनश्वेतांबर मंदिर—और बडी आलीशान धर्मशाला यहांपर वनीहुइहै, यात्री इसमें कयाम करे, बड़े बड़े कमरे-दालान-और-हवादार मकान वनेहुवेहै,-तीर्थकी जियारतकरे, क्षत्रीयकुंड गांवको आजकल ललवाड गांव वोलते है इसकेपास एकपहाड जिसका नामभी ललवाड मशहूरहै क्षत्रीयकुंड गांवसे करीव (१॥) कोसके फासलेपर वाके है, ज्ञातवनखंड उ-चान जहां-तीर्थकर महावीर स्वामीने दीक्षा इंग्लियार किइथी, रवक्रकदार जगहहै, वडा वसीमेंदान और वड़े वड़े द्रस्त-यहांपर-खंडे है, जिसकी छाया देखकर आदमीकी तवीयत खुशहोजाती है, और-यही-जी-चाहताहैकि-यहांही वेठेरहे.

क्षत्रीयकुंउ गांवके मंदिरका दुर्जुन करके यात्री दुसरे राज पहा डपर जावे, गांवसे पहाडतक जानेके छिये वेछगाडी-डोछी-वगेरा सवारी मिलसकती है, जिसकों पांवपैदलजाना मंजूरहो-वैसे-जाय, डोलीमें जानाहो-डोलीमें जाय, पहाडकी तराइमें (२) जैन धे-तांवर मंदिर वनेहुवेहै, रास्तेमें एकछोटी नदीभी मिळतीहै. अत्रीय कुंडगांवसे हरहमेश पुजारी यहां आनकर पुजाकर जाताहै, यात्री इन दोनों मंदिरोके दर्शनकरके पहाडपर जावे, रास्तेमें तरह तरहके द्रख्त-और-जंगली मेवाजातके पेंडखडे है, चीता-शेर-रींछ वगेरा जानवरभी इस पहाडमें रहतेहैं मगर बदौलत तीर्थ भूमिके किसीकों तकलीफ नहीदेते, पहाडका चढाव करीव एककोशका-और-जव-**ठीकसीरेपर** पहूचोगे तीर्थकर महावीर स्वामीका एक-आलिशान-मंदिर मिलेगा, मृत्तिं इसमें तीर्थंकर महाविर स्वामीकी शामरंग निहायत खुवसुरत तख्तनशीनहै. अगर पूजा करना चाहो-पूजा-भी-करशकतेहो, पानी वगेराका इंतजाम सब मौजूदहै, अतराफ मंदिरके कोट खीचाहुवा-बहार-बडीबडी शिला-चटाने-चिश्मेंबाद और-तरह तरहके जंगलीपेंड खडेहै, यात्री यहां खानपान करना

चाहे-तो-करसकतेहै, मंदिरका हाता अलगहै और वहारका हाता अलगहै, यहांपर कोइचीज खानपानकी नही मिलसकती. जोकुछ अपनेशाथ लायेहोगे वही कामदेगी. जियारत करके वापिसउसी रास्ते पहाडसे उतरकर क्षत्रीयकुंड गांव आना, पहाडपर रातकेव-ख्त टहरनेकी जगह नहींहै, शुभहके गयेहुवे यात्री शामकों–ब-खुवी-आसकते है, क्षत्रीयकुंड गांवकी जियारत करके वापिस छ-खीसराय जंकरान आना, और रैलमें सवार होकर-कवील-कजरा थरहरा-जमालपुर-बरीयारपुर-सुलतानगंज -अखबरनगर-और-नाथनगर होते भागलपुर-देशन उरतना, और तीर्थ चंपापुरीकी जियारतकों जाना,

👺 विगारिख-तीर्थ-चंपापुरी.]

तीर्थंकर वासुपूज्य स्वामीकी जन्मभूमि चंपापुरी पुराना जैन-र्तार्थहै. वसुपूज्य–राजाकेघर–जयारानीकी कुखसे फाल्गुन वदी (१४) शतभिषा नक्षत्रके रौज उनका यहां जन्महुवा, दीक्षाके पेस्तर उनोने यहांपर बैंहुत खेरात किइ, और फाल्गुनसुदी (१५) के-रोज दुनयेवी औश आराम छोडकर यहां दीक्षा इंग्लियार किइ माघसुदी (२) के-रौज् उनकों यहां केवलज्ञान पैदाहुवा, उनकी खिदमतमें इंद्रदेवते वर्गरा आतेथे. श्रीपालजी-जिनोने-नवपटका आराधन कियाथा-इसीचंपापुरीके-राजाथे, तीर्थंकर महावीर स्वा-मीने यहां तीनचौमासे किये, कामदेव श्रावक-जिसकावयान-सूत्रड-पाशक दशांगमें दर्जहै इसीचंपाका रहनेवालाया, क्रमारनंदी नामका एक-स्वर्णकार-जिसका बयान-सूत्र आवश्यकमे मौजूदहै इसचिं-पाका नामी ग्रामी शस्त्राथा, जैनाचार्य-शय्यं मुरिने दशके कालिकमूत्र इसीचंपामें बनाया, सुभद्रासती इसीचंपाकी रहेनेवा-लीथी बडेबडे खशनसीब लोग इसचंपामें पैदाहुबै, कहांतक बयान

लिखे, चंपापुरी जानेवाले यात्री भागलपुर टेशन उतरकर खुरकी रास्ते जाय, जो-करीव-तीनमीलके फासलेपर वाकेहै,

जिलेका सदरमुकाम-भागलपुर एक गुलजारशहरहे, सुजा-गंज-नाथनगर-चंपानगर-और-ममुरगंज वगेरा कइहिस्से होकर भागलपुर बसाहै. सन (१८९१) की-मर्दुमशुमारीके वरूत भा-गलपुरकी मर्दुमथुमारी (६९१०६) मनुष्योंकीथी, भागलपुर एक-तिजारकी-जगहहै, रेशमका कारोवार यहां अछाहोताहै, टरी-और-कंवलभी उमटा बनते है, बाजार अछा और हरिकस-मकी चीजे यहां मिलसकती है, जैनश्वेतांवर श्रावकोका एकघर सिर्फ ! नाथनगरमे है, भागऌपुर टेशनके सामने जैनश्वेतांवर धर्म-शाला–रायवहाद्र धनपतिसंहजी साकीन मुर्शिदावादकी तामीर करवाइहुइ मौजुद्है, यात्री उसमें जाकर कयामकरे, धर्मशाला व-डीआछीशान जिसमें आठकोठरी-चार टाळान-अळग अळग बनेहुवे है, द्रवजेके सीरेपर एक-कमरा-और-खुळीछत वनीहुई है, जिसपर गर्मीके दिनोमे वडाआराम मिलताहै, एक-वगीचा-और मीठे जलका कुवाभी इसीधर्मशालामें मौजृद्है, वगीचेमें-आम-अमरुद्द-केले-नींबु-जामन-एरंडककडी--नारियल--कठेर-गुलाक्⊢चमेली--मोतिया−केवडा−जुही−गुरुदाउदी −रायचंपा−हार-शिंगार-कनेर वगेराके पेंड खडेहै और इनके फुल, हमेशाकी पुज-नमें चढाये जातेहै, एक जैनश्वेतांबर मंदिर वडीलागतका और बुलंद शिखरवंद बनाहुवाहे, और उसमें तीर्थकर वामुपूज्य स्वा-मीकी मूर्त्ति तरुतनशीनहै, दाहनी तर्फके कोनेमें-तीर्थंकर वासुपु-ज्य स्वामीके गणधरकी मुर्त्ति-बायी तर्फके कोनेमें तीर्थकर महि-नाथ और निमनाथकी मूर्त्ति-और-उनके कदम जाये नज्ञीनहै, और उसपर लिखाहै-संवर् वाणार्षिनागेंद्रौ-राधद्युआद्द्यी

मृगी-संवत् (१९७५) वैशाखसुदी (१०) शुक्रवारके रीज मिथिलापुरीमें जायेनशीन कियेगये, -असलमें-ये-कदम तीर्थ मिथिलामेथे, जब यहांका मंदिर विरानहुवा उसवस्तसे-यहां लायेगये, मंदिरके वहार एकल्लेशीमें स्थुलभद्रजीके कदम जायेनशीन है, और उसपर लिखाहै संवत् (१९३६) में-रायबहादूर धन-पतिसंहजी शाकीन सुशिंदाबादने जायेनशीन किये, इसमंदिरके दर्शन करके यात्री चंपापुरी जानेको तयारीकरे, जो-चंपानालेके नामसे मशहूरहै, भागलपुरसे हरिकसमकी सवारी मिलसकती है, इक्षा-बगी-म्याना-पालखी-वगेरा-जोचाहो हाजिरहै, जिसकी मरजी पांव पैदल जानेकी हो शौखसे जाय, सडक पकी बनीहुइहै, रास्ताभूलनेका कोइकाम नहीं, रास्तेमें-बागवगीचे और तरह तरहके द्रस्त खुशनुमा खडे है, गोया ! किसीवागमें चळरहे है, पानीकी बहुतायतसे वनास्पति ज्यादह-और-जमीन-तर-ब-तर है,

जब करीब चंपानालेके पहुचजाओंगे दुरसे जैनश्वेतांबरमंदिर और धर्मशाला नजर आयगी, उसमें जाकर कयाम करना, धर्म-शाला छोटीबडी यहांपर (४) है, मगर सब एकही हातेमें बनी-हुइ है इसलिये एकही मालूम देती है, बडीधर्मशाला पंचायती जिसमें सात कोठरी मौजूद है, दुसरी छोटी है उसमें कोठरी तीन है, वहारकी धर्मशाला (२) रायबहादूर धनपतसिंहजी साकीन मुर्शिदाबादकी तामीर कराइहुइ जिसमें कोठरी चारहै यात्री जि-स जगह चाहे कयाम करे, इन चारो धर्मशालामें—यात्री—करीब (४००) के ठहर सकते है, मंदिर तीर्थकर वासुपूज्य स्वामीका शिखरबंद वेंशिकमती पुल्ता बनाहुवा और इसमें तीर्थकर वासु-पूज्य स्वामीकी मूर्त्ति करीब देढहाथ बडी राजा संप्रतिकी बनाइहुइ तख्तनशीनहै, वैसेही निशानात बने है जैसे राजा संप्रतिकी बनाइहुइ

हुइ मूर्त्तियोंपर होते है, छत्रीकी मरम्मत और रंगमंडपका फर्स राय-बहादुर धनपतसिंहजी साकीन मुर्शिदाबादने करवाया, वेदीपर लिखाहै संवत् (१९२५) मे-पाषाणमय वेदी और मरम्मत करवाइ, एक-छोटे जिनालयमें तीर्थेकर वासुपूज्य स्वामीके पंचकल्याणिक और उनके कदम जायेनशीनहै, उनपर लिखाहै संवत् (१८५६) फाल्गुनवर्रा एकमके रोज-ये-कदम-प्रतिष्टित कियेगये,

दुसरामंदिर इसीके करिबमें दाहनीतर्फ तीर्थकर वासुपूज्य स्यामीका-इसमे-उनकी मूर्त्ति करीव तीनफुटवडी तख्तनशीनहै, और उसपर लिखाहै संवत् (१८५६) वैशाखसुदी (३) बुधवा-रकेरीज चंपापुरीमे देवाधिदेव-वासुपूज्यस्वामीकी-मूर्त्ति-सबसंघने मिलकर तरूतनशीन किइ, बायीतर्फके एक जिनालयमें नवपद्जी-का यंत्र जायेनशीनहै और उसपर लिखाहै संवत् (१९२५) में रायबहादुर धनपतसिंहजी साकीन मुर्जिदाबादने यह तामीर करवाया, इस मंदिरकी उपरकी मंजिलमे चौमुखाजीकी चारमू-त्तिये–समवसरणका-–आकार–तीनकोट-–उमदातौरसे <mark>वनेहुवे है</mark>, संवत् (१८५६) में इसकी प्रतिष्टा किइगइ, धर्मशालामे दुतर्फा बगीचा बहुतवडा-जिसमें-गुलाव-चमेली-कुंद--जुही-गुलदाउदी-रायचंपा नवारवगेरा पैदाहोते है, और हमेशांकी पूजनमें चढायेजाते है, य-हांपर-दो-पूजारी एक जमादार और तीन नोकर हमेशां वनेरहते है, तीर्थ चंपापुरीकी जियारतकरके यात्री-उसीरास्ते वापिस भाग-लपुर आवे,

👺 (तवारिख-तीर्थ-समेतशिखर,)

भागलपुरसें रवानाहोकर-नाथनगर-अखबरनगर-मुलतान-गंज-बरीयारपुर-जमालपुर-दरहरा-कजरा-क्वील-मननपुर-

जमुइ-गिधोर-झाझा-सिमुलतुला-वैजनाथ-मधुपुर-जगदीशपुर-और-महेशमुंड-टेशनहोतेहुवे-गिरिडीटेशन उतरना, रैलकिराया देदरुपया लगताहै:

गिरिडीकस्वा इसवरूत तरकीपरहै, खानपानकी चीजे यहां उपदा तौरसे मिलसकती है. सामने टेशनके वडीआलिशान जैनश्वे-तांबर धर्मशाला बनीहुइ यात्री इसमे कयामकरे, संवत् (१९३४) मे–यह–धर्मशाला जैनश्वेतांबर श्रावक रायबहादूर धनपतसिंहजी साकीन मुर्शिदाबादने तामीरकरवाइ, यात्रीयोंकों आरामकी जगह है, संवत (१९४२) में-जैनश्वेतांबरमंदिर यहां रायबहादूर बुध-सिंहजी साकीन मुर्शिदाबादने तामीरकरवाया, और तीर्थकर सुपा-र्श्वनाथकी मूर्त्ति तख्तनशीन किइ, पासमे एक बगीचा खूब-तर-व-ताजा-गुलाब-चमेली-बेला-जुही-कुंद-गुल्दाउदी वगेराके पेंड इसमें खडे है, और इनके फुल हमेशांकी पूजनमें चढायेजाते है, गि-रिडीटेशनसे मधुवनतक सडक पकीबनीहुइ-बेलगाडी-इका-वगी-म्याना-पालखीवगेरा सवारी व-खूबी जासकती है, रास्तेमें किसी तरहका खौफनही. गिरिडीसे शुभहके सातवजे रवानाहोकर शा-मको पांचवजे मधुवन-पहुचसकतेहो, रास्तेमे पांचकोसपर वराकड-गांव-जहांकि-तीर्थंकर महावीरस्वामीकों केवलज्ञान पैदाहुवाथा एक जेनश्वेतांवरमंदिर और धर्मशाला आरामकी जगह बनीहुईहै, तीर्थंकर महावीरस्वामीके कदमोसें पाकहोइहुइ रिजुवालुकानदी यहांपर वहरही है. पानी-कभी-बंद-नहीहोता, तीर्थंकर महावीर-स्वामी इसनदीके कनारे बहुत अर्सेतक विचरेथे, तपिकया, और क्यामाक कुटुंबीके क्षेत्रमें ध्यानसमाधि करतेहुवे उनकों यहां-केव-िलज्ञान हासिलहुवाथा, यहांपर एक-जैनश्वेतांबरमंदिर बनाहुवाहै, मानी इसकी जियारतकरे, इसमे तीर्थकर महावीरस्वामीके समव-

सरणका आकार बनाहुवाहै. और शिलालेखमें लिखाहेकि-रिजु-वालुकानदीतरे-इयामाककुटुंबीक्षेत्रे-वैशाखशुक्क (१०) तृतीयप्रहरे-केवलज्ञान कल्याणिकसमवसरणमभृत्, मु-र्शिदाबादबास्तव्य-प्रतापसिंह-तद्भार्या--मेहताबकुवर-तत्पुत्र-लक्ष्मीपतसिंहबहाद्र-तत्क्षनीष्ट-भाता-धनपत-सिंह बहादृरने संवत् (१९३०) में इसका जीर्णोद्धार कराया.

पासमं बगीचा एक-जिसमं-आम-कटहेर-केले-अमस्द-गु-लाव-चंगली-चंपा वगेराके पंडखडेहै, पूजारी और एक-माली-यहांपर हमेशां वने रहते है, और समेतिशिखर-जैनश्वेतांवर-कोठी तर्फसे यहांका सब इंतजाम होताहै, जैनश्वेतांबर धर्मशाला एक -जिसमें (६) कोटरी-और-चारोंतर्फ पका कोट खीचाहुवा-यात्री-यहांपर टहरनाचाहे-शौखसे-टहरे,-या-जियारतकरके मधु-वनकों रवानाहो, वराकडगांव वहुत छोटाहे. मगर जरुरतकी चीजे सविमलती है, रिजुवालुका नदी उतरकर आगे (४)कोस-समेत शिखर पहाडकी दामनमें मधुवन जानाः जव मधुवन एक कोसपर रइ जायगा. हजारीबागका रास्ता छटजायगा. रास्तेमें एक-जल-का नाला-आताहे, समेताशिखर पहाडकी दामन-कहो-या-मधु-बनकहो-बात एकहीहै, जेनलोग इसकों संमतिशखर तीथ-और पारसनाथ पहाडभी कहकर बोलते हैं, समुंदरके पानीसे (४४८८) फुट उंचा--और--टीकसीरेकी चोटीपर-जनमदिर--टोंक--और-छत्रीये--जिनमें तीर्थकरोंके चरन जायनशीन है, तीर्थकर पारसनाथकी टोंक-उंची जगहपर बनीहुइहे इससबबसे जाहिरमें पारसनाथका पहाड कहलाया. जिले हजारीवागमें गिरिडीटेशनसे करीव [१८] मीलके फासलेपर समेतिशिखर पहाडकी दामनमें ? मधुवन एक गुल्लार जगहहै, संवत् (१७५०) में जैनश्वेतांबर म्रुनि–सोभाग्यविजयजी महाराजने तीर्थोकी सफर करके−जो– तीर्थमाला बनाइहे मुर्शिदाबादसे समेत शिखरकों जानेके–दो-रास्ते फरमाये, एक-वर्द्धमानगांव होकर-दुसरा-वीरभ्रामि तर्फ होकर जाया जाताथा, आजकल-शिखरजी पहाडके (४) कोशपर इस री नामका टेशन खुलाहै, और--वो--लाइन--गया लाइनमें जामीली है.

😭 (बयान-मधुबन.)

समेतिशिखर पहाडकी तलहटीमें मधुवन द्रस्तोंकें झंडसे घीरा हुवा एक-ऊमदा जगहहै, दुरसे देखतेही दिल बहुततर-व-ताजा होगा, एक-वडीआलिशान जैनश्वेतांबर कोठी-जिसमें-मुनीम-गु-मास्ते-नोकरचाकर-चपराशी-घंटा घडियाल-नोबतलाना सबटाठ शाहानातौरसे बना हुवा है, वाग बगीचे द्रख्तोके झुंड और तरह तरहके परींदा जानवर-मोर-तोते-मेंना-चीडिया वगेरा यहांपर कलोले करते रहते है, ओर उनकी मीठी मीठी अवाजसे दिल निहायतखुश-और-खुरम होता है, आटा-दाल-घी-दुध-मिठाइ वगेरा खानपानकी जरुरी चीजे यहांपर मिलसक्ती है, भांडे-बर्त न-वगेरा-जो-चीजे दरकारकी है यहांपर मिलसकेगी, जैनश्वेतां-बर धर्मशाले यहांपर चार है, अवल धर्मशाला खुशनसीब श्रावि-का हरकुवरशेठानी-साकीन अहमदाबादकी तामीर कराइ हुइ पु-ख्ता है, कोठरी पनरांह-बीचमे चौक और-उपर निहायत उमदा छत–जिसपर गर्मीयोंके दिनोमें बडा आराम मिलता है, दुसरी धर्मशाला-रायबहाद्र लक्ष्मीपतसिंहजी-साकीन मुशिदाबादकी-–यहभी बहुत बडी और खुबसुरत बनी हुइ है, यात्रीकों किसी तरहकी तकलीफ-न-होगी, इसमे कोठरी (४०)-बीचमें बड़ा भारी

चौक-और-हवादार जगहहै, कोइ यात्री डेहरा तंबु लगाकर ठइ-रना चाहे-तोभी-जगह बहुत है, चारो तर्फ पका कोट-और-नि-हायत उमदा छत-जिसपर-गर्मीयोके दिनोमें रातकों सोनेका आराम रहेगा, इसमे करीव एकहजार आदमी व-खुबी-ठहर स-कते है, इसमें कइ कोठरी अलायधा अलायधा खख्शोके नामसे-भी वनी हुइ है, उत्तर तर्फकी कोटरी बोट-अमीचंद्जी-धनसुख-दासजी-साकीन मिर्जापुरने मधुवन धर्मशालामें यात्रीयोंके लिये संवत् (१९२५) मे तामीर करवाइ, इसीतरह दुसरी कोटरी शेट-भेरुदासजीके बेटे नथमळजी जुहारमळजी गोळेळा साकीन जय-पुरने मधुवन धर्मशालामें संवत् (१९३५) में तामीर करवाइ, औ-रभी सात कोठरी इसीलाइनमें बनीहुइ है, और उनपर शिलालेख छगे हुवे है, मगर उनपर चुना फेर दीया है जिससे हर्फ बाचे जाते नहीं, पूरवकी तर्फ एक कोटरीपर शिलालेख लगा हुवा उसमें लिखा है शेठ-हीरालालजी-मोतीलालजी-जवाहिरलालजी भणशाली साकीन कलकत्ताने मधुवन धर्मश्वालामे संवत् (१९३५) मे-यइ-कोटरी-तामीर करवाइ, पश्चिम तर्फ एक-पौर्वधशाला-वनी हुइ है, इसमें शेठ-उद्यंचंद्जी-लीलाभाइ-साकीन सुरतने कुछ खर्चा दिया है,

एक-धर्मशाला-भेतांवर कोठीकी पश्चिम तर्फ सडकके कनारे बनीहुइँहे, जिसमे (२००) रुपये-शेठ-परतापचंदजी-छोगमलजी ढाडीवाल-साकीन नागपुरने दियेहैं, चौथी धर्मशाला-स्वतांवर कोठीके सामने बनीहुइ इसमे (१८) कोठरी-दालान-चोतरा-फर्स-और-सबकाम पुरुता बनाहुवा है, इसकी तामीरातमें-शेठ-परतापचंदजी-छोगमलजी-ढाडीवाल-साकीन नागपुरने (५००) रुपये दिये, शेठ-धर्मचंदजी उदयचंदजी-साकीन सुरुतने (५००)

और शेट-नगीनदसजी-कपुरचंदजी-साकीन सुरतने (५००)-शेट वछभजी-हीरजी-साकीन कछकत्ताने (२५०)-वकील-शिवलजी वाहलजी और लक्ष्मीचंदजी वाहलजी-साकीन काठियावाडने (७०१)–मुमेरमलजी–लोढा–साकीन अजमेरने (७००)–राय बहादुर-मेघराजजी-कोटारी-साकीन मुश्चिंदाबादने (२०००) रूपये दियेहै. इन धर्मशालोंमें कोइ जैनश्वतांवर यात्री किसीजगह ठहरे कोइ मनानही, और किसी अमरकी तकलीफभी नही, मु-साफिरोके आरामकोलिये सब जगहहै.

बगीचा एक- निहायत खुशनुमा-दर्मियान इसीधर्मशालाके बनाहुवा जिसमे गुलाब-चमेली-जुही-गुलदाउदी-कुंद-छोटाचंपा वगेराके खुशबुदार पेंड लगेहुवे और इनके फुल हमेशां देवपूजनमें चढाये जातेहै, यात्री इनधर्मशालाओमें कयामकरे और अपना माल असबाब-मुकफल-करके बंदोबस्तके शाथ दर्शनकों जाय. अवल दर्शन शामलिये—पार्श्वनाथजीके मंदिरका—दरवजेके पास एक शिलालेख लगाहुवा और उसमे लिखाहैकि–जैन-लोग-और उंची जातके आर्यलोग इसमें जा सकते है,-शिवाय इसके दुसरा नही जासकता, चौकमें जाकर देखोतो चारोंतर्फ स-बमंदिरही मंदिर खडे है, शामिलया पार्श्वनाथजीका शिखरबंद मं-दिर बहुत लागतका–और–मूर्त्ति–क्षामलिया पार्श्वनाथजीकी क-रीब (३) फुटबडी इसमें तस्तिनशीनहै, उसके नीचे लिखाहैकि-संवत् (१८७७) राधराकायां श्रीपार्श्व विंबं प्रतिष्ठितं-श्रीजिनहर्षसुरिणा--कारितं--मिरगांजानिव--सांवतसिंह ज-पदार्थमल्लेन--दाहने पासे-जो-सफेद रंग मूर्ति-पार्श्वनाथजीकी-करीब (२) फुट बडी मौजूद है उसपर लिखा हैकि–संवत् (१८८७) वर्षे–फाल्गुनशुक्ल (१३)

श्रीपार्श्वनाथ जिनबिंबं-दुगड-ज्येष्टमस्रभार्या—फत्तीना-मन्या—वाचकचारित्रनंदनगणि--उपदेशात्—कारितं-प्रति-ष्ठितं-च, वायेपासे जो सफेदरंग-पूर्ति-शीतलनाथजीकी करीव (२) फुटवडी मौजूदहै उसपर लिखाहै, संबत् (१८८८) माघशु-क्लपंचम्यां—सोमवासरे-श्रीशीतलनाथबिंबं-कारितं-ओ-श्रावंश—दुगड गोत्रप्रतापसिंहेन-प्रतिष्ठितंच-श्रीजिनचंद्र स्रिभः—इसमंदिरकोंजग्तशेठ-साकीन—स्रिशेंदाबादने वनवा-या.-तीर्थोंमं-यहकदीमी-रवाज होता चला आयाकि-एकमंदिर पुराना होकर गिरगया, उसजगह दूसरा किसीखुशनसीवने फिर तयारकरवाया, इसमंदिरके खासदरवजेकी दोंनोंतर्फ दिवारमें-शत्रंजय-गिरनारके नकशे-शंगमरमरपथरपर उकेरे हुवे निहायत उमदा बनेहै, रंगमंडप वहुतवडा और इसमें वेठकर इवादत तीर्थ-करदेवोकी किइजातीहै, हारमोनियम-सारंगी-तवले-और-सिता-रवगेरासें गायन होताहै, और अलेअलेगवैये यहांअपनाइल्मवतलातेहै

शामिलयापारसनाथजीके मंदिरकी वायीतर्फ-दुसरामंदिर पार्श्वनाथजीका इसमें तीर्थकरपार्श्वनाथजीकी-मूर्कि-करीव एकहाथवः
डी-जायनशीनहै, और उसपर लिखाहुवाहै कि-संवत् (१८७७)
वैशाखशुक्ल पौर्णिमायां-शीपार्श्वविंबं-प्रतीष्टितं-शीजिनह्षसूरिणा-गोलवछा-महताबोजानि-मृलचंद्र धर्मचंद्रेण
-कारितं.-और यहमंदिर-एक-खुशनसीवश्राविका-साकीन-मुशिंदावादने तामीरकरवाया,—

तीसरा मंदिर चंदामधुजीका-तामीरिकयाहुवा-वावुजशस्पजी
-हरखचंदजी-नवल्ला-साकीन मुर्शिदावादका-इसमें मृर्त्ति चंदाप्रभुजीकीकरीव एकहाथवडी जायेनशीनहै, और उसकेनीचे लिखाहुवाहैकि-संवत् (१८८८) माघठुक्क्षपंचम्यां-चंद्रवासरे शी-

चंद्रप्रभजिनविंबं-कारितं ओशवंशे नवलखागोत्रे मेटाम-लपुत्रजशरूपेन-प्रतिष्टितं च-वृहद्भद्दारक खरतरगछश्री जिनाक्षयसूरिचरणचंधरीक-श्रीजिनचंद्रसूरिभिः—

चौथामंदिर तीर्थकरपार्श्वनाथजीका, तामीरिकयाहुवा जहोरी भेरुदानजी साकीन कलकत्ताका-इसमेंमूर्त्ति पार्श्वनाथजीकी जाये-नशीनहै, और उसपर लिखाहुवाहैकि—संवत् (१९१०)-शाके (१७७५) माधशुक्क द्वितीयायां-श्रीपार्श्वविंबं-प्रतिष्टितंष्टह-त्खरतरगछे,—

पांचवामंदिर पार्श्वनाथजीका—तामीरिकयाहुवा भंडारी—रुगनाथमसादजी साकीन कानपुरका—इसमें मूर्ति पार्श्वनाथजीकी सफेदरंग करीव एकहाथवडी जायेनशीनहै, और उसपरिख्याहुवाहैिक
—संवत् (१८५४) माघकृष्टनपंचम्यां चंद्रवासरे श्रीपार्श्वजिनविंबंगतिष्टितं,

छठा मंदिर गोडीपार्श्वनाथजीका-तामीरिकयाहुवा-खुश्वन-सीव श्रावक-साकीन-मिर्जापुरका इसमें मूर्ति गोडीपार्श्वनाथजीकी सफेद रंग करीव (१) फूट वडी-संवत् (१९००) की प्रति-छितजायेनशीनहै, दाहनेपासे-शामरंगमूर्ति नेमनाथजी-की संवत् (१८९७) की प्रतिष्ठित-और-बायीतर्फ शाम-रंगसूर्ति रिखभदेवभगवान्की उसीसंवत् (१८९७) की-प्रतिष्ठित,-मौजुदहै.

सातवा मंदिर चिंतामणिपार्श्वनाथजीका-तामीरिकयाहुवा-जहोरीधनसुखदासजी, साकीनिमर्जापुरका-इसमें मूर्त्ति चिंतामणि पार्श्वनाथजीकी करीव (२॥) हाथ वडी शामरंग जायेनशीन है, और उसपरिलखाहैकि-सागरांकवसुचंद्र वर्षे (१८९७)-ने- त्रषणगणधरायुतेदाके (१७६२)-फाल्गुनांतिमदले-सुना-गके (५) भागवे सितपटीघपालके वाणारस्यां श्रीमद्भग-वत्सहस्रफणालंकृत श्रीपार्श्वनाथजिनमूर्त्तिः-क-से-उदय-चंद्रधमपत्नी-महाकुवरारुयया--मूलचंद्रसुतथुतया -वृह-त्खरतरगणेदा श्रीजिनहर्षगणि पदारुंकृत श्रीजिनमहेंद्र-स्नरिणा प्रतिष्ठिता, यहमूर्त्ति बनारसमें बनाइगइ और मधुबनमें तख्तनशीन किइगइहै.

आठवामंदिर सुपार्श्वनाथजीका-तामीरिकयाहुवा पंचायती श्रावक विकानेरवालोका–इसमें मूर्त्ति सुपार्श्वनाथजीकी सफेदरंग क-रीव एक हाथवडी जायेनशीनहै, और उसपरिलखाहैकि-संवत् (१९००) में यहमूर्त्ति तामीर किइगई,

नवमामंदिर गणधर-अभस्वामीका-तामीरिकयाहुवा-जैनन्धे-तांबरसंघ-बाळुचर-मुशिदाबादवाळोंका इसमें मृत्तिपार्श्वनाथजीके गणधर शुभस्वामीकी करीव (१) हाथ वडी–साधुस्वरूपमें जाये-नशीनहै, और उसपरिलखाहैकि-संवत् (१८५५) फाल्गुनशुक्र-तृतीयायां-रवौ-श्रीपार्श्वनाथस्य-शूभस्वामी गणधरविंबं-प्रतिष्ठितं-जिन हर्षसृरिभिः कारितंच बालुचरवास्तव्य-श्री संघेन,—

दसवामंदिर गोडीपार्श्वनाथजीका–तामीरकियाहुवा-वाबुप्रताप-सिंइजी साकीन मुर्शिदाबादका-इसमें मूर्त्ति गोडीपार्श्वनाथजीकी सफेद रंग-करीब एकहाथवडी जायेनशीनहै, और उसपर लिखा-हैिक-संवत् (१८८८)-माघशुक्कपंचम्यां चंद्रवासरे श्रीपा-श्वेनाथ जिनविंबं-कारितं-ओशवंशे-दुगडगोत्रे प्रतापसिं-हेन-प्रतिष्टितं खरतरगच्छाधिराज-श्रीजिनचंद्रसरिभिः-

इनदशमंदिरोंके दर्मियान एसाउमदाचौक-और-मेंदानबनाहै जिसमें (४०००) हजारआदमी-ब-खूवी बेटसकते है, बाजेलोग इस वातका शुभाकरते है कि-शिखरजीके पहाडमें-हरड-बहेड-आमळे-भीलावा–वत्सनागवगेरा ऐसीजहेरीजडीबुटीयंहै कि–जेठ–वैशाखमें इनकीअसर पानीमेंआजाती है. और यात्रीलोग इसके पानीसें बीमार होजातेहै, लेकिन! यहच्याल महाल-वेंफायदाहै, कइदफे हम यहां गर्मीयोंकेदिनोमें जाचुकेहै, खास! मधुवनमें कइ कुवे मीटेजलके बने हुवे-किसीतरहकी तकछीफयात्रीकों-नहीहोसकती, पहाडके झरनोंका पानीपीना कोइजरुरतभी नही. अगर यह अगर एसाहीहोतातो हर-वरूत यात्री यहांक्योंआयाकरते? फिजहूल लोगोके कहनेपर ख्याक करनाकोइ जरुरतनही, रुइके रौजगारवालोंकों-कातिक-मगसीरमें फ़ुरसतनही. चौमासेमें वारीशका सबव-और गर्मीयोम कहोग पानी लगजाताहै, बतलाओ ! फिर तीर्थयात्रा कवजाओगे ^१ बेटा−बेटीके विवाह और वरातमें जेठ-वैशाखमेंभी जातेहो-कोइ बहाने नहीकरते और तीर्थयात्रामें एसेएसेवहाने सामने आतेहै, मगर यहसविफजहूल बातेहै, जिसवरूतदिळचाहे तीर्थयात्राकरो और किसीतरहका खोफ मतलाओ,-

👺 🛭 बयान-पहाड-समेतशिखर,]

मुल्क पुरवमें समेतिशिखर पहाड जैनका पुराना तीर्थ है. पन हाडके सीरेतक एक सडक और कुछदुरतक पगदंडी गइहै, तीर्थ-कर अजितनाथमहाराज इसपहाडपर चैतस्रुदी पुनमके रौज स्रुक्ति-कों पाय, तीर्थकर संभवनाथ-अभिनंदन-सुमितनाथ-पदममभ-सुपार्श्वनाथ-चंद्रप्रभ-सुविधिनाथ--शीतल्लनाथ-श्रेयांसनाथ-विमल्ल-नाथ–अनंतनाथ–धर्मनाथ–शांतिनाथ-कुंथुनाथ--अरनाथ–पछिनाथ म्निसूत्रत-नामनाथ-और-पार्श्वनाथ इसीपहाडपर मुक्तिकों पायेहै,

इंद्रदेवते-और राजेमहाराजे उनकी खिट्मतमें हाजिररहतेथे, बढे-वडे जलसे-और मुवारकवादीये इसपहाडर गुजरचुकी है, कइमु-निमहर्षि-इसपहाडपर मोक्षको पाये. वेंशुमारधनदोलत खुशनसी-वोंने यहां सर्फ किइ. पेस्तर इस पहाडपर हाथीयोंका बनया, मगर ब-सबब यात्रीआनेजानेके हाथीयोंका रहनाकषडोतागया. शेर-गेंडा-सांवरज्ञींगी-भेसाहिरन-रोंझ-रींछ-और-बंदरवगेराभी रहाकरतेथे, मगर-वेभी-अबकमहै, कभीकभी-बेंर-यहांपर नजर-आताभी है. मोर-तोते-मंना-बुलबुल-चीडीया-तीतर-कबुतर व-गेरा हरफसलीपरींदा-यहांपर दख्तोंके झंडोंगें हमेशां कलोल कर-तेरहते हैं, तरहतरहकी मेवाजातवनस्पति-पेस्तरकेजमानेमें-यहांपर होतीथी. आम-खिरनी-केले-चीरोंजी-वंशलोचन-कचनार-ना-<mark>ळियेर-सुपारी-र्जभीर-</mark>खज्र-नींबु-हरड-बहेंडे-आमळे-केतकी-कदंब-ताड-तमाल-मोघरा-गुलाब--चंपा-अशोक--जाड-जुड-दम-न-मरुआ-सेवती-मालती-मचक्कंद-चंदन-सागुन-स्वर--इम्ली-पलाश-अखरोट-अनार-वर्गरा वर्गरा. जिनमेंसे कड़अब मौजदहै और कइ नाजुक मिजाज–चीजें व–सबब तबदृष्टजमानेके कमहो-गइ, कामराज-हाथाजोडी-पातालकोला-वनजीरा-कालिलाखन-अनंतमूळ-और-रतनजोत-अवभी यहांपर मौजुदहे, कइजडीबुटीऐसी-भी है जिसकेजाननेवाले नहीरहे, सांप और वीलकेजहेर उतारनेकी जडीभी यहांपर पैदाहोती है, गरजाके-पहाडपर जिथरदेखो जंगली मेंबाजातचीजें सबजी-फुल-कलि-बाग-बगीचे-खुशबू-और-हरेहरेपेंड-दिलखुश-व-ताजाकरनेवालीचींजे-नजरआती है, शिखरजीके पहाड-कीचढाइ करीव तीनकोशकी-वीशटोंकोंकी सफरमी तीनकोश-और-जतराइमी तीनकोशकी-कुल- (९) कोशकी सफरयात्रीकों होगी कपडेपाक-और-बदन साफहोकर जियारतकों जानाचाहिये, जो-यात्री पांवपैदलजानाचाहे शौखर्से जाय, मगर जिनकीताकातनही है

डोळीमें सवारहोकरभी-जासकते है, डोळीका इंतजाम अवलरौजर्से करना होगा. बरवरूत-डोली-नहीमिलीतो जियारतकों धक्का पहुचे गा, पूजनकेलिये केशर-चंदन-धूप-दीप-सोनेचांदीकेवर्क-इत्रदान रकाबी-वर्गराचीजेभी अवलरीजही तयारकरलेनाचाहियेकि-वर्ष्त पर देंरी-न-हो, गर्बीयोके दिनोमें पहाडपर जानेकेलिये पांवमें कपडेकेमीजेभी पहन लिये जाय कोइहर्जनही, जिससे पहाडके कं-कर--पथर--और गर्मजमीन पैरोंकों लगकर छाले-न-पडजाय, अगर पांवकों तकलीफ होगइतो दुसरेरीज जियारतजाना मुक्कि-लहोगा, तीर्थमें आनकर कमसेकम तीनयात्रातो जरुरकरनाचाहिये कितनेक एसेपतले दुबले और नाजुकमिजाज होते हैकि-उनकों ए-कयात्राकरनाभी दुसवारहोजाताहै, जहांतकबने तीर्थकेखजानेमेंभी– कुछरकम–देनीचाहिये, जिनेंद्रदेव–वीतरागहै उनकों रुपये पैसोसे जरुरतनही, मगर तुमारीफर्जहैकि–तीर्थकी हिफाजतकेलिये-कुछ-रकमदेना, कितनेक ऐसेकंजुस होतेहैं कि-एकपैसाभी देना उनसे बन नहीसकता, मगरदलीले ऐसी करतेहैकि-वीतरागोंकों पैसोंसे क्यागरज ! तीर्थोमें खजाना किसलिये ! ! और नोकर चाकर घंटा-घडियाल क्यों, ? मगर-ये-सब बाते गलत-और नाजाइजहै, तुम-जो-बतौरधर्मकी राहपरदेतेहो-अगळेजन्ममे-तुमारी भळाइके लियेदेतेहो, जिनको अगलेजन्ममें मुक्तिपानाहो−धर्म करे-लाखो-करोडों-बल्कि ! अर्ब-खर्वतक रुपये पेस्तरके जमानेमें छोगोने दिये है, और-तीर्थोकी हिफाजतिक इहै. धर्ममे किसीपरजोराजोरी नही-किइजाती, जिसकी-मरजीहो धर्म करे,

मधुवनसे आगे पहाडपर जानेका रास्ता शुरु होताहै, और जब करीब एक कोशके पहुचोंगे रास्तेमें एक चाह बागान मिछेगा, यहां पर निहायत इमदाचाहके पेंड खडेहै और चाह बहुतपैदाहोतीहै,

आगे आधकोशबढनेसें-एक-गंधर्वनालाआयगा, रास्तेमें दोनोंतर्फ झाडीझखड-व-कसरतद्रख्तोंकी चकाचक-और-ठंडीठंडीछांव चेत-वैश्वास्त्रकेदिनोमेंभी हरियाली–मानींदेसब्जफर्स विछाहुवाहै सडक व-हुतआरामकीवनीहुइ कोइतकलीफ यात्रीकों–न–होगी. गंधर्वनाले-पर धर्मशालाएक-जैनश्वेतांवरसंघकीतर्फसे वनीहुइहै-और करीवमें एक चिक्सें आव–मीठेजलका ज्ञरनाजारी है, देखकर दिलखुश होगा,

गंधर्वनालेसे आगे एकमीलपरबढेतो एक शीतानालानामका नालामीलेगा. जलकेझरने-तरहतरहके द्रष्त-और-झाडीझुखडसे तमामपहाड छायाहुवा, किसीजगहाविनापेंड और सब्जीके कोइहि-स्सा–न–देखोगे, शीतानालेसें आगे एककोश चढनेपर तीर्थंकर कुंथुनाथमहाराजकी टोंक मिल्लेगी, अवल इसकेदर्शनकरनाचाहिये, इसमें कुंथुनाथस्वामीकेचरण तख्तनशीनहै--और उसपरलिखाहैकि संवत् (१८२५) माघशुक्क (३) गुरौ-बिरानीगोत्रीय शा-हखुद्यालचंद्रेण-शीकुंथुनाथचरणपादुकारापिता--प्रतिष्टि-ता-च-तपागछे-श्रीरस्तु छत्रीकी मरम्मत संवत् (१९३१) में हुइ, इरेकतीर्थमें यहएककदीमीरवाज होताचळा आयाकि-एक-मंदिरपुरानाहोकर गिरगया दुसरेखुशनसीवने फिर उसकों तामीर करवाया. इसीतरह तीर्थकी जड वनी रहतीहै,--

दुसरीटोंक नेमिनाथजीकी, इसमें तीर्थकरनेमिनाथजीके चरन-तस्तनशीनहै, और उसपरिलखाहैकि-सैवत् (१८१६) माघ सुदी तीज गुरुवारकेरौज बिरानीगोत्रके शाह-खुशा-लचंदजीने इसकों तामीर करवाये. खुशालचंदजी जैनश्वेतांबरश्रावकथे, टौंकपर जो छत्री बनीहुइहै सं-वत् (१९३१) में उसकी मरम्मतहुइहै,

तीसरीटैंक तीर्थकरअरनाथस्वामीकी इसमें तीर्थकरअरनाथ महाराजके चरन तस्तनभीनहैं, और उपसर वही संवत् (१८२५) माघसुदी तीज गुरुवारके रौज बिरानीगौत्रके खुशालचंदजीने इनकों तामीरकरवाये लिखाहै, छत्री-की मरम्मत संवत् (१९३१) में हुइ. चौथीटोक तीर्थकर मिलनाथस्वामीकी-इसमें तीर्थंकरमिलनाथमहाराजके चरन तख्त-नशीनहैं. और उसपर वही संवत् (१८२५) मे-बिरानीगोत्र-के खुशालचंदजीने इनकों तामीर करवाये लिखाहै.— पांचमीटोंक तीर्थकरश्रेयांसनाथजीकी-इसमें तीर्थकर श्रेयांसनाथ-जीके चरन तस्तनशीनहै, और उसपर वहीं लेखहै जो उपरकी चारटेंकोंमे लिखचुके,—

छठीटोंक तीर्थंकरसुविधिनाथजीकी−इसमें तीर्थंकरसुविधिना∙ थजीके चरन तस्तनशीनहैं, और उसपर वही लेखहैं जो उपरकी पांचटोंकोंमे-लिखचुके. छत्रीकी मरम्मत दोवारा किइगइ, और उसपरिलखाहैकि-शेठ-उमाभाइ--हठीसिंह-साकीन--अहमदाबादने इसकी मरम्मतकरवाई.-

सातवीटोंक तीर्थंकरपद्मप्रभस्वामीकी-इसमें तीर्थंकरपद्मप्रसुके चरन तरूतनशीनहै,-इसकी मरम्मतभी दोवाराहुइहै. और उसपर लिखाहै-संवत् (१९४९) माघशुक्क (१०) शुक्रवासरेसमे-तशिखर पर्वतेपग्रमभिजनचरणपादुफा-स्थापितामतिष्टिता-च–भद्दारकश्रीविजयराजसूरिभिः तपागछे,-

आठवीटोंक तीर्थकरम्रुनिसुत्रतस्वामीकी–इसमें तीर्थकर मुनिसु-व्रतस्वामीके चरन तख्तनशीनहै, और उसपर लिखाहैकि**-संवत्**- (१८२५) माघशुक्ल (३) गुरौ-विरानीगोत्रीय-शाह खुशालचंद्रेण-श्रीसुनिसुव्रतजिनचरणपादुका-कारापिता-प्रतिष्टिताच तपागछेशीरस्तु—

नवमीटोंक तीर्थंकर चंदाप्रभुस्वामीकी-इसमें-तीर्थंकरचंदाप्रभु-जीकेचरन तस्तनशीनहै. और उसपर छिखाहैकि-संवत् (१८४९) माघशुक्कृपंचम्यां-बुधवासरे-शिचंद्रप्रभक्तिनचरण न्यासः कृतः यहसवटोंके पेस्तर शाह-खुशालचंद्रजी-विरानीगोत्र-तपगल्वालोने संवत् (१८२५) में मरम्मतकरवाइथी, मगर ब-सवव-गिर्जानेके दोवारा-तिवारा-मरम्मतकरारपाइहै, -यहटोंक बहुतऊंची-युलंद्-और-उसकाचढाव-बडाकिटनहै, इसपरचढकरदेखोतो-माल्यम होताहै मानो ! आस्मानमें चलेगये. समेतिशिखरपहाडकी तमाम रवन्नक-और-केफियत यहांसें ब-खूबी-नजरआतीहै, तरहतरहकी मेवाजातवनास्पति-और-खूशब्-चारोंतर्फ-महकरहीहै-तीर्थंकर कुं-थुनाथजीकीटोंकसें-यह-टोंक-करीवएकको शक्ते फासलेपर और वडी-ऊंची है.-यहांसेंउतरकर तीर्थंकर-रिपभदेवजीकी टोंककों-जाना,-

द्सवीटोंक-तीर्थकर-रिषभदेवभगवानकी--इसमें—तीर्थकर-रिषभदेवमहाराजके चरन तख्तनशीनहे,-और-उसपर लिखाहैकि-संवत् (१९४९) माघशुक्क दुजकरोज-समेतशेलपहाडपर-तीर्थकर रिषभदेवमहाराजकी चरणपादुकाका जीर्णोद्धार-रायवहादूर धन-पतिसंहजी साकीन मुर्शिदाबादने कराया. तीर्थकर रिषभदेवमहा-राज अष्टापद पहाडपर मुक्तहुवेहैं, मगर यहां उनकीचरनपादुका इसलिये तामीरकरवाइ गइकि-यात्रीको यहांभी उनकी जियारत हासिलहोजावे, थोडे अरसेकी बातहै इस टौंकपर ब-सवब-विज-लीगिरजानेके तिवारामरम्मत किइ गइ, और संवत् (१९५८) में फिर हमारे हाथसें प्रतिष्टा हुइ है. ग्यारवही टोंक तीर्थंकर ज्ञीतलनाथजीकी—इसमें—तीर्थंकर—ज्ञी-तलनाथजीके चरन तस्तनज्ञीनहें, और उसपरलिखाहें कि—संवत् (१८२५) वर्षे माघठाक्ल (३) गुरौ विरानीगोत्रीयद्याह खुशालचंद्रेण शीशोतलनाथजिनचरणपादुका कारापिता प तिष्टिताच तपागळे शीरस्तु—इसटोंकका चढावभी बहुत कठिन है.

वारहवीटोंक तीर्थकर अनंतनाथजीकी-इसमें-तीर्थकर अनंत-नाथजीके चरण तख्तनशीनहै, और उसपर संवत् (१८२५) में-शाह खुशालचंदजीने इसका तामीरकरवाये लिखा है.-

तेरहमीटोंक तीर्थकर संभवनाथजीकी-इसमें-तीर्थकर संभव-नाथजीके चरन तख्तनशीन है, और उसपरभी वही लेख है संवत् (१८२५) में शाह खूशालचंदजीने इसकों तामीर करवाये.

चौदहमीटोंक-तीर्थकर वासुपूज्यस्वामीकी-इसमें-तीर्थकर वा-सुपूज्यमहाराजके चरन तख्तनज्ञीन है, और उसपर लिखाहै संवत् (१९२४) फाल्सनवदी पंचमा बुधवारकेरौज तीर्धकर वासुपूज्य-स्वामीके पंचकल्याणिकोंका यहां चरणन्यास कियागया, और सुर्शिदावाद वास्तव्य-दुगडगोत्रीय मतापिसंह भार्या मेहताबकुंवर ज्येष्टस्रत लक्ष्मीपितिसिंह कनीष्टिश्वाता धनपितिसिंहजीने इसका जी-णींद्धार कराया. (यानी) मरम्मत करवाइ, तीर्थकर वासुपुज्य स्वामीके पांचकल्याणिक चंपापुरीमें हुवे, लेकिन! यहांपर उनके चरन और छत्री इसलिये कायम किइगइ, कि-यात्रीलोग-यहांभी उनकी जियारत हासिल करे,-

पनराहमीटोंक-तीर्थकर-अभिनंदनस्वामीकी-इसमें--तीर्थकर-अभिनंदनस्वामीके चरन तख्तनशीन है, और उसपर लिखा है संवत् (१९३३) ज्येष्ठशुक्कद्शम्यां-शनिवासरे-अभिनंदन जिनेंद्रस्य-चरणपादुका जीर्णोद्धारः-श्रीसंघेन-कारितः-

वेदीकेनीचे एकतर्फकी दिवारमें एक शिलालेख लगाहुवा है और उसमें लिखाहैकि- इसवेदीकी मरम्मत-संवत् (१९४२) में शाह-शामजी-पदमसी-साकीन-कछ-मांडवी-श्रीमालवंशीने कर-वाइ, इसटोंकसे नीचे उतरकर शामारिया-पार्श्वनाथजीके मंदिर-कों-जाना.

शामलियापार्श्वनाथजीका मंदिर-निहायत कींमती-और-शि-खरबंद बनाहुवा इसमंदिरका दुसरा नाम−धुरमटका−मंदिर−भी− बोलतेहै, और कोइकोइ जलमंदिरभी कहतेहै, सव मंदिरोंकेबीच-मानींदे स्वर्ग विमानके देखलो, जबकि-यहमंदिर-जगत्शेट खुशा-लचंदजीने तामीरकरवाया जमाने उसवस्तके-रैल-नहीथी. पहा-डके नीचेसें उपरतक सब माल-असवाब-इमारतका हाथीयोंपर लदाकर चढायाजाताथा, इसकी तामीरातमें (९३६०००) रुपये सर्फद्भवे, पीछाडी मंदिरके एक शिलालेख लगाहुवाथा, मगर इस वरूत नहीं रहा, इसमें तीर्थकर पार्श्वनाथमहाराजकी मूर्त्तिकरीव (२) हाथवडी-शामरंग-तख्तनशीनहै, और उसकेनीचे लिखाँहे संवत् (१८२२) वर्षे -वैद्याखद्युक्क (१३) गुरौ-द्याह खुद्गालचंद्रेण-श्रीपार्श्वविंबं-कारापितं--प्रतिष्ठितंच-सर्व-स्रिभः-दाहनीतर्फ तीर्थकर संभवनाथमहाराजकी मृर्त्ति-करीव देहहाथ बडी सफेदरंग जायेनशीनहै, और उसकेनीचेळिखाहै संवत् (१८२२) मे यहमूर्त्ति प्रतिष्टित किइगइ, और मुगालचंद्र-ओश बाल-साणसुखागोत्र-साकीन सुर्शिदाबादने तामीर करवाइ, इसके दाहनेपासे एक-और-मूर्त्ति-तीर्थेकरपार्श्वनाथजीकी फणसहित-क-रीब (२) हाथबडी सफेदरंग जायेनशीनहै. और उसपर छिखाहै

संवत् (१८२२) में-सुगालचंद्र-ओश्चवाल-साणसुखागोत्र-साकीन म्रिक्षिदाबादने यह तामीर करवाइ.

वायीतर्फ शामलीयापार्श्वनाथजीके एकमूर्त्ति-तीर्थकर आभि-नंदनस्वामीकी-करीव देवहाथ वडी सफेदरंग जायेनशीनहै. और उसपर लिखाहै-संवत् (१८२२) में सुगालचंद्र-ओश्ववाल-साण-मुखागोत्र-साकीन-मुर्शिदाबादने यह तामीरकरवाइ, इसकी बायी तर्फ–एक–और–मूर्त्ति–तीर्थकर शीतलनाथमहाराज<mark>की करीव देढ</mark> हाथ बडी सफेदरंग जायेनशीनहै, और उसपर लिखाँहै संवत् (१८२२) में-सुगालचंद्र-ओशवाल-साणसुखागोत्र-साकीन मु-र्शिदाबादने यह तामीरकरवाइ,-श्रावक खुशालचंदजी-और-उपर लिखेडुवे श्रावक-सुगालचंद्रजी-जैनश्वेतांबर श्रावकथे, मंदिरका रं-गमंडप और दालान निहायत उमदा बनेहुवे-फर्स-शंगमर्भर पथर-का-खुलाचोक-जिसमें (५००) आदमी ब-खुबी बेठसकते है. खुब-सुरतिदेखकर दिलखुश होगा,-जगह मानींदे स्वर्गविमानके देखलो, हरीहरीवनास्पति-और-जडीबुटीयें यहांपर खडी है, जिनकों इस वातकी माहिती है खजाना जवाहिरात दिखरहाहै,

धर्मशाला यहांपर (२) बनीहुइ, एक पंचायती, दुसरी-रायबहादुर धनपतिंसहजी-साकीन मुर्शिदाबादकी तामीर किइ हुइ. यात्री अगर रातकों यहांकयाम करना चाहै, शौखसे करे. चौकी पहरेका बंदोबस्त अछाहै. मगर कभीकभी उंडीरातकों पानीपीनेकेलिये-केरभी यहां आजाताहै, इसलिये खुलेमेंदानमें सोना ठीकनहि भीतरधर्मशालाके-बंदोबस्तीसे सोनाचाहिये, आजतक किसीयात्रीकों तकलीफ शेरकी नहिहुइ, तीर्थका रवाव वडाहै, मगर तोभी इनसानकों जानका बचाना · फर्जहै, इसलिये बंदोबस्तकेशाथ सोनाचाहिये, पानीके दो-कंड-और पासमें एक बगीचा यहां बनाहुवाहै, गुलाब-चमेली-बेला बगेराके फुलहमेशां उतरते हैं, और देवपुजनमें चढायेजाते हैं, -खर्च-आदमनी चढापा-पुजारी और-नोकरचाकर-यहां हमेशांसे जैन खेतांवरोंकी तर्फसे हैं, यात्री-पूजाबगेरा करके ग्यारहवजेसे तीन बजेतक तीन घंटेकी घूप यहां बतीतकरें, और बाद दोवजेके नवटोंकोंके दर्शन करके नीचे मधुबनमें शामतक पहुचशकते हैं. हमने चारमरतवे इस तीर्थकी जियारतिकह, इसीतौरसे शुभहके गयेहुवे शामकों वापिस मधुबनमें आयेथे, हरयात्रीकों लाजिमहे तीर्थोंकी जियारतमें जल्दी न करें, धीरजकेशाध शांतभावसें देवपुजन बगेरा करें, धर्मके का-ममें जितना अर्सा गुजरे उतनाही अला है, दुनियाके धंदे कभी खतम नहि होते.

सोलहमीटोंक गौतगस्वामीकी-इसमें-गौतमस्वामीके-और-चौ-इसतीर्थंकरोके चरन तस्तनशीनहैं, और उसपर लिखाहै संवत् (१९४१) में इसकी श्रतिष्ठाकिइगइ, और श्रावक-लक्ष्मीचंदजी-साकीन-मांडल-मुल्केगुजरातने इसकों तामीर करवाये,-तीर्थंकर-कुंथुनाथमहाराजकी टोंक-इसीके सामनेहैं, पेस्तर जिसकेदर्शनकर-के आगेकों गयेथे, तीर्थंकर कुंथुनाथजीकीटोंकसें-चंदाभभुकीटोंक खास! पूरवकीतर्फ, पार्श्वनाथजीटोंक पश्चिमतर्फशामलियापार्श्वना-थजीका मंदिर दखन तर्फ-मधुवन-श्वेतांवरकोटी-और-धर्मशाला वगेरा उत्तरकीतर्फ है,

सतराहमीटोंक तीर्थिकर धर्मनाथजीकी-इसमें-तीर्थकर-धर्मना-थजीके-चरन तरुतनशीनहैं, और उसपरिख्याहै, संवत् (१९१२) में इसकी मरम्मत दोवारा किइगई,-तीसरीटफे संवत् (१९३१) में-शेट-नरसिंह-केशवजी-साकीन-कछनेभी इसकी मरम्मत करवाइहै. अठारहमीठोंक-तीर्थंकर सुमितनाथजीकी-इसमें-तीर्थंकर सुम-तिनाथमहाराजके चरन तच्तनकीनहै. और उसपरिलखाहै संवत् (१८२५) माघठाक्ल (३) गुरौं विरानीगोत्रीय शाह खूशालचंद्रेण श्रीसुमितनाथ जिनचरणपादुका कारापिता प्रतिष्ठिताच सर्वस्रिभिः तपागछेश्रीरस्तु—

उनीसमीटोंक तीर्थकर-शांतिनायजीकी-इसमें-तीर्थकर शांति-नाथमहाराजके चरन तख्तनशीनहै, और उसपर लिखाहै संवत् (१८२५) में-विरानी गोत्रीय-शाह-खुशालचंदजीने इनको ता-मीर करवाये,--

वीसमीटोंक-तीर्थंकर-महावीरस्वामीकी-इसमें-तीर्थंकर-महा-वीरस्वामीके चरन-तर्वतनशीनहे. और उसपर लिखाहे संवत् (१९२४) में इसकी मरम्मत रायवहाद्र धनपतिसहजी साकीन मुशिंदाबादने करवाइ, तीर्थंकरमहावीरस्वामी-पावापुरीमें-मुक्तहुवे, मगर यहां उनके चरन इसलियेतामीरकरवायेगयेकि-यात्रीलोक-यहांभी-उनकीजियारत हांसीलकरशके.

एकीसमीटोंक-तीर्थकर-सुपार्श्वनाथजीकी-इसमें-तीर्थकर-सु-पार्श्वनाथमहाराजके चरन तरुतनशीनहे, और उसपरिलखाहे संवत् (१८२५) माघशुक्ल (३) गुरौ विरानीगोत्रीय शाह खु-शालचंद्रेण श्रीसुपार्श्वनाथजिनचरणपाद्का कारापिता प्रतिष्टिता च सर्वस्रिसिः त्यागछेश्रीरस्तु,

बाइसमीटोंक-तीर्थकर विमलनाथजीकी-इसमें-तीर्थकर-वि-मलनाथजीके चरन तस्त्तनशीनहै, और उसपरलिखाहै संवत् (१८२५) में विरानीगोत्रीय-शाह-खुशालचंदजीने इनकों वामी-इस करवाये,- तेइसमी टोंक-तीर्थंकर अजितनाथजीकी-इसमें-तीर्थंकर अ-जितनाथजीके चरन तस्तनशीनहैं, और उसपरिक्षांहै संवत् (१८२५) में विरानीगौत्रीय-शाह-खुशाळचंदजीने इनकों ताः मीर करवाये,—

चोइसमीटोंक तीर्थकर-नेमनाथजीकी-इसमें-तीर्थकर नेमना-थजी महाराजके चरन तख्तनशीनहै, और उसपरिलखाहै, संवत् (१९२४) में इसकी मरम्मत रायवहादृर धनपतिसंहजी-साकीन मुर्शिदावादने-करवाइ. तीर्थकर नेमनाथमहाराज-गिरनारपहाइ-पर-मुक्तहुवे, मगर यहां उनके चरन इसिलये तामीरकरवाये गये-कि-यात्रीलोग यहांभी उनकी जियारत हासिल करशके.

पचीसमीटोंक तीर्थकर पार्श्वनाथजीकी-इसमं-तीर्थकर पार्श्वनाथ-महाराजके-चरन-तरुतनशीनहै, और उसपर लिखाहै-संवत् (१८४९) मायशुक्लपंचमी बुधवारकरींज श्रीसंघने तीर्थकरपार्श्वनाथजीके चरन यहां तामीर करवाये, और वादउसकेसंवत्
(१९५८) में इसकी तिवारामरम्मत रायबद्रीदासजीमुकीम साकीन
कलकत्ताने करवाइ. शिखरवंद मंदिर मजबूत-वेंशकीमती बनवाया
औरप्रतिष्ठा करवाइ, फर्स-सफेद और-काले-शंगमर्मरपथरकावेदी-निहायत उमदा यहटोंक सवटोंकोंसें उंची-इसके चढनेकेलिये
सीढी बनीये बनीहुइहै,-ठीक इसटोंकके सीरेपरचढकर नजरकरेतो तमाम समेतशिखरका-पहाडदिखपडताहै, हरीहरीबनास्पतीऔर-जंगलीमेवाजात दछतोंसें छायाहुवा-चोगिर्दा खुशबु-महेकरही है देखकर दिलखुशहोगा, मंदिरकी पीछलीपरकम्मामें खडेहोकरदेखो तो-गोया! आस्मानकेसाथ बातेंहोरहीहै, कहांतकतारीफकरे देखनेवालेही इसकीकदर जानसकतेहैं, तीर्थोंमें दौलत खर्चकरना बडेखुशनशीवोंका कामहै, जो लोगधर्मकों भ्रलेहुवेहै क्या

खर्चकरसकेगें, ? पायबंदधर्मकेही अपनीदौलतकों वतौरराहधर्मपर सर्फकरसकतेहै,—

तीर्थ-समेतिशखरपहाडपर-जैनश्वेतांवर मंदिर-टोंक-औरध-मैशाला-सब-जैनश्वेतांवरोंकी तर्फसेवनेहुवेहै, पहाडकेनीचे मधुबनमें जो जैनश्वेतांवरकोठीहै-उसीकेखजानेसें सबकाइंतजामाकिया जाता है, सीढीयोंके मुकदमेंके फेसलेमें वयान दर्ज है कि.-

The Jains of the Sitamberi sect are in charge and possession of the temples tonks and images and idols therein.

(माइना.)—शिखरजी पहाडपरके मंदिर-टोंक-उनमेंकी मूर्त्तियें और पुतलें सब-श्वेतांबरमजहबके जैनोके ताबेमें है,

🖾 [द्रवयान-जिला-हजारीबाग,]

समुंदरके पानीसे करीब (२००) फुट ऊचा जिलेका सदरमुकाम हजारीबाग एक वडा कस्वाहै, सन (१८९१) की-मर्दुशुमारीके वख्त कस्वे हजारीबागकी मर्दुमशुमारी (१६६७२)
मनुष्योंकी-थी, आवहवा निहायतपाक और तंदुरस्ती बढानेवाली
जिलेकी बडीनदी दामोदर दुरतक वहती चलीगइहै, जिले
हजारीबागके-पूरवकों परगना संथाल-और-वीरभूमि-दखनपश्विभको लोहारडागा-और-गयाजिला, उत्तरकों गया-और-मुंगेरके जिले है, जिलेमें बहुतसी पहाडीयें और अवरलकी लाने
मौजूदहै, करीब-आठ-दसलाल रुपयोंका अवरल हरसाल यहांसे
गेरमुल्कोमें भेजाजाताहै, कस्वे-हजारीबागमें सरकारी कचहरीपुलीसटेशन-अस्पताल-और-स्कुल वडी लागतके मकान बनेहुवे

है, बाजार गुलजार और जिसचीजकी दरकारहो यहां मिलसकती है, पूरव दखनकी तर्फ फौजीछावनीमे अंग्रेजीफौज रहाकरती है, जिले हजारीवागमें करीव (७०) मील पूर्वोत्तर गिरिडी टेशनहै, तीर्थ समेतशिखरकी जियारतकरके-यात्री-मधुवनसे रवाना होवे और–इसरीटेशनसे–कलकचा जानेकेलिये रैलमे सवार होवे, और नीमियाघाट-गोमाह-मतारी-तेतुल्लमरी-धानवैद्य-प्रधानखुंता--छो-टाअंबोना–कऌवथान–मुगमा–बराकर–कुळती-सीतारामपुर–बोरा– चक-आसनसोळ-रानीगंज-पानागर-और-खानाजंकक्षन होतेहुवे वर्द्धमान देशनजाना, रैलिकिराया एकरुपया लगताहै,

👀 [तवारिख-तीर्थ-वर्द्धमान.]

कलकत्तेसें (६७) मील पश्चिमोत्तर और खानाजंकशनसे (८) मील द्खनकों जिलेका सट्रमुकाम वर्द्धमान एक-अछाश-हरहै, सन (१८९१) की मर्दुमशुमारीके वख्त वर्द्धमानकी मर्दुम-शुमारी (३४४७७) मनुष्योकी थी, वाजार रवन्नकलिये और तरहतरहकी चीजे यहां मिलती है, शहरमें जगहजगह-पानीका नल लगाहुवा-कइ तालाव-वागवगीचे-जिनमें तरहतरहकी वनास्पति और फल-फुलोके पेंड लगेहुवे है, राजमहेल-और-गुलालवाग का-बिलदेखनेकीजगहहै, चीडिय(खानेमे-यहुतेरेजानवर-शेर-हिरन-वंदर वगेरा मोजूदहै, सडके लंबीचोडी-और-मकान इंटचुनोंके खुब-सुरत वनेहुवे है, आजकल जैनश्वेतांवर श्रावकाका-घर-यहां-कोइ नही. - न - जैनश्वेतांवर मंदिर है, कल्पसूत्रमें - जहांकि-तीर्थंकर महावीर स्वामीकी अंतर्वाचनाका वयान दर्ज है. वहां छिखाहै तीर्थकर महावीरस्वामी-मोराकसंनिवेशसे यहां तशरी फलाये, और जब कायोत्सर्गकरके ध्यानसमाधिमें मज्ञगुलहुवे शुल्लपाणि यक्षने उनकों परिसहदेना थुरुकिया, हवाचलाइ-गर्जा-

रविकया और पिशाचकी शिकल दिखाकर डरानेलगा, और तरहतहकी तकलीफिदिइ, लेकिन ! तीर्थंकर महावीर अपने ध्यानमें साबीतकदमरहे, शुलपाणियक्षने समझिलयाकि--ये-अपने ध्यानसे गिरनेवालेनही, कोइबंडे महिष दिखलाइदेताहै, इनकी कदमबोसी करना चाहिये, और कियेहुवे गुन्होंकी माफी मांगनाचाहिये. अखीरमें माफी मांगी, धर्मपर एतकातलाया, और तीर्थंकर महावीरस्वामीके बदनपर फुलोंकी वारीशिकिइ, पेस्तर यहां जैनोकी आबादी और तीर्थथा, आजकल सिर्फ ! क्षेत्रस्पर्शना है, यात्री इस तीर्थकी कदमबोसी करके जियारत कामयाबहुइ समझे, वर्द्धमानसे रैलमें सवारहोकर-वंडेल-चीनसुरा-चंद्रनगर-सेरामपुर-और लीख आदेशनहोंते हवरादेशन उतरे. रैलिकराया नव आने,

👺 (तवारिख-शहर-कलकत्ता,)

इलाहाबादसे (६८४) मीलके फासलेपर गंगाकनारे मुलक वंगालका नामीशहर कलकत्ता—जो-आजकल हिंदुस्थानकी राज-धानी कहाजाताहै, वडामशहूर-और-मारुफ शहरहै, कलकत्ता वंबइके बीचका फासला (१२७८) मीलका-और-रैलकी सडक बनी हुइहै, कलकत्तेकी जगहपर पेस्तर-कालीघाट-और सुतापटी--दो-तीन-छोटेछोटेगांव आबादथे. गंगाकनारे कालीदेवीका घाट अलबते! पुरानाहै, जब अंग्रेजोकी आबादी बढनेलगी दिन-ब दिन शहरकलकत्ता तरकीपर होतागया, ज्युंज्युं आबादी बढतीगइ शह-रकी तरकी होतीगइ, बडेबडे मकानात बनतेगये, और तिजारतभी हरेकिकसमकी होनेलगी, कल-कारखाने बनतेगये, गरजिक-आ-जकल इतनातरकीपरहैकि-सुकाबिले इसके शिवाय बंबइके दिगर शहर नहीं, कभी छोटाशहर बडा-और-बडाशहर छोटा होजाता है, दुनियाका यही कारोबार हमेशांसे चला आताहै, जिसचीजकों कमाल है उसकों जवालहै, और जिसको जवाल है उसकों कमालभी है.

रवन्नक कलकत्तेकी आजकल वढीहुइहै, वडेवडे वाजार-टेली-फोन-तार-पानीकानल-बडेबडे मकानात-और-तरहतरहकी चीजे यहांपर काविल देखनेके है, कलकत्ताके वडेवडे वाजार–हरीसनरोड− बालदह--वडावाजार-चितपुररोड- धर्मतङ्घा--कालिघाट-किलेका मेदान-हाफसाहबका वाजार-वांसतछा-अफीमचैारस्ता-मुर्गीहट्टा-चीनावाजार-कोऌटोला-मङुआवाजार-अलसीवागान-वगेराव-गेरांहै,-वगी-घोडे-और-ट्रामवगेराके सववसें रास्तेमें हमेशां वडा हुजुम बनारहताहै, शहरकी सडके लंबीचोडी और उनपर रातको लालटेनोकी रौशनीहुवा करती है, सम्रुंदरके कनारे वडेवडे जहाज और-ष्टीमरे-हमेशां तयाररहती है. सन (१८९१) की-मर्दुत्रथु-मारीके वस्त-कलकत्तेकी-मर्दुमशुमारी (८१०७८६) मनुष्योंकी थी, मकान यहांके निहायत पुरुता-और-पथरके वनेहुवे-जिनकी छत उपरसे खुर्लाहुइ. दुकान दुकानपर साइनवोर्ड-और घरघर-पर नंबरलगे हुवे है, कोइश्चरूश यहां वेंकार नहीं, हरेक आदमी अपने कारोवारमें मशगूलहै, मकानका किराया इतनातेजहैकि-एकछोटी कोठरीभी सातरुपये महावारसें-कम-नही मिलसकती. बडीवडी कोठियां (२००) रुपये महावारी और वाजे (४००) रुपये महावारीतक मिलसकती है.

फोर्टविलियम-किलेका मेंदान-गवर्नमंट हाउस-बडेलाट साह-बकी कोटी-हाइकोर्ट-बंगालवेंक-पोष्टओफिस-टेलीग्राफ ओफिस –टंकशाल–कलकता युनिवरसीटी–जनानाअस्पताल–कस्टमहाउस इष्ट इंडियन रैलवे मकान-ष्टेशनरी दफतर-वडे बडे आलिशान और कींमती मकानातहै, यहांपर हरमुल्कका माल मिलसकता है, इग्लांड-अमरिका-फ्रांस-जर्मनी-रुस-चीन-जापान--आफ्रिका-इटाली-स्वीटझरलेंड-स्पेन-नोर्वे-स्वीडन-अरव-काबुल-जंजीबार-मोरसस-वगेरा मुल्कोकी वनीहुइ चीजे-यहां मीलसकतीहै, तरह-तरहकेवाजे-और-साज यहांपर कारिगिरलोग वनातेहै. जहोरी-योकी दुकाने देखो-तो-तरहतरहकी जवाहिरात नजर आती है, कपडेवालोकी दुकाने-तिजारतकी कोठीये घडीसाजोकी दुकाने जिसमें हजार हजार रुपयोकी कींमती घडी मौजूदहै, हरेककिसमके मेवे-बादाम-पिस्ते-अंग्रर-अनार वगेरा-जो-चाहो-यहां छेलो, पुरी-कचौरी-मिठाइ-वगेरा हरवरूत ताजी मिलसकती है, नाश-पाती-आम-अमरुद्-सेव-शरीफे-फालसे-वगेरा यहां हमेशां मि-ळसकते है, अलिपुरके बगीचेमें तरहतरहके जानवर-परींद-तोते चीडिया-शेर--हिरन-गेंडा-बंदरवगेरा मौजूदहै, अजायब घरमें तरहतरहकी चीजें-अमरिका-आष्ट्रेलियाके जानवर-हिंदुस्थानकी कारीगिरीके नम्रुने–सम्रंद्रके जानवरोके कल्ठेवर–आफ्रिकाके बडे बडे शेर-और-व्याघ्रके कलेवर-मसालोसे भरेहुवे रखेहै, आदमी-योंके कलेवरभी मौजूदहै जिसकों देखकर इसतरहकी नसीहतहोती हैकि-बदनका पुतला-इसतरहका बनाहुवाहै, कइमूर्त्तियें-शिलालेख देखकर पिछलाजमाना याद आता है. अजायवघरके अजुबात दे-खनेसे एकतरहकी-नसीइत मिलती है,

जैनश्वेतांवर श्रावकोके घर शहरकलत्तेमें करीब (७००) होगे, जहोरी-मारवाडी-गुजराती-सब इसमें आगये, इनमें दुकाने सा-मीलनिह किइगइ, अफीमचौरास्तेपर-एक-जैनश्वेतांवरमांदिर उमदा और वेशकीमती बनाहुवाहे, जो-कोइ-जैनश्वेतांवरयात्री कलकते-कों जाय-हवराटेशनपर उतरे, हवराटेशनसे कलकत्तेकों जातेव एत रास्तेमें गंगाका पुळ बंधाहुवाहे, गंगाकनारे देखोतो तरहतरहकी-

नार्वे-घुमरही है, और तरहतरहके झंडे फरकरहेहै, पश्चिमसे जाने-वालेकों अवल-हवराटेशन मिलताहै, टेशनपर इक्का-वगी-तयार मिलेगी, वेठकर शहरमेंजाना,-और-शामावाइकी गलीमे-जो जैन <mark>श्वेतांबर धर्मशाला वनीहुर्हे जाकर ठहरता, जोकोइ यात्री दादा-</mark> वाडीमें ठहरनाचाहे-सीघे अलसीवगान पुलते चलेजाय वहांभी ठहरनेकेलिये धर्मशाला मौजुद्दहै, बहरतें वहां ज्यादह आराम मि-लेगा, मगर शहरमें आनेजानेकी वेशक! तकलीफ रहेगी,

दादाजीके वगीचेमें छत्री-और-फदम-दादाजीके जायेनशीन है, सामने एकतालाव-और-एक-वासंद्री-निहायत उमदा बनी हुइ जहांकि-तीर्थकर धर्मनाथजीकी सवारी-कार्तिकपुनमके रौज शहरसे आती है और ठहराइजाती है, छत्रीसे पश्चिमकों धर्मशाला बनीहुइ यात्री इसमें आकर ठहरे, कोइ रोकटोक नहि. कुवा-एक मीठे जलका-और-पासमें एक वगीचा जिसमें-गुलाव-चंपा व-गेराके फुछ पेदा होते है, छबीके पश्चिमकों रायबद्रीदासजीका ब-गीचा-ओर-उन्हीका तासीर करवासाहुवा तीर्थंकर शीतलनाथजी का मंदिर वडीलागतकाहै इसकी कतेवजह और मीनाकारी काम अजबिकसमका देखोगे, इसको देखनेकेलिये हरवरूत कइलोग आते जातेहै. इसकी तारीफ तमाम कलकत्तेमें मशहरहै, कइअंग्रेज इसका फोटो उतारकर लेजातेहै, इसमंदिरमें कड़ किसमके चित्राम-और आइनेका काम-इसकदर उमदा वनाहे जिसको देखकर आदमी ताज्जुब करताहै, मंदिरकी दखनतर्फ-श्रीकल्याणसूरिजीकी छत्री-उत्तरतर्फ धर्मशालाएक-बाराटरी--तीनकमरे--चारचमन--जलके फव्वारे-सामने तालाव-ओर काटककेडपर नोवतखाना-जिसमें हमेशां-थुभह-शाम-नोत्रत बजती है, दादाजीके बगीचेसे इशान-कोनकों जहोरी–सुखळाळजीका~नामीरकरवायाहुवा मंदिर वेश

कींमती और पायदारहै, इसमें तीर्थकर महावीरस्वामीकी मूर्ति तख्तनशीनहै, तीसरामंदिर-जहोरी-कपुरचंदजीका तामीरिकया हुवा इसमें मुलनायक तीर्थकरचंदाप्रभुकी मूर्ति तख्तनशीनहै, ठीक सडकपर इस तरह बनाहुवा है कि—सडकपर खडेहुवेभी दर्शन करलो,

हरसाल कातिकसुदी पुनमकरीज अफीमचौरास्तेके मंदिरसे सवारी तीर्थकर धर्मनाथजीकी वडेजुलुससे निकलकर दादाजीके वगीचेमे रौनक-अफरोज होती है, सवारी जिसवस्त शहरसे बडे वाजारमें होकर निकसती है—डंका—निशान—धजा—पताका—वेंडवा-जा—महेंद्रधजा—चांदीसोनेके सिंहासन—छडी—चवर—छत्र—वगेरा लवाजमा शाथ निकलताहे, तीर्थकर धर्मनाथजीकी मूर्त्तिके सामने जब जहोरीलोग संगीतकलाके जाननेवाले हारमोनियम वगेरा बाजोकेशाथ तालस्वरसे गाते है. उसवस्तका जलसा काविल देखनेकेही होताहै. दुफेरके वारांवजे सवारी शहरसें निकलकर चार वजे दादाजीके बागमें जाकर दाखिलहोती है, और तीनरीज वहां कयामकरके चोथेरोज उसी जुलुसके शाथ वापिस शहरमें आती है,—यात्री—कलकतेमें कुलरीज कयाम करे और जैनमांदरोकी जियारत करे,—

🎾 (तवारिख मुल्क आसाम-और-ढाक्का,)

कलकत्तेसे अगर कोइयात्री मुल्क आसाम तर्फ जाना चाहे शौखसे जाय, मुल्कआसाम ब्रह्मपुत्रानदीकी इर्दागर्द चीनकीहदतक चलागया, उत्तरतर्फ भ्रुटान-पूरवमें वर्मा-और-सलतनत मनीपुरहै, जंगल-पहाडियां-हमेशां पानीकी बहुतायतसें मुल्कसरशब्ज और चायके-पेंड-यहां कसरतसें होते है, आसाममें जिलेकामरुपका सदरमुकाम गोहाटी एक छोटासा कस्वाहै, जो ब्रह्मपुत्रानदिके दखन कनारेपरवाके है, आवादी इसकी (१०८१७) मनुष्योंकी-ओर इसके आगे (२) मीलकेफासले कामाख्या पहाडीपर एक-कामाक्षा-देवीका मकानहै, जिलेकामरूपकी शुमालतर्फके हिस्सोंमें-हाथी--चीता-भाल-और-वडे हिरनवगेरा ज्यादह होते है,-हरजगह जंगलोंमें मोर-तोत-वगेरापरींदे द्रख्तोपर कलोले करतेरहते है, और उनकी मीठीमीठी अवाजोसे आदमीयोंकी तवीयत खुशहुवा करती है, मुल्कआसाममें ब्रह्मपुत्रा नदीके दुखनकनारे खालपाडा एक छोटाकस्वाहे, लखीमपुर-डिब्रुगह-तेजपुर वगेरा औरभी कस्वे इसमें आवादहे, तेजपुरसे डिब्रुगहतक रास्तेमें वहुतसेचायके बाग फैलेहुवे है,

सुवेवंगालमें नारायणगंजसे (१०) मील पश्चिमोत्तर जिलेका सदरप्रकाम-हाका-एक अला शहरहें, सन (१८९१) की मर्दुमथु-मारीकेव एक हाके की मर्दुमथुमारी (८२३२१) मनुष्यों कीथी, मल-मल हाक के की हरे कमुलक में मशहूर साने चांदीका काम यहां का ला-इकतारी फके-और-कसी देका काम-दोरिया जामदानी यहां उमदाव-नाइजाती हें, वंगाल में तोरसानदी के नजदीक कुच विहार एक अला शहरहें, आवादी इसकी सन (१८९१) की मर्दुमथुमारीके वस्त (१४४९१) मनुष्यों कीथी, एक सडक रंगपुरसे-कुच विहारहों कर जलपाइगोडीकों गईहें, सुवे वंगाल के राजशाही विभागमें सिलीगोडी-देशनसे (५१) पश्चिमोत्तर दार्जिलेंग एक-ख शनुमाशहर और रेलका देशनहें, सिलीगोडीटेशनसे दार्जिलेंग-हिमालयकी छोटी-लाइन-पहाडके एक छोटे शिखरकी अतराफ धुमती हुइगई हें, भोटीया-तिब्बती-नयपाली-काबुलो कश्मीरी-पहाडी--और--हिंदु-स्थानी छोग यहां वसते हें, बाजार गुलजार-और-इतवार केराज

लोगोका हुजुम बहुत रहताहै, चायकी पैदाश—ज्यादह—पहाडियोमें कइगुफा—और उंची उंची पहाडीयोमें तेंदुए-भालु-और—बंडे हिरनभी रहाकरते है, आवहवा यहांकी उमदा और गमींकेदिनोमें शरीफलोग यहां आनकर सकुनत इिल्तयार करते है, मुल्कआसाममें—ढाकेमें—दार्जिलिंगमें-—और-—कुचिवहारमें—जैनोंकी आवादीभी है, मगर थोडी, कलकत्तेसे अगर कोइ यात्री रंगुन जानाचाहे ष्टीमरमें जा-सकते है, किराया थर्डकलास पासेंजरका रुपये (१०) लगते है, रंगुनमें जैनश्वेतांवर आवकोकी आवादी और मंदिर बनाहुवा है, चावलकी पैदाश ज्यादह—और तिजारतकी जगहहै.

कलकत्तेसं यात्री इष्टरन बंगाल स्टेटरेलमं सवारहोकर—स्या-लदा—इमडम—बेलगुरिया—अगरपारा—सोदेपुर—खरडाहा तीताघर— बराकपुर—पालता—इलापुर—सामनगर--कनकीनरा--नयहाटी —हाली शहर—कंच्रपारा—मदनपुर—सीम्रराली—चकदा—प्याराडंग—रानाघाट— बीरनगर—बदकुला—कृष्ननगर—धुबुलिया—मुरागचा-—बेधुआधरी— डेबाग्राम—प्लासी—राजीनगर—बेलदंगा—भापता—सेरागची—बरहाम-पुर—और कासिम बजार टेशन होते—मुर्शिदाबाद उतरे, रैलिकराया एकरुपया पोनेदसआने लगते है,—

🕼 [तवारिख-शहर-मूर्शिदाबाद,-]

मुल्क बंगालमे-मुशिदाबाद एक उमदा शहरहै, सन (१८९१) की मर्दुमशुमारीमें मुशिदाबादकी मर्दुमशुमारी (३५५७६) मनुष्यों-कीथी, मुशिदाबाद पेस्तर बडाशहरथा, मकान बडेआलिशान रंग-दार और खुबसुरत बनेहुवे, निझामतकालेज बडीलागतका मकान-और-मोतीझील-एक-काबिल देखनेकी जगहहै, रेशमीकपडे-रुमाल

कारचोवीका काम-और-हाथीदांतका काम यहां अछा वनताहै, महल नवावसाहबका वेंशकींमती और खुशनुमा बनाहुवा निहायत संगीनहै, दरमियान अजिमगंज और मुर्जिदाबादके गंगानदी बहती है और बजरीये नावके पार जानाआना होताहे जैनश्वेतांबर श्राव-कोंके घर करीव (१५०) और-मंदिर-अजीमगंजमें (७) राम बागमें (२) कुछ नवहुवे. वाछचरमे मंदिर (४) कीर्तिबागमें (१) महिमापुरमें (१) कटगोलेमं (१) और-कासीम वाजा-रमेभी (१) बना हुबाँहै, उपाश्रय अजीमगंजमे (६) और-बाळुचरमें (४) है, टहरनेकेळिये अजीमगंजमे करीव टेशनके धर्म-शाला वनीहुइहै, यात्री उसमे कयाम करे, और जैनमंदिरोंकी जि-यारतकरे,-रवानगीके वख्त अजीमगंज-टेशनसे-रैलमें सवारहोकर बराला–सागरडीघी–वोखरा--लोहापुर–ताकीपुर -नलहटी–रामपुर-हाट-मोलारपुर-संथिया-कोरी-सूरि-चींपाइ-इवराज-पंचरा-पां-डवेश्वर-उखारा-ओंडल-रानीगंज-और-काली पहाडी होते आस-नसोल्रजंकशन आना. रैल्रिकराया एकरुपया-सातआने,-सुवे वं-गालके-जिले वर्द्धमानमें आसनसोल एक गुलजार वस्ती है, बाजा-रमें हरेकिकसमकी चीजे मिलसकेगी,-इंझीनका वडा कारखाना और अतराफ आसनसोलके कोयलेकी खानेभी मौजुद्दे,

[⊯] पिसह तीर्थंकर महावीरस्वामीके,

संवत (१७५०) की सालभे जैनश्वेतांवरमुनि सौभाग्यविजय जीने-जो-तीर्थोंकी सफर करके तीर्थमालानामकी पुस्तक बनाइ है उसमे यहालिखाहैकि हमने-तीर्थ भटीलपुरकी जियारत किइ और पुनायागांव गये, जहांकि-तीर्थकर महावीरस्वामीके कटमोकी छत्री वनीहुइथी और उसमे उनके कटम तख्तनशीनथे, तीर्थकर महावीर स्वामीके कानोमेसं कीले खरकनामके हकीमने यहांपर निकालेथे, जोलोग कहतेहै-यह-माजरा-करीब तीर्थ बंभणवाड ग्रुट्क मारबा-ढमें-गुजराथा यहबात विल्कुल गलतहै, तीर्थकर महावीर स्वामीने अपनी छदमस्थ हालतमें ग्रुट्क मारवाड तर्फ सफर कभी नहींकिइ.

🕼 (पाठ कल्पसूत्रमें सबुत इसका इस तरह लिखाहै,)

ततःषणमानिग्रामे स्वामिनः बहिः प्रतिमास्थस्य पार्श्वें गोपो वृषान् मुक्तवा ग्रामंत्रविष्टः आगतश्च पृछति देवार्य ! कगता वृषभाः भगवताच मौनेकृते रुष्टेनतेन स्वामिकणयोः कटिशालाके तथाक्षिप्ते यथापरस्परलग्नाग्रे—अग्र छेद्नाच अह्ह्याग्रेजाते,—एतचकर्म श्रव्यापालकस्य कर्णयो स्त्रप्रप्रक्षेपेण त्रिष्टष्टभवेउपार्जितं अभृत्—उदितंच वीरभवे, श्रव्यापालको भवंश्रांत्वा अयमेव गोपःसंजातः—ततः प्रभुर्मध्यमा पापार्यागतः तत्र प्रभुं सिद्धार्थवणिग्गेहे भिक्षार्थं आगतंनिरिक्ष्य खरक वैद्यः स्वामिनः सश्चल्यं ज्ञातवान् पश्चात्—स-वणिक् तेन वैद्येन सहोद्यानं गत्वा संडासकाभ्यां ते—शिलाके निर्गमितिस्म, तदाकर्षणेन वीरेण आराटिस्त्रिम्ता यथा सकलमपि उद्यानं महाभैरवं बभूव, तत्रदेवकुलमपि कारितं लोकैः प्रभुश्च संरोहिण्या औषिध्या निरोगो-वभूव,-वैद्यवणिजौ स्वर्गं जग्मतु—गोपः सप्तमंनरकं,

जब तीर्थंकर महावीरस्वामी षणमानी गांवके नजदीक ध्यान-करतेथे एक गोवालिया वहांआया, और कहनेलगािक-इनवेंलोके निगाहवान आपरिहये, में-एक-जरुरी कामके लिये गांवमें जाताहुं तीर्थंकर महावीरस्वामी अपने ध्यानमें मञ्चगुळथे उनोने उसकाकुल जवाब-नही-दिया. और गोवालिया अपने वेंळोको इनके पास लोडकर चलागया, बादजब चंदअर्सेके वापिस आया और देखातो वेंलोकों-न-पाया. क्योंकि-वे-जंगलकों चलेगयेथे, तीर्थेकर महा-वीरसे दर्यापत करने लगाकि-मेंने-बेंलोकों आपके नेरेजिम्मा कि-याया-कहांगये ? तीर्थकर महावीरने उसवस्तमी कुछजवाव नही-दिया, तब उसने गुस्साखाकर छकडेकी-ट्रा-मेखे--उनकेकानमें छगादिइ. तीर्थंकर महाबीर स्वामीके जीवने-जो-त्रिपृष्टवासुदेवके जन्ममें शय्यापालके कानोमें गर्म कशीर इलवादियाथा-वह-कर्म इनजन्ममें उनके पेश्रआया, गोंवाछिया बेंळोकी तळाश्र करताहुवा अपने बतनको गया. और तीर्थंकर महावीर स्वामी वहांसे रवाना होकर मध्यम अपापानगरीकों गये, वहां एक-सिद्धार्धनामके-साहु-कारका घरथा उसकेघर जबिसक्षाको जातेबे एक-खरकनामके-इकीमने देखाकि-इनके कानोमें कुछ तकलीक्सी माल्म देती है, जब खुवगोरसे देखातो माङ्महुवा किसीने इनके कानोमं-मेखे-सगादिइहै, हकीम-खरक-और-साहुकार सिद्धार्थने सलाह किइकि किसीस्ररत मेखे उनके कानोंसे निकालदेना चाहिये, तीर्थकर महा-बीरस्वामी भिक्षालेकर जब जंगलकीतर्फ स्वानाहुवे-इकीम और साहुकार चंदनोकरोको अपने इमरालेकर उनके पीछे गये,-और मेखे निकालनेकी तजनीज किइ, वडी कोशिशकेसाथ संडासीयोसे-खींचकर मेखे वहार निकाछी,-उसवस्त तीर्थकर महाबीर स्वामी-कों अजहद तकलीफ हुइ. इकीम खरकने उद्यीवस्त संरोहिणी जढीका लेपलगाकर जखमकों चंगाकरदिया. इस उमहाकार स्वाइ सें हकीम और साहुकारने वहिस्त पाइ, और गोवालियेने अपने कियेकी सजा दोजक पाया, उसवस्तरंन-यह-जगह तीर्थगाहवनी और मंदिर बनायागया, तीर्थमालाके बनानेवाले महाराज सौभा-ग्यविजयजी फरमाते हैं जबिक-हमने-जियारतिक इथी तीर्थिकर महा-बीरस्वामीके कदमोकी छत्री यहांपर कायमधी, और बुनायगांवसे राजग्रही नगरी (११) कोशके फासलेपर वाकेयी, आजकल वह

कदम-और-छत्री जेरेजमीन होगइ, कदमभी नहीरहे और तीर्थ विछेद होगगा, ए! नाजरीन " एसीजगहपर तीर्थकी तरकी जानोमालसे करनाचाहिये, चुनाचे बाजेलोगोने बडेबडे तीर्थीमें रुपया खर्चकर बढेआलिशान मंदिर बनवाये मगर ऐसे तीर्थीमें तरकी करना लाय क तारीफके है,

तीर्थिकर महावीर स्वामीके पांवकों जिसजगह चंडकोसिया-सांप-इसाथा-यह-माजराभी मुल्क पुरवमें हुवाथा, जोलोग कहते मुल्क मारवाडमें करीब नादिया गांवके यह माजरा गुजराथा बि-ब्कुल गलत है, बल्कि! कनखल कस्बेके पास तीर्थकर महावीर स्वामीके पांवकों चंडकौशिये सांपने काटाथा, कल्पसूत्रमें पाटहैकि-

ि कनकखलतापसा असे चंडको शिक प्रतिवोधाय गतः "
-सचप्रभं हृष्टा हृष्टा हृष्टिज्वालां सुमोच-मुक्तवाच मापतन्न वं-मां-आकामतु इत्यपसरित ततोभृशं कुद्धो भगवंतं दृदंश,

तीर्थंकर महावीरस्वामी सफर करते हुवे जब खेतांबी नगरी
तर्फ जातेथे छोगोने कहा आप इधर तशरीफ-न-छेजाइये, उधर
एक वडा जहरीछा सांप रहता है, ग्रुआदा असा-न-होकि-आपकों
हस जाय, तीर्थंकर महावीर स्वामीने इसवातका कुछ खयाछ नहीं
किया और उसी तर्फकी राह छिइ, जहां उससांपका हुद्था, उसजगह
जाकर कयाम किया और ध्यान करने छगे, इस असनामें सांप
आपने हुद्से बहार निकछ आया और देखाकि-कोइ महात्मा खंडहै,
ग्रुस्सा होकर उनकी तर्फ आया, उसके दिछमें यहभी खयाछ आया
रहताथा-कहीं-ये-महात्मा ग्रुजपर-न-गिर पडे, जिससे-में-दब
जाउ, इसवजहसे कुछ पीछेभी हठता जाताथा, तीर्थंकरमहाबीर अपने ध्यानमें निहायत साबीत कदमथे, सांपने आखीरकार नजदीक

आनकर उनके पांवकों दसा, मगर उनके बदनमें जहर नही चढा, बल्कि ! उनोने सांपकों हिदायतिक इकि –हें ! चंदकोसिया सांप ! जब-तुं-पीछले जन्म साधुकी हालतमे था तेने बहुत क्रोध कियाथा अव-तुं-सांप बन(है, अब तेरी गुस्सेकी हालत दरगुजर कर और धर्मपर निगाह बांध, इसवातकों सुनकर चंडकोसिये सांपने अपना होश संभाला, और उसकों जातिस्मर्गज्ञान हासिल हुवा, यह-मा-जराभी–मुल्कपूरवर्षे गुजराथा, मारवाडमें नही, कनखळनामका कस्वा इसवस्त हरिद्वारसे (३) मीलके फासलेपर गंगाके दाहनेक-नारे आवाद है, आजकल वहां इसबातका-कोइ निशान बाकी नही रहा.

पूरवके तीर्थोका वयान खतमहुवा-इसमुल्कमें पानीकी वहुता-यत रहनेकी वजहसे-अनाजकी फलछे अछी होती है, खानपान बोलचाल और पुशाक उमदा-तीर्थकरोकी निर्वाणभूमिहोनेसे पेस्तर यहां जैनधर्मकी वडी तरकीथी, वडेवडे जैनश्वेतांवर मंदिर-मूर्जे-और-जैनमजहबकी कितावे यहांपर मौजुद्थी, चक्रवतींराजे जिनके पास बेंग्रमार दौलत-और-जवाहिरातथा यहांहुवे, धन्ना-शाबिभद्र और जंबुस्वामी जैसे धर्मपावंद शख्श इसी मुल्कके वाशिंदेथे; आ-नंद-कामदेव-वगेरा व्रतधारी श्रावक इसी म्रुल्कमें पैदाहुवे. तीर्थक-रोंकी निरवाण भूमिहोनेसे जैन तीर्थभी इस मुल्कमें ज्यादह है,-

🗱 🛘 बयाम-शहर-बिलासपुर, 🕽

आसनसोळसे रैळमें सवार होकर-दामोदर-ग्रुरुळिया-ग्रुराडी -रामक्रनली-खजुरा-चीनपीना-आडरा-अनारा--क्रुस्टार-पुरुलि-या-कंटाडीह-बारभोम-नीमडीह-चांडिल-कांडरा-श्रसीनीजंकज्ञन-अमदा-वारावंवो-चक्रधरपुर, रैलकिराया आसन सोलसे चक्रधर-

यहांसे एक रैछवेलाइन खडगपुर होकर कळकत्तेकों गड़ है,

पुरतक एक रूपया छआने लगते हैं, चक्रधरपुरसे-लोटापहाड-सो-तुआ-गोइलकेरा-पोसोइटा-मनहरपुर-जरायकेला-विसरा-रोवर-केला-पनपोश-कालुंगा-राजगंगपुर-सोनखां-गारपोश-वामरा-धरुआडीही-बागडेही-धृतरा-झाड सोगरा-चक्रधरपुरसे झाडसोगरेतक रैल किराया एक रूपया पोनेपांच आने-लगेगे, झाडसोगरासे-बेलप-हाड-कानीका-जमगा-रायगढ-नाहारपाली-खरसिया-शक्ति-बा-राडोर-चंपा-नेला-अकलतरा--और—पाराघाट होते बिलासपुर जाना, झाडसोगरासे यहांतक रैल किराया एक रूपया सवापांच आने लगते हैं,

आसनसोलसे (३११) मील पश्चिम दखन तर्फ जिलेका सदर मुकाम बिलासपुर एक-रैलवेका जंकशन है, सन (१८९१) की मर्दुमथु-मारीके वख्त बिलासपुरकी मर्दुमथुमारी (१११२२) मनुष्यों कीथी, बिलासपुरसें (१९८) मीलकी रैलवे लाइन पहाडी जिले और उमरि-याके कोयलेके मेंदान होकर कटनी जंकशनकों गइहै. बिलासपुरसे (६३) मील उत्तरकी तर्फ पेंड्रारोड-और-पेंड्रारोडसे (१३५) मील पश्चिमोत्तर रुखपर कटनी है,-पेंड्रारोडसे (७) मीलपर अमरकंटकके शिखरोका सिलसिला जहांसे नर्मदा नदी निकलीथी मौजूद है. जिले बिलासपुरके पूरव पश्चिम-और-उत्तरकी तर्फ पहाडी और बहुतेरे जंगलहै, अनाज-अख-और-रुइकी पैदाश यहां अछी होती है,-बिलासपुरसे रैलमें सनार होकर-बिल्हा-निपानिया-भाटपाडा-ह-टबंध-तीलदा सिलियारी-मंडर-होते-रायपुरजंकशन आना, बिलासपुरसे रायपुरतक रैलकिराया सवाग्यारह आने लगेगे यात्रीकों अगर रायपुरमें जाना मंजूर हो-शौखसे जाय, वरना! आगेकों बढ़े,

🚱 (वयान-शहर-रायपुर,)

बिलासपुरसे (६८) मील-पश्चिमद्खन-मध्यशदेशके लत्तीस-गढ विभागमे जिलेका सद्रमुकाम-रायपुर-एक रैलवेका टेशनहै, टेशनसे करीव (१) मीलके फासलेपर आबादी शुरुहोगी, एक-स-डक-नागपुरसे रायपुर-संभलपुर-और मेदनीपुरहोकर कलकत्तेकों गइहै. सन (१८९१) की मर्दुमधुमारीकेवरूत-रायपुरकी मर्दुमधु-मारी मयफौजी छावनीके (२३७५९) सहुष्योंकीथी. जैनश्वेतांवर श्रावकोंकी आवादी और मंदिर यहांपर वनाहुवा है, गोळचोकसे दख-नकी तर्फ (२) मीललंबी पकी-सडक-जिसके बगलोमें मकान-और कपडे-वर्तन वगेराकी दुकाने मौजुदहै-पानीकानल हरजगह लगाहुवा और वढी सडकोंपर लालटेनोंकी रौशनी हुवा करती है. दिवानी फौजदारी कचहरियां-और-अस्पताल वगेरा यहांपर अछे मकानात है. और जिले रायपुरकी वडी वडी फिसले अनाजकी है, रायपुरसे रैलमे सवार होकर-कुंभहरी-भिलाय-इघ-मुरीपुर-होते राजनांद्गांव आना. अगर मरजी होतो शहरमेजाना और देखना, न-जाना होतो आगेको रवाना होना, रायपुरसें (४२) मीछ पश्चिम तर्फ राजनांदगाव-एक-रेलवे टेशन है. सन (१८९१) की मर्दुमथुमारीके वरूत राजनांदगांवकी मर्दुमथुमारी (८८५०) मतुष्योकीथी,-जैनश्वेतांवर श्रावकोंकी आवादी और मंदिरभी यहांपर मौजूद है. दरमियान शहर-और-टेशनके सडक वनी हुइ है, राजमहल--कचहरियां--और-स्कुल--वगेरा मकानात कींमती वने हुवे है, राजनांदगांवसं रैलपें सवार होकर-मुसरा-**–डोंगरगढ–बोर**तालावः–दुरेकासाः–सलेकासा–आमगांव-गुडमा– गोंदिया-गंगाझीरी-तीरोरा-तुमसररोड-कोका-भंडारारोड-खट--थरसा–और–सलवा होते कामठी जाना. अगर कामठी देखनेका

इरादा हो-तो-वहां उतरना, वरना ! आगेको बढना, सन (१८९१) की मर्दुमश्रमारीके वख्त कामठीकी मर्दुमश्रमारी मयफीजी छावनीके (४३१५९) मनुष्योंकीथी, जैनश्वेतांवर श्रावकोकी आबादी और मंदिर यहां मौजूद है, सडके लंबी चोडी-बाजार उमदा-और-जो-चीज दरकारहो वखूबी मिलसकती है, कामठीसें रैलमें सवार हो-कर-मेंदीबाग-होते नागपुर टेशन उतरना, रायपुरसे नागपुरतक रैल किराया एक रुपया पनराआने लगते है,-

👺 [दरबयान-शहर-नागपुर,-]

अर्ट्धीमें हिंदमें मध्यपदेशका सिरोताज नागपुर-एक उमदा शहरहै. करीव इसके नागनामकी एकनदी वहती है जिसकी वजहसे शहरका नाम-नागपुर-कहलाया, सन (१८९१) की मर्दुमथु-मारीके वरूत नागपुरकी मर्दुमश्रमारी मय फौजी छावनीके (११-७०१४) मनुष्योंकीथी, इतवार पेटमें जैनश्वेतांवर श्रावकोंकी आवादी और मंदिर वनेहुवे हैं, करीव टेशनके धर्मशालाभी तामीरहै यात्री उसमें कयामकरे, और शहरमें जाकर मंदिरोकी जियारतकरे, वाजार लंबाचोडे-और-हरिकसमकी चीजे यहांपर मिलसकेगी, पानीका नल-हरजगह-जारी, और रातकों सडकोंपर लालटे**नोकी** रौशनी हुवाकरती है, इका-वर्गा-हरजगह तयारमिळेगी, वागवगी-चोमें महाराजवाग एक काविल देखनेके है, जिसमें कइत रहके जानवर चुनाचे-वाघ-भाछ-वंदर-हिरन-और-कइ किसमके परीं देभी रखेद्वुवे है, कचहरियां−स्कुल−और−कइ कल कारखाने यहां मौजूदहै, नागपुरकी-नरंगी निहायत मीठी-रंगदार-खुशानुमा होती है और कइम्रुक्कोमें भेजी जाती है. अनाज और कपडेकी सो-दागिरी ज्यादह-नागपुरी धोतीजोडे मुल्कोंमें मशहूरहै. नागपुरसे एक-पेट्लसडक-जबलपुरकों और एक संभलपुर मेदनीपुर होतीहुइ

मकी रुखपरभी पहाडोका सिल्लिसला जारी है, एक सिल्लिसला उत्तरसे द्खनकों भी चल्लगया, ये-तीनो-सिल्लिले सतपुढे पहाडके हिस्से कहलाते है, यात्री नागपुरके जैनमंदिरोकी जियारत करके आगेको रैलमें सवारहोकर--खपरी--बोरी-बोरखेडी--सिंदी--तुल्जापुर-और-पौनार देशन होते-बरधा देशन जाय, नागपुरसे (४९) मील पश्चिम मील द्खनकी रुखपर जिलेका सद्रमुकाम वरधा एक छोटासा कस्बा है, इसकी आबादी अंदाज (६) हजार मनुष्योंकी होगी, रुइकी तिजारत यहां कसरतसे हुवाकरती है, कस्बेकी पूर्वरुखपर सरकारी-कचहरियां-और-पब्लिकवाग बनाहुवा है, जैनखेतांवर आवकोंकी आबादी और मंदिरभी यहांपर तामीरहे, यात्री दर्शनकरे, वरधेसें रैलमें सवारहोकर-दहेगांव-पुल्लगांव-तालनी-धामनगांव-दिपोर-चांद्र-मालखेड-और-अंजनगांवहोते बढनेरा जंकशन जाय,

७८३ (दरबयान−शहर–उमरावती)

बहनेरासे उत्तरतर्फ (६) मीलके फासकेपर-जो-एक रैलबे लाइन गइहै उसजगह शहर उमरावती वाके है, सन (१८९१) की मर्दुमशुमारीके वच्न उमरावतीकी मर्दुमशुमारी मय फौजीळावनीके (३३६५६) मनुष्योंकीथी, जैनलेतांबर श्रावकोकी आवादी और मंदीर यहांपर बना हुवा है. यात्री शहरमें जाकर दर्शनकरे, उमरावती एक-पुराना शहर है, और इसके दो-हिस्से-मशहूरहै, एक कस्बा-दुसरा पेंठ-बाजार गुलजार और जिसचीजकी दरकारहो यहांमिलसकेगी, रुइकी तिजारत यहां ज्यादह होती है. अतराफ शहरके मजबूत पथरोकी दिवारवनी हुइ-जिसमें-(५) फाटक-और (४) खीडकीयें लगीहुइहै.-यात्री-उमरावतीसे वापिस वड-नेरा जंकशनआवे, और बडनेरासे-तकली-कुरम-मान-मृर्तिजा-

पुर-कोटेपुरना--बोरगांव--और--यावलखंड टेशनहोते आकोला टेशन उतरे,-नागपुरसे आकोछेतक रैलकिराया दोरूपये सातआने लगते है.-

🚱 (बयान आकोला-और-बालापुर,)

मुल्केवराडमें जिलेका सदरमुकाम आकोला एक रैलवेका टेश-नहै, सन (१८९१) की मर्दुमधुमारीके वरूत आकोलेकी मर्दुमधु-मारो (२१४७०) मनुष्योंकीथी. दरमियान शहर और पेंडके मोर-ना नामकी एकनदी वहती है. और उसपर जाने आने के छिये पुछ बंधाहुवाहै, बाजारमें हरिकसमकी चीजे मिलसकेगी. हफतेमें एक द्के बाजारमी भराकरताहै. जैनश्वेतांबर श्रावकोंकी आबादी और मंदिर ताजना पेंडमें मीजुर्है, यात्री वहांजाकर मंदिरकी जियारत करे, सरकारी कचहरियां टाउनहोल-और-खेराती अस्पताल वगेरा मकानात वनेहुवेहै, आकोलेसे तीर्थ अंतरिक्षजी जानेवाले यात्री बजरीये वेलगाडीके जासकतेहैं, जो करीव (२२) कोसके फास-लेपर वाकेहै, रास्तेमें सडकपकी वनीहुइ पांच रौजेमें तीर्थकी जिया . रतकरके वापिस आसकोगे.-

अगर कोइ यात्री आकोलेसे आगे-डाबकीटेशन होते-पारस देशन उतरकर बालापुरसे तीर्थ अंतरिक्षजीको जाना चाहे-तोभी-जासकते है, पारस टेशनसे करीव (३) कोशके फासलेपर बालापुर एकपुराना शहरहे, दरमियान-पारस-और-बालापुरके पकी सडक बनी हुइ-और-दो-नदीये रास्तेमें आती है, सन (१८९१) की म-र्दुमधुमारीके वरुत-बालापुरकी मर्दुमधुपारी (१०२५०) मनुष्यों-जीथी, तिजारत रुख़ी यहां अछी होती है, और **शनिवारके रौज** बाजारभी जमा होता है, हरिकसमकी चीजें उसरौज मिल सकेगी.

गालिचे-शतरंज-और-पघडी यहां अछी बनाइ जाती है, टेलीग्राफ औफिस-स्कुल-अस्पताल और पोस्टओंफिसभी यहां मौजूद है, जैनश्वेतांवर श्रावकोंके घर अंदाजन (७५)-और-(२) जैनश्वेतांवर मंदिर जिसमे एक मंदिर-जो-तपगल्लवालोंकी तर्फसें नयातामीर किया गया है काबिल देखनेके हैं, मुतिस्सल उसके तपगल्लवालोंकी धर्मशालाभी वनी हुइ है, जहांकि-आये गये यात्री और मुनिलोग ठहरा करते है, बालापुरसे तीर्थ अंतिरक्षजी करीव (१८) कोसके फासलेपरवाके हैं, जैसे आकोलेसे पकी सडक गइ है वालापुरसेभी उसीतरह गइ है, जोकि-नजदीक करने पातुरके जाकर मिल जाती है, यात्रीको मरजी हो बालापुरके रास्ते तीर्थ अंतिरक्षजी नाय-या आकोलेसे-इंग्लियारपर मौकुफ हैं,-जितना खर्ची-आकोलेसे परेडेगा बालापुरसेभी उतनाही पडेगा.

👺 (तवारिख-तीर्थ-अंतरिक्षजी,)

मुल्कवराडमें आकोला टेशनसे (२२) कोसके फासलेपर कस्वे श्रीपुरमें-अंतरिक्षजी-एक पुराना जैन तीर्थ है, आकोलेसे-इका-बेलगाडी वगेरा सवारी मिलसकती है, तवारिख इसतीर्थकी इसतरह बयान किइजाती हैिक-एकवरूत लंकाके रहनेवाले-दो-विद्याध र-माली-सुमालीनामके लंकासे उत्तराखंड जानेकेलिये रवानाहुवे, विद्याधरलोग वजरीये विमानोंके सफरिकयाकरतेथे, यह बात पेस्त रके धर्मशास्त्रोमें लिखीहुइहै, जब उनके खाना खानेका वरूत करीव आपहुचा सौचािक-जमीपर उतरकर- स्नानकरे और खानाखावे. गरजिक-वे-जमीनपर उतरे जहांिक-एक-तालाव मौजुद्धा, माली सुमाली-हाथमुंह धोकर साफहुवे और अपनी देवपूजाकेलिये तजनवीजिकइ-तो-माल्महुवा अपने देवकी मूर्त्विका करंिडया घर मुल आये है, और यहांकोइ जिनमंदिरभी मौजुदनहीं जिसके दर्शनकरे,

उसवस्त वहां उनोने वाछरेत इकटी करके मंत्रवलसे पाकिक और भावितीर्थिकर पार्श्वनाथ महाराजकी एक मूर्त्ति वनाइ, और उसकी पूजाकरके खानाखाया, चलतेवख्त उस मृर्त्तिको तालावके कनारे जायेनशीनिक और अगाडी वढे, बहुतअर्सेतक वह मूर्त्ति वडांपर कायमरही, जब विंगलनगरका-श्रीपालनामका राजा-किसीमोके-पर-वहांआया, और उसके बदनमें-नो-कोदकी वीमारीथी उसता-लावमें स्नानकरनेसे रकाहुइ निहायत खुशहुवाः और जब-अपने बतनकों गया रानीभी उसकी वहुत खुशहुइ, और तारीफ करने लगीकि-क्याही ! उमदावातहुइ आपकी कोढबीमारी एकदम चली-गइ, बाद अब खापीइकर सोगये अधिष्टायक देवने रानीके ख्वाबमें आनकरक 🕧 तुमारे खाविंदकी वीमारी वदौलत उसमूर्त्तिके रफाहुइ है, उसमूर्त्तिकों अपने बतनपर छाना चाहोतो एक रथ बनाकर उसको सातरीजके बेंललगाना और कचे स्रुतकी लगाम तयार क-रके-उस पूर्तिकों रथमें वेटाना, ओर अपने वतनकों ळाना मगर यादरहे रास्तेमें कभी पीछामुडकर देखनानही, अगर देखोगेतो मूर्ति वहीं ठहर जायगी और फिर उसका आना-न-होसकेगा, शुभह होते रानीने यह सब माजरा राजासे कह सुनाया ओर राजाने उ-सी मुआिक किया, (यानी) मूर्त्तिकों रथमें बेटाकर लेचले, जब थोडीद्रपहुचे राजाने ग्रुहफेरकर देखातो मूर्त्ति रथसे अलग आस्मानमें विना आधार आसरेके टहरीहुइ देखी, उसवख्त वडाता-**ज्जुबिकया और दिलमें सौचाकि−इसी जगह−मू**र्त्तिकों कायम करना मुनासिबंहे, आस्पानको संस्कृत जवानमें अंतरिक्ष कहते है इसास्त्रये बिना आसरेके टहरने वाली मूर्त्तिकों लोगोने अंतरिक्षनामसे मशहू-रिकड़, राजाने वहांपर शहरआवाद किया और उसकानाम-श्रीपुर-रखा, बडाखुबसुरत मंदिर बनाकर द्वर्तिको उसमे तख्तनशीनिकइ.

उसरोजसे इसकानाम-अंतिरक्षपार्श्वनाथतीर्थं कहळाया-जो-अवतक जारी है, पेस्तरके जमानेमें क्षित्तियोमें असे अजुवात होतेथे-जो-आ-जकळ नहीरहे, विल्कि! बहुतकम होगये, क्योंकि-अव-वह-जमाना नहीरहा जो पेस्तरथा,

तीर्थोमं यह कदीमीरवाज होताचला आयाकि—एक—मंदिर पुराना होकर गिरगया किसी खुशनशीवने उसजगह दुसरा वनवाकर तया-रिक्रया, इसी तरहसे तीर्थका नामबनारहताह, अगर असा—न—कियाजायतो तीर्थका नामनिशानतक वाकी—न—रहे, मंदिर अंतरिक्षजी-का—जो—इसवस्त मोजुद्दे निहायत पुस्ता और वेंशिकमती है. तीर्थकर अंतरिक्षपार्थनाथकी शामरंगपूर्त्त तलवरमें मयकणके करीव अहाइ हाथवडी तस्तनशीनहे, तीर्थकतिरक्षजीका कारखाना—मुनीम गुमास्ते—नोकरचाकर—सब मोजुद्दे, जेसा रवाव वहेवहे तीर्थोमें होताहे यहांपर वनाहुवाहे, श्रीपुरकस्वा करीव पांचहजार आदमीयोकी आबादीका इसवस्त मोजुद्दे पेस्तर वहाथा, धर्मशाला—हो—एकवडी और एक छोटी यात्री इसमें कयामकरे, कोइतकलीफ—न—होगी. पुराना मंदिर जो गांवके वहार पश्चिमकी तर्फ वाकेहे, वहकाबील देखनेकहे यात्री तीर्थकतिरक्षजीकी जियारतकरके वापिस उसीरास्त आकौला आवे.

👀 [बयान-भुसावल-बुहानपुर-ओर-खंडवा,-]

आकौला देशनसे रेलमें सवार होकर-डावकी-गंगांव-पारस-नागझीरी-सेगांव-जेलम-नांदुरा-विसवा-मल्कापुर-लांमखेड-वौ-दवड-और-वारंगाम होते भुसावल जंकशन उतरना, रलकिराया आकौलेसे भुसावल तक एकस्पया ल आने लगतह. अगर शहरमें जाना मंजुरहो शांखसे जाय, वरना ! आगेको रवाना होवे, नाग- पुरसे (२४४) मील पश्चिमकी रुखपर भुसावल रैलवेका एक जंक-शन है, सन (१८९१) की मर्दुम अमारीके वस्त भुसावलकी मर्दु-मथुमारी (१३१६९) मनुष्योंकीथी, भुतिस्तल टेशनके एक धर्मशा-ला बनी हुई है यात्री उसमें जाकर टहरे, कोई भुमानियत नही, बाजार भुसावलका अला है और हरेकिकसमकी चीजे यहां मिल सकती है, भुसावलसे (२७६) मील दखन पश्चिमकी तर्फ बंबई-और न(३४०) मील पूर्वोत्तर जबलपुर है, भुसावल टेशन बडा है और कइ-कल-कारखाने यहांपर बने हुवे है,-

भ्रुसावलसे रैलमें सवार_होकर−दसखेडा−सावदा–नींभोरा− रावेर-और-वाघोडा होते हुवे बुईनिपुर टेशन जाना, रैलिकराया नवआने लगते है, देशनसे (३) मीलके फासलेपर बुईानपुर-एक-पुरानाशहर है, सडक पकी बनी हुइ और जाने आनेके लिये सवा-री टेशनपर तयार मिलती है, यात्रीकी मरजी हो शहरमें जाय और जैन मंदिरोकी जियारत करे, सन (१८९१) की मर्दुमथुमारीके वरुत बुर्हानपुरकी मर्दुमशुमारी (३२२५२) मनुष्योकीथी. बाजार यहांका उमदा-और-हरेक किसमकी चीजें यहां मिलसकती है, बुर्हीनपुरसे रैलमें सवार होकर-चुलखान-चांदनी-मांडवा-डों-गरगांव-और-वागमारटेशन होते खंडवा जंकशनपर उतरना, बु-हीनपुरसें खंडवेतकका रैलकिराया दशआने लगते है, मध्य प्रदेशमें -खंडवा-एकपुराना शहर है, सन (१८९१) की मर्दुमशुमारीमें खं-डवेकी मर्दुमशुमारी (१५५८९) मनुष्योंकीथी, करीव टेशनके धर्म-शाला बनी हुइ है यात्री उसमें कयाम करे और मरजी हो-तो-श-हर देखे, बाजार उमदा और हरेकचीज यहांपर मिलसकती है, जैनश्वेतांवर श्रावकोकी आवादी यहांपर मौजूदहे, खंडवेसे रैलमे सवार होकर-अजंटी-अटार-निमारखंडी-सनावद-मोरटाका-बर-

वाहा-मुख्तियारा-चोरल-कालाकुंड-और-पातालपानी टेशन होते हुवे छावनीमहु टेशनपर उतरना, रैलकिराया तेरांआने लगेगे.

😂 [तवारिख-तीर्थ-मांडवगढ,]

छावनीमहु-एक गुलजार वस्ती है, सन (१८९१) की मर्दुमशुमारीके वस्त लावनीम उकी मर्दुम शुमारी (३१७७३) मनुष्योकीथी.
बाजार रौनकदार और हरिकसमकी चीजे यहांपर मिलसकती है.
धर्मशाला यहांपर एक बनी हुइ है, यात्री इसमें कयाम करे, और
तीर्थ मांडवगड जानेकी तथारी करे, सबारीके लिये इका-वगी-तयार मिलेगी, शुभहके गये हुवे शामकों मांडवगढ पहुच सकोगे,
सडक पकी बनी हुइ है, रास्तेमें पहाड-नदी-नाले और तरह तरहके द्रस्त नजर आयगें, जब करीब तीन कोसके फासलेपर मांडवगढ रहजायगा एक-नालला-नामकांगाव राहमें मिलेगा, इसमें
आठ दश घर जैनश्वेतांवर आवकोके आबाद है,-

छावनीमउसे करीब (३०) मील दखन पश्चिमकी रुखपर मां-डबगढ एक पुराना शहर है, पेस्तर बडाथा आजकल छोटासा क-स्वा रह गया, पुरानेखंढहर और मकानात देखकर दिलकों ता-ज्जुब होता हैकि-खुशनसीबोने क्या क्या उमदा मकान तामीर क-रबायेथे और अब किसकदर विरानपडे हुवे है, हिंडोलामहल-चं-पाबावडी-बगेराजगह काविल देखनेक है, अतराफ मांडवगढके तरह तरहकी जडीबुटीयें खडी है मगर उसके पहिचानने वाले कम निकलेगें, एक-जैन वतांवर मदिर और एक धर्मशाला यहांपर मो-जूदहै, यात्री इसमे ठहरे और तीर्थ मांडवगढकी जियारत करे, खानपानकी जरुरी चीजे यहांपर मिलसकेगी. तीर्थ मांडवगढकी जियारत करके यात्री छावनीमउकों-वापिस आवे ओर रेलमें सवार हाकर-रोहटेशन होते शहर इंदोर जाय, मउसे इंदोरतक रेलकिरा-या सवादोआने लगेगें.

[बयान-शहर-इंदोर,]

मुल्क मालवेमें इंदोर एक उमदा शहर है, सन (१८९१) की मर्डुमशुमारीके वस्त इंदोरकी मर्डुमशुमारी (९२३२९) मनुष्योकीथी जैनश्वेतांवर श्रावकोंकी आवादी और मंदिर यहांपर वने हुवे है, बाजार रौनकदार और तरह तरहकी चीजे सोनाचांदी जवाहिरात -शालदुशाले और मेवा मीठाइ वगेरा यहांपर मिलसकती है, पानिका नल हरजगह लगा हुवा और सडकोंपर लालटेनोकी रोशनीका नल हरजगह लगा हुवा और सडकोंपर लालटेनोकी रोशनी हुवा करती है, राजमहेल उमदा बने हुवे-और-लालवाग यहांका काविल देखनेके है. जिले इंदोरकी जमीनमें अनाज-पोस्त- इंड-अख-और-तमाख्-उयादह पैदा हुवा करती है. यात्री शहरमें जाना चाहे शौखसे जाय और जैनमंदिरोकी जियारत करे, इंदोर-से रैलमे सवार होकर-पालिया-अजनोड-और-फतेहाबाद होते शहर उज्जेन जाय, रैलकिराया साढे छ आने लगेगे.—

क्ष्याः तवारिख-तीर्थ-उज्जेन.

मुल्क मालवेमें फतेहाबाद जंकशनसे (१४) मील-उत्तरकीरुखपर क्षिमानदीके दाहनेकनारे उज्जेन एकपुराना शहर है, श्रीपालराजा-इसी-उज्जेनके राजा मजापालकीलडकी-मयणा मुंदरीसे विबाहेथे, और वदौलत नवपदजीके उनकी कोढबीमारी यहां रुफा
हुइथी, राजा मानतुंग इसी उज्जेनके तख्तपर हुवे-जो-बडे खुशनसीव और धर्मपावंदथे, तीर्थकर महावीरस्वामीके जमानेमें राजा
चंडमद्योत इसी उज्जेनके तख्तपर अमलदारी करताथा, सूत्र आवस्यककी टीकामें वयान हैिक-जब-चंदमद्योतकी-और-मुल्क पांचालक्के बीतभयपतननगरका राजा-उदयनकी-एक मूर्ति और दासीके लिये नाइिकाकी हुइथी उन दोनोका जंग इसी उज्जेनके

मेंदानपर हुवाथा, बीतभय पतन नगरसे-उदयन-बडी फीज लेकर म्रुल्क मारवाडके रास्ते उज्जेन आया, और चंडभद्योतने उसका मुकाविला किया, मगर आखरीशमें सिकस्तखाइ, और उदयनकी फतेह हुइ, चंडप्रयोतको गिरफतार करके अपने वतनको छेचछा, जब उज्जेनसे थोडी दूर पहुचा मोसिम वारीशका करीव आगया-था वारीज्ञहोना शुरु हुइ. उदयने वहां मुकाम किया और वारीज्ञके दिन गुजारे, दस राजे जो उनकी मातहतीमेथे उनकी रहते जब चौमासा गुजरा-तो-वहांपर एक मौजा वस गया जिसका नाम दशपुर कहलाया, चौमासेमें जब पर्भूषण पर्वके दिन आये अखीर-के रौज उद्यनने चंडशद्योतसे कहा आज हम(रे उपवास व्रत है-तुम-जो-चाहो-सो-वनवालो. हम आज नही खायगे. चंडप्रयो-तने कहा आज-मेंभी-उपवास व्रत करुंगा, शामके वरूत जब प्रति-क्रमण करनेका वस्त करीव आया उद्यनने चंडमब्रोतसे कहा आज पर्भूषणपर्वका अखीरदिन है धर्मशास्त्रकी रुसे वैरविरोध दुर करके राजीखुशी होना चाहिये, चंडप्रयोतने कहा-में-तुमसे राजी कैसे होसकुं, तुमने मेरी सलतनत लेली और गिरफतार किया, उदयनने कहा, अछा! अब क्या चाहते हो ? चंडमधोत बोला अगर मुजे राजी करना चाहो-तो-उज्जेनकी सलतनत वापिस देदो उद्यनने उसी वरूत उज्जेनकी सलतनत उसको वापिस देही, और उसकी खताकों दर गुजर किइ, चंडमयोत उज्जेन आया और उदयन अपने वतन वीतभयपतनको गया,

रोहानामकाशस्त्र इसीउज्जनकेपास एक-तटग्रामका-रहते वालाथा, जिसकी अकलमंदीका वयान मृत्रभावस्यककीटीकामें दर्ज है, कोकासनामका कारिगिर-जो-सोपारकपतनका रहनेवाला था इसउज्जेनमें आयाथा, और अपने इल्पसे बहुतसी दौलत यहां हासिल किइथी, अटनमळ नामका पहलवान इसीउज्जेनका वाशिदा

था-जो-कुस्ती लडनेमें बहुत बहादूर था, चंडरुद्राचार्य-जिनका बयान-सूत्र उतराध्ययनमें दर्ज है एकदफे उज्जेनमें तशरीफ लायेथे, तीर्थेकर महावीरस्वामीके बाद (२९०) वर्ष पीछे राजा संपति इसी उज्जेनमें हुवा, जिसने बहुत जैनमंदिर-और-मूर्त्तिये बनवाइ, अवंतिस्रकुमाल-इसी उज्जेनके वाशिंदेथे. जिनोने आर्यस्रहस्ती जैनाचार्यके पास दीक्षा इष्टितयार किइथी,

राजा विक्रमादित्यके वरुत यहां वडी रवन्नकथी, और संस्कृत विद्याका यहां वहुत जोर शौरथा. वडे वडे नजुमी लोग यहां हुवे. इसका दुसरा नाम अवंतीकापुरीभी बोछते है, जमीनके खोदनेसे पुरानी आवादीके निशान दुरदूरतक पाये जाते है इससे माऌ्म होता है पेस्तर यह वहुत वडा शहर था. सन (१८९१) में उज्जेन-की मर्दुमशुमारी (२४६९१) मनुष्योकीथी. हरेक किसमकी चीजे यहां मिळसकती है, वाजार छंवे चोडे और अकीमकी तिजारत यहां कसरतसे होती है, मालवेकी अफीम मुल्कोमें मशहूर है, चंद-नका--तेळ यहाका नामी-और अगरवत्ती यहां उमदा वनती है, कइ तालाव-और-बागवगीचे यहां काविल देखनेके है और क्षिपा नदीके कनारे बहुतसे सोहावने घाट बने हुवे है, जैनश्वेतांबर श्रावकोकी आवादी और पुराने जैनश्वेतांम्वर मंदिरभी यहांपर मौजूद ह सराफे वाजारमें-–डेहरा खडकीमें-–और-–नयेपुरेमें जाकर यात्री देवदर्शन करे, ठहरनेके छिये अवंती पार्श्वनाथ-जीके मंदिरपास धर्मशाला बनी हुइ है, उसमे कयाम करे, और तीर्थ उज्जेनकी जियारत हासिल करे, शहरसे चार मीलके फा-सलेपर कालियाद्रहगांवके पास क्षिपाके कनारे एक-बादशाही वरूतका बना हुवा मकान है. नदीका पानी उसमें-होज-और-म-जरीय झरनोके आता है, गर्मीयोके दिनोमें वडी आरामकी नगहहै.

उज्जेनसे रैलमें सवारहोकर-ताजपुर-और-तारनारोड होते हुवे तीर्यमकसीजीकों-जाय, रैलकिराया पांचआने लगेगे,-

त्वारिख-तीर्थ-मकसीजी,]

मुल्क मालवेमें मकसीजी एक मशहूर जैनतीर्थ है, टेशनसे क-रीव आधमीलके फासलेपर मकसी एक छोटासा गांववाके है, जि-सकी वजहसे तीर्थकानामभी मकसीजी कहलाया, खानपानकी चीजे-आटा-दालवगेरा यहांपर मिलसकती है, तीर्थकर पार्श्वनाथ-जीका बुळंदशिखरबंदमंदिर मानींद स्वर्गविमानके यहांपर बना हुवा है, परकम्मा इसकी तीन एक छोटी-एक वडी-और-एक उ-ससे बडी जोकि-कोटके वांहांरसे दिइ जाती है, मंदिरकी चारोतर्फ (४२) जिनालय बने हुवे और इनमें बहुत करके संवत् (१५४८) के अर्सेकी प्रतिष्टित मृत्तियें जायेनशीन है, मूलनायक तीर्थकरमक-सी पार्श्वनाथजीकी मृत्ति शामरंग करीव सवादोहाथ वडी तख्तन-जीन है. पेस्तर इसके नीचे एक गुफाथी जिसमेसे तीर्थकर मकसी पार्श्वनाथकी मूर्त्ति निकलीथी, बाद अजां उसपर शंगेमरमरका चोतरा बनादिया गया, एकतर्फ चिंतामणि पार्श्वनाथ-और-एकत-र्फ-नेमनाथजीकी शामरंग मूर्त्तिभी जायेनशीन है, रंगमंडप निहाय-त खुशनुमा-यात्री-इसमे वेटकर तीर्थंकर मकसी पार्श्वनाथकी इबा-दत करते है.

तीर्थ मकसीजीका कारखाना उमदा तौरसे वना हुवा है, और पासमे धर्मशालाभी मौजुद्है, यात्री उसमे कयाम करे, जब मकसी-जीतक रैल-नहीथी-यात्री-वजरीये वेलगाडीके जातेआतेथे, मगर अब रैलके होनेसे बहुत आराम होगया, जिसके बडे भाग्य हो असे तीर्थकी जियारत करे, पिछाडी मंदिरके एक उमटा वाग

जिसमे तरहतरहके द्रष्टत-और-गूळाव-केवडा-चंपा-जाइ-जुइ-गु-ल्दाउदी वगेराके फुळ हमेशां उतरते हैं और पूजनमे चढाये जाते हैं, एक वडा ताळाव यहां मौजूद है मगर-ऊंडा-कमहोनेकी वजहसे गर्मीयोंके दिनोमें पानी सुक जाताहै, मौजे मकसीजीमें यात्रीयोंका आनाजाना हरवष्टत बनारहता है, मकसीकी जियारत करके वा-पिस उज्जेन होते हुवे फतेहाबाद आना. और फतेहाबादसे-चांवळ -वरनगर-रुणेजा-नोंगनवान-होते रतळाम जंकशन उतरना, रै-ळिकराया फतेहाबादसे रतळामतक छआने ळगेगे,-

😥 [बयान-शहर-रतलाम,-]

मुल्क मालवेमें रतलाम एक अछा शहर है, रतलामसे (७१) मील दोहद, (११६) मील गोधरा, (१५०) डाकोर और (१६९) मील आनंदजंकशन है, सन (१८९१) की मर्दुमशुमारीके वरूत र-तलामकी मर्दुमशुमारी (२९८२२) मनुष्योकीथी, राजमहल यहांके उमदा मजबूत और म्रस्तहकुम बनेहुवे है, चांदनीचौक-मानकचौक और बजाजखाना-ये-नामी वाजार है, जिसमें तरहतरहके माल . असर्वांवें मिलसकते है, चांदनीचौकमे−जहोरी−और−सराफलोगो-की दुकाने लगी हुइ है, बहार त्रिपोलिया दरवजेके एक अमृतसा-गर तालावजोकि−वारीशके अय्याममें−भराहुवा रहताहै काविल देखनेके है, कचहरियां-अस्पताल-स्कुल-वगेरा मकानात लागतके बनेहुवे है, अफीम और अनाजकी तिजारत यहां अछी होती है, जैनश्वेतांबर श्रावकोके घर अंदाज (७००) और बडे बडे आलि-शान जैनश्वेतांवर मंदिर यहांपर मौजूद है, यात्री शहरमें जाकर जियारत करे, रतलामसे दखनकी तर्फ एक कोसके फासलेपर क-रमरी नामका एक कस्वा है, जहांकि-तीर्थकर रिषभदेव महाराजका बडा आलिशान मंदिर-धर्मशाला-और-हो-कुंडपानीके बने हुवेहै,

थात्री वहांकी जियारतकरे, रतलामसे पश्चिमकी रुखपर एक-सागोद नामकागांव वसाहुवा जहांकि-मंदिर-धर्मशाला-और नजदीकमंएक पानीका-नालाभी वहता है, यात्री वहांकीभी जियारत करे, सागो-द गांवसे आगे देढकोसके फासलेपर विवडोद नामका एक कस्वा -जहांकि-तीर्थकर रिपभदेव महाराजका वडा आलिशान मंदिर कार्वालेदीद है, और मूर्त्ति निहायतपुरानी हैं. अतराफमें कोट पका खीचाहुवा जिसमेकियात्री-वखूवी कयामकरे, और तीर्थकीजियारत करे. रतलामसे करीव चार कोसके फासलेपर शेमलिया गांवभी एक जैनतीर्थ है, यात्रीकों जिसतरह फुरसतहो-मुकाम करे और तीर्थयात्राका फायदा हासिल करे, रतलामसे आगे रैलमें सवार होकर-नांमली-जावरा-डोढर-ओर-दरावदा टेशन होते हुवे मं-दसौर टेशन उतरे, रैलकिराया आठआने लगेग.

[वयान-शहर-मंद्सौर,-]

मुल्क मालवेमें मंद्रसौर एक अछा शहर है. और इसका दुस-रा नाम दशपुरभी कहते है, इसकेपास एक नदी हमेशां वहती है, जैनश्वेतांवर श्रावकोकी आवादी और मंदिर यहांपर वनेहुवे है, यात्री शहरमें जाकर जियारत करे. वाजार यहांका बहुतअछा और हरिकसमकी चीजे यहां मयस्सर आसकती है, दसपुरे यहां अलग अलग आवादहै इससबवसे इसकानाम दशपुरनगर कहलाया, जबिक -बीतभयपत्तनका राजा-उदयन-उज्जेनके राजा चंडप्रद्योतको सिकस्त देकर अपने वतनको जाताथा यहां उसने मोसमेवारीश गुजाराथा, उसवस्त यह दशपुरनगर आवाद हुवाथा, जो आज-कल मंदसीरके नामसे मशहूर है, विजारत अफीमकी यहां कसर-तसे हुवा करती है, मंदसीरसे करीव पांच कोशके फासलेपर-एक [;-बहीपार्श्वनाथका तीर्थ मशहूर और मारुक है, और एक-पुराना मंदिर वहांपर मौजूद है, यात्रीकों फ़रसतहो वहांकी जियारतकों जाय, पोषदशमीके रौज हरसाल वहां-यात्रीयोंका मेंला भराताहै, मंदसौरसे रैलमें सवारहोकर-थारोद-पींपलिया-मल्हारगढ-हरिक-याखाल-नींमच-केशरपुरा-निंभाडा-और-शंभुपुरा होते चितोड-गढ-टेशन जाय, रैलिकराया ग्यारह आने लगेगे,-तवारिख चितो-डगढ और उसके आगेका वयान पेस्तर लिख चुके है,—

🖙 [बयान-जलगांव-पाचोरा-और-मनमाड,-]

अब भुसावलसे ग्रुटके दखनकी तर्फ जानेका रास्ता बतलातेहै, देखिये ! भुसावलसें रैलमें सवार होकर–भडली टेशन होते हुवे ज-लगांव टेशनपर उतरना और अगर शहरमे जानेका इरादा हो-तो जाना, वरना, आगेको रवानाहोना, जलगांव अगरचे एकछोटा-सा शहर है, मगर रौनकदारहै, जैनश्वेतांवर श्रावकोकी आवादी और मंदिरभी यहांपर बना हुवा है, बाजार गुलजार और खुशनु-मा-हरेक किसमकी चीजे यहांपर मिलसकेगी, तिजारत रुइकी यहां अछी होती है और-यहांसे एक-रैलवे लाइन सुरतकों गइ है, जल-गांवसे रैलमे सवार होकर-सीरसोली-महसावद-माइजी-होते पा-चोरा टेशन जाना, पाचोरा एक छोटासा कस्वा है लेकिन! का-बिल देखनेके हैं, रुइके कलकारखाने यहांपर वनेहुवे हैं, और अक-सर रुइकीतिजारत ज्यादहहोती है, जैनश्वेतांवर श्रावकोकेघर करीव (५०) और एक जैनश्वेतांबर मंदिर यहांपर वना हुवा है, बाजारमें हरेक किसमकी चीजे मिल सकेगी, आबहवा यहांकी अछी-और-नजदीकमें एक-नदी-बहती है जिससे बागवगीचे-बनास्पातेकी स-रशब्जी बनी रहती है, पाचोरेसे रैलमें सवार होकर-गलना-कज-गांव-बागली होते चालिसगांव टेशनपर उतरना, चालिसगांव एक छोटासा कस्वा है, मगर व सवव रैलका जंकशन होनेके ज्यादह

मशहूर है, जैनश्वेतांवर श्रावकोकी आवादी-और-एक मंदिरभी यहां उमदा वना हुवा है, यात्री अगर फुरसतहो-शहरमें-जाय और देखे, रुइके कल कारखाने यहांपर मौजूद है और तिजारत रुइकी अली होती है, यहांसे एक रैलवे लाइन शहर धुलियेकों गइ -जो-(३०) मीलके फासलेपर वाके है, चालिसगांवसे रैलमे स-वार होकर-हीरापुर-रोहनी-नयीडुंगरी-पीपारखेड-नंदगांव-पंजान-हिसवाल होते मनमाडजंकशन जाना. असावलसे मनमाड तक किराया मेंलदेनका एकम्पया वाराआना लगते है, मनमाड एक-रैलवेका वडा जंकशनहै, और खानपानकी चीजे-पुरी-कचौरी-मिठाइ वगेरा-जो चाहो यहां मिलसकती है, यात्री टेशनपर ठहरे और-जो-लाइन शहर हैदराबाद दखनकों गइ है उसमें सवार होकर-अंकाइ-नागरसोल-ताहर-रोटागाव (विजापुर)-परसो-दा-लासुर-इलोरारोड-और दोलतावाद होते औरंगावाद जाय, रैलकिराया ग्यारहआने लगेगे,-

🞯 [बयान-शहर-औरंगाबाद-और-जालना,-]

सलतनत हैद्रावाद द्खनमं औरंगावाद-एकपुराना शहर है, सन (१८९१) की मर्दुमशुमारीके वच्न औरंगावादकी मर्दुमशुमारी मयछावनीक (३३८८७) मनुष्योकीथी, करीव शहरके एक छोटी-सी नदीवहतीहै, और गेहु-कपास वगेरा चीजोकी तिजारत यहां अछीहोती है, जैनश्वेतांवर श्रावकोकी आवादी-और-दो-पुराने मंदिर यहां बनेहुवे मोजूदहै, यात्री शहरमंजाय और दर्शनकरे करिव मंदिरके धर्मशाला बनीहुइ है इसमें कयामकरे, और अगर इलोराके गुफामंदिर देखनेका इरादा होतो यहांसे शौखसे जाय, दौलतावादसे-या-इलोरारोडसेभी-जासकते हो--और-यहांसेभी

औरंगावादसे करीव (१५) मीलके फासलेपर इलोरागांव जहां आबाद है पहाडमें उकेरे हुवे गुफामंदिरोंकी वजहसे ज्यादह मश- हुर है, सडक पकी बनी हुइ और वहां जानेके लिये सवारी औरंगावादसे-इक्का-वगी-मिलसकेगी और शुभहके गये हुवे शामको वापिस आसकोगे, इलोरेकी गुफामें कइ जगह बुधदेवकी और कइ जगह विदेक मजहबके देवोकी मृर्तिए वनी हुइ है, सबसे दूर जो गुफा है उसमें एकसाथ पांच मंदिर जो पहाडमे उकेरे हुवे मौजूद है, उनमें जैनमूर्तियेभी बनी हुइ है, जिसकी मरजी हो-जाय-और-देखे, जगह काविल देखनेके है.—

औरंगाबादसे (३०) मील-और-अहमदनगरसे करीब (६०) मील पूर्वोत्तर गौदावरी नदीके कनारेपर-पैठन-एकपुराना शहर है, जो पेस्तर शकजातिके राजा शालिवाहनकी राजधानी प्रतिष्ठानपुर-के नामसे मशहूर था, यात्री औरंगाबादसे रैलमें सवार होकर-चिकलठाना-करमाला-और बदनापुर होते जालनाटेशन जाय, रैलकिराया सातआने लगेगे,—

जालना एकपुराना शहर है, पेस्तरके दिनोमें वहुत आबादथा, जमाने हालमेभी कदरे वहेत्तर है, वाजार उमदा और हरेक किसमकी चीजे यहां मिल सकेगी, रुइके कई कल कारखाने यहांपर भौजूदहै और तिजारतभी यहां अछी होती है, जैनश्वेतांवर श्रावकोकी आबादी और मंदिर यहां वने हुवे है, यात्री शहरमें जाय और मंदिरोक्की जियारत करे, जालनेसे रैलमें सवार होकर-कोडी-रंजनी-पार्-र्तुर-सटोना-सेल-मनवाथरोड-पेदगांव-परभनी-पींगली-पुरना-लींबगांव-नानेड-मुगत-मदखेड-सीवनगांव-उमरी-करखेली-धर्मा-बाद-बसर-नयीपेंठ-निझामाबाद-दिचपली-इंडलवाइ-सिरनापली-प्रालवाइ-कामरेडी-विकनुर-अकनापेंठ-मिर्जापली-वडीयारम-म-

सइपेंठ-मनोहरावाद-मेडचल-वलारम-अलवाल-और-सिकंदराबाद होते-हैदरावाद जाना, रैलकिराया तीनरुपये पांचआने लगेगे,-

धिः [दरबयान-शहरे-हैदराबाद-दखन,]

मुल्के दखनमें मुसा नदीके दाहनेकनारे हैदरावाद एक-अज-नवीशहर है. हैदरावाद राज्यकी उत्तरतर्फ-बरार-पूर्वीत्तर और पूर्व-मध्यमदेश-दक्षिण पूर्व-और दक्षिणतर्फ मद्रासहाता-और-प-श्चिम तथा-पश्चिमोत्तर वंबइहाता है, हैदरावादसे एक पेदलसडक मद्रासतर्फ गइ है, जिसकेशाथ कटकसे आइ हुइ समुंद्रके पासकी सडक आमीलती है, सन (१८९१) की मर्दुमथुमारीके वस्त हैद-रावादकी मर्दुमशुमारी (४१५०३९) मनुष्योकीथी, वडे वडे आ-**ळिशानमकानात−रंगरीशनसे सजेसजाये−यहांपर देखोगे, स**डके लंबीचोडी और सवारीके लिये इका वर्गी−तयार मिलेगी, रेसीडे-न्सी–अफजलगंज–महाराजगंज--वेगमवाजार-चारकवाजार-वगेरामे वडी रवन्नक देखोगे, अफलगंजसे चारकवानकों जाते रास्तेमें मु-सानदी मिलेगी, जिसपर पुल वंधा हुवा है और इका वगी वगेरा सवारी जासकती है, वाजार निहायत उमदा-और-शानदार जिसमे लाखो रुपयोंकी-जिन्स और-माल-व-असवाव-जो चाहो मिलसकेगा. पानीका नळ हरजगह लगा हुवा और रातको सडकोंपर लालटे-नोकी रौशनी हुवा करती है, करीव टेशनके पब्लिकवाग जिसकों मेहबुववागभी वोलते है. वडा गुलजार और इसमे तरहतरहके जा-नवर चुनाचे-शेर-चीते-हिरन-भाऌ-और कइकिसमके परींदे तोता -मेंना-चिडिया वगेरा रखे हुवे है, शहरकी पूरवतर्फ घुडदोडका वडा वसी मेंदान जिसमे घुडदोड हुवा करती है काविल देखनेके है, महलात निझाम सरकार आलीके कीमती और खूबसुरत वने हुवेहैं, हैटरावाटके राज्यमें सवतरहके अनाज-नील-उख-और कपास

वगेरा चीजें बहुतायतसे पैदा होती है, आम-अमस्द-खरबुजा-क-फडी-शरीफे वगेरा किसम किसमकी फलफलारी यहां कसरतसे हुवा करती है, जैनश्वेतांवर श्रावकोंकी आवादी-चारकवान-इशब-चोक-पथरघटी-वेंगमवजार-रम्गलगंज-और-रेसीडेन्सीमें फैली हुइ है, जैनश्वेतांवर मंदिर वेंगमवजार-कारवान-चारकवान-और-रेसीडेन्सीमेंबडी लागतके वने हुवे है, यात्री शहरमें जाय और मंदिरोकी जियारत करे,-

स्तिस्तिल शहर हैदराबादके सिकंदराबाद एक गुलजार बस्ती और अंगरेजी फौजी छावनी है, बाजार उमदा और हरेक तरहकी चीजे यहां मिलसकती है, जैनश्वेतांबर श्रावकोकी आबादी और एकमंदिर यहांपर बना हुवा मौजूद है, यात्री यहांके मंदिरकेभी द-र्शन करे, सिकंदराबादसें (२) मील और—हैदराबादसे (११) मील उत्तरकी तर्फ बलारम एक अछा कस्वा है और यहांपर जैनश्वेतांबर श्रावकोकी आबादी और मंदिरभी बना हुवा है,—

हैदराबादसे रैलमें सवार होकर-सिकंदराबाद-मौलाअली-घटकेशर-बीड़ीनगर-भोंगर-रायगिर-और-वंगापाली होते आलेर देशन उतरना, रैलकिराया मेलट्रेन दसआने लगेगे,—

[🖾 तवारिख-तीर्थ-कुल्पाकजी,-]

मुक्ते-तैलंगमं आलेर टेशनसे दोकोसके फासलेपर कुल्पाकजी एकपुराना जैनतीर्थ है, पेस्तर कुल्पाकशहर बहुत आवादथा, जमाने हालमें कम होगया, और शहरके नामसे तीर्थका नामभी कुल्पाक मशहुर हुवा, पेस्तर यहां बहुतसे बागवगीचे और गुल्लजारवन खंडथे, और-शहरभी-बडीरवन्नकपरथा, आम-अमस्द-नारंगी-केले-खिरनी-नारियल-सुपारी-लोंग-और-नागरवेलके पान यहां

वहुत हुवा करतेथे, और मुल्क वडा सरसब्जथा, दरमियान आले-रटेशन और कुल्पाकके सडक पकी वनी हुउ है और बीचमें एक नदी मीलती है जोकि-वारीशके अय्याममें भरपुर होजाती है, मं-दिर यहांका निहायत आलिशान और बुलंदिशिखरबंद मानींद देव-लोकके बना हुवा है, जिसके देखनेसे माऌम होता हैकि-पेस्तरके दिनोंमें जैनोकी यहां कामील आवादीथी, जैनश्वेतांवर आम्नायके विविध तीर्थकल्प शास्त्रमे तेहरीरहैकि-यह-मंदिर विक्रम संवत् (६८०) की सालमें तामीर किया गया, इसमे तीर्थंकर रिषभदेव महाराजकी शामरंग मूर्त्ति करीव अढाइ हाथ बडी तख्तनशीन है, और इसका दुसरा नाम माणिक्यदेवभी बोलते है, रंगमंडपके एक खंभेपर ज्ञिलालेख लगा हुवा है उसमे अवल तीर्थकर रिपभदेव महाराजकी तारीफ लिखी हुइ है, और बादमे यहभी लिखा हुवा है कि- संवत् (१६६५) में इसमंदिरका जीर्णोद्धार हुवा, विजयसे-नसूरिका नामभी इसलेखमे दर्ज है,-हर्फोंके घीसजानेकी वजहसें तमाम लेख बखूबी नहीं पढ़ा जाता मगर जो कुछ पढ़ा जाता है उसका मतलब उपर लिख दिया है.—

कोटके अंदर अवल दरवजे के भीतर और दोयम दरवजेके सीरेपर एक-और-शिलालेख लगा हुवा है जिसमे संस्कृत जबा-नसें यह मजमून लिखा हैकि,—

स्वस्तिश्रीयत्पदांभोज-भेजुषा सन्मुखी सदा, तस्मैदेवाधिदेवाय-श्री आदिप्रभवेनमः

संवत् (१७६७) वर्षे-चैत्रशुद्ध दशम्यां पुष्यार्कदिने-विजयमृहर्त्ते-श्रीमाणिक्यस्वामिन।म्नः आदीश्वरभगव-तो-बिंबरत्नंप्रतिष्ठितं—दीछीश्वरबादज्ञाह औरंगजेब— आलमगीरपुत्र-बाद्शाहश्रीबहादूरशाहविजयराज्ये-सूबे-दारनवाब मुहम्मद्यूसुफखानबहादूरसहाय्यात्--तपागछे भट्टारकश्रीविजयरत्नसूरिवरेसति—पंडितश्रीधर्मकुशलग-णिशिष्य—पंडित केशरकुशलेन—चैत्योद्धारःकृतः शाके (१६३३) प्रवर्तमाने इतिश्रेयः—

माइना इसका इसतरह वयान किया जाता है कि—अवलतीर्धकर रिषभदेव महाराजकों नमस्कार हो, संवत् (१७६७) की—सालभ-चैतस्रदी दसमी पुष्पार्कके रौज विजय सुहूर्त्तमें –माणिक्यदेव
स्वामि—आदिश्वरभगवानकी मूर्त्ति यहांपर तस्त्तनशीन किइ गइ,
उस ग्र्वत देहलीके बादशाह औरंगजेव—आलमगीरपुत्र—बादशाह
बहादूरशाहकी अमलदारीमें—स्वेदार नवाबम्रहम्मद यूसुफखान बहादूरकी मददसे—तपगछके—भदारक श्री विजयभभस्रिके वस्त—पंडितश्री धर्मकुशलगणिके शिष्य—पंडितकेशर कुशलजीने इसकी प्रतिष्टा
किइ, मंदिरका जीर्णोद्वार हुवा और भागनगरके श्रावक संघने
अतराफ मंदिरके—पुस्ता कोट—तामीर करवाया, शक (१६३३)
उसवस्त प्रवर्त्तमान था,—

संवत् (१९६५) में हैदरावादके जैनश्वेतांवर श्रावकोने फिर इसमंदिरका जीर्णोद्वार कराया, और कोट वगेराकी मरम्मत किइ, मंदिरके पास यात्रीयोकों ठहरनेकेलिये मकानात बने हुवे है उसमें कयाम करे और तीर्थकी जियारत हासिल करे, तवारिखे तीर्थ कुल्पाक खतम हुइ.

यात्री तीर्थ कुल्पाकजीकी जियारत करके वापिस आलेर देशन आवे और रैलमें सवारहोकर-जानगांव-रुगनाथपङ्घी-घानपुर-का-जीपेंठ-बारंगल-चिंतालपङ्घी-नेकोंडा-कासुंसुंदरं-मानुकोटा-गारका डोरनाल जंकशन--पापतापली-खामामेथ--चिंताकनी-बोनाकल-मदीरा-येख्पालियम-गांगीनीनी--और कोंडापली-होते वेजवाडा जंकशन जाय, रैलकिराया थर्डकलासपासेंजर एकरूपया तेरांआने और मेलट्टेनके टोरूपये चारआने लगेगे.

ः वियान-शहर-वेजवाडा,]

कुश्नानदीके वायेकनारे वेजवाडा एक मशहूर तिजारती कस्वा है, वेजवाडेसे मद्रास-मछ्छीपटन-राजमहेंद्री-और-काकनाडेको-नहेर गइहे. वेजवाडेमे सन (१७६०) इस्तीका वनाहुवा एकपुरा-ना किला-और-पासउसके पहाडके चटानोमे वांध और हिंदुओके पुरानेगुफामंदिरहै, सन (१८९१) की पर्दुमथुमारीके वस्त बेज-वाडेकी मर्दुमशुमारी (२०७४१) मनुष्योंकी थी, वाजार अछा और हरिकसमकी चीजे यहां मिलसकेगी. स्कुल-अस्पताल-सरका-री कचहरीयां-ऑर-लाइबेरी वगेरा मकानात उमदा बनेहुवेहै यात्रीशहरमं जानाचाहे-तो-जाय और देखे, वेजवाडेसे रैलमें स-वारहोकर-किस्नाकेनाल-कोलंकोंडा कवायरी-पेडावडलापुडी-डुगीराळा−कोळाकऌर−तेनाळी−टुंडुरु-−नींदुवरुळु-–आपीकाटळा− बापटला-चीराला-वेटापालियम--चीनागंजाम-उपुग्वाहुर-अमाना-ब्रोळ-कारावडी-ॲंगोल--सुरारेडीपालम-तांगुटुरु-सिंगारियाकोंडा **उल्वापाडु -तेडु-कावळी -विदागुंटा-आळ्डरोड-ताळागंची-कोडाव-**छरू-पइग्रपाइ-नेलोर-वंकटाचलम-मनुबोलु-गुइर जंकशन-पेदा-**पेरिया--नाय**इपेटा-घोरावरीछतरम-पोलीरडीपाल-सोलुरपेटा--टाडा-औरंबाकम-एलडर-ग्रमीडीपुंदी-कावराइपेटे-पुंजोरी-मिंजुर-एनुर-एरानाउर-तिरुवतुर-तोडायरपेटे-कोरुकुपेटे--और-वेसीनबीडझ-होते मद्रासटेशन उतरना, रैलकिराया मेलटेन साहेतीनरुपये लगेगे.

🌬 [द्रवयान-शहर-मद्रास,]

बंबइसे (७९४) मील दखनपश्चिमकी रुखपर मद्रास एक नि-हायत उमदा शहरहे. मद्राससे एक-रैलवेलाइन-वेजवाडा-और-कटकहोतीहुइ-और एकलाइन-रायचूर-मनमाड-भुसावछ-नागपुर और आसनसोल होतीहुइ-कलकत्तेकों गइहै. मद्राससे सम्रंदरके रास्तेभी कलकत्तेकों जासकते है, मद्राससे पूर्वीत्तर एकपैदल सडक-अंगोल-वेजवाडा-राजमहेंद्री-विजयानगर-ब्रह्मपुर-गंजाम-कटक-भद्रक बलेश्वर–और-मेदनीपुरहोते कलकत्तेकों गइहै, एक–पेदलसडक– दखनपश्चिम-विलीपुर-त्रिचनाप्छी-मदुरा-और-मनीयाचीं होकर-कन्याकुमारीको गइहै, एकसडक-पश्चिमतर्फ-कटपदी-और-जोला-रपेंठके पासहोकर-वेंगलोरकों गइहै, मदासकों द्रविडिनलोग चीना-पट्टन बोळते है, सन (१८९१) की मर्दुमशुमारीके वख्त मद्रासकी मर्दुमशुमारी (४५२५१८) मनुष्योकीथी, जैनश्वेतांवर श्रावकोके घर करीब (३००) और साहुकारपेठमे-दो-जैनश्वेतांबर मंदिर बनेहुवे है, एकमंदिर शुलेबाजारमेंभी मौजूदहै, यात्री शहरमें जाय और मंदिरोंकी जियारतकरे, मद्रासमें वडीवडी आलिशान इमारते और छंबेचोडे बाजारहै, साहुकारपेंठ-चीनाबाजार-तिरुमछखंडी-माउंटरोड-जामवाजार-गुजरी-इविनिंगवाजार-कोमठीगली-गडंगगली और-शुलाबाजार वगेरा नामीबाजारहै, शहरमें शुभहशाम-ट्रामका-रचला करती है, इका-बगीभी हरजगह तयार मिलेगी, सडकोपर पानीकेनल लगेहुवे और रातको लालटेनोकी रौशनी हुवाकरती है, दरयावकनारे कस्टमहाउस-टेलीग्राफ औफीस-मदासवेंक-पोर्ट औ-फिस-जनरल पोस्टऔफीस-हाइकोर्ट-और--लाइटहाउस-वगेरा बडीलागतके मकानात वनेहुवे है, सम्रंदर कनारे निहायत उमदादे-खाव-और-सडके वनीहुइ-लोग शामकों उधर हवाखोरीके लिये

नायाकरते हैं, मद्रासका अजायवघर काविल देखनेके हैं, तरहतरहकी चीजे पुरानी और नयी कारीगिरी देखकर दिलको ताज्जुब होगा, हाइकोर्टके पास-फोर्ट सेंटजर्ज नामका किला निहायत संगीन और उमदा वनाहुवाहै, अतराफ मद्रासके नारियल और केलेकेपेंड वहु-तायतसे देखोगे, इलायची-काफी-सकर-सोडा-गुलाबजल-कालीमीर्च-कापुर--किसमीस--छुहारे--वादाम-पिस्ते-चिरोंजी--अखरोट--और केशर-कस्तूरी वगेराचीने गेरमुल्कोसे यहा<u>ं</u> आती है और विकती है, कइतरहका माल असवाव–इग्लांड∽ चोन-जापान-रंगुनवगेरासे यहां आताहै, सोनाचांदीके गेहने यहां उमदा बनते है, मद्रासके दौलतमंद वाशिंदे जवाहिरात और सोनेके गेहनोसे हमेशां सजे सजाये रहते है, औरतेभी उमदा लिवास पहनी हुइ रहती है, हरजगह गानेवजानेको मजलीसमें नामीगवैये अपने इल्पका जहोर दिखलारहे है.

सेंट्रल रैलवे टेशनके पास रानीवाग काविल देखनेके है, जि-समे-ग्रेर-भाल-चीता-गेंडा-कबूतर-तोता -मेंना-चिडिया वगेरा रखेडुवे है, मद्रासमें--तैलंगी-अवीं-कनडी अंग्रेजी--और-उर्द्वगेरा जबान बोलीजाती है, मुल्क गर्महोनेकी वजहसे लोग रुइदार कपडे कम पहनते है, और खानपानमें दालचावलका इस्तिमाल ज्यादह रखते है, मद्रास हातेमें काफी-तमाख्-और-चायकी पैदाश कसर-तसे-होती है, नमकभी यहां बनाया जाताहै, मुंगफलीभी यहां बहुता-यतसे पैदाहोती है, केतकीके पेंड हरजगह देखोगे, समुंदरके कनारे हवा बहुत जोरसे चलती है और पानीकी लहरे दिलकों फरहत ब-क्षती रहती है, पेस्तरके शास्त्रोमें इसमुल्कका नाम द्राविड लिखा है, मद्रास हातेके मुताछिक-पिनाकिनी-पनार-वैगा-वैखर-ताम्रपर्गी-और-तुंगभद्रा वगेरा नद्यां बहती है, मद्राससे रेलमें सवारहोकर- सेंदापंठ-सेंट थामस मांउट-(फरमकुंडा)-पलावरम-वंडलूर-गुडा चेरी-सिंगापेरमाल कोइल-चिंगलपेठ-कोलेतुरनोर्थ-पडलम-करन-गुंजी-मदुरांतकम-अचरपाकम-परेमवेर-ओलकुर-दिंडीवनम-मेल-म-पेंरानी-विक्रावंडी-वेलुपुरम जंकशन-सरंडानुर-पानस्टी-मेलप-टमबाकम-नेलीकुपम-कडलूर-अलेपाकम-पुदुलतरम-पोर्टोनोवो-किले-चिदंवरम-कोलेकन-अरसुर-सियाली-वेथीस वरीनकोइल-आतंडवपुरम-मायावरम जंकशन-कटलाम-नरसिंगनपंठ-अदुतुराइ-तिस्वडामारुड-कुंभकर्ण-दरसुरम-सुंदरा पेरमालकोइल-पापनाश्चम पंडरावडाइ-एयमपंठ-और-तिट्टी-टेशन होतेहुवे तंजुर जंकशन उत रना,-अगर शहर देखना मंजुरहोतो देखना, वरना ! आगेकों रवा-नाहोकर अलाकुडी-बुडलुर-सोलागमपेटे-और-तिरुवेरमनुर होते-शहर-त्रिचनापछी जाना,

🖙 [बीच बयान शहर-त्रिचनापहीं और मदुरा,]

शहर मद्राससे (२४९) मील दखन पश्चिमकी रुखपर कार्वे-री नदीसे एकमीलके फासलेपर त्रिचनापली एक पुराना शहरहै, टेश्चनसे थोडीदुर आगे वढनेसे शहरकी आवादी शुरुहोगी, मद्राससे नो-पैदल सडक कन्याकुमारीको गइहै त्रिचनापली होकर गइहै. सन (१८९१) की मर्दुमशुमारीमे त्रिचनापलीकी मर्दुमशुमारी (९०६०९) मनुष्योंकी थी, बाजार खुशनुमा-जिसमें तरह तरहकी चीजे रेशमी कपडे-और-माल असवाव मिलता है, चित्रकारीका काम यहां लाइक तारीफके होताहै, और सोना चांदीके गेहने उमदा बनते है, तमाखूकी पैदाश यहां ज्यादह-और-खानपानकी चीजे अली मिलती है,-जैनश्वेतांवर श्रावकोकी आठ दश दुकाने यहां मी-जूदहै, यात्रीको अगर शहरमें जाना मंजूरहो-तोजाय, वरना ! आगेको रेलमें सवार होकर-कोलातुरसाउथ-सम्रुद्रम-मनापराइ- क्यामपट्टी-नंदुपटी-अय्याछर-वडामदुरा-दिंडीगळ-अंवातुराइ-को-देकनालरोड-अमायानायकन्तुर-वाडीपटी-सोलावंडन--और-समाय-नाॡर-होतेहुवे मदुराटेशन जाय,-

मद्राससे (३४५) मील दखन पश्चिमकी रुखपर वैगानदीके दाहने कनारे मदुरा एक पुराना शहरहै, आवश्यक सूत्रवृत्तिमें-जो-दखन मथुरा लिखी है–वो यही है, पेस्तर यहां पांडववंशके राजा राज्य करतेथे सन (१८९१) की मर्दुमशुमारीके वरूत मदुराकी मर्दुमशुमारी (८७४२८) मनुष्योंकी थी, करीव टेशनके धर्मशाला बनीहुइँहै बाजार अछा-और-हरेकिकसमकी चीजे यहांमिलसकती है, सुनहरी किनारीदार-पघडी-दुपटे-और-साडी-यहां अछीवनती है, एकदो−दुकाने–मारवाडी श्रावकोकी यहांपर मौजूदहै, जिलेम-दुराके उत्तरतर्फ कोयंवतुर-त्रिचनापली-और-जिला तंजोरहै, पुरव और-पूरव दखनकी रुखपर सम्रंदरकी खाडी-दखन और दखन पश्चिम- तिरुनलवेली जिला. और पश्चिम-त्रिरुवांकुरका (यानी) त्रावनकोरका राज्यहै, मदुरासे एकरैलवे लाइन रामेश्वरको-और-एक लाइन-तुतीकोरिनको गइहै, यात्री लंकातर्फ जानेकेलिये तुती-कोरिनकों जाय, मदुरासें रैलमें सवारहोकर-पसुमलाइ-तिरुपरान-कुंडरम-कापछर-तिरुमंगलम-सिवराकोट--कालिगुडी--विरुदुपटी-सुलाकरे-तुलुकापटी-वेपीयालीपटी छतरम-सेतुर-नली-कोयलपटी नलटीनपुतुर-कुमारपुरम-कदंबुर-देवलंगल--मनीयाची जंकशन-तातापराइ–मिलाबितन–और–तुर्तामेलुर होते तुर्तीकोरिन टेशनजाय मद्राससे तुर्तीकोरिनतक-रैलकिराया-मेलटेनका चाररुपये पनराह आने लगते है.—

🖙 [तुतीकोरिन,]

मदुरा टेशनसे (८१) मील दखन मनीयाची जंकशन-और-मनीयाचीसे (१८) मील दखनपूरवकी रुखपर-तुतीकोरीन नामका रैलवे टेशनहें, द्रविडिनलोग इसकी-तुतुगुडी-कहते हैं, और अंग्रेजी जवानमें तुतीकोरिनके नामसे मश्चहूरहें, सन (१८९१) की मर्दुम-शुमारीके वख्त तुतीकोरीनकी मर्दुमशुमारी (२५१०७) मनुष्योंकी थी, पेस्तर तुतीकोरीन वडाशहरथा, वाजार यहांका खुशनुमा-और-हरेकिकसमकी चीजे यहांपर मिलसकती हैं, जैनश्वेतांवर श्राव-कोकी आवादी यहां नहीं,-न-कोइ-जैनश्वेतांवर मंदिरहें यहांपर सम्रंदरमेंसे-मोतीकीसीपें-और शंख निकालेजाते हैं. और सम्रंदर कनारे वडेबडेजहाज-और शिमरे आतीजाती है, अगर यहांसे कोइशख्स लंकाटापुके कोलंबो शहरकों जानाचाहे-तो-ष्टीमरमें सवार होकर सम्रंदरके रास्ते जासकते हैं, किराया थर्डक्लास पासेंजरके लिये तीनरुपये-छपाइ लगताहै,-

ॐ [तबारिख−लंका,]

लंका टापुकों पेस्तरके बाखोंमें सिंहलद्वीप लिखाहै, जैन रा-मायनमें लंकाकी तवारिख इसतरह बयान किइहैकि—तीर्थंकर अजि-तनाथ महाराजके जमानेमें एक— घनवाहन नामका विद्याघर राजा लंकाके तख्तपर अमलदारी करताथा, जोकि—निहायत दिलेर और जमामर्दथा, उसकी सलतनत और अदल इन्साफ लाइके तारीफथा, जब उसका इंतकालहुवा लंकाके तख्तपर उसका बेटा तख्तनशीन हुवा, और अमलदारी करनेलगा, इसतरह कइराजे एकपीले एक लंकाके तख्तपर होतेरहे, बयान उसका बहुतहै यहां कहांतक लिखे जब तीर्थंकर मुनिसुत्रतस्वामीका जमाना दरपेश हुवा लंकाके तख्तपर उस विद्याधर वंशका रत्नाश्रव नामका राजाहुवा, जिसकी रानीका नाम-केकसी-था, उसके शिकमसे-रावन-नामका लडका पैदाहुवा एकरोजकी वातहै नवहीरोंका-हार-जोकि-रावनके बडेरोकों देवताकी तर्फसे मिलाथा रावनने अपने गलेमें पहना, तब उस हारके हीरोंकी रौशनीसें रावनके दस मुख नजर आनेलगे, असलमें मुखतो एकहीथा मगर हीरोंकी परलाइसे दशमुख दिखलाइ देतेथे, इसी सबबसे रावनका नाम दसमुख कहलाया, जवजव-वह-हार-पहनाकरताथा उसके दसमुख दिखलाइ दियाकरतेथे-और-जव-नही-पहनताथा एकही-मुह-नजर आताथा,

जब-राजा रत्नाश्रवने वफात पाइ रावन लंकाके तस्तपर वेटा, और उसकी सलतनत वहतीगइ, वहेवडे राजे महाराजे उसके फरमा बरदार हुवे, लंका-निहायत खूबसुरत और झलाझल राजनी लियेथी बहेवडे आलीशान मकानात उद्यान-बनखंड-और-बाग वगीचे यहांथे, मकान मकानपर सोनेके कलस-और-धजा पताका लगी-रहतीथी, सुनहरी चित्रकारी और नक्शका काम निहायत उमदा बनाहुवाथा, वहेवडे वाजार और वेंशुमार दौलतथी, विद्याधर वंश की आवादी होनेसे उसवस्तके लोग विद्या वलसे आस्मानमें सफर करतेथे,

रामचंद्रनी और लख्यनजीका रावनके शाय यहाँ वहुत भारी जंग हुवाथा, वजह उसकी यहहैिकि-जव-रामचंद्रजी-लख्यनजी-और-सीताजी-अयोध्यासे वनवासके लिये रवाना होकर दंडकार-न्यमें आयेथे रावनने सीताजीके रुपकी तारीक सुनी, और उसकी लेनेके लिये आमादा होकर लंकासे आस्मानके रास्ते दंडकारन्यमें आया, और जब रामचंद्रजीकी गेरहाजरीका मौका पाया सीताजी-को उठाकर लेगया रामचंद्रजी और लखमनजी जब अपने डहरेपर आये और तलाशिक इ-तो-सीताजीको-नही पाया, बहुत उदासहुवे और तलाश करते करते किष्कंधानगरी पहुचे, वहां सुग्रीवसे मुला-कातहुइ, और दरयाफ्त करनेसे माऌमहुवा कि-सीताजीकों-राव-न-लंकामें लेगयाहै, रामचंद्रजी-लल्लमनर्जा-बडी तयारीके शाथ लंका पहुचे, उनके शाथ-वरविराध-सुग्रीव-हनुमान-भामंडल-अंगद-नलनील वगेरा वडेवहादूर और जमामर्द योद्धेये, इधर विभीषण-जोकि–रावनका छोटाभाइथा सीतार्जाके वारेमे रावनकी बेंइन्साफीसे रुटकर रामचंद्रजीकेशाथ आमिला, रावन अपनीवडी फौज हमरा लेकर जिसमें-क्रंभकर्ण-इंद्रजित-हस्त-पहस्त-वगेरा बडेबडे बहादुर योदि मौजुद्थे-रामचंद्रजीके सामने आया, और बडाभारीजंग शुरु हुवा बडेवडे योद्धे अपनी जानपर खेळगये मगर पीछाकदम नही किया, एक रोज क्या-महिनोतक जंगहोतारहा, मगर शर्त यहथी कि-वाद-आफताव-गुरुव होनेके लडाइ मौकुफ होजाय और शुभह होनेपर फिर शुरुहो, एकरोज असाभी मौका आयाथाकि-रावनकी अमोघ शक्तिकी जरबसे लखमनजी बेंहोश होकर गिरपडेथे, मगर दुसरेरौज फिर होज्ञियार होकर संग्राममें आयेथे, और घोरसंग्राम कियाथा, कहांतक उसकाजिक वयानकरे जितना लिखो थोडाहै, आखीरकार रामचंद्रजीकी फतेहहुइ और रावनने सिकस्त खाइ, रामचंद्रजी और ल्लमनजी वडे जुलुसकेशाथ लंकामें गये और अ-पनी सीताजीकों वापिसलिइ, लंकाका राज्य विभीषणकों दिया, रामचंद्रजी और लखमनजी जैसे वहाद्र और जमामर्द शख्श ब-हुत कम निकलेगे. उसजमानेथे किसी दुसरेकी ताकात नहीथीकि-गावनपर-फतेहपावे.

छंकामें उसवरूत जैनधर्मका बहुत प्रचार था, और तीर्थकर शांतिनाथ महाराजका बुछंदशिखरबंद आछिशानमंदिरभी बनाहुवा

था, यहवात जैनशास्त्रोसे सावीत है,-गौतमवृद्धके जमानेमं वौधध-र्मका पचार छंकामे था यहवात बौध मजहवके बास्त्रोसे सावीत है, जगाने हालमे तुतीकोरिन वंदरगाउसे दखनपूरवकी रुखपर लंका-टापुका सदरमुकाम कोलंबो एक मशहूर शहर है, और तृतीकोरिन-से कोलंबोतक ष्टीमर आताजाता है, इसटापुके लंका होनेमें किसीत-रहका शक-वा-थुभहा-नही, क्योंकि-उधर दसरा कोंड औसाटापु नहीकि-जिसको-लंका समझे, अल्बते ! रावनके जमानेमं ज्यादह तरकीपर था, यहवान पेस्तर जमानेके बाख्वोसें सावीत है, मुसल-मानलोग इसकानाम-सरंद्वीप-कहतेहैं, प्राचीन युनानी ग्रंथोमे-टो-परोवेन-(यानी)-रावनका टापु लिखा है, और अंग्रेजी जवानमें सिलोन कहते है, आजकल इसटापुमे-कोलंबो-निंगपू-जाफना-कः लक्षा-चिकामली-कांडी-और-अनिरुद्ध-ये-मशहूर शहर है, लं-काटापुमें इसवरूत वडी नदी-महावली गंगा है, जो-करीव (२००) मील लंबी और उसमे–नाव-वेडे–चलते है, नवारा एलिया नामका एक पहाड-जो–समुंदरके पानीसे (६२००) फीट ऊचा–और-वहांकी आवहवा उमटा है. कोलंबोसे वहांतक रैलजारी है-जो-नवधंटेमें जाकर पहुचा देती है, लंका टापुमें-दारचीनी-काली मीर्च-काफी-चाय-और-इलायची इकरातसे पेटा होती है, और-अकीक-पुख-राज-शंगेयशव-तुरमेळीन-निळश-ळसनिया-गोमेदक-और-विल्लो-र-यहांकी खानोसे निकलते है, हाथीयोंकी पैटाश यहां कसरतसे देखोगे-जिनकी-मजबती-और-रालाकीकों-टुसरे जंगलोके हाथी -न-पासकेंगे, शंखभी यहांके लक्षुंदरमेंसे बहुत निकला करते है, नारीयल-और-सुपारी यहां कसरतसे हुवा करती है, लोहा-और-फिटकरीकी खानेभी इसटाडुमें मौजूद है, आवहवा-यहांकी-उमदा, ऑर यहांके वाशिदोंको अकसर सिंहली कहा करते है, पेस्तर यहां

जवान संस्कृत वोली जातीथी, इसटापुमें कोलंबो शहर वडानामी है, -चीन-जापान-वंबइ-कलकत्ता वगेराकों यहांसे ष्टीमरे जाती है क्योंकि-वंदरगाह वडा है, लंकाटापुमें जमाने हालमें अंग्रेजसरका-रकी अमलदारी जारी है, और लोग अमनचैन कररहेहै,-

तुर्तीकोरिनसे वापिस रेलमे सवार होकर-त्रिचनापछी जंकशन आना, रास्तेके टेशन पेस्तर लिख चुके हैं, िकराया-दोरुपये-दो-आने मेंलदेनके लगेगे, वयान ित्रचनातिल्लीकाभी-अवल देचुके हैं, ित्रचनापल्लीसे रेलमें सवार होकर-त्रिचीपलाकरे-त्रिचनापल्लीफोर्ट-श्रीरंगमरोड-मुरंगापेटे-तिरुचचंदरे-एलामनुर-पेरुगामनी-पेटाइवा-यातालाइ-भरुदुर-कुलीतलाइ-तिमाचीपुरम-लालापेट-महादनपुरम-कतलाइ-पुलीयुर-सनप्पीरटी-कारुर-पुगलुर-नायल-कुडीमुडी-उनलुर-कालानली-पागुर-और-चवाडी पालियम होते इरोड जंकशन आना, रैलकिराया पनरांआने लगेगे.—

😂 [बयान-इरोड-कोचीन-और-कलिकोट,]

त्रिचनापछीसे (८८) मील पश्चिमोत्तर मृतस्सिल कावेरीनदीके इरोड एक उमदा कस्वा है, कस्वेसे मीलसवामीलके फासले पूरवकी तर्फ कावेरीनदीपर (१५३५) फुटलंबा-जिसमे-(३२) मेहरावें लगी है एक-पुल-वंधा है, सन (१८९१) की मर्दुमशुमारीके वस्त इरो-डकी मर्दुमशुमारी-(१२३३०) मनुष्योकीथी, जैनश्वतांवर श्रावको-की दुकाने तीनचार यहांपर मोजूद है, कस्वाइरोड खुशनुमा और-रुइ-चावल-हलदी वगेरा चीजोकी तिजारत यहां अछी होती है, इरोडसे एक पैदल सडक-करुर होती हुइ महीसुरकों गई है, इरोड-सें एक रैलवे लाइन-कोचीन-किलकोट-और-मंगलोरतर्फ गई है, और एक लाइन-सेलम-जालारपेट-होतो हुइ-वेंगलोरतर्फ आई है,

जिनकों-कोचीन-कलिकोट तर्फ जाना हो-उधरको जावे, और जिनकों-वेंगलोर तर्फ आना हो-वेंगलोर तर्फ आवे,—

इरोडसे-कोचीन जानेके लिये-पोद्नुर-उल्वाकोट-और-शौ-रनुर होती हुइ-जो-रैलवे लाइन गइ है उसमे सवार होकर कोची-न-जाय, टेशनसे करीव आध मीलतक शीमरमें वेठकर सामने क-नारे जाया जाता है, किराया देढआना लगेगा. इरोडसे कोचीन तकका रैलकिराया, दो-रुपये-छ-आने लगेगे.

🖙 िकोचीन

मद्रास हातेके जिले मलेवारमें कोचीन-एक अछा कस्वा है, सन (१८९१) की पर्दमशुमारीके वस्त-कोचीनकी-मर्दुमशुमारी (१७६०१) मनुष्योकीथी, जैनश्वेतांवर श्रावकोंकी आवादी-और-मंदिर यहांपर बना हुवा है, वाजार खुशनुमा-जिसमें-हरेक किस-मकी चीजे मिलसकती है, समुंदरके कनारे एक-लाइटहाउसभी मौ-जूदहै, कोचीनको मलवारी लोग−कोची −वोलतेहै, इर्द्गिर्द् कोचीनके− नारियल-केले-कालीमीर्च-कपुरकाचली-पान-साग-कटहल-सोंड और-सुपारी वगेरा चीजे ज्यादह पैदा होती है, जगह सोहावनी-बडे वडे द्रख्तोके झंड-और-जंगल पडे है. कोचीनसे अलपाइ करी-ब (३०) कोसके फासलेपर वाके है, और छोटी ष्टीमरमें बेटकर सम्रंदरके रास्ते जाया जाता है. किराया ष्टीमरका आठआने छगेगे. जैनश्वेतांबर श्रावकोके घर दसवारां और एक मंदिर यहांपर तामीरहै, धर्मशाला-एक-समुंदर कनारे मौजूद है, यात्री उसमे कयाम करे, और जैनमंदिरकी जियारत करे, अल्पाइमें-नारियलकी रसी बहुत वनाइ जाती है. कोचीनसे एक ष्टीमर सिल्टोनकों जाती है, तुतीको-रिनसे ष्टीमरमें सवार होकरकेभी–कोचीन–आसकते है, अगर क-

छिकोटसंभी वजरीये ष्टीमरके कोइ-कोचीन-आनाचाहे-तो-आस-कते है, समुंदरका रास्ता दोनों तर्फसे है, कोचीनके पास समुंदरके कनारे करीव (१॥) कोसके फासलेपर जहाजकी-लंगर-डाली जाती है, कोचीनसे शौरनूरआकर कलिकोट जाना, रैलकिराया शौरनूरसें कलिकोटनक ग्यारहआने,

🖾 [कलिकोट,]

मद्रास हातेके पश्चिमघाटपर जिले मलवारके कनारे-किलकोट एक पुराना शहरहै, सन (१८९१) की मर्दुमग्रुमारीके वरूत किलोटकी मर्दुमग्रुमारी (६६०७८) मनुष्योंकिथी, जैनश्वेतांबर श्रावकोकी आवादी और एक मंदिरभी यहांपर बनाहुवाहै, बाजार उमदा और हरेक किसमकी चीजे यहां मिलसकती है, आसपास किलकोटके-नारियल-कालीमीर्च-केले-और-सोंट वगेरा चीजे कसरतसे हुवा करती है, जगह खुशनुमा-कटहेल-और-नारियलके द्रव्तोंके झंड-खंडे है, समुंदरके कनारे लाइटहाउस बनाहुवाहै, सरकारी कचहरियां-अस्पताल-वेंक-और-स्कुल वगेरा पुरुता इमारतें बनीहुइ मोजूदहै, आवहवा यहांकी अली और तंदुरस्ती बढानेवाली है,—

जोशस्त्र इरोडसे रैलमें सवार होकर-कोचीन-किलकोट जा-ना-न-चाहे-वह-जोलारपेट होते वेंगलोर तर्फ आवे, इरोडसे रै-लमें सवार होकर-कावेरी-अनंगुर-संकारीहुग-मेकडोनाल-चोल-दरी-अस्वितुर-सेलम-तिल्लापटी-काडीमपटी-लोकुर-मलापरम-बुडीरेडीपटी-मोरापुर-काल्लवी-समलपटी-कगनकरे-और-तिल्पा-तुरहोते जोलारपेट-जंकशन आवे रैलिकराया मेलद्रेन एकरूपया सात आने लगेगे,-जोलारपेंट एक लोटासा कस्वाहै, मगर रैलवेका जंकशन होनेसे मशहरहै,— जोलारपेठसे रैलमें सवारहोकर-पचुर-मलनुर-कुपम-गुडु-पल्ली-विसानथम-कामसमुंदरम-बोरिंगपेठ-टेकल-मालुर-देवनकुंडी वाहिटफिल्ड-कुश्वराजपुरम-और-बेंगलोर छावनी होते-वेंगलोर सीटीटेशन उत्तरना, रैलकिराया मेलट्टेन एकरुपथा दोशाने लगेगे,

🐃 [वयान-शहर-वंगलोर,]

जोलारपेटसे (८७) मील-और-महाससें (२९१) मील पश्चिमकी रुखपर वंगलोर एक वडा शहरहै, सन (१८९१) की मर्दुमुरुमारीके वरूत वेंगलोरकी मर्दुमुरुमारी मयकौजी छावनीके (१८०३६६) मनुष्योकी थी, जैनश्वेतांवर श्रावकोकी आवादी और मंदिर यहां बनाहुबाहै, बेंगलोरशहर-दो-हिस्सोमे तकसीमहै, एक-पेट-और-दुसराङावनी (यानी) लशकर कहलाताहै, लश-करके मुत्तस्सिल महीसुरमहाराजका एक-शालिशान महलवना हुवा-जोकि-काविल देखनेकेहै, और यहां एक पुराना किलाभी मीजूदहै, दरमियान पेठ-और-लशकरके कुछ दुरपर घुडदोडका में-दान–वडाळंवाचौडाहे–वाजार वहुत उपदा–और–रवञ्जकदार जिसमें हरेकिकसमका–रेशमी–मृती–कपडा–माळअसवाव–जोचाहो–वखुवी मिळसकता है, वनिस्वत दुसरे शहरोके यहाँ तरहतरहकी वनास्पति-और-फलफलारी इफरातसे मिलसकती है, लशकरमें आलिशान मकानात-और-सडके लंबीचोडी देखोंने, अनाज-और-रुइकी ति-जारत यहां कसरतसें हुवाकरती है, यहां-अलसुर-और-मिहर-नामके दो–तालाव नामी है, इनदोनोंके दरमियानकी जमीनमें लग-करका बाजार और - मकानात बनेहुवे है, यहांका रेशम बहुत मज-बृत-और-उमदा डोताहै,-रेशमी किनारीके मृतीकपडे यहां अछे वनाये जाते है, वेंगलोरके गालीचे नाषी-और-सोनाचांदीके लेस यहां लाइक तारीफके वनते हैं, लालवाग यहां एक काविल देख- नेकी जगहरे, जिसमें तरहतरहकी चीजे-और-नमुने-रखेहुवे-चु-नाचे-गहने-पुशाक-सिके-हिथयार-वगेरा—तरहतरहकी चीजे-हिफाजतसे-रखीहुइहै, लालवाग यहांका एक मशहूर जगहहै जिसमें तरहतरहके फल और फुलकेद्रख्त-लगेहुवे-और-चारपाये जानव-रोमे-श्वेर-हाथी-चीते-रिल-वंदर-हिरनवगेरा मौजूदहै, परींदोमें-तोते-मना-कबुतर-और-रकमरकमकी चीडिया वगेरा रखीहुइहै, बेंगलोरसे एक पैदलसडक-जोलारपेट होतीहुइ मदासकों गईहै, एक-पश्चिम-और कुल्दखन श्रीरंगपट्टन होकर-कनेनुरकों-गईहै,-एकसडक पश्चिमतर्फ-मेंगल्टरको-गई, और-एकसडक-टुमकुर-हरि-हर-हुबली-वेंलगांव होतीहुइ-कोलापुर-और-पुनाकों गईहै,-

वेंगलोरसेरेलमे सवारहोकर-यशवंतपुर-यलहंका-रासनकुंटी-हुडबालापुर--मकलीगङ्ग-ठंडीभावी--गोरीवीदनुर--डडकुरुगाड-हिंदुपुर-मलुगर-चाकरलापली-पेनुकुंडा-मक्काजीपद-नागसमुद्रम-धरमावरम-कडुकुर--अनंतपुर-गरलाडीनी-कुलुरु--पामीडी-खाद-रपेठ-और-गुलापलीयामु-होते-गुंटकलजंकशनआना, रैलकिराया -दो-रुपैयाचार आने नवपाइ, गुंटकल एकलोटासा कस्वाहै मगर रैलकाजंकशन-होनेकीवजहसे मशहूरहे, गुंटकलसे रैलमेंसवारहोकर-वंटनाहाल-वेंवाहाल-विरापुर-और-हगरी-होतेहुवे-बल्लारीजंकशन आना रैलकिराया सातआने नवपाइ,

(द्रवयान-शहर-बल्लारी-और-किष्कंघा,)

गुंटकजंकशनसे (३०) मील पश्चिमकी रुखपर जिलेकासदर गुकाम-बल्लारी-एकरैलवेका टेशनहै, सन (१८९१) की-मर्दुम-शुमारीकेवरूत बल्लारीकी मर्दुमशुमारी मयल्लावनीके (५९४६७) मनुष्योंकी थी, जैनश्वेतांवर श्रावकोकी--आवादी और मंदि्रभी यहांपर मौजूदहै, कस्वा बल्लारी दामनमें बसाहुवा बाजार रव- न्नकदार-और-हरिकसमकीचीने यहांपर मिलसकेगी, आवहवा, यहांकी उमदा-और-निले वल्लारीमें-नमक-सौरा-ज्यादहंपैदाहो-ताहै, यात्री बल्लारीमें जानाचाहे शोखसे जाय और देखे, वरना! आगेकों रवानाहोत्रे, वल्लारीसे रैलमें सवारहोकर बल्लारीकंटोन्मेंट-कुडाटीनी-दाराजी-टोरंगलु-गदीगनुरु-पापीनायकनहल्ली-होतेहुवे होस्पेट-जंकशनउतरना, रैलकिराया चारआने,

बङ्घारीसे (४१) मीलके फासले पश्चिमउत्तरकी रुखपर हो-स्पेट एकरैलवेका टेशनहै, सन (१८९१) की मर्दुमथुमारीकेवल्त होस्पेटकी मर्दुमगुमारी (१२८७८) मनुष्योंकीथी, जैनश्वेतांवर श्रावकोकी चारपांच दुकाने-यहांपर मौजूदहै,-मजीप्ट्रेकी कचहरी-स्कुल-अस्पताल-वगेरा यहांपर) वनेहुवे हैं, होस्पेटसे करीब (७) मीलके फासलेपर-किष्कंघा-एकपुरानाशहरहै, रामचंद्रजीके जमा-नेमें यहां छुश्रीवनामका राजा सळतनत करताथा, और रामचंद्रजी– ळळमनजीभी-जबिक-लंकायुद्धको--गयेथे-यहांत्रारीफ लायेथे-जैनरामायणमें ङिखाहैकि-जमानेसुधीयके किप्कंघा-बडीरवचकपर थी, बागवगीचै-उबान-बनसंड-राजमहेल-और-आलिशान मका नात यहां वनेहुवेंब, और वडेबडे दोलतमंद वाशिंदोसे सरगर्मथी. जबिक-साहसगति विद्याधर और सुग्रीवका यहां-तारारानीकेलिये जंगहुवाथा-रामचंद्रजी और ऌ६मणजी यहां सुग्रीवकीमदृद्कों-आयेथे और उनकी फतेहहुइथी, पेस्तरयहां तीर्थकर शांतिनाथ महाराजके नामका जेनतीर्थया, जमानेहालमें वरवादहोगया, आजकल किप्कं-धाभी छोटासा कस्वारहगयाहै यात्री अगर किप्कंधानगरी देखना चाहे-तो-जाय और देखे, वरना ! होस्पटटेशनसे रैळमें सवारहो-कर-मुर्नाराबाद्-जिनीगिरा-छुप्पल-भानापुर-वन्नीकुप्पा-हरलापुर कंगीनहाल-होते-गद्कजंकशन जाय रैलकिराया नवभाने लगतेहै.

🖾 [बीचबयान-गदक-और-हुबली धारवाड,-]

गुंटकनजंकशनसे—(१२३) मील पिश्वम कुछ उत्तर जिलेथा-रवाडमे—गदक—एक अछाशहरहे, सन (१८९१) की पर्मणुमा-रीके वष्त—गदककी मर्दमणुमारी (२३८९९) मनुष्योंकीथी. जैनश्वेतांवर श्रावकोंकी आवादी और मंदिर यहांपर मोजूरहे, वा-जार खुशनुमा—और -हरेकिकसमकी चीने यहां मिलसकतीहै, रह— और रेशमकी तिजारत यहां अछीहोतीहै, गदकसे—यात्री—रैलमें सवारहोकर—हालकोटी—अन्नीगिरि—डंड्र—और—कुपुगलहोते-—हुब-लीजंकशन—जाना, रेलिकराया—छ—आनेलगेगा,

जिलेधारवाडमें - हुवली - एक अलाबहरहै, सन (१८९१) की मर्दुमशुमारी (५२५९५) मतुष्योंकीयी, जैनलेतांवर श्रावकों की आबादी और मंदिर यहांपर मौजूदहै, यात्री शहरमें जाय और जियारतकरे, सरकारी कवहारियां - अह्पताल - ओर - - स्कुलवगेरा मकान यहां पुख्ता बनेहुवेहै, बाजार रव मकहार - और हरकिस- मकीचीजे यहांपर मअस्सर आसकतीहै, अनाज - नमक - रेशम - औरहइकी तीजारत यहां अलीहोतीहै, हुवलीसे रैलमें सवारहोकर अमरगोल होते धारवाड जंकशन जाना, रैलिकराया अहाइआने छगेगा,

💹 [धारवाड,]

हुबलीजंकशनसे (१२) मील पश्चिमोत्तर जिलेका सदरमु-काम धारवाड एक-रैलवेका जंकशनहै, सन (१८९१) की मर्दु-मशुमारीके वख्त धारवाडकी मर्दुमशुमारी (३२८४१) मनुष्योकी थी. जैनश्वेतांबर आवकोकी आवादी और मंदिर यहांपर मौजूदहै, किला धारवाडका लाइकतारिकके बनाहुवा, अंदर दिवारके और बहारवारभी पुख्ताखाइ लगीहुइहै, वाजार यहांका अला और हरेकचीज यहांपर मिलसकेगी, यात्री शहरमे जानाचाहे शौखसे जाय और जैनश्वेतांवर मंदिरकी जियारतकरे, धारवाडसे रैलमें सवारहोकर-मुगद्-कांवरगंवी-अल्नावर-तवरगटी-नगरगली-दे-वराइ-लौंडा-गुंजी-खानापुर-देमुर-होतेहुवे वेलगांव-आना, रै-लिकराया एकरुपया.

🞾 (बेलगांव,)

जिलेका सदरमुकाम वेलगांव एक गठा शहरहै, सन (१८९१) की मर्दुमशुमारीमें वेलगांवकी मर्दुमशुमारी सयफौजी लावनीके (४००३०) मनुष्योक्षीथी, जैनश्वेतांवर श्रावकोकी आवादी और मंदिर यहांपर बनाहुवाहै, इर्दुगिर्द वेलगांवके द्रष्टतोकी वहुतायत और एकिकलाभी यहांपर माजूदहै, वाजार उमदा हरेकिकसमकी चीजे यहांपर मिलसकेगी, यात्री शहरमें जानाचाहे—तो—जाय और देखे, सरकारी कचहरियां—अस्पताल—गार—स्कुल वगेरा मकानात किंमती वेनहुवहै, नमक—गर्म—नारियलकी तिजारत यहांअछी हुवाकरतीहै और शहर काविल देखनेकहै, वेलगांवसे रेलमे सवार होकर—मुलेभवी—मुल्यवल—पछापुर—और—धुपडलहोते - गोकाक-रोडटेशन आना, रेलकिराया साहसात आने,

🖙 [गोकाक,]

गोकाकरोडटेशनसे करीब (४) मीलके फासलेपर-गोकाक-एक-छोटासा कस्त्राहै, सन (१८९१) की मर्दुमशुमारीके वस्त्र गोकाककी मर्दुमशुमारी (१२४६) मनुष्योकीथी, जैनश्वेतांबर श्रावकोकी आवादी और मंदिर यहांपर मोजुदह, गतपर्वनदीकी-धारा (१७५) फीट उपरसे वतांरचादरके गिरतीहै, गोकाक क-स्वेके नजदीकहोनेकी वजहसे उसकानाम गोकाकका जलन्रपात मश- हूरहै, बाजार गोकाकका अछा और हरेकिकसमकी चीजे यहां मिलसकेगी, गोकाकरोडटेशनसे रैलमें सवारहोकर-चीकोडीरोड-रायबाग-चींचली-कुडली-सेडवाल-मीरज-बुधगांव--तासगांवरोड कुंडलरोड-तकारी-शेनोली--करड--मसुर-आरवीरोड-रहमतपुर-और-कोरेगांवहोतेहुवे-सितारारोडटेशन आवे रैलिकिराया एकरु-पया सवाग्यारहआने लगेगा,—

👺 [सितारा,]

तितारारोडटेशनसे (१०) मीलकेफासले पश्चिमकी रुखपर जिलेकासदरमुकाम-सितारा-एकपुराना शहरहे, दरिमयान टेशन और सितारेके पक्कीसडक बनीहुई, और सवारीके लिये इकाबगी मिलसकती है, सन (१८९१) की मर्दुमगुमारीके वष्त-सिता-रेकी-मर्दुमगुमारी मयफौजी छावनीके (२९६०१) मनुष्योकीथी, जैनश्वेतांवर श्रावकोकी आवादी और मंदिर यहांपर मौजूदहे, सडके लंबीचोडी और मकानात पुरानी वजहकहे, सरकारी कचहरियां-अस्पताल-हाइस्कुल वगेरा मकान पुख्ता बनेहुवे है, और किलाभी सितारेका एक पहाडीपर बनाहुवाहे, यात्री सितारा जानाचाहे-तो-जाय और देखे, वरना ! सितारारोडसे रेलमें सवारहोकर-वथर-(यहांसे महाबलेश्वर जानेकारास्ताहे,)-अडारकी-सल्पा-लोनंद-नीरा-वाल्हे-जेजुरी-राजेवाडी-अलंदी-फुरसंगी-ससवद-रोड-और-घोरपुरीहोते पुनाजंकशन आना, रैलकिराया सवासो-लह आने लगते है,

😂 [तवारिख-शहर-पुना,]

सितारारोड टेशनसे (७८)मील उत्तर-और-बंबइसे (११९) मील दखनपूरवकी रुखपर-पुना-एक-गुलजार शहर है,-टेशनसे

थोडीदुरपर शहरकी आवादी शुरुहोती है और-सवारीके लिये-इका-बगी-तयार मिलतीहै, करीव टेशनके एक धर्मशाला बनीहुइहै मगर जैनश्वेतांवर यात्रीकों शहरमें जाना मुक्तीदृहै, शुक्रवार पेंठमें जैनध-र्मशाल। जहां मौजूदहै, उसमें कयामकरे, सन (१८९१) की मर्देमथुमारीके वरूत पुनाकी मर्दमधुमारी मयछावनीके (१६१३९०) मनुष्योकीथी, दरमियान छावनी और शहरके सरकारी ओकिसे वगेरा मकानात वनेहवे हैं सवारीके लिये इका-बर्गी-हरजगह तयारमिछती है, आदितबारपेठ-बुधवारपेठ-श्क्रवार और शनिवारपेट वगेरामें जैनश्वेतांवर श्रावकोकी आवादी फैळीहुइ, और वैताछपेटमें वडेवडे जैनश्वेतांवर मंदिर वनेहुवे हे यात्री जियारतकरे, पुनाके वाजार वडेखुशनुमा और स्वल्लकदार जिनमें नरहतरहकी चीजे मिलसकती है, सडके लंबीचोडी-मकान रंगरी-शन कियेहुवे और हरजगह पानीकानल लगाहुवाहै, पुनेमें सातदि-नोके नामसे सातमहले मशहरहे और शनिवार महलेमें पेशवीका महरू जिसकों आजकल जुनावाडा कहते है मौजूदहै,

बागवगीचे-सरकारी कचहरीयां-हाइस्कुल-लाइब्रेरी--और अस्पताल वगेरा मकानात यहां पुरुता वनेहुवेहै, यतीमखाना-चि-त्रशाला--और--पींजरापोल--यहांपर कायमहे, रेशमीस्रती कपडे-तांबापीतल--और--मीटीके वर्तन यहां अलेबनते है, हरेकिकिस-मकी वनस्पति-और-फलफलारी यहां कसरतसे हुवाकरती है, चांदी सोनेके गेहने यहां उपदा बनते है, हाथीदांतकी कंघी--और मोरपंखलगेहुवे खसके पंखे-यहां लाइकतारीफके देखोगे,-जिले पुनाके उत्तरपूरवकी रुखपर शहर अहमदनगर-पूरवकीतर्फ सोला-पुर-दखनकी रुखपर नीरावती और वाद जिलासितारा-और-प-श्विमतर्फ थानाजिला है, जमीन उंचीतीची और पश्चिमकी तर्फ

सिंह्याद्रिपहाडकी चोटियां थुरुहै, सिंह्याद्रिसे वहुतसीधाराये निकल-कर भीमानदीमें गिरती है, जिलेपुनेकी खानोसें मकानवनानेके पथर निकलाकरते है,

पुनासे कल्यानीहोकर वंबइ जायाजाताहै रैलिकराया करीब चौदहआने लगेगे, मगर उसमें तीर्थनाशिक बाजुपर रहजायगा, इसलिये पुनासे—डोंड—अहमदनगर—एवला—मनमाडहोते यात्री तीर्थ नाशिककी जियारतकरके वंबइ आवे, पुनासे रैलमें सवारहोकर—हडपसर—लोंनी—उरली—येवत—खेडगांव—और पटास टेशनपर होते डोंड जंकशन उतरे, रैलिकराया दसआने लगेगा, डोंड—जंकशन रवन्नकदार और खानपानकी चीजे यहां मिलसकती है यहांसें ग्रेट-इंडियन—पेनिनसुला रेलवेकी लाइन तीनतर्फ गहहै, चुनाचे—पूरव दखनकीतर्फ वाडी—रायचूरकों—दुसरी लाइन पश्चिम उत्तरकी रुख-पर—पुना—और—कल्याणीको—और—तीसरीलाइन उत्तरतरफ अहमदनगर—और—मनमाडकों गहहै, डोंडसे यात्री रैलमें सवारहोकर—पींपरी—वेलवाडी—विसापुर—सरोला—और—अकोलनेर टेशन होते अहमदनगर टेशन उतरे, रैलकिराया आठआने लगेगा.

👀 [बयान-हाहर अहमदनगर-और-एवला,]

जिलेकासदर मुकाम अहमदनगर एक-रैलवेका टेशनहै, सन (१८९१) की-मर्दुमशुमारीके वच्न अहमदनगरकी मर्दुमशुमारी मयछावनीके (४१६८९) मनुष्योंकीथी, टेशनसे करीब (१) मीलके फासलेपरसे शहरकी आवादी शुरु होती है और सवारीके-लिये टेशनपर इका-बगी-तैयार मिलती है, यात्री शहरमें जाय और जैनश्वेतांवर धर्मशाला-जोकि-खिस्तीगलीमें बनीहुइ है उसमें क्यामकरे, जैनश्वेतांवर श्रावकोकी आवादी और दो-मंदिर-यहां

बनेहुवे है, यात्री जियारत करे, कापडवाजार और गंजवाजार यहां नामी है. हरेक किसमकी चीजे यहां मिलसकेगी तांबे-पीतलके बर्तन-और-गाछिचे यहां लाइकतारीफके बनते है, सरकारी कच-हरियां-स्कुल-अस्पताल-वगेरा मजबुत इमारते यहां वनीहुइ है, शहर अहमदनगरसे करीव (१२) मीलके फासलेपर शिवानदी इ-ब्तिदा है, रैलवेटेशनसे (२।।) मील और शहरसे (१।।) मील पूरवकी रुखपर देढमीलके हिसारमें पथरका एक मजबूत किला यहांपर वनाहुवा है और इर्दगीर्द चोडी खाइभी तामीरिक हुइहै, जिले अहमदनगरकी पूर्वोत्तर रुखपर गोदावरीनदी–पूरवमे कुछ दूरतक हैदरावादराज्य-दखनपूरव-और-पूर्वपश्चिमनर्फ सोलापुर-और पुनाजिला, और पश्चिमोत्तरकी रुखपर जिला नाशिक है,-पश्चिम सरहदके एक हिस्सेके पास पूरवतर्फ फैलीहुड़ सिंह्यादिकी पद्दाडियोंका सिलसिला जारी है,-अहमद्नगरसे रैलमें सवारहोकर यात्री-विलाड-वांबोरी-राहोरी-लाख-वेलापुर-चिताली-पुंतुंबा-संवत्सर-और-कोपरगांव रोडटेशन होते एवला टेशनपर उतरे, रैलकिराया सवाबारां आना लगेगा.

👺 [बयान-शहर-एवला,]

मुताछिक दखनके एवला एक अछाशहरहै, दरमियान देशन और शहरके पकीसडक वनीहुइ और सवारीकेलिये–इका–बगी– तयारमिलतीहै, मकानात एवलेके पुरानेतरीकेके वनेहुवे और बा-जार रौनकदारहै, हरहफतेमें मंगलकेरीज एकमामुली बाजार भर-ताहै, जिसमेंतरहतरहकी जीजे और माल असवाब-मिलसकताहै, जैनश्वेतांवर श्रावकोकीआबादी ऑर एकमंदिर यहांपर तामीरहै, यात्री शहरमें जाय और जियारतकरे, ठहरनेकेलिये मंदिरकेपास एकधर्मशाला बनीहुइहै, शहरएवलेमें जर्राकदुपट्टे-रेशमीकपडे-और कम्प्ल्वाब उमदा बनताहै, सोने-चांदीके गेहने यहां अछेतयारहोते है, सरकारी कचहरियां--स्कुळ और अस्पताल वगेरा मकानातयहां पुरुता बनेहुवे है, लकडीकी नकाशी यहां लाइकतारीफके देखोगे, एवलेसे रैलमें सवारहोकर-अंकाइ-मनमाड-समीट-लासलगांव-जगांव-निफाड-थेरगांव-खेरवाडी-और ओघा देशन होते-यात्री नाशिकरोड देशन उतरे, रैलकिराया पोनसोलहआने लगेगा,-

👺 [तवारिख-तीर्थनाश्विक-और-थाना,]

वंबइहातेके दरमियान-मनमाड जंकशनसे (४६) मील दखन पश्चिमकी रुखपर नाशिकरोड नामका एक रैलवे टेशनहै, और टे-श्वनसे करीब (५) मीलके फासलेपर गोदावरीनदीके दोनों कना-रेपर जिल्लेका सदरमुकाम नाश्विक एक पुरानाशहरहै, पेस्तरके ज-मानेमें इसकानाम पदमपुरथा, और यहांपर एक-त्रिभ्रुवनतिलक-चंद्रप्रभस्वामीका निहायत उमदा आलिक्शान मंदिर बनाहवाथा. पेस्तर यहां जेनोंकी आवादी ज्यादहथी जमाने हाळमें कमहोगइ, सन (१८९१) की-मर्दुमथुमारीके वख्त नाशिककी मर्दुमथुमारी (२४४२९) मनुष्योंकीथी, जैनश्वेतांवर श्रावकोके घर करीब (२५) मंदिरभी यहांपर वनेहुवे हैं, यहांके मकानोपर नकाशीदार लकडीका काम ज्यादह देखोगे, जगहजगह गिळयोमें फाटक बनेहुवे है, बा-जार रवन्नकदार और हरेकिकसमकी चीजे यहांपर मिललकती है, तांबेपीतलके वर्तनोकी-दस्तकारी-यहां लाइकतारीफके होती है, और यहांके बनेदुवे वर्तन मुल्कोमें मञ्चहूरहै, सरकारी कचरि-यां-स्कूल-अस्पताल वगेरा मकानात यहां पुरुता बनेहवे और सडकोंपर रातकेवरूत लालटेनोकी रौशनी लगती है, नाशिकशह-रको वैदिक मजहबवालेभी-तीर्थ-मानते है, और गोदावरी न**दीके** बायेकनारेके हिस्सेमें पंचवटी मौजूदहै, जिळेनाश्विकके उत्तरकी रुख-

पर जिलाखानदेश-पूरवकीतर्फ-सलतनत हैदराबाद-दखनकी रुख-पर जिलाअहमदनगर-और-पश्चिमतर्फ थाना जिलाबाके है, जिले नाशिकमे पहाडियां और जंगल कसरतसे देखोगे,

नाशिकरोड टेशनसें रैलमेसवार होकर-देवलाली-असवाली-घोटी-इगतपुरी-कसारा-खरदी-अटगांव-असनगांव-वासिंद-खा-दोली-तीतवला-कल्याणीजंकशन -डोमविवली--डीवा-मंत्रा-और-पारसिकटेशन होतेहुवे-थानाटेशन उतरना, रैलकिराया देढरुपया छगेगा,--

ष्ट्र [थाना,]

नाशिकरोड टेशनसें (९५) मील पश्चिम द्खनकी रुखपर-औरनंबई विकटोरिया टर्मिनससे (२१) मील पूर्वोत्तर-थाना-एकपुराना शहरहे, तीर्थिकर मुनिसुत्रतस्वामीके जमानेमें-राजाश्रीपालजी
जबिक-उज्जेनसे रवानाहोकर मुल्कोकी सफरको गयेथे यहांभी उनकाञाना हुवाथा, और यहां जैनमंदिर मौजुद्ये, सन (१८९१)
की मर्दुमशुमारीके वच्न थानेकी मर्दुमशुमारी (१७४५५) मनुष्योकीथी, जैनश्वतांवर श्रावकोकी आवादी और मंदिर अवभी यहां
मौजूदहे, सरकारी कचहरियां-िकला-अस्पताल-और-कइजलाश्य
यहांपर बनेहुवेहै, कइसरकारी ओफिसर थानेमें रहते है और हरहमेश बजरीये रैल बंबइपहुचकर अपनाकाम-िकयाकरते है, पेस्तर
थानेमें रेशमकाकाम ज्यादह होताथा जिलेथानेकी जमीन अकसर
पहाडियोके सिलसिलेसे घीरीहुइ और यहांके जंगलोमें लकडीकी
पैदाश बहुतायतसेहै, थानेसे रैलमे सवारहोकर यात्री-मुलंद-भांडुपविकरोली-घाटकोपर-कुरला—सिओन-माहंगा-दादर-परेलकरीरोड-चिंचपोखली--भाइखला--मझगांव--आर-मश्जिददेशन

होतेहुवे–विकटोरियाटर्मिनस (बोरीबंदर) टेशन आवे, रैलकि-राया पांचआने लगेगा,

बंबइकी तवारिख पेस्तर इसिकतावमें दर्जिकिइहुइहै, चुनाचे, इसिकतावकी इब्तिदा-और-इंतिहा-वंबइशहरहै, हमने बंबइसे स-फरका लेख लिखना शुरुिकयाथा, असनाये राहमें जोजोशहर और जैनतीर्थ आतेगये उनकावयान लिखतेहुवे यहांतक आगये-जहांतक बना जैनशास्त्रोसे-इतिहासिक किताबोसे-और-अपनीन-जरसे देखाभाला इसमें दर्जिकियाहै,—

एडनमें जैनश्वेतांवर आवकोकी आवादी और मंदिर बनाहुवाहै, हिंदुस्थानके कई जैनश्वेतांवर आवक वास्ते रोजगारके वहांजाकर बसेहुवे है, मुल्क आफ्रिकाके पूरवकनारेपर जंगवारटापुमें जैनश्वेतांवर आवकोके घर करीव (४०) और एक जैनश्वेतावरमंदिर मांजूदहै, दाळगोवाबंदरमें जैनश्वेतांवर आवकोके घर करीव (१५) और एक छोटासा चैत्याळय बनाहुवाहै, लींडीवंदरमें—और—मुंबासावं-दरमेंभी इसीतरह छोटासा चैत्याळय और करीव पनरावीस आव-कोके घर आवादहै, अगर कोई जानाचाहेतो—बंबइसें—बजरीये ष्टीमरके जासकते है,—

[अब उनउन जैनतीर्थोका बयान बतलायाजाता है जोजमाने हालमे विरान–या–नामातर होगये है,]

१-चुनाचे-नजदीक अयोध्याके पुरीमताल-शाखानगरमें-ती-र्थंकर आदिनाथमहाराजके नामका एक जैन तीर्थथा, जमानेहालमें नेस्तनाबुद होगया, २-तक्षाशिलानगरी-जोकि-हिंदुस्थानके बहार-बारथी बाहुबल विनिर्मित धर्मचक्रनामका वहां एक जैन तीर्थ था वोभी अब जरेजमीन होगयाहै, ३-प्रयागतीर्थमें तीर्थंकर शीतलनाथ महाराजके नामका एक जैन तीर्थंथा वोभी अब विरान होगया, ४-प्रभासमें शिश्यण चंद्रप्रभ-ज्वालामालिनी देवतावसरनामका गौतमस्वामिप्रतिष्टित एक जैनतीर्थं था मगर वोभी अब नजर निह आता, ५-प्रतिष्टानपुर-जोकि-मुल्कद्खनमें पेंठनके नामसे मशहुर है, पेस्तर वहां तीर्थंकर मुनिमुत्रतस्वामीके नामका जैनतीर्थंथा, ६-हेमसरोवर-और-मानसरोवरके कनारेपर जैनतीर्थंथे अब नजरनिह आते, ७-कोटिशिलाके पाम एक जैनतिर्थंथा उसकाभी कुछ पता निह लगता, ८-कादंबरीअटवीमें किलकुंड पार्थनाथमहाराजके नामका एक जैनतीर्थंथा, ९-हिमालयकी उत्तरमें जहां पृष्ट चंपानगरी थी शालनामका राजा अमल्हारी करताथा, और महाशाल उसका छोटाभाइथा, जैनआगम-आवश्यकसूत्रके अवल अध्ययनमें वयान है कि-तीर्थंकर महावीरस्वामी वहां तशरीफ लेगयेथे और-शाल-महाशालकों दीक्षा दिइथी,

१०-दंडकारन्य नहांकि-रामचद्र नी-लल्लमननी और-सीतानी वनवासके वस्त रीनक अफ री जहुवेथे. मध्यहिंदमें शुमाराकिया जाता है, ११-विराटमें नहां पांचपांडव वनवासके वस्त ठहरेथे पेस्तर वहां जैनतीर्थथा, १२-तारातंबोलमें जैनतीर्थथा अवभी स्थातहोगा मगर पता नहिलगता, १३-ताम्रालिप्ती नगरीमें जैन तीर्थथा, १४-गंगा यमुनाकी वेणीसंगमके पास-जो-आदिक मंडल नामका और तीर्थकर कुंशुनाथमहाराजके नामका जैनतीर्थथा फिलहाल उसकाभी कुल नामनिशान मालूम नहिहोता, १५-माहेंद्रपर्वतमें पदम्मभुके नामका-और-लाया पार्श्वनाथके नामका जैनतीर्थथा वोभी अव नाश होगया, १६-गंगानदीके पास विमलनाथमहाराजके नामका एक जैनतीर्थथा वोभी अव-न-रहा, १७-त्रिकुटगिरि पर्वतमें तीर्थ-

कर शांतिनाथमहाराजके नामका एक जैन तीर्थथा-वोभी-अब ज-मीनदोस्त है, १८-श्रीपर्वतमें तीर्थंकर मिलनाथमहाराजके नामका एक जैनतीर्थथा त्रोभी बरबादहोगया, १९-माणिक्यदंडकमें तीर्थ-कर मुनिसुत्रतस्वामीके नामका एक जैन तीर्थथा वोभी अब जेरेज-मीन होगया, २०-शंखिजनालयमें-और-२१-स्थंभतीर्थमें-पाताल गंगाभिधान-और-तीर्थंकर नेमिनाथमहाराजके नामका जैनतीर्थथा जमाने हालमें विरानहोगया, २२-दंडखातमें भव्यपुष्करावर्त-पार्थ-नायमहाराजकेनामका जैनतीर्थथा वोभी अब-न-रहा, २३-भायल स्वामीगढमें देवाधिदेवके नामका एक जैनतीर्थथा वोभी अब नेस्त-नाबुद्दे, २४-गमज्ञयनमें पद्योतकारि-श्रीवर्धमानस्वामिके नामका एक जैनतीर्थया-वोभी अब जमीनदोस्तहै, २५-सिंह्याद्विपर्वतमेंपेस्तर जैनतीर्थथा वोभी अब जेरेजमीन होगया, २६-म्रुल्कद्राविडमें पेस्तर जैनतीर्थथा, २७-कान्यकुब्जमें पहेले जैनतीर्थथा, २८-खेंगार**गढमें** उप्रसेनपूजित-मेदिनीमुकुट-आदिनाथमहाराजके नामका जैनतीर्यथा, जमानेहालमें उसकाभी सुराग नहीलगता, २९—नगरमहास्थानमें युगादिदेवके नामका एक जैनतीर्थथा अब-वोभी-नजर नाहआता. ३०-महानगरीमं-और-३१-उदंडविहारमें तीर्थकर आदिनाथमहा-राजके नामका जैनतीर्थथा-वोभी-अब जेरेजमीन होगया.

३२-काशहृदमें त्रिभुवनमंगलकलश-आदिनाथ महाराजके नामका जैनतीर्थका अब उसकाभी पतानहीलगता, ३३-सोपारक पत्तनमें जहांकि—राजाश्रीपालजी तशरीफ लायेथे तीर्थकर रिषमदेव-महाराजका जैनतीर्थथा जमानेहालमें बरबादहोगया, ३४-मोक्षतीर्थमें तीर्थकर नामनाथमहाराजके नामका जैनतीर्थथा, अब-बोभी-मही-रहा, ३५-बंदरीमे-३६-तारणमे-और-३७-विश्वकोटि शिलापर तीर्थकर अजितनाथ महाराजके नामका जैनतीर्थथा इसवख्त उस-

काभी नामनिशान नहीमिलता, ३८-अगंदिका नगरीमें-अजितनाथ और-शांतिनाथमहाराजकेब्रहमेंद्रदेवतावसरनामका जैनतीर्थथा अव सरेदस्त-वोभी-पिटगया, ३९-नर्मदानदीकी जहां--बुनियादहै सेगमतीय्रामके करीव तीर्थंकर अभिनंदनमहाराजके नामका जैनती-**र्थया जमाने**हालमें–वोभी–विरान होगया, ४०–कोंचद्वीपमें–और**–** ४१-इंसद्वीपर्मे-तीर्थकर सुमातेनाथ महाराजकी-देवपादुकाके नामका **जैनतीर्थथा** अव वोभी नहीरहा, ४२–आंबुरी गांममे–श्रीमतीदेवके नामका जैनतीर्थथा वोभी अव उजडहोगया, ४३-कोयाद्वारमें सु-विधिनाथमहाराजके नामका जैनतीर्थथा अव उसकाभी कुछपतानही **४४-विंध्याचलमें** जहांकि-हाथीयोंकी पैदाश ज्यादृहथी-कद्लीवन षदी रवन्नकदार जगहथी-गुप्तपार्श्वनाथ महाराजके नामका जैनती-र्थया-बरबाद होगया, ४५-मलयागिरिपहाडमें-तीर्थकर-श्रेयांस-नाथमहाराजके और पार्श्वनाथमहाराजके नामका जैनतीर्थथा जमा-नेहालमें वोभी-नेस्तनाबुद होगया, ४६-हारवतीमें-४७-देसमुद्रमें-और-४८--शाकपाणिमें-तीर्थकर अनंतनाथमहाराजके-जैनतीर्थथे-जमानेहालमें -वेभी-नेरेजमीन होगये, ४९-अजागृहमें-और-५०-स्थंभनतीर्थमें नवनिधिपार्श्वनाथके महाराजके नामके जैनतीर्थये-अब-वेभी-नाशहोगये, ५१-करहेटकमें- उपसर्गहरपार्श्वनाथ महा-राजके नामका एकजैनतीर्थथा वोभी अव विरानहै, ५२-अहिछत्ता-नगरीमे त्रिभुवनभानुके नामसे जैनतीर्थथा-अव-वोभी-नजरनही-आता, ५३-कलिकुंडमें-और-५४-नागहृद् तीर्थंकर पार्श्वनाथ महा राजके नामका तीर्थंकरथा, वोभी अव-वरवादहोगया. ५५-कुकटे-**श्वरमे-विश्वगजपार्श्वनाथ -और-५६-त्रेंकारपर्वतमें**-सहस्रफणीपार्श्व-नायके नामका तीर्थथा, ५७-महाकालांतरस्थानमें-पातालचकवर्ती पार्श्वनाथमहाराजके नामका जैनतीर्थथा, ५८-डाकुलीभीमेश्वरस्थानमें तीर्थकरपार्श्वनाथ महाराजके नामका जैनतीर्थथा उसकीभी कुछखबर

माॡमनहीहोती. ५९-रोहणाद्रिपहाडमें-तीर्थंकर महावीरस्वामीका तीर्थथा-वोभी-अवनहीरहा, ६०-माहेरमें, ६१-वायडमें, ६२-मेतुंडकमें-६३-मुंडस्थलमें, और-श्रीमालपत्तनमे एकएक जैनतीर्थये मगर- वेभी-नेस्त-व-नामुदहोगये, ६५-कुंड्याममें-६६-टंकास्था-नमे, ६७-गंगाझीलमें,-६८-सरस्थानमें, पुंद्रपर्वतमें, और-७०-नंदीवर्द्धनकोटिभूमिमेभी-एकएक जैनतीर्थथे मगर उनकाभी कुछपत्ता नहीलगता.

७१-तिमालमें, ७२-मुरींडमें, ७३-श्वेतंविकानगरीमें-७४-च-र्मणवतीनदीकेकनारे-ढींपुरीनगरीमें-पेस्तर जैनतीर्थथे वेभी अवनदी-रहे, ७५-राजाश्रीपालजीके जमानेमें मुत्तस्सिल रत्नसंचया नगरीके तीर्थकर आदिनाथ महाराजके नामका जैनतीर्थथा, ७६-मुल्कनार-बाड-कस्वे-सांचोरमें तीर्थकर महावीरस्वामीका तीर्थइसवल्त मौजु-दहे, मुल्कवर्मामें जो-आवानामका शहरहे, चंदराजाकेचरितसें मा-लूमहोताहे सायत! वही पेस्तर आभापुरीहो,

[👺 तीर्थअष्ठापद्,]

अष्टापदतीर्थ-जोकि-मुताबिक जैनशास्त्रके फरमानसे-वैताल्य पर्वतके दखनमें वाकेहै आजकल यहांसेकोई-वहां-जा-नहीसकता,

👺 [जैनचैल-स्तवः,]

(स्रग्धरा-वृतम्,-)

सद्भक्तया देवलोके रिवशिश्वामवने व्यंतराणां सिकाये, नक्षत्राणां निवासे ग्रहगणपटले तारकाणां विमाने, पाताले पंत्रगेंद्रे स्फुटमणिकिरणे ध्वस्तसांद्रांधकारे, श्रीमत्तीर्थकराणां प्रतिदिवसमहं तत्रचैत्यानिवंदे,

वैताढचे मेरुशृंगे रुचकगिरिवरे कुंडलेइस्तिदंते, वक्षारेक्कटनंदीश्वरकनकगिरौ नैषधेनीछवंते, चित्रेशैले विचित्रे यमकगिरिवरे चक्रवाले हिमाडो, श्रीमत्तीर्थकराणां प्रतिदिवसमहं तत्रचैत्यानिवंदे, श्रीशैले विंध्यशृंगे विमलगिरिवरे हार्बुदेपावकेवा. सम्मेते तारकेवा कुलगिरिज्ञिखरेष्टापदे स्वर्णज्ञैल, संबाद्रो चोज्जयंते विपुलगिरिवरे गुर्जरे रोहणाडा, श्रीमत्तीर्थेकराणां मतिदिवसमहं तत्रचैत्यानिवंदे आघाटे मेदपाटे क्षितितटमुकुटे चित्रकूटे त्रिक्टे, ळाटे नाटे च धाटे विटिपयनतटे देवकूटे विराटे, कर्णाटे हेमकूटे विकटतरुकटे चक्रकोटे च भोटे, श्रीमत्तीर्थेकराणां पतिदिवसमहं तत्रचैत्यानिवंदे, श्रीमाले मालवे वा मलयजनिखिले मेखले **पी**च्छ**ले वा,** नेपाले नाहलेवा कुवलयतिलके सिंहले मैथले हा. डाहाले कौशले वा विगलितसिलले जंगले वा तिमाले, श्रीमत्तीर्थकराणां पतिदिवसमहं तत्र चैत्यानिवंद, अंगे वंगे कलिंगे सुगतजनपदे सत्प्रयागे तिलंगे गोडे चौडे मुरींडे वरतरद्रविडे उद्रियाणे च पोह, आर्द्रे मार्द्रे पुर्लीद्रे द्रविडकुवस्रये कान्यकुब्ने सुराष्ट्रे, श्रीमत्तीर्थकराणां प्रतिदिवसमहं तत्रचैत्यानिवंदे, चंपायां चंद्रमुख्यां गजपुरमथुरापत्तने चौजयिन्छां, कौशब्यां कोशलायां कनकपुरवरे देवगिर्याच काश्यां, नाशिक्ये राजगेहे दशपुरनगरे भदीले ताम्रलिज्यां, श्रीमत्तीर्थेकराणां प्रतिदिवसमहं तत्रचैत्यानिवंदे, 9 स्वर्गे मर्त्येतिरिक्षे गिरिशिखरद्रहे स्वर्णदीनीरती है,

त्रीलाग्ने नायलोगे जलनिधिपुलिने दुर्गमध्येत्रिसंध्यं,
ग्रामेरन्ये वने वा स्थलजलिवषमें भूरुहाणां निकुंजे,
श्रीमत्तीर्थकराणां भितदिवसमहं तत्र चैत्यानिवंदे,
श्रीमन्मेरुकलाद्री रुचकनगवरे शाल्मली जंबुद्दक्षे,
चौजन्य चैत्यनंदे रितकरुष्चके कुंडलेमानुषांगे,
इक्षुकारेंजनाद्रीं दिधमुखिक्षस्वरे व्यंतरे स्वर्गलोके,
श्रीमत्तीर्थकराणां मितदिवसमहं तत्रचैत्यानि वंदे,
इध्यं श्रीजैनचैत्य स्तवनमनुदिनं ये पठंति प्रवीणाः
पोद्यत्कल्पाणहेतुं किलमलहरणं भिक्तभाजिस्तिसंध्यं,
तेषांश्रीतीर्थयात्राफलमनुलमलं जायतेमानवानां;
कार्याणांसिद्धिष्टचैः प्रमुदितमनसां चित्तमानंदकारि. १०

(जैनतीर्थगाइडका-दुसरा-भाग-पूर्णहुवा,-)

[अनुष्दुप्-वृत्तम्,]

अनर्घाण्यपि रत्नानि-लभ्यंते विभवैःसुखं, दुर्लभो रत्नकोटयापि-क्षणोपि मनुजायुषः १ आर्यदेशश्च तत्रापि-सुकुलं निर्मलामितः विशिष्ट गुरुसंपक्की-भूरिभाग्यैरवाण्यते, २ या देवे दवता बुद्धिः-गुरौ च गुरुता मितः धर्मे च धर्मधी श्रद्धा-सम्यक्त मिद्युच्यते, ३

🍱 [नसीहत-उल-आम,]

१-नरदेह वारवार नहीमिळता, इसकों पाकर जोकुछ वनपढे नेंकीकरों हरशुभह चारघडी रातरहते नींद छोडदो, आफताव तुछ-होयेतक सोतरहना अछानही, जब विस्तरसे उठो पेस्तर अपना सांस देखळो, चंद्रस्वर चळताहै-या-सूर्यस्वर ? अगर चंद्रस्वर चळताहै तो वायापांव-और-सूर्यस्वर चळताहै तो दाहनापांव जमीन पर रखो, वाद अपनी जरुरी हाजतोसे फारिंग होकर तीर्थकरदेवोकी इवादत करो, जवकोइ मर्द-या-औरत मंदिरमें देवदर्शनको जाय अपने वदन और ळिवासकों साफकरके जाय, यह नहीकि-नापाक बदन और ळिवाससे मंदिरमें चळेजाय, अपहके वरुत जंगळकी हवामें घुमना निहायत मुफीट्है, मगर रास्तेमें कीडेमकोडोकों वचा-कर घुमना चाहिये, ताकि-उनपरभी कुछ तकळीफ-अ-गुजरे,साफ हवा इस्तिमाळ करनेसे वदनकी वीमारी रफा होतीहै, और ताका-तवहतीहै, जोळोग हमेशां गादीतकीयेके सहारेवेठे रहतेहैं और अपने जिस्मको तकळीफ नहीदेते, यादरहे! वीमारी उनके छिये हमे-शां हाजिररहतीहै, क्यौकि-उनके जिस्मसे पसीनावहार नहीहोसकता,

२-शास्त्रमें सुनतेहो राजेमहाराजे लोग जब शुभहको उठतेथे अपने बदनकी शुस्ति रफा करनेकेलिये पहलवानोसे इस्ती किया करतेथे, कल्पसूत्रके मूलपाटमें देखलो सिद्धार्थराजाकेलिये क्या ब-यान लिखाहै, ? अलबतां ! जइफोंकों कसरत करनेकी कोइ असी चंदा जहरतनहीं, जोलोग दंडपेलते हैं उठवेठ करतेहें असी कसरत नादानीकी करसतहै, जब किसीके बदनमें कसरत करनेसे कुलप-सीना आजाय तो उसवस्त गंदीहवासे अपने जिस्मको जहरवचा-नाचाहिये, हरेकशस्त्रको सुनासिबहै अपनी हाजत रवाइको दुरजन

गहपर जावे, मशानमें जहांकि—मुर्दे जलायेजातेहो वहांपर-न-जावे,
गुप्तमोरियां जोकि—हमेशां गंदीरहाकरतीहै उसमे पेशाव-न-करे,
म्रुताविक धर्मशास्त्रके देखाजायतो गुप्तमोरीमें पेशावकरना सबब
पापकाहे, क्योंकि—उसमें अकसर जीवोंकी पैदाश हुवाकरती है,
सांप-या—चूहोंके बिलमें पेशावकरना बिल्कुल नामुनासिवहें, एक
वस्त्तका जिक्रहें किसीशस्त्राने सांपके बिलमें पेशाव करना शुरुकिया, उसकीधार जब विलक्षेभीतर गई फोरन! उसमेंसे एक सांप
निकलआया, इधर पेशाबकरनेवाला मारेखोफके ऐसा भागनिकला
कि—जससे उसके कपडे सब नापाक होगये, कहां! इससे क्या!
फायदा हुवा ? इसीसे अले लोगोंनें कहाहैकि—ऐसी बातोंसे
परहेज करो,

३-हरेक आदमीकों चाहियेकि-विना-दात्निकये कोइचीज
अपने मुहमें-न-डाले, जो शख्श दातुन नहीकरते उनके मुहसे बद
बू आती है, जिसके मुहमें छालेपडगयेहो-या-जलनहोतीहो उसरीज
दातुन-न-कियाजाय कोइहर्जकी वातनहीं, जिसका गला वेठगयाहो-या-होठ फटगयेहो-वह घीके कुरलेकरे, या दूधका इस्तिमाल
रखे, जरुरफायदा होगा, जिसको तैरना-न-आताहो गहरेजलमेंन-कुदे, नहाते वख्त-ख्वाह मर्दहो-या-औरत हर्गिज! नंगे-ननहावे, एकदुपट्टा-या-साडी-बदनपर जरुरखे, बाद स्नानके देवपूजनमे मशगुलरहे, दुनियादारोकेलिये देवपूजन करना निहायत
फायदेमंदहै, जबकोइ देवमंदिरमें जावे हथियार शाथ-न-लेजावे,
जूते-लकडी वगेरा चीजभी बहार छोडकर अदबकेशाथ जावे. जब
देवम् किंके सामने पहुचे तीनमरतवे सीरझकाकर ताजिमकरे, और
तीनवख्त अतराफ परकम्मादेवे, पूजाकरनेका हुकम जैसे मर्दकोहै
वैसे औरतकोंभी है, पूजाकरतेवख्त लिवास और जिस्मको पाकरखे

अगर कोइ साज-और-संगीतकलाका जाननेवालाहो-तो-वाजेके शाथ उमदातीरसे गायनकरे और तीर्थकरोंकी इवादतकरे, पूजनमें इरादा पाकहोनेके सबब भावहिंसा नहीं. और विनाभावहिंसाके पापनहीं, पाकइरादेसे तीर्थकर देवोकी मृत्तिकी पूजाकरनेसे अशुभक-मंकी निर्जरा और पुन्यानुवंधिपुन्य हासिलहोताहै, धर्म और पीत जोरावरीसे नहींहोती, जिसकेएर देवद्रव्यका पैसाहो फारन! देदि-याकरे, जो लोग नहींदेते गोया! अपना विगाडकरतेहैं, धर्मकेकाम में दगावाजी करना अछानहीं,

४-अगर शहरमें अपने मजहबी गुरु आयेही तो व्याख्यान सुननेकों जरुरजाना चाहिये, जिसशस्त्रने देवपूजन-न-कियाहो और शास्त्रसुननेका वरूत करीव आजाय तो पहलेशास्त्र सुने और पीछेदेवपुजनकरे , क्योंकि-वगेर शास्त्रपुने देवपुजनकी पहिचानठीक नहीहोती, म्रुनिलोगोको चाहियेकि-कोड् अमीर हो-या-गरीव दोनोकों एकसागिने, अैसा-न-करेकि-कहीं दोलतमंदकी तर्फ ज्यादह तवज्जोकरे और गरीवकों-न-पुछे, पेस्तरके मुनिलोग शह-रके बहार उद्यान-या-वनखंडमें रहाकरतेथे जवकोइ जैनमुनि शा-स्रका व्याख्यान बाचरहेहो, और उसहालतमें कोइश्रावक व्याख्या-नमें आनकर वंदनाकरे म्रान उसका धर्मलाभ-न-द्वे, क्यौंकि-व्याख्यानमें खलल होगा, चलते व्याख्यानमे श्रावक स्केटावंदना करे, स्थोभ-वंदना-न करे, जबतक शास्त्रकी वाज खाग-न-हो-वीचमें कोइ उठेनही. और अगर कोइ किसीकों गुलाने आवे-तो-म्रुहसे कुङ-न−बोले, इसारेसे इसकाजवाव देवे, अगर किसीकेधेर कोइ मोत होगइहो-या-किसी किसमका सोगहो-तोभी-शास्त्र अननेमें सोग-न-रखे, एकश्रावकका नवजुवान लडका रातकेवस्त गुनर-गया, और अभहके वरूत उसके देहका अग्निसंस्कार करके कुछदे-

रकेबाद शास्त्रकी वाज सननेकों हाजिरहुवा, गुरुजीने व्याख्यान ख-तमहोनेपर पुछाकि—आजदेर क्यों हुइ ?—उसने जवाबिदया एक— मेहमान—आयाथा उसको विदाकरने जानापडा जिससे देरीहुइ, गुरुजीकों माळूमनहींथा एक दुसरे श्रावकने कहा, गुरुजी ! इसका नवजुवान लडका मरगया—तोभी—यह अपनी हुस्नेएतकात शास्त्रकी वाजसननेकों आयाहै, गुरुजीने कहा तारीफहै इसकी—और धर्मका पावंद होतो ऐसाहो.

५-शास्त्रका वयान सुनतेवरूत अगर किसीकों कोइ सवालक-रना मंजूरहो विनयसे करे, किसी किसमकी वांकीटेडी वात-न-करे और अगर अपनी भूलपर गुरुजी कुछ सख्त वातकहे-तो-उसका बुरा-न-माने, और हक बातको समझे, जिसकादिल साफहोगा शास्त्रकी बातपर उसकों फौरन! असर होगा, जिसका दिल साफ न-होगा उसकों किसी तरहका असर-न-पहुचेगा, चुनाचे ! जिस घडेमें लहसन और प्याज डालागया होगा उस्मे दूधडालेतो दूधका असर न होगा, क्योंकि उस्मे लहसन और प्यानकी असर पेस्तर मौ-जूदहै. एक वरूतका जिक्रहै गुरुजीने अपने चेलेकों कहा-तुं! पापकेकाम मतकियाकर जिससे दौजकमें जापडे, चेलेने जवाबदिया गुरुजी ! में–दोजकका रास्ता कब जानताहुं, रास्ता वतलानेको तो आपही आओगे, गुरुजीने कहा ऐसीऐसी वातोंसेंहीतो तेरे दिलकी सफाइ जाहिरहै, चेलेने कहा गुरुजी! वेशक!! मेरादिल साफनही, आप कोइ ऐसी तरकीव वतादेवेकि-जिससे-भरादिल साफहोजाय, गुरुजीने कहा जाओ! किसी हकीमसाहबका घर तलाशकरो, और एक-दस्त-या-उल्टीकी दवा लेलो, दिलसाफ होजायगा, चेला इसमाकुल जवाब सनकर शर्मीदा हुवा, और चुप होगया ऐसे गुस्ताख चेलेकों ऐसाही जवाब काकीहोताहै,-

६-हरेक शख्शकों चाहिये वदनपर कपडा साफ पहने, चाहे कमकीमतका क्यों-न-हो ? मगर साफहोना चाहिये, जोलोग दौल तमंदहै मगर वसवव कंजुसीके अछेकपडे नही पहनते उनकी कदर नहीहोती, अछेकपडे पहननेसे खजाना खाली नहीहोता, खजाना उसवख्त खाळीहोगा जब तकदीरका सितारा जोफखायगा. अगर तुमकों रोजगारमें पैदाश अछी है-तो-गुलाय केवडा वगेराहके इत-रोसें अपने कपडे और छिवासकोंभी खुशवूमें वसायाकरो, मगर यादरहे ! अकेले अपने वदनकोंही सिंगारना वहेतरनही, देवमूर्त्ति-कोंभी इतर वगेरासे तवजो-व-मुदारातकरो, हरेक शख्शकों चाहि-येकि–अपने हाथमें एक अंगृटी पहनेरहे, ताकि–वरूत जरुरतपर काम आसके, अगर वनसकेतो एक जेंवघडीभी पासरखो, ताकि-वरूतभी-माऌ्मरहे, हरश्रष्शको लाजिमहै जब घरसेवहार जावे कुछ रुपये पैसेभी अपने हमराहरखे, वजह उसकी यहहैकि-तुमकों-अगर किसीने अमीर समझकर कुछ सवालाकिया तो जरुर उसको न-कुछदेना होगा, या-कोइ-दिलपसंद्चीज नजरपडी तो उसकों मौल लेनेकाभी खयालहोगा, सौचो ? अगर उसवस्त रूपये प्रैसे पास-न-होगेंतो क्यों कर मौळळेसकोगे, ? सोहागन औरतकेळिये नथ-कंगन-और-नेवर पहनना जरुरीयातसेहै, ताकि-मालुमहोसके यह औरत सोहागनहै.

७-खानपानकेलिये--गेहु-चावल-घी-सकर-दूध--बादाम-पि-स्ते-किस्मीस-ये-ताकतवर ची जेहै, अगर अपना खजाना तरहो-तो-इनची जोंका इस्तिमाल रखना बहेत्तरह, ताकि-बदनकी ताकात और कौवत बनी रहे, जिस्ममें-ताकात-न-होगीतो धर्मभी-न-होस-केगा, हरेकश खश-जोकि-दोलतमंदहै रौजमररा पांचतोले बजन तक-घी-खायाकरे, ताकि-जिस्मके आजा और हाइयोमें ताकात

वनीरहे, जोलोग रोटियोंके मोहताजहै उनकेलिये यह अमर दुसवार है, मगर दौलतमंदोकेलिये कोइ म्रुक्किल वात नही, जवार–वाजरीकी रोटीभी अगर दुरुस्तगीके शाथबनाइगइहो-तो-खानेमें कुछ हर्जनही, गरीवलोग इसीसे अपनागुजर कियाकरतेहैं, चाहेजितनी मिठाइ <mark>साओ मगर मुका</mark>विछे रोटीदाछके कोइचीज नही, छाखदवाकी एक द्वा द्धहै, जोलोग हमेशां द्धका इस्तिमालरखतेहै ताकतवर बनेरहतेहै, मगर दुध असा होनाचाहिये जिसमें पानी-न-मिलाहो, खानाहजम होनेकेलिये दहींभी एक फायदेमंद चीजहै, गर्मीकी मौसिममें जीरा-और-नमक मिलाकर दहीं खानेसे दिमाग तररह-ताहै, हरेक श्रष्टशकों चाहिये थुभहके वख्त कुछचीन खायाकरे एकदम वारांबजेतक अखारहना अछानही, जिससे शरीरमें हरारतपै-दाहोजाय, अष्टमी चतुर्दशी वगेराह पर्वकेरोज वत-उपवासकरनाभी ळाजिमहै, धर्मकों भुळजाना और दुनयवीकारोबारमें मशगूळहो जाना ठीकनही, दुनियामें धर्म-एक-आलादर्जेकी चीजहै, गर्मीके दिनोमे शुभहके वरूत-तरचीज-खाना बहेत्तरहै मगर इतना याद रखनाकि जिसरोज बदहजमी हुइहो-फाका-रखे, ज्यादहखानाखा-नेसे आदमीकी जानको तकलीफ पहुचती है,

[दोहा,]

दाहनेस्वर भोजनकरे-बाये पीवे नीर, बायी करवट सोवतां-होय निरोग शरीर.

सूर्यस्वरमें खाना और चंद्रस्वरमें पानी पीना तंदुरस्तीकी अ-लामतहै, एक शहरमें-चारभाइ रहतेथे, उनमें तीनभाइ अलीतरह रौजगारकरके पैदाशकरतेथे और एक भाइ बेरोजगार रहताथा, मगर खानेकेलिये सबसे पहले सुस्तेज होजाताथा, एकरौज तीन-भाइयोने मिलकर उसको कहाकि-कुछ धंदेरोजगारमें लगो, बेठेबेठे

कहांतक खाओगे, मगर यहबात उसको अछीनहीलगी, दुसरेरीज उसने खानेकी जगह एकदिवारमें आलाबनाकर खानेकी थाली उसमेंरखी और खडेखडे खानेलगा, जब तीनोभाइयोंने देखा और पुछाकि-क्यों ! आज क्याढंग निकालाहै, ? जो-खडेखडे खारहेही उसने जवाबदिया जिनकी हमारा बेठेबेठे खाना नागवार ग्रजर-ताहो उनके सामने हम वेठेवेठे क्यों खावे ? खडेखडेही खालिया-करेगें, तव तीनोभाइयोने कहाखुवसमझा ! अकलमंदोका यहीकामहै जोकहे कुछ और समझेकुछ, हमनेकहाथाकुछ धंदारीजगारकरो, तुमने यह ढंग निकाला इस मिशालका मतलब यहहैकि-जोकोइ-अपनेकों नसीहतदे उनसे गुस्तावी करना महेज नादानी है, जैसे खानपानसे औरहवासे बदनकी हिफाजत किइजातीहै वैसे मकानसेभी करनाचा-हिये, जिसमकामें हवाकी आमदरफत वनीरहतीहो–वदवृ–न–आती हो, और अंधेराभी-न-रहताहो ऐसेमकानमें निवास करना चाहिये, जिसमकानमें वारीशकेदिनोमें पानी गिरताहो उसमें रहनावसना ठीकनही, मकानवनानेकी तरकीव मुल्कमुल्कमें अलग अलगहै, मका नके दरवजे और वारीये अंचीरखना चाहिये, ताकि-आदमीके सीरकों चोट-न-लगे, चुनाचे ! एकश्रख्शने मकान नया वनाया, मगर दरवजे उसके वहुत छोटेरखे, हरवरूत जाते आते सीरमें चो-टलगनेका खतराथा, एकट्फे उसीकेसीरमें इसकद्र चोटलगीकि-बेहोज्ञहोकर गिरपडा, और खुनभी निकलआया, कहिये ! ऐसे छोटे टरवजे रखनेसे क्या फायदा, ?

९-एकसो-आठहाथ-लंबाघर-चारोतर्फ हवादार कमरे वीचमे चौक-और जिसतर्फ देखो चांदनाहो ऐसे घरमें रहना निहायतउ-मदावातहै. मकानकी सीढी चौडीवनाना चाहिये, जो-न-बहुत उची और-न नीचीहो, जिसपर बुढा और लडका व-खुवीचढसके, परकी दिवारपर चित्राम करानातो-छडाइका देखाव-सांप-कौआ या-विनागर्दनके आदमीका चित्र-नही-खीचवाना चाहिये, देववि-मान-नाचतीहुइ परी-बागवगीचे-फछफुछ-और-मजिछाका चि-त्रामवनाना अछाहे, छोटेघरोमें रहना जहांकि ह्वाकी-आमदरफत न-हो-विल्कुछ ठीकनही, आजकछ कइजगह देखतेहै-तो-छटी छोटी कोठरीयोमं छोग-अपनी औकातबसर करतेहैं, जिनकेपास दौछत नहीं है पूर्वजन्ममें पुन्य कम कियाहै उनकेछिये अमरछाचारी है,दुनि यामें चक्रवर्ती जैसे बडेबडेराजे होगये जिनकेघर-नवानिधान-चौद-हरत्न-हाथीघोडे-जवाहिरात-सोना-चांदी-नोकर -चाकर-म्याने-पाछखी और छडी चवर मौजुद्ये-वेभी पुन्यसे सबचीज पायेथे,-

१०—सचवोलना और धर्मपर कामील एतकात रखना हरेककेलिये फायदेमंदहै, आजकरनेका काम कलपर मतरखो, आदमी
जैसे दुक्मनसें डरताहै अगर पापसे डरे तो क्याही! उमदा बातहै,
दो—आदमी—बातकररहेहो विनाचुलाये जाना मुनासिव नही, गुनहगारकी माफी उसवख्त होसकती है जव—वह—अपनी—खताका कायलहो, जहां नादानोकी मजलिश मिलीहो वहां नसीहतकरना कारआमद नही. नादानदोस्तसे दानादुक्मन बहेत्तर, सबदिन एकसरखे किसीके नहीरहते. रामचंद्रजी लल्लमनजी—और—पांचपांडव जैसे
इकवालमंद और खुशनसीबोंकोंभी बनवास करनापडाथा, कहांतक
बयानलिखे बहुतेरीमिशाल मौजूदहै, तदबीरकरतेहुवेभी काम उल्ला
होजाताहै तो समझनाचाहिये तकदीर अपनीअलीनही, तकदीर
उल्लीहो और काम बिगडजाय—तो—उसका रंजकरनाभी लाहासिलहै, जहां बहुतसे बेंइल्मलोग बेठेहो—बहां—इल्मी तकरीर करना
फायदेमंद नही,—

(अनुष्टुप्-वृत्तम्)

कः कालः कानि मित्राणि-कोदेशः की व्ययागमी, कश्चाहं काच मे शक्ति-इतिचिंत्यं मुहुर्मुहुःः, १,

हरेकश्रख्शकों लाजिमहै कोइबात मुहसे निकाले तो इतनीची-जोका खयाल अवलसे करलेव, जमाना कैसाहै ? मेरेदोस्त कौन-कौनसेहै ? किसमुल्कमें—में-बेठाहुं ? कितनाखर्च और कितनीआम-देहै ? में-कोनहुं और मेरी ताकात कितनी है ? इनवातोंको पहले सौचलेवे, दोस्ती उसकेशाथ रखनाचाहिये-जो-आलीहेंमतहो, जि-सकादिल साफहै-वो-हमेशांपाकहै, बखील आदमी खर्चनहीकरस-कता, अखबारवाले हमेशां कल्मसे जंगिकयाकरतेहै, जो सभा जिसकामकेलिये मुकरर किगइहो-और-वह-उसकामको-न-करस-केतो उसकों नाममात्र सभा कहना चाहिये,—

११-जोलोग कहते हैं और तकों इल्पपढाना नहीचाहिये यह उनकी अलहे, मौसिमे जवानोमें औसा कौनमर्द-या-औरतहे जो-दामे इकमें-न-फसाहो, लेकिन ! तारीफ उसकी है, -जो-फंदेइ-क्कसें बचारहे, अगले जन्मकी नेकिकस्मितसे आदमी खूबसुरत रूप पाताहें, ख्वाह ! मर्दहो-या-औरत ! सुवारकचहेरा-और-हुस्नो-जमालभी एकतरहका जादु समझना चाहिये-कइलोग दुसरेकामोमे बहादुरी करसकते हैं लेकिन ! आर्लाइजेंका वहादुर-वो-हे-इक्कसे फतेहपावे, हरेकशख्शको सुनासिबहे मावापकी फरमावरदारी करे और यहभी याइरहे ! और तकी तर्कदारीकरके मातिपताकों तकलीफ न-देवे, -जीव अनादिहें इसका बनानेवाला कोइनहो, आराम और तकलीफ अपने कियेहुवे-कर्मोका फलहे, -धर्मप्रवर्तक तीर्थकर सर्वं होते हैं, नेंककामसे बहिस्त मिलताहै, और बदकामोंसें दौजक, दौ-

छतपर घमंडकरना ठीकनही, गोस्तखाना-और-शरावपीना मुता-विकथर्मशासके फरमानसे पापहै,-जोशस्त्र अपने माबापकों गाछी देताहै पुरानादानहै, जोशस्त्र अपनी पैदाशमेंसे आधा हिस्सा धर्मके काममें खर्चकरे उसकी तारीफहै, जो-रुपयेमें चारआने खर्च-वह-दोयमदर्जे-और-जो-एकरुपयेमें एक आनाभी धर्ममें खर्चकरे-वो-तीसरे दर्जेपरहै, जोलोग विल्कुलखर्च-धर्मकाममें-नहीकरते बडीभु-छहै, पेस्तरके लोग जब बुढापेकेदिन आजातेथे दुनयर्वाकारोबार छोडकर दीक्षा इस्तियार करतेथे-या-तीर्थ भुमिमंजाकर धर्मकरतेथे, बहुतसेलोग आजकल इसकामको भुलगये है,

१२-पृथवी स्थालीके आकार गोलहे, और घुमतीनही बल्कि! कायमहे, चांद सूर्य वेशक! घुमते हे, अगर पृथवी घुमतीहो-तो-एकशहर जो दुसरे शहरसे-उत्तरतर्भहें कभी दखनतर्भ होजाना चाहिये, और जो दखनमेंहें उत्तरमें होजाना चाहिये, दुसरी दलील यहहैिक-किसीशहरमें समझो दोघंटतक वारीशहोतीरही इधर जमीन फिरनेवालोके फरमानसे फिरतीहुइ जमीन कोसोतकद्र चलीगइ, फिर वहांके तालाव पानीसे-न-भरनाचाहिये. और भरजाते हैं यह आमलोग अपनी आंखोसे देखते हैं इसकी क्यावजह, ? तीसरीदलील यहहैिक-एक-परींदा अपने मालेसे आस्मानतर्भ उडा और कुछदेरतक सफरकरता रहा, इसअसेंमें जमीन फिरतीमाननेवालोके ख-यालसे जमीन कोसोतक दुरचलीगइ, फिर वह परींदा अपने मालेकों कैसे पासकेगा ? और सब देखतेहैं पासकताहै, इसका क्यास-वब, ? इल्पनजुम एक उमदा चीजहै मगर जाननेवाला कामीलहोनाचाहिये, कि होना यहभी एकइल्म और अकलके ताल्लकहै, हर-कोइ कहे-में-किव-बनजाउ तो यह होनही सकता,—

१३-जबिकसीके घर गमीहोजाती है चाहे-बो-अपना दुश्मनभी क्यो-न-हो! उसवस्त उसके घर जहरजाना चाहिये, जिंदगीका कोइभरुसा नही-जो-कामधर्मका करित्या वही बहेत्तरहै. जोलोग कहते है हम दीक्षा लेक्का इरादा-जो-करने है मगर क्याकरे! पढे लिखेनही, कोइकहते है हम तीथोंकी जियारतजाना वेशक! चाहते हैं मगर फ़रसत नही, ये-सब उनके बहाने हैं, सचेदिलसे जोशस्त्र दीक्षा इस्तियारकरना-या-वीबोंको जानाचाहे उसको कौनरोक सकताहै, ? दुनियामें तकहीर सबसे अल्डाहै तदबीर मुकाबिले उसके केकोइचीज नही, तदबीर चुकजासकती, तकहीर नहीं चुकती, समझोकि वगरतदबीरकेभी राज्य मिलसकति है जब वकदीर सीधी हो, आमलोग फायदेहीकेलिये जिजारतकरते है मगर जबतक तकदीर यावर-न-हो-शिवायनुकक्षानके कोइबात हासिल नहीं होती,

[शेयर]

यावरी ताले करे-तो-किमिया क्या मालहै, ! शंगरेजा हाथमें-लोगे तो जर होजायगा, १,

एकशस्त्र पेस्तर गरीबी हालतमंथा, बाद चंदरीजके किसीए-कआला दर्जेके ओहदेपर पहुचा, और दौलतमंद होगया, अगली हालत जाननेवाला एक दोस्त उसका इसइरादेसे उसके पासगया कि-में-कुल-इससे फायदाहासिल कहं, इथर-वह-दौलतमंद अपने ओहदेके घमंडमें इसकदर चकचूरथा कि-अपने दौस्तकों जानताहु-वाभी अलगया, और एडनेलगा-तुं! कोनहे! और क्यौं! आया! कदीम दोस्तने कहा, ठीकहै वह दिन अलगया जो मुजसे उथारलेकर अपनामुलर करताथा, आज वडीवातें वर्नाताहै, इसबा-तकों सुनकर ओहदेदार शर्मीदा होगया और घमंड उसका उतर- गया, हरेकआदमी दौलत और ओहदेके घमंडमें-न आवे, और अपने दोस्तोंकी यादीरखे,

[दोहा]

चलत कलम सुकत अखर-यही नेहका मूल, नेह छांड नीलो रहे-ताके मुखपर घूल, १,

🗺 [गुलद्स्ते-जराफत,]

🖾 [एक-कंजुस-दोठ-और दोठानीका लतिका,]

१-किसीदिन एकशेठ अपनी शेठानीसे कहनेलगे इसवस्त हमारेपास इतनाधनमाल जमाहे, अगर हमारी सातपीढीतक लडके बाले खावे और मौजकरे तोभी कुछ अंदेशानही, लेकिन ! आठ-मीपीढीकी औलाद क्याखायगी इसवातकेलिये फिक्रमेंहुं. शेठानी बोली खूबकहा ! फिक्रमंदहो-तो-आप जैसेहीहो, क्या ! जोजो औलाद होतीरहेगी अपनी अपनी तकदीर शाथ-न-लायगी ? और यहभी ख्यालकरोकि-बाद अपने मरनेके दूसरी पीढीकी औलादही अगर सबधनमाल खोबेठेगी तो तिसरी पीढीकी औलाद क्याखा-यगी ? नाहक ! फिक्र करतेहो. जोक्क धनमाल अपनेपासहै चैनसे खाओपीओ और धर्ममें खर्चकरो,—

[दोहा.]

पानी बाढ्यो नावमे-घरमे बाढ्यो दाम, दोनो हाथ उलेचिये-यही सयानो काम, १,

देखो ! अपनी विरादरीमे कई असेभी छोगहै जिनकेपास एक दिनकाभी खाना मौ असरनही तोभी-वे-अपनी तकदीरपर बेफिक रहा करतेहै और आप आठमी पीढीकी फिक छारहेहो, इस मिसा-छका मतलब यहहैकि-कलकीभी-फिक-नहीकरना तकदीरका चक हमेशां फिरतारहताहै कोइदिन अछा-कोइदिन बुरा, मगर-हां ! जो कंजुसहोतेहैं-वे-असे फिक्रमेंही गिरफतार रहाकरतेहैं, धर्ममें खर्चक-रना नहीं और असेही वहाने पेंशिकयाकरतेहैं, मुताबिक धर्मशासके देखाजाय तो लाजिमहै जोकुछ वनपडे धर्मकाममें खर्चकरना और खाने पीनेमें कंजुसाइ नहीकरना, पुर्वजन्ममें धर्मिकयाथा तो यहां-धनपाया, अगर यहां-न-करोगे आगे क्यापाओगे ? बहत्तरहै इस बातकी फिक्रकरना, एक कंजुससे एक शख्शने पुछाकि-कपडे-कैसे पहनना चाहिये, उसनेकहा कपडे ऐसे पहनना चाहिये जो निकम्मे हो, जिसको दुसरा कोइ उठालेजानेका खयाल-न-करे, क्याकहना ! खुब सलाहिदइ, ! सलाह देने वालेहो-तो-ऐसेहो,

[एक मालिक–और -नोकरका किस्सा,]

२-एकशस्त्रको वहां एकनौकरथा, एकरौज मालिककी तबी-यत कुछ नादुरुस्त हुइ नौकरको चुलाकरकहा, जाओ ! हकीमके पाससे दवा लाओ ! नौकर बोला अगर हकीमसाहब घर-न-मिले गेंतो ? मालिकने कहाजाता क्यौनहीं ? बहानेबाजी कररहाहै, नौक-रनेकहा अगर उनकेपास दवा-न-होगीतो ? मालिकनेकहा तुजकों क्यामाल्यम दवा-न-होगी, नोकरने कहा, अछा ! जाताहु मगर दवा फायदा-न-करेगीतो, ? मालिक बोले अबे ! नादान ! फा-यदाहोने-न-होनेसे तुजे क्यागरज ? तूं ! जा, और दवा छा, ! नौकर बोला फर्जकरो दवाने फायदाभी किया मगर आखीर एक-रौजतो मरनाही है, फिरदबाकी क्या जरुरत, ?

[दोहा]

बलनाहै रहनानही-चलना विस्वा वीस, थोडे जीवन कारने-कौन गुथावे सीस, १, मालिकनेकहा यहबात तेरेपरभीतो गुजरेगी फिर नौकरी करने क्यों आयाहै ? दुसरे नौकरकों हुकम-दिया इसको कानपकडकर घरसे निकालदो ऐसा नौकर किसकामका जो मालिकका हुकम-न-माने और गुस्ताखी करे,

[एक कमअकल लडकेका लितफा]

३-एक कमअकल लडका अपनी अम्माका हुकम लेकर नौक-रीकरनेकेलिये गेरमुल्ककों चला, अम्माने कहा हरेकके साथ नर्मी-रखना और धुककर चलना, लडका जब घरसेचला, और दोचार कोसके फासलेपर पहुचा, रास्तेमें एक-तालावके-कनारे घोबी कपडे धोरहेथे, सुकायेहुर्वे कपडे अकसर कभीकमी चौरलोग लेजा-याकरतेथे, और धोवीलोगभी हमेशां उसकी ताकमें लगेरहतेथे, पस ! इससुरतमें वह लडका उसरास्तेसे गजरा, जो झकाहुवा च-लाजाताथा, धोबीयोने समझा, सायत ! यहीचौर होगा, इसग्रमा-नसे उसकों पकडा और मारपीट करनेलगे, लडकेनेकहा मुजे क्यौं मारतेहो ? मेंतो नौकरीकेलिये जारहाहुं. धोवीयोंने कहा ऐसा झुक कर छी पेहुवे क्यों जाताहै ? सिधाहोकर चलाजा, और साफ होजा लडका जब आगेको बढा-तो-क्यादेखताहै खेतोमें किसानलोग बीज डालरहेथे, देखकर इसनेकहा सब साफ होजाओ ! किसान-**ळोग इसबातसे बडेनाराजहुवे और कहने**ळगे अवे ! क्याकह रहाहै सब साफ होजाओ, यूं-क्यों नहीकहताकि-असा बहुतहो, इसबा-तकों सुनकर लडका अगाडीवढा-तो-एकगांवके वहार कइलोग मुद्गिये आरहेथे, लडकेनेकहा, एसावहुतहो-ऐसावहुतकहो.-इसवातको स्नुनकर लोग नाखुशहुवे, और कहनेलगे, अबे ! एसाम-तकहो, यूं-कहोकि-ऐसाकभी-न-हो, छडका इसवातकों खयालमें

रखकर आगे बढातो एक दुल्हादुल्हन-सादीकरके बरातकेसाथ आ-रहेथे, देखकर बोला ऐसाकभी-न-हो, इसवातकों सुनकर बराती-लोगबहुत गुस्सेहुवे और कहनेलगे ऐसाक्यों कहताहै,? यूं कहोकि-ऐसा बारवारहो, फिरआगे वढा-तो-राहमें राजाके नौकर-दोचार इज्जतदार महाजनोकों किसीखताहपर गिरफतार करके लेजारहेथे लंडकेने उनको देखकर कहा ऐसाकाम बारबारहो, तब उनकेशाथी लडकेपर नाराजहुवे, और कहनेलगेकि-ऐसा क्यौं नहीकहताकि-जल्दीछटजाय, इसवातकों यादकरके आगेजाताहै-तो-एक बागमें दो–जमातवाऌे–इकटेहोकर टावतकर रहेथे और कहतेथेकि–क्या ! म्रुवारक रौजहै–जो−आजहम इकटे होगये, लडका वहां पहुचा और कहनेलगा जल्दी छुटजाय, तब उनलोगोंने खयालकिया, यह कौन कमअकल लडकाहै-जो-एसाबुरा सकुन निकालताहै, गरजिक लडका-वहांसे आगेको वढा और एकगांवमें गया, वहां एकचौध-रीकेपास नौकररहा, जब चंदरीज गुजरे और एकरीज चोधरी पांचदश आदमीयोंकी मजिल्हिशमें किसी बातका निवेडा कररहेथे चौधरानने नौकरसे कहा, जाओं ! चौधरीजीको बुळाळाओं, जवा-रकीरोटी तयारहै ठंडी होजायगी, नौकरने मजलिसमें आनकरकहा चौधरीजी! चिलिये! जवारकी रोटी इंडी होजायगी, चौधरीजी इसबातसे शर्मींटा हुवे और घर आनकर नौकरसे कहने छगे ऐसी कोइवातहोतो मजलिसमें नहींकहना, जब मजलिस बरखास्तहो धीरेसे कहना, एकरीजकी वातहै, चौधरीजीके घर अंगार लगगइ चौधरानने नौकरकों दोडाया, और कहा, जाओ ! चौधरीजीकों जल्दी बुलालाओ, चौधरीजी मजलिसमें वेठेथे, नौकर वहांजाकर बेठगया, और दोवंटेवाद जब मजिलस वरखास्तहुइ धीरेसे जाकर कहा चलिये ! मकानको आग लगीहै, चौधरीजी घर आये और

देखातो बहुतसा नुकसान होगयाहै, पस नौकरको कमअकल जान कर जसीवल्त घरसे बहार निकलवा दिया, ऐसानौकर किसकाम-का-जो-कहोकुल और समझे कुल,

👺 [ऐक शुस्त आदमीका जिक्र,]

४-किसी जंगलमें एक शुस्तआदमी बेंरके दरस्तकेनीचे लंबा होकर सोरहाथा, इत्तिफाकन ! एक केंर दरस्ति दुटकर उसकी छातीपर गिरा इस अर्सेमें एक आदमी थोडी दुरपर चला जारहाथा शुस्त आदमीने उसकों पुकाराकि—भाइसाहव ! जरा इधरहोतेजाना, उसने समझा सायत ! कोइ जहरीकाम होगा इस खयालसे उस शुस्तकेपास आया, तब शुस्तने कहा—मेरी जातीपर जो—बेर—गिराहै उठाकर मेरे गुहमें डालदो, इसवातको सुनकर वह आयाहुवा आदमी बोला, अबे ! गवांर ! क्या ! तेरेहायसे उठाकर ग्रहमे नहीडा-लाजाता ? जो मुजकों बुलाया, उसनेकहा माफकरना—में—जन्मका शुस्तआदमी हुं—यही—यजहहै कि—आपकों तकली फादइ, तब आयाहुवा आदमी कहताहै—में—तुजे तकली क देता हुं, तुं ! अपने हाथसे ही उठाकर बेंर खाले, एसा कहकर रास्ता लिया और कहता जाता है कि—क्या ! खूब आदमी है—जो—छातीपर गिराहुवा—बेंरभी—उठा नही-सकता, बन्नतिक—हाथपेर—दुक्स्तहै फिरभी यह हालतहै,

[एक कंजूसका किस्सा.]

५-एक कंजूस अपने घरमें रातकों अकेला सोरहाथा, इति-फाकन ! एक चृहा-उसके-पेटपर होकर इधरसे उधर चला गया, फीरन ! कंजूस नींदसे चौंक उठा, और कहनेलगा, हाय ! मान गये, हाय ! प्रान गये, इसतरह गाफिल होकर वेंइल्तियार रोने लगा, पडोसके लोग सुनकर आगये और कहने लगे क्यों ! भाइ!! किसलिये रोते हो, ? उसने कहा देखिये! चूहा-मेरे पेटपर होकर चला गया, लोगोने कहा चला गया तो चला गया, ! इसमें रोनेकी-क्या! बात है, ? कंजूस बोला-में-चृहेके चले जानेपर नही रोता हुं, में-जो-रोताहु सो इसखयालसेकि-यह-पंथा बूरी निकली, आज चूहा पेटपर होकर चला गया, कल-सांप-चला जायगा, फिर मेरा जिना कैसे होगा ? लोगोने कहा जमीनपर क्यों सोतेहो ! एक चार पाइ मोंललाकर उसपर सोया करो, फिर औसी आफत क्यों आयगी, ? कंजूसने कहा मेरी कंजूसाइ तो आप लोग जानतेही हो इतना खर्च मुजसे केसे होसकेगा, ? लोगोने कहा-न-होसके तो हमकों क्या ? हम आज पडोसका हक अदा करनेकों आये है, कल हम क्यों! आयगे, ? तुम जानो और तुमारा काम, ऐसा कहकर चले गये, ठीक कहा हैकि-कंजूसोसे-न-खर्च किया जाय, न-खाया जाय,

[एक साहकार और घोबीकी तकरीर.]

६-िवसी साहूकारने अपने धोवीसे कहा-तूं-वडा गाफिल है और कपडेकों असा घोता हैिक-एकएकके दस दस बना देता है, धोबीने जवाब दिया स्थात आपका कहना सच होगा, मगर आप धुलाइ तो एक कपडेके हिसाबसेही देते है, साहूकारने कहा अबे! गुस्ताखी क्यों करता है? कपडे फाडकर वरवाद करना और फिर जवाबमें चालाकी! जा चलाजा!! आजसे कपडे दुसरेसे धुलवा-ये जांयगे, तब धोबीकी अकल ठिकानेआइ और कहनेलगा-कसुर माफिकिजिये, आइंदा ऐसा-न-करगा, साहूकारने उसकी आजीजी पर मामूल मुताबिक कपडे उसको दिये और-बहभी-कपडे अली-तरह धोकर लानेलगा,

[बेरेकेलिये बापकी हिदायत,]

७-एक साहूकारने मरतेदम अपने वेटेकों हिदायत किइकि-कभी धुपमे नहीचलना, शुभह शाम मीठा खाना खायाकरना, और किसीको उधारदेना फिर उसे मांगनानही, ऐसा कहकर साहुकार फोतहुवे, इधर वेटेने बाद अपने वालिदके उसी मुताविक वर्तावकर-ना शुरुकिया, अवलतो अपने घरसे दुकानतक रास्तेमें रेशमी और जरीके कपडोसे-चांदनीयां-लगवा दिइ ताकि-घरसे दुकान जाते आते धुप-न-लगे, क्यौंकि-वालिइका फरमानाथा धुपमे-नही चलना, दुसरा फरमाना-जो-मीठाखाना खानेकाथा उसका बर्ताव इसतरह करनेलगाकि-नामी-हलवाइयोंको घरपर नौकर रखलिये. और उनसे कहदियाकि-रौजमररा-तरहतरहकी मिठाइ वनायेकरो, गरजिन-वह-हमेशां मिटाइ खायाकरताथा, तीसराफरमाना वालि-दका यहथाकि-उधारदेकर मांगना नहीं. सो जिसको उधारदेताथा मागता नहीथा, इसतरह फिजहुल खर्चकरते करते दोलत उसकी फनाहोगइ, और जब मुफलिसी हालतमें आनपडा, अपने वालिदके दोस्तसें जाकर मिला, और कहने लगा क्या सबबहै-जो-हम-अपने वालिद्के फरमानपर चले और फिरभी नुकज्ञान उठाया ? क्या ! हमारे वालिद बुजर्गवार दुझ्मनथे-जो-ऐसी हिदायत करगये तब वालिदके दोस्तने कहा, अबे ! नादान ! ! क्या कहरहाहै, ? तेरे वालिदने तो ठीकही कहाथा, तुं ! उल्टा समझगया इसका कोइ क्या करे ! सुन ! ! तेरे वालिदने जो कहाथा धूपमें नहीचलना-सो-बात यहथीकि-दुपहरसे पहले घरसे दुकानपर चलेजाना और शामको वापिस आना, ताकि-धूपसे-वचावरहे, तेने उल्टी समझसे रास्तेमें रेशमी चांदनियां लगवादिंह, दुसरीवात यहथोकि-भूख-लगे इसवष्त खायाकरना विनाभूखके खाना-न-खाना, क्योंकि-भ्रुख-

केवरुत-नो-चीन खाओ मीठीलगंगी, तेने उसकी एवजमें मिठाइ खाना शुरुकिइ, तीसरीबात यहथीकि-जिसकों माल उधारदेना तो ज्यादह रकम अपनेपास रखकर देना, ताकि-वह-अपनाघर हुंढता चळाआये, अपनेको उसकेघर जानेकी कोइ जरुरत -न-पडे, तेने उसका माइना उद्धा समझाकि-उधार देकर मांगने-न-गया, अव गौरकर! इसमे भुल किसकी है तेरी-या-तेरे वालिदकी, ? इस बातकों सुनकर लडकेने अपना होंस संभाला, और अगले वर्तावकों छोडकर वालिदकी हिदायतपर कायम होगया. हरेक शस्काकों ला-जिमहे अपना भला चाहनेवाले बुजुगेंकी हिदायतकों अछीतरह समझे उसपर अमलकरं,-कभी नुकशान-न-होगा,

[एक पंडित और वेंसमज विद्यार्थी,-]

८-एक राजासाहवने अपने शहरसे एक वात पुछनेके लिये बुळवाये, और नौकरते कर्राद्याकि-अगर-पंडितजीको पुरसतन-होतो उनके किसी विद्यार्थीकों लेआना, नोकर पंडितजीके पास गया और कहा आपकों राजासाहव यादकरते है, उनकों पुरसत नहींथी एक विद्यार्थीकों जानेके लिये तयारिकया, और चलतेवल्त उसको समझा दियाकि-देख ! तुं ! राजाजीके रुवर जाताहै, जो कुछ राजाजी पुछे नमीं और मुलायमीसे जवाबदेना, सख्त बात-चीत मत करना, और जोक्च पुछे उसका मीठी जवानसे उत्तर देना, विद्यार्थी इसवादकों ख्यालमें रखकर राजाजीकी खिदमतमें पहुचा, राजाजीने पुछाकि-अछा ! तुमआये हो ! ठीक है, खेर ! यह वतलाओ ! आजकल तुम पंडितजीसे कौनकौनसी किताबे पढते हो ? विद्यार्थीने सौचाकि-पंडितजीका फरमानहै नमें और मुला-इम वातें वोलना, जवाव दियाकि-राजाजी ! रुइ-रेशम-और-मखमल वगेरा, किर्राजाजीने पुछा तुमारे खानेपीनेका क्या ढंग

है, ? जवावमें विद्यार्थीने कहा लाइ-पंडा -और-वर्की, राजाजी इन वातोंकों सुनकर समझगये लडका नादानहे, फीरन! उसकों वापिस जानेका हुकम दिया, और कहला भेजाकि-तुमारे-पंडितजीकों भेजों विद्यार्थी पंडितजीके पास आया, और कहा आपकों राजाजीने बुलवाये है, पंडीतजीने कहा-ठीकहे, मगर तुनसे क्या क्या! वातें हुइ वतला, विद्यार्थीने कहा, मुताविक आपके फरमानके सुलाइम और मीठी वातेही किइहे, मुलाइम चीजोमें-एइ-रेशम-मखमल कह सुनाया, और मीठी चीजोमें लाइ-पेंडे-वर्की-वगेरा कहाई, पंडितजीने कहा, अवे! नादान!! मेने तुजसे क्या कहाथा, और तं! क्या समझा!! मूर्खताके जवाब देशाया विद्यार्थी वोला, नाराज क्यों होतेहो, ? जैसा आपने फरमाया मेने उनमुनव किया, इसका मतलब यह हैकि-नादान-विद्यार्थी असहीहुनाकरते है, हरेकको, चाहिये अपने मालिकके कहनेकों समझे और उसपर अमल करे इसनादान विद्यार्थीकी तरह-उल्टा-खगाल-न-करे,

[वालिद और लडकेकी गुफ्तगु,]

९-किसीएक साहूकारका लडका जलमें तैरनेकेलिये नदीपर जानेलगा, वालिदने उसकों मना किया, मगर उसने हरचंद-न-माना, तब वालिद गुस्सेहोकर कहनेलगे, भला! बच्चा! तुं-जा!! अगर पानीमें डूबगया तो असा पिटुंगाकि—तुंभी-याद करेगा, लडकेने कहा क्या खूब बातहै, जब-में-पानीमें डूबजाउगा. तो आप किसकों पिटोगे ? वालिदने कहा जबसे-तु-पैदाहुबा है तेरा यही हालहै, और आजतक-में-तेरी गुस्तास्वीया जानचुकाहुं

[हिकायत एक गुरुजी और श्रावककी,] १०-एक श्रावक अपने गुरुमहाराजकी खिद्मतमें हमेशां हा-

जिर रहा करताथा, चौमासेके चार महिने तक उसने इसकदर खिदमत किइकि−जैसी−किसीने−न−किइ होगी, चंदरौजमें ऐसा मौका आगयाकि–उसकी दुकानमें रुपये पैसेकी तंगी आगइ, स्वाने पीनेसेभी तंग होगया, एकरौन गुरुजीने उसकों पुछाकि–आजकल −तुम−उदास क्यौं रहा करते हो ? उसने कहा में−रुपये पैसेसे निहायत तंग होगया हुं, छोगभी कहते हैकि-तुमने-अङा धर्म किया जो खाने पीनेसेभी दरगुनरे, धर्मका फल अला होनेकी एवजमें क्या सवव हैकि-मेरा काम-विगड गया, गुरुजीने कहा धर्मका फल तो हमेशां अछाही होता है, मगर तुमारे कोइ पूरवजन्मके कर्मीकानतीजा था−जो~इसहालतमें आगये हो, फिक्र मत करो, तकदीरका चक्र फिरता रहता है. चंदरीजमें जब अछी तकदीर आ जायगी फिर सवकाम सुधर जायगा, वाद चंदरौजके ऐसाही हुवा, और उसके अछे दिन आगये, इस लेखका मतलव यह हैकि-किसी शस्त्राने-धर्म कीया और उस अर्सेमें उसका काम विगडगया तो-यह-न समजनाकि-धर्म करनेसे बुरा हुवा, धर्मका फल हमेशां अछाही हुवा करता है, मुनासिव है पूरवजन्मके कियं हुवे कर्मोंके फलपर कायम रहे,-

[नवजवान और एक बुढेकी गप्प,]

११-एकजगह पांचदस जवान आदमी वेठे हुवे अपनी वडाइ कर रहेथे, कोइ कहताथा-धेने-पांच घाव लडाइमें तलवारके खाये, कोइ कहता है मेने सात चात्र खाये, छेकिन! मरा नही. इतनेमे एक बुढाभी वहां बेटाथा कहने लगा अवे ! जवानो !! क्या खयास्री खीचडी वना रहे हो ? तुम पांच सात घाव लगनेकी बात कररहे हो, मेने जवानीमें कई लडाई लडी और इतनेवाब बदनपर खायेथेकि-तीलधरनेकी जगह बाकी नही रहीथी, इसवातकों सुनकर एक नव जवान लडका बोल उठा, अछा! आप जरा कपडे उतारिये, हम देखेतो सही आपने कितने घाव खाये है, बुढा हंसकर बोला, न-वह-जमाना रहा, न-जवानी रही, सब जखम मिट मिटा गये, क्या ! देखोगे, ? जाओ ! अपने घरका रास्ता लो, कोरीवातें क्यों बना रहे हो, ?

[एक हकीम और मरीजकी तकरीर,]

१२-एक हकीमसाहब अपने जाहिल मरीजसे पुछने लगेकि-कहो ! बनिस्वत औरिद्नोंके कल तुमारी तबीयत कैसी रही ? और खाना खुक्षीकेशाथ खाया—या—नही, ? मरीजने जवाब दिया तबीयत तो अछीरही. खानाभी कुछ खायागया, मगर खुक्षीकेशाथ नही, पुदिनेकी चटनीकेशाथ खायाहै, हकीमसाहबने सोचा ! क्या खूब ! मरीजहै जो हालते बीमारीमेंभी गुस्ताखीकी बातें नही छो-हता, जाहिरमे कहनेलगे खुक्षीकेशाथ नहीखाया तो क्या हर्ज है, पुदिनेकी चटनीकेशाथभी खायातो सही, देखलो ! हमारीदबाने किसकदर फायदा पहुचाया—जो—बिल्कुल नहीखातेथे अब खाने तो लगे, अबकहो—तो—ऐसीदवा दुं—जो—तुमारा खानापीना बतौर आगेके छुटजाय, मरीजने कहा माफिकिजिय, मेरा तो यहीहालहैं। के बातवातमें घरकेलोगोसेभी दिल्लगी किया करताहुं,

[एक कंजुसका जवाब,-]

१३-एक शहरमें एक दोलतमंद शख्श अपनी दुकानपर बेठाहुवा रुपए पैसे गिनरहाथा और अपना हिसाव मिलारहाथा, मगर
कुछ गलतीसे हिसाव मिलता नहीथा, इस अर्सेमें एक फकीर
उसकी दुकानपर आया, और सवालिकया, वावा! कुछ दिलवाइये, जो आगेको मिलेगा, दौलतमंदने जवाबिदया फकीरसाहब!
जोकुछ पूर्वजनममें दियाथा यहां मिलाहै, जिसको गिनते गिनते

थक गयाहुं, और नाकमें दम आगयाहै, अब हर्गिज !-न-दुंगा जो आइंदे मिले, और मुसीबत उठाना पड़े, आप आगेको बढिये, और किसी दुसरेके पास सवाल किजिये, सायत ! कुछ मिछ जायगा,—

[एक हकीम और मरीजका बयान]

१४-एक मरीजने ऐक हकीमसे अपनी बीमारीका हाल सुनाया, और दबाके लिये अर्ज गुजारीश किइ आप मुजे दबा दिजिये, जो कुछ कींमत होगो खिद्मतमें हाजिर करुंगा, हकीमने उमदा दबा उसको दिइ और-वह-चंदरीजमें अला होगया, हकीमने कहा अब आपकी बीमारी रका होगइ, दबाकी कींमत भेजवा दिजिये, मरीजने कहा, आपने क्या असी भारी दबा दिइथी ? पांच चार पुडिये जो दिइथी उसकी कींमत लेलिजये, हकीम इसबातकों सुनकर अपनी भूलपर नादीम दुबे, और आइंदाकेलिये असा अहदकरलि-याकि-दबाकेदाम पेस्तर लेलेना चाहिए, क्योंकि-आदमी अपना काम निकले बाद अनजान होजाता है, और कुल देता नही, बहेत्तर है पेस्तरसे होशियार होकर चले,

[औरत मद्का मलाइकेलिये झगडा]

१५-एक शख्शने अपनी औरतसे कहा कल-में-एक मेंस खरीदकर लाउगा, औरतने कहा अजीवात है, मलाइ-मेंही-खाउगी, मर्दने कहा नहीं! मलाइतो-में-खाउगा, और तुजे कोरी छांछ दुंगा, इसवालपर दोनोंकी तकरीर होतेगी यहांतकि नतीजा-मार पीटका आगया, पडोसी शौरगुल उनकर दरयाकतकों आये और पुछने लगे क्यां लडते हो, ? दोनोंने अपना माजरा कहमुनाया, पडोस कहने लगे क्या खुब बात है! अवतक भेंस आइ नहीं और मलाइके लिये लडाइ, इसियशालका मतलव यह हैकि-विना-चीज -लडाइ लडना फिजहूल है,--

[एक नौकरकी फिजहुल बडाइ]

१६-एक दोलतमंदके मकानपर पनरांसोलह आदमी बेठे वातिचत कर रहेथे, जब मालिकने चाहा अब आरामपानेका वरूत करीब आया है, बत्ती बुझाइ जाय इसखयालसे अपने नौकरकों बुलनेके लिये घंटी बजाइ, तब मोहना नामका नौकर भीतर दोडा और थोडी देरके बाद हसता हुवा बहार आया, दुसरे नौकरोने पुला क्यों वे! हसता क्यों है? मोहने नौकरने कहा, भाइ! सोलह हट्टेकट्टे जवान बेठे हुवेथे, उनसबोसे एक बत्तीभी-न-बुझी, जब हम गये तब बुझी, देखिये! नौकरने फिजहूल बडाइ मारी, जोकि बसका-खास काम था किया और फिर बडाइकी बडाइ,—

[एक दिवानेका किस्सा,]

१७-एक बादशाह किसी दिवानेके सामने गया और कहाकि
-तुं कुछ मुजसे मांग, जो तुं मागेगा-में-दुंगा, तब दिवानेने कहा
हुजर! मरूखीयां मुजे बहुत सताती है, इनकों हुकम दिजिये,
मुजे-न-सतावे, वादशाहने कहा. अबे! जो कुछ मेरें हुकममें है
ऐसी चीज मांग, यह क्या! बाहियात मांगता है, दिवाने शरूशने
कहा जब मरूखीयेंभी आपका हुकम नहीं मानती है-तो-और क्या
चीज मांगुं? जो आप देसकोंगे,

[एक मुसाफिरका लितफा]

१८-एक मुसाफिर किसी दुसरे गांव जानेके लिये टेशनपरं चला जा रहाथा, और दिलमें समझ रहाया वारां अभी नही बजेहें, वारा ४९ बजे जानेवाली रैल मिल जायगी, रास्तेमें जो लोग मिले उनसे पुछने लगा, क्यों भाइ ! वारांसे ज्यादह—तो—नही बजे, रैल मिल जायगी, ? उनोने कहा हमारे यहां वारांसे ज्यादह कभी नही बजते, रैलको गये आधा घंटा होगया है, जल्दी जाइये सायत ! मिल जायगी,—

[फुलकीबडाई]

१९-एकरोज अखबर बादशाहने सरेदरबार अपने मुसाहि-वोंसें पुछािक वतलाओ ! फुलोंमें कौनसा फुल वडाहै, इसबातपर कई मुसाहिबोने कहा फुल गुलाबका वडाहै, कईयोने चंपाका और किसीिकसीने जाइका फुल बडा कहा, आखिरकार जब बीरबल तक नौबत पहुंची-तो-उनोनेकहा जहांपनाह ! सबसे बडाफुल कपासकाहै जिससे तमाम आलमका लिवास बनताहै और उनके बदनकी हिफाजत होतीहै, बादशाह इसबातकों सुनकर निहायत खुशहुवे और बीरबलकों इनाम दिया,—

[एकबुढेकी चालाकी]

२०-एक वापवेटा वाजारसे सौदा लिये आरहेथे. बापके सीरपर तेलसे भराहुवा घडाथा, और वेटा दुसरी चीजेलेकर पचीस कदम के फासले चलाआरहाथा, रास्तेमें बुढेने एक सोनामहोर कचरेमें पडीहुइ देखी, मगर दुकानदार लोग देखरहेथे, इसलिये उठालेनेकी सुरत-न-वनी, तब अपने सीरपर जो तेलका घडाथा जमीनपर गेर दिया और तेलजमीनपर वहनेलगा, तब बुढेने तेलके बहाने महोर अपने हाथ करलिइ दुकानदारोने वेटेसे कहा तेरे वालिदने तेलका घडा जमीन-पर गिरादियाहै, तुं! जल्दी जा वेटेने कहा इसवातकी कोइ परवाह नहीं, में-खूब-जानताहुं-मेरे वालिद ऐसे अनजान नहीं जो वगेरफाय-देके घडा नुकशान करे फायदा देखकरही यहकाम किया होगा, गरजिक-बापबेटे-अपना मतलब करके आगे बढे पीछेसे लोगोको मालुम हुवा किसीकी सोना महोर पडीहुइ देखकर बुढेने यहकाम कियाथा,—

[दोस्तोंकी बातचित,]

२१-किसी श्राख्यके पांचलडकेथे और-वे-अपने वालिदके पास खेलरहेथे, इतनेमें एक दोस्त उसका वहां आन पहुचा, और वातें होनेलगी, पांचलडकोंका बाप कहनेलगा आजकल एक प्यामी-में-पैदा-नहीं करसकता, दोस्तने कहा बजाहै, मगर यहतों बतलाइये फिर पांच लडके कैसे पैदा किये, ? पांचलडकोंका बाप बोला, खुबकहा, में-क्या कहताहु और आप जवाब क्यादेरहेहों जैसा किसीने कहाहै, 'पुछी जमीनकी-तो-कहीं आस्मानकी, "

[एक घोडे सवारका मजाक,-]

२२-एक शख्श घोडपर सवार होकर जंगलकी तर्फ घास लानेके लिये गया, और घासकी गठरी बांधकर अपने सीरपर रखी, और घोडेपर सवार हुवा, जब-वह-गांवके करीव आया एक शख्शने पुछाकि-आपने-घासकी गठरी सीरपर क्यों रखी है, ? सवारने जवाब दिया घोडेकों ज्यादह बौज-न-लगे इसलिये सीरपर रखी है, ग्रुलाकाती आदमी बोला, तारीफ है आपकी उमदा अकलपर, अकलमंद होतो असे हो,

[दुनियाकी हिर्सका किस्सा,]

कश्चित् काननकुंजरस्य भयतो नष्टः कुवेरालय शाखासु ग्रहणं चकार फणिनं कूपे त्वयो दृष्टवान् दृक्षो वारणकंपितोपि मधुनो विदू नितो लेढी सः तल्लुब्धोमरशब्दितोपि-न-ययौ संसारसक्तो यथा,

२३-एक आदमी जंगली तर्फ जारहाथा, एक हाथी भागता हुवा पीछे आया, आदमी घवडाया और एक दररुतपर चढ गया, हाथीभी पीछे पीछे आकर उस दरख्तकों हिलाने लगा, आदमी दोंनों हाथोसें एक शासकों पकडकर लटक गया. और नीचे देख-ता है-तो-एक कुवा नजर पड़ा, उसमें चार सांप मुह फाडकर वैठे हुवेथे, दररुतके उपरके भागमे मरुखीयोंका एक−छाताभी− मौजूदथा, और उसमेसें सहेतके बुंद गिर रहेथे, इसआदमीके मुहमें एक एक बुंद पडताथा, जिसशाखाकों पकडकर वह छटक रहाथा उसकों सफेद और शाम चृहेभी काट रहेथे, पस ! इससुरतमें आ-स्मानसे एक विमान आया, और उस्मेसे एक देवता इसआदमीकों कहने लगाकि-अगर-तमकों अपनी जानसे वचनाहो-तो-इसविमानमें बेठ जाओ, आदमी कहने लगा अला ! ठहरिये, एकबुंद सहतकी और मुंहमें आजाय फिर-में-आता हुं, देवताने सोचा! देखो !! यह अपनी जानसेभी सहेतकी बुंदकों वटकर समझता है, फौरन! अपने विमानको लेकर चले गये, इधर आदमी शाखा कटजानेसे कुवेमें गिरपडा और मर गया, इसमिसालका मतलव यह हैिक-आदमी-दुनियाकी हिर्समें पडकर अपनी जान खोलेता है, मगर धर्म नही करता. क्रवा-जो-था सो संसारथा, और उसमें क्रोध, मान माया, लोभ-चार सांप थे, हाथी-जो-था वह इसका काल था दो-चृहे-काले और सफेद रात और दिनथे, और सहतका छत्ता-जो-या दुनियाकी हिर्सथी, विमान छेकर जो देवते आस्मानसें आयेथे-वे-धर्मके वतलाने वाले गुरुलोगथे, और दरख्तपर लटकने वाला आदमी संसारी जीवथा, जिसने देवताका कहना-न-मानकर अपनी जान-खो-लइ, इसलिये हरआदमीकों चाहिये दुनियाकी हिर्सपर ज्यादह ख़याल-न-रखे, और धर्मपर पावंद रहे,-

[एक कंजूसका-लिका,]

२४-एक गांवमें एक कंजूस रहताथा-जो-खर्च ज्यादह-न-होजाय इसखयालसे पांवमें जुतातक नहीं पहनताथा, जब जंगलमें जाता आताथा इसकदर कांटे लगजाया करतेथेकि−पांवमेसें लोह वहने छगताथा, मगर वहां कांटे नहीं निकालताथा, घर आनकर निकालताथा, इस खयालसेकि-दस पांचरौजके काटे इकटे होजा-यगें तो एकरौजकी चिलममें वतोर लकडीके कामदेयगें, एकरौजका जिक्रहै उसका एक दोस्त दुसरे गांवकी सफरकों जानेलगा, कंजूस कहताहै मेरेजैसा कोइ और कंजूस दिखपडेतो ग्रुजे खबर देना मेरी लडकीकी सादी करनीहै, दोस्त जब दुसरे गांवको गया तो वहां एक ऐसे कंजुसको देखाकि-जो रसोडेमें बैठाहुवाहै, और घीका भराहुवा वर्तन सामने रखकर रोटी रुखी खाताहै, दोस्तने खयालकिया यहभी पुरा कंजुसहै, जब सफरसे वापिस आयातो अपने दोस्तकों कहताहै, तुमसेभी एक ज्यादह कंजुस मैनेदेखा, जो रोटी-घीके सामने दिखाकर रुखी खाताहै, कंजुसने कहा यहभी मेरेलाइक नही, क्या ! ताज्जुबहैकि–कभी–उसघीमें रोटी डुबोदेवे और खावे, इससेंभी कोइ ज्यादह कंजूस मिलेतो ग्रुजे कहना, देखिये ! दुनियामें ऐसेभी कंजुस होतेहै-जो-अपने खानपानके लियेभी रुपया खर्च नही करसकते, धर्ममें-तो-क्या खर्चकरेंगे,

[एक दौर और सुअरका मुकाबिला,]

सत्रे क्रोडमृगाधिपौ च मिलितौ बूते हिरं स्करो, वादं त्वं वदरे! मयासह हरे नो चेन्मया हारितं, श्रुत्वा तद्वचनं हिर र्वदित तं त्वं याहिरे! स्कर, लोकान् ब्रूहि मयाजितो मृगपित जीनंति मे ज्ञा बलं, २५-किसी जंगलमें एक सूअर चला आरहाथा, राहमें उसकों एक शैर मिला, सूअरने कहा—तं! बाद मुदतके आज मिला है, अव-में—चाहता हुं—आज तेरा और मेरा मुकाविला होजाय, बरना! तुजको—में—यहांसे जाने—न—दुंगा, अगर—तं! लडना—नही चाहता तो कहदे—में—हार गया, शेरने कहा अवे! सूअर। तुं मेरे सामने एक थप्पडका साथी है, क्या! बकवाद कररहाहै. में—जंगलका बादशाह होकर तेरे जैसेके शाथ मुकाबिला करके क्या करुं! तुं! मेरे मुकाबिलेके लाइक नही, फरजकरिक—मेने—तुजकों मारभी दिया तो मेरी इसमें कुछ तारीफभी नहीं, लोग कहेंगे शेरने सूअरकों मारातो क्या बहाद्री किइ ! इसलिये—में—तुजसे लडना नहीं चाहता, बेशक! तुं! शहरमें जाकर कहदे, लोग इसवातको बखूबी जानतेहैं कि—शैर—हरहालमे सूअरसें कभी—न—हारेगा, तुं—अगर—छाख बातभी बनावे मेरा क्या! विगडेगा, असा कहकर शैरने अपना रास्ता लिया,

गछ सूकर! भद्रं ते-वद सिंहो मयाजितः पंडिता एव जानंति-सिंहसूकरयो र्वछं, १

[दोस्तोंकि बातचित,]

२६-एक वख्तका जित्र है रास्तेमें चलते वख्त-दो-दोस्त मिले, एकने पुछा क्यों भाइ! खेरियततो है, ? दुसरेने कहा आपकी महरवानीसे-में-दोरौज हुवे बुखारसे घिरा हुं, दोस्तने कहा इसमें मेरी महेरवानी कैसी ? यूंक्यों नहीं कहतेकि-मेने-बहुत कुछ खाना खालियाथा जिससे बुखारने घेरा है, तब चालाक दो-स्त शर्मीदा हुवा और कहने लगा सायत! ऐसाही होगा, एक श्रुष्टाकी भेंस मरगइ, जिसकेलिये वह रौने लगा, तब उसके एक दोस्तने आनकर पुछाकि-क्यों भाइ! किसलिये रोतेहो! उसने जवाबिदया, आज मेरी भेंस मरगइ, जो सारे कुनवेकों परवरीश्व करतीथी, दोस्त बोला! भाइ! खातिरजमा रखो, हमें तुमें काले रंग-की चीज रास्त नही, क्योंकि-आज मेरीभी एककाली हंडिया फुट गइ है, इसवातकों सुनकर वह बोला! ठीक है, जखमपर नमक लगाना इसीका नाम है, कहां दोपैसेकी हंडिया और कहां सोरप-येकी भेंस,!

[जरबुल-अमसाल,]

२७-१-नयीबात नवटिन तानी खेंची तेरहदिन. २-अन होनी होनी नही होनी होयसो होय, ३-अपने अपने कामकों गरजी है सबकोय, ४–आप मरे विनस्वर्ग-न-पहुचे, ५**-जैसे कंशा** घररहे तैसे रहे विदेश, ६-अंधेरनगरी चोपट चौपट्टराजा टकेसेर भाजी टकेसेरखाजा, ७-सबकी सुनना अपनी करना यहभी एक तमाशा है, ८-एक घरमें तीनमता कुशल कहांसे होय, ९-कर्मरेख नामिटे करो कोइ लाखो चतराइ, १०-काजलकी कोटरीमें कैसाही सयाना जाय एक रेख लागेही लागे, ११-ओछेकी मीत बालकी भींत, १२-बाहरके खाजाय घरके गीतगाय, १३-बीछुका मंतर-न-जाने सांपके विलमें हाथ डाले, १४-वेदिल नौकर दुश्मन बराबर, १५-इलक्से निकली खलकमें पडी, १६-दरियावमें रहना और मगरमछसे वैर, १७-जैसी करनी वैसी भरनी, १८-पथ्थरकों जोंक नही लगती, १९-धोबीका कुत्ता घरका-न-घाटका, २०-दि-येकेतले अंधेरा, २१-साचकों आच नही, २२-घरका मेदी लंका ढावे, २३-हाथकंगनकों आरसी क्या ? २४-अब पस्ताये क्या फरे चिडिया चुइ गइ खेत.

(दोहा.)

सज्जन समय-न-चुिकये-कहत गुनिजन क्क, चतुरनको खटकतिहये-समय चुककी हूक, १ होनहार हिरदे वसे-विसर जाय सब शुद्ध, जाफी जैसी होनहार-ताकी तैसी बुद्ध, २ जा तनमें विरहा वसे-सो तन कैसा मांस, यही गनीमत जानिये-हाड चाम अरु सांस, ३

(अफीमचीका-किस्सा)

२८-एक अफीमची अफीमके नशेमें बेटेहुवे अपने मकानकी छतसे नीचे गिरपडे, लेकिन ? यह माऌ्म नही हुवाकि-कौन गिरा, नौकरसे पुछनेलगेकि-देख! तो कौनगिरा, ? नौकरने देखकर जवाब दिया, हुजुर ! आपही तो गिरेहै, अफीमचीने कहा, खेर ! क्कछ हर्जनही, मुजको तो तलाश करनीथी सो करलिइ, फिर बाद थोडीदेरके आप घोडे पर सवार होकर हवाखोरीको चले, एक सहिस शाथमेंथा, आप पुछतेहै अवे ! सहिस !! घोडा कि-धरहै ? सहिसने जवाबदिया आपही तो उसपर सवारहै, अफीमची-ने कहा फिरभी खयाल रखना ठीकहै, ताकि-कोइ-ले-न-जाय, सहिस अपने मालिककी चतराइपर हसा और कहनेलगा किसकदर नशेमें मतवाले बनेहै, जिनको आपकी और घोडेकीभी मालुमनही, किसी शहरसे चार अफीमची दूसरे शहरकों जानेकेलिये निकले. राहमें एककुवा मिला, उसके कनारे वेटकर चारों अफीमचीने अ-फीमका कसुंबा बनाकर पिया, और नशेमें चकचूरवने, कुवा छोटा-साथा इस सबव उसपर कठेरा बनाहुवा नहीथा, उनचारोमेसें एककों एसा नसा चढाकि-उसकी घुमरसे कुवेमें गिरपडा, जब तिरनेकी आवाज हुइ तीन अफीमचीकों खयालआयाकि-अपना शाधी-कुनेमें गिरगया तीनो पुकारकरके पुलनेलगे, नयोंभाइ ! चोट तो-नही लगी, खुश-तो-है, ? उसनेकहा-में-वहुत खुशहुं, पस ! ये तीनो कहनेलगे अली बातहै जहांरहो खुशरहो, ऐसा कहकर चलेगये, और वह कुनेमेही रहगया, देखिये ! नशेबानोकी हालत, जो अपने शाधीकों कुनेमें लोडकर चलिकले, आखीरकार जब दु-सरे मुसाफिर नहांआये तो उनोने उसकों निकाला,—

(एक अकलमंद मुसाफिर और भालुका लििका)

कस्याग्रे पथिकस्य सत्रामिलितो भालुस्तदा तच्छवौ, द्वौ गृन्हाति तदंबरं गतमतस्तस्यापतन्नाणकं, तत्रागत्या जडः किमस्त्यय मतोस्याहास्य वक्रादिदं, सोवक् महामिमं प्रदेहि सुमते तेनाशुदत्तः करे,

२९-एक मुसाफिर जंगलमें चला जारहाथा, उधरसे एक रींख उसके सामनेआया, मुसाफिरने सोचा यह रींछ मुनकों खाजायगा, बहेत्तरहै-में-इसकेकान पहलेसे पकडलुं, पीछे जोक्क छोगा, देखाजा-यगा फीरन! पासगया और रींछके कान पकडिलये, दोनोमें कसाकसी होनेलगी, मुसाफिर खुइ जोरावरथा, एकघंटे तक दोनोंका कस्माल होतारहा, मुसाफिर के किस्सेमें-जो-सोना महोरेथी, कसाकसीकी हालतमें नीचेगिरपडी, इतनेमें एक दुसरा मुसाफिर रास्तेचलता वहां आगया, और देखता क्याहै? रींछ और मुसाफिर आपसमें लडरहे हैं और सोना महोर नीचे पडी है, अगले मुसाफिरसे पुलनेलगा भाइ! तुम क्या कररहेहों,? उसनेकहा देख! इस रींछकेकान मसलमसलकर उसके मुहमेंसे सोना महोरे निकाल रहाहुं, इस बातकों सुनकर पिछ ले मुसाफिरकों हिर्स दामनगीरहुइ और कहनेलगा थोडी देरके

लिये मुजकोंभी देदिजिये ताकि—मंभी—कुछ सोना महोर पैदाकरछं अगले मुसाफिरने कहा अछीबातहै मगर पेस्तर नीचे गिरीहुइ सोनाहमोर उठाकर मेरेकिस्सेमें डालदे, क्योंकि—ये—मेरी महेनतसे निकाली हुइहै, फिर—तुं—इसके कानपडलेना—जो—कुछ तेरे हिस्सेमें होगा तुजेमिलजायगा, इसबातकों मुनकर कमअकल मुसाफिरने उसीतरह किया, और पहले वाले मुसाफिरने रींछके कान इसको पकडादिये और आप अपना रास्ता लिया, थोडी देरभी—न—गुजरी होगीकि—कमअकल मुसाफिर कमताकत होनेकी वजहसे सोना महोरोंकी हिर्समें मारागया, और अगला मुसाफिर अपनी जान बचाकर चलागया,

(एक बाबु साहबकी मुलाकात,)

३०-िकसी वाबुसाहवकी-कोठीपर निगाहकेलिये एक डयो-ढीवान मुकरस्था, किसीने आनकर पुछाकि-क्योंभाइ ? वाबुसाहब मकानपरहै, ? डयोडीवान जल्दीसे भीतरगया और फिर आनकर कहनेलगाकि-वाबुसाहब कहतेहैं घरमें नहीहै, मुलाकातकों आयेहुवे महाशय ! समझगयेकि-वाबुसाहब मकानपरतोहै मगर हमसे मिलना नहीं चाहते, ऐसाजानकर वापिसचलेगये,

[चोरीका नतीजा,]

३१-एकवरुतका जिक्र है एक गांवसे वापवेटा दोनों किसीके खेतमें चोरी करनेकेलिये गये, वापने वेटेसे कहाकि-देखले ! चारो तर्फ कोइ आतातो नहीं, ऐसा कहकर चारोतर्फ देखने लगे और खेतमें चोरी करनेके लिये दस्तअंदाजी किइ, इतनेमें वेटा बोला, चारों तर्फतों देखलिया, मगर एकतर्फ देखना भूलही गये, बापने कहा किथर भूल गये, वेटेने कहा उपर देखनातो भूलही गये.

परमेश्वर तो देखताही होगा, इसवातकों स्ननकर वाप दिलमें शा-मींदा हुवा और उसदिनसे चोरी करनेकी आदत छोडांदेइ,

[एक चोरकी रहमदिली,]

चौरो निःस्वग्रहे गतो हिमनिशि प्राहिषयं स्वावला, त्वत्पार्श्वेवरखंडकं ददतुवा शिघ्रं ग्रहीष्वार्भकं, नोगृन्हाति शिशुं ददाति-न-तदा द्वंद्वंच जातं तयोः तच्छूत्वांवरकं शिश्र्परि हरो क्षिप्त्वागतोन्यालये, १

३२-किसीगांवमें एक गरीव आदमी रहताथा जिसकों एक औरत और एक लडकाभी था, खानेपीके लिये निहायत तंग थे, यहांतकि—मौसिमे जाडेमे बदनपर औडनेकेलिये कपडाभी नहीथा, एकरीज रातकेवच्त उसकेघर चौर चौरी करने लिथे आया और छीप कर खडा हो गया, इससुरतमें औरतने अपने खाविंदसें कहा, लडका ठंडसे निहायत सुकड गया है. आपके पास कोइ कपडा होतो फेंक दो, ताकि—इसकों ओढादुं, खाविंदनेकहा, में—खुद—मारेठंडके तंगहोग-याहुं, तुजे लडकेकी सुझीहै, औरत मजबूरहोकर रहगइ, चौर इस-बातकों सुनकर रहमदिलहुवा और अपने वदनका कपडा उसलडके कों ओढाकर चलागया, देखिये! चौरकोभी किसकदर रहमआया, दरअसल रहम आनाथा लडकेके बापकों—मगर—उसका बरअक्ष-हुवा, (यानी) चौरकों रहम आगया, दुनियामें मिशालहैकि—नादान दोस्तसे दाना दुक्मन बहेत्तर,

[हिदायत गुरुजीकी चेलेकों,]

३३-एकगुरुजी अपने चेलेसे हमेशां कहाकरतेथे पात्रे हरदम देखलियाकर ताकि- उसमे कोइ जीवजंदु-या-कीडेमकोडे-त-जमा होजाय, चेळा, निहायत शुस्तथा, पात्रे देखता नहीथा, मुहसे जवाब दे दियाकरताथा, देखिळ्या सबठीकहै, गुरुजीने दुसरेरोज फिरकहा पात्रे जरुरेख िळ्याकर ताकि—आइंदा—तकळीफ—न—उठानापडे, चेळेने कहा आप बहेमी माळुम देतेहैं, क्या! कही!! पात्रेमें सांप आवेठते हैं, शुरुजी कहनेळगे तुं! कभी पस्तायगा, चुनाचे! एकरीज एसाही हुवाकि—कहींसें—सांप आनकर पात्रेमें वैठगया, इधर जब चेळा पात्रेकों छेनेगया तो उसमें सांप बेठादेखा, जो फुंकार माररहाथा, चेळा गुरुजीकेपास भागआया, और कहनेळगा, सचमुच आजतो पात्रेमे सांप आनकर वैठाहे, जो मुने काटनेपरभी आमादा था, गुरुजीने कहा मेने पेस्तर नही बोळाथाकि—कभी—पस्तायगा, तुं! पात्रे देखता नही, उसीका यह नतीजाहे, अळा! चळ!! अव—में तेरी हमराहचळताहुं और उसकों हठाताहुं मतळब इसका यहहैकि—हरेक शख्शको चाहिये गुरुजीके फरमाने पर कामीळ एतकात रखे और उनकेशाथ गुस्ताखी—न—करे,

[एक बापबेटेपर दुनियाकी जबान,-]

अश्वस्थं जनकं स्रतस्य गमनं प्रोचितिशोधो त्रजा, श्वास्टं कुरु पुत्रकं कृत मितः पश्राचपुत्रं तथा. । द्यास्टो पथिगछतो जडिधयो ताक्ष्यीह गंतुमना, पद्मां कार्यमितोश्वकस्य भवतो मध्येन किं तिष्टतु; ॥ १ ॥

३४-किसी शहरसे एक बापवेटा एकघोडा लेकर दुसरे शहरकों जानेकेलिये निकले, राहमें बाप घोडेपर सवारहे, बेटा पीछे पैदल चलरहाहे, जातेजाते दोचार कोसके फासलेपर जब एकगांवकेकरीब पहुचे गांवके लोग सामने मिले, उनोनेकहा अपशोसहै इसबुढेपर-जो-आप घोडेपर वेठाहै, और बेटेकों चलारहाहै, इसबातकों सुन- ्कर बापने कहा मेरा बेठना दुनियाको नागवार गुजरताहै, छे ! ्तुं ! घोडेपर बेठजा, में-पैदल-चलताढुं, इसतरह चलतेढुवे जब दुसरे गांवतक पहुंचे वहांकेलोगोने इसकों देखकर कहा, देखो ! कैसा नादान लडकाहै-जो-आप घोडेपर वेटाहै, और बुढेको चलाताहै, इसवातको सनकर दोंनोंने खयालकिया, अव घोडेको खाली चलाना ठीकहै, इसतरह चलते जब तीसरे गांवके करीव पहुचे वहांकेलोगोने कहा, देखो ! ये-कैसे-कमअकलहै-जो-घोडा होते हुवेभी पैदल चलतेहै. इसबातकों सनकर दोनोने सोचाकि-अब-क्या ! करना चाहिथे, कुछ देरकेबाद सलाह हुइकि-हम-दोनों मीलकर घोडेपर बेठजाय, इसतरह कहकर दोंनों घोडेपर सवार होगये, और आगे-कों चले, जब चोथे गांवकेकरीव पहुचे, वहांके लोगोने देखा, और कहा, क्याखुब आदमी है, जो घोडेकी जान माररहेहै, घोडेको मार-नाहै-तो-युंही मारदो, नाहक ! क्योंतकलीफ देतेहो, ? मतलबिक इसस्रुरतमेंभी–छोगोने इनको बुरेकहे, आगेजाकर वाप वेटोने स<mark>ळाह</mark> किइ दुनियां दुरंगी है, इसके कहनेपर कहांतक खयाल कियाजाय, यह-तो-यंही कहती रहेगी, आपन अपना फायदा देखलो. और जैसा मुनासिव समझो वैसा करो, इस मिशालका मतलव यहहैिक-दुनिया-ख्वाह! भलाकामहो-या-बुरा, जो चाहे-सो-कहे, अक-लमंदोकों चाहिये जो अलाकामहो कियेजाय, दुनियाके कहनेपर खयाल-न-करे.

[एक मालिक−और-नौकरका किस्सा]

३५-किसीगांवमं एक किसान रहताथा, और वह गांवके वहार रोजमररा अपने खेतको जाया करताथा, एकरौज उसकों एक नौकरकी जरुरतपडी, और तलाश करनेसे एक आदमी मिला, किसानने पुछा क्यों ! तुं ! ! मेरेपास नौकर रहेगा, ? उसने कहा,

वैज्ञक ! रहुंगा, मगर काम क्या करना–सो–वतलाना चाहिये, किसानने कहा, बतलाना क्याथा, जोकुछ काम मालिककरे उस म्रजब करतेरहना, तब उसने नौकर रहना कुबुलकिया, और दुस-रेरीज दोंनोंमिलकर जब खेंतकों जानेलगे मालिकने मीटीसे भरा हुवा एक टोकरा अपने सीरपर उठालिया और नौकरसे कहा हुं ! पानीका भराघडा अपने सीरपर उठाले, गरजकि–दोंनों अपना अपना बौज लेकर खेंतमें पहुचे, मालिकने सीरपरसें मीटीका टोक-रा जमीनपर पटकदिया, इधर नौकरने पानीका घडा जमीनपर दे पटका, घडा तुर्तफुटगया, और पानी वहगया, मालिक खफाहोकर कहनेलगा, अबे ! मुर्ख ! यह क्याकामं किया ? नौकर बोला आप-नेही कहाथाकि-मालिककरे सो करना, मालिकने एक दरख्तकी टेंनी इसे मारनेकेलिये उठाइ, गरजिक-आपसमें-दोर्नोकी हाथापाइ होनेलगी, नोकर मोटा ताजाथा आखीरकार मालिककों भागना पडा, जब मालिक घर वापिस आया, नौकरभी पीछेआया, लोगोने पुछा यह क्या ! किस्साहै, ? मालिकने कहा यह मुर्खहै, नौकरने कहा यह मुर्खहै, लोगोने नौकरकों हठादिया और झगडा तयकिया, ऐसा नौकर किसकामका-जो-बातकों समझे नही, और मालिककी इमसीरी करे,---

[तकदीरका-तखाजा]

३६-किसी शहरमें एकशेट रहताथा, एकरोजकी बातहै, जंग-छकीतर्फ शैरकरनेके लिये गया, राहमें एक आदमीकी खोपरीजमी-नपर पढी हुइ नजर आइ, और उसपर एसालिखाहुवाथा,

> जम्मो कलिंगदेसे-आगमणं अंग देसमझामि , । मर्णं समुद्तीरे-अज्ञावि किं किं भविस्सइ; ॥ १ ॥

इसबातकों पढकर शेठने उस खोपरीकों उठालिइ, और एक रुमालमें बांधकर अपनेघर लाया, शेटानीने पुछाकि-यहक्या ! लायेहो ? शेठनेकहा तुजकों इसबातसें क्या ! सरोकारहै ? अपने काममें मशगूल रहो, शेटानीको इसवातसें शक पैदाहोगया कि-सा-यत ! यहकोइचीज-मेरेदिलकों अपनी तर्फ फिरालेनेकेलिये लायेहो बादचंदरौजके शेठकी गेरहाजरीमें शेठानीने रुमालकों खोलकरदेखा तो दरमियान उसके एक खोपरी पाइ, और खयान्न आयाकि-जरुर यहचीज मेरेलियेही लायेहै, मेंही इसकों कुटकाटकर बिडयां बनादुं और शेटजीकों खिलादुं, दुसरेरोज उसीतरह किया और जब शेठजी जिमनेंकों आये शेठानीने वही वडियां उनकों परोसदिई शेटजी ! खातेहुवे तारीफ करनेलगे, क्या ! उमदा बडियां बनी है ? शेटानीने कहा क्यौ-न-हो ? यहतो आपहीकी ख्वाहेसकी चीजथी. इसवातको सुनकर शेठजी समजगये यह उसी खौपरीकी बडियां है, शेठने शेठानीसें कहा, जैसा उस खौपरीपर लिखाहुवाथा, वैसाही हुवा, में किस इरादेसे लायाथा और तेने उसका मतलब किसतर्फ उतारा, आदमी चाहेसो करे–जो−काम–होनहार होताहै वगेर**होनेके** नही रहता, एकगजलका बंदभी हस्बहालहै.

> तकदीरके लिखेहुवे तदबीर क्याकरे ? थांभा गिरेतो थांभलें-पर्वत गिरेतो क्याकरे, ?

[गुरुजीसे चेलेका सवाल]

पृष्टः केन गुरुहि खिद्यतिमनो नेत्रे रुतस्तत्कथं, प्रोचे तं च गुरुर्मनो नयनयो नी व्यंजनावग्रहः वेदाक्षे प्रकरं पृथक भवतितद्वर्गं मनो नेत्रयोः र्मर्त्या वेकग्रहेस्थितौ समसुखं लग्नाति तुल्यं तयोः, ३७-िकसी चेलेने अपने गुरुजीसे पुछािक-महाराज! जब मनकों तकलीफहोती है-तो-आंखें क्योरोती है, ? गुरुजीने कहा मन और आंखोंका अर्थावग्रहहै, व्यंजनावग्रहनही, शरीर-जवान-नाक और-कान-पाप्यकारी है, नेत्र और-मन अपाप्यकारी है, यही वज-हहैिक-जब-मनकों तकलीक होती है, आंखे रोदेती है, जैसे कोइप-डोसीकों किसी किसमकी तकलीक होजाय तो पासरहने वालेकोंभी रंजहोताहै, आंख और मनके दर्भियानभी यहीबातहै, अकलमंदोकों मुनािसबहै जबकभी किसी किसमकी मुसीबत आनपडे हरचंद हिंम-त-न-हारे, जो लोग हिंम्मत हारजातेहै-वे-जमामर्दनही,—

[रास्तेकी तलाशीपर किसानकी हाजिरजवाबी]

३८-एक मरतवेका जिक्रहे, एक साधुमहाराज किसी शहरसें रवाना होकर दुसरे शहरकों जारहथे, इत्तिफाकन ! रास्ता भुलगये एकिक्सान-जो-अपने खेतमें हल जोतरहाथा, पूछािक-फलां-गांवका रास्ता किसतर्फ है, ? किसान हाजिर जवावथा, कहनेलगा आपतो परलोकका रास्ता वतलानेवालेहो, क्या ? इसलोकका रास्ताभी आपकों मालुमनही, ? साधुमहाराज वोले, वेशक ? जो केवलबानी-या-अवधिज्ञानी होते है उनकों जरुर मालुम होताहै, किसान हसा, और कहनेलगा मेनेतो आपके शाथ एक दिलगी किइथी, यह देखलो रास्ता यही है, इसी रास्तेसे चलेजाओ, अगर ख्वाहेसहोतो यह खेतभी आपकाही है यहां ठहरो,

[एक नजुमी पंडितकी चालाकी,]
गुवीं भूपवशैकदास्ति नृपति विभं तदा पृछति,
पुत्रः किं च सुता भविष्यतिहि मे पुत्रो नहीत्यंगजा,
संलेख्य छदने ददौ नरपितं पुत्रो भविष्यत्यथ.
पुत्री चेद्यदि वाशु दीर्घलघुकान् कृत्वा तु वक्ष्येक्षरान्,

३९-किसी शहरमें राजासाहबकी रानीकों हमल रहा, राजासाहबने अपने शहरके पंडितोंकों बुलाकर पुलाकि-बतलाओ ? हमारी रानीकों वेट।होगा-पा-बेटी, ? एक जइफ पंडितजी बोले बजरीये नजुमके-में-अभी बतलासकताहुं, मगर सायत ? आपकों याद
रहे-न-रहे ! इसलिये लाइये ! एक कागजपर लिखदेताहुं उसकों
मंडारमें रखलिये, जिसवरूत रानीजीकों कोइसंतान पेदाहो, उसवर्ष्टत इसकागजकों खोलकर देखलिजियेगा, आपकों यकीत होना
यगाकि-पंडितजीका-कहना सचहै, राजासाहबने कहा अभीलिखदो,-में-उसकों मंडारमें रखबादेताहुं, पंडितजीने फौरन ! लिखदियाकि-पुत्रो-न-पुत्री-इसलेखमें पंडितजीने दो-मतलब-रखेथेकि
अगर पुत्रहोगातो कहदुंगा, देखलों मेने पहलेपुत्र लिखाहै, और
अगर पुत्री होगोतो कहुंगा पुत्रो-न, (यानी) पुत्र नहोगा, पुत्रीहोगी,
इस तरह दोनों तर्फसे मेरीवात ठीकहोजायगी,

[एक मइकरेकी-गुस्ताखी]

४०-एक साधुमहाराजने अपनेधमशास्त्रके वयानमें आमलोगोकों सुनायाकि-जोकुल-भलाबुरा होताहै अपनी तकदीरसे हुवाकरताहै, उसवरूत सभामें बहुतसेलोग हाजिरथे, उनमें एक मशकराभी बेठा-हुवाथा उसनेभी सुना, और जब शामकेवरूत साधुमहाराज दीशा जंगल जानेलगे राहमें उसमशकरेने पीक्रेजाकर साधुमहाराजकी पीठपर एकपथर फेंक मारा, साधुमहाराजने पलट नजरकरके देखातों वही मशकरा नजरआया, मशकरा कहनेलगा पलट नजरसे क्या देखतेहो ? जोकुल भलाबुराहोताहै, अपनी तकदीरसे हुवाकरताहै, यहपथर-जो-आपकों लगाहै अपनी तकदीरसे लगाहै, साधुमहाराज बोले, वेशक ! यह सब अपनी तकदीरहीका मामलहै, मगर-में-यह देखताहं, गुनाह किसने मोंल लेलियां ? और पापका भागी

कौनवना, ?-मशकरा स्नुनकर शर्मींदा हुवा, साधुमहाराजसे माफी मांगने लगा, साधुमहाराजने कहा यहभी तेरी तकदीरमें लिखाथा-कि-पहले गुनाह-करना और फिर माफी मांगना,--

४१-[बापके साथ बेटेकी बेंअदबी]

एकशेठने अपनेलडकेकों नसीहत दिइकि—वापके सामने बोलनानहीं, जब तुजकों नसीहत दिजाती है, —तुं—सीचतानहीं, और
बेंअदबीका जवाब दियाकरताहे, बडीभूलहे, दुसरेरीज शेठ कहीं
जरुरी कामकेलिये बहारगयेथे, और जब वापिस घरआये मकानमें
लडका अकेला किवाडबंदकरके बेठाहुवाथा, शेठने उसकों बहुत
पुकारा मगर लडकेने जवाब नहीदिया, आजुवाजुके लोग इकठे
होगये और इस माजरेकों देखकर कहनेलगे लडकातो भीतर बेठाहुवाहे, आप छतपरसे होकर अंदर जाइये, गरजिक—शेठने—वैसाही
किया, भीतर आनकर देखातो लडका बेठाहे, वापनेकहा क्यों!
रे! तेने इतनीअवाजे सुनकरभी जवाब नहीदिया, सवब क्याहे,?
लडकेने कहा, कलही—तो—आपने फरमायाथाकि—वालिदके सामने
बोलना नहीं. सो—मेने—ऐसाही किया, वालिदने खफाहोकर कहा,
क्या! तुं!! नीरा मूर्खहें? जो कहे कुल और समझता है कुल,?
इसका मतलब यहहुवाकि—वडोंके सामने गुस्ताखी करना महेज
नादानी है,—

४२-[एक वजीरकी उमदा तकरीर]

एक राजासाहब जंगलकी तर्फ नंगेपांव शैरकरनेके लिये गये, रास्तेमें एककांटा उनके पांवमें चुवगया, उनोने सौचा ! मेरेपांवमें कांटा चुवा दुसरोके पांवमेंभी चुवता होगा, इसलिये लाजिमहै अपनी सरहदमें जितनी जमीनहै चमडेसे महादेना चाहिये ताकि- किसीके पांवमें कांटा-न-चुवे, जब वापिस महेलमें आये वजीरकों बुलाकर कहने लगे जाओ ! जितना चमडा शहरमेंमिले खरीदलो, वजीरने मुताबिक हुकम राजासाहबके दोचारलाख रूपयोका चमडा उसीवरूत खरीदलिया, और दोतीनादिन उसीतरह चमडा खरीदते रहे, चोथेरीज राजासाहबसे पुलाकि-अब-क्या ! हुकमहै ? और इसचमडेकों क्या करना चाहिये, राजासाहबने कहा, देखो ! मेरेपावमें किसकदर कांटा चुबाहै, ?-में-जानताहुं इसतरह दुसरों कोंभी चुबताहोगा, मेरीरायहै तमाम जमीन अपनी सरहदकी-चमडेसें महादेना, ताकि-किसीके पांवमें कांटा-न-लगे, वजीरने कहा खता माफहो-में-अर्जकरताहुं, ब-मुताबिक हुकम हुजुरके चमडा महाभी दिया, फिर गाडीघोडे चलनेकी वजहसे फटजायगा और फिर सिलाना होगा, बहेत्तरहै आप अपने पांवकी हिफाजत किजिये, थोडे चमडेसें काम होजासकता है, सारी आलमकी फिक्क कहांतक करेगें, ? राजासाहबने कहा, बेशक ! ठीकहै, अपने पांवकी हिफाजत करनाही मुनासिबहै, दुनियाकी फिक्क कहांतक किइजाय,!!

४३-[एक हकीम और मरीजकी मजाख,]

एक मरीज हकीमके पासगया और कहनेलगा मुजकों बुखार आताहै, हकीमने पुछा रौजका आताहै. ?-या-बारीका, ? मरीजने कहा हजरत ! रौजका-या-बारीका-तो-में-नहीजानता, हां! इतना माल्महैकि-आज आयाहै, कल-न-आयगा, फिर परसों आयगा, हकीमसाहब बोले, इसीकों बारी कहतेहैं, मरीजने कहा, में-बारी- उसकों समझताथाकि-आज-मुजकों आयाहै, कल-हकीम साहबकों आयगा, परसों उनके कुनवेमेंसें किसीकों, हकीमसाहब बोले खूब कहा, क्या! आप दवालेनेकों आयहै, ? या दिल्लगी करनेकों, ? मरीजने कहा माफ किजिये, मेरीतो आदतही दिल्लगी करनेकी है,

४४-[मुताबिक धर्मशास्त्रके चार चिजोंकी तलादा,]

किसी गुरुने अपने चेलेकों कहा अगर तुजकों कोइ पुलेकिहमकों-चारचिजें असी वतला जिनमें एकचिज ऐसीहो-जिसकों
यहां सबकुछहो परलोकमें कुछनही, दुसरी चिज ऐसीहो जिसकों
परलोकमें सबकुछहो-यहां-कुछनही, तीसरी चिज ऐसीहो जिसकों
यहां-और-वहां दोनोजगह कुछभी नही, और चोथीचिज ऐसीहो
जिसकों यहां और वहां दोनोंजगह सबकुछहो, चेलेने कहा मेरीअकल नहीं चलती, आप बतलाइये! बडी महरवानी होगी, गुरुजीने
कहा, सुन! पहेली चीज वेश्याहे, जिसकों यहां रुपयापैसा-शिंगार
सबकुछहै, परलोकमें नहीं, दुसरीचीज साधुमहाराजहै जिनकों यहां
कुछभी सुखनही, परलोकमें बहुतकुछहै, क्योंकि-धर्मकरनेसे परलोकमें फायदाहै, तीसरीचीज हिंसाकरनेवाला शख्श जिसकों यहां
और वहां दोनोजगह सुखनही, चौथिचीज धर्मात्मा शख्श-जिसने
'पूर्वजन्ममें धर्माकेयाथा इससे यहां सुखीहै, और यहांभी धर्म
करताहै, इस लिये आगे परलोकमेंभी सुखीहोगा,-

४५-[दो मुसाफिरकों एक किसानका माकुल जवाब,]

दो-मुसाफिर-दुसरे शहरकों जानेके लिये अपने घरसें चले, चारक शके फासले जानेपर दो-सडके-नजरपड़ी, दोनोंने खयाल कियाकि-अव-किधरकों जानाचाहिये, ? थोड़ीदेर वहांखड़े होगये और चारोतर्फ देखरहेथे तो एक किसान नजरपड़ा, दोनोने पास-जाकर पुछाकि-क्यों ! भाइ!! यह सडक किधरकों जाती है, ? किसानने कहा तुमबड़े पागलहो, सडकभी कहींजाती है, ? जानेवा लेही जायों, सडकतो यहांही पड़ीरहेगी, दोनों मुसाफिर शमींदेहुवे और कहने लगे, बेशक! तेरा कहना ठीकहै, मगर यहतो बतला- हमको फलांगांव जानाहै, किससडक होकर जावे, ? किसाननेकहा ऐसाकहोतो बतलाताहुं, देखो ! इससडक होकर चले जाओ,~

४६-[मौसिमं कौनसा अछा ?]

एकदिन वादशाह अखबरने सरेदरबार अपने मुसाहिबोंसें
पुछाकि बतलाओ ! मौसिम कौनसा अछाहे ? किसीने कहा मौसिम
गर्मीका अछा है, किसीने कहा सर्दीका, और किसीने कहा मोसिम
वारीश सबसे बहेत्तर है, लेकिन ! किसीकी बात बादशाह अखबरकों पसंद-न-आइ, जब बीरवलके कहनेका मौका आया, झटसें
कहा-मौसिम-बो-अछा है जिसमें अपनी तबीयत बहाल रहे, और
खाना अछा मिले, बादशाह खुश होकर कहने लगे जवाब
हो-तो-ऐसा हो, जिसपर कोइ उनर नही कर सकता, अछा ! अब एक और बात पुछता हुं बतलाओ ! जब रातकों सब
कोइ आराम करता है उस बख्तभी कोइ चलता है-या-नही ? बीरबलने जवाब दियाकि-हुजुर ! उस बख्तभी साहूकारका ज्याज
चलता है, जो कभी नींदभी नहीं लेता,

४७-[जैन धर्मकी चंद बातें,]

जैन मजहब निहायतपुराना और इसमें रिषभदेव वगेरा चौ-इस तीर्थकर सर्वज्ञ हुवे, बडेबडे चक्रवर्ती—वासुदेव—पतिवासुदेव— वगेरा राजे इस मजहबमें हो चुके है, आजकल जैनोंकी मर्दुमशु-मारी कम है पेस्तर बहुतथी, जैनके अखीरकें तीर्थकर महावीर और बीध मजहबके गौतम बुध एक समयमें मौजूद थे, जैन और बौधके उसल जुदे जुदे है जो लोग एक समझते है ठीक नहीं, दुसरे मज-हबवाले इश्वरकों जगतका कर्त्ता कहते है, जैन इस बातसे खिलाफ है, जो कुछ भले बुर कर्म जीव करता है, उसका फल वह खुद पाता है,-दुनिया अनादि है, जमीन-आब-हवा-आ तीश-और-वनास्पितमेंभी जीवोंका होना जैन मानते है, मुक्तिके लिये ज्ञान-और-क्रिया अपनी अपनी जगहपर काबिल मंजुर कर-नेके है, शराबं-गोस्त-सहेत-और-जमीकंद खाना जैनमें मना है, पानीकों कपडेसें छानकर पीना चाहिये. रातको खाना जैनमें क-ताइ मना है, शिकार खेलना-या-जीवोंका काटना-मारना जैन लोग अला नही समझते, बिल्क ! लुले-लंगडे जानवर जो करीब उलमीत होते है हिकाजंतसें रखते है, हिंदमें कइ जगह इनके लिए मकानातभी बने हुवे है, जैनोमे (१६) संस्कार और उनके मंत्र अलग अलग मौजूद है, ख्वाह मर्द-या-औरत कोईहो इल्म पढना सबके लिये जाइज है, जो जो दुनियादार जैन मजहबपर एतकात रखते है अपनी पैदाशमेंसे रुपये आठ आने-चार आने-या-दोआने धर्म-में खर्च करे, और हरसाल एक जैन तीर्थकी जियारतकों जाय, दुनियामें धर्म एक आलादर्जेकी चीज है,-

🗸 ४८-[दोस्तकें साथ दोस्तकी चालाकी.]

किसी शहरमें दो—दोस्त—रहते थे, एक रौज—वे—जंगलकी तर्फ सैर करनेके लिये गये, और कुछ दुर जाकर एक दरस्तके नीचे वेठे, इथर उथर देखते है तो इत्तिफाकन! जमीनमें गडा हुवा एक वडे वर्तनका मुंह दिखाइ दिया, नजदीक जाकर देखते है तो वहवर्तन मीटीमें दवा हुवा है, मीटीकों हठाकर उसका ढकन खोला तो भीतर सोनामहोर लवालव भरी हुइ नजर आइ, दोनों आप- समें खुश हुवे और कहने लगे क्याही! अछी बात है! आज ख-जाना मिल गया, मगर दोनोमें एक चालाक था, कहने लगा भाइ! आज इसकों यही रख छोडे, क्योंकि—दिन—अछा नहीं है, अछा

नक्षत्र देखकर उठा छे जायगें, ऐसा कहकर उसपर मीटी दाब दिइ, और घर चले आये, दुसरे रौज चालाक दोस्तने खुद अकेले जाकर सब सोनामहोरे अपने हाथ कर छिइ, और उस बर्तनमें कोयले भर दिये, बाद दोचार रौजके अछा नक्षत्र देखकर दोनों वहां गये, और मीटी निकालकर उसवर्तनकों देखते है-तो-महो-रोकी एवजमें कोयलोसे भरा हुवा है, चालाक दोस्त कहने लगा, क्या करे! भाइ!! अपनी तकदीरही बुरी है, जो सोनामहोरे कोयले हो गइ, पस! दोनों नाउमीद होकर वापिस चले आये, मगर नर्द दगाकी हर्गिज! छीपती नही, आखीरकार चालाक दो-स्तकी चालाकी माऌम हो गइ, और दुसरे दोस्तने सोचाकि-अब आपनभी चालाकी करना चाहिये, गरज! वह चालाक दोस्तके घर गया और कहने लगा आज आपके लडकेकों मेरे घर खाना खिलानेकों ले जाता हुं, ऐसा कहकर उसके लडकेकों अपने घर ले गया, और खाना खिलाकर तलघरमें उसकों छीपा रखा, और एक–वंदर–मौल लाकर घरमें वांघ दिया, दुसरे रौज चालाक दोस्त उसके घर आया और पुछाकि-भैया! लडका कहां है? जो कल तुमारे घर दावतके लिये आयाथा, दोस्तने जवाब दिया, क्या कहुं! अपशोषकी बात है, आपका लडका बाद खाना खा चुकनेके बंदर बन गया, देख लो ! यह बंधा हुवा मौजूद है, चा-लाक दोस्त हेरान हुवा और कहने लगा क्या! लडकाभी बंदर वन जाता है ? दोस्तने कहा, कभी सोनामहोरेभी कोयले हो जाती है, ? तब चालाक दोस्त समझ गया, और कहने लगा, सोनामहोरे मौजूद है, क्यों फिकर करते हो? उसने कहा लडकाभी मौजूद है, तुम क्यों फिक्र करते हो? गरजिक-उसने-सोनामहोरे दे दिइ और इसने लडका दे दिया,

४९-[सवाल बाद्शाह अखबरका द्रबारी मुसाहिबोंसें,]

बादशाह अखबरने अपने सरेदरबार ग्रुसाहिबोसें पुछाकि— बतलाओ ! सबपतोंमें कौनसा पत्ता बडाहै, ? चुनाचे ! किसीने कहा केलेका पत्ताबडाहै, किसीने कहा अरइका—और किसीने कहा सागवानका बडाहे, इसीतरह पेंदरपें जवाब देनेलगे, मगर किसी का जवाब बादशाकों पश्चंदे खातिर—न—हुवा, जिसवरूत बीरबलसे पुछागया उसने जवाबदिया, हुजुर ! नागरबेलका पत्ता सबसे बडाहे, जो आपके मुंहतक पहुचताहै, बादशाह यह मुनकर निहा-यत खुशहुवे,

५०-[एक अकलमंद मुन्शी,]

एक अकलमंद मुन्शी-अपने शहरमें कोई कम अकल पनेका काम करता दिखाइदे फौरन! उसकानाम अपनी किताबमे लिख-लियाकरताथा, एक रौज बादशाहके दरबारे खासमें भी आपहुचा, एक सोदागिर घोडे वेचनेवाला वादशाहके सामने खडाथा और कुछवातचीत कररहाथा, बादशाहने कहा! कोई उमदा घोडा लाये हो, ? उसने कहा सरेदस्त कोईहाजिर नही, मगर बहुकम हुजुरके उमदा घोडा खिदमतमें हाजिर करसकताहुं, बादशाहने पुला उसकी कींमत क्या होगी? सोदागिरने जवाबिदया दशहजारसे कम-नहोगी, वादशाहने खजानचीकों हुकमिदया अभी इसको दशहजार रपये देदो, व मुजब हुकम बादशाहके खजानचीने रुपये देदिया, मुन्शीने यहमाजरा देखकर अपनी किताबमें लिखादियाकि-बादशाह-कमअकलहै, किसीने इसवातकों देखा और बादशाहसे अर्ज किइकि-आपको इसमुन्शीने कमअकलके नामसे लिखलिये है, वादशाहने उसको बुलाकर पुछा और उसने जवाब दियाकि-हुजूर!

बुजुर्गोका फरमानहैकि-वगेर चीज देखेभाले-या-कबजेमेलिये मैंलि देदेना अकलमंदीकी वात नहीं, वादशाह वोले, अगर सोदागिर घोडा लाकर हाजिर करेगा तो, १ मुन्शीने कहा अगर-न-करेगा तो १ बशर्तिक-उसकी पहिचानतक आपको नहीं है, बादशाह तुर्त उस बातकों समझगये और उस सोदागिरसे रुपये पीले लेलीये इसलेखका मतलब यहहैकि बगेरचीज देखेभाले और कब्जेकिये पेस्तर दामदेदेना मुनासिबनहीं,

५१-[एक अनपढ राजेका जिक्र,]

एक रोज एक भाटने एक राजासाहबके पास जाकर कुछक-वित्त सुनाये, राजासाहबने खुशहोकर खजानचीको हुकम दियाकि— इसे—सवारुपया इनाम दियाजाय, खजानचीने उसहुकमकी तामीछिकई, भाट जब इनामपाकर राजासाहबके सामने आया, राजासाहबने पुछाकि—क्यों ! तुजे सवारुपया मिल्रगया, भाटने जवाबिदया, हुजुर ! बीसआने मिल्रगये, राजासाहब ग्रस्से होगये और खजान-चीकों बुलाकर कहा, मेने सवारुपया देनेका कहाथा तेने इसकों बीसआने क्योंदिये ? इसमाजरेको सुनकर भाटसे बिनाजवाब दिये के—न-रहागया, बोजउठा, हुजुर सवारुपया और बीसआने एकही बातहै, राजासाहब भाटपर खफाहुबे, और कहनेलगे तेने सुजेपेस्त-रसे क्यों—न-जचायाकि—सवारुपया और बीसआने एकही बातहै, देखिये ! अनपढ महाशयोकी खूबी, गरज! इसमिशालकी यहहैकि— हरशाल्यको इल्पहासिल करना चाहिये,

५२-[एक जजसाहब और मुजरीम,]

एक जजसाहबके इजलासमें एक शख्शका मुकदमा चलताथा, जजसाहबने पुछाकि-तुमारीसादी हुइहै-या-नही ? मुजरीमने जवा- बिदया, हुजर ! मेरी सादीनहीहुइ मेरीऔरतकी सादीहुइहै, जनसा-हव बोले क्या ! अदालतमेभी दिल्लगी करते हो ? उसनेकहा, नहीं हुजुर ! मेरी क्याताकातहै-जो-अदालतमें दिल्लगी करुं, ? दरअसल मेरी औरतने मुजकों छोडकर दुसरेसे सादी करलिइहै, इसबातकों सुनकर सबलोग हसने लगे,

५३-[एक हाजिरजवाब लडका,]

किसी बादशाहने अपने शहरमें हुकम जारी कियाकि—रातके वस्त कोई आदमी घरसे बाहर कदम—न—रखे, तमाम लोगोने बादशाहके हुकमकी तामील किइ, मगर एक लडका हुकम अदुली करके मकानके बाहर निकला, और रास्तेमें सिपाइयोंकों मिला, उनोने पुछाकि—क्या! तेने शाहि हुकम नही सुना,? लडकेने कहा केई? लडकेने जवाब दिया—में—किसका लडका हुं—कुछ माल्ममी है? जिसके सामने तमाम बादशाह—शाहजादे—और—दिवान वगेरा सिर झुकाते है, सिपाइयोंने समझा कोई शाहजादा होगा, जाने दो, असलमे वह नाइका लडका था; देखिये! हाजिर जवाब लड-का किस कदर कामयाब हुवा,

५४-[संस्कृत इल्मकी तरकी,]

किसी शहरमें एक पंडितजीका जाना हुवा, रास्तेमें एक भी-स्तीकी लडकी मिली, पंडितजीने पुछा तुं! किसकी लडकी है? उसने जवाब दिया,

> चतुर्भुखी नतो बह्मा-द्रपभारुढो न शंकरः तोय थारा नतो मेघः-तस्य कुलेई बालिका,

यह सुनकर पंडितजी समझ गये, यह भिस्तीकी लडकी है, फिर कुछ आगे बढे तो एक दरजीकी लडकी मिली, उसको पुछा हुं! किसकी लडकी है, ? उसने जवाब दिया,

ग्रीवाशीर्षे न विद्येते-हस्तपाद विवर्जितः स जीवं पुरुषं अत्ति-तस्य कुलेहं वालिका, २

यह स्ननकर पंडितजी समझ गये कि-लडकी-दरजीकी है, फिर कुछ आगे वढे तो एक और लडकी मिली, उसकों पुछा तो-जन्नावमें उसने कहा,

> यंत्र तंत्र विधि नित्यं-करोति खंडखंडतां, राजा प्रजा न जानाति-तस्य कुलेहं वालिका,

पंडितजी इस बातकों सुनकर समझ गये यह स्थारकी लडकी है, फिर कुछ आगे बढे तो एक लोहारकी लडकी मिली उससेशी पुड़ा तो जवाब दिया कि—

> स्वासोत्स्वासं च गृन्हाति-जीवंतं इव सर्वदा, कुटुंबे कलहो यत्र-तस्य कुलेहं बालिका, ४

फिर कुछ आगे बढे तो एक और लडकी मिल्ली, इससेभी यही सवाल किया, और उसने जवाब दिया कि,—

> पर्वताग्रे रथो याति-भूमो तिष्टति सारथी, चलते वायु वेगेन-तस्य कुलेइं वालिका, प

यह स्नुनकर पंडितजी जान गये यह कुंभारकी लडकी है, फिर आगे बढे तो एक और लडकी सामने मिली, उससेभी पुड़ा कि— तुं! किसकी लडकी है? उसने कहा, कृष्नमुखी न मार्जारी-द्विजीव्हा न सर्पिणी, पंच भर्ता न पांचाली-तस्य कुलेहं बालिका, ६

इस बातकों सनकर पंडितजी समझ गये, यह मोहरिस्की यानी लेख लिखने वालेकी लडकी है –

५५-[एक कंजूसका-मजाख,]

एक कंजूसका वाप बीमारपडा तो उसके बेटेने अपने बापसें कहाकि-चादर अभीसे उतार दिजिये तो अछा है, जो धोकर रख लिइ जाय ताकि-आपके मुर्देपर ओढानेके लिये काम दे, बापने कहा घवडाता क्यों है? मेरी अंगुलीमें जो अंगुठी सोनेकी पहनी हुइ है वेचकर नया कगडा मौळळाना,-वेटेने कहा-में-अपनी अं-म्माजानसे पेस्तरसे इकरार कर चुका हुं कि-आपके दम निकल जानेपर अंगुठो तुजे लादुंगा, विक ! वह आपके मरनेका इंतजार कर रही है, बापने कहा अबे ! कमबरूत ! क्या लडकपनकी बातें कर रहा है, रात पडनेकी तयारी है, चिराग तो जला, बेटेने कहा, तीन रौजसे आपका दम निकलनेकी हालत बीत रही है, अबतक निकला नही, नाहक! तेल क्यौं खराब करना ? बापने कहा अब में−िकसी दमका मेहमान हुं, और−जी−घवडाता है, चिराग जला दे, बेटेने कहा, अछा ! जलाता हुं, मगर मुजे नींद आ जाय तो मरनेके पहेले आप चिरागकों बुझाकर मरना, ताकि-तेलका बचाव हो, देखिये! दुनियामें ऐसेभी कंजुस लडके होते है, जो अपने बापके लियेभी पेसेका तेल खर्चना नहीं चाहते.

५६-[एक जाहिल नौकरका लितका,]

एक मालिकने अपने नौकरसे कहा चार पाइ विछा दे और फक्त तकिया रख दे, नौकरने चार पाइ विछा दिइ और उसपर तिकयाभी रख दिया, मगर फक्तकों ढुंढने लगा, देर होनेपर मा-लिकने पुकारा अवे ! क्या करता है ? वह कहने लगा, हुजुर ! चार पाइतो बीजा दिइ, और तिकयाभी उसपर रख दिया, लेकि-न ! फक्तके लिढे ढुंढ रहा हुंकि-कक क्या चिन है, ? मालिकने कहा, अवे ! नादान !! क्या वकवाद कर रहा है ? मेने फिकरेमें-जो-फक्तका लब्ज कहाथा क्या ! वोभी कोइ चीन है ? जो ढुंढ रहा है, वेंइल्म नौकरका नतीजा ऐसीही हुवा करता है,-

५७-[चार दामादोंका लतिका,]

किसी शहरमें एक पुरोहित ब्राह्मण रहताथा, और उसकी राजाके दरवारमें बहुत वडी इज्जत थी, यहां तककि - उसकों रा-जाजीने दो गांवकी जहांगिरीधी दे दिइथी, उसके घर चार लडकी और एक लडका था, चारो लडकीयोंकी सादी कर दिइ गइथी-और-वे-अपने ससरालमें रहा करतीथी, जब लडकेकी सादीके दिन करीब आये पुरोहितजीने लिख भेजाकि-आप लोग मय क-बीलेके मेरे घर तशरीफ लावे, और लडकेकी सादीकों रौनक अ-फरौज करे, बम्रुजब तेहरीरके-वे-चारों दामाद म्रुसरालके घर आये, और सादीका जलसा शुरु हुवा, औरभी कई रिस्तेदार पुः रोहितजीके घर आये हुवेथे, वडीशान-व-सौकतसें बरात चढी, और बाद चंद रौजके सादी करके वापिस आये वराती छोग अ-पने अपने घर गये, और करीबके रिस्तेदारोनेभी रुकसत मांगी, मगर चारों टामाद जो पस्तरसे आये हुवेथे जिनके नाम-विजय-राम-माधवराव-मणिराम-और-केशवलाल-थे, मुद्रत गुजर गइ रुकसत नही मांगते, चैनसे पुरोहितजीके रसोडेमें जाकर जीम आते थे, और दुकेरकों शतरंज खेळा करतेथे, यूं-कह रौज गुजरे बाद पुरोहितजीने सौचाकि-ंतो-ये-जानेवाले नजर नही आते, बहे-

त्तर है इनके लिये जानेकी कोइ तद्द्वीर निकाले, गरजिक-पुरोहि तजीने अपनी औरतसें पुछािक-इनके रवानगीकी क्या सुरत है,? उसने कहा आप फिक्र मत किजिये, में-कलही इनकी तज्ज्ञीज करती हुं, ऐसा कहकर दुसरे रीज गेहुकी रोटी बनाना मौकुफ कर दिइ और बाजरेकी रोटीयां बनाकर चारों दामादके सामने रखी, चारोन उन रोटियोंको खाइ, और दुफरकों जब शतरंज खेलने बेटे विजयरामने कहा, देखों! आज बाजरेकी रोटी मिलने लगी, अब अपनी इज्जत नहीं जो यहां फिर चंदरीज टहरे, सुना-सिब है, अब अपने घरकों जाय, इस बातकों सुनकर तीनोने कहा, आप जाना हो जाइये, हमतो यहांही टहरेगें, गरजिक-विजयराम अपने सुसरालसे रुकसत पाकर अपने घरकों गया,

बाद चंद रीजके पुरोहितजीने फिर अपनी औरतसे कहा-ये तीनोतो हिलतेभी नहीं, इनके जानेकी कोइ तदबीर बनाओं, औ रतने दुसरे रीज घीकी एवज बाजरेकी रोटीयोंपर तिल्लीका तेल दामोदोके सामने रखा, इस बातसे माधवराम समझ गया, और दोनों आधियोंसे कहने लगा, अवतो पुरी वेंइज्जती होने लगी है, बेहत्तर है जल्दीसें चल निकले, दोनोंने कहा, आप जाइये, हम बाजरेकी रोटी और तेलही खाया करेगें, मगर यहांसें नहीं जायगें, यह सुनकर माधवराव मय अपने कबीलेके बतन चला गया, बाद चंदरीजके पुरोहितजीने फिर अपनी ओरतसे कहाकि-ये-दोंनोंतो खूब जमे बेंटे हैं, इनकाभी कोइ रास्ता निकालों, दुसरे रीज औरतने चार पाइयां विखेर डाली, और दामादोसें कहने लगी, चार पाइयोंमें खटमल हो गये है, आजसे आपलोग जमीनपर सोया। किजिये, इस बातकों सुनकर मणिरामकों होश आया, और कहने लगा, भाइ! अबतो यहांका रहना ठीक नहीं, ऐसा कहकर मणि-

रामभी अपनी औरतकों लेकर चला गया, अब रहा केश्ववलाल-सो-उसने बारां महिने तक जानेका नाम नही लिया, तब पुरो-हितजीने सलाह किइ अब इसकी तजवीज क्या करे ? औरतने कहा, मेने तीनोंकी तजवीज तो कर दिखाइ, अब इनकी तजवीज आप किजिये,-गरजिक-वापवेटेने सलाह किइ कल जीमते वरूत-में–तुजपर खफा होउगा, उस वरूत तुंभी मेरे सामने ग्रस्ताखी करना, यहां तककि–हाथा पाइ करके छडाइ छडना, और जब वह अपनोकों छुडानेके छिये आवे दोनो मिलकर उसीकों खुब सीधा करना, पस ! दुसरे रौज उसी तरह बापबेटोमें लडाइ शुरु हुइ, केशवलाल उस वरूत रसोइ जिमनेको आयाही था. उसने देखा बापबेटे लड रहे है, चले ! इनकों छुडा देवे, इस ख्यालसे दोनोके दरमियान आया, और छुडाने लगा, पस! इनोने काबु पाकर उ-सकों इस कदर सीधा कियाकि-वोभी-याद करे, वर्स दिनका खायापिया दो घंटेमें वसूल कर लिया, गरजकि-सब-भुखे प्यासे रसोइकी जगहसे बाहर चले गये, केशवलालभी विना खाये पीये अलग जाकर सौचने लगाकि-अब यहां रहना बिल्कुल ठीक नही, अगर रहेगे तो फिर यही नौवत होगी, गरजिक-दुसरे रौज विना पुछे अपने सुसरालके घरसे विदा हो गया, इस किस्सेपर एक श्लोकभी वना हवा है, पढलो.-

> वज्रहृटाद् विजेरामः–तिल तैलेन माधवः भूमिशय्या मणिरामः–धका धूमेन केशवः,

५८-[एक सारिक और ग्रस्ताख नौकर,]

एक मालिकने अपने नौकरसे कहाकि हवा खोरीकों जायमें, गाडी लाओ, नौकर गुस्ताख था तबेलेसें विनां घोडे जोते गाडी लाकर खडी कर दिइ, मालिकने देखा विना घोडेकी गाडी सामने रखी हुइ है, नौकरसे कहने लगे इसमें घोडे क्यों नही लगाये, नौ-करने जवाब दिया हुजरने सिर्फ! गाडी लानेके हुकम दियाथा, घोडोंके लिये तो कुछ नही कहाथा, मालिकने कहा अला तुंही खींच और लेचल, नौकर श्रामदा हुवा, और घोडे लाकर गाडीमें जोत दिये, मालिकने कहा, अब घोडे क्यों लगाये, ? क्या! तुजे खेंचनी पडतीथी इस लिये, ? नौकरीके दाम लेता है खोटे रुपयेतो हिंगीज! नहीं लेता,

५९-[दरियावकी सफर,]

किसी आदमीने एक-शस्त्रकों पुछाकि-आपने दरियावकी सफरतो बहुत किइ है, बतलाइये ! आपने उसमे नादीर चीन क्या देखी ? उसने जवाब दिया नादीर चीज दरियावमें वही देखीकि-में-सहीसलामत कनारे आ पहुचा, अगर बीच दरियावके गर्क हो जाता तो वहां मुजे कौन बचा सकता था ?

६०-[बादशाहका सवाल और अकलमंद्का जवाब,]

एक वरुतका जिक है वादशाहने अपने शहरमें मशहूर कर दियाकि—में-एक सवाल पुछुगा, जो कोई माकुल जवाब देगा, व- हुत कुछ इनाम पायगा, इस वातकों सुनकर एक हाजिर जवाब आदमी बादशाहके सामने गया, और अर्ज किईकि—हुजुर! सवाल करे, में—उसका माकुल जवाब दुंगा, वादशाहने पुछा, वतला! मेरे हाथपर बाल क्यों नही,? उसने जवाब दिया, आप आपने हाथोंसें खूब खेरात करते है, इस लिये बाल नही, किर बादशाहने पुछा तेरे हाथपर बाल क्यों नही,? उसने जवाब दिया, रुपये पैसे लेते लेते मेरे हाथके बाल घीस गये, बादशाहने कहा, बताओ!

दुसरे लोगोके हाथपर बाल क्यों नही ? उसने जवाब दिया, आप देते है, और-में-लेता हुं इस बातकों देखकर-वे-लोग हाथ मसला करते है, इस लिये उनके हाथपरभी बाल नही, बादशाह इसकी हाजिर जवाबीसें खुश हुवे, और बहुतसा इनाम दिया,-

६१-[एक उस्ताद और बेंअदब लडका,]

उस्तादकी हमेशां इज्जत करना चाहिये, एक उस्ताद मदर्सेमें लडकेकों पढा रहेथे, उसमें एक लडका वडा ग्रस्ताख था, और ह-रेक बातपर वेंअदबीका जवाब दिया करताथा, एक दफे उस्ताद उस लडकेके सामने वेंतकों सिधा करके कहने लगे हमारे वेंतके कोनेके सामने एक गधा बेटा है, लडका फौरन! बोल उटा वेंतके दो तर्फके कोने होते है आप किस तर्फके कोनेका जिक करते हैं? उस्तादने उसका कान पकडकर तुरत मदर्सेसें निकाल दिया,

६२-[एक-बेंचफा-लडका,]

एक लडका जुआरीयोंके शाथ जुआ खेल रहाथा, घरपर उन् सका वालिद इंतकाल हो गया, किसी रिस्तेदारने आनकर उस लडकेकों कहा, तेरे वालिदका इंतकाल हो गया है, घर चल,! लडकेने कहा, आप चलकर तयारी करे, में-आता हुं, थोडी देरके बाद फिर उस शख्शने आनकर कहा, भैया! तयारी हो चुकी है, सिर्फ! तेरे आनेकी देरी है, लडकेने कहा, अछी बात है, ले जा-नेका रास्तातो इधरहीसें है, आप ले आइये! मेंभी यहांसे शाथ हो लुंगा, देखिये! यह किस किसमकी ग्रस्ताखी है, ऐसे नामाकुल लडकोके-होनेसे-न-होना बहेत्तर, एक मिसराभी इसपर बना हुवा है. नाखलफ ओलादके होनेसे-ना-होना भला.

६३-[सांप और चूहेकी नकल,]

क्षिप्तः केन करंडकेपि अजगः श्वत्पीडितोनासकत्, रात्रौ खादिम कांक्षयाशु विवरं कृत्वोंदुर स्तन्मुखे; भाग्यादेव तदास्वयं निपतितस्तन्मांस तृप्तो भव द्यातस्तेन पथा नरः स्थिरतरो भोगीव भाग्ये भवेत्. १

किसी शख्शने एक सांपकों एक लकडेके डब्बेमें वंद करके रखाथा. तीन रौज तक सांप उसमेसें निकल-न-सका, अखा और प्यासा उसीमें तकलीक पाता रहा. इत्तिकाकन! एक चूहा रातके वख्त डब्बेके पास आया, और उस डब्बेकों काटने लगा. दो-इंचका-छेद बनाकर जब भीतर घुसा उधर सांप छेदके पास ग्रंह लगाये तयार बेटाथा. एकदम चूहेकों खा गया. और उसी रास्तेसें बहारभी निकल आया. देखिये! तदबीर किसने किइ और काम किसका हुवा. ? इसीलिये कहा जाता हैकि-तद्वीरसें तकदीर ग्रुकहम है. बश्चें कि-सांपने कुछ तदबीर नही किइ तोभी तकदीर रसे उसको भक्ष्य आन मिला. सबुत हुवा तदबीरसे तकदीर बड़ी है,—

६४-[एक दोठके घर चौरोका आना,]

किसी शेठके घर चौर लोग रातके वस्त चौरी करनेके लिये आये, शेठानीने देखकर शेठकों कहा चौर आ रहे है, शेठने कहा में-जानता हूं. आने दो, कुछ देर बाद किर शेठानीने कहा, देखों! घरमेंभी आगये, तबभी शेठने यही जबाब दिया जानता हुं. ती-सरी दफे फिर शेठानीने कहा देखों! अब खजानेके कमरेम आगये, और धन मालकी गठरीयांभी बांध लिइ, शेठने कहा जानता हुं, जब धन माल लेकर चौर घरसे बाहर निकले, शेठानीने कहा

देखो! चौर लोग घरसे बाहर निकले, शेठने कहा-में-सब जानता हुं. शेठानीने मजबूर होकर एक दोहा कहा कि-जानुं जानुं क्या करो-धन तो-ले गये दूर, शेठानी कहे शेठने-इस जानपनेमें धूर?

६५-[गुरुजीकी नसीहतपर चेलेंकी गुस्ताखी.]

एक-गुरु महाराज-पांच दस चेलोंकों हमरा लेकर मुल्कोकी सफर करते हुवे एक शहरमें पहुचे. और चंदरीज वहां कयाम किया. चेले भिक्षा लेनेकों शहरमें जाया करतेथे. एक रौज रास्तेमें नट लोग तमाञ्चा कर रहेथे. देखनेके लिये खडे हो गये. और बाद वडी देरके भिक्षा लेकर गुरुजीके पास आये. गुरुजीने पुछा इतनी े देर कहां लगाइ ? जवावमें चेलोने पेस्तर तो−कइ−बहाने <mark>पेंश किये</mark> सगर जब गुरुजीने बहुत तंग किये कहने लगे. नटोंका तमाज्ञा दे-खनेके लिये ठहर गयेथे. गुरुजीने कहा. आइंदा खयाल रखो. नटोंका तमाशा कभी नही देखना. जब दुनयबीकारोबार छोड-कर साधु हो गये फिर तमाशा क्यौं देखना ? चेळोने ऋ**बुळ किया** आइंदेपर-न-देखेगें. मगर जब दुसरे रौज फिर भिक्षाकों गये, न-टनीका तमाशा देखनेकों खडे हो गये. और बाद वडी देरके गुरु-जीके पास आये. गुरुजीने पुछा आज फिर इतनी देर कहां छगा-इ. ? जवाबमें कहा. आज नटनीका तमाशा हो रहाथा देखनेको ठहर गयेथे. गुरुजीने कहा. कल तुमकों मना कियाथा. ? चेल्लोने कहा. आपने नटोंका तमाशा मना कियाथा. नटनीका-तो-मना नहीं किया. गुरुजीने कहा जब नटोका-तमाशा मना किया तो न-टनीका तो आपही मना हो गया. चेलोने कहा आपने खोलकर वात नहीं कही. दर असल आपहीं की भूल है. -देखिये! चेलोकी किस कदर गुस्ताखी है-जो अपनी भूल-गुरुजीपर डालते है.-

६६-[भाइ और बहेनका किस्सा.]

किसी शहरमें एक शख्श निहायत गरीबी हालतमें आ गया था उसने खयाल किया मेरी बहेनके घर बहुतकुछ धनमालहै, बहे-त्तरहै उसक घर चले, वहां अङी तरह गुजरहोगा. गरज ! वो-अपनी बहेनकेघर पहुचा, बहेनने जब इसको फटे पुराने कपडोसें गरीवी हालतमें देखा, तो-अनजान-बनगइ, पडोसीयोने पुछा यह कौन आयाहै,? तो-कहने लगी-मेरे बापके घरका रसोइयाहै, भाइ इस बातको सनकर दिलगिर हुवा और दिलमें कहनेलगा, देखो गरीवी हालतमें बहनभी मुजे रसोइया बतलाती है, खेर ! यहांभी रहना मुनासिव नही, वहां-न-टहरा, और दुसरे मुल्कमें गया, जब उसकी तकदीरका सितारा तेजहुवा रौजगारमें बडीदौलत हासिल हुइ, एकरोज फिर उसकों यहवात यादआइकि-अव-अपनी वह-नकेघर चलनाचिहिये, देखे ! किसतरह सुछक करती है, ? गरजिक उमदा कपडे और जवाहिरातके गहने पहनेहुवे अपनी बहेनकेघर गया, बहेन अपने भाइकों अमीरी हालतमें देखकर खुशहुइ, और कहनेलगी आओ ! भाइ ! ! बहुतदिनके बाद आयेहो, उमदा खान पानसे उसकी तवज्जों मुदारात किइ, भाइ अपने गहने कपडों कों कहनेलगा यह खाना तुमारेलियेहै, मेरेलिये नही, क्योंकि-जब-में–गरीवी हालतमें आयाथा, इसीबहेनने मुजे रसोइया कहाथा, और अब यह खातिर-ब-तवज्जो होरहीहै,

६७-[एक उस्तादके साथ शागिर्दकी गुस्ताखी]

एकउस्ताद अपने शागिर्दकों हिदायत कियाकरतेथेकि-बात-चीत-दुरुस्तगीके शाथ करनाचाहिये एकरोज चिल्रमसें आगकी चिनगारी उडकर पघडीपर जागिरी, शागिर्द ब-मुताबिक हुकम उस्ताद्के कहनेलगा, जनाव ! उस्ताद्ना-मुख्तद्ना-किब्ला-व-काबाअम-हुजुरकी द्स्तार अस्मतआसारपर-एक-अखगरना हीन-जार-शररवार-आतीशकद्ये-चिलमसें परवाजकरके-शौला-अफ-गनहै, इसलंबे चोडे फिकरेके कहनेतक-पघडी-आधी जलकर खाखहोगइ, बल्कि ! आग सिरकीभी खबर लेनेलगी, उस्ताद दोनोंहाथोसें सिरमलतेहुवे बोले, ए ! नाबकार ! क्या ! यही मौका तैरी फसाहतबयानी और तुलकलामीकाथा, ? साफ नहीकहा गयाकि- आपकी पघडीमें आग लगीहै,-हरेक वातपर मौका देख-ना-या-लंबीचोडी बाते वनाना,-? शागिर्दने कहा आपका फर-मानाथा-बातचीत-लियाकत और दुरुस्तगीके शाथ करना,

६८ [एक हकीमसाहबका-नाडीदेखनेजाना,]

एकहकीमसाहब अपनेलडकेकों शाथलेकर वीमारकी नाडीदेखनेकों गये, जब वीमारके घरपहुचे वीमारकी चारपाइके पास एक
लिलका नरंगीका दिखलाइदिया, वीमारकी नाडीदेखकर हकीमसाहब बोले, आज नाडीमें मालूमहोताहै, आपने कोइ खटीचीज
खाइहै, बीमारने कहा, हां! साहब! आज मेने दो-फांके नरंगीकी
खाइथी, हकीमसाहबने कहा, इसतरह बदपरहेजी मतिकिजिये! दवाका असर विगडजायगा, वीमारने कहा आइंदा ऐसा-न-करंगा,
दुसरेरीज जबफिर हकीमसाहब नाडीदेखनेकों गयेतो बीमारके घरके
पास भींडीके दो-चार-दुकडेपडे हुवेदेखे, भीतर जाकर बीमारकी
नाडी देखी और कहनेलगे आज कोइ आपने सकीलचीज खाइ है,
वीमारने कहा, बेशक! आज मेने भींडीका साग खायाथा, हकीमसाहब बोले, ऐसी बदपरहेजी तो-न-किजिये! दवा कार आमदन- होगी. हकीमसाहब जब घरपहुचे लडकेनेपुछा, आप नाडीदेखकर कैसे जानजातेहोकि-नरंगी-या-भींडी-खाइहै, ? हकीमसाहबने

कहा, क्या ! इतनाभी तुजे खयालनहीकि-कुछ अंदाजसंभी बात कहीजाती है, बीमारके घर-या-इर्दिगर्द किसीचीजका छिलका-या दुकडा पडाहो-तो-जानना यहचीज वीमारनेभी खाइहोगी, लडकेने कहा अछा ! कल-में-नाडीदेखनेजाऊंगा, और जैसा आपकहते है मेंभी–कहुंगा, गरजिक–दुसरेरौज वीमारकेवर नाडीदेखनेकेलिये लडका गया, बीमारके घरकेपास एक-चृहा-मराहुवापडाथा, भी-तरजाकर नाडीदेखी और कहनेलमाकि-आपने आज चृहेका गोस्त खायाहै, बीमार सनकर हसा, और कहनेलगा अछी हकीमीपढेहो, क्या ! आदमीभी कहीं चृहा खाताहै, आप तशरीफ छेजाइवें और अपने वालिदकों भेजिये, लडका घरआया और सब केफियत वा-लिदकों कहसुनाइ, वालिदने कहा, अवे ! नामाकुल ! ! तुजे इत-नाभी माल्मनहीकि-कोइवातकहना तो सौचसमझकर कहना, तेने वीमारके घरपर मराचृहा देखातो क्या! आदमीभी कहीं चृहा खाते है, हकीमसाहब फिर बीमारके घरगये, और कहनेलगे लडका अभी-वेंइल्पेहै, इसीसे ऐसाआपकों कहगया, लाइये! में-नाडीदे-खताहुं, ऐसाकहकर नाडीदेखी और कहनेलगे, आजआपकी नाडी दुरुस्तहै, थोडेरोजमें आप अछेहोजाओगे,

६९-[चार पंडितोंका-लिका,]

किसी शहरमें चारपंडित रहतेथे, एक हकीम-दुसरा नजुमी-तीसरा व्याकरण पाठी-और-चोथा-तर्कवादी-ये-चारों आलादर्जे-के पंडितथे, मगर तजरुवाकार विल्कुल नहीथे, इत्तिफाकन ! ये चारों कहींदुसरे शहरजानेपर आमादा हुवे, किसीसे गाडी अमान-तमांगली, और किसीसे दो-वेलभी-मांगलाये, गाडी वांधवंधाकर तीनों उसपर वेठगये, और एक हांकनेवाला वना, गरज शुभहके चले हुवे वारां बजेतक मंजिल तयिकड़ और एक जंगलमें छायादार

दरस्तके निचे जाकर मुकाम किया, गाडीके वेंछ खोछिदये, और चारोंने आपसमें तजवीज किइकि-हरेक आदमी एक एक काम बां-टलो, नजुमीने कहा-में-वेंलोंकों जंगलमें चराकर लाता हुं, ऐसा कहकर वेंळोंकों जंगलकी तर्फ लेचला, हकीमने कहा-में-साकपात फलफलारी लाता हुं. ऐसाकहकर शहरकीतर्फ चला, तीसरा व्या-करणपाठी वोला में-शहरमें जाकर किसीसे खीचडीका सामान पैटाः कर लाताहुं, और चौथा तर्कवादी वोला-में-घी लेकर आताहुं, ऐसा कहकर चारों वहांसे रवाना होगये, नज़मीने जंगलकी तर्फ वेंछ छेजाकर छोडदिये और आप एक दरस्तके नीचे सोगया, बाद तीन घंटेके जब नींद खुली और देखातो बेंलेंका पता नही, उसीवरूत जमीनपर एक लग्नकुंडली खींची, और उसमें देखाती माऌ्म हुवा वेंल गुम्म होगये है,-अब मिलनेवाले नहीं, ऐसा सम-झकर बेंलोंकी तलाशीकों-न-जाकर वापिस ठिकानेपर आया, उध-रसें व्याकरपाठी खीचडीका सामान लेकर आया, और चुलेपर चढादिइ, जब पक्तनेपर आइ उसमेसं खचपचकी अवाज होने लगी, व्याकरपाठी सामने वेटा हुवाथा, बोला! अथुद्धंकिं जल्पसि,? व्याकरणके कायदेसें खिलाफ खचपचकी-अत्राज कयें। करती है,? चुपकर! वह चुप कर्योंकर होसकतीथी, ? व्याकरणपाठीने सौचा-कि-जुठेके मुंहपर धूळ डाळना चाहिये, ऐसा कहकर खीचडीपर घूळ डाल दिइ, जब अवाज वंदहुइ तो कहने लगा, जुठोंका यही-उपावहै, अब कयों चुप होगइ, इतनेमें हकीमसाहब नींबके पत्ते छे-कर ठिकानेपर आये, और बेठ गये, इधर तर्कवादी जो-घी-छेने गयेथे, सेरभर बी छेकर वापिस आते रास्तेमें सौचने छगेकि-(पा-त्राधारंघृतं-घृताधारं पात्रं वा,) वर्तनने घीकों संभालाहे-या-धीने वर्तनकों, इसखयालसे वर्तनकों उल्टा कर देखातो, सब-घी-जमी-

नपर गिर पडा, जब चारों पंडित इकठे हुवे सबने अपना अपना माजरा कहसुनाया, उसवस्त एक सुसाफिरभी वहां—आया हुवाथा इसमाजरेकों सुना, और कहनेलगा लानतहै तुमारे इस्म पट देनेपर तुम पुरेकम अकल हो, कयोंकि—एकने वेंलोकों गमाया, दुसरेने खीचडीमें धूल डाली, तीसरेने शागभाजीके लिये नीमका पत्ता लाया, और चौथेने—धी—ऊंधा करिदआ, क्या! इस्म पढे हुवे पंडितोंका यही तरीका होता है. ? तुमसेतो हमही बहेत्तर जो हरेककामकों सौचकर किया करते है, सुनासिब है अब आगे मतबढो, और अपने बतनकों वापिस हो जाओ, अगर आगे बढोगेतो क्या करिदखाओंगे, ऐसा कहकर सुसाफिरने अपना रास्ता लिया, और पंडितभी अपने बतनकों विनावेंलकी गाडी खीचते हुवे वापिस चले आये, इसिकस्सेका मतलब यह हैिक—इस्म पठकर तजकबा हािसल करना चाहिये,—

७०-[उंटके कानपर मछरकी अवाज.]

एक-मछर-ऊंटकेकानपर बेटकर जोरसे अवाज करनेलगा, इसइरादेसेकि-मेरी-अवाजसे ऊंट डरे, इधर ऊंटने इसअवाजको सुनकर मछरसे कहा, तुं! तेरीअवाज किसकों सुनारहाहै,? मछ-रने कहा तेरेको डरानेकेलिये, ऊंटनेकहा, मेरीपीटपर बडेबडे नकारे और डंके बजचुके इसवष्टतभी-में-न-डरातो तेरीछोटीसी अवाजसें क्याडरुंगा,? जा! अपनारास्ता ले-



[बयान छ-राग-और-छतीस रागिनी,]
(एक कविके बनायेहुवे दोहे-कवित्त और-छप्पय,)
(दहा,)

१–भैरव २ मालवकोसको–३ दीपराग ४ हिंडोल, ५–मेघराग ६ श्रीरागफुन–ये खटराग कलोल,

(कवित्त,)

मोरहुकी बानीसे सुधारकर खर्ज बांधी— चातककी बोलहुसे रिषम स्वर धरी है, अजाहुकी बोलसे गंधारकी विचार लेत— कुंजकी कलापहुते मध्यम स्वर वरी है, कोकीलाकी कुंकहुते पंचम बनाय बांधी— धैवतको धार सुरदादुरकी हरी है, माते गजराजहुकी गुंजसे निषादलीन— एते नर वार वार सप्त स्वर धरी है,

[छप्पय,]

भैरव १ घटिका चार रात रहियांसे होवे,
लिखत २ द्वेघडी रहां पात विभासही ३ मोहे,
सरउत्रोत विलाउल ४ गुजरी ५ दोयघडी दिन,
देविगिरि ६ फुन चार घडी गांव नीके मन,
देहें मलार ७ वर्षासमें रामगिरि ८ देंपहुँहै,
टोडी ९ आस १० घनासिरि १२ जितिसिरि १२ देअछहै, १
कतुवसंत १३ हिंडोल, १४, महीर दो सारंग १५ गांवे,
ताषिले नट १६ वेदघडी सोहे सुसी पाने,

सिंधु १७ फुन संग्राम मारवो १८ द्वेद्वे जानो,
गौडी १९ द्वेघडी रह्यां युगलमील श्रीह २० वखानो,
सांजसमय दीपक २१ सुखद दोयघडी कल्यानहै,
सुवो २३ चार कनडो २४ वसु महर केदारो २५ गानहै, २
पंचम २६ महरसवाह दोढ अडाणो २७ कहिये,
तेरे घडी विहाग २८ अर्द्ध खमायच २९ लहिये,
दोयमहर दोयघडी सोरठी ३० मारु ३१ चारही,
काफी ३२ फुन एरोड ३३ मालकोसी ३४ वसुधारही,
कालिंगडो ३५ दसघडी रहे तापीछे जंगलो ३६ गीनो,
आठ महर खट तीस स्वर लेइवस्त मश्रुगुन तनो,

तीर्थकर रिषभदेव महाराजका स्तवन, (कालिंगडा,)

पूजुमें आज रिषभचरनं, अरचुमें, एटेर.
नवन प्रमार्जनमज्जन करके-विमलिशिशभर आभरनं, पूजुमें, १
फलजल विविधकुसुमवरभेदे-करधरथालकनकवरनं, पूजुमें, २
द्रव्यभाव पूजन करी विधसे-करनकहेशिवसुखवरनं, पूजुमें, ३

तीर्थंकर पार्श्वनाथ महाराजका स्तवन,

(कालिंगडा)

मंगलमूरत पारसकी-जियामंगल, एटेर, सेवत इंद्रचंद्र मुनिसुरवर-चाहतहै निजजासकी, जिआमंगल, १ धारन पंक सकल दुखहारी-दायकहै सुखरासकी, जियामंगल, २ निरखत नेनसफलभइआशा-करनचरनके दासकी, जियामंगल,३

[जिनगुण स्तवन-कार्लिगडा.]

पश्चतेरे चरनोकी सरन ग्रहुं, जिनतेरे, एटेर, हृदयकमलमें ध्यानधरू नित-सिरपर आनवहुं. पश्चतेरे, १ तुजसम खोल्यो देव खलकमे-पायो नाही कहुं, पश्चतेर, २ मनकी बातां तुं सबजाने-क्याग्रुख बहुत कहुं, पश्चतेरे, ३ कविजश कहे हैं! साहब-ज्युंभव दुखनासहुं, प्रश्चतेरे, ४

[उपदेशिकपद-कालिंगडा,-]

सुनमन होनहार-न-टरे, सुनमन ! एटेर,
चितकळु औरविचारतहें नर-औरही औरबने, सुनमन.
उपरबाज पारिधनीचे-चीडिया कैसे बचे, सुनमन.
होनहार वस डस्यो पारिध-शरिसंचाणो मरे, सुनमन.
होतपदारथ थाविभैया !-क्यौ ! जगसौच करे, सुनमन.
उदयकर्मगत देख जगतकी-जिनवर क्यौं न भजे, सुनमन.

[जिनगुण स्तवन-रागिनी भैरवी तीनताल,]

(दरवजवा ठाडीरहुं, पियाके आवनकी भइवीरियां,—ए चाछ.) नवरीयां मेरी कौन उतारे पार,—नवरीया मेरी, एटेर, या संसारसमुद्र गभीरा,—किसविध उतरुं—में—पार, नवरीयांमेरी. १ रागद्वेष दोतुं नदीयां वहतहै— भगरपडतगतिचार, नवरीयांमेरी. २ रिखवदासकों तार्यो चाहिये—ये विनतिअवधार, नवरीयांमेरी. १

[तीर्थंकर महाबीरस्वामीका स्तवन-रागिनी भैरषी.]
माइमेरो मनतेरी नंदहरे, माइमेरी, एटेर,
कंचन बरन कमळदळळोचन-देखत नयन ठरे, माइ मेरो, १
धन त्रिश्रळादे भाग्य तिहारो-तुं तिहुं भ्रुवनसिरे, माइ मेरो, २

(४२६) जिनगुण स्तवन - और - उपदेशिकपद.

तीनलोकके स्वामी तेरे-अंगनमें विचरे, माइ मेरो, श्रेशिवर्द्धमान जिनंदकी मूरत-देखे विज्ञ ना सरे, माइ मेरो, १ दासचुनी मञ्ज चरन सरन ग्रही-भवश्रम व्याध दरे, माइ मेरो,५

[उपदेशिक पद-भैरवी-या-कालिंगडा,]

कौन किसीका मित-जगतमे-कौन किसीका मित, ए टेर,
माततात तिरिया स्रत वंधव-कोइ-न-रहत निचिंत, जगतमे १
सबही अपने स्वारथके है-परमारथ नही मीत,
स्वारथ विनसे सगो नही होवे-मिता मनमे चिंत, जगतमे, २
उठ चलेगो आप अकेलो-तुंही-तुं सुविहित,
को-नही तेरा-तुं-नही किसका-यही अनादि रीत, जगतमे, ३
ताते एक भगवान भजनकी-राखो मनमें नीत,
ज्ञानसार प्रभु राग भैरवी-गायो आतम गीत, जगतमें,

[जिनगुण स्तवन-रागिनी भैरवी,]

मिथ्या नींद-में-खोइ, आज प्रभु तेरे चरने लागा, मिथ्या, एटेर, दर्शन कर परसन मन मेरो,-आनंद चित अब होइ, आज प्रभु, १ तुम बिना और-न कोइ मेरा-देखा त्रिभुवन जोइ, आज प्रभु, २ दास तुमारो करत विनती-तुम प्रभु भवभव होइ, आज प्रभु, ₹

[उपदेशिक पद-रागिनी भैरवी,]

समझ मन ! कोइ नही अपना, समजमन, ए टेर. दौलत दुनिया माल खजाना-सुखसंपत सुपना, समजमन. ? मातपिता सुत कुटुंब काबेला-सुखसंपत सुपना, समजमन. ? डोलत क्यों जगदेख दिवाने-सुखसंपत सुपना, समजमन. ?

[उपदेशिकपद-झींझोंटीकी दुमरी, तीनताल.]

जळभरन जात जमुनाके घाट-बडे ठाठसे आवत कामनियां, इसचाल. कुमतनीतके सताये हुवेहै-विषयभोग घोलेमें आये हुवेहैं, कुमत, एटेर. शुद्धहै-न-तनकी-न-बतनकीखबरहे,-फिरेजाओ तनकोंउठायेहुवेहे, कुमत. १

कभी नर्कमें हम कभी स्वर्गमें हम-अरहटकी तरहसे घुमाये हुवे है, क्रमत. २

यही हालत होगइ मगर दिल-वा-दिलकी-दोवारा विषयको बढ़ा-ये हुवेहै, कुमत. ३

कभीतो कभी हम मिलेगे सुमतसे-यही-लों-प्रश्नसें लगाये हुवे है, क्रमत. ४

पिता पुत्र भाइसे जाहिर जुदे हैं-हजारों दफे अजमाये हुवे हैं, कुमत. ५

अव-तुं-सौच करे मत कुंदन-किसी दिन मतलब बनाये हुवे है, कुमत. ६

[उपदेशिक पद-भ्रिंझोटीकी डुमरी, तीनताल.]

गफलतमें सारी उपर गइ-कारजकी सिद्धि कछनाजो भइ, गफलतमें ए टेर.

काल अनादि सुख दुखमें खोया-मोह निद्रापें शुद्ध ना जो रही, गफलतमें. १

हान द्यासिंधुने अपने—कारन हितकी बात कही, गफलतमें. २ गइ सो गइ अब हाथ न आवे—अवसर देख विचारोसही, गफ. ३ तज प्रमाद अपमत होय के—सुगतपुरीकी राह प्रही, गफलतमें. ४ दास चुनी सदग्रह सचेकी—आज्ञा सिरपर धारलही, गफलतमें. ५

[गजल,-]

ध्यानमें जिनके सदा लयलीन होना चाहिये, ए टेर, ज्ञानगुन ज्ञानीसें ले परवीन होना चाहिये, ध्यानमें. १ राह संयमकी पकर-कल्यानकी सुरत मिले, कालगफलतमें हे सजन-नाहक ! न खोना चाहिये, ध्यानमें, २ धर्म खेती कियां चहे-तो जमीको साफ रख, बीज समकीतका हृदयमें-सुखसे बोना चाहिये, ध्यानमें, ३ कामना मनकी सफल-आनंदसे पूरन भइ, अबतो सुमता सेज उपर-सुखसें सोना चाहिये, ध्यानमें, ४ दास चुनी अपने घर-आंगनमें फुलेगा कल्प, भवस्थित पकनेसे-सुक्ति फल सलोना चाहिये, ध्यानमें, ५

[उपदेशिक पद-दादरा,]

उठरे ग्रुसाफिर प्यारे, ग्रुसाफिर प्यारे,
तुजे जाना वडी दूर-उठरे ग्रुसाफिर प्यारे, ए टेर;
तुजे छाइ अनादि निदियां-अनादि निदियां,
छाया आंखोमें सकर-उठरे,
तुजे पांचो ठगोने घेरा-ठगोने घेरा,
कैसा हुवा वेशहूर,-उठरे,
यहां नही है संघाती तेरा-संघाती तेरा,
किसपर करत गरुर, उठरे,
कहे छज्जु सफर है तेरा-सफर है तेरा,
तुजे जाना वडी दूर, उठरे,

(तीर्थंकर नेमनाथजीका स्तवन,) [इमरी,]

डोलेरे योवन मदमाती गुजरीयां, डोलेरे, इस चालपर,-निद्धर नेम पिया गये गिरनारीरे, निद्धर, ए टेर, अष्टभवंतर प्रीतपुरानी-नवमें भव पिया तमने निवारीरे, निदुर, १ मुज अवलाकों दूर करीने-पशुवनपर तुम करुना विचारीरे, नि. २ सहसा बन जइ संयम लीनो-पंच महाव्रत भये तपधारीरे, निरुर. ३ नेम राजुल दोय मोक्ष सिधारे-पहेली नेमिपया निज तारीरे, नि.४ नेम राजुल दोय मुक्ति महलमें-पदमोदयकों हरख हजारीरे, नि. ५

उपदेशिक पद-कमाच.

दिननीके बीते जाते है, दिन, ए टेर, समरन करलो प्रभुके नामका-और विषयका तजो काम, तेरे संग-न-चलेगा एक दाम-जो देते है सो पाते है, दिननीके, १ कौन किसीका पुत्र पवारा-दुम किसके और कौन तुमारा, किसके बल ये नाम विसारा-सब देखतहीके नाते है, दिननीके २ लाखचौरासी करके आया-बडे भाग्य मानव भव पाया, तापरभी कुछ करी-न-कमाइ-किर पीछे पस्ताते है, दिननीके, जैसे पानी बीच पतासा-मृरख फसा मौजकी आजा, क्या देखे श्वाशोकी आशा-गये हाथ नहीं आते हैं, दिननीके,

ि उपदेशिक पद-सोरठ, ो

नही ऐसी जनम वारंवार, ए टेर, आरज देश उदार नरभव-उत्तम कुल अवतार, दीर्घभाय शरीर सुंदर-सुखसंपत दातार, वीतरागसो देव पायो-ग्रह गिरुवो अनगार.

नही ऐसो, १

जैनधर्म सुसाधु संगत-महामंत्र नवकार, नही ऐसो, २ सदा सूत्र सिद्धांत सुनवो-करो तत्व विचार, नही ऐसो. ३ कहां ऐसो ज्ञान निर्मल-कहां ऐसो आचार, कहां ऐसी धर्म करनी-अवर जन्म मझार, नही ऐसो. ४ फेर ऐसो कहां अवसर-पायवो संसार, हर्षचंद कहे चेत चेतन-जिम पामो भवपार, नही ऐसो. ५

[सद्गुरुस्तुतिपद-सोरठ,]

बरसत वचन झरी-मुगुरु मेरे वरसत वचन झरी,
श्रीश्रुत ज्ञान गगन ते उलटी-ज्ञानघटा गहरी, सुगुरु मेरे. १
स्याद्वादनय विजरी चमकत-देखत कुमित डरी,
अरथ विचार गृहर ध्विन गरजत-रहत-न-एक धरी; सुगुरु मेरे. २
सरधा नदी चढी अति जोरे-शुद्ध स्वभाव धरी,
सुभर भर्यो समतारस सागर-समकीतभूमि हरी, सुगुरु मेरे. ३
पकटे पुन्य अंकुरे चिहु दिश-पापजवास जरी,
चातक मोर प्षेया भविजन-बोलत भक्तिभरी, सुगुरु मेरे. ४
दान दया वत संयम खेती-भविक किसान करी,
हरखचंद सुरनर शिव सुखकी-सहज स्वभाव खरी, सुगुरु मेरे. ५

[उपदेशिकपद-काफी, ताल दीपचंदी.]

कोइ काल-न-जीता-काले सकल जग जीता,
अकस्मात यम आन फिरेगो-जैसे मृगपर चीतारे, कोइ. १
शूरवीरभर महाबल योद्धा-ते-सब वश करिलता,
ताको डर राखत नहीं कबही-या देखी विपरीता रे, कोइ. २
जूठी मायासे लोभाया-मान रहा अपनीता,
देइ चपेट घर लांड चलेगो,-हाथ झलावत रीतारे, कोइ. ३

इनसेती जीते नरदेही-भये मुक्तिका मीता, बार बार विनवे कर जोडी-नवल प्रेमरस पीतारे.

कोइ. ४

[तीर्थंकर नेमिनाथजीका स्तवन–दुमरी.]

मुरत निरखी शामरी-तींद उचटगड सघरी मोहकी, ग्रुरत. ए टेर. नेमीश्वरके पदफरसतही-पायो-में विसरामरी, नींद उचट गइ. १ ध्यानारुढ निहार छबीकों-छटत भव दुखधामरी, नींद उचटगइ. २ म्रुनिजन याकों ध्यान धरत नित-पावत आतमरामरी, जींद. ४

[उपदेशिक पद-हमरी,]

समज परी मोहे समज परी-जग माया अब जुटी मोहे समज परी,-कालकाल-तुं-क्या करे मूरख-नाही भरुसा पल एक घरी, जगमाया १ गाफिल छिनभर नाही रहो तुम-शिरपर घूमे तेरे काल आरे, जगमाया २ चिदानंद यह बात हमारी-जानो तम चितमाही खरी, जगमाया. ३

[उपदेशिक पट-भैरवी.]

मढ मन मानत नाहीरे,-भयो परम धरमसे वेंम्रख वेंग्ररम, मन. परद्रव्यनकों डोले रोता,-फिरे गांठकी संपत खोता, इब रसातल मारे गोता-धुख चाहे और करे कुकर्म, मन, चीर अभ्यास कियो जिनशासन-वेठो मारमारके आसन, तदि न भयो ज्ञानमकाज्ञन-मूढ भयो छखतनको चरम, मन. २ अरे नेनसुख ! हियेके अंधे-अबतो त्याग जग्तके धंदे, मतकर नामयतिनके गंदे-तजके जतनकर यतन धरम, मन. ३

[उपदेशिक पद-भैरवीकी उमरी-कहरबा,]

अब हम लीनो आतमज्ञान-भेद विज्ञान जायो घटमांही, अब. १

एकतो यह जड अथीर विनाशी-दुजे रुपसरुपी जान, अब हम. तीने शुद्ध अशुद्ध परेशी-में हुं शुद्ध बोध परमान, अब हम. २ अमल अनादि अरुपी अखंडित-में हुं निराबाध परमान, अबहम. ३ चिदानंद चेतन निज आतम-मेरो पदहै सिद्ध समान, अब हम. ४

[गुरुभक्तिपर पद-भैरवी,]

श्री विजयदेवस्र्रींदा-परमगुरु-श्री विजयदेव, ए टेर. तपग उमांही अधिक विराजे-गुरु सेवे होत आनंदा, परमगुरु. १ गुरु उपदेशी गुरु विद्याधर-गुरु दर्शनथी आनंदा, परमगुरु. २ रामंत्रिजय कहे तहांछग प्रतिभा-सातसागर रविचंदा, परमगुरु. ३

[उपदेशिक पद-गजल,]

(इक्क जल्म लगे-उसका सिलाना मुक्किल,) इस चालपर,
अष्ठ कर्म संग लगे-उनका लोडना मुक्किल,
लाखचौरासीमे नर-देहका पाना मुक्किल,
अष्टकर्म. १
मोह ममताकी जडी-बेडीयां पगके अंदर,
सीख सदगुरुकी बिना-उनका तोडाना मुक्किल,
अष्टकर्म. २
गुरुका उपदेश नसीबेसें हाथ आता है,
धर्ममें मीतलगा-ध्यान जमाना मुक्किल,
अहकर्म. ३
कहे मुनि शांतिविजय-धर्मका बगिचा देखो,
ऐसा किर तुमकों यहां-दुसरा पाना मुक्किल,

[जो जो महाशय जैनतीर्थगाइडके अवलसे ग्राहक हुवेहै उनके नाम.ी

(शहर पुना-मुल्क द्खन.)

किताब,

- ५१ बाह, हाथीभाइ झवेरचंद सदाशिव पेंट,
- २१ शेठ, अमरचंदजी तलकचंदजी बंबइबाले,
- १५ शेठ, मोतीचंदजी भगवानदासजी जहोरी,
- ११ शाह नेमचंद हाथीभाइ शाह छगनळाळ नानचंद शाह बालुभाइ हरिचंद,
 - ५ शाह मछकचंदजी दौछतरामधी,
 - ५ बाह गणपतजी अमोलकचंदजी,
 - ५ श्रीमती गजरांबाइ, शाह जीवराजजी किशोरदासजीकी औरत,
 - ३ श्रीयुत रायसिंहजी पेमाजी गोटीवाला,
 - २ श्रीयुत पंनाजी मोतीजी,
 - २ श्रीयुत मोतीजी जेताजी होडा,
 - २ शाह मणिलालजी चुनीलालजी,
 - २ बाह अवेरमलजी रतनजी,
 - २ दोसी छगनलाल वखतचंद,
 - २ ज्ञाह किञ्चनदास प्रेमचंद्र,
 - २ बाह कंक्चंद रायचंद,
 - २ श्रीयुत जीवाजी आनंदाजी,
 - २ ज्ञाह हाथीभाइ बहेचरदास, सिरदारपुरवाळे,
 - २ श्रीयत कृश्लाजी वेलाजी.
 - १ ज्ञाह दीपचंदजी हुकमचंदजी,

46

(४३४) जैनतीर्थगाइडके ग्राहकोका-लिष्ट.

- १ शाह सखारामजी निहालचंदजी,
- १ शाह मोतोचंदजी छगनलालजी,
- ? शाह जयचंदजी कस्तुरचंदजी,
- १ श्रीयुत भगवानजी खुमाजी,
- १ श्रीयुत भ्रुताजी लखमाजी,
- ? शाह छगनलाल पुंजीरामजी,
- १ श्रीयुत गोमाजी भेमाजी
- १ श्रीयुत वालाजी भगवानजी,
- १ श्रीयुत खुबाजी गोलिंबजी,
- १ श्रीयुत हिंमतमलजी परतापमलजीं, छावनी पुना,
- १ श्रीयुत गमनाजी जेसाजी,
- **१ श्रीयुत दौलतरामजी मोतीजी,**े
- १ श्रीमती गंगाबाइ, वैतालपेंठ,
- १ श्रीमती हेमकुंवरबाइ, शाह पीतांबरदास रामचंदर्जाकी औरत, लोहगांम, डिस्टीकट पुना,
- ? श्रीमती जीवीबाइ, कस्वापेंठ,
- ? <mark>शाह</mark> नानचंदजी मानचंदजी, गांव कलबुरगा, डिस्टीकट सोलापुर,
- . **२ श्रीयुत पांचा**जी नवलाजी,
 - २ शेठ वीरचंदजी कुश्नाजी,
 - २ मोदी पानाचंदजी दललारामजी,
 - २ शेठ मोतीचंदजी हेमचंदजी,
 - ? शेठ बेहचरदासजी सीरचंदजी,
 - १ शेठ लखमीचंदजी नेमचंदजी जुन्नेरवाले,
 - १ बेट मगनलालजी लखमीचंद्जी,